प्रस्तुति

ज्ञान की परंपरा अथवा ज्ञान के प्रवाह का माध्यम है भाषा। यदि भाषा नहीं होती तो ज्ञान वैयक्तिक होता, वह सामुदायिक नही बनता। श्रुतज्ञान होता है—एक ज्ञान दूसरे मे संक्रांत होता है। उसका हेतु भाषा ही है। विश्व मे अनेक भाषाएं है। वे सब अपना दायित्व निभा रही हैं। भारतीय भाषाओ मे तमिल, प्राकृत, सस्कृत—ये प्राचीन भाषाएं हैं। श्रमणपरंपरा मे प्राकृत और पालि संस्कृत की अपेक्षा अधिक प्रचलित रही। वैदिकपरंपरा मे संस्कृत का ही प्रयोग होता था। वैदिक संस्कृत और प्राकृत मे कुछ समानताएं भी हैं। पाणिनिकालीन संस्कृत ने प्राकृत से भिन्न रूप ले लिया।

प्राकृत का साहित्य बहुत विशाल है। उसे पढने के लिए प्राकृत का अध्ययन आवश्यक है। प्राकृत का परिवार विशाल है। उसमे मागधी, पैशाची, शौरसेनी, चूलिकापिशाची, अपभ्रंश—ये सब प्राकृत से संबद्ध और विकास क्रम की रेखाएं हैं। प्रादेशिक भाषाएं और बोलिया भी प्राकृत से अनुप्राणित और प्रभावित हैं। भारतीय संस्कृति, सभ्यता, तत्त्वविद्या, दर्शन और शिल्प का अध्ययन करने के लिए प्राकृत को पढना अनिवार्य है।

आश्चर्य है—अनेक भाषाओ के उद्भव में हेतु बनने वाली प्राकृत भाषा का अध्ययन-अध्यापन बहुत सीमित है। संस्कृत की अपेक्षा वह अधिक उपेक्षित-सी प्रतीत हो रही है। इस स्थिति मे परिवर्तन लाना आवश्यक है। वर्तमान के साथ अतीत का सपर्क स्थापित करने के लिए यह और अधिक आवश्यक है।

प्राकृत के अनेक व्याकरण ग्रन्थ हैं। प्राचीन ग्रन्थो में आचार्य हेमचंद्र का प्राकृत व्याकरण बहुत समृद्ध है। आधुनिक ग्रन्थो में डॉ० आर. पिशल का 'प्राकृत भाषाओ का व्याकरण' व्याकरण और भाषाविज्ञान—दोनो दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। वे प्राकृत का अध्ययन करने वाले विद्यार्थी के लिए सहज सुगम नही बनते। इस वास्तविकता को ध्यान मे रखकर प्रवेशिकाओ की परंपरा का सूत्रपात हुआ। प्राकृत मार्गोपदेशिका, प्राकृत प्रवेशिका, प्राकृत प्रवोध आदि-आदि ग्रंथ लिखे गए।

प्रस्तुत ग्रथ उसी शृंखला की एक कडी है। जो उत्तरवर्ती हो, उसे अधिक विकसित होना चाहिए, इस नियम का इसमे निर्वाह हुआ है। मैंने पचास वर्ष पूर्व सन् १९४१ मे हेमचंद्र के व्याकरण के आधार पर तुलसीमंजरी

नाम की प्रक्रिया लिखी थी। बहुत पहले ही चिंतन था—उसकी सहायक सामग्री के रूप मे कोई प्रवेश ग्रंथ तैयार किया जाए। अब उसकी संपूर्ति हुई है। इसकी संपन्नता मे मुनि श्रीचंद्र 'कमल' ने बहुत श्रम किया है। इसे सजाने-संवारने मे उनकी धृति और मति—दोनो का योग है।

आचार्य श्री तुलसी के शासन काल मे साहित्य की बहुमुखी प्रवृत्तिया चली है। फलस्वरूप संस्कृत और प्राकृत—दोनो हमारे संघ मे आज भी जीवित भाषा हैं। वे बोली जाती हैं, उनमें गद्य और पद्य साहित्य रचा जाता है और विधिवत् उनका अध्ययन-अध्यापन चलता है। जैनविश्वभारती इन्स्टीट्यूट 'मान्य विश्वविद्यालय' मे प्राकृत का एक स्वतंत्र विभाग है। प्राकृत पढने वालो के लिए इस ग्रन्थ की उपयोगिता स्वतः सिद्ध होगी, ऐसा विश्वास है।

१ दिसम्बर ९१ — युवाचार्य महाप्रज्ञ
जैन विश्व भारती
लाडनू (राज)

संपादकीय

- तुलसीमजरी युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ की कृति है। इसका रचना काल विक्रम सवत् १९९८ (सन् १९४१) है। इसका प्रणयन कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य विरचित प्राकृत व्याकरण के आधार पर वृहत् प्रक्रिया के रूप मे हुआ है।
- प्राकृत वाक्यरचना बोध तुलसीमंजरी का ही विकसित रूप है। नवीन पद्धति से इसका संपादन किया गया है।
- प्राकृत वाक्यरचना बोध मे ११८ पाठ है।
- इसमे प्राकृत व्याकरण के १११४ सूत्र नियम के नाम से दिए गए है। नियम मूलसूत्र, हिन्दी अनुवाद तथा उदाहरण सहित है।
- कही-कही टिप्पण देकर सूत्र के उदाहरणो को स्पष्ट किया गया है।
- नियम के अन्तर्गत उदाहरणो की सस्कृत छाया दी है, जिससे अर्थ बोध सरलता से हो जाता है।
- शब्द सग्रह मे शब्द दिए गए हैं। सातवे पाठ से लेकर निन्नानवें पाठ तक शब्दो को वर्ग के रूप मे दिया गया है। उससे आगे उन्नीस पाठो मे अनुवाद हेतु आवश्यक शब्दो को अर्थ रूप मे दिया गया है।
- एक पाठ मे एक ही वर्ग के शब्द दिए गए है, जिससे विद्यार्थियो को शब्दो को खोजने मे सुविधा होगी। एक वर्ग मे अधिक शब्द होने के कारण कही-कही उन्हे दो, तीन, चार और पाच पाठो तक भी दिए गए है। ५४ वर्ग के शब्द ८१ पाठो मे हैं।
- बीच-बीच मे स्फुट शब्दो का संकलन है।
- वर्ग के शब्दो के अतिरिक्त वाक्य बनाने मे आवश्यक शब्दो को वर्ग के नीचे विभाजित कर दिया गया है।
- कुछ शब्द प्राकृत शब्दकोश (पाइअसद्दमहण्णव) मे नही है। व्यवहार मे उनकी आवश्यकता अनुभव होती है, उनको संस्कृत के शब्दकोश से लिया गया है।
- वृक्ष, फल, औषधि, शाक, धान्य, लता, सुगंधित पौधे आदि वर्ग निघंटु से लिए गए हैं।
- जो शब्द सस्कृत शब्द कोश से लिए है, उन शब्दो के आगे कोष्ठक मे (स) उल्लिखित है।

ही विद्यार्थियो से प्राकृत मे वाक्य बनवाए गए है, जिससे उनका अभ्यास पुष्ट होता चला जाए ।

- प्रश्न शीर्षक के अन्तर्गत पाठ मे आए सारे शब्दो व धातुओ आदि के अर्थ पूछे गए है । नियमो संबंधी अनेक जिज्ञासाएं की गई हैं । कही-कही उनका अपने वाक्य मे प्रयोग करवाया गया है ।
- इस प्रक्रिया से विद्यार्थी को न केवल शब्दो, धातुओ, अव्ययो तथा नियमो का ज्ञान बढता है अपितु वाक्यरचना का बोध भी सुगम हो जाता है, प्राकृत मे वाक्य बनाना भी सरल हो जाता है।
- प्राकृत के अतिरिक्त उसकी उपभाषा शौरसेनी, मागधी, पैशाची, चूलिका-पैशाची और अपभ्रंश के नियम तथा वाक्य प्रयोग भी दिए गए हैं ।
- वाक्य रचना के साथ-साथ प्राकृत व्याकरण का भी ज्ञान हो, इस दृष्टि से हेमचंद्राचार्य की प्राकृत व्याकरण के सूत्रो को हिन्दी के अर्थ सहित प्रस्तुत किया गया है ।
- प्राकृत व्याकरण मे (दीर्घह्रस्वौ मिथो वृत्तौ १।४) के अतिरिक्त समास के लिए कोई सूत्र नही है । प्राकृत साहित्य मे समासित पद मिलते है, उनको समझने के लिए (शेषं संस्कृतवत् सिद्धम् ४।४४८) सूत्र के अनुसार सस्कृत व्याकरण का आधार लेकर समास प्रकरण को विस्तार दिया गया है ।
- सधि और तद्धित के प्रत्ययो में भी सस्कृत व्याकरण के सूत्रो का उपयोग किया गया है ।
- पहले परिशिष्ट मे प्राकृत की शब्द रूपावली है ।
- दूसरे परिशिष्ट मे प्राकृत की धातु रूपावली है ।
- तीसरे परिशिष्ट मे अपभ्रंश की शब्द रूपावली है ।
- चौथे परिशिष्ट मे अपभ्रंश की धातु रूपावली है ।
- पाचवे परिशिष्ट मे वर्गो के शब्द अर्थ सहित हिन्दी के अकारादि क्रम से है ।
- छट्ठे परिशिष्ट मे धातुए हिन्दी के अर्थ सहित हिन्दी के अकारादि क्रम से हैं ।
- सातवें परिशिष्ट मे प्राकृत भाषा की समकालीन वैदिक सस्कृत के साथ समानता दिखाई गई है ।
- ऐसा विश्वास है इस पुस्तक के माध्यम से विद्यार्थी प्राकृतभाषा मे सरलता से प्रवेश कर सकेंगे ।
- दो वर्ष पूर्व युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ विरचित वाक्यरचना (भाग १ २ ३.) को नवीन विधा से सपादन किया था, जो संस्कृत वाक्यरचना बोध नाम से प्रकाशित हुई थी । उसके फलस्वरूप युवाचार्य श्री ने

प्राकृत वाक्यरचना बोध के संपादन का आदेश दिया। यह पुस्तक उस आदेश की ही क्रियान्विति है।

- युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी और युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ की प्रेरणा से ही मैंने इसमें प्रवेश किया है। आचार्य का अनुग्रह ही शिष्य को ज्ञान की ओर प्रेरित करता है। मैं इन महापुरुषों को श्रद्धा से वंदना करता हुआ आशीर्वाद मांगता हूं कि मुझे बोधि, मार्ग और गति दें।
- मैं अपना सौभाग्य मानता हूं, युवाचार्य महाप्रज्ञ (मुनि श्री नथमलजी) की ५० वर्ष पूर्व की भावना को साकार करने का मुझे अवसर मिला।
- मुनिश्री दुलहराजजी का हृदय से आभारी हूं, जिन्होंने आदि से अंत तक प्रूफों को देखा और आवश्यक सुझाव भी दिए।
- मुनि ऋषभकुमारजी ने पाली चतुर्मास में मेरे सारे कार्यों का भार अपने ऊपर ओढ़कर मुझे समय उपलब्ध कराया। परिशिष्ट बनाने में भी उनका सहयोग रहा है।
- मुनि विमल कुमारजी ने आदि से अंत तक पाण्डुलिपि को देखकर अनेक संशोधन सुझाए।
- मुनि दिनेश कुमारजी और जै. वि भा. मा. वि. के प्राकृत लेक्चरार जगतराम भट्टाचार्य ने परिशिष्टों को तैयार करने में बहुत श्रम किया है।
- मुनि प्रशांत कुमारजी का भी सहयोग रहा है।
- समणी और पा. शि. स. की मुमुक्षु बहनों ने पाण्डुलिपि की सुन्दर अक्षरों में शुद्ध प्रतिलिपि तैयार की।
- पुस्तक को संवारने में मुनि धनंजय कुमारजी का विशेष सहयोग रहा है।
- अंत में उन सबका योगदान भी स्मरणीय है, जिनकी पुस्तकों का मैंने उपयोग किया है तथा जो प्रत्यक्ष व परोक्ष में मेरे सहयोगी रहे हैं।
- सभी के सहयोग की परिणति रूप यह प्राकृत वाक्यरचना बोध आपके हाथों में है।
- इसकी उपयोगिता विद्यार्थियों व पाठकों पर निर्भर है, वे कितने लाभान्वित होते हैं।
- दृष्टि दोष और प्रेस दोष से जो अशुद्धियां रह गई हैं, उनके लिए अंत में शुद्धि पत्र है।
- एक निवेदन—शुद्धिपत्र से अशुद्धियों को पहले शुद्ध कर पढना प्रारम्भ करें। आपके अमूल्य सुझाव व अभिमत भी हमें दें, जिससे भविष्य में परिष्कृत रूप में आपके हाथों में आ सके।

११ दिसम्बर, ९१ — मुनि श्रीचन्द 'कमल'
जैन विश्व भारती, लाडनूं (राज०)

अभिमत

युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ प्रणीत एवं मुनिश्री श्रीचंद कमल द्वारा संपादित 'प्राकृत वाक्य-रचना बोध' प्राकृत भाषा के लिए एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक है। इसकी लेखन शैली बहुत नवीन है। यह प्राकृत के छात्र-छात्राओ के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगी। वे इस ग्रंथ के माध्यम से प्राकृत भाषा की अच्छी जानकारी कर सकेंगे। इस पुस्तक मे ११८ अध्याय हैं। साथ ही इसमे सात परिशिष्ट है—१. प्राकृत शब्द रूपावली, २. प्राकृत धातु रूपावली, ३. अपभ्रंश शब्द रूपावली, ४. अपभ्रंश धातु रूपावली, ५. हिन्दी के अकारादि क्रम से शब्द, ६. हिन्दी के अकारादि क्रम से एक अर्थ मे होने वाली धातुएं, ७ वैदिक सस्कृत और प्राकृत की तुलना। लेखक ने कितनी दृष्टियो से विषय का प्रतिपादन किया है यह इसे देखने से स्पष्टत. ज्ञात होता है। यह अपने आप मे एक प्रशसनीय कार्य है।

भाषा सीखने के मुख्य चार उद्देश्य बताए गये है—

१. बोलना [to speak]

२. समझना [to understand]

३. पढना [to read]

४. लिखना [to write]

साधारणतः इन्हें बोलने-समझने एवं पढने-लिखने रूप दो श्रेणियो मे बांटा जा सकता है। अधिकाशत. जो लोग भाषा सीखते हैं। उनका विशेष ध्यान भाषा बोलने और समझने की ओर रहता है। किन्तु कुछ लोग ऐसे भी होते है, जो पढने और लिखने की दृष्टि से भाषा सीखते हैं। उनका मूल उद्देश्य है—उस भाषा-विशेष की पुस्तक पढना और लिखने की चेष्टा करना। ये लोग भाषा बोल एव समझ नही सकते, ऐसा नहीं है, किन्तु वे लोग जो भाषा साधारणतः सीखते हैं, वह लिखित ग्रन्थ की भाषा होती है। जो लोग मात्र भाषा बोलना एव समझना चाहते है, वे उस भाषा के लेखन एवं पढने की ओर दृष्टि कम देते हैं। उनका उद्देश्य सिर्फ लोगों के साथ बात करना एवं उनकी भाषा समझना होता है। आजकल भाषाशिक्षण की दृष्टि से जो व्याकरण लिखते है, वे बोलने एवं समझने की ओर विशेष ध्यान रखते हैं अर्थात् उनके व्याकरण लिखने का मूल उद्देश्य है भाषा का वर्णन करना। जिस प्रकार जनसामान्य बोलते हैं, वे उसी प्रकार व्याकरण में लिपिबद्ध

करते है। इस प्रकार की भाषाशिक्षणपद्धति वर्णनात्मक भाषा विज्ञान के अन्तर्गत आती है। जो भाषा पढने एवं लिखने के प्रति दृष्टि रखकर व्याकरण लिखते हैं, उनकी व्याकरण भी वर्णनात्मक होती है किन्तु उस वर्णनात्मक व्याकरण मे ऐतिहासिक विज्ञान की पद्धति की छाप रहती है। भाषा की व्याकरण इन दो पद्धतियो से लिखना प्रचलित है। इन दो पद्धतियो के अतिरिक्त अन्य दो धाराओ से भी व्याकरण की चर्चा होती है। वे दो धाराए हैं—तुलनात्मक भाषातत्त्व एवं दर्शनमूलक भाषातत्त्व। इन दो धाराओ से व्याकरण तभी पढना सभव है जब वर्णनात्मक एवं ऐतिहासिक धारा के अनुसार भाषा का शिक्षण होता है।

युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ रचित प्राकृत वाक्यरचनाबोध व्याकरण की ऐसी रचना है, जिसमे वर्णनात्मक एवं ऐतिहासिक भाषा तत्त्व का समन्वय हुआ है। दो धाराओं को एक धारा मे परिणत करना अत्यन्त कठिन है। व्याकरणशास्त्र मे पाण्डित्य होने पर ही यह संभव है। इस पुस्तक का अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि ग्रन्थकार की सुतीक्ष्ण दृष्टि इस ग्रन्थ मे सर्वत्र प्रतिफलित हुई है। उन्होने प्रत्येक अध्याय में जिस विषय पर दृष्टि रखी है उस विषय के गहन मे प्रवेश किया है। साथ ही विषय को किसी भी स्थिति मे नीरस नही होने दिया है। किस प्रकार उन्होने वर्णनात्मक एवं ऐतिहासिक व्याकरण का समन्वय किया है, उसके एक-दो उदाहरण प्रस्तुत करने पर समझा जा सकेगा। जैसे 'तुम् प्रत्यय' अध्याय मे उन्होने प्रथम मे कुछ शब्द चयनित किए हैं और साथ-साथ मे उस अध्याय मे तुम् प्रत्ययान्त कुछ धातुएं भी दी हैं। यथा—काउं (कर्त्तुम्) घेत्तुं (ग्रहीतुम्], जोद्धं (योद्धुम्) इत्यादि। एव इनका प्रयोग भी प्राकृत भाषा के माध्यम मे दर्शाया है जैसे—इम कज्ज तुए विणा को अण्णो काउं सक्कइ, सो सुमिणस्स अट्ठं घेत्तुं सुविणसत्थपाढयस्स घरं गओ। ऐसे अनेक उदाहरण हैं।

वास्तव मे भाषा सीखने की यही सही पद्धति है। जिस प्रकार का व्याकरण का विषय साधारणतः वर्णन किया जाता है, यदि उसी प्रकार की वाक्य-रचना दी जाये तब भाषा सीखने मे बहुत सुविधा होती है। ठीक इसी प्रकार कुछ अंश हिन्दी से प्राकृत अनुवाद हेतु दिए गए हैं। इससे जहा भाषा का प्रयोग सीखा जाता है ठीक उसी प्रकार भाषा मे प्रयोग भी किया जाता है। सबसे प्रशसनीय यह है कि बहुत छोटे-छोटे प्राकृत के वाक्यो का प्रयोग किया गया है। लेखक ने स्वय इन वाक्यो की रचना कर प्रयोग बताया है। इसके परिणामस्वरूप भाषा सीखने वालो को विशेष सुविधा होगी, ऐसा मैं समझता हूं। एक और विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि इन वाक्यो की विषयवस्तु पूर्णतः सर्वसाधारण के कथोपकथन के

लिए उपयोगी है अर्थात् बोलचाल की भाषा का प्राचीन अल्पपठित प्राकृत भाषा के माध्यम से व्यक्त किया है। इस प्राकृत का युवाचार्यश्री ने आदि से अन्त तक निर्वहन किया है । यही इस व्याकरण का महत्त्व है। इस दृष्टि से विचार करने पर इस व्याकरण को मैं प्राकृत भाषा बोलने एव समझने के लिए उपयोगी मानता हूं। साधारणतः प्राकृत भाषा के व्याकरण मे आजकल बहुत कम प्राकृत व्याकरण सूत्रों का उल्लेख रहता है किन्तु प्रस्तुत पुस्तक मे शब्द-सिद्धि को संक्षेप मे बताने के बाद उदाहरण देकर उसकी गठन पद्धति को समझाया है। जिस प्रकार प्रारम्भ मे सरलता से लिखा है—क्त्वा, तुम् एव तव्य प्रत्यय के लिए ग्रह धातु के स्थान पर घेत आदेश होता है। इसके साथ ही 'क्त्वा' तुम् तव्येषु घेत् (४।२१०) हेमचद्र के सूत्र का उल्लेख किया है। इसी प्रकार वच् धातु के स्थान पर जो वोत् आदेश होता है—'वचोवोत् (४।२११) । यद्यपि उन्होने व्याकरण के अनुसार ११०० से भी ज्यादा सूत्र उल्लेख पूर्वक नियम बनाएं हैं तथापि इन नियमो के द्वारा व्याकरण मे कोई क्लिष्टता नही आई है। इनके ग्रन्थ मे उल्लेखनीय बात समास एवं कारक के सबंध मे आलोचना है। सामान्यत. प्राकृत व्याकरण मे समास एव कारक के संबंध मे पृथक् आलोचना नही होती, कारण संस्कृत के समास और कारक की नियमावली ही मुख्यतः प्राकृत मे प्रयुक्त होती है। इसलिए नवीन विधि एव विशेष नियम की जरूरत नही हैं। किन्तु मुनि श्री ने हेमचद्र व्याकरण के कारक सबंधी दो-चार नियम यथा चतुर्थ्याः षष्ठी [३।१३१) तादर्थ्ये ङे० र्वा [३।१३२] क्वचिद् द्वितीयादेः [३।१३४] प्रभृति नियम उल्लेखपूर्वक कारक प्रकरण अध्याय के संबंध में विशेष दृष्टि दी है। समास के विषय मे भी यही बात है। यद्यपि हेमचन्द्र ने कारक की तरह समास के संबंध मे उस प्रकार का कोई सूत्र नही दिया है तथापि हेमचन्द्र के कुछ सूत्र जो समास के क्षेत्र मे प्रयोज्य है प्रसंगतः समास के प्रकरण मे उसका उल्लेख किया है, जैसे—दीर्घह्रस्वौ मिथो वृत्तौ [१।४]। इस ग्रंथ मे अवययी भाव, तत्पुरुष, बहुव्रीहि व द्वन्द्वसमास का वर्णन किया गया है। यद्यपि ये सस्कृत व्याकरण पर प्रतिष्ठित हैं तथापि युवाचार्य श्री की व्याख्या मे नवीन पद्धति का परिचय है। अधिक उदाहरण देने की जरूरत नही समझता हू।

उपर्युक्त विषय को छोडकर इसमे प्राकृत की उपभाषा का विवरण है। ये भाषाये-शौरसेनी, मागधी, चूलिका, पैशाची एवं अपभ्रंश। धात्वादेश के चतुर्थ अध्याय पर प्रतिष्ठित होने पर भी इसका क्रम निर्धारण बहुत ही सुचिन्तित एव प्रशसा के योग्य है।

संक्षेप मे कहना हो तो मुझे कहना पडेगा कि यह व्याकरण प्रत्येक प्राकृत शिक्षार्थी के लिए अवश्य पाठ्यग्रन्थ होना उचित है। जहां-तहां प्राकृत का पठन-पाठन होता है वहां-वहां इस ग्रन्थ का प्रचार काम्य है। केवल

शिक्षार्थी ही नहीं, अध्यापक भी इस व्याकरण को पढ़कर ज्ञानलाभ कर सकेंगे ऐसी मेरी धारणा है।

अन्त में मेरा वक्तव्य यह है कि प्राकृत व्याकरण रचना ग्रंथ में उन्होंने बहुत ही महत्त्व का परिचय दिया है। जटिल नीरस व स्वतः कठिन प्राकृत व्याकरण को सुखपाठ्य एवं सरल बनाने के लिए ग्रन्थ सम्पादक मुनि श्री चंद 'कमल' भी धन्यवाद के पात्र हैं। इस प्रसंग में एक श्लोक उद्धृत करके युवाचार्य श्री एवं उनकी व्याकरण के महत्त्व को व्यक्त करना चाहता हूं। दरापगा ने अपने गंगास्तोत्र में गंगा का महत्त्व कहां निहित है, उसी प्रसंग में कहा था—

सुरधुनि मुनिकन्ये तारयेः पुण्यवन्तम्,
स तरति निजपुण्यैस्तत्र किं ते महत्त्वम्।
यदि तु गतिविहीनं तारयेः पापिनं मां।
तदिह तव महत्त्वं तन्महत्त्वं महत्त्वं॥

मैं भी कहता हूं दुरूह और कठिन प्राकृत भाषा को सहज व सरल करने में संपादक मुनि श्रीचंद 'कमल' का महत्त्व प्रकट हुआ है।

सत्यरंजन बनर्जी
कलकत्ता विश्वविद्यालय

अनुक्रमणिका

१ वर्णबोध

वर्ण—प्रत्येक पूर्ण ध्वनि को वर्ण कहते है। प्राकृत मे वर्ण के दो भेद हैं—(१) स्वर (२) व्यञ्जन।

स्वर के दो भेद हैं—ह्रस्वस्वर और दीर्घस्वर। ह्रस्वस्वर की एक मात्रा होती है। दीर्घस्वर की दो मात्राए होती है। संस्कृत मे प्लुतस्वर होता है, जिसकी तीन मात्राए होती है।

० प्राकृत मे प्लुत स्वर नही होता।

० प्राकृत मे ऋ, ॠ, लृ, लॄ स्वरो का प्रयोग नही होता।

ह्रस्वस्वर—अ, इ, उ, ए, ओ।

दीर्घस्वर—आ, ई, ऊ, ए, ओ।

ए और ओ दीर्घस्वर हैं, परन्तु प्राकृत मे ए और ओ से परे सयुक्त व्यञ्जन होने पर ए और ओ को ह्रस्वस्वर माना गया है। जैसे—एक्केक्क (एकैकम्), जोव्वण (यौवनम्), आरोग्ग (आरोग्यम्)। प्राकृत मे ऐ और औ का प्रयोग नही होता। केवल (सू. १।१६९) से अयि को ऐ आदेश होता है।

नियम १ (अथ प्राकृतम् १।१) प्राकृत मे ऋ, ॠ, लृ, लॄ, ऐ, औ, ङ, ञ, श, ष, विसर्ग, प्लुत—ये नही होते। ङ और ञ अपने वर्ग के व्यंजनो के साथ होते हैं।

प्राकृत मे व्यजन २९ है—

क, ख, ग, घ
च, छ, ज, झ
ट, ठ, ड, ढ, ण
त, थ, द, ध, न
प, फ, ब, भ, म
य, र, ल, व, स, ह

० प्राकृत मे श, ष और विसर्ग नही होते।

० स्वर रहित ङ् तथा द्वित्व ङ् ङ् प्रयुक्त नही होता।

० प्राकृत मे ङ और ञ का प्रयोग अपने वर्ग के व्यंजनो के साथ मिलता है, स्वतत्र नही—

पङ्को, पङ्खो, सङ्गो, जङ्घा
वञ्चु, वाञ्छा, पञ्जो, विञ्झो

० स्वर रहित व्यजन अत मे नही होते है।

० कोई भी व्यजन स्वर के बिना क्, च्, ट्, त्, प् रूप मे अकेला प्रयुक्त नही होता।

२ संयुक्त व्यंजन

संयुक्त व्यंजन—जिन दो या दो से अधिक व्यजनो के बीच मे स्वर न हो तो उसे संयुक्त व्यजन कहते है।

प्राकृत मे शब्द के प्रारभ मे संयुक्त व्यजन नही पाए जाते। सस्कृत मे पाये जाते है उसके एक व्यजन का लोप हो जाता है और अवशिष्ट व्यंजन द्वित्व नही होता। अपवाद के रूप मे ण्ह, म्ह, ल्ह, द्र और म्ह मिलते है। ण्ह-ण्हाण। म्हो। ल्ह-ल्हसइ। द्रहो। गुम्ह (गुह्य), सम्हो (सह्य.)।

प्राकृत मे भिन्नवर्गीय सयुक्त व्यजनो का प्रयोग नही मिलता। समान-वर्गीय व्यजनो के मेल से बने हुए सयुक्त व्यजन ही मिलते है। भिन्नवर्गीय सयुक्त व्यजनो को समानवर्गीय व्यजन के रूप मे बदल दिया जाता है। उसके एक व्यजन का लोप कर दूसरे को द्वित्व कर दिया जाता है। यदि द्वित्व व्यजन हकारयुक्त (वर्ग का दूसरा और चौथा वर्ण) हो तो उसको द्वित्व कर उसके हकार को हटा दिया जाता है, वर्ग का पहला और तीसरा वर्ण कर दिया जाता है। जैसे—

संस्कृत	प्राकृत
दुग्ध—	दुध—दुध्ध—दुद्ध।
मूर्च्छा—	मुछा—मुछ्छा—मुच्छा।
मूर्ख—	मुख—मुख्ख—मुक्ख
भुक्त—	भुत, भुत्त
उत्पल—	उपल—उप्पल

सयुक्त व्यजनो मे एक व्यजन य, र, ल, अनुस्वार या अनुनासिक हो तो उसे स्वरभक्ति के द्वारा अ, इ, ई और उ मे से किसी स्वर के द्वारा विभक्त कर (आगम कर) सरल व्यजन बना दिया जाता है।

रत्न—रत्+अ+न—रतन—रयण।

गर्हा—गर+इ+हा गरिहा।

स्नेह—स्+अ+नेह सनेह—सणेह।

समस्त (समास) पदो मे दूसरे पद का आदि स्वर विकल्प मे द्वित्व होता है, इसलिए समस्त पदो मे सयुक्त व्यजन विकल्प से पाए जाते है। जैसे—नइग्गामो नइगामो। देवत्थुई, देवथुई।

सयुक्त व्यंजनों मे जो निर्बल व्यजन होता है उसका लोप हो जाता

है। बल की दृष्टि से व्यंजनों का क्रम इस प्रकार है—

(१) वर्ग के प्रथम चार वर्ण सर्वाधिक बलशाली होते है।

(२) ङ, ञ, ण, न, म—ये पाच वर्ण उनसे कम बलशाली है।

(३) ल, स, व, य, र—ये पांच वर्ण सबसे निर्बल है। ये भी आपस मे क्रमशः एक दूसरे से निर्बल है।

क, ग, च, छ आदि व्यजन स्वर सहित होते है, तब इन्हें सरल व्यजन कहते हैं। द्वित्व होने पर ये सयुक्त व्यंजन हैं। भिन्नवर्गीय संयुक्त व्यजन क के साथ ये बनते हैं— त्क, क्त, क्य, क्र, र्क, ल्क, क्व आदि। प्राकृत मे इन सब के स्थान पर शब्द के अदर 'क्क' का तथा आदि मे 'क' का ही प्रयोग होता है जैसे—

संस्कृत	प्राकृत	संस्कृत	प्राकृत
उत्कण्ठा	उक्कण्ठा	मुक्त	मुक्क
वाक्य	वक्क	चक्र	चक्क
तर्क	तक्क	उल्का	उक्का
विक्लव	विक्कव	पक्व	पक्क
क्वचित्	कचि	क्वणति	कणति

इसी प्रकार ग के साथ भिन्नवर्गीय सयोग ये बनते हैं—ड्ग, ग्ण, द्ग, ग्न, ग्य, ग्र, र्ग, ल्ग। इनका समानवर्गीय संयुक्त रूप बनता है—ग्ग। आदि मे होने से सयुक्त नही बनता केवल ग बनता है। जैसे—

संस्कृत	प्राकृत	संस्कृत	प्राकृत
खड्ग	खग्ग	रुग्ण	रुग्ग, लुग्ग
मुद्ग	मुग्ग	युग्म	जुग्ग
योग्य	जुग्ग	अग्र	अग्ग
ग्रास	गास	ग्रसते	गसते
वर्ग	वग्ग	वल्गा	वग्गा

इसी तरह सभी वर्णों के भिन्नवर्गीय सयुक्त व्यजनो का समानवर्गीय संयुक्त व्यजन बनाया जाता है। समानवर्गीय सयुक्त व्यजन ये है—क्क, क्ख, ग्ग, ग्घ, च्च, च्छ, ज्ज, ज्झ, ट्ट, ट्ठ, ड्ड, ड्ढ, ण्ण, त्त, त्थ, द्द, द्ध, न्न, प्प, प्फ, ब्ब, ब्भ, म्म, ल्ल, व्व, स्स।

प्रश्न

१. सयुक्त व्यंजन किसे कहते है?

२ सयुक्त व्यजन कहां होते है और कहा नही होते? स्पष्ट करो।

३. संयुक्त व्यंजन मे एक व्यंजन का लोप होने के बाद कौन-सा व्यंजन द्वित्व होता है और उसका अन्तिम रूप क्या रहता है?

४. संयुक्त व्यंजन को सरलव्यंजन बनाने का साधन क्या है ?
५. वर्णों में अधिक बलशाली कौन-कौन से व्यंजन हैं तथा उनका निर्बल और निर्बलतर होने का क्या क्रम है ?
६ भिन्नवर्गीय संयुक्त व्यंजन क के साथ क्या-क्या बनते है ?
७. स्वरभक्ति का प्रयोग कहा किया जाता है ?

पढती है। पढती है क्रिया, मनीषा कर्ता और पुस्तक कर्म। ३. गोपाल पेन से लिखता है—लिखता है क्रिया, गोपाल कर्ता और पेन से साधन। ४. सुमन साधु को भिक्षा देती है—देती है क्रिया, सुमन कर्ता, भिक्षा कर्म और साधु को सम्प्रदान। ५ वह घोडे से गिरता है—गिरता है क्रिया, वह कर्ता और घोड़े से— अपादान। ६ मेरा सफेद घोडा तेज दौडता है—दौडता है क्रिया, तेज क्रिया का विशेषण, घोड़ा कर्ता, सफेद कर्ता का विशेषण, मेरा सम्बन्ध। ७ तुम्हारे घर मे बालक पुस्तक पढते हैं। पढते है क्रिया, बालक कर्ता, पुस्तक कर्म, घर में आधार, तुम्हारे सम्बन्ध।

वाक्य मे एक क्रिया के साथ अर्धक्रिया भी आ सकती है। क्त्वा और तुम प्रत्यय के रूप अर्धक्रिया के द्योतक हैं। क्रिया के आगे कर या करके तथा 'के लिए' लगाने पर अर्धक्रिया बनती है। खाने के लिए, पीने के लिए, बोलने के लिए, करने के लिए—ये रूप 'तुम्' प्रत्यय के अर्धक्रिया के हैं। खाकर, पीकर, बोलकर आदि क्त्वा प्रत्यय के रूप अर्धक्रिया के हैं।

(१) वह पाठ पढने के लिए विद्यालय जाता है—जाता है क्रिया, वह कर्ता, विद्यालय कर्म, पढने के लिए अर्धक्रिया, पाठ अर्धक्रिया का कर्म। (२) सुशील खाना खाकर बाजार जाता है। यहां जाता है क्रिया, सुशील कर्ता, बाजार कर्म, खाकर अर्धक्रिया, खाना अर्धक्रिया का कर्म।

प्रश्न

१. नीचे लिखे वाक्यो मे कर्ता आदि छाटो।

विमलेश किसका पुत्र है? घर में कौन बैठा है? धर्मेश अध्ययन करता है। सरला ज्योतिष पढती है। वह चाकू से क्या काटता है? रमा आचार से भ्रष्ट है। सफेद गाय पीली गाय की अपेक्षा गाढा और अधिक दूध देती है। काले कुत्ते को मत मारो। सूक्ष्म लेखनी से सुन्दर अक्षर कौन लिखता है? तुम्हारे भाग्य मे क्या लिखा है? अपने भाग्य का निर्माता मैं स्वयं हू। विकास का मार्ग सबके लिए खुला है। नेताओ के आश्वासनो पर अधिक विश्वास मत करो। दिन मे खाना खाकर सोना क्या स्वास्थ्य के लिए अच्छा है? वह वाणी का संयम न कर बात को बिगाडता है। अनुशासन के लिए गुरु की आज्ञा का पालन करो। भागते हुए घोडे से शंकर गिर गया। मेरी पुस्तक पीले रंग की थी। समय का मूल्यांकन कौन करता है? धन से अधिक मूल्यवान धर्म है। गिरकर भी जो उठता है वह बुद्धिमान है। पूर्वभव के संस्कारो को जानने के लिए उसने भगवान से पूछा। इस जन्म के बाद मेरे कितने भव अवशेष हैं? सदा सत्य बोलो। जीवन को नियमित बनाओ।

जो नाम या क्रियाएं हमारे व्यवहार मे आती हैं उन सब के अत मे विभक्ति लगी हुई होती है। विभक्तिरहित कोई शब्द या क्रिया हमारे व्यवहार मे नही आती। कही-कही पर विभक्ति के प्रत्यय आते हैं पर उनका लोप हो जाता है, शब्द ज्यो का त्यो रहता है, वह शब्द विभक्त्यन्त कहलाता है। विभक्ति का अर्थ है—विभाजन करने वाला प्रत्यय। जिसके द्वारा संख्या और कारक का बोध होता है उसे विभक्ति कहते हैं। विभक्तिया नाम और क्रिया की भिन्न-भिन्न अवस्थाओ को तथा भिन्न-भिन्न काल को सूचित करती है। सज्ञा या नाम के अत मे सात विभक्तिया होती हैं।

सि प्रत्यय आदि मे होने के कारण उनकी सज्ञा स्यादि विभक्तिया है। कर्ता आदि छह कारक और सबध मे इन सात विभक्तियो का उपयोग होता है। सामान्यतया कर्ता आदि कारक उसके चिह्न और विभक्ति को इस रूप मे याद कर सकते हैं।

कारक	चिह्न	विभक्ति
कर्ता	है, ने	प्रथमा
कर्म	को, (को रहित)	द्वितीया
साधन	से, द्वारा	तृतीया
सप्रदान	के लिए	चतुर्थी
अपादान	से	पंचमी
सबध	का, के, की	षष्ठी
अधिकरण	मे, पर	सप्तमी

प्रथमा विभक्ति

१ कर्तृवाच्य मे सज्ञाए जब कर्ता के रूप मे व्यवहृत होती है तब उनमे प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
रुक्खो	वृक्ष	पव्वयो	पर्वत
आसो	अश्व	सुक्क	शुक्ल
गुणो	गुण	पीअ	पीला
कंबलो	कबल	सिरी	लक्ष्मी, शोभा

२ सबोधन मे प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे—हे सुरेस!

५ प्रथम पुरुष

कर्ता को तीन भागो मे विभाजित किया जाता है—

	(१) प्रथम पुरुष	(२) मध्यम पुरुष	(३) उत्तम पुरुष
एकवचन	वह	तू	मै
बहुवचन	वे/वे दोनो	तुम/तुम दोनो	हम/हम दोनो

प्रथम पुरुष को अन्य पुरुष भी कहते है। हाथी, घोडा, लक्ष्मी, पृथ्वी, वृक्ष आदि जितनी भी सज्ञाए कर्ता होती है वे सब प्रथम पुरुष के कर्ता है। इसके साथ प्रथम पुरुष की क्रिया आती है। कर्तृवाच्य मे उनकी कर्ता सज्ञा है।

सर्वनाम

सज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द को सर्वनाम कहते है। सज्ञा का प्रयोग होने के बाद ही सज्ञा के स्थान पर सर्वनाम का प्रयोग होता है। सज्ञा मे जो लिङ्ग और वचन होते है उसके स्थान पर आने वाले सर्वनाम मे वही लिङ्ग और वचन होता है। सर्वनाम त्रिलिङ्गी होते है। उनके रूप परिशिष्ट १ मे देखे। सर्वनाम ये है—

प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी
सव्व	सर्व	सब
वीस	विश्व	सब
उभय	उभय	दो
इक्क, एक्क, एग	एक	एक
एक्कतर	एकतर	कोई एक
अण्ण	अन्य	दूसरा
इयर	इतर	कोई अन्य
कयर	कतर	कौनसा
कयम	कतम	उनमे कौनसा
ज	यद्	जो
त, ण	तद्	वह
एअ, एय	एतद्	यह
क	किम्	कौन
पुव्व	पूर्व	पूर्व

पर	पर	दूसरा
दाहिण, दक्खिण	दक्षिण	दक्षिण, दक्षिण का
उत्तर	उत्तर	उत्तर, उत्तर का
अवर	अपर	अन्य, दूसरा
अहर	अधर	नीचा
स, सुव	स्व	अपना
इम	इदम्	यह
अमु	अदस्	वह
तुम्ह	युस्मद्	तू
अम्ह	अस्मद्	मैं
भव	भवत्	आप

तू, तुम, मै और हम बोधक शब्दों के अतिरिक्त शेष सभी शब्द प्रथम पुरुष में प्रयुक्त होते हैं।

पास की वस्तु या व्यक्ति के लिए इम (इदम्), अधिक पास की वस्तु या व्यक्ति के लिए एअ (एतद्), सामने के दूरवर्ती पदार्थ या व्यक्ति के लिए अमु (अदस्), परोक्ष (जो वक्ता के सामने न हो) पदार्थ या व्यक्ति के लिए स (तद्) शब्द का प्रयोग किया जाता है।

रमेश पढने मे होशियार है परन्तु उसका भाई धनेश मद बुद्धि वाला है। रमेश का इस अर्थ मे 'उसका' शब्द का प्रयोग हुआ है। कई बार सर्वनामशब्द सज्ञा के विशेषण के रूप मे भी प्रयुक्त होते हैं। यह लडका सुन्दर है। यह पुस्तक पाठनीय है। जिस प्रकार सज्ञा मे सब विभक्तिया आती है, वैसे ही सर्वनाम मे भी सब विभक्तिया आती हैं—उसने, उसको, उससे, उसके लिए, उससे, उसका, उसमे या उस पर आदि।

प्रथम पुरुष, मध्यम पुरुष और उत्तम पुरुष—ये तीनो पुरुष सर्वनाम के ही रूप हैं।

प्रथम पुरुष

एकवचन	बहुवचन
सो—वह	ते—वे/वे दोनो
ता—वह (स्त्री)	ता—वे/वे दोनो (स्त्री)

धातु प्रत्यय (वर्तमान काल)

इ, ए	न्ति, न्ते, इरे
हस्—हसइ, हसए	हसन्ति, हसन्ते, हसिरे

हस् धातु की तरह अन्य व्यजनान्त (अ विकरण वाली) धातुओं के रूप बनते हैं।

प्रयोग वाक्य

सो नमइ—वह नमन करता है । ते नमन्ति—वे दोनों/वे सब नमन करते हैं।
सो पढइ—वह पढता है । ते पढन्ति—वे दोनों/वे सब पढते है ।
सो लिहइ—वह लिखता है । ते लिहन्ति—वे सब/वे दोनो लिखते है ।
सो भणइ—वह पढता है । ते भणन्ति—वे सब/वे दोनों पढते हैं ।
सो हसइ—वह हंसता है । ते हसन्ति—वे सब/वे दोनो हसते है ।

प्राकृत में अनुवाद करो

यह नमता है । वह पढता है । वह हसता है । वह लिखता है । वह पढती है । वह नमती है । वह हंसती है । वह लिखती है । वे नमते हैं । वे पढते हैं । वे हसते हैं । वे लिखते हैं । वे दोनों नमते हैं । वे दोनों पढते हैं । वे दोनों हसते हैं । वे दोनों लिखते हैं । वे नमती हैं । वे हंसती हैं । वे पढती हैं । वे लिखती हैं । वे दोनों नमती हैं । वे दोनों पढती हैं । वे दोनों हसती हैं । वे दोनों लिखती हैं ।

प्रश्न

१ पुरुष कितने प्रकार के होते हैं ? उनके कर्त्ता कौन है ?
२. सर्वनाम किसे कहते हैं ?
३ सर्वनाम कौन-कौन से शब्द है ?
४ प्रथम पुरुष के वर्तमान काल के क्या-क्या प्रत्यय है ?
५ सर्वनाम मे कौनसी विभक्ति होती है ? उदाहरण मे स्पष्ट करो ।
६ सर्वनाम मे कौनसा लिंग व वचन होता है ?
७ प्रथम पुरुष मे कौन से सर्वनाम माने जाते है ?

धातु संग्रह

सेव—सेवा करना	पास—देखना
गच्छ—जाना	धाव—दौडना
सुण—सुनना	भम—घूमना
भुज—खाना	पिव—पीना
इच्छ—इच्छा करना	जाण—जानना

अव्यय संग्रह

कल्ल (कल्य)—कल	अत्थ (अत्र)—यहा
सइ, सया (सदा)—सदा	तत्थ (तत्र)—वहा
सइ (सकृत्)—एक बार	ण, न (न)—नही
मुहु—बार-बार	झत्ति (झटिति)—शीघ्र
सणिअं (शनै)—धीरे	अज्ज (अद्य)—आज

ऊपर बताए गए अव्यय इसी रूप मे प्रयोग मे आते है । न इसमे कुछ जुडता है और न कुछ कम होता है ।

मध्यम पुरुष

एक वचन	बहुवचन
तुम—तू	तुम्हे—तुम/तुम दोनो

धातु प्रत्यय (वर्तमान काल)

सि, से	इत्था, ह

सि, से और ह प्रत्यय धातु के आगे जुड जाते है । इत्था प्रत्यय धातु के अ का लोप होने के बाद जुडता है ।

प्रयोग वाक्य

तुम गच्छसि—तू जाता है/जाती है ।
तुम सेवसि—तू सेवा करता है/करती है ।
तुम सुणसि—तू सुनता है/सुनती है ।
तुम भुजसि—तू खाता है/खाती है ।
तुम पाससि—तू देखता है/देखती है ।
तुम धावसि—तू दौडता है/दौडती है ।
तुम भमसि—तू घूमता है/घूमती है ।
तुम पिवसि—तू पीता है/पीती है ।
तुम इच्छसि—तू इच्छा करता है/करती है ।

तुम जाणसि—तू जानता है/जानती है।
तुम अज्ज गच्छसि—तू आज जाता है/जाती है।
तुम सइ भुजसि—तू एक बार खाता है/खाती है।
तुम मणिअं भमसि—तू धीरे घूमता है/घूमती है।
तुम मुहु लिहसि—तू बार-बार लिखता है/लिखती है।
तुम सया सेवसि—तू सदा सेवा करता है/करती है।
तुम्हे गच्छित्था—तुम/तुम दोनो जाते हो/जाती हो।
तुम्हे सेवित्था—तुम/तुम दोनो सेवा करते हो/करती हो।
तुम्हे सुणह—तुम/तुम दोनो सुनते हो/सुनती हो।
तुम्हे भुजह—तुम/तुम दोनो खाते हो/खाती हो।
तुम्हे पासह—तुम/तुम दोनो देखते हो/देखती हो।
तुम्हे धावित्था—तुम/तुम दोनो दौडते हो/दौडती हो।
तुम्हे इच्छह—तुम/तुम दोनो इच्छा करते हो/करती हो।
तुम्हे भमित्था—तुम/तुम दोनो घूमते हो/घूमती हो।
तुम्हे जाणह—तुम/तुम दोनो जानते हो/जानती हो।
तुम्हे पिवह—तुम/तुम दोनो पीते हो/पीती हो।

प्राकृत में अनुवाद करो

तू बार-बार पढता है। तू आज दौडता है। तू सेवा करती है। तू घूमती है। तू धीरे सुनती है। तू बार-बार देखती है। तू सदा वहा जाती है। तू दौडती है। तू जानती है। तू इच्छा करता है। तू यहा खाता है। तू धीरे पीता है। तू शीघ्र जाता है। तू वहा बार-बार जाता है। तू आज नही लिखता है। तू नही हसता है। तुम दोनो सेवा करते हो। तुम वहा खाते हो। तुम यहा घूमते हो। तुम नही देखती हो। तुम दोनो बार-बार खाती हो। तुम दोनो जल्दी जाते हो। तुम दौडते हो। तुम सदा इच्छा करते हो। तुम दोनो सुनती हो। तुम नही सुनते हो। तू खाता है। तुम दोनो नही खाते हो। तू पढता है। तुम सदा घूमते हो।

प्रश्न

१ मध्यमपुरुष के कर्ता कौन-कौन है?
२ नीचे लिखी धातुओं के अर्थ बताओ—
भम, भुज, धाव, सेव, पास, पिव, जाण, गच्छ, सुण, इच्छ।
३ नीचे लिखे अव्ययो के अर्थ बताओ—
झत्ति, सइ, अज्ज, तत्थ, मणिअं, कल्लं, अत्थ, सया
४. इत्था और ह प्रत्यय किस अर्थ मे लगते है और इनको धातु के आगे लगाने की विधि क्या है?

उत्तम पुरुष

शब्द संग्रह (महापुरुष)

अरहंत—अरहंतो	सिद्ध—सिद्धो
पार्श्वनाथ—पासणाहो	धर्मगुरु—आयरियो
महावीर—महावीरो	साधु—साधू
महादेव, शिव—हरो	बुद्ध—बुद्धो
जिन—जिणो	उपाध्याय—उवज्झायो

धातु संग्रह

पड—गिरना	बीह—डरना
मुच—छोडना	रूस—क्रोधित होना
दह—जलना	पविस—प्रवेश करना
जप—बोलना	याय—मांगना
तव—तपना	

अव्यय संग्रह

प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी	प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी
इयाणि, दाणि	(इदानी)	इस समय	धुव	(ध्रुवम्)	निश्चय
किं	(किं)	क्या	एगया	(एकदा)	एक बार
केरिसो	(कीदृश)	कैसा	खिप्प	(क्षिप्र)	शीघ्र
पुणो	(पुन)	फिर से	अवस्स	(अवश्य)	अवश्य

• पुल्लिंग अकारान्त देव शब्द के रूप याद करो। देखो परिशिष्ट १ संख्या १

उत्तम पुरुष

एक वचन	बहु वचन
अहं—मैं	अम्हे—हम/हम दोनों

धातु प्रत्यय (वर्तमान काल)

मि	मो, मु, म

अकारान्त धातु के अ को आ हो जाता है उसके आगे ये प्रत्यय जुड जाते हैं।

अहं पिबामि—मैं पीता हूं/पीती हूं।

अहं हसामि—मैं हंसता हूं/हंसती हूं।
अहं लिहामि—मैं लिखता हूं/लिखती हूं।
अहं भुंजामि—मैं खाता हूं/खाती हूं।
अहं सेवामि—मैं सेवा करता हूं/करती हूं।
अहं जाणामि—मैं जानता हूं/जानती हूं।
अहं भणामि—मैं पढ़ता हूं/पढ़ती हूं।
अहं इच्छामि—मैं इच्छा करता हूं/करती हूं।
अहं गच्छामि—मैं जाता हूं/जाती हूं।
अहं जंपामि—मैं बोलता हूं/बोलती हूं।
अहं दाणिं भमामि—मैं इस समय घूमता हूं/घूमती हूं।
अहं पविसामि—मैं प्रवेश करता हूं/करती हूं।
अम्हे पिवामो—हम/हम दोनों पीते हैं/पीती हैं।
अम्हे लिहामु—हम/हम दोनों लिखते हैं/लिखती हैं।
अम्हे भुंजाम—हम/हम दोनों खाते हैं/खाती हैं।
अम्हे सेवामो—हम/हम दोनों सेवा करते हैं/करती हैं।
अम्हे जाणामु—हम/हम दोनों जानते हैं/जानती हैं।
अम्हे इच्छाम—हम/हम दोनों इच्छा करते हैं/करती हैं।
अम्हे हसामो—हम/हम दोनों हंसते हैं/हंसती हैं।
अम्हे जंपाम—हम/हम दोनों बोलते हैं/बोलती हैं।
अम्हे पासामो—हम/हम दोनों देखते हैं/देखती हैं।
अम्हे गच्छामु—हम/हम दोनों जाते हैं/जाती हैं।
अम्हे भणाम—हम/हम दोनों पढ़ते हैं/पढ़ती हैं।
अम्हे तवामो—हम/हम दोनों तपते हैं/तपती हैं।
अम्हे बीहमु—हम/हम दोनों डरते हैं/डरती हैं।
अम्हे रूसाम—हम/हम दोनों क्रोधित होते हैं/होती हैं।

अव्यय प्रयोग—दाणिं आयासत्तो जलबिंदुणो पडंति। गामो खिप्पं पढइ। सुरेसो केरिसो पुरिसो अत्थि? हं अवस्सं लिहामि। एगया महावीरो अत्थ आगओ। सो पाढं पुणो पढइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

मैं शीघ्र लिखता हूं। मैं धीरे लिखता हूं। मैं सेवा करता हूं। मैं बार-बार जाती हूं। मैं एक बार देखता हूं। मैं पीता हूं। मैं सदा हंसता हूं। मैं नहीं खाता हूं। मैं वहां नहीं जाती हूं। मैं आज पढ़ती हूं। मैं वहां खाती हूं। मैं अवश्य लिखता हूं। मैं अवश्य सेवा करता हूं। मैं आज पढ़ता हूं। मैं इस समय वहां जाता हूं। मैं फिर से लिखता हूं। मैं कैसा हूं? मैं नहीं

हसता हू । हम आज पढते हैं । हम दोनो लिखते हैं । हम नही हसते हैं । हम फिर से देखते हैं । हम आज सेवा करते हैं । हम दोनो धीरे बोलते हैं । हम वहा अवश्य जाती हैं । हम दोनो क्रोधित होते हैं । हम दोनो इच्छा करते हैं । हम दोनो जानते हैं । हम दोनो एक वार खाती हैं । हम दोनो सदा पढती है । हम दोनो वहा खाती हैं । हम दोनो इच्छा करती हैं । हम वहा लिखते हैं । हम दोनो यहा खाते हैं । हम एक वार वहा अवश्य जाते हैं । हम दोनो इस समय वहा निश्चय जाती हैं । हम शीघ्र दौडती है । हम दोनो घूमते हैं । हम एक वार खाते हैं । हम एक वार हसती हैं । हम पीते हैं । हम दोनो नही पढते हैं । हम दोनो जानते हैं । हम दोनो नही लिखती हैं । हम सदा हसती हैं । वह जल्दी पढता है । तुम कैसे आदमी हो ? मैं अवश्य पढता हूं । वह फिर से पढता है । एक वार तुम यहां आए थे ।

प्रश्न

१ उत्तमपुरुष के बहुवचन के प्रत्यय कौन-कौन से हैं और उनके रूप वनाने का सरल उपाय क्या है ?

२ नीचे लिखे शब्दो के प्राकृत शब्द क्या हैं ?
अरहत, आचार्य, सिद्ध, पार्श्वनाथ, जिन, साधु, वृद्ध, महादेव, उपाध्याय ।

३ नीचे लिखे अर्थो में कौन-कौनसी धातु प्रयोग मे आती है ?
वोलना, प्रवेश करना, क्रोध करना, छोडना, तपना, डरना, मारना, जलना, गिरना ।

४ नीचे लिखे अर्थो मे किन अव्ययो का प्रयोग करना चाहिए ?
अवश्य, एक वार, फिर से, कैसा, निश्चय, इस समय ।

शब्द संग्रह (परिवार वर्ग १)

पिता—जणओ, वप्पो, पिऊ
माता—माआ, जणणी, अम्मो
दादा—अज्जयो, पिआमहो
दादी—पिआमही, अज्जिआ
परदादा—पपिआमहो, पज्जओ
परदादी—पज्जिआ
नाना—माआमहो
नानी—माउम्मही
परनाना—पमायामहो
परनानी—पमाआमही
मामा—माउलो
मामी—मामी, मल्लाणी (दे०)
मामे का बेटा—माउलपुत्तो

० ० ० ० ०

आसिसा—आशीष
भिखारी, भीख मागने वाला—भिक्खारी

धातु संग्रह

जिंघ—सूंघना
अरिह—पूजा करना, अर्चना करना
सुमर—स्मरण करना
कह—कहना
दा—देना
पीस—पीसना
पतार—ठगना

अव्यय संग्रह

कह—कैसे
किमवि—कुछ भी
अइ (अति) अतिशय
अईव (अतीव) विशेष

● **पुलिंग आकारान्त गोपा शब्द, इकारान्त मुणि और उकारान्त साहु शब्द को याद करो। देखो—परिशिष्ट १, संख्या २,३,४।**

कर्म—कर्ता अपनी क्रिया के द्वारा जो वस्तु निष्पन्न करता है या जिस वस्तु पर क्रिया के व्यापार का फल पडता है उसे कर्म कहते है। कर्म की यह विस्तृत परिभाषा है। सक्षेप मे कर्ता जो कुछ करता है वह कर्म है। कर्म के तीन भेद है—

१. निर्वर्त्य—इसका अर्थ है उत्पाद्य। उत्पाद्य वस्तुए दो श्रेणी की होती है। (क) जो जन्म से उत्पन्न हो। जैसे—माता पुत्र को पैदा करती है। (ख) जो अविद्यमान हो और उसका निर्माण किया जाए। जैसे—मिस्त्री मकान बनाता है।

२ विकार्य—वर्तमान वस्तु को अवस्थान्तरित करने से जो विकार

होता है उसको विकार्य कहते हैं। जैसे—स्वर्णकार सोने का कुण्डल बनाता है।

३. प्राप्य—जिसमें क्रिया से कुछ भी विशेषता न होती हो उसे प्राप्य कहते हैं। जैसे—मैं चन्द्रमा को देखता हूं। इसमें न तो कुछ भी उत्पन्न होता है और न विकृत ही।

कर्तृवाच्य में कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। कर्म-वाच्य में कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है और क्रिया में लिंग और वचन कर्म के अनुसार होते हैं।

प्रयोग वाक्य

पज्जओ महावीर गच्छइ। वप्पो सीयं जलं पिबइ। मायामही बहु बीहइ। पिआमहो सव्वं जाणइ। माउलो सच्चं जपित्था। मायामहो किं जिघइ? पिआमही जिणं सुमरइ। मल्लाणी पासणाहं अरिहेइ। अज्जिआ कहं कहइ? अज्जओ सइ भुजइ। पज्जिआ जणणि आसिसं (आशीष) देइ। माआ किं इच्छइ? पिऊ उज्जाणम्मि अडइ। मामी भिक्खारिं किमवि ण देइ। जयमाला कुसुमं पतारइ। तस्स भज्जा चुण्ण (आटा) पीसइ। माउलो अइमहुर जपइ। अहं किमवि न इच्छामि। तुम कहं हसमि? तुज्झ अक्खराणि अईव सुंदरं संति। माउलपुत्तो किमवि न कहइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

दादा ने पिता का पालन किया। दादी कहानी कहती है। परदादा मामा को देखता है। परदादी एक बार खाती है। नानी सदा डरती है। मामी महावीर की पूजा करती है। माता क्या सूंघती है? मामा क्या चाहता है? दादा कथा सुनता है। नाना सब जानता है। दादी सदा ठंडा पानी पीती है। नानी बार-बार नहीं खाती। पिता सत्य बोलता है। वह कुछ नहीं चाहता। तुम कैसे पढते हो? राम अतीव सुन्दर बोलता है। माया का पुत्र कथा कहता है।

प्रश्न

१ कर्म कितने प्रकार के होते हैं? प्राप्यकर्म किसे कहते हैं?
२. कर्म में कौनसी विभक्ति होती है?
३ नीचे लिखे शब्दों के प्राकृत शब्द बताओ—
   परदादा, मामी, पिता, नाना, मामा, मा, परदादी, नानी।
४. नीचे लिखी धातुओं के अर्थ बताओ—
   अरिह, सुमर, जिघ, पीस, पतार, दा, कह।
५. देव शब्द के सारे रूप लिखो।
६. नीचे लिखे अव्यय किस अर्थ में प्रयुक्त होते हैं?
   अग्गे, विणा, अवि, अग्गओ, अईव।

शब्द संग्रह (परिवार वर्ग २)

चाचा—पिइज्जो, चुल्लपिऊ
चाची—पिइज्जजाया, चुल्लपिउजाया
भाई—भायरो, भाऊ, भाई (पु)
बहन—वहिणी, भगिणी, ससा
फुफेराभाई—पिउसियाणेयो
फुफेरी बहन—पिउसिआणिज्जा
मौसेराभाई—माउसिआणेयो
मौसेरी बहन—माउसिआणिज्जा
चचेराभाई—पिइज्जपुत्तो
चचेरी बहन—पिइज्जसुआ
बडाभाई—अग्गओ
छोटाभाई—अणुओ
बडी बहन का पति—भाओ (दे०)

० ० ० ० ०

प्रतिदिन—पइदिण
अपना घर—णियगिह
पूर्ण, पुण्य—पुण्ण
शत्रु—सत्तू (पु०)
सहायता—साहज्ज

धातु संग्रह

जव—जाप करना
ओणम्—नीचे नमना
ओग्गह—ग्रहण करना
जिण—जीतना
जुज्झ—लडाइ करना, युद्ध करना
णी, णे—ले जाना, पहुचाना
वड्ढ—वढना
लह—प्राप्त करना
पडिभा—मालुम होना
सक्क—सकना

अव्यय संग्रह

विणा—विना
अवि, पि—भी
अग्गे (अग्रे) आगे
अग्गओ (अग्रतस्) आगे से

हस धातु के कर्तृवाच्य के सब रूप याद करो (देखो—परिशिष्ट २ संख्या १) हसान्त धातुओ के रूप हस धातु की तरह चलते हैं।

ग्रामणी और खलपू शब्द के रूप याद करो (देखो—परिशिष्ट १ सख्या ४,६) ग्रामणी के रूप मुणि की तरह और खलपू के रूप साधु की तरह चलते हैं।

साधन—जिसके द्वारा कार्य किया जाता है उसे साधन या करण कहते है। एक कार्य करने मे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अनेक वस्तुएं सहायक होती

है। कार्य की सिद्धि मे जितने सहायक होते है, वे साधन नही कहला सकते। साधन तो वही है जो साधकतम हो यानि क्रिया की सिद्धि मे सबसे अधिक निकट सपर्क रखता हो। जैसे—वह पेन से लिखता है। अध्यापक रमेश को डंडे से मारता है। इन दो वाक्यो मे पेन और डडा साधन है। कही-कही पर विवक्षा से साधन को कर्ता भी बनाया जाता है। जैसे, सुरेश तलवार से काटता है। यहा तलवार से साधन है। तलवार काटती है—इस वाक्य मे तलवार जो साधन थी उसे कर्ता बना दिया गया है, यहा तलवार मे प्रथमा विभक्ति होगी। संप्रदान को भी साधन बनाया जा सकता है। जैसे—श्रावक साधु के लिए भिक्षा देता है। यहा साधु के लिए सम्प्रदान है। इस वाक्य को साधन मे इस प्रकार बदल सकते हैं—श्रावक भिक्षा से साधु का सत्कार करता है। साधन केवल वस्तु ही नही बनती, मन, वचन और शरीर भी साधन बनते है। साधन मे तृतीया विभक्ति होती है।

तृतीया विभक्ति

१ सह, साअ, सम और सद्ध के योग मे तृतीया विभक्ति होती है।

२ पिह, बिना और नाना शब्दो के योग मे तृतीया या द्वितीया या पचमी विभक्ति होती है।

३ जिस विकृत अग के द्वारा अगी का विकार मालूम हो उस अग मे तृतीया विभक्ति होती है।

४. जो जिस विशेप लक्षण से जाना जाए उसके लक्षण मे तृतीया विभक्ति होती है।

५ आर्ष प्रयोगो मे सप्तमी के स्थान पर तृतीया विभक्ति होती है।

६. जिस कारण या प्रयोजन से कोई कार्य किया जाता है या होता है, उसमे तृतीया विभक्ति होती है।

प्रयोग वाक्य

पिइज्जो जल पिवइ। पिइज्जजाया पासणाह् जवइ। बप्पो सिद्ध मुमरइ। भाअरो किं जिघइ? ससा सइ मालाए महावीर जवइ। पिउ-सियाणेयो मत्तु जिणइ। चुल्लपिउजाया पिउमियाणिज्ज णियगेह णेइ। माउ-मियाणेयो सया मच्च ओग्गहइ। माउमिआणिज्जा माउल सेवइ। पिज्जपुत्तो पइदिणं पिआमहीए मह भुजइ। पिइज्जसुआए सरीर वड्ढइ। अग्गओ किं जुज्झइ? अणुओ कह सुमरइ? अणुओ खिप्प गच्छइ। भाओ अज्ज धण लहइ। घरिणी माहुज्ज उच्छइ।

तृतीया विभक्ति के प्रयोग वाक्य

१ अग्गएण सह अणुओ गच्छइ। पिउसिआणिज्जाए सम पिउमिआणेयं भुजइ। माउसिआणिज्जा भगिनीइ सद्ध जवइ। बहिणीए माअ अणुओ मुट्ठ मुट्ठ जुज्झइ।

२ जलेण पिहू कमल चिट्ठिउ न सक्कड । जलेण विणा जीवण नत्थि ।
३ स नेत्तेण काणो अत्थि । माउलो पाएण खजो अत्थि ।
४ रयहरणेण मुणी पडिभाइ । सो मुहेण गुरेस अणुहरइ ।
५ तेण कालेण तेण समएण ।
६ पुण्णेण गुरु दिट्ठो । घणवालो अज्झयणेण अत्थ वसइ ।

प्राकृत में अनुवाद करो

१ चाचा माला से जाप करता है। बहिन लडाई क्यो करती है ? फुफेरा भाई सदा सत्य बोलता है। मौसेराभाई नही डरता है। फुफेरी बहिन क्या चाहती है ? मौसेरी बहिन ने भाई की सेवा की। छोटा भाई क्या सूघता है ? वह मा से क्या चाहता है ? पिता पानी के साथ क्या पीता है ? छोटा भाई बहन के साथ क्यो लडता है ? बडा भाई छोटे भाई के साथ दौडता है। भाई बहन के साथ खाता है। बडी बहन का पति पार्श्वनाथ का जाप करता है। चचेरा भाई चाची को धन देता है।

तृतीया विभक्ति का प्रयोग करो

२ मोहन के विना उसका रहना सम्भव नही है। जल से पृथक् कमल नही रह सकता।

३ सीता पग से लगडी है। रमा आख से काणी है। मोहन कान से बहरा है।

४ मुह से धर्मचद श्रीचद के समान है। वह रजोहरण से मुनि मालूम होता है। जटा से तापस जाना जाता है।

५ परीक्षा के प्रयोजन से वह यहा रहता है। पुण्य से भगवान के दर्शन होते हैं।

प्रश्न

१. साधन किसे कहते है और उसमे कौनसी विभक्ति होती है ?
२ प्रस्तुत पाठ के अनुसार तृतीया विभक्ति कहा-कहा होती है ?
३ नीचे लिखे शब्दो के प्राकृत शब्द बताओ—
चाचा, चाची, मौसेराभाई, फुफेराभाई, भाई, बहन, छोटाभाई, बडाभाई, मौसेरीबहन, चचेराभाई, फुफेरीबहन।
४ नीचे लिखी धातुओ के अर्थ बताओ—
ओग्गह, जुज्झ, जिण, ओणम, जव, वड्ढ ।
५ एक वाक्य ऐसा बनाओ जिसमे इस पाठ मे आए हुए दो शब्द, एक धातु, एक अव्यय और विभक्ति के छह नियमो मे से एक नियम हो ।
६ मुणि और साहु शब्द के रूप लिखो ।
७ नीचे लिखे अर्थो मे कौन से अव्यय प्रयोग मे आते है ? आगे से, विना, आगे ।

शब्दसंग्रह (परिवार वर्ग ३)

पति—भत्ता, सामी, पई (पु)
देवर—दिअरो, देअरो, अण्णओ (दे)
देवरानी—अण्णी (दे.) अण्णिआ (दे)
ससुर—ससुरो
साला—सालो
बडासाला—अवलो (म)
सासरा—ससुरालयो
पत्नी—भज्जा, भारिया, दारा
साली—साली
दुलहिन—अणरहू (स्त्री दे०) णवा
सास—सस्सू, सासू, अत्ता (दे.)
बडीसाली—कुली
प्रेयसी—पीअसी, पेअसी

० ० ० ० ०

घूघट—अगुट्ठी, विरगी (दे) अवउठण, अवगुठण।

धातु संग्रह

णिवेअ—निवेदन करना
पणम—प्रणाम करना
आरोहण—ऊपर चढना
हो—होना
सिक्ख—शिक्षा देना
सकुच—संकोच करना

अव्यय संग्रह

अण्णोण्ण, अण्णमण (अन्योन्य) परस्पर, आपस में
अणतर (अन्तर) पश्चात्, इसके बाद
अन्तो (अन्तर) भीतर
अण्णहा (अन्यथा) नहीं तो

स्त्रीलिङ्ग आकारान्त माला शब्द के रूप याद करो (देखो परिशिष्ट १ संख्या २२)।

दानपात्र

कर्म के द्वारा अथवा क्रिया के द्वारा श्रद्धा, उपकार या कीर्ति की इच्छा से जिसको कोई वस्तु दी जाए अथवा जिसके लिए कोई कार्य किया जाए, उसे दानपात्र कहते हैं। दानपात्र में चतुर्थी विभक्ति होती है। श्रमण के लिए भिक्षा देता है—इस वाक्य में श्रमण को श्रद्धा से भिक्षा दी जाती है। गुरु को कार्य निवेदन करता है—यहा निवेदन श्रद्धा से किया जाता है, इस लिए गुरु की दानपात्र संज्ञा है। चोरों को वस्त्र देता है, राजा को कर देता

है—इन दो वाक्यों मे देने की क्रिया अवश्य है, पर श्रद्धा, उपकार या . .
की भावना मे नही है। पहले वाक्य से रुपयों के विनिमय से कार्य कराया
जाता है। दूसरे वाक्य मे व्यवस्था की दृष्टि से देता है। मन न होने पर भी
देना होता है। इसलिए ऊपर के दोनों वाक्यो की दानपात्र संज्ञा नही है।

चतुर्थी विभक्ति

१ रोय (रुच्) अर्थ वाली धातुओं के योग मे जिस व्यक्ति को जो पदार्थ रुचता हो, उस व्यक्ति मे चतुर्थी विभक्ति होती है।

२ कुज्झ (क्रुध्) दोह (द्रुह्), ईस (ईर्ष्) तथा असूअ (असूय) धातुओं के योग मे जिनके ऊपर क्रोधादि किया जाता हो उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है।

३ सिह (स्पृह्) धातु के योग मे चतुर्थी विभक्ति विकल्प से होती है।

४ समत्थ (समर्थ) अर्थ वाले शब्द (अलं, खमो, पभू), नमो, सुत्थि, (स्वस्ति) सुहा, सुआहा आदि शब्दों के योग मे चतुर्थी विभक्ति होती है।

५ हिअ (हित) और सुह (सुख) शब्दों के योग मे चतुर्थी विभक्ति होती है।

६ जिस वस्तु से किसी वस्तु का निर्माण किया जाता हो उस निर्मित वस्तु मे चतुर्थी होती है, उपादान वस्तु का साथ में प्रयोग हो तो।

७ कर्ज लेना धातु के योग मे चतुर्थी विभक्ति होती है।

८ सलाह (श्लाघ) हुण, (ह्नु) चिट्ठ (स्था) सव (शप्) धातुओ के योग मे चतुर्थी विभक्ति होती है।

प्रयोग वाक्य

पई धम्म न करेइ। भज्जा पइणा सह पइदिण उज्जाणो परिभमइ। अवलो णियभगिणि किं कहइ ? कुली अज्ज गिहे नत्थि। अणरहू ससुरालय गच्छइ। देअरो महुवयण जपइ। अण्णिआ दिणे सइ भुजइ। अवलो ससुर पणमइ। मालो जामाउ सक्कारेइ। सासू अणरहुं किं पुच्छइ ? साली अण्णअ हसइ। णवा ससुरालये अपरिचिआ होइ। पीअसी पइणा सम भमइ। तणयो जणअस्स सव्वं निवेअइ। मुणी सयारस्स गिरिं आरोहइ।

चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग

१ मज्झ मोअगा रोअन्ते। तुज्झवियारो मम रोयइ।

२ रमेसो रामाय कुज्झइ, दोहइ, ईसइ, असूअइ वा।

३ विमला पुप्फाण पुप्फाणि वा सिहइ। लोभी धणस्स धणं वा सिहइ।

४ दारा सासूए कहण सहणस्स पभू। अह जंपणाय समत्थो मि। मल्लो मल्लस्स अल।

५ बालअस्स हिअ सुह वा लहुभोयण ।
६ सो कुंडलाय हिरण्ण णेइ । रामो घटाय मत्तिआ इच्छइ ।
७ नमोत्थु ण अरहताण भगवताण । भत्ताण सुत्थि । पिअराण सुहा ।
८ विमलो मोहणाय सय धरइ ।
६ विणयाय सलाहइ, विणयाय हुणइ, विमलाय चिट्ठइ, सुरेसाय सवइ ।

प्राकृत में अनुवाद करो

पति घर मे नही है । पत्नी अपने देवर को भिक्षा देती है । देवरानी सासू की सेवा करती है । माली साले को प्रतिदिन प्रणाम करती है । ससुर सास से क्या कहता है ? साला ससुर को नमस्कार करता है । पत्नी प्रेयसी से गुस्सा करती है । सासरे मे दुलहन सकोच करती है । पत्नी पति के साथ कहा जाती है ? बडासाला अपनी बहन को शिक्षा देता है । बडीसाली सास को प्रतिदिन प्रणाम करती है ।

विभक्ति का प्रयोग करो

१ तुम्हे दूध प्रिय है । राम को ठण्डा पानी प्रिय है ।
२ सुशीला लता से ईर्ष्या करती है । सुलोचना रमा से क्रोध करती है । राम मोहन से द्रोह करता है । ललिता से पद्मावती असूया करती है ।
३ राजेन्द्र फूलो को चाहता है । सीता गर्म दूध चाहती है ।
४ मैं धन देने मे समर्थ हू । गुरु को नमस्कार है । प्रजा (पआ) का कल्याण हो (सुत्थि) । पितरो को समर्पित है (सुहा) ।
५ ग्राम के लिए स्कूल हितकर है । दूध तुम्हारे लिए सुखकर है ।
६ मकान के लिए यह काष्ठ है । सोना कुडल के लिए है ।
७ श्याम रामू से सौ रुपये कर्ज लेता है ।
८ अग्रगामी अनुगामी की श्लाघा करता है ।

प्रश्न

१ दानपात्र किसे कहते है ? उसमे कौनसी विभक्ति होती है ?
२ देना और दानपात्र का भेद बताओ ।
३ चतुर्थी विभक्ति कहां-कहा होती है ? इस पाठ के अनुसार एक-एक उदाहरण दो ।
४ नीचे लिखे शब्दो के प्राकृत शब्द बताओ—
सासू, दुलहिन, पत्नी, प्रेयसी, साली, सासरा, देवरानी, जवाइ (दामाद), देवर, बडी साली और बडा साला ।
५ नीचे लिखी धातुओ के अर्थ बताओ और वाक्य मे प्रयोग करो ।
रूस, पणाम, भिक्ख, णिवेअ, सकुच ।
६ हुन धातु के कर्तृवाच्य के सारे रूप लिखो ।
७. अण्णमण्ण, अणतर, अतो—इन अव्ययो के अर्थ बताओ ।

११ अपादान

शब्द संग्रह (परिवार वर्ग ४)

दोहिता—पडिपोत्तयो
बेटा—पुत्तो, तणयो, सुनू
भानजा—भाइणेज्जो, भाइणेयो
भतीजा—भाइसुओ
पोता—नत्तुणियो, पोत्तो
प्रपोता—पपोत्तो, पडिपुत्तो

बेटी—पुत्ती, तणया, दुहिआ, धूया
भानजी—भाइणेज्जा, भाइणेया
भतीजी—भाइसुआ
पोती—नत्तुणिया
प्रपोती—पपोत्ती
अविवाहित—अकडतलिम (दे०)

० ० ० ० ०

सखी, सहेली—अत्थयारिआ (दे०)
घर—घरो (दे०)
पत्थर—पाहणो, पत्थरो

मालिक—सामी
पाप—पाव
आधाकर्मदोष से युक्त—आहाकड (वि)

धातु संग्रह

अस—होना
पवह—निकलना
पराजय—हारना
पमाय—प्रमाद करना

आगच्छ—आना
अहिजाअ—उत्पन्न होना
दुगुच्छ—घृणा करना
विरम—विराम लेना

अव्यय संग्रह

पगे (प्रगे)—प्रातःकाल
य, अ, च—और
अपरज्जु (अपराद्य)—दूसरे दिन

अहुणा—(अधुना) अभी
अत्थ—(अत्र) यहां
अहा (यथा)—जिस प्रकार

हो धातु के कर्तृवाच्य के सब रूप याद करो : (देखो परिशिष्ट २ संख्या २) आकारान्त, इकरान्त आदि सभी स्वरान्त धातुओं के रूप हो धातु की तरह चलते हैं।

अपादान

अपाय का अर्थ है—विश्लेष यानी अलग होना। एक का दूसरे से अलग होना अपाय कहलाता है। वह दो प्रकार का होता है (१) शरीर से और (२) बुद्धि से। सुरेश घोडे से गिरता है। पहले सुरेश घोडे के साथ चिपका हुआ था, गिरने से वह घोडे से अलग हो गया। अलग होने की जो अवधि है उसमे पंचमी विभक्ति होती है। बुद्धिपूर्वक विभाग मे शरीर से अलग होने की

कोई आवश्यकता नहीं होती, केवल बुद्धि में ही अलगाव होता है। जैसे—राम शत्रुओं से डरता है। मोहन धर्म से प्रमाद करता है। इन दो वाक्यों में शत्रुओं और धर्म से विभाग होता है, उसमें पंचमी विभक्ति होती है। पूर्व के पाठों में कारकों के चिह्न बतलाए गए हैं, उनमें साधन और अपादान का एक ही चिह्न है—से। फिर भी दोनों का अन्तर स्पष्ट ज्ञात होता है।

पंचमी विभक्ति

१. जुगुप्सा, विराम और पमाय तथा इनके समानार्थक शब्दों के योग में पंचमी विभक्ति होती है।

२. जिससे डरना हो उसमें पंचमी विभक्ति होती है।

३. परा पूर्वक जय (जि) धातु के योग में जिससे हारना है उसकी अपादान संज्ञा होती है और उसमें पंचमी विभक्ति होती है।

४ जिससे उत्पन्न होना है या निकलना है उसमें पंचमी विभक्ति होती है।

प्रयोग वाक्य

पुत्तो पिउं पणमइ परे। भाइणेज्जो दुद्धं पिवइ। नत्तुणिया घरे खेलइ। माउलो भाइणेयेण सह किं चिंतइ? वप्पो गिहस्स सामी अत्थि। अज्जओ अहुणा समारे नत्थि। पज्जओ पुअणीओ अत्थि सव्वाणं गिहवासिणं। पई णिसाए न भुंजइ। नत्तुणियो विसेसो सुसीलो य अत्थि। भाइणेज्जा लेहं लिहइ। पपोत्ती गिहांगणे खेलइ। धूया अहुणा अकंडतलिमा अत्थि। भाइणेया अत्थयाणिआए समीवत्तो पोत्थयं नेति। रामो पिउणो वणं गेण्हइ। सो कुसुमत्तो वण्णं मग्गइ। तुमं गिरिणो पडिस्था। सो पव्वयत्तो पाहुणा नेति।

विभक्ति का प्रयोग

१. सो सज्झायत्तो पमायइ। सोहणो भासणत्तो विरमइ। साहू पावत्तो दुगुञ्छइ।

२ कमला कलहत्तो बीहइ। गुणसिरी सप्पाओ बीहइ। सिंहे सप्पाओ भयं णत्थि।

३. सोअणाहो अज्झयणत्तो पराजयइ।

४ कामत्तो कोहो अहिजायइ। संकप्पत्तो कामो अहिजायइ। हिमवत्तो गंगा पवहइ।

अव्यय का प्रयोग

अह परं आयरियं पणमामि। अहुणा अन्न को वि साहू नत्थि। सो अपरज्जु न आगमिहिइ। आहारत्ता भिक्खं साहू न गेण्हइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

भतीजा दादा के साथ घूमता है। भानजा लडाई नही करता है। पोता दादा के साथ खाना खाता है। भानजी मौसी के साथ यहा कब आई है? पोती पाप से डरती है। प्रपोता सुदर है। बेटा बाप को प्रणाम करता है। बेटी ससुराल जाती है। भतीजी अभी तक अविवाहित है। भानजी सहेली के साथ खेलती है। बेटी दादी की सेवा करती है। नानी पाप नही करती है।

विभक्ति का प्रयोग करो

१ हम मनुष्य से दुगुञ्छा करते है। वे लिखने से विराम लेते है। लालचन्द धर्म करने मे प्रमाद करता है।

२ वह गाय से भी डरता है।

३ श्याम श्रम से हारता है। धर्मचन्द अध्ययन से हारता है।

४ परिग्रह से भय उत्पन्न होता है। भय से हिंसा उत्पन्न होती है। क्रोध से मोह उत्पन्न होता है।

अव्यय का प्रयोग करो

प्रात काल मैं जाप करता हू। अभी यहा कोइ भी आदमी नही है। मै दूसरे दिन यहा आऊगा। जिस प्रकार सुख हो, वैसा करो।

प्रश्न

१ अपादान किसे कहते है? उसमे कौन-सी विभक्ति होती है?

२ अपादान कितने प्रकार का है? उदाहरण से स्पष्ट करो।

३ नीचे लिखे शब्दो के प्राकृत शब्द बताओ—
भानजा, भानजी, भतीजा, पोता, प्रपोती, बेटी, प्रपोता, पोती, भतीजी, बेटा।

४ नीचे लिखे धातुओ का प्रयोग करो—
पवह, अहिजाअ, दुगुञ्छ, पमाय, विरम

५ पचमी विभक्ति किस-किस के योग मे होती है?

६ माला शब्द के रूप लिखो।

७ नीचे लिखे अर्थों मे कौन-सा अव्यय प्रयोग मे जाता है?
दूसरे दिन, प्रात.काल, अभी, जिस प्रकार

शब्द संग्रह (परिवार वर्ग ५)

साढू—सालीधवो (म) बूआ—पिउस्सिआ, पिउच्छा पिउच्छा
जमाई—जामाया मौसी—माउसिआ, ताउसी, माउसिया (दे०)
मौसा माउसिआपई भौजाई—भाउजाया, भाउज्जा, भाउज्जाइया
पौत्र की पत्नी—नत्तुइणी ननद—णणंदा
पत्नी—पत्नी सिरीमई, घरिणी पुत्रवधू—णोहा, पुत्तवहू, सुण्हा
दहेज—अण्णाण (दे०) समर्पण—समप्पणं
नाम—अभिहाण वार्ता—वत्ता

धातु संग्रह

सिव्व—सीना याच—मांगना
वर—सगाई करना विवह—विवाह करना
चुंब—चुम्बन लेना अल्लव—बोलना

अव्यय संग्रह

संपइ (सम्प्रति) इसी समय किर, किल (किल) निश्चय, संशय
पइ—प्रति, ईसि (ईषत्) थोड़ा
अवरि, अवरिं, उवरि (उपरि) ऊपर एगहा (एकधा) एक प्रकार

स्त्रीलिङ्ग इकारान्त मइ, ईकारान्त वाणी, उकारान्त धेणु और ऊकारान्त वधू शब्दों को याद करो। देखो—परिशिष्ट १ संख्या २३,२४,२५,२६। इनके रूप मइ शब्द की तरह ही चलते हैं।

संबंध

सम्बन्ध अनेक प्रकार का होता है—
(क) स्वस्वामि संबंध—घोड़े का मालिक
(ख) जन्यजनक संबंध—त्रिशला का पुत्र
(ग) अवयव-अवयवी संबंध—पशु का पैर
(घ) आधार-आधेय संबंध—वृक्ष की शाखा
(ङ) प्रकृतिविकारभाव संबंध—दूध का विकार दही
(च) समूहसमूहिभाव संबंध—गायों का समूह
(छ) समीपसमीपिभाव संबंध—घड़े का स्वामी

(ज) पाल्य-पालक भाव सबध—पृथ्वी का स्वामी
सबध मे षष्ठी विभक्ति होती है।

षष्ठी विभक्ति

१ तुल्य अर्थ वाले शब्दो (तुल्य, सम, सन्निभ) के योग मे तृतीया और षष्ठी विभक्ति होती है।

२ कृत्य प्रत्यय (तव्य, अनीय, य, क्यप् और घ्यण्) के योग मे कर्ता मे षष्ठी और तृतीया विभक्ति होती है।

३ विभाग किए बिना निर्धारण करने के अर्थ मे षष्ठी विभक्ति होती है।

४ स्मृति अर्थ की धातु के योग मे षष्ठी विभक्ति विकल्प से होती है।

प्रयोग वाक्य

सालीधवो अज्ज अत्थ आगमिस्सइ। माउसिआ वत्थ सिव्वइ। पिउस्सिआए ससुरालयो सग्गो (स्वर्ग) विज्जइ। घरणी घरम्मि किं करेइ ? माउस्सिआपई अण्णाणस्स चिंताए किसो जाओ। भाउजाया नणदाए वत्त करेइ। सुण्हा केण सह भुजइ ? सिरीमईइ पइ पइ कह समप्पण न विज्जइ ? णोहा नत्तुइणीए सह सव्वेसिं परिचओ कारवेइ। पिउच्चा पुत्त चुवइ। अणिआ नत्तुणिय वरइ। पिउसिआणेयो रमेस विवहइ। साहू सव्वाइ वत्थूइ याचइ। सालीधवो मणिय अल्लवइ।

अव्यय प्रयोग

सपइ अह पाठसाल गच्छामि। पारसो तत्थ किल गमिहिइ। पोत्थए ईसिं भारो अत्थि। रुक्खस्स अवरि किं अत्थि ?

विभक्ति का प्रयोग

(क) रण्णो पहाणो णिउणो अत्थि।
(ख) दीवाए पुत्तो महापुरिसो आसि।
(ग) आयरिअतुलसीए नयणाइ दीहाइ सति।
(घ) कलवस्स साहा केरिसी होइ ?
(ङ) नवणीओ दहिणो विआरो हुवइ।
(च) आसाण समूहो अज्ज अत्थ आगमिस्सइ।
(छ) अस्स घडस्स सामी को अत्थि ?
(ज) रायगिहस्स राइणो किं अभिहाण आसि ?
१ जिणस्स तुल्लो कालुरामायरिओ आसि।
२. तस्स किं कअ ? मह किमवि ण कहिअ।
३ मणुआण खत्तिओ सूरो। धेणूण कसिणा बहुखीरा।
४ सो माआए सुमरइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

साढू का नाम क्या है ? बुआ भतीजी से बात करती है। मौसी अभी तक अविवाहित है। भौजाई ननद के दहेज मे डरती है। मौसा आज हमारे यहा आएंगे। पुत्रवधू बहुत सुशील है। पत्नी क्रोध बहुत करती है। पोते की पत्नी मे समर्पण की भावना कम है। जमाई धन मागता है। सासू दामाद से बात करती है। माता पुत्री की सगाई करती है। पिता पुत्र का विवाह करता है। सीता अपने पुत्र का चुबन लेती है। वह कुछ नही मागता है।

विभक्ति का प्रयोग करो

(क) गाय का मालिक धनराज है।
(ख) सुशीला का लडका नही पढता है।
(ग) गाय की आख मे पीडा है।
(घ) वृक्ष के फूल सुदर है।
(ङ) तू बहुत थोडा खाता है।
(च) इसी समय वहा आओ। निश्चय ही वह तुम्हारे साथ जाएगा। धर्म के प्रति आस्था रखो। भैस के दूध का दही अच्छा होता है।
(छ) गायो का समूह रात मे यहा बैठता है।
(ज) चदेरी का राजा कौन था ?

१ गौतमस्वामी महावीर के समान हो गए।

२ उसने क्या पढा ? राज ने भाषण मे क्या कहा ? कुलदीप ने बहुत अच्छा लिखा है।

३ पढने वालो मे विभा प्रवीण है। अध्यापको मे रामविलास प्रवीण है।

४ वह पिता का स्मरण करता है।

प्रश्न

१ सम्बन्ध कितने प्रकार का होता है ? उसमे कौन-सी विभक्ति होती है ?

२ षष्ठी विभक्ति कहा-कहा होती है ?

३ नीचे लिखे शब्दो के प्राकृत शब्द बताओ—
साढू, भौजाई, मौसी, बुआ, पुत्रवधू, ननद, पौत्र की पत्नी, दहेज, पत्नी।

४ इन धातुओ के अर्थ बताते हुए वाक्य मे प्रयोग करो—
सिव्व, याच, चुब, अल्लव, विवाह।

५. हो धातु के कर्तृवाच्य के सब रूप लिखो।

६ नीचे लिखे अर्थो मे कौन से अव्यय प्रयोग मे आते है ?
थोडा, इस समय, प्रति, निश्चय।

शब्द संग्रह (गोरस वर्ग)

दूध —खीर, पयो, दुद्ध, अलिआर (दे०) दही—दहि (न)
घी—घय, सप्पि, अज्ज नवनीत—णवणीय, दहिउप्फ (दे०)
खीर—पायसो मट्ठा—घोलं (दे०)
मावा, खोआ—किलाडो, कूचिआ छाछ—तक्क
दही की मलाई—दहित्थारो (दे०) दूध की मलाई—करघायलो (दे०)
कढी—कढिआ (दे०) तीमण खट्टीराव—अवेली (दे०)
रायता—दाहिअ (स) श्रीखंड—छिहडओ (दे०)

० ० ० ० ०

सभव—सहव आजकल—अज्जत्ता

धातु संग्रह

पज्जल—जलाना णिवस—निवास करना, रहना
उवदंस—दिखाना, पास जाकर बताना कील—क्रीडा करना, खेलना
खास—खासना अहिलस—इच्छा करना

अव्यय संग्रह

एत्थ (अत्र) यहाँ कओ (कुत) कहाँ से
अहवा, अहव (अथवा) या, अथवा असइ (असकृत्) अनेक बार
कहिआ कहिं,कहि (क्व, कुत्र) कहा, किस स्थान मे। अहे (अधस्) नीचे

नपुंसक लिंग अकारान्त वण शब्द को याद करो। देखो—परिशिष्ट १ संख्या ३०।

आधार—जिसमे क्रिया हो रही है उसे आधार कहते है। वह छह प्रकार का है—

(१) औपश्लेपिक—जिस आधार से सलग्न पदार्थ का बोध हो उस आधार को औपश्लेषिक कहते हैं। जैसे—वह चटाइ पर सोता है। धर्मेन्द्र वृक्ष पर बैठता है।
सोने वाला चटाई से और बैठने वाला वृक्ष से सलग्न है।

(२) सामीप्यक—जिससे समीपता का बोध हो, उसे सामीप्य आधार कहते है। जैसे—गायें बरगद के नीचे खडी है। अशोक वृक्ष के नीचे सीता बैठी है।

(३) अभिव्यापक—व्याप्य का बोध कराने वाले शब्द को अभिव्याप्य

आधार कहते हैं। जैसे—दूध मे घी है। तिलो मे तेल है।

(४) वैषयिक—जिससे विषय (निवास करने के क्षेत्र) का बोध हो उसे वैषयिक आधार कहते है। अरण्य मे सिंह गर्जता है। तपोवन मे तपस्वी तप करता है।

(५) नैमित्तिक—जिस शब्द से होने वाले कार्य के निमित्त की सूचना मिलती है उसे नैमित्तिक आधार कहते है। जैसे—वह युद्ध के लिए तैयार होता है।

(६) औपचारिक—उपचार यानि संकेत को मानकर जो कहा जाता है उसे औपचारिक आधार कहते है। जैसे—वृक्ष पर बिजली चमक रही है। अंगुली की नोक पर चन्द्रमा है।

आधार मे सप्तमी विभक्ति होती है।

(क) एक प्रसिद्ध क्रिया से दूसरी अप्रसिद्ध क्रिया का काल जाना जाए तो पहली क्रिया मे सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे—सूर्यास्त के समय वह घर आया।

(ख) अनादर भाव से किसी की उपेक्षा कर क्रिया करने पर अनादर भाव वाले मे सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे—रोती हुई माता को छोड पुत्र दीक्षित हो गया।

(ग) सामी, ईसर, अहिवइ, दायाद, सक्खी, पडिहू और पसूअ—इन शब्दो के योग मे षष्ठी और सप्तमी विभक्ति विकल्प से होती है।

(घ) निर्धारण—समुदाय मे से एक की किसी विशेषण के द्वारा विशिष्टता दिखाई जाए तो समुदायवाची शब्द मे सप्तमी विभक्ति विकल्प से होती है।

प्रयोग वाक्य

जो संसारे आसत्तोऽत्थि सो मूढो। संसारम्मि रागा दोसा य अणादिकालाओ संति। मेहा सव्वत्थ परिओ वरिसंति। रामस्स गिहं आवणे (बाजार मे) अत्थि। ते गिरिम्मि कन्थ णिवसंति। सरस्सईए गिहे अग्गी पज्जलइ। वाउम्मि गमणं सहवं नत्थि। छिहंटओ सुमेरुस्स गेअइ। अहं पइदिणं दुद्धं पिबामि। रिसहो धयं वा अज्ज वा न अहिलसइ। नवणीयं अन्नि-आरेण जाअइ। तक्कं भोयणेण सद्धिं हिमकरं हवइ। मज्झण्हस्स पच्छा दहिं न भोत्तव्वं किं अ कफकारअं होइ। घोलं सीअलं भवइ। जो दहिं खाअइ सो खासइ। मज्झ कंधारअसो गेयइ। मए अज्ज दहियारो भुत्तो। अहं मज्झ भोयणे कढिअं भुंजामि। मेवाडदेसे जणा अवेल्लिं खाअंति। सुद्धो मणरिक्को दुल्लहो अत्थि। सिलाडा सिरिट्ठो भवइ। दाडिमं दरकरं भवइ।

सप्तमी विभक्ति

१ पक्खिणो रुक्खे चिट्ठति ।
२ असोगरुक्खम्मि मीया उवविसइ ।
३. तिलेसु तेल्ल विज्जइ ।
४ ममेअसिहरे तवस्सिणो तवति ।
५ जुज्झाय सज्जेति ।
६ अंगुलीए अग्गे चदिमा दिस्सइ ।

(क) अत्थगयम्मि सो गिह आगओ ।

(ख) रोअन्तीए माउए चइत्ता पुत्तो दीक्खिओ जाओ ।

(ग) गवाण गोसु वा सामी, आसाण आसेसु वा इसरो अहिवई वा गआण गउएसु वा पसूओ ।

(घ) गवाण गवासु वा कण्हिणा बहुक्खीरा । साहूण साहूसु वा हेमरायो पडू । कईसु वा बलभद्दो सेट्ठो ।

प्राकृत में अनुवाद करो

गाय का दूध मीठा होता है। कल्याणश्री प्रतिदिन दही खाती है। घी सब लोगो को सुलभ नही है। छाछ स्वास्थ्य के लिए उपयोगी है। आजकल शुद्ध नवनीत का दर्शन दुर्लभ है । हर घर मे खोआ नही मिलता है। मैने दूध की मलाई बहुत खाई है। दही की मलाई रोटी के समान मोटी है। कढी कौन नही खाता ? गरम खट्टी राब मुझे बहुत प्रिय है। गोरस हमारे घर मे नही है। रमेश के लिए प्रतिदिन राइता खाना सभव नही है। माता अग्नि जलाती है। जयती पालनपुर मे निवास करता है। आज श्रीखड खाने की किसकी इच्छा है ? बच्चा अपना प्रमाणपत्र पिता को दिखाता है। लडके घर मे ही खेलते है। हमारे घर के नीचे तुम रहते हो। तुमने पुस्तक कहा रखी है ? दिन मे अनेक बार वहा जाना अच्छा नही है। राम अथवा गोपाल उसके पास जाए। जीव कहा से आया है ? यहां पर वह कितने दिन ठहरेगा ?

विभक्ति का प्रयोग करो

१ वह प्रतिदिन जमीन पर सोता है ।
२. अशोकवृक्ष के नीचे बालक पढते हैं ।
३. मिट्टी मे सोना है। अरणिलकडी मे आग है ।
४ जैनविश्वभारती मे पारमार्थिक शिक्षण सस्था है ।
५. गुरु दर्शन के लिए वह तैयार होकर जाता है ।
६ उस पर्वत पर चद्रमा है। अगुली के सामने राम का घर है ।

(क) गोधूलि के समय वह यहा से गया था ।

व्याख्यान के समय टमकोर का संघ गुरुदर्शन के लिए आया था ।

(ख) बच्चे को रोते हुए छोडकर माता साधु को भिक्षा देने लगी ।

(ग) इस पुस्तक का मालिक कौन है ? जोधपुर का अंतिम अधिपति कौन था ?

(घ) संस्कृत मे कालिदास श्रेष्ठ विद्वान् हुआ है । सुषमा अपनी कक्षा मे सबसे अधिक सुशील है । प्रभा अपनी कक्षा मे याद करने मे सबसे आगे है ।

प्रश्न

१. मइ और वधू शब्द के सारे रूप लिखो ।
२ आधार कितने प्रकार का होता है ? एक-एक उदाहरण देकर स्पष्ट करो ।
३. आधार मे कौनसी विभक्ति होती है ?
४ नीचे लिखे शब्दो के योग मे कौनसी विभक्त होती है ?
   दायाद, पसूअ, अहिवइ ।
५ विभक्ति घ का दो उदाहरण प्राकृत मे दो ।
६ नीचे लिखे शब्दों के प्राकृत शब्द बताओ—
   दूध की मलाई, छाछ, राइता, मभव, मावा, आजकल, खट्टीराब, दही की मलाई, खीर, नवनीत, कढी, दही
७ नीचे लिखी धातुओ के अर्थ बताओ—
   उवदस, णिवम, पज्जल, कील, खास, अहिलस ।
८ किन्ही दो अव्ययो का वाक्य मे प्रयोग करो ।

शब्द संग्रह (देश्य)

दवरिया—छोटी रस्सी
दाढिया—दाढी
दारद्धंता—पेटी, सदूक
दालिअ—नेत्र
दसु (पु)—शोक, दिलगिरी
दिअलिओ—मूर्ख
दिअहुत्त—दुपहरका भोजन
पडिच्छदो—मुख
पडिखद्धो (वि)—मारा हुआ
पडिभेयो—उपालंभ, निंदा
पडलग—टोकरी
पडाली—घर के ऊपर की कच्ची छत, चटाई आदि से छाया हुआ स्थान

धातु संग्रह (देश्य)

अगोहल—स्नान करना
अच्छुर—बिछाना
अल्ल—चिल्लाना
अल्लव—समर्पण करना
अक्कोस—आक्रोश करना
अप्फोड—ताली बजाना

नपुंसक लिंग के इकारान्त दहि और उकारान्त मधु शब्द को याद करो। देखो—परिशिष्ट १ संख्या ३१,३२

देश्य

प्राकृत भाषा मे शब्द दो प्रकार के होते हैं—सस्कृतसम और देश्य। जो शब्द सस्कृत के शब्दो से पूर्ण अथवा कुछ समानता रखते हैं उन्हे सस्कृतसम कहते हैं। जो शब्द अति प्राचीन होने के कारण व्युत्पत्ति की दृष्टि से सस्कृत भाषा और प्राकृत भाषा से सिद्ध नही होते, उन्हे देश्य शब्द कहते हैं। प्राकृत भाषा मे जो धातुओ के आदेश हैं वे देश्य नही है।

वेद आदि प्राचीन शास्त्रो मे तथा संस्कृत भाषा के साहित्य में और कोषो मे देश्य शब्दो का प्रयोग बहुलता से प्राप्त होता हैं। देश्य शब्दो मे द्राविड भाषा के भी शब्द है। हिन्दी, गुजराती और राजस्थानी भाषा से मिलते-जुलते अनेक शब्द मिलते हैं। देश्य शब्दो की तरह देश्य धातुएं (क्रिया-पद) भी होती हैं।

नियम ३ (गौणादयः २।१७४)—गौण आदि शब्द निपात हैं। प्रकृति (मूलशब्द) प्रत्यय, लोप, आगम, वर्णविकार आदि जिनमे नही होते उन्हे निपात कहते हैं। गोणो (गौ) बैल। गावी (गाव) गैया। बइल्लो (बलिवर्द) बैल।

आऊ (आप) पानी। पञ्चावण्णा (पञ्चपञ्चाशत्) पचपन। तेवण्णा (त्रिचत्वारिंशत्) तयालीस। विउसग्गो (व्युत्सर्ग) परित्याग। वोसिरण (व्युत्सर्जनम्) परित्याग। बहिद्धा (बहिर्मैथुन वा) बाहर और मैथुन। णामुक्कसिअ (कार्यम्) कार्य। कत्थइ (क्वचित्) कहीं। वम्हलो (अपस्मार) केसर। कंदुट्ट (उत्पलम्) नीलकमल। छिछि, छिद्धि (धिक्धिक्) अनेक-धिक्कार। धिरत्थु (धिगस्तु) धिक्कार हो। पडिसिद्धी, (प्रतिस्पर्धा) प्रतिस्पर्धा। चच्चिक्क (स्थासक) चंदन आदि सुगन्धित वस्तु को शरीर पर मसलना। ऐसे अनेक शब्द हैं।

संस्कृतसम शब्द

प्राकृत	संस्कृत	प्राकृत	संस्कृत
संसार	संसार	दावानल	दावानल
नीर	नीर	काम	काम
जल	जल	दाह	दाह
मोह	मोह	नाग	नाग
गाढ	गाढ	धूलि	धूलि

संस्कृत के कुछ समान शब्द

प्राकृत	संस्कृत	प्राकृत	संस्कृत
सुवण्ण	सुवर्ण	तडाय	तडाग
कणग	कनक	रंभा	रम्भा
घड	घट	सण्ढ	षण्ढ
झज्झर	झर्झर	पडिमा	प्रतिमा
नयर	नगर	बंधव	बान्धव
महुर	मधुर	धम्म	धर्म
नाह	नाथ	रुक्ख	रूक्ष

संस्कृत के समान क्रिया पद

संस्कृत	प्राकृत	संस्कृत	प्राकृत
भवति	भवति	मरते	मरते
धाति	धाति	हन्ति	हनति

संस्कृत के कुछ समान क्रियापद

प्राकृत	संस्कृत	प्राकृत	संस्कृत
जुज्झते	युध्यते	नच्चति	नृत्यति
पुच्छति	पृच्छति	कुणति	कृणोति
वन्दित्ता	वन्दित्वा		

राजस्थानी भाषा के समान प्राकृत शब्द

प्राकृत	राजस्थानी	प्राकृत	राजस्थानी
घर	घर	गोर	गोर
खड्डा	खड्डा	गडबड	गडबड-गोलमाल
गुड	गुड	काहार	कहार
कटार	कटार	पत्थर	पत्थर
वेरूण	वेरूण	कलस	कलस
घडो	घडो	सिंघ	सिंघ
बोर	बोर	उच्छह	उच्छाह

प्रयोग वाक्य

दसू न कायव्वो। सीयलणाहस्स दाढियाए लोमाइ न संति। तुमे दवरियाए किं कज्ज कीरइ। कस्स दालिअम्मि पीडा विज्जइ ? तुज्झ गामे को दिअलिओ अत्थि ? तस्स पडिच्छदम्मि दुगधं आआइ। थेरेण तस्स पडिभेयो कओ। राओ पटालीइ अम्हे सयामो। दारद्धताए मम वत्थाइ संति। तुमे अज्ज दिअहुत्तं महगिहे कायव्व। पडलगम्मि केवलाइ फलाइ संति। तेण पडिखद्धो अय पुरिसो अत्थि। सो संथारय अच्छुरइ। कुसुमो जलेण अगोहलइ। बालो मुहा अल्लइ। तुम कह न अक्कोससि ? माहुणो आयरियं अल्लवइ। जणा महाए अप्फोडति।

प्राकृत में अनुवाद करो

तुम छोटी रस्सी से क्या बाधते हो ? स्त्री के भी दाढी मे लोम है। सदूक मे किसके वस्त्र है ? आचार्य तुलसी के नेत्र आकर्षक है। तुम शोक क्यो करते हो ? हमारे गाव मे कोई मूर्ख नही है। दोपहर का भोजन आज मैं नही करू गा। मुख से मीठे वचन बोलो। टोकरी मे पत्ते कितने रखे है ? घर के ऊपर चटाई से छायी हुई छत पर मत सोओ। यह पशु सिंह सा मारा हुआ है। गुरु शिष्य को उपालभ देते है।

प्रश्न

१ प्राकृत मे शब्द कितने प्रकार के होते है ? २ देश्य शब्द किसे कहते है ?

३. वण शब्द के रूप लिखो।

४ नीचे लिखे शब्दो के अर्थ बताओ —
दवरिआ, दारद्धता, दिअहुत्तं, पडिखद्धो, [illegible], [illegible], [illegible], पटाली।

५ इन धातुओ के अर्थ क्या है—अगोहल, अच्छुर, अक्कोस, अल्लव।

६. पाच शब्द ऐसे बताओ जो प्राकृत और हिन्दी मे समान रूप है।

७. सात शब्द ऐसे बताओ जो प्राकृत और राजस्थानी भाषा मे समानार्थक हो।

१५ स्वर संधि

शब्द संग्रह (रसोई मसाला)

मसाला—वेसवारो
जीरा—जीरयो
हल्दी—हलिद्दा, हलद्दी
धनिया—धाणा
तेजपता—तेजपत्त
हींग—हिंगू
लवण—लोण
मीर्च—मिरिअं
राई—राइगा

धातु संग्रह

चुण्ण—चूर्ण करना
ताव—तपाना
किण—खरीदना
पन्नव—प्रज्ञापित करना, बताना
लूह—पोछना
झाम—जलाना, दग्ध करना
आढा—आदर करना, मानना
धर—पकडना

अव्यय संग्रह

आहच्च (दे)—कदाचित्, शीघ्र
उच्चअ (उच्चैः)—ऊचे
कालओ (कालत.)—समय से
इह (इह)—यही
एवमेव (एवमेव)—इस तरह
काहे (कदा)—कब

पुल्लिग ज (यत्) त (तत्) क किं शब्द याद करो।

देखो—परिशिष्ट १ संख्या ४४ क, ४५ क, ४६ क

स्वर संधि

सधि का अर्थ है परस्पर मिल जाना। प्राकृत मे जो सधि की व्यवस्था है वह विकल्प से होती है। निम्नलिखित सधि के लिए प्राकृत मे कोई सूत्र नही है। सस्कृत व्याकरण के आधार पर सधि की जाती है। प्राकृत मे प्रयोग आता है इसलिए दी जा रही है।

प्रथम पद के अतिम स्वर और आगे के पद के आदि स्वर के मिलने से जो सधि होती है उसे स्वर सधि कहते है। प्राकृत भाषा मे वर्ण का लोप होने के बाद शेप स्वर रहने से एक शब्द मे अनेक स्वर हो जाते हैं। उनमे सधि करने मे अर्थ-भ्रम होना सभव है, इसलिए एक पद मे सधि नही होती। जैसे—

पई (पति), नई (नदी), वच्छाओ (वत्सात्), महइ (महति)। कही-कही एक पद मे भी सधि विकल्प से होती है। जैसे—काहिइ, काही

(करिष्यति), बिइओ, बीओ (द्वितीयः) थइरो, थेरो (स्थविरः), कुम्भ+आरो=कुम्भारो कुम्भआरो (कुम्भकार), चक्क+आओ=चक्काओ, चक्कआओ (चक्रवाक)।

नियम ४ (पदयोः संधिर्वा १।५)—संस्कृत मे दो पदो की जो संधि होती है वह प्राकृत मे विकल्प से होती है। विसम+आयवो=विसमायवो, बिसम-आयवो। दहीसरो, दहि-ईसरो।

सवर्ण स्वर

(पिशल प्राकृत व्याकरण पैरा १४८ के अनुसार)

१ अवर्ण+अवर्ण=आ

(अ+अ=आ, अ+आ=आ, आ+अ=आ, आ+आ=आ)

देवाधिपा—देव+अहिवा=देवाहिवा

जीवाजीव—जीव+अजीवो=जीवाजीवो

विषमातप—विपम+आयवो=विसमायवो

यमुनाधिपति·—जउणा+अहिवई=जउणाहिवई

गगातप.—गगा+आयवो=गगायवो

२. इवर्ण+इवर्ण=ई

(इ+इ=ई, इ+ई=ई, ई+इ=ई, ई+ई=ई)

मुनीतर.—मुणि+इअरो=मुणीअरो

दहीश्वर—दहि+ईसरो=दहीसरो

पृथ्वी ऋषि—पुहवी+इसी=पुहवीसी

रजनीश.—रयणी+ईसो=रयणीसो

३. उवर्ण+उवर्ण=ऊ

(उ+उ=ऊ, उ+ऊ=ऊ, ऊ+उ=ऊ, ऊ+ऊ=ऊ)

स्वादूदकम्—साउ+उअय=साऊअय

भानूपाध्याय—भाणु+उवज्झायो=भाणूवज्झायो

वधूदकम्—बहू+उअय=बहूअय

वहूच्छ्वास·—वहू+ऊसासो=वहूसासो

असवर्ण स्वर

(पिशल प्राकृत व्याकरण पैरा १४६)

अवर्ण+इवर्ण (असयुक्त व्यंजन के पूर्व) ए

व्यासर्षि—वास+इसी=वासेसी

दिनेश—दिण+ईसो=दिणेसो

चन्दनेतर—चंदणा+इअरो=चंदणेअरो

रमेश—रमा+ईसो=रमेसो

(पिशल प्राकृत० पैरा १५०)

अवर्ण+इवर्ण (सयुक्त व्यजन के पूर्व) इ (सयोग परे होने से ह्रस्व)

देवेन्द्रः—देव+इदो=देविंदो

नरेन्द्रः—णर+इदो=णरिंदो

अवर्ण+उवर्ण (असयुक्त व्यजन के पूर्व)=ओ

गूढोदरम्—गूढ+उअर=गूढोअर

एकोन—एग+ऊणं=एगोण

गगोपरि—गगा+उवरि=गगोवरि

अवर्ण+उवर्ण (सयुक्त से पूर्व) उ

(ओ होने के वाद सयुक्त परे होने से उ होता है)

कर्णोत्पलम्—कण्ण+उप्पलं=कण्णुप्पल

रत्नोज्ज्वलम्—रयण+उज्जल=रयणुज्जल

(पिशल प्राकृत० पैरा १५३)

अवर्ण+ए=ए

गाम+एणी=गामेणी (देशीशब्द)

तथैव—तहा+एअ=तहेअ

अवर्ण+ओ=ओ

गुणौघ.—गुण+ओहो=गुणोहो

मृत्तिकावलिप्तम्—मट्टिआ+ओलित्त=मट्टिओलित्त

संस्कृत के आधार पर

पूर्वपद के अन्त मे स्वर हो और दूसरे पद के आदि मे स्वर हो तो वहा कही-कही अगले पद के पहले स्वर का लोप हो जाता है।

फासे+अहियासए=फासे हियासए

वालो+अवरज्झइ=वालो वरज्झइ

एस्सति+अणतसो=एस्सति णंतसो

नियम ५ (लुक् १।१०)—स्वर से परे स्वर होने पर पूर्व स्वर का प्रायः लोप हो जाता है।

तिदस+ईसो=तिदस्+ईसो=तिदसीसो, तिदसेसो (त्रिदशेश.)

नीसास+ऊसासो=नीसास्+ऊसासो=नीसासूसासो (निश्वासोच्छ्वास:)

नर+ईसरो=नर्+ईसरो=नरीसरो, नरेसरो (नरेश्वर.)

गच्छामि+अहं=गच्छम्+अहं=गच्छामह (गच्छाम्यहम्)

तम्मि+असहरो=तम्मंसहरो

ण+एव=ण्+एव=णेव (नैव)
देविंद+अभिवदिअ=देविंदभिवदिअ

प्रयोग वाक्य

वेसवारस्स महत्तं को न जाणइ ? जीरयम्मि लोहासो अहियो होइ। पडणपीडाए घएण सह हलद्दीए पओगो कीरइ। हिंगू वाउणासणो अत्थि। लोणेण विणा तीमणस्स साओ न हवइ। आउव्वेयसत्थे गुणेणं मिरिअं उण्हअर भवइ। महिला दालीए तेजपत्तं देइ। राइगाए सपुण्णा कडिआ महं वहु रोयइ। पिउसिआ थालिअं लूहइ। ससा धय तावइ। अरिहंतो धम्मं पन्नवइ। णोहा सुक्क कट्ठ झामइ। घरणी गोहूम चुण्णइ। णवा सासुं आढाइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

जीरा और नमक दोनो का योग उपयोगी है। लालमीर्च अधिक नही खानी चाहिए। हीग की गध दूर तक जाती है। हल्दी का रग हल्का होता है। राई वहुत छोटी होती है। तेजपत्ता दाल के स्वाद को वढाता है। गुण से वहू ससुर का आदर करती है। मौसी वस्त्र से वर्तन पोछती है। सुशीला चावलो का चूर्ण करती है। माता लकडी जलाती है पर उसमे धुंआ निकलता है। आचार्य तत्त्व को प्रज्ञापित करते है। बुआ धनिया खरीदती है।

प्रश्न

१. दहि और मधु शब्द के रूप लिखो।
२. मसाला, धनिया, राई, मीर्च, हल्दी, जीरा, तेजपत्ता, हीग और लवण शब्दो के प्राकृत शब्द वताओ।
३ लूह, ताव, चुण्ण, झाम, किण, घर, पन्नव और आढा धातुओ के अर्थ वताओ।
४ आहच्च, उच्चअ, काहे अव्ययो को वाक्य मे प्रयोग करो।
५. सधि करो—कखा+अभाओ, इंदिय+उवओगो, धम्म+इदो, वण+ईसरो, सीया+ईसो, पीला+ओहो, वालो+अहियासए।
६. सधिविच्छेद करो—जीवाजीवा, भाणूअयं, निसेसो, गइंदो, मट्टिओलित्त, जलोहो, गुणुज्जलं, रयणोवायो, सीओदग।

शब्द संग्रह (रसोई उपकरण)

तवा—काहिल्लिआ (दे०)
तमेली—सुफणी (दे०)
चिमटा—संदसो (स)
चमची—कडुच्छयो (दे०)
डोयो, काष्ठ का हाथा—डोओ
कुर्छी—दव्वी
हांडी—हंडिआ, कंदू
चुल्हा—चुल्ली
ढकना—पिहाण
छाज—चिल्ल (दे०)
सडासी—सडास, सडासो
कडाही—कडाहो, कवल्लो
कठौती—चुण्णमद्दणी (स)
प्याला, कटोरा—कट्टोरगो (दे)
थाली—थालिआ, थाली, थाल
रसोईघर—महाणस
रसोइया—पाचओ, सूदो
चुल्हे का पिछलाभाग—अवचुल्लो
प्लेट—सरावो (स)

० ० ० ० ०

परोसना—परीसण, परिवेसणं
अगारा—इगारो, अगारो
तरकारी—तीमण
कलेवा—कल्लवत्तो, पायरासो

धातु संग्रह

णीसारय—निकालना
वट्ट—परोसना
मुण—जानना
विसमर—भूलना
उट्ठ—उठना
पिसुण—चुगली करना

अव्यय

सय (स्वय)—स्वयं
जत्थ (यत्र)—जहा
जा, जाव (यावत्)—जब तक
जहेव (यथेव)—जिसप्रकार से
ता, ताव (तावत्)—तब तक
जइ (यदि)—जो

पुलिंग एअ (एतत्), इम (इदं), अमु (अदस्) शब्द याद करो। देखो—परिशिष्ट १ संख्या ४८ क, ४७ क, ४६ क।

उद्वृत्त स्वर

नियम ६ [स्वरस्योद्वृत्ते १।८] स्वरसयुक्त व्यजन मे व्यजन का लोप होने पर जो स्वर शेष रहता है उसे उद्वृत्त स्वर कहते हैं। स्वर से आगे उद्वृत्त स्वर हो तो सधि नही होती।

निशाकर निसा+अरो=निसाअरो
निशाचर निसा+अरो=निसाअरो
रजनीकर रयणी+अरो=रयणीअरो
गंधपुटी गंध+उडी+गंधउडी
रजनीचर रयणी+अरो=रयणीअरो
वराका वरा+आ=वराआ
कृतोपकार. क+ओव+आरो+कओवआरो
(पिशल प्राकृत० पैरा १५७, १५६ के अनुसार)

अपवाद—

अवर्ण+अवर्ण (उद्‌वृत्त स्वर)=आ
कुम्भकार—कुम्भ+आरो=कुंभारो
उद्धावति—उद्धा+अइ=उद्धाइ
शातवाहन—साल+आहणो=सालाहणो
चक्रवाक—चक्क+आओ=चक्काओ
इवर्ण+इवर्ण (उदवृत स्वर)=ई
द्वितीय—वि+इओ=वीओ
शिविका—सि+इया=सीया
उवर्ण+उवर्ण (उद्‌वृत्त स्वर) ऊ
उदुम्बर—उ+उम्बरो=उम्बरो (संयोग परे होने से उ ह्रस्व हो गया)
अवर्ण+इवर्ण (उद्‌वृत्त स्वर)=ए
स्थविर—थ+इरो=थेरो
मतिधर—म—इहरो=मेहरो
अवर्ण+उवर्ण (उद्‌वृत्त स्वर)=ओ
मयूर—म+ऊरो=मोरो
चतुर्दशी—च+उद्दसी=चोद्दसी
अवर्ण (प्रथम पद का अंतिम उद्‌वृत्त स्वर)+असवर्ण स्वर (द्वितीय पद का पहला उद्‌वृत्त स्वर)=प्रथम पद के अंतिम उद्‌वृत्त स्वर का लोप

राजकुलम्—राअ+उलं=राउलं

प्रयोग वाक्य

पाचओ अन्न पाचइ। महाणसे सीयं नत्थि। विमला सुफणीए दुद्ध उण्हं करेइ। मोहणो थालिआइ भोयणं भुजइ। उवचुल्ले किं रक्खिय अत्थि। चुल्लीअ उण्हं जलं किणा रक्खिअ? दव्वीए सुफणीअ तीमणं वट्टइ। कडुच्छअस्स बहु उवओगो अत्थि पर कडाहस्स पइदिणं न। अहं कट्टोरगम्मि

नीर पिबामि। सो इड्डहत्थेहि नडासेणं सूरूणि वरइ। पढमा सीयकाले चुल्लीए नीरं उण्हं करेइ। अहं गयवरिसम्मि विवायं विसमरीअ। काहिल्लिआ उण्हा अत्थि। चुण्णमइणीए चुण्ण कह नत्थि? डोओ मयं विसमवि न ग्वाअइ। हंडिआइ कस्स तीमण अत्थि? मीणकजी मंदमेण इमार गिण्हइ। अज्जत्ता पुन्मा गयणे कल्लवत्त मगवम्मि करेंति। सा विल्लेण गोहूमं सोहइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

रसोइया किस ग्राम का है? रसोईघर मे बैठकर कौन खाता है? चूल्हे में लकड़ी किसने दी? पिछले चूल्हे मे रखा हुआ दूध ठंडा नही होता। तमेली मे आज क्या पकाया है? चमचिया कितनी हैं? हांडी का मूल्य क्या है? कटोरे मे दही है। वह थाली में खाना नही खाता। कुर्छी स्वयं नही खाती। तमेली को ढकना मत भूलो। चिमटे से तवे को पकड़ो। हांडी पर कुर्छी क्यो रखी है? तरकारी कितनी शेष रही है? कटोरे मे दही रखा हुआ है। तवा गरम हो गया है। वह उपकार को भूल जाता है। बहन तरकारी परोसती है। वह कुर्छी से दाल परोसती है। सुरेश चुगली करता है। मैं सुबह जल्दी उठता हू। तुम्हें स्वय उठना चाहिए। जिस प्रकार से तुम कहते हो वह ठीक नही है। जब तक तुम स्वयं नही आओगे तब तक मैं तुम्हारे घर नहीं जाऊगा। कठौती मे पानी अधिक है। पहले डोया लाना है। हंडिया मिट्टी (मट्टिआ) की है। सडासी अच्छी तरह (सुट्ठु) पकड़ती है। प्लेट में सीता कलेवा नही करती है। विमला छाज से धान्य को साफ करती है।

प्रश्न

१ संधि विच्छेद करो और बताओ कि किस नियम से यह रूप बना—
सोहारो, कलालो (कलवार), नडओ, कुभआरो, सिरोविअणा, आउज्जं (आतोद्य) वइआलिओ (वैतालिक) चइत्तो (चैत्र.) दरिअ (दृप्त) रिऊ (ऋतु) पिउवण, मयंको (मृगाङ्कः) गरुओ।
२ रसोईघर, कठौती, सडासी चूल्हा, तमेली, चमची, कटोरा, कुर्छी, हांडी, प्लेट, डोया, थाली, छाज, चिमटा और साग—इनके प्राकृत शब्द बताओ।
३ भूलना, परोसना, निकालना, चुगली करना, उठना—इन अर्थों में कौनसी धातु प्रयुक्त हुई है लिखो?
४ जहेव, ताव, सय, जत्थ—इन अव्ययो का प्रयोग करो। प्रत्येक के दो-दो वाक्य बनाओ।
५ उद्वृत्तस्वर किसे कहते हैं? उनके लिए संधि का क्या विधान है?
६ उद्वृत्तस्वर के साथ संधि के नियम का अपवाद नियम क्या है? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दो।
७ पुल्लिंग के ज, त और क शब्द के रूप लिखो।

१७ प्रकृतिभाव संधि

शब्द संग्रह (गृहसामग्री)

मूसल—मूसल, कडत	ऊखली—उऊहल, अवअण्णो
लोढा—लोढो	शिला—सिला
स्टोव—उद्धमाण (स)	चलनी—चालणी
छाज—सुप्पो	पुराना छाज आदि—कडतर (दे)
वर्त्तन—पत्त, भायण	मशहरी—मसहरी
वोरा—पसेवो	रस्सी—रज्जू (स्त्री)
लालटेन—कायदीविया (सं)	दीया—दीवओ, दीवगो
वत्ती—वत्तिआ,वत्ती	दियासलाई—दीवसलागा
खरल—खल्ल (स)	छीका—सिक्कगो, सिक्कग
टब—दोणी (स)	चक्की—णीसा (दे०) घरट्टो (दे०)

झाडू—वोहारी, समज्जणी, वद्धणिआ।

धातु संग्रह

कुट्ट—कूटना	समज्ज—वुहारना
घरस—रगडना	मेलव—मिलाना
रोसाण—मार्जन करना, शुद्धकरना	पेस—भेजना
उवजुज—उपयोग मे लेना	अग्घ—अच्छे मूल्य मे वेचना
छाय, छाअ—ढाकना	सास—हुकम करना

अव्यय संग्रह

इहरा (इतरथा)—अन्यथा नही तो	दर (दे.)—आधा, थोडा
तए (तदा)—तव	णवर (दे.)—केवल
तहिं (तत्र)—वहा	तहा, तह (तथा)—उस तरह

अम्ह (अस्मद्) शब्द याद करो। देखो—परिशिष्ट १ संख्या ५०।

प्रकृतिभाव संधि

जहा दो पद मिलकर एक पद वन जाते है और वे यथावस्थित अवस्था मे रह जाते है उन्हें प्रकृतिभाव संधि कहते है।

नियम ७ (न युवर्णस्यास्वे १।६) इवर्ण और उवर्ण से आगे कोई विजातीय स्वर हो तो संधि नही होती।

इवर्ण+स्वर (इवर्ण को छोडकर)=प्रकृतिभाव

जाइ+अंधो=जाइअंधो (जात्यन्ध)
पुढवी+आउ=पुढविआउ (पृथ्वी आप:)
जइ+एव=जइएव= (यद्येव)
को वि+अवयासो=को वि अवयासो (कोप्यवकाश:)
उवर्ण+स्वर (उवर्ण को छोडकर)=प्रकृतिभाव
वहु+अट्ठिओ=वहुअट्ठिओ (बह्वस्थिक:)
सु+अलंकिय=सुअलंकिय (स्वलङ्कृतम्)
वहु+अवअवऊढो (बह्ववगूढ:)

नियम ८ (एदोतोः स्वरे १।७) ए और ओ के आगे स्वर हो तो संधि नहीं होती।

ए+स्वर=प्रकृतिभाव
एगे+आया=एगेआया (एक=आत्मा)
गामे+अडइ=गामेअडइ (ग्रामे उटति)
नईए+अत्थ=नईएअत्थ (नद्या. अत्र)
एगे+एव=एगे एव (एक. एवम्)
ओ+स्वर=प्रकृतिभाव
गोयमो+आघवइ+गोयमो आघवइ (गौतम. आख्याति)
अहो+अच्छरिअ=अहो अच्छरिअ (अहो आश्चर्यम्)
रामो+आगच्छइ=रामो आगच्छइ (राम: आगच्छति)
एओ+अत्थ=एओअत्थ (एकोऽत्र)

नियम ९ (त्यादेः १।९) क्रियापद के अतिम स्वर के बाद स्वर आए तो उनमे सधि नही होती।

क्रियापद स्वर+स्वर=प्रकृतिभाव
होइ+इह=होइ इह (भवतीह)
हसइ+एत्थ=हसइएत्थ (हसत्यत्र)
आलक्खिमो+एण्हि=आलक्खिमो एण्हि (आलक्षयामहे इदानीम्)

प्रयोग वाक्य

मूसलो कट्ठस्स अत्थि। उऊहलम्मि सिर दिण्ण अहुणा मूसलस्स को भयो? सुसीला लोढेण अवलेह (चटनी) पीसइ। तुमए तुज्झ सिला कस्स दिण्णा? चालणीए नीर न ठाअइ। मीणा णीसाइ अन्नं पीसइ। माआ सूप्पेण गोहूमा (गेहू) रोसाणइ। रत्तीए मसहरिं अन्तरेण सो कह सुवइ। कटंतग्स्स को मुल्लो अत्थि? सा पगे णियघर समज्जइ। पसेवे किं वत्थु अत्थि? भायण रित्त केण कय? दीवगस्सा वि महत्त (महत्व) अत्थि घोरघयारे। तुज्झ गिहे केत्तिलाओ कायदीवियाओ संति? दीवसलागं विणा

दीवअस्स को उवओगो ? दीवेगम्मि वत्ती कह नत्थि ? तुम खल्ने किं पीससि ? उद्धमाणे दुद्ध खिप्पं उण्ह भवइ । कि सा दोणीए पडदिण ण्हाइ ?

धातु प्रयोग

सा मूसलेण किं कुट्टइ ? माआ किमट्ठ सुठी (सूठ) घरसइ ? मोहणो णियपुत्ताण अबा (आम) पेसइ। सो घड छाअइ। साहू णियट्ठाण सय समज्जइ। किं तुम कवल उवजुजसि ? सोहणो दुद्धम्मि नीर मेलवइ । सासू वहु सासइ—दुद्ध उण्ह कर।

अव्यय प्रयोग

तुम तहिं गच्छ इहरा अह गच्छामि। जया तुम तहिं गमिहिसि तए अहमवि गमिस्सामि। झाणे तस्स दर उग्घाडियाइं नयणाइ अत्थि। णवर अह गच्छामि

प्राकृत में अनुवाद करो

गावो मे वहिने आजकल भी मूसल से वाजरी (बज्जरी) कूटती है। खाली ऊखली क्या काम आती है ? कुछ वर्ष पहले घर-घर मे चक्की चलती थी। हीरा लोढी से मीर्च पीसती है। घर मे सिला कहा है ? चालनी मे पानी क्यो नही ठहरता है ? झाडू के विना घर की सफाई नही होती। वह छाज से चावल साफ करती है। अपना पुराना छाज किसके पास है ? मशहरी के विना भी मैं सुख से सोता हू। वोरा मे गेहू कितने हैं ? रस्सी का उपयोग घर मे कितना है ? खरल मे औषधि (ओसहि) कौन पीसता है ? लालटेन सब के घर मे नही है। दीपावली में दीए घर-घर मे जलते है। वत्ती के बिना दीया दीया नही है। वर्तन मे गर्म पानी है। छीका पर क्या वस्तु है ? आजकल घर-घर मे स्टोव है। गाव मे टब किसके पास है।

धातु का प्रयोग करो

रमिला प्रतिदिन क्या कूटती है ? वह सिला पर क्या रगडती है ? सुसीला घर मे हर वस्तु को शुद्ध करती है। तुम गर्म पानी को क्यो नही ढाकते हो ? तुम्हारे घर को कौन बुहारता है ? वह पुराने छाज को भी काम मे लेता है। वह अपने सोने (सुवण्ण) को अच्छे मूल्य मे वेचता है। आजकल छोटा आदमी वडो को हुक्म देता है।

अव्यय का योग करोप्र

तुम स्कूल जाओ नही तो अध्ययन नही होगा। मैं खाना खा रहा था तब तुम कहा थे ? मैं वहा कभी नही जाऊगा। कमल थोडा खिला हुआ है। वह केवल पानी पीता है। जैसा गुरु कहे उस तरह (वैसा) करो।

प्रश्न

१ प्रकृतिभाव संधि किसे कहते हैं ?

२. किन-किन स्वरों से परे कौन-कौन से स्वर होने पर संधि नहीं होती। नियम का उल्लेख करो।

३. दो उदाहरण दो जहां संधि नहीं हुई है।

४ मूसल, ऊखली, लोढा, शिला, चक्की, चलनी, छाज, झाडू, मशहरी, बोरा, रस्सी, लालटेन, दीया, बत्ती, दियासलाई, खरल, छीका, बर्तन, स्टोव और टब के लिए प्राकृत शब्द बताओ।

५ कुट्ट, घरस, रोसाण, उवजुज, छाय, समज्ज, मेलव, पेस, अग्घ, सास—इन धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो।

६ इहरा, तए, तहि, णवर, तहा, दर—इन अव्ययों को वाक्य में प्रयुक्त करो।

७ पुलिंग में एअ, इम और अमु शब्द के रूप लिखो।

शब्द संग्रह (गृहसामग्री)

चारपाई—पलियको
चौकी—चउपाइया, आमण
बेंच—कट्ठामण
मेज—पायफलगं (स)
काठशय्या—कट्ठसेज्जा
एनक—उवनेत्त (सं)
झूला—ढोला
ईंट—इट्टा
साजी—सज्जिआ
फिटकरी—सोरट्ठिया
गोंद—णिय्यासो
पीढा—पीट
सौफा—सुहोववेसिया (स)
कुर्सी—वेत्तासण, आसदी (स)
काष्ठ का तख्ता—फलगो
टूथपाउडर—दतचुण्ण (स)
दांत का ब्रुश—दतधावण (स)
टूथ पेस्ट—दंतपिट्ठअं (सं)
सीमेंट—पत्थर चुण्ण
साबुन—सव्वक्खारो (स)
मोम—सीअ (दे)
पखा—विजण

धातु संग्रह

आभोय—ध्यानपूर्वक देखना
मल—धारण करना
आराह—आराधना करना
साव—शपथखाना, सुनाना
णिव्विस—वहन करना
परिणिव्वा—शांत होना
आरोव—आरोपित करना
उप्फिड—उछलना
अइवत्त—उल्लंघन करना
सीअ—खेद करना

अव्यय संग्रह

पच्छा (पश्चात्)—बाद में
जओ (यत.)—क्योंकि
तजहा (तद्यथा)—जैसे
चिअ, चेअ (चैव)—ही
झत्ति (झटिति)—शीघ्र
तप्पभिइ (तत्प्रभृति)—इसको आदि करना

युम्ह (युष्मद्) शब्द याद करो। देखो—परिशिष्ट १ सख्या ५१)

अव्ययसंधि

स्वरान्त या अनुस्वारान्त पद से परे अव्यय हो तो उस संधि को अव्यय सधि कहते है। अनुस्वार से परे व्यजन द्वित्व नहीं होता है।

नियम १० (पदादपेर्वा १।४१) पद से परे अपि अव्यय के आदि अ का लोप विकल्प से होता है।

केण+अपि=केणवि, केणावि (केन+अपि)
जणा+अपि=जणावि (जना अपि)
किं+अपि=किं पि, किमवि (किमपि)
कह+अपि=कहपि कहमवि (कथमपि)

नियम ११ (इतेः स्वरात् तश्च द्विः १।४२) पद से परे इति अव्यय के आदि इ का लुक् होता है। स्वर से परे त द्वित्व हो जाता है, अनुस्वार से परे हो तो त द्वित्व नहीं होता।

तहा+इति=तहत्ति (तथा+इति)
पुरिसो+इति=पुरिसोत्ति (पुरुष+इति)
पिओ+इति=पिओत्ति (प्रिय+इति)
किं+इति=किंति (किमिति)
दिट्ठं+इति=दिट्ठं ति=दृष्टमिति

नियम १२ (त्यदाद्यव्ययात् तत्स्वरस्य लुक् १।४०) सर्वनाम संबंधी स्वर या अव्यय के स्वर से परे सर्वनाम और अव्यय का स्वर हो तो आगे वाले पद के आदि स्वर का लुक् हो जाता है।

अम्हे+एत्थ=अम्हेत्थ (वयमत्र) जे इमे=जेमे (ये इमे)
जइ+अहं=जइहं (यद्यहम्) जइ+इमा=जइमा (यदीयम्)
जे+एत्थ=जेत्थ (ये अत्र) तुज्झे+इत्थ=तुज्झित्थ (यूयमत्र)

(पिशल प्राकृत० पैरा ९२, १३५ के अनुसार)—स्वर से परे इव अव्यय हो तो इव का व्व हो जाता है। अनुस्वार से परे इव हो तो व ही होता है, द्वित्व व (व्व) नहीं।

स्वर+इव=स्वर+व्व
चंदो+इव=चंदोव्व (चन्द्र इव)
धम्मो+इव=धम्मोव्व (धर्म इव)
अनुस्वार+इव=अनुस्वार+व
गेहं+इव=गेहं व। धणं+इव=धणं व
पुत्तं+इव=पुत्तं व। रिणं+इव=रिणं व।

संस्कृत के अनुसार—उपसर्ग का अंतिम स्वर इवर्ण या उवर्ण हो आगे स्वर हो तो संधि हो जाती है। उसके बाद संयुक्त व्यंजन का नियमानुसार परिवर्तन हो जाता है।

इवर्ण+असवर्ण स्वर=य्+असवर्ण स्वर
अति+अन्त=अत्यन्त=अच्चन्तं
अभि+आगओ=अभ्यागओ=अब्भागओ (अभ्यागतः)
उवर्ण+असवर्ण स्वर=व्+असवर्ण स्वर
अणु+एसइ=अण्वेसइ=अण्णेसइ (अन्वेषति)

प्रयोग वाक्य

सो वरिसपेरंत पलियकम्मि न सुविहिइ । किं तुम आसणम्मि ठिओ भासण करेसि ? बंभयारिणा मया कट्ठसेज्जाए सोअव्व । मज्झ गिहे पीढो नत्थि । निग्गथाण सथारगो कप्पइ सोइउ । मुणी सावगाण गिहत्तो फलगं आणेइ । गुरु आसदीइ आसइ । छत्ता कट्ठासणम्मि ठिआ पढंति । मुणी वरिसावासम्मि फलगे सुवति । पायफलग कस्स कट्ठस्स अत्थि ? अज्जत्ता घरम्मि पाओ मुहोववेसिआ उवलभइ । मज्झ पासे उवनेत्त अत्थि । इट्टाहिं पत्थरचुण्णेहिं य भवणस्स णिम्माण भवइ । सोरट्टियाइ नीरं सच्छं (स्वच्छ) भवइ । सा सव्वक्खारेण वत्थाइ सच्छाइं करेइ । विमला डोलाइ ठिआ अत्थि । सज्जिआए पप्पडा (पापड) भवंति । अत्थ विजण कह नत्थि ? सा दंत पिट्ठएण सह दंतधावणेण दंता सोहइ । गुरुणो पासे तुम किं सावसि ?

धातुप्रयोग

सो किमट्ठ राम आभोयइ ? महावीरो भारहवासे परिणिव्वाइत्थु । सेहो पइदिण दस सिलोगा मलइ । सामाइअ चरित्तस्स पच्छा छेओवट्ठावणचरित्त आरोवइ । विमलो सुयणाण आराहइ । मुणी सावगेहिं सद्धि कतार अइवत्तइ । आयरिअस्स सुवगामम्मि आगमण सुणिऊण सावगा उप्फिडंति । सो पायच्छित्तस्वेण तव णिव्विसइ । तुज्झ पसस सुणिऊण सो कह सीअइ ?

अव्यय प्रयोग

भोयणस्स पच्छा सो सोअइ । ते च्चिय धण्णा जे रागरहिया । सो अत्थ झत्ति आगओ । अहं तस्स पासे न गमिस्सामि जओ सो झाणेण पढइ । अज्जपभिइ दसदिणपेरंत पारसो अणसणतव करिस्सइ ।

प्राकृत में अनुवाद करो

मेरी मौसी चारपाई पर बैठी है और उसने आने वाली बुआ को पीढे पर बैठाया । बडा साधु चौकी पर बैठकर भाषण देता है । काठ की शय्या कोमल नही होती है । काठ के तख्ते पर वह बैठना नही चाहता है । एक बेंच पर कितने छात्र बैठते हैं ? मेज पर पुस्तक किसकी है ? सौफा पर बैठकर वह नीद लेता है । कुर्सी कौन नही चाहता ? वह एनक से साफ देखता है । मै साजी खाना नही चाहता । इटे कहा से आती हैं । फिटकरी का उपयोग अनेक कामों मे होता है । गोंद से वस्त्र साफ होते है । सीमेंट घर मे नही है । मेरी साबुन किसके पास है ? उसके घर मे झूला नही है । पखे से हवा आती है । दात के ब्रुश के बिना वह टूथपाउडर से दात साफ करता है । वह बार-बार शपथ क्यो खाता है ?

धातु प्रयोग करो

लडका उसकी ओर ध्यान से देख रहा है । तुझे प्रतिदिन पाच नए

श्लोक धारण करना चाहिए। जबूस्वामी का कब निर्वाण हुआ ? जो धर्म की आराधना करता है उनका वह समय मूल्यवान है। दूसरो का सुख देखकर वह मन मे क्यो दुख पाता है ? वह बात-बात मे क्यो उछलता है ? हम लोग कल उस गाव का उल्लघन करेंगे। जगदीश अपने घर का भार अकेला वहन करता है। वे खेद क्यो करते हैं ?

अव्यय का प्रयोग करो

उसके बाद गीतिका गानी है। वह तुम्हारे पास आएगा क्योकि वह कुछ पूछना चाहता है। इस घटना के तुम ही एक मात्र दर्शक हो। जल्दी पानी लाओ। तुम शीघ्र इस पाठ को याद करो। कषाय चार प्रकार के होते हैं, जैसे—क्रोध, मान, माया और लोभ

प्रश्न

१ अम्ह शब्द के रूप लिखो।

२. अव्यय सधि किसे कहते हैं ?

३ पद से परे अपि और इति अव्यय हो तो कौन-सा नियम क्या विधान करता है ? दो-दो उदाहरण देकर स्पष्ट करो।

४ सर्वनाम और अव्यय के स्वर से परे सर्वनाम या अव्यय का स्वर हो तो क्या कार्य होता है ? दो उदाहरण दो।

५ चारपाई, चौकी, बेच, मेज, काठशय्या, पीढा, सौफा, झूला, कुर्सी, ईंट, साजी, गोद, काष्ठ का तख्ता, एनक, फिटकरी, साबुन, पंखा, टूथपेष्ट, दात का ब्रुश, टूथपाउडर शब्दो के लिए प्राकृत के शब्द बताओ।

६ आभोय, परिणिव्वा, मल, आरोव, आगह, उप्फिड, साव, णिव्विस, सीअ और अडवत्त धातु के अर्थ लिखो।

७. पच्छा, जओ, तजहा, चिअ, झत्ति और तप्पभिइ अव्ययो का वाक्य मे प्रयोग करो।

व्यंजन संधि (अनुस्वार)

शब्द संग्रह (न्यायालय वर्ग)

कचहरी—नायालयो
जज—नायगरो
वादी—वाई (वि)
साक्षी, गवाह—सक्खि (वि)
जामिनदार—पडिभू (वि)
पाडुहुओ (वि)
अर्जी—आवेयणपत्त
सजा—दण्डो
बयान—उवसत्ती (स)
अनुवाद—अणुवायो
न्याय—नायो
अपील—पुणरावेयण
इकरारनामा—पइण्णापत्त (स)
वकील—वायकीलो (वाक्कील)
दफ्तर—अक्खपडलो (स)
प्रतिवादी—पडिवाई (वि)
गवाही—सक्खं, सक्खिज्जं
जमानत—णासो
घूस—उक्कोडा (दे)—उक्कोया
मुकदमा—अभिओगो (स)
जिस पर दावा किया गया हो—पडिवक्खियो
घूस लेकर कार्य करने वाला—उक्कोडिय (वि)
फैसला—णिण्णयो

धातु संग्रह

निवज्ज—बैठना
निवज्ज—लेट जाना, सोना
उक्कुद्द—कूदना, उछलना
निवेस—बैठना
निवज्ज—नीपजना, निष्पन्न होना
अवसीय—दु:खपाना
छिंद—छेदना
किलिस्स—क्लेशपाना

अव्यय संग्रह

दिवारत्त (दिवारात्र)—दिनरात
पडिरूव (प्रतिरूप)—समान
परमुहं (पराङ्मुख)—विमुख
पायो, पाओ, (प्राय)—प्राय.
पुरत्था (पुरस्तात्)—आगे, सम्मुख
पुहं, पिहं (पृथक्)—अलग

स्त्रीलिंग के जा, सा, का, अमु, इमा, एआ शब्द याद करो। देखो—परिशिष्ट १ संख्या ४४ ख, ४५ ख, ४६ ख, ४६ ख, ४७ ख, ४८ ख,

व्यंजन संधि—पद के अंत में होने वाले व्यंजन अथवा मध्यवर्ती व्यंजन में होने वाले परिवर्तन को व्यंजन संधि कहते हैं।

नियम १३ (मोनुस्वारः १।२३) अंत में होने वाले मकार को अनुस्वार हो जाता है।

पद का अंतिम म् 7 अनुस्वार जलम्—जलं, फलम्—फलं, वच्छम्—वच्छं

कहीं पर अंत में मकार न हो उसको भी अनुस्वार हो जाता है—
वनम्मि—वणंमि। मुणिम्मि—मुणिंमि।

नियम १४ [वा स्वरे मश्च १।२४] अंत में होने वाले मकार से परे स्वर हो तो अनुस्वार विकल्प से होता है। पक्ष में लुक् न होकर मकार को मकार हो जाता है।

वन्दे उसभं अजिअं=वन्दे उसभमजिअं
नयर आगच्छइ=नयर मागच्छइ

(बहुलाधिकारात् अन्य शब्दों के अंतिम व्यंजन का भी अनुस्वार हो जाता है।

अंतिम व्यंजन 7 अनुस्वार साक्षात्—सक्खं   पृथक्—पिहं
यत्—(जं)   तत्—तं   विष्वक्—वीसुं
सम्यक्—सम्मं   ऋधक्—इहं   ऋधक्क्—इहयं

१ नोट—शब्द-सिद्धि की दृष्टि से ऋधक् शब्द का इह बना है। जिसका अर्थ है—अलग। इहयं—इहं शब्द से स्वार्थ में क प्रत्यय हुआ है।
पिशल पैरा ५६८ के अनुसार जैन महाराष्ट्री और अर्धमागधी में इह का ही इहं रूप मिलता है।
इहमेगेसिं नो सन्ना भवइ (आयारो १।१।१)—आयारो में अनेक स्थानों पर इहं रूप मिलता है। जाइं इमाइं इहं माणुस्सलोए हवंति (जीवाभिगम ३।११९)। महाराष्ट्री में अज्ज अव्यय का रूप अज्जं मिलता है।

नियम १५ [ङ ञ ण नो व्यञ्जने १।२५] ङ, ञ, ण और न के बाद व्यंजन हो तो इनको अनुस्वार हो जाता है।

पङ्क्ति—पंती   षण्मुखः—छंमुहो
पराङ्मुख—परंमुहो   उत्कण्ठा—उक्कंठा
कञ्चुक—कंचुओ   सन्ध्या—संझा
लाञ्छनम्—लंछणं   विन्ध्यः—विंझो

नियम १६ [विंशत्यादेर्लुक् १।२८] विंशति आदि शब्दों में होने वाले अनुस्वार का लुक् हो जाता है।

अनुस्वार लुक् विंशतिः—वीसा   त्रिंशत्—तीसा
संस्कृतम्—सक्कयं   संस्कारः—सक्कारो

नियम १७ [मांसादेर्वा १।२९] मांस आदि शब्दों में होने वाला अनुस्वार का लुक् विकल्प से होता है।

अनुस्वार लुक् मांसम्—मासं, मंसं   मांसलम्—मासलं, मंसलं
कांस्यम्—कासं, कंसं   पांसु—पासू, पंसू
कथम्—कह, कहं   एवम्—एव, एव

नूनम्—नूण, नूण इदानीम्—इआणि, दाणि, दाणि
किम्—कि, किं ममुख —समुहो, समुहो
किंशुक —केसुओ, किंमुओ सिंह.—सीहो, सिंहो

नियम १८ [वर्गेन्त्यो वा १।३०] अनुस्वार के बाद वर्ग का कोई व्यजन परे हो तो उसी वर्ग का पाचवा व्यजन विकल्प से हो जाता है।

पक.—पङ्को, पको	कडम्—कण्ड, कडं
शख —सङ्खो, सखो	पढः—सण्ढो, सढो
अगनम्—अङ्गण, अगण	अन्तरम्—अन्तर, अंतर
लघनम्—लङ्घणं, लंघण	पन्थः—पन्थो, पथो
कञ्चुक.—कञ्चुओ, कचुओ	चदो—चन्दो, चदो
लछनम्—लञ्छणं, लंछण	बधव —बन्धवो, बंधवो
अजनम्—अञ्जण, अजण	कपति—कम्पइ, कपइ
सज्ञा—सञ्ज्ञा, संज्ञा	वफति—वम्फइ, वफइ
कटक.—कण्टओ, कटओ	कलव —कलम्बो, कलवो
कठ —कण्ठो, कठो	आरभः—आरम्भो, आरंभो।

नियम १९ [वक्रादावन्तः १।२६] वक्र आदि शब्दो मे कही पहले स्वर के बाद, कही दूसरे स्वर के बाद, कही तीसरे स्वर के बाद अनुस्वार का आगम होता है। वक्र—वक। त्र्यस्रं—तसं। अश्रु—असु। श्मश्रु—मसू। पुच्छ—पुछ। गुच्छ—गुछ। मूर्द्धन्—मुढा। पर्शुः—पसू। बुघ्न—बुध। कर्कोट—ककोडो. कुड्मल—कुपल। दर्शनं—दसणं। वृश्चिक—विंछिओ। गृष्टि—गिंठी। मार्जार.—मजारो। **इनमे पहले स्वर के बाद आगम हुआ है।** वयस्य—वयसो। मनस्विन्—मणंसी। मनस्विनी—मणंसिणी। मन शिला—मणसिला। प्रतिश्रुत्—पडंसुआ। **इनमें दूसरे स्वर के बाद आगम हुआ है।** उवरि—अवरिं। अतिमुक्तक—अइमुतय, अणिउंतय—**इनमे तीसरे स्वर के बाद आगम हुआ है।**

नियम २० [अतो डो विसर्गस्य १।३७] अकार से परे विसर्ग को डो (ओ) आदेश होता है। सर्वत—सव्वओ। पुरत.—पुरओ। अग्रतः—अग्गओ। भवत—भवओ। भवन्त—भवन्तो। सन्तः—संतो।

नियम २१ [वीप्स्यात्स्यादेर्वीप्स्ये स्वरे मो वा ३।१] वीप्सार्थक पद से परे स्यादि प्रत्यय के स्थान पर स्वरादि वीप्सार्थक पद परे रहने पर म् विकल्प से होता है। एकंकम्—एक्कमेक्कं। अङ्गेअङ्गे—अङ्गमङ्गम्मि।

कुछ शब्दो मे दो पदो के बीच 'म' का आगम हो जाता है।

चित्त+आणदिय=चित्तमाणदिय। जहा+इसि=जहामिसि
इह+आगओ=इहमागओ। हट्ठतुट्ठ+अलकिअ=हट्ठतुट्ठमलकिअ

भर कैद मे रहने की सजा मिली है। उसने कल अपने मुकदमे की अपील की है। इकरारनामा पढकर मन प्रसन्न हुआ। अदालत मे जाने से समय और धन की हानि होती है। न्यायालय का फैसला किसके पक्ष मे हुआ ?

धातु का प्रयोग करो

वह यहा बैठना नही चाहता है। जो अधिक सोता है वह समय को खोता है। वर्षा अधिक होने से इस वर्ष अधिक नीपजेगा। यह लडका वृक्ष से कूदता है। दूसरो का सुख देखकर वह मन मे क्यो दु ख पाता है ? वह आकाश को भी छेदता है। विना विचारे काम करने वाला अत मे क्लेश पाता है। वह परीक्षा मे कहा वैठेगा ?

अव्यय का प्रयोग करो

सोहन दिन रात परिश्रम करता है। गुरु से विमुख नही होना चाहिए। यहा से आगे एक कुआ है। आपका चेहरा मेरे भाई के समान है। वह प्राय. दिन मे सोता है। इसका विद्यालय मेरे विद्यालय से भिन्न है।

प्रश्न

१ व्यजन सधि किसे कहते है ?
२ अतिम व्यजन को अनुस्वार करने वाला कौन-सा नियम है ? उसके तीन उदाहरण दो।
३ पद के अत मे म् को अनुस्वार करने वाला कौन-सा नियम है ? आगे स्वर हो तो उसका क्या रूप बनता है ? दो-दो उदाहरण दो।
४ न, ङ, य और ण इनके आगे व्यजन हो तो इन को क्या आदेश होता है ?
५ नीचे लिखे शब्दो का प्राकृत रूप बताओ—
सस्कार, किंशुक., त्रिशत्, सस्कृत, विष्वक्, कास्यम्, ।
६ किस नियम से अनुस्वार का आगम होता है ? और किस स्वर के बाद होता है ? उदाहरण देकर स्पष्ट करो।
७ वह कौन-सा नियम है जिसके कारण अनुस्वार का व्यजन हो जाता है और बताओ कहा कौन-सा व्यजन होता है ?
८ नीचे लिखे शब्दो के प्राकृत शब्द लिखो—
कचहरी, जज, वकील, दफ्तर, वादी, प्रतिवादी, गवाही, अपील, जामिनदार, जमानत, अर्जी, मुकदमा, घूस, सजा, बयान, अदालत, इकरारनामा, अनुवाद, जिस पर दावा किया गया हो, घूस लेकर कार्य करने वाला।
९ निवज्ज, अवसीय, उक्कुद्द, छिंद, निवेस और किलिस्स, धातु के अर्थ बताओ।

जिस शब्द के रूप में कुछ भी व्यय न होता हो उसे अव्यय कहते हैं। अव्यय का प्रयोग उसी रूप में होता है जैसा वह शब्द है। उसमें न कुछ घटता है और न कुछ बढता है। अव्यय में किसी भी विभक्ति और किसी भी वचन का प्रभाव नहीं रहता। वह सब स्थिति में एकरूप रहता है। स्फुट अव्यय पूर्व के पाठों में दिये गए हैं और आगे भी। फिर भी नियमपूर्वक कुछ अव्यय यहां दिए जा रहे हैं।

नियम २२ (तं वाक्योपन्यासे २।१७६) त अव्यय वाक्य के उपन्यास के अर्थ में। त तिअसवन्दिमोक्खं (त त्रिदशवन्दिमोक्ष)।

नियम २३ [आम अभ्युपगमे २।१७७] आम अव्यय स्वीकार करने के अर्थ में। आम बहला वणोली (सत्य बहुला वनोली)।

नियम २४ [णवि वैपरीत्ये २।१७८] णवि अव्यय वैपरीत्य ( ) के अर्थ में। णवि हा वणे (न हा वने)।

नियम २५ [पुनरुक्तं कृतकरणे २।१७९] पुनरुत्त अव्यय बारम्बार या, फिर-फिर के अर्थ में। अइ सुप्पइ पंसुलि णीसहेहिं अंगेहिं पुणरुत्तं (अयि स्वपिति पांसुली निस्सहैः अङ्गैः पुनरुक्तम्)

नियम २६ [हन्दि विषाद विकल्प पश्चात्ताप निश्चय सत्ये २।१८०] हन्दि अव्यय विषाद, (खेद) विकल्प, पश्चात्ताप, निश्चय, सत्य—इन अर्थों में।

हन्दि चलणे णओ सो (हन्दि चरणे नत सः)। ण माणिओ हन्दि हुज्ज एताहे (न मानित हन्दि भवेत् इदानीम्)। हन्दि न होही भणिरी (हन्दि न भविष्यति भणिका)। सा सिज्जइ हन्दि तुह कज्जे (सा खिद्यति हन्दि तव कार्ये)।

नियम २७ [हन्द च गृहाणार्थे २।१८१] हन्द अव्यय, लो या 'ग्रहण करो' के अर्थ में। हन्द पलोएसु इमं (हन्द प्रलोकस्व इमाम्)।

नियम २८ [मिव पिव विव व्व व विअ इवार्थे वा २।१८२] इव अर्थ में प्राकृत में मिव, पिव, विव, व्व, व, विअ और इव अव्यय हैं।

कुमुअं मिव (कुमुद इव), हंसो विव (हंसः इव), चंदणं पिव (चन्दन इव), सायरो व्व (सागरो इव), खीरोओ व (क्षीरोदो इव), कमलं विअ (कमल इव)।

नियम २६ [जेण तेण लक्षणे २।१८३] जेण और तेण ये दो अव्यय लक्षण (अवस्था) अर्थ मे ।
भमर रुअ जेण कमलवण (भ्रमररुत येन कमलवनम्), भमर रुअ तेण कमलवण (भ्रमररुत तेन कमलवनम्) ।

नियम ३० [णइ चेअ चिअ च्च अवधारणे २।१८४] निश्चय अर्थ मे णइ, चेअ, चिअ और च्च अव्यय हैं । गइए णइ (गत्या एव), ज चेअ मउलण लोअणाण (यत् एव मुकुलन लोचनानाम्), अणुवद्धं त चिअ कामिणी (अनुवद्धा तदेव कामिनीनाम्), ते च्चिअ धन्ना (ते एव धन्या.), ते च्चेअ सप्पुरिसा (ते एव सत्पुरुषा·), स च्चेअ सीलेण (स· एव शीलेन) ।

नियम ३१ [बले निर्धारण निश्चययो· २।१८५] बले अव्यय निर्धारण और निश्चय अर्थ मे ।

निर्धारण—बले पुरिसो धणजओ खत्तिआण (क्षत्रियाणां मध्ये धनञ्जय एव पुरुष)

निश्चय—बले सीहो (सिंह एव)

नियम ३२ [किरेर हिर किलार्थे वा २।१८६] किर, इर, हिर, किल ये चार अव्यय किल अर्थ मे । कल्ल किर खरहिअओ (कल्य किल खरहृदय.), तस्स इर (तस्य किल), पिअ-वयसो हिर (प्रियवयस्य किल), एव किल तेण सिविणए भणिआ (एव किल तेन स्वप्नके भणिता) ।

नियम ३३ [णवर केवले २।१८७] णवर अव्यय केवल सिर्फ अर्थ मे । णवर पिआइ चिअ णिव्वडन्ति (केवल प्रियाणि एव निष्पतन्ति) ।

नियम ३४ [आनन्तर्ये णवरि २।१८८] णवरि अव्यय अनन्तर (बाद मे) अर्थ मे । णवरि अ से रहुवइणा (पश्चात् च तस्य रघुपतिना) ।

नियम ३५ [अलाहि निवारणे २।१८९] अलाहि अव्यय प्रतिषेध, (बस) अर्थ मे । अलाहि किं वाइएण लेहेण (अलं किं वाचितेन लेखेन) ।

नियम ३६ [अण णाइं नञर्थे २।१९०) अण और णाइ निषेधार्थक (नही, मत) अर्थ मे । अण चिन्तिअ ममुणन्ती (अचिन्तित अजानती), णाइ करेमि रोस (न करोमि रोषम्) ।

नियम ३७ [माइं मार्थे २।१९१] माइ अव्यय निषेध (मत) अर्थ मे । माइ काहीअ रोस (मा कार्षिद् रोषम्)

नियम ३८ [हद्धी निर्वेदे २।१९२] हद्धी अव्यय खेद, अनुताप अर्थ मे । हद्धी हद्धी । (हाधिक् ऋद्धिः) ।

नियम ३९ [वेव्वे भयवारणविषादे २।१९३] वेव्वे अव्यय भय वारण और विषाद अर्थ मे ।

नियम ४० [वेव्व च आमन्त्रणे २।१९४] वेव्व और वेव्वे अव्यय आमत्रण अर्थ मे। वेव्व गोले (हे गोल !), वेव्वे मुरन्दले वहसि पाणिअ (हे मुरन्दले (त्व) वहसि पानीयम्)।

नियम ४१ [मामि हला हले सख्या वा २।१९५] मामि, हला, हले, सहि—ये चार अव्यय सखि के आमत्रण अर्थ मे। मामि सरिसक्खराण वि (सखि ! सदृशाक्षराणामपि), पणवह माणस्स हला (प्रणमत मानस्य सखि !)। हले हयासस्स (सखि ! हताशस्य) सहि एरिसिच्चिय गइ (हेसखि ! ईदृशी एव गतिः)।

नियम ४२ [दे संमुखी करणे च २।१९६] दे अव्यय सम्मुखीकरण और सखि के आमन्त्रण अर्थ मे। दे पसिअ ताव सुन्दरि (हे सुन्दरि ! प्रसीद तावत्), दे आपसिय निअत्तसु (हे सखि ! आप्रसद्य निवर्तस्व)।

नियम ४३ [हुं दानपृच्छानिवारणे २।१९७] हु अव्यय दान, पृच्छा और निवारण अर्थ मे। हु गेण्ह अप्पणो च्चिअ (हु गृहाण आत्मन एव)

पृच्छा—हु साहसु सब्भाव (हु कथय सद्भावम्)।
निवारणे—हु निल्लज्ज समोसर (हु निर्लज्ज समपसर)।

नियम ४४ [हु खु निश्चय-वितर्क-संभावन-विस्मये २।१९८] हु और खु अव्यय निश्चय, वितर्क, सभावन तथा विस्मय अर्थ मे। निश्चय—त पि हु अच्छिन्नसिरी (त्वमपि हु अच्छिन्नश्री), त खु सिरीए रहस्स (तत् खु श्रिया रहस्यम्)।

वितर्क—न हु णवर सगहिआ (न हु णवर संगृहीता), एअ खु हसइ (सम्भावयामि एता हसति)।

संशय—जलहरो खु धूमवडलो खु (जलधरो वा धूमपटलो वा)।
सभावन—तरीउ ण हु णवर इम (केवल मिम तरीतु न सभावयामि)।
विस्मय—को खु एसो सहस्ससिरो (आश्चर्यं, क एष. सहस्रशिरा.)।

नियम ४५ [ऊ गर्हाक्षेप विस्मय-सूचने २।१९९] ऊ अव्यय गर्हा, आक्षेप, विस्मय और सूचन अर्थ मे।

गर्हा—ऊ णिल्लज्ज (ऊ निर्लज्ज)।
आक्षेप—ऊ कि मए भणिअ (ऊ कि मया भणितम्)।
विस्मय—ऊ कह मुणिआ अहय (ऊ कथं ज्ञाता अहं)।
सूचन—ऊ केण न विण्णाय (ऊ केन न विज्ञातम्)।

नियम ४६ [थू कुत्सायाम् २।२००] थू अव्यय कुत्सा के अर्थ मे। थू निरलज्जो लोओ (थू निर्लज्ज. लोक.)।

नियम ४७ [रे अरे सम्भाषण-रतिकलहे २।२०१] रे अव्यय संभाषण और अरे अव्यय रतिकलह अर्थ मे। रे हिअय मडह सरिआ (हे हृदय, लघ्वी सरिता) अरे म सम मा करेसु उवहास (अरे! मया सम मा कुरु उपहास)

नियम ४८ [हरे क्षेपे च २।२०२] हरे अव्यय क्षेप, संभाषण और रतिकलह के अर्थ मे।

क्षेप—हरे णिल्लज्ज (अरे निर्लज्ज.)।

सभापण—हरे पुरिसा (अरे पुरुषा)।

रतिकलह—हरे वहुवल्लह (अरे वहुवल्लभ)।

नियम ४९ [ओ सूचना पश्चात्तापे २।२०३] ओ अव्यय सूचना और पश्चात्ताप अर्थ मे।

सूचना—ओ अविणय-तत्तिल्ले (ओ अविनयपरायणे)।

पश्चात्ताप—ओ न मए छाया इत्तिआए (ओ न मम छाया एतावत्या.)।

नियम ५० [अव्वो सूचना दुःख संभाषणापराध विस्मयानन्दादर भय खेद विषाद पश्चात्तापे २।२०४] अव्वो अव्यय सूचना आदि अर्थों मे।

सूचना—अव्वो दुक्करकारय (अव्वो दुष्करकारक)।

दु खे—अव्वो दलति हियय (अव्वो दलन्ति हृदयम्)।

सभाषणे—अव्वो किमिण किमिण (अव्वो किमिद किमिद)।

खेद—अव्वो न जामि छेत्त (अव्वो न यामि क्षेत्रम्)।

अपराध—अव्वो हरन्ति हिअय तह वि न वेसा-हवन्ति जुवईण
(अव्वो हरन्ति हृदय तथापि न द्वेष्या भवन्ति युवतीनाम्

विस्मय—अव्वो किंपि रहस्स मुणन्ति धुत्ता-जणब्भहिआ
(अव्वो किमपि रहस्य जानन्ति धूर्त्ता. जनाभ्यधिका:)

आनद—अव्वो सुपहायमिण (अव्वो सुप्रभातमिदम्)

आदर—अव्वो अज्ज म्ह सप्फलं जीअं (अद्य अस्माक सत्फलं जीवितम्)

भय—अव्वो अइअम्मि तुमे नवर जइ सा न जूरिहिइ
(अव्वो अतीते त्वयि नवर यदि सा न जूरिष्यते)।

विषाद—अव्वो नासेन्ति दिहिं (अव्वो नाशयन्ति धृतिम्)

पश्चात्ताप—एण्हिं तस्सेअगुणा ते च्चिय अव्वो कह णु एअं
(इदानी तस्येति गुणा. ते एव अव्वो कथ नु एतत्)

नियम ५१ [अइ सभावने २।२०५] अइ अव्यय संभावन अर्थ मे। अइ दिअर किं न पेच्छसि (अयि देवर! किं न प्रेक्षसे)।

नियम ५२ [वणे निश्चय विकल्पानुकम्प्ये च २।२०६] वणे अव्यय निश्चय, विकल्प, अनुकम्प्य और सभावन अर्थ मे।

निश्चय—वणे देमि (निश्चय ददामि)।

विकल्प—होइ वणे न होइ (भवति वा न भवति)।

अनुकम्प्य—दासो वणे न मुच्चइ (दासोनुकम्प्यो न त्यज्यते)।

सभावन—नत्थि वणे ज न देइ विहिपरिणामो (यद् नास्ति वणे यद् न दाति विधिपरिणाम)।

नियम ५३ [मणे विमर्शे २।२०७] मणे अव्यय विमर्श अर्थ मे। मणे सूरो (मन्ये सूर्य)।

नियम ५४ [अम्मो आश्चर्ये २।२०८] अम्मो अव्यय आश्चर्य अर्थ मे। अम्मो कह पारिज्जइ (अम्मो कथ पार्यते)।

नियम ५५ [स्वयमोर्थे अप्पणो न वा २।२०९] अप्पणो अव्यय स्वय अर्थ मे विकल्प मे। विसय विअसति अप्पणो कमलसरा (विशद विकसन्ति स्वयमेव कमलसरासि) पक्षे—सय चेअ मुणसि करणिज्ज (स्वयमेव जानासि करणीयम्)।

नियम ५६ [प्रत्येकम पाडिक्कं पाडिएक्क २।२१०] प्रत्येक अर्थ मे पाडिक्क, पाडिएक्क और पत्तेय अव्यय है।

नियम ५७ (उअ पश्य २।२११) उअ अव्यय पश्येत् (देखो) अर्थ मे विकल्प मे। उअ लोआ गच्छति (पश्य लोका गच्छति)।

नियम ५८ [इहरा इतरथा २।२१२] इहरा अव्यय इतरथा अन्यथा के अर्थ मे। इहरा नीसामन्नेहिं (इतरथा नि सामान्यै)।

नियम ५९ [एक्कसरिअं झगिति संप्रति २।२१३] झगिति (शीघ्र) संप्रति (अभी) इन दो अर्थो मे एक्कसरिअं अव्यय।

नियम ६० [मोरउल्ला मुधा २।२१४] मोरउल्ला अव्यय मुधा (व्यर्थ) अर्थ मे। मोरउल्ला जपसि (मुधा जल्पसि)।

नियम ६१ [दरार्धाल्पे २।२१५] दर अव्यय अर्ध और अल्प अर्थ मे। दर विअसिअ (अर्धेन विकसित, ईषत् विकसित)।

नियम ६२ [किणो प्रश्ने २।२१६] किणो अव्यय प्रश्न अर्थ मे। किणो धुवसि (किं धुवसि)।

नियम ६३ [इजेराः पादपूरणे २।२१७] इ, जे, र ये तीन अव्यय पाद पूरण मे। न उणा इ अच्छीइ (न पुन अक्षीणि), अणुकूल वोत्तु जे (अनुकूलं वक्तुम्), गेण्हइ र कमल गोवी (गृह्णाति रे कमलगोपी)।

नियम ६४ [प्याद्यः २।२१८] पि वि, अपि समुच्चय अर्थ मे। सायरो वि (सागरो अपि) जम्मो पि (जन्म अपि)।

२१ हेत्वर्थ कृदन्त
(तुम् प्रत्यय)

शब्द संग्रह

परस्पर—परोप्पर स्पष्ट—पट्ठ
कल्याण—कल्लाण स्वप्न—सुविणो
शास्त्र—सत्थ शक्ति—सत्ती
पाठक—पाढयो सभा—सहा
कार्य— कज्ज श्रेयास—सिज्जसो
प्रयत्न—पयण्णो

धातु संग्रह

गमित्तए—जाने के लिए अणुणेउ —अनुनय करने के लिए
रोविउ – रोने के लिए विहरित्तए, विहरेत्तए— विहार के लिए
विवदित्तए—विवाद करने के लिए घेत्तु—लेने के लिए
पयासिउ — प्रकट करने के लिए पासित्तए, पासेत्तए—देखने के लिए
खादिउ =खाने के लिए जग्गिउ —जागने के लिए
गाउ =गाने के लिए, काउ, कट्टु—करने के लिए
लद्धु =पाने के लिए रोद्धु—रोकने के लिए
जोद्धु = युद्ध करने के लिए

अव्यय संग्रह

मग्गतो (मार्गत)—पीछे से सज्ज (सद्य:)—शीघ्र
सिय (स्यात्)—कथंचित् पेच्च (प्रेत्य)—परलोक
मणा, मणय (मनाक्) —थोडा मोरउल्ला—व्यर्थ
मुहु, मुहु—वार-वार

सर्व शब्द तीनों लिंगो मे याद करो। देखो—परिशिष्ट १ संख्या ४३ क, ४६ ख, ४३ ग।

तुम् प्रत्यय

धातु मे तु और त्तए प्रत्यय लगाने पर हेत्वर्थकृदन्त (तुम् प्रत्यय) के रूप बनते है। त्तए प्रत्यय के रूप जैन आगमो मे विशेप रूप मिलते हैं। तु (उ) और त्तए प्रत्यय का अर्थ होता है—के लिए।

नियम ६५ [एच्चाक्त्वा तुम् तव्यभविष्यत्सु ३।१५७] क्त्वा, तुम्,

तव्य प्रत्यय एवं भविष्यत्कालीन प्रत्यय परे होने पर पूर्व धातु में होने वाले अ को इ तथा ए हो जाता है। व्यंजनान्त धातु के अंत में अ नित्य आता है तथा स्वरान्त धातुओं के अंत में अ विकल्प से होता है।

त्तए—हस्+अ=हसित्तए, हसेत्तए (हसितु) हसने के लिए

हो+अ=होइत्तए, होएत्तए, होत्तए (भवितु) होने के लिए

तुं (उं)—हस्+अ=हसितु, हसेतु, हसिउं, हसेउं।

हो+अ=होइतु, होएतुं, होतु। होइउं, होएउं, होउं।

नियम ६६ [क्त्वा-तुम्-तव्येषु घेत् ४।२१०] क्त्वा, तुम् और तव्य प्रत्यय परे होने पर ग्रह् धातु को घेत् आदेश होता है। घेत्तु (ग्रहीतु) ग्रहण करने के लिए।

नियम ६७ [वचो वोत् ४।२११] क्त्वा, तुम् और तव्य प्रत्यय परे होने पर वच् धातु को वोत् आदेश होता है। वोत्तु (वक्तुं) बोलने के लिए।

नियम ६८ [रुदभुजमुचां तोन्त्यस्य ४।२१२] क्त्वा, तुम् और तव्य प्रत्यय परे होने पर रुद्, भुज् तथा मुच् धातुओं के अन्त्य को त आदेश होता है।

रुद्— रोत्तु (रोने के लिए)। भुज्—भोत्तु (खाने के लिए)

मुच्—मोत्तु (छोडने के लिए)

नियम ६९ [दृशस्तेन ट्ठः ४।२१३] दृश् धातु के अन्त्य को तु के तकार सहित ट्ठ आदेश होता है। दृश्—दट्ठु (देखने के लिए)

नियम ७० [आ कृगो भूत भविष्यतोश्च ४।२१४] कृ धातु के अंत को आ आदेश होता है, भूत और भविष्य काल में तथा क्त्वा, तुम् और तव्य प्रत्यय परे हो तो। काउं (करने के लिए)

प्रेरक [णिन्नन्त] हेत्वर्थ कृदन्त के रूप बनाने का नियम—णिन्नन्त की धातु के जो रूप बनते हैं (देखो—पाठ ९२, ९३, ९४)। उनके आगे तुं (उं) या त्तए प्रत्यय लगाने से हेत्वर्थ कृदन्त के रूप बनते हैं।

भणावितु, भणाविउं, भणावित्तए—पढाने के लिए।

प्रयोग वाक्य

परोप्पर पेम्मेण ठाअव्व। सव्वेसिं जणाण कल्लाण होउ। सत्थचक्खु अन्तरेण मणुओ अंधो अत्थि। मो जोइसिअस्स पासे पण्हं पुच्छिउं गच्छउ। तुज्झ कज्ज अज्ज को काउं इच्छइ? जो पट्ठ जपइ सो जीवणववहारे पियो न लग्गइ। तुमए एगते भासणाय पयण्णो कायव्वो। अहं मुविणम्मि एग सिंघ पासिसु। सव्वेहिं णियसत्तीए कज्ज कायव्वं। मिज्जंसेण एगवरिस-पेरतो एगंतरोववासो कओ। धम्मनहाए नव्वजाइजणा आगच्छति।)

धातु प्रयोग

- तुम्हाणं गिहे खादिउ अन्नमवि नत्थि । एगं पदमवि गमित्तए नत्थि मे सत्ती । मगलकाले को रोविउं लग्गो । इमो कालो जग्गिउ अत्थि । नाय समयो परोप्पर विवदित्तए । अहुणा तुमं किं काउं इच्छसि त्ति पट्ठु कह ? मुणिणा जणाण कल्लाणं काउं पयण्णो कयो । साहू आयरिय अणुणेउं गओ । मो सुमिणस्स अट्ठ वेत्तु मुविणसत्थपाढयस्स घर गओ । अवसरो अत्थि अप्पाण पयासिउ । सो अवमाण अवलोइउ न सक्कइ । इम कज्ज तुए विणा को अण्णो काउ सक्कइ ।

अव्यय प्रयोग

सो मग्गतो कहं गच्छइ ? सा सज्ज जपइ । अप्पा पेच्च गच्छइ । सो सिय महुरो सिय रुक्खो य अत्थि । मणय भोयणं न हाणिअर भवइ । सो अत्थ मुहु कह आगच्छइ ? तुज्झ तत्थ गमण मोरउल्ला अत्थि ।

प्राकृत में अनुवाद करो

यह समय विवाद करने के लिए नही है । आचार्य तुलसी ने महिलाओ को जगाने के लिए प्रयत्न किया । मगलसेन की एक शब्द भी बोलने की शक्ति नही है । यह समय काम करने के लिए है । इस समय आप क्या खाना चाहते हैं ? श्रेयास गुरु को प्रार्थना करने के लिए गया है । प्रभा प्रथम आने के लिए पढने का प्रयत्न करती है । उनको लेकर श्रेयास गाने के लिए सभा मे गया । दूसरे गाव जाने के समय रोना उचित नही है । अरुणा ने जगाने के लिए प्रयास किया । शास्त्र को जानने वाला कल्याण का कार्य करता है । तुम्हारे बिना लिखने का कार्य कोई दूसरा नही कर सकता । कुसुम अपमान को सह नही सकता । वह विवाद के लिए दूसरे गाव जाता है । परस्पर प्रेम पूर्वक रहना चाहिए । तुम्हारा कल्याण हो । हमारे धर्मशास्त्र जिनप्रणीत हैं । इस प्रश्न का उत्तर जैन विद्या जानने वालो से मागो । अपना कार्य स्वय करो । राष्ट्र भाषा किनको प्रिय नही लगती है । उसको बोध देने के लिए तुझे प्रयत्न करना चाहिए । उसे स्वप्न मे बुरे विचार आते हैं । सबके पास स्मरण शक्ति है । प्रेमलता स्पष्ट बोलती है । उसकी सभा मे पाच सौ तियासी आदमी थे ।

अव्यय का प्रयोग करो

थोटा पढा लिखा भयकर होता है । व्यर्थ मे किसी के साथ विवाद मत करो । पीछे से वह तुम्हारी निंदा करता है । परलोक मे जीव कर्म सहित जाता है । उसको पढने के लिए बार-बार मत कहो । कथंचित् आत्मा नित्य है । प्रश्न का उत्तर शीघ्र दो । अवधान मे प्रश्न का उत्तर शीघ्र कौन देता है ?

प्रश्न

१ स्त्रीलिंग मे जा, सा, अमु, इमा, और एआ शब्द के रूप लिखो ।
२ तुम् प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत मे कौन से प्रत्यय आते है ?
३ तुम् प्रत्यय के रूप बनाने के लिए किस नियम का ध्यान रखना चाहिए ?
४ तुम् प्रत्यय किस अर्थ मे प्रयोग होता है ?
५ तुम् प्रत्यय परे होने पर किन धातुओ को क्या-क्या आदेश होता है ?
६ प्रेरक (णिजन्त) धातुओ के तुम् प्रत्यय के रूप कैसे बनाए जाते है ? किन्ही चार धातुओ के रूप बनाओ ।
७ नीचे लिखे शब्दो के अर्थ लिखो—परोप्पर, कल्लाण, सत्ती, पयण्णो, पट्ठ, सत्य, पाढयो, सुविणो ।
८ पीछे से, कथचित्, थोडा, व्यर्थ, शीघ्र, वार वार और परलोक मे—इन अर्थो मे कौन से अव्यय है ?

सम्बन्धभूत कृदन्त
(क्त्वा प्रत्यय)

शब्द संग्रह (पत्रालय वर्ग)

पत्र—पत्त
मनीआर्डर—धणाएसो (म)
पत्रपेटी, लेटरबक्स—पत्ताही (पु) (स)
पार्सल—पासलो (स)
पोस्टआफिस—पत्तालयो (म)
रजिष्ट्री—पजिआ (स)
प्रमुख डाकघर—पमुहपत्तालयो (स)
पोस्टमास्टर—पत्तालयाहिअक्खो (म)
तार—तुरिअसूअओ (स)
जनरलपोस्टमास्टर—पत्तालयाहीसो (सं)
तारघर—तुरिअसूअणालयो (स)
डाकिया—पत्तवाहओ
लिफाफा—आवेट्ठण (स)

धातु संग्रह

पासिऊण—देखकर
गच्छिऊण—जाकर
इच्छिऊण—इच्छाकर
सुणिऊण—सुनकर
पुच्छिऊण—पूछकर
भुंजिऊण—भोजनकर
झाऊण—ध्यानकर
सयिऊण—सोकर
जाणिऊण—जानकर
सेविऊण—सेवाकर
हसिऊण—हसकर
ठाऊण—ठहरकर
दाऊण—देकर
गिण्हिऊण—ग्रहणकर
णमिऊण—नमनकर
कहिऊण—कहकर
पाऊण—पाकर
लिहिऊण—लिखकर

अव्यय संग्रह

वीसु (विष्वक्)—सब ओर मे
णिच्चं, निच्च (नित्य)—नित्य
तहा, तह (तथा)—वैसे, उस प्रकार मे
णोचेअ (नो एव)—नही तो
अत्थ (अस्त)—अन्त होना, छिपना
अत्थु (अस्तु)—हो

ज, त, क, एअ, इम, अमु शब्द नपुंसक लिंग में याद करो। देखो—परिशिष्ट १ संख्या ४४ ग, ४५ ग, ४६ ग, ४८ ग, ४७ ग, ४६ ग)

क्त्वा प्रत्यय

जब कर्ता एक कार्य पूर्ण करके दूसरा कार्य करता है तो पहले किए गए कार्य के लिए सबंधभूत कृदन्त (क्त्वा प्रत्यय) का प्रयोग किया जाता

है। क्त्वा प्रत्यय प्रत्येक धातु से होता है। यह पूर्वकालिक अर्ध क्रिया है। इसके साथ दूसरी क्रिया का होना आवश्यक है। वाक्य मे क्रिया के साथ कर्म आता है वैसे ही इस अर्धक्रिया का भी कर्म आता है।

नियम ७१ (क्त्वस्तुम तूण तुआणाः २।१४६) सस्कृत के क्त्वा प्रत्यय और क्त्वा के स्थान पर यप् (ल्यप्) प्रत्यय को प्राकृत मे तु, अत् (अ), तूण और तुआण ये चार प्रत्यय होते हैं। पूर्ववर्ती नियम के अनुसार तु, तूण, और तुआण प्रत्ययो के योग मे पूर्ववर्ती अ को ए तथा इ विकल्प से होता है। इत्ता, इत्ताण, आय तथा आए—ये चार प्रत्यय क्त्वा के स्थान पर अर्धमागधी मे और मिलते है। तुआण प्रत्यय भी अर्धमागधी मे मिलता है।

नियम ७२ (क्त्वा स्यादेर्ण स्वोर्वा १।२७) तूण, तुआण और इत्ताण प्रत्ययो के 'ण' शब्द के ऊपर अनुस्वार विकल्प से होता है।

तुं [उं] प्रत्यय—हस्—हसितु, हसेतु, हसिउ, हसेउ (हसित्वा) हसकर
हो—होतु, होइतु, होएतु, होउ, होइउ, होएउ (भूत्वा) होकर

तूण [ऊण] प्रत्यय—हस्—हसितूण, हसेतूण। हसिऊण हसेऊण। हसितूण हसेतूण। हसिऊण, हसेऊण।
हो—होइतूण, होइतूण। होएतूण, होएतूण। होतूण, होतूण। होइऊण, होइऊण। होएऊण, होएऊण। होऊण, होऊण।

तुआण [उआण] प्रत्यय—हसितुआण, हसितुआण। हसेतुआण, हसेतुआण। हसिउआण, हसिउआण। हसेउआण, हसेउआण।
हो – होतुआण, होतुआण। होउआण, होउआणं। होइतुआण, होइतुआण। होइउआण, होइउआण। होएतुआण, होएतुआण। होएउआण, होएउआण।

अ प्रत्यय—हसिअ, हसेउ। हो—होइअ, होएअ, होअ।
इत्ता प्रत्यय—हसित्ता, हसेत्ता। कृ—करित्ता, करेत्ता, (कृत्वा) करकर।
इत्ताण प्रत्यय—हसित्ताण, हसेत्ताण, हसित्ताण, हसेत्ताण। करित्ताण, करेत्ताण, करित्ताण, करेत्ताणं, (कृत्वा) करकर।
आय प्रत्यय—गह्—गहाय (गृहीत्वा) ग्रहणकर।
आए प्रत्यय—आया—आयाए (आदाय) लेकरके। सपेहाए (सप्रेक्ष्य) अच्छी तरह देखकर।

ऊपर हस् धातु और हो धातु के क्त्वा प्रत्यय के रूप दिए गए हैं। व्यजनान्त धातुओ के हस् धातु की तरह और स्वरान्त धातुओ के हो धातु की तरह रूप चलते हैं।

पिछले पाठ मे तुम् प्रत्यय के लिए जो नियम दिए गए हैं, वे क्त्वा प्रत्यय के लिए भी हैं, इसलिए उनके नियमों को न दुहराकर कुछेक धातुओ

के केवल रूप दिए जा रहे हैं।

काउं, कातूण, काऊण, कातूणं, काऊणं, कातुआण, काउआण, कातुआणं, काउआणं, कट्टु (कृत्वा) करके।
घेत्तु, घेत्तूण, घेत्तूणं, घेत्तुआण, घेत्तुआणं (गृहीत्वा) ग्रहणकर।
दट्ठु, दट्ठु, दट्ठूण, दट्ठूणं, दट्ठुआण, दट्ठुआण, (दृष्ट्वा) देखकर।
भोत्तु, भोत्तूण, भोत्तूण, भोत्तुआण, भोत्तुआण, (भुक्त्वा) खाकर।
मोत्तु, मोत्तूण, मोत्तूण, मोतुआण, मोत्तुआण, (मुक्त्वा) छोडकर।
रोत्तु, रोत्तूण, रोत्तूण, रोत्तुआण, रोत्तुआण (रुदित्वा) रोकर।
वोत्तु, वोत्तूण, वोत्तूण, वोत्तुआण, वोत्तुआणं (उक्त्वा) बोलकर।

संस्कृत रूपों के आधार पर प्राकृत मे उपलब्ध क्त्वा प्रत्यय के रूप—

आयाय (आदाय) ग्रहण करके।
किच्चा, किच्चाण (कृत्वा) करके।
नच्चा, नच्चाण (ज्ञात्वा) जानकर,
बुज्झा (बुद्ध्वा) जानकर,
मत्ता, मच्चा (मत्वा) मानकर,
विप्पजहाय (विप्रजहाय) त्यागकर,
सुत्ता (सुप्त्वा) सोकर
साहट्टु (संहृत्य) संहारकर
आहट्टु (आहृत्य) आहारकर
चिच्चा, चेच्चा, चइत्ता (त्यक्त्वा) छोडकर
पिहाय (पिधाय) ढाककर
अभिभूय (अभिभूय) अभिभवकर,

गच्चा, गत्ता (गत्वा) जाकरके।
नत्ता (नत्वा) नमकर।
भोच्चा (भुक्त्वा) खाकर।
वदित्ता (वन्दित्वा) वदनकर।
सोच्चा (श्रुत्वा) सुनकर।
आहच्च (आहृत्य) आघातकर।
हंता (हत्वा) मारकर
परिण्णाय (परिज्ञाय) जानकर
निहाय (निधाय) स्थापितकर
परिच्चज्ज (परित्यज्य) परित्यागकर
पडिबुज्झ (प्रतिबुध्य) प्रतिबोधकर

प्रेरक [णिन्नत] धातु के क्त्वा प्रत्यय के रूप बनाने का नियम धातु के आगे प्रेरक प्रत्यय जोडने के बाद क्त्वा को आदेश होने वाले प्रत्यय जोडे जाते हैं। जैसे—

हस्+आवि+तु (उ)=हसाविउ, हसावेउ।
हस्+आवि+अ=हसाविअ, हसावेअ।
हस्+आवि+तूण (ऊण)=हसाविऊण, हसावेऊण।
हस्+आवि+तुआण (उआण)=हसाविउआण, हसाविउआण हसावेउआण, हसावेउआण।

प्रेरक धातु से प्रत्यय—

हास+अ=हासिअ, हासेअ। हास+तूण (ऊण)=हासिऊण, हासिऊण।
हास+तुआण=हासिउआण, हासिउआणं। हास+इत्ता=हासित्ता, हासेत्ता
हास+तु (उ)=हासिउं, हासेउं।

प्रयोग वाक्य

मज्झ भाअरस्स पत्त अज्ज आगमिस्सइ। पत्तालय गच्छिऊण पास मज्झ पत्त अत्थि न वा। पमुहपत्तालय जाऊण पत्तालयाहीस कह मज्झ पासलो कत्थ लुत्तो (खोगया)। पत्तवाहओ पत्ताइ दाउ गामे गामे गच्छइ। पत्तालयाहिअक्खो पाओ पत्तालयम्मि समय चिअ आगच्छइ। आवेट्ठणे किं लिहिअमत्थि को वि न जाणइ? तस्स माआए पासे पइमास धणाएसेण रोवगा (रुपया) आयान्ति। तुम पासले किं पेसिस्ससि? पजिआइ चे रोवगा पेसेज्ज तया वर। तुरिअसूअओ कओ आगओ? तुम तुरिअसूअणालय गच्छिऊण सव्वत्थ तुरिअसूअण देहि ज आयरिएण अम्हाण णयरे चउमासो कहिओ।

धातु प्रयोग

अह तुम पासिऊण अइपसन्नो मि। तुम पुराणपाढ सुमरिऊण अग्ग पाढ पढसु। सो उवएस दाऊण विरमीअ। तुलसीसाहुणासिहर ठाऊण अम्हे बहुसुदर दिस्स पेच्छामो। ते बारवइ दट्ठूण महाविज्जालय उवागया। लाडनू गच्छिऊण, सुहम्माए सहाए साहुणो आयरिय व दिऊण णियतठाणेसु उवविसति। तुमं पत्त लिहिऊण क दास्ससि? पण्ह पुच्छिऊण सो सतुट्ठो जाओ। तुम मज्झ गिहे भोयण भुजिऊण सगाम गच्छसु।

अव्यय प्रयोग

सो वीसु बुही अत्थि। किं तुम णिच्च पाढ पढसि? जहा सुह तहा कर। तुम गच्छ णो चेअ सो गमिस्सइ। आइच्चो णिच्चं अत्थ भवइ। तुज्झ कल्लाण अत्थु।

प्राकृत में अनुवाद करो

तुम्हारा पत्र बहुत समय से नही आया हैं। पारमार्थिक शिक्षण सस्था मे लेटर बक्स नही है। मेरा भाई प्रतिदिन पत्र लाने पोस्ट आफिस जाता है। पोस्ट मास्टर आज कहा गया है? डाकघर मे पत्र आते हैं। महानगरो मे वडा डाकघर भी होता है। मुधाशु वडे डाकघर मे काम करता है। टाकिया घर-घर मे जाकर उनका पत्र आदि देता है। आज रमेश का मनीआर्डर कहा से आया है? पार्सल से आख की दवा सीता को भेज दो। रजिष्ट्री मे वस्तु भेजने पर उसकी सुरक्षा का भार भेजने वाले पर नही रहता। तार देकर मोहन को बुलाओ कि तुम्हारी माता वीमार है। तारघर मे इतने आदमी क्यो आए है?

धातु का प्रयोग करो

भाई को देखकर वह घर मे भाग गया। वह पुस्तक देकर अपने गाव चला गया। घर जाकर वह भोजन करेगा। वह ओं शब्द कहकर भाषण प्रारम्भ करता है। वह हसकर बोलता है। गुरु को नमन कर वह घर जाता है। शिक्षा ग्रहण कर वह जीवन मे आचरण करता है। क्या तुम ध्यान कर सो जाते हो? वहू सासू की सेवा कर सोने जाती है। वह आम खाने की इच्छा करके भी नही खाता है। वह दिन मे सोकर आलस्य (आलस्स) बढाता है। तुम्हारा परिचय (परियियो) जानकर मै खुश हू। पिता का नाम पूछकर वह यहा से चला गया। लेख लिखकर उसने किसको दिया? पत्र लिखकर फिर तुमको कथा कहकर ही मैं यहा से बाहर जाऊगा। साधु सेवा कर निर्जरा का लाभ लेता है। ध्यान कर और स्तुति गाकर तुम कहां गए थे?

अव्यय का प्रयोग करो

किसको सब ओर से भय है? वह हमेशा खाना नही खाता है। जैसा तुम चाहते हो वैसा अपना कार्य करो। तुम नही दोगे तो वह देगा। आज सूर्य कब अस्त होगा? सब का कल्याण हो।

प्रश्न

१. क्त्वा प्रत्यय को प्राकृत मे कितने प्रत्यय आदेश होते है? अर्धमागधी मे कितने प्रत्यय मिलते हैं?
२. क्रिया और अर्धक्रिया मे क्या अतर है? कर्म किसके साथ आता है?
३. नीचे लिखे रूपो को वाक्य मे प्रयोग करो—
   साहट्टु, चेच्चा, परिच्चज्ज, विप्पजहाय, किच्चा, मत्ता।
४. नीचे लिखे रूपो का हिन्दी मे अर्थ बताओ—
   परिण्णाय, आहच्च, पडिवुज्झ, वुज्झा, हंता, निहाय।
५. लेटर बक्स (पत्रपेटी), पोस्टऑफिस, डाकघर, पोस्ट मास्टर, जनरल पोस्ट मास्टर, डाकिया, मनीआर्डर, पार्सल, रजिस्ट्री, तार और तारघर के लिए प्राकृत शब्द बताओ।
६. वीसु, णोचेअ, अत्थ, तह—इन अव्ययों का अर्थ बताते हुए वाक्य मे प्रयोग करो।
७. सर्व शब्द के तीनो लिंगो के रूप लिखो।

२३ स्वर परिवर्तन

शब्द संग्रह (गुड-चीनी वर्ग)

चीनी—सिता, सिया
खाड—खण्डा
आर्द्रगुड—फाणिअ, फाणिओ
गुड से पहले की अवस्था—कक्कवो
बतासा—वातासो (स)

गुड—गुडो, गुलो
शक्कर—मच्छण्डी
शरबत—सक्करोदय
चासनी —सियालेहो
सालम मिसरी—छुहामूली (म)

० ० ० ० ०

स्वास्थ्य, स्वस्थता—सत्थ

रोगी—लुक्को
वजे—वायणम्मयो (स)

धातु संग्रह

नीहर— निकलना
पट्ठव—प्रस्थान करना
सार—ठीक करना
सूअ—सूचना करना

पक्खाल—प्रक्षालन करना
विण्णव—विनती करना
कत्त—कतरना
सुस्सूस—सेवा करना

अव्यय संग्रह

अन्तरेण—विना
अद्धा—समय
अदुवा, अदुव—अथवा
अभितो—चारो ओर
अल—वस, पर्याप्त
चे (चेत्) यदि

अओ, अतो (अत)—इसलिए
अण, णाइ (नञ्)—निषेध, विपरीत
अप्पेव (अप्येव)—सशय

अम्मो—आश्चर्य
अहत्ता (अधस्तात्)—नीचे

• पितृ और भर्तृ शब्द याद करो। देखो—परिशिष्ट १ संख्या ८,१०

स्वर परिवर्तन

प्राकृत मे सामान्य रूप से स्वर परिवर्तन की व्यवस्था इस प्रकार है—

(१) ह्रस्व स्वरो का दीर्घीकरण
(२) दीर्घ स्वरो का ह्रस्वीकरण
(३) स्वरो को स्वर का आदेश
(४) अव्यय के स्वरो का लोप

प्रश्न

१ एग, दु, ति आदि शब्दो के सभी रूप बताओ।

२ अकार को इस पाठ मे क्या-क्या आदेश हुआ है ?

३ भुमया, सण्ह, दुअल्ल, महुअ, निउर, थोर, तोण गलोई, मोल्ल—इन शब्दो मे किस नियम से क्या आदेश हुआ है ?

४ बरामदा, देहली, घर का भीतरी आगन, खूटी, खिडकी, छत, कवाड, छोटा दरवाजा, ओसारा, अट्टारी, घर का पिछला आगन, घर के बाहर की कोठरी—इन शब्दो के लिए प्राकृत शब्द बताओ।

५ देना, वाद विवाद करना, जूरना, याचना करना, परिताप करना प्रमाद करना, अपमान करना, भाषण करना—इन अर्थो मे इस पाठ मे कौनसी धातुए आई है ?

६ अन्यत्र, बाहर, बारम्बार, उसके समान, लिए और फिर नही—इन अर्थो मे कौन से अव्यय होते है ?

७ दोसो, अणसण, समाही, आमत्ती, पक्कवडिया, कफग्घी अवदसो—इन शब्दो का वाक्य मे प्रयोग करो और हिन्दी मे अर्थ बताओ।

३१ स्वरादेश (८)

शब्द संग्रह (शरीर विकार)

छीक—छीअ
जभाई—जिंभा, जिंभिआ
खुजली—खज्जू (स्त्री)
पसीना—सेओ, घम्मो
चक्कर—भमली
उच्छ्वास—ऊससिअ
मल—गूह, मल
आसू—असु (न)
नाक का मैल—सिंघाण
कान का मैल—किट्ट
जीभ का मैल—कुलुअ (स)
दात का मैल—पिप्पिया (दे०)
आख का मैल—दूसिआ
शरीर का मैल—जल्ल (दे०)
डकार—आज्झमाण, उड्डुओ
हिचकी—हिक्का, मुट्ठिक्का
थूक—थुक्को
खासी—खासिअ, कासित
अधोवायु (पादना)—वायणिसग्गो
नि श्वास—नीससिअ
मूत्र—मुत्त
श्लेष्म—खेलो

धातु संग्रह

समायर—आचरण करना
वज्ज—वर्जन करना
सजल—जलना, आक्रोश करना
पयय—प्रयत्न करना
परिहर—छोडना
कप्प—उचित होना
चर—चबाना
अणुतप्प—अनुताप करना
तच्छ—छीलना, पतला करना
अभिनिक्खम—सन्यास लेना, सदा के लिए घर से निकलना

अव्यय संग्रह

सुवे (श्वस्) आगामी काल
ह्यो (ह्यस्) बीता हुआ कल
परसुवे (परश्वः) परसो
उत्तरसुवे (उत्तरश्व) परसो

ऋकार को अ, आ, इ, उ आदेश

नियम १५५ (ऋतोत् १।१२६) आदि (पहले) ऋकार को अकार होता है।

ऋ7अ—घय (घृतम्) कय (कृतम्) मओ (मृग.)
तण (तृणम्) वसहो (वृषभ·) घट्ठो (घृष्ट)

नियम १५६ (आत् कृशा-मृदुक-मृदुत्वे १।१।१२७) कृशा, मृदुक और मृदुत्व के ऋ को आ विकल्प से होता है।

ऋ7आ—कासा, किसा (कृशा) माउक्क, मउअ (मृदुकम्) माउक्कं, मउत्तण (मृदुत्वम्)

नियम १५७ (इत्कृपादौ १।१२८) कृपा आदि शब्दो के ऋ को इ होता है।

ऋ7इ— किवा (कृपा) हियय (हृदयम्) रस अर्थ मे मिट्ठं (मृष्टम्)
दिट्ठ (दृष्टम्) दिट्ठी (दृष्टिः) सिट्ठ (सृष्टम्)
मिट्ठी (सृष्टि) गिण्ठी (गृष्टि) पिच्छी (पृथ्वी)
भिऊ (भृगु) भिंगो (भृङ्ग) भिङ्गारो (भृङ्गार)
सिङ्गारो (शृङ्गारः) सिआलो (शृगाल) घिणा (घृणा)
घुसिणं (घुसृणम्) विद्धकई (वृद्धकविः) समिद्धी (समृद्धिः)
इद्धी (ऋद्धिः) गिद्धी (गृद्धिः) किसो (कृश)
किसाणू (कृशानु) किसरा (कृसरा) किच्छं (कृच्छ्रम्)
तिप्पं (तृप्तम्)[1] किसिओ (कृषितः) निवो (नृपः)
किच्चा (कृत्या) किई (कृति) धिई (धृतिः)
किवो (कृप) किविणो (कृपणः) किवाण (कृपाणम्)
विञ्चुओ (वृश्चिकः) वित्त (वृत्तम्) वित्ती (वृत्तिः)
हिअ (हृतम्) वाहित्तं (व्याहृतम्) विंहिओ (बृंहित)
विसी (वृषी) इसी (ऋषि) विइण्हो (वितृष्ण)
छिहा (स्पृहा) सइ (सकृत्) उक्किट्ठ (उत्कृष्टम्)
निससो (नृशंसः)

१. नोट—कगटडतदपशषस ≍कपामूर्ध्वंलुक् २।७७ का अपवाद है।

नियम १५८ (पृष्ठे वानुत्तरपदे १।१२९) पृष्ठ शब्द उत्तर पद मे न हो तो उसके ऋ को इ विकल्प से होता है।

ऋ7अ—पिट्ठी, पट्ठी (पृष्ठम्)। पिट्ठिपरिट्ठविअ

नियम १५९ (मसृण-मृगाङ्क-मृत्यु-शृङ्ग-धृष्टे वा १।१३०) मसृण, मृगाङ्क, मृत्यु, शृङ्ग और धृष्ट शब्दो के ऋकार को इकार विकल्प से होता है।

ऋ7इ—मसिण, मसण (मसृणम्) मिअङ्को, मयङ्को (मृगाङ्कः) मिच्चु, मच्चु (मृत्यु) सिंग, संग (शृङ्गम्) धिट्ठो, धट्ठो (धृष्टः)

नियम १६० (उदृत्वादौ १।१३१) ऋतु आदि शब्दो के आदि ऋ को उ होता है।

ऋ7उ—उऊ (ऋतु) परामुट्ठो (परामृष्ट) पुट्ठो (स्पृष्ट)
पउट्ठो (प्रवृष्ट) पुहई (पृथिवी) पउत्ती (प्रवृत्तिः)
पाउसो (प्रावृट्) पाउओ (प्रावृत) भुई (भृति)
पहुडि (प्रभृति) पाहुड (प्राभृतम्) परहुओ (परभृतः)

निहुग (निभृतम्)	निउअ (निवृतम्)	विउअ (विवृतम्)
संवुअ (सवृतम्)	वुत्तन्तो (वृत्तान्तः)	निव्वुअं (निर्वृतम्)
निव्वुई (निर्वृति)	वुन्दं (वृन्दम्)	वुन्दावणो (वृन्दावन)
वुड्ढो (वृद्ध·)	वुड्ढी (वृद्धि)	उसहो (ऋषभ.)
मुणाल (मृणालम्)	उज्जू (ऋजु)	जामाउओ (जामातृक)
माउओ (मातृक)	माउआ (मातृका)	भाउओ (भ्रातृक)
पिउओ (पितृक)	पुहुवी (पृथ्वी)	

प्रयोग वाक्य

एग छीअ सुह न हवइ। परियासियथुक्कस्स ओसहिरूवेण पओगो होइ। उड्डुओ भोयणस्स पुण्णस्स सूअगो (सूचक) अत्थि। जिंभिआ णिद्दाए पुव्व आयाइ। सेओ गिम्हकाले बहु आयाइ। को वि म समरइ अस्स सूअआ हिक्का अत्थि। सो खज्जु करेइ। खेलो अपक्कवीरियरूवो अत्थि। वायणिसग्गस्स झुणि (ध्वनि) सुणिऊण वाला हसति। उससिएण सुद्धवाऊ अतो पविसइ। नीससिएण असुद्धवाऊ वाहिं णिक्कसेइ। अप्पसत्तीए भमली आयाइ। मुत्तावरोहो भयकरो भवइ। तस्स सरीरे जल्ल नत्थि। चिडच्छओ गूह परिक्खिऊण रोगस्स नाण करेइ। तस्स असूइ कह पडति? वेज्जो कुलुअ पासिऊण कहइ तुम लुक्को सि। गरिमा अगुलीए णासाइ सिंघाण णिक्कसइ। तुम दतपिट्टएण पिप्पिय णासइ। कयाइ किट्टस्सावि आवस्सगत्तण विज्जइ। नेत्तोसहीए दूसिआ दूर गच्छइ।

धातु प्रयोग

सावगो पइदिण सामाइय समायरइ। नो कप्पइ निग्गथाण गिहिभायणम्मि भोयण भुजित्तए। सो पुण्ण दिवह चरइ। अह न जाणामि ज तुम कह अणुतप्पसि? पिआ पययइ ज तस्स पुत्तो परिक्खाए पढमो भवे। नलिणो कल्ल अभिनिक्खमिहिइ। अज्ज सो सव्व खाइम परिहरइ। सो कोहेण सजलइ। आयरिओ सीसं वज्जइ ज अज्ज तुमए तत्थ न गतव्व। तक्खो कट्ठ तच्छइ। वालो रोट्टग चरइ।

अव्यय प्रयोग

अह सुवे तुमए सह नयर गमिहिमि।

तेण किं कहिअ म्हो? सव्वे सावगा परसुवे उत्तरसुवे वा उववास करिहिंति।

प्राकृत में अनुवाद करो

तुम्हे छीक क्यो आती है? अजीर्ण मे खट्टी (खट्ट) डकार आती है। उसके सोने का समय आ गया है, क्योकि वह जभाई लेता है। तुम्हे हिचकी

आती है, कौन याद कर रहा है ? खुजली मे खट्टे पदार्थ मत खाओ। वह यहा क्यो थूकता है ? शीतकाल मे कफ अधिक आता है। उसने दही खाया है, इसलिए खासता है। पसीने के द्वारा शरीर का विकार बाहर निकलता है। अधोवायु निकलने से मन शात होता है। तीर्थंकरो के उच्छ्वास मे सुगध आती है। कल उसको उच्छ्वास आया पर निश्वास नही आया। प्रतिदिन जीभ का मैल हाथ से साफ करो। तुम बार-बार नाक का मैल निकालते हो। कान का मैल समय पर नही मिलता है। आख का मैल सफेद रग (सित) का होता है। दात का मैल उपवास से बढता है। पानी से शरीर का मैल उतरता है। मल का बाहर आना स्वास्थ्य का लक्षण है। वह पानी कम पीता है, इसलिए मूत्र पूरा नही आता। दुख की बात मे उसके आसू पडने लगे।

धातु का प्रयोग करो

गाय घास को चबाती है। जिस समय मनुष्य धर्म का आचरण करता है वह समय उसका मूल्यवान् है। साधु को कच्चे फल लेना कल्पता (उचित) नही है। आचार्य शिष्य को कच्चे फल के स्पर्श का निषेध (वर्जन) करते है। जो विना विचारे काम करता है, वह पीछे अनुताप करता है। विना प्रयोजन वह क्यो जलता है ? वह धनवान बनने के लिए प्रयत्न करता है। प्रचुर धन को छोडकर नीलेश सन्यास लेता है। तुम अविवेकी गुरु को क्यो नही छोडते हो ? जो कर्म को पतला करता है वह बधन से मुक्त होता है।

अव्यय का प्रयोग करो

कल मेरा भाई यहा आएगा। परसो तुम्हारा भाग्योदय होने वाला है। आचार्य ने कल क्या घोषणा की थी ?

प्रश्न

१. ऋकार को क्या-क्या आदेश हुए है ? एक-एक उदाहरण दो।
२ गिण्ठी, पिच्छी, माउक्क, तिप्प, विञ्चुओ, पिट्ठी, सिगं, निव्वुअ, पहुडि, घट्ठो, छिहा—इन शब्दो को नियम का उल्लेखपूर्वक सिद्ध करो।
३ छीक, डकार, जभाई, हिचकी, खुजली, थूक, कफ, पसीना, शरीर का मैल, आसू, खासी, अधोवायु, चक्कर, उच्छ्वास, निश्वास, जीभ का मैल, नाक का मैल, कान का मैल, आख का मैल और दात का मैल—इन शब्दो के प्राकृत शब्द बताओ।
४ समायर, कप्प, मजल, वज्ज, अणुतप्प, पयय, अभिनिक्खम, वच्छ, परिहर और चर धातु को एक-एक वाक्य मे प्रयोग करो।
५ आजकल (बीता हुआ) कल (आगामी) और परसो के अर्थ मे कौन-कौन अव्यय है ? एक-एक वाक्य मे प्रयोग करो।

शब्द संग्रह (प्रसाधन सामग्री)

लिपस्टिक—ओट्ठरजण (स)
नेलपालिश—णहरजण (स)
स्नो—हैम (स)
क्रीम—सरो (स)
इत्र—पुप्फसारो
तेल—तेल्ल, तेल
मेहदी—मेहदी
अजन—अजणो
चोटी, चूडा—छेडो (दे०)
पुष्पमाला—आमेलिओ
पान—तबोल
कघी—फणिहो (दे०), ककमी (दे०)
दर्पण—दप्पणो, आयसो
सिंदूर—सिंदूरो
केशो का जूडा—आमेलो
पाउडर—चुण्णअं (स)
रूज—कवोलरजण

स्वेद, पसीना—सेअ
चिकना—चिक्कण (वि)
चिन्ह—चिंध
उत्सव—महो, मह

धातु संग्रह

अभिपत्थ—प्रार्थना करना
परिच्चय—परित्याग करना
रम—खेलना
पमत्थ—मथन करना
दह, डह—दग्ध होना
णम, नम—नमस्कार करना
परिअट्ट—घूमना
सह—सहना, सहन करना
अभिजाण—पहचानना
आइक्ख—कहना

स्वरादेश

ऋकार को उ, इ, ऊ, ओ, ए, रि, ढि आदेश—

नियम १६१ (निवृत्त-वृन्दारके वा १।१३२) निवृत्त, वृन्दारक शब्दो के ऋ को उ विकल्प से होता है।

ऋ7उ—निवुत्त, निअत्त (निवृत्तम्) वुन्दरया, वन्दारया (वृन्दारका.)

नियम १६२ (वृषभे वा वा १।१३३) वृषभ शब्द के वृ को उ विकल्प से होता है।

वृ7उ—उसहो, वसहो (वृषभ)

नियम १६३ (गौणान्त्यस्य १।१३४) गौण शब्द (समस्त पदो मे पूर्व पद) के अत मे होने वाले ऋकार को उकार होता है

ऋ7उ—माउमण्डल (मातृमण्डलम्) माउहर (मातृगृहम्)
पिहरं (पितृगृहम्) माउसिआ (मातृष्वसा)
पिउसिआ (पितृष्वसा) पिउवण (पितृवनम्)
पिउवई (पितृपति.)

नियम १६४ (मातुरिद् वा १।१३५) मातृ शब्द (गौण हो) तो उसके ऋकार को इकार विकल्प से होता है।

ऋ7इ—माइहरं, माउहर (मातृगृहम्)

नियम १६५ (उदूदोन्मृषि १।१३६) मृषा शब्द के ऋ को उ, ऊ और ओ होता है।

ऋ7उ, ऊ, ओ—मुसा, मूसा, मोसा (मृषा) मुसावाओ, मूसावाओ, मोसा-वाओ (मृषावाद)

नियम १६६ (इदुतौ वृष्ट-वृष्टि-पृथङ्-मृदङ्ग-नप्तृके १।१३७) वृष्ट, वृष्टि, पृथक्, मृदङ्ग और नप्तृक शब्दों के ऋकार को इकार और उकार होता है।

ऋ7इ, उ—विट्ठो, वुट्ठो (वृष्ट.)। विट्ठी, वुट्ठी (वृष्टि) पिह, पुह (पृथक्) मिइंगो, मुइंगो (मृदङ्ग)। नत्तिओ, नत्तुओ (नप्तृकः)।

नियम १६७ (वा वृहस्पतौ १।१३८) वृहस्पति शब्द के ऋ को इ और उ विकल्प से होता है।

ऋ7इ, उ—विहप्फई, वुहप्फई, वहप्फई (वृहस्पति.)

नियम १६८ (इदेदोद्वृन्ते १।१३९) वृन्त शब्द के ऋकार को इकार, एकार और ओकार होता है।

ऋ7इ, ए, ओ—विण्ट, वेण्ट, वोण्ट (वृन्तम्)

नियम १६९ (रिः केवलस्य १।१४०) व्यंजन रहित केवल ऋ को रि होता है।

ऋ7रि—रिद्धी (ऋद्धि.)। रिच्छो (ऋक्ष.)

नियम १७० (ऋणर्ज्वृषभर्त्वृषौ वा १।१४१) ऋण, ऋजु, ऋषभ, ऋतु और ऋषि शब्दों के ऋ को रि विकल्प से होता है।

ऋ7रि—रिण, अण (ऋणम्) रिज्जु, उज्जु (ऋजु.) रिसहो, उसहो (ऋषभ) रिऊ, उऊ (ऋतुः) रिसी, इसी (ऋषि)।

नियम १७१ (दृशः क्विप्-टक्सकः १।१४२) क्विप्, टक् और सक् प्रत्ययान्त दृश् धातु के ऋ को रि आदेश होता है।

ऋ7रि—सरिवण्णो (सदृक्वर्णः) सरिम्वो (सदृक्रूपः) सरिसो (सदृशः) एआरिसो (एतादृश.) जारिसो (यादृश) सरिच्छो (सदृक्षः)

नियम १७२ (आदृते ढिः १।१४३) आदृत शब्द के ऋ को ढि आदेश होता है।
ऋ 7 ढि—आढिओ (आदृत)

नियम १७३ (अरिर्दृप्ते १।१४४) दृप्त शब्द के ऋ को रि आदेश होता है।
ऋ7रि—दरिओ (दृप्त.)

प्रयोग वाक्य

विमला ओट्ठरजणेण ओट्ठा रजइ। हिम सितवण्ण भवइ सीयलं य देइ। पुप्फसारेण संपुण्ण ठाण सुगधमयं जाअ। मेहदी थीण पिआ अत्थि। छेडेण थीण सिरी भवइ। मोहणो दिवहे पच तवोलाइ चरइ। दप्पणे (आयंसम्मि) णियवयण फुड दिस्सइ। जयमाला आमेलम्मि आमेलिअं लगावेइ। किं कवोल-रजण अग्घ (मूल्यवान्) अत्थि? पाओ (प्राय.) कुमारीओ णहरजणं करेति। जणा चम्मस्स लुक्खयाए (रूक्षता) सरस्स पओगं करेति। तेलम्मि सुगंधो आयाइ अस्स किं अभिहाण अत्थि? पूरणो नयणेसुं अजणं देइ। सुलोअणा फणिहेण केसा सारइ (सवारना)। सिंदूरो सघवाए चिंधं अत्थि। चुण्णअ सेअं रुधइ।

घातु प्रयोग

सावगा सावियाओ य टमकोरम्मि गामम्मि आगमणस्स आयरिअं अभिपत्थति। जो धम्म परिच्चयइ सो दुही होइ। अह सव्वं जाणामि तहवि तुं न जाणामि। वाला गिहे रमइ। पुरिसा पगे परिभट्टति उज्जाणे। अह तुम सव्व अभिजाणामि। देवा असुरा य समुद्द पमत्थीअ। सीसो गुरुं नमइ। जो सहइ परा सो सुही भवइ। अणिच्चवाई एव आइक्खइ ससारे सव्वं अणिच्च।

प्राकृत में अनुवाद करो

होठो पर लिपष्टिक लगाना स्वास्थ्य के लिए ठीक नही है। स्नो से चिकना नही होता है। सरला इत्र का प्रयोग कभी-कभी करती है। सुमन आज मेहदी क्यो नही लगाएगी? जूडा से स्त्री को प्रसन्नता होती है। रमेश भोजन के वाद प्रतिदिन पान खाता है। छोटे दर्पण मे भी चेहरा साफ दिखता है। किस प्रदेश मे स्त्रिया केशो का जूडा वनाती है? तुम रूज को किस प्रदेश से लाए हो? नेलपालिश से नखो को लाल करना व्यर्थं है। क्रीम शीतकाल मे विशेष विकता है। तेल से केश चिकने होते है। अजन से आखे ठीक रहती हैं। आज तुम पुष्पमाला किसलिए लाए हो? माता कंघी से लडकी के केश सवारती हैं। विघवा की ललाट मे सिंदूर क्यो है? पाउडर प्रत्येक आदमी को नही मिलता है।

अव्यय का प्रयोग करो

वह सूत्र पढने के लिए गुरु से प्रार्थना करता है। क्या तुम हेमचद्राचार्य को जानते हो ? बच्चे रात को क्यों खेलते हैं ? क्या अग्नि मे सर्व वस्तु जल जाती है ? वह अपने पति के साथ घूमने जाती है। क्या तुम मुझे पहचानते हो ? एक बार खाने के बाद उसने उस वस्तु का परित्याग कर दिया। लीला सुबह दही का मन्थन करती है। मैं गौतम स्वामी (गोयमसामि) को नमस्कार करता हूं। जो जितना (जेत्तिओ) बडा होता है उसे उतना (तेत्तिओ) अधिक सहन करना होता है। गुरु शिष्य को धर्म का रहस्य कहते हैं।

प्रश्न

१. ऋकार को इस पाठ मे क्या-क्या आदेश हुआ है ?

२. किस शब्द के ऋकार को उ, ऊ और ओ होता है तथा किस शब्द के ऋकार को उकार, एकार और ओकार हुआ है तथा किस नियम मे ?

३ पिउसिआ, सरिस्वो, रिच्छो, उसहो, पिउहर, सरिच्छो, दरिओ—इन शब्दो की सिद्धि करो।

५ लिपष्टिक, स्नो, इत्र, मेहदी, चूडा, पान, दर्पण, केशो का जूडा, रूज, नेलपॉलिश, क्रीम, तेल, अजन, पुष्पमाला, कघी, सिंदूर, पाउडर, शब्दो के लिए प्राकृत शब्द बताओ।

६ अभिपत्थ, अभिजाण, खण, परिच्चय, पमत्थ, टह, परिअट्ट धातु का क्या अर्थ है ? वाक्य मे प्रयोग करो।

स्वरादेश (१०)

शब्द संग्रह (व्यापार वर्ग)

बाजार—विवणि (पु. स्त्री) वणिअमग्गो
दुकान—आवणो, हट्टो, अट्टयो
व्यापार—ववहारो, वावारो, वाणिज्ज
व्यापारी—वावारी (पु)
लेनदेन—परियाणं
खर्चा—परिव्वयो
आयात—आअअ (वि)
ऋण—उल्लं
कारखाना—कम्मसाला
व्याज—कलतर
ग्राहक—गाहगो
खरीदना—कयो
बेचना—विक्कओ
नगद—टको
बेचनेवाला—विक्कड (वि)
धन—धण
निर्यात—णिज्जायो
वस्तु—वत्थु
रुपया—रूवगो, रूवग
आफिस—कज्जालयो

धातु संग्रह

खिज्ज—खिन्न होना
वरिस—बरसना
सर—सरकना
मर—मरना
अज्ज—अर्जन करना
तर—तैरना
रुव—रोना
अइ—उल्लंघन करना
पाउण—प्राप्त करना

स्वरादेश

लृ को इलि आदेश। ए को इ, ऊ आदेश। ऐ को ए, इ, अइ, अअ, ई आदेश

नियम १७४ (लृत इलिः क्लृप्त-क्लृन्ने १।१४५) क्लृप्त, क्लृन्न शब्दो के लृ को इलि आदेश होता है।

लृ > इलि—किलित्त (क्लृप्तः) किलिन्न (क्लृन्न)

नियम १७५ (एत इद् वा वेदना-चपेटा-देवर-केसरे १।१४६) वेदना, चपेटा, देवर और केसर शब्दो के ए को इ विकल्प से होता है।

ए > इ—विअणा, वेअणा (वेदना) चविडा, चवेडा (चपेटा) दिअरो, देवरो (देवरः) किसरं, केसर (केसरम्)

नियम १७६ (ऊः स्तेने वा १।१४७) स्तेन शब्द के ए को ऊ विकल्प से होता है।

ए 7 ऊ—थूणो, थेणो (स्तेनः)

नियम १७७ (ऐत एत् १।१४८) आदि के ऐकार को एकार होता है।

ऐ 7 ए—सेला (शैला.) तेलोक्कं (त्रैलोक्यम्) एरावणो (ऐरावतः) केलासो (कैलासः) वेज्जो (वैद्यः) केढवो (कैटभ.) वेहव्वं (वैधव्यम्)

नियम १७८ (इत्सैन्धव-शनैश्चरे १।१४९) सैन्धव और शनैश्चर शब्दों के ऐ को इकार होता है।

ऐ 7 इ—सिन्धवं (सैन्धवम्) सणिच्छरो (शनैश्चरः)

नियम १७९ (सैन्ये वा १।१५०) सैन्य शब्द के ऐ को इ विकल्प से होता है।

ऐ 7 इ—सिन्नं, सेन्नं (सैन्यम्)

नियम १८० (अइ दैत्यादौ च १।१५१) सैन्य शब्द और दैत्य आदि शब्दो के ऐ को अइ आदेश होता है।

ऐ 7 अइ—सइन्नं (सैन्यम्) दइच्चो (दैत्यः) दइन्नं (दैन्यम्) अइसरिअं (ऐश्वर्यम्) भइरवो (भैरवः) वइजवणो (वैजवन.) दइवअं (दैवतम्) वइआलिअं (वैतालीयः) वइएसो (वैदेशः) वइएहो (वैदेह) वइदब्भो (वैदर्भः) वइस्साणरो (वैश्वानरः) कइअवं (कैतवम्) वइसाहो (वैशाखः) वइसालो (वैशालः) सइरं (स्वैरम्) चइत्तं (चैत्यम्)। विश्लेषे अइ न भवति चेइअं (चैत्यम्)

नियम १८१ [वैरादौ वा १।१५२] वैर आदि शब्दो के ऐ को अइ आदेश विकल्प से होता है।

ऐ 7 अइ—वइरं, वेरं (वैरम्)। कइलासो केलासो (कैलासः) कइरवं केरवं (कैरवम्) वइसवणो, वेसवणो (वैश्रवण॰) वइसम्पायणो वेसम्पायणो (वैशम्पायन.) वइआलिओ, वेआलियो (वैतालिकः) वइसिअं, वेसिअ (वैशिकम्) चइत्तो, चेत्तो (चैत्र.)।

नियम १८२ [एच्च दैवे १।१५३] दैव शब्द के ऐ को ए और अइ आदेश विकल्प से होता है।

ऐ 7 ए, अइ—देव्वं, दइव्वं, दइवं (दैवम्)।

नियम १८३ [उच्चैर्नीचैस्यअः १।१५४] उच्चै और नीचै शब्दो के ऐ को अअ आदेश होता है।

ऐ—अअ—उच्चअं (उच्चैः) नीचअं (नीचैः)

नियम १८४ [ईद् धैर्ये १।१५५] धैर्य शब्द के ऐ को ईकार होता है।

ऐ—ई—धीरं (धैर्यम्)

प्रयोग वाक्य

विवणिम्मि अणेगे आवणा संति। सो हट्टत्तो निसाए विलंबेण आयाइ।

धणजयो वावारकुसलो अत्थि। वावारी वाणिज्जेण धण अज्जइ। जस्स वावारिणो परियाणं सुद्ध भवे सो कित्ती धण य लभइ। अज्जत्ता जणा परिव्वय अहियं करेंति। विजयो वत्थूइ कयट्ठ दक्खो (दक्ष) अत्थि। रामगोवालो आसा विक्कयट्ठ णयर गओ। कम्मसालाइ केत्तिआ जणा कज्ज कुणंति। वत्थ-वावारिणो अल्ल देंति। कलतरे तुज्झ केत्तिला रुवगा सति। भारहे सुवण्णस्स आगओ भवइ। सो वाणिज्यो निउणो (निपुण) जो गाहगा रित्तहत्था न पेसइ (भेजता है)। अमुम्मि अट्टयम्मि टकेण परियाण भवइ। सागविक्कई अमुम्मि गामम्मि को अत्थि? भारहवासत्तो केसिं वत्थूण णिज्जायो भवइ।

धातु प्रयोग

तुज्झवयण सुणिऊण सो खिज्जइ। अज्ज किं मेहो वरसइ? वीयरागो ससारसायर तरिहिइ। एसो सप्पो किं जीवइ? ससारी पाणी पइक्खण (प्रतिक्षण) मरइ। पचवरिसो केलासो कह रुवइ? सप्पो सणिअ सरइ। सो साहू णियम जाणिऊण कह अइइ? सो रत्तिदिवह धण अज्जइ। किं सुरेसो धणेण पइट्ठं (प्रतिष्ठा) पाउणइ?

प्राकृत में प्रयोग करो

इस शहर के मुख्य बाजार मे सब प्रकार की वस्तुए मिलती हैं। व्यापार से धन बढता है। मेरा भाई कपडा खरीदने शहर मे गया है। तुम कपडा बेचने यहा से कब जाओगे? उसके तीन दुकाने हैं। बनिया लोग प्रायः व्यापार करते थे। सब जाति के लोग व्यापारी हो सकते है। उसके पास खर्च करने का धन नही है। तुम सौ रुपये का कितना व्याज लेते हो? भारत बदरो का (वाणरा) निर्यात करता है। व्यापारी सोने का आयात करते हैं। तुम आज कर्ज से मुक्त (मुत्त) हो जाओगे। जो दूसरो से ऋण लेता है उसे व्याज देना होता है। मेरे पास नगद रुपया नही है। क्या तुम कारखाने मे काम करना चाहते हो? आज घी बेचने वाला कहा गया है?

धातु का प्रयोग करो

वह वाद-विवाद से खिन्न हो जाता है। आज दूध की वर्षा हुई है। वह अपने विचारो से थोडा भी नही सरकता है। जो मरता है वह वापस नही आता है। जो तैरता है वह पार जाता है। माता पुत्र की मृत्यु पर रोती हैं। जो प्रामाणिक होता है वह नियम का उल्लघन नही करता। वह यश कमाता है। नीलम पुत्र को प्राप्त करती है।

प्रश्न

१. लृ, ए और ऐ को क्या-क्या स्वर नित्य आदेश होते हैं? एक-एक उदाहरण दो।

२. ए और ऐ को कौन से स्वर विकल्प से आदेश होते हैं ? उनके भी एक-एक उदाहरण दो।

३. "अड दैत्यादौ च"—यह नियम क्या कहता है ? कोई पांच उदाहरण दो।

४. बाजार, दुकान, कारखाना, व्यापार, व्यापारी, लेनदेन, खरीदना, बेचना, बेचने वाला, ऋण, नकद, आयात, निर्यात, ग्राहक, खर्च, रुपया और कारखाना—इन शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ ?

५. खिज्ज, वरिस, सग, तर, मर, रुव, अड और पाउण—इन धातुओं के अर्थ बताओ और उनका वाक्य में प्रयोग करो।

६. उवसालं, छायणं, मूसा, किट्टं, डूसिआ, भमली, आमेलो, सरो—इन शब्दों का वाक्य में प्रयोग करो और हिन्दी में अर्थ बताओ।

स्वरादेश (११)

शब्द संग्रह (विद्यालय)

विद्या—विज्जा
कालेज—महाविज्जालयो
कक्षा—कक्खा
कालांश—समयविभागो
प्रिंसिपल—पहाणसिक्खवओ
कुलपति—कुलवई (पु)
स्नातक—ण्हाओ
उत्तीर्ण—उत्तिण्ण
प्रश्नपत्र—पण्हपत्त
कलम—लेहणी
स्याही—मसी (स्त्री)
गुरु, अध्यापक—उवज्झायो
सिक्खवओ
विद्यालय—विज्जालय (पु. न.) पाढसाला
विश्वविद्यालय—विस्सविज्जालयो (स)
छात्र—छत्तो, विज्जट्ठि (पु)
वस्ता—वेट्ठणं (स)
विभागाध्यक्ष—विभागाज्झक्खो (स)
पुस्तक—पोत्थय
वेतन—वेयण
प्रश्न—पण्हो, पण्हा
छुट्टीपत्र—अवगासपत्त
परीक्षा—परिक्खा
वोर्ड—फलग
इन्सपेक्टर—णिरिक्खओ (स)
उत्तर पत्र—उत्तरपत्त

धातु संग्रह

उत्तर—उत्तर देना
अणुकर—नकल करना
मुस—चुराना
अइगच्छ—गमन करना
अंच, अच्च—पूजा करना
निक्कस—वाहर निकलना
पहुच्च—पहुंचना
अइक्कम—अतिक्रमण करना
अगीकर—स्वीकार करना
अक्कम—आक्रमण करना

ओ को अ, ऊ, अउ, आअ आदेश

औ को ओ, उ, आ, अउ, आव आदेश

नियम १८५ (ओतोद् वान्योन्य-प्रकोष्ठातोद्य-शिरोवेदना-मनोहर-सरोरुहे क्तोश्च वः १।१५६) अन्योन्य, प्रकोष्ठ, आतोद्य, शिरोवेदना, मनोहर, सरोरुह—इन शब्दो के ओकार को अ विकल्प से होता है।

ओ 7 अ—अन्नन्नं, अन्नुन्न (अन्योन्यं) पवट्ठो, पउट्ठो (प्रकोष्ठ) आवज्ज आउज्जं (आतोद्य) सिरविअणा, सिरोविअणा (शिरोवेदना) मणहरं मणोहर (मनोहरं) सररुह, सरोरुहं (सरोरुहं)

नियम १८६ (ऊत्सोच्छ्वासे १।१५७) सोच्छ्वास के ओ को ऊ होता है।

ओ7ऊ—सूसासो (सोच्छ्वासः)

नियम १८७ (गव्यउ आअः १।१५८) गो शब्द के ओ को अउ और आअ आदेश होता है।

ओ7अउ, आअ—गउओ, गाओ (गौ.) स्त्रीलिंग मे गउआ

नियम १८८ (औत ओत् १।१५६) शब्द के पहले (आदि) औकार को ओकार हो जाता है।

औ7ओ—कोमुई (कौमुदी) जोव्वण (यौवनं) कोत्थुहो (कौस्तुभ) कोसवी (कौशाम्बी) कोञ्चो (क्रौञ्च.) कोसिओ (कौशिक.)

नियम १८९ (उत्सौन्दर्यादौ १।१६०) सौन्दर्य आदि शब्दो के औ को उ होता है।

औ7उ—सुदेरं, सुन्दरिअं (सौन्दर्य) मुञ्जायणो (मौञ्जायनः) मुण्ढो (शौण्ड) सुद्धोअणी (शौद्धोदनी) दुवारिओ (दौवारिक.) सुगंध-त्तणं (सौगन्ध्यं) पुलोमी (पौलोमी) सुवण्णिओ (सौवर्णिकः)

नियम १९० (कौक्षेयके वा १।१६१) कौक्षेयक शब्द के औ को उद् विकल्प से होता है।

औ7उ—कुच्छेअयं, कोच्छेअय (कौक्षेयकम्)

नियम १९१ (अउ. पौरादौ च १।१६२) कौक्षेयक और पौर आदि शब्दो के औ को अउ आदेश होता है।

औ7अउ—कउच्छेअयं (कौक्षेयकं) पउरो (पौर) कउरवो (कौरव) कउसल (कौशलम्) पउरिसं [पौरुषम्] गउडो [गौडः] मउली [मौलि.] मउण [मौनम्] सउहं [सौधम्] सउरा [सौराः] कउला [कौला.]

नियम १९२ (आच्च गौरवे १।१६३) गौरव शब्द के औ को आ और अउ आदेश होते है।

औ7आ—गारवं, गउरवं [गौरवम्]

नियम १९३ (नाव्यावः १।१६४) नौ शब्द के औ को आव आदेश होता है।

औ7आव—नावा [नौ]

प्रयोग वाक्य

नो विज्ज पढिउ णिच्च विज्जालयं गच्छइ। अभयो कया महाविज्जालयं पविस्सइ ? किं विभा कक्खाए पढमा भविस्सइ ? एगम्मि दिणे कज्जाइ केत्तिआ समयविभागा भवति। विमला जेणविस्सभारइए विस्सविज्जा-नयस्स छत्ता अत्थि। संपइ अस्स विस्सविज्जालयस्स महाकुलवई सिरीगिरीचंदो

रामउरिआ अत्थि। तुज्झ महाविज्जालयस्स पहाणसिक्खवओ को अत्थि? ण्हायअछत्तो विजयो अइविचक्खणो अत्थि। पण्हपत्ताइ कया पुण्णाइ भविहिति? उत्तरपत्ताइ को को निरिक्खिस्सति? गुरु विज्जट्ठिणो अणुसासइ। आणंदो लेहणीए धणी अत्थि। आवणे अणेगेसु रंगेसु मसी लभइ। अज्जत्ता सत्तवरिसस्स बालअस्स पासे वेट्ठगे पोत्थयाण भारो बहू भवइ। कल्लं पाढसालाए णिरिक्खओ आगमिहिइ। अमुम्मि महाविज्जालयम्मि वागरणस्स विभागाज्झक्खो को अत्थि? परिक्खाए भूओ छत्ताण सिरे णच्चइ। तुम अवगासपत्त लिह। उवज्झायेण फलगे किं लिहिअं? अत्थि पण्हो विज्जालये छत्ताण अणुसासणस्स सव्वेसिं समक्खे।

धातु का प्रयोग

णोहा सासूए एगमवि वक्क न सहइ तक्खण उत्तरइ। रमेसो बालो अत्थि तहवि पाढसालाए पोत्थयं लेहणिं वा अवस्स मुसइ। असोगो मोहणं धारइ। घणवालो पइदिण अइगच्छइ। सुसीला गुरु अंचइ अच्चइ वा। अग्गित्तो फुल्लिगा निक्कसति। तुम कल्लं वाराणसिं पहुच्चिहिसि। तुज्झ सव्व आण हं अगीकरेमि। भारहो कस्स देसस्स अवरिं न अक्कमइ। गुरुणो आएस अहं न अइक्कमामि। छत्ता परिक्खाए अणुकरेंति।

प्राकृत में अनुवाद करो

हमारा विद्यालय गांव के बाहर है। कक्षा मे आज अध्यापक नही है। विद्या के विना सम्मान नही मिलता। पुस्तक को अच्छी तरह पढो। कालेज के छात्र आज कहा गए है? आज किसी ने छुट्टीपत्र नही दिया। वह कलम से पत्र लिखता है। इस वेतन से घर का खर्च भी नही चलता। परीक्षा मे उत्तीर्ण होना सरल नही है। मेरा भाई कॉलेज में पढता है। कक्षा में बुद्धिमान् (बुद्धिमत) लडका कौन है? अध्यापक विद्यार्थियो को क्यो मारता है? प्रिंसिपल का अनुशासन लडके मानते है। तुम कौन से कालांश मे पढाते हो। मैं स्नातक की परीक्षा मे उत्तीर्ण हूं। हमारे प्रश्नपत्र स्कूल से बाहर के अध्यापको ने बनाये है। हमारे उत्तरपत्रो को मैं नही देखूगा। विश्वविद्यालय का महत्त्व [महत्तणं] तुम नही जानते हो। मेरे बस्ते मे तुम्हारी पुस्तकें कहां से आई? इन्सपेक्टर ने मुझे एक प्रश्न पूछा। विभागाध्यक्ष होना सरल कार्य नही है। एक दिन तुम भी कुलपति बनोगे। छुट्टीपत्र के विना स्कूल मे न जाना अच्छा नही है। अध्यापक बोर्ड पर लिखकर अपने विषय को सरलता से समझाता है।

धातु का प्रयोग करो

तुम्हारे प्रश्न का मैं उत्तर नही दूगा। घडे से पानी निकलता है। वह परसो यहा पहुचेगा। दिनेश आज्ञा का उल्लघन नहीं करता है। बच्चे

पुस्तक क्यो चुराते हैं ? तुम परीक्षा मे नकल क्यो करते हो ? ऋषभ गुरु की पूजा करता है। तुम अपने घर कल कब जाओगे ? पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण किया था। पति पत्नी की सब बात स्वीकार करता है।

प्रश्न

१. इस पाठ मे अउ और आउ आदेश किस स्वर को हुआ है ?

२. ओकार और औकार स्वर को आदेश होने वाले स्वरो मे कहा समानता है और कहा भिन्नता है ? उदाहरण दो।

३ गउडो, मउली, पुलोमी, सुद्धोअणी, सउह शब्द किस स्वर के आदेश से बने हैं।

४ विद्या, विद्यालय, कालेज, विश्वविद्यालय, कालाश, प्रिंसिपल, कुलपति, स्नातक, उत्तीर्ण, प्रश्नपत्र, उत्तरपत्र, छात्र, वस्ता, इन्स्पेक्टर, विभागाध्यक्ष, पुस्तक, छुट्टीपत्र, छात्र, वोर्ड, प्रश्न और परीक्षा—इन शब्दो के लिए प्राकृत शब्द वताओ।

५. उत्तर, निक्कस, मुस, अइगच्छ, अक्कम, पहुच्च और अइक्कम—इन धातुओ के अर्थ वताओ।

६. एक विषय से सम्बन्धित पाच वाक्य अपनी इच्छानुसार बनाओ।

३५ प्रारम्भिक सरल व्यंजन परिवर्तन

शब्द संग्रह (जलाशय वर्ग)

समुद्र—समुद्दो, सायरो
तालाव—तडाओ, तलायो, सर
नहर—कुल्ला
निर्झर—अवज्झरो, ओज्झरो
प्याऊ—पवा
बावडी—वावी
कुड—कुडं
नल—णल
नदी—नई
कुंआ—कूवो, अगडो, अवडो
छोटा कुंआ—कूविया
छोटा प्रवाह—ओग्गलो
पुष्करणी—पोक्खरिणी
टंकी—जलसगहालयो (स)
बांध—बंधो (स)

धातु संग्रह

वह—वहना
अक्कोस—गाली देना
अक्खिव—फेकना
आलिह—चित्र बनाना
अच्चीकर—प्रशसा करना खुशामद करना
पमज्ज—साफ सुथरा करना
पमा—सत्य-सत्य ज्ञान करना
पत्थ—प्रार्थना करना
थक्क—थकना
अणुकप—दया करना

प्रारंभिक सरल व्यंजन परिवर्तन

असंयुक्त व्यजन या स्वर सहित व्यजन को सरल व्यंजन कहते हैं। शब्द के आदि मे होने वाले व्यजनो मे सामान्य रूप से न, य श और प व्यजनो मे परिवर्तन होता है। कही-कही क और प व्यजन मे भी परिवर्तन मिलता है। विशेष व्यंजन (शब्द विशेष) में क को ग और च, ज को झ, त को च और ह, द को ड, ल को ण, व को भ, य को ल और त, श को छ परिवर्तन होता है।

नियम १९४ (वादी १।२२९) शब्द के आदि मे होने वाले न को ण विकल्प से होता है।

न > ण – णरो, नरो (नर) णई, नई (नदी) णिसण्णो, निसण्णो (निषण्ण) णुमण्णो, नुमण्णो (निमग्न:)।

नियम १९५ (आदेर्यो ज: १।२४५) शब्द के आदि मे होने वाले य को ज हो जाता है।

य > ज—जसो (यशस्) जई (यति:) जमो (यम:) जाई (जाति:)

नियम २०५ (दंश-दहोः १।२१८) दश और दह धातु के द को ड होता है।
द7ड—डसइ (दशति) डहइ (दहति)

नियम २०६ (निम्ब-नापिते ल-ण्हं वा १।२३०) निम्ब के न को ल और नापित के न को ण्ह आदेश विकल्प से होता है।
न7ल, ण्ह—लिम्बो, निम्बो (निम्ब) ण्हाविओ, नाविओ (नापित.)।

नियम २०७ (बिसिन्यां भः १।२३८) बिसिनी के ब को भ होता है।
ब7भ—भिसिणी (बिसिनी)

नियम २०८ (प्रभूते वः १।२३३) प्रभूत शब्द के प को व होता है।
प7व—वहुत्त (प्रभूतम्)।

नियम २०९ (मन्मथे वः १।२४२) मन्मथ शब्द के आदि म को व होता है।
म7व—वम्महो (मन्मथः)

नियम २१० (यष्ट्यां लः १।२४७) यष्टि शब्द के य को ल होता है।
य7ल—लट्ठी (यष्टि)।

नियम २११ (युष्मदर्थपरे तः १।२४६) युष्मद् शब्द युष्मद् अर्थ मे हो तो य को त हो जाता है।
य7त—तुम्हारिसो (युष्मादृश.) तुम्हकेरो (युष्मदीय.)।

नियम २१२ (लाहल-लाङ्गल-लाङ्गूले वादेर्णः १।२५६) लाहल, लाङ्गल, लाङ्गूल शब्दो के आदि ल को ण विकल्प से होता है।
ल7ण—णाहलो, लाहलो (लाहलः) णङ्गल, लङ्गल (लाङ्गलम्) णङ्गूल, लङ्गूलं (लाङ्गूलम्)

नियम २१३ (ललाटे च १।२५७) ललाट शब्द के आदि ल को ण आदेश होता है।
ल7ण—णडाल, णिडालं (ललाटम्)।

नियम २१४ (षट्-शमी-शाव-सुधा-सप्तपर्णेष्वादेश्छः १।२६५) इन शब्दो के आदि वर्ण ष, श और स को छ आदेश होता है।
श, ष, स7छ—छट्ठो (षष्ठः) छप्पओ (षट्पद·) छम्मुहो (षण्मुख) छमी (शमी) छावो (शावः) छुहा (क्षुधा) छत्तिवण्णो (सप्तपर्णः)।

नियम २१५ (शिरायां वा १।२६६) शिरा शब्द के आदि श को छ विकल्प से होता है।
श7छ—छिरा, सिरा (शिरा)।

वाक्य प्रयोग

समुद्दस्स नीर महुर नत्थि। अस्स गामस्स बाहिं नई वहइ। मेहं विणा

तलायो सुक्को जाओ। कूवस्स अस्स सलिलं अइमहुर अत्थि। इदिराकुल्ला इमम्मि गामम्मि कया आगमिस्सइ? मरुभूमिवासिणो किंचिवरिसपुव्व तडाअस्स नीर पिविंसु। गिम्हकाले ठाणे-ठाणे पवा भवइ। अवज्झरं दट्ठु मज्झ मणो उच्छुओ अत्थि। इमम्मि णयरे पुव्वं फलिहा आसि। मज्झ गिहे कूविया नत्थि। णेण वाउलिया पूरिया। गामस्स वाहिं ओग्गलो वहइ। कुंडस्स जल परिमिअ भवइ। मरुभूमीए णलस्स उवओगो अहियो होइ। गामे गामे जलसगहालयो विज्जइ। वधस्स उवओगो वि अत्थि, परं कयाइ तेण हाणी वि भवइ।

धातु प्रयोग

कंती विमलं अक्कोसइ। सो मज्झ पोत्थयं अक्खिवइ। मोहणी सेट्ठि अच्चीकरेइ। जयंती समज्जणीए गिह पमज्जइ। लोआ वालमुणि पत्थंति आयरियस्स सेवट्ठु। अप्पेण परिस्समेण महेसो थक्कइ। साहू पाणेसु अणुकंपइ। अह पमामि तुम तया अत्थ आसि। अम्हे आयरियं अच्चीकरेमु। सो महावीरं आलिहइ।

प्राकृत मे अनुवाद करो

समुद्र अपनी सीमा (सीमा) मे रहता है इसलिए लोग उस पर विश्वास करते हैं। नदी सव के हित के लिए वहती है। इस गांव मे एक छोटा तालाव है। गाव के वाहर जो कुआ है उसका पानी पीने योग्य है। हमारे शहर के चारो ओर न तो नदी है और न नहर है। तुम्हारे छोटे कुए का पानी जल्दी सूख जाता है। हमारे क्षेत्र मे अव वापी की आवश्यकता नही है। पुष्करिणी यहा से कितनी दूर है। प्याऊ की उपयोगिता मरूभूमि मे होती है। निर्झर को देखने कौन-कौन जाएंगे? खाई को लाघना सरल कार्य नही है। छोटी खाई मे कितना पानी है? वर्षा के अभाव मे मरुभूमि के लोग कुंड का पानी पीते हैं। नल का पानी सीधा जमीन से आता है। वाध टूटने से गाव के गाव (अणेगे गामा) डूव जाते है। टंकी का पानी स्वच्छ किया हुआ होता है।

धातु का प्रयोग करो

तुमने उसको गाली दी इसलिए वह तुम्हारे पास नही आता है। राजस्थान मे कितनी नदिया वहती है? वालक ने वृक्ष पर पत्थर फेंका। जो खुशामद करता है वह अपना कार्य वना लेता है। उसने वस्तुस्थिति का सही ज्ञान किया। क्या तुम पदयात्रा से थकते हो? गुरु शिष्य पर दया करता है। साधु अपने स्थान का प्रमार्जन करता है। तुम किसका चित्र वनाते हो?

प्रश्न

१. सन्न व्यंजनो का प्रारम्भ मे क्या परिवर्तन होता है?

२. उपसर्ग सहित सरल व्यजन को प्रारम्भिक मानते है या नही ? उदाहरण सहित इसे स्पष्ट करो।

३ खुज्जो, चिलाओ, सामा, गेन्दुअं, टसरो, झडिलो, डब्भो, वहुत्त, वम्महो, तुम्हकेरो—इन शब्दो को सिद्ध करो और वताओ किस नियम से किस शब्द को क्या आदेश हुआ है।

४. नहर, प्याऊ, निर्झर, समुद्र, नदी, तालाव, छोटा कुंआ, छोटी खाई, कुड, कुआ, खाई, वाध, नल, टकी—इन शब्दो के लिए प्राकृत शब्द वताओ ?

५. अक्कोस, अक्खिव, अच्चीकर, पमज्ज, पमा, थक्क, आलिह और पत्थ धातुओ के अर्थ वताओ और उन्हे वाक्य मे प्रयुक्त करो।

३६ मध्यवर्ती सरल व्यंजन परिवर्तन (१)

शब्द संग्रह (वस्त्रवर्ग १)

वस्त्र— वत्थं, वसणं
सूती वस्त्र—कप्पास
ऊनी वस्त्र—रोमजं, ओण्णेयं
रेशमी वस्त्र—कोसेय
मोटा वस्त्र—पल्थीणं
बूटेदार कौसुंभ वस्त्र—घट्टंसुओ
धोया वस्त्र—धोअवत्थ
बारीक वस्त्र—पम्हयो
जोड़े हुए वस्त्र—डंडी
कोरा वस्त्र—अणाहयवत्थं
पेटीकोट—अंतग्जिज
साड़ी— साडी
ओढनी—ओयड्ढी (दे.)
घाघरा—घग्घरं
लहगा—चलणी, चंडातकं
चोली, ब्लाउज—कंचुलिया
सलवार—सूअवरो (स)
अण्डरवीयर, चड्डी—अड्ढोरुगो अड्ढोरुगो

o———o———o———o———o

जनता --जणया
सेवा—परिचरणा
मूल्य— मुल्लो

धातु संग्रह

अणुकड्ढ—खीचना
अणुगिल—भक्षण करना
अणुग्ग—कृपा करना
अणुचर—सेवा करना
अच्छ—बैठना
बंध—बांधना
परिहा—पहरना
विह—पोषण करना
बुक्क—भूकना (कुत्ते का)

मध्यवर्ती व्यंजन

शब्द के मध्य मे होने वाले यानी दो स्वरो के बीच मे होने वाले सरल व्यजनो का परिवर्तन मध्यवर्ती सरल व्यंजन परिवर्तन कहलाता है। उनके नियम इस प्रकार है—

नियम २१६ (क-ग-च-ज-त-द-प-य-वां प्रायो लुक् १।१७७) स्वर से परे अनादिभूत तथा असंयुक्त क, ग, च, ज, त, द, प, य, व—इन व्यंजनो का प्राय लोप हो जाता है।

क>लोप—लोओ (लोकः) तित्थयरो (तीर्थंकरः) सयढो (शकटः)।
ग>लोप—नयर (नगरम्) भइणी (भगिनी) नओ (नग.)।
च>लोप— कयग्गहो (कचग्रहः) वयणं (वचनम्) कायमणी (काचमणि)।

ज7लोप—रयय (रजतम्) पयावई (प्रजापति.) गओ (गज.) ।
त>लोप—लया (लता) विआणं (वितानम्) रसायलं (रसातलम्) ।
द7लोप—गया (गदा) मयणो (मदन:) जइ (यदि) ।
प7लोप—रिऊ (रिपु.) सुउरिसो (सुपुरुष.) ।
य7लोप—विओओ (वियोग·) वाउणा (वायुना) ।
व7लोप—लायण्णं (लावण्यम्) विउहो (विबुध:) ।

नियम २१७ (अवर्णो य श्रुतिः १।१८०) अ तथा आ से परे व्यंजन के लोप होने के बाद शेष अ या आ रहे तो उसे अ के स्थान पर य और आ के स्थान पर या हो जाता है । उसे यश्रुति कहते है ।

अ7य—तित्थयरो, नयरं, कायमणी, रयय, पयावई, रसायलं, मयणो, गया, दयालू, लायण्णं ।

नियम २१८ (नावर्णात् प १।१७९) अवर्ण से परे अनादि प का लोप नही होता है ।

नियम २१९ (पो वः १।२३१) स्वर से परे असंयुक्त और अनादि प को व होता है ।

प7व—सवहो (शपथ.) सावो (श्राप.) । उवसग्गो (उपसर्ग:) पईवो (प्रदीप.) पाव (पापम्) उवमा (उपमा) ।

नियम २२० (ख-घ-थ-ध-भाम् १।१८७) स्वर से परे असंयुक्त और अनादि ख, घ, थ, ध और भ को ह हो जाता है ।

ख7ह—साहा (शाखा) मुह (मुखम्) मेहला (मेखला) ।
घ7ह—मेहो (मेघ.) जहणं (जघनम्) माहो (माघ.) ।
थ7ह—नाहो (नाथ:) आवसहो (आवसथ:) मिहुणं (मिथुनम्) ।
ध7ह—साहू (साधु:) वहिरो (वधिर.) इन्दहणू (इन्द्रधनु:) ।
भ7ह—सहा (सभा) सहावो (स्वभाव:) नहं (नभ:) ।

नियम २२१ (टो डः १।१९५) स्वर से परे असंयुक्त अनादि ट को ड होता है ।

ट7ड—नडो (नट) भडो (भट·) घडो (घट:) घडइ (घटते) ।

नियम २२२ (ठो ढः १।१९९) स्वर से परे असंयुक्त अनादि ठ को ढ होता है ।

ठ7ढ—मढो (मठ.) सढो (शठ:) पढइ (पठति) कमढो (कमठ) ।

नियम २२३ (डो लः १।२०२) स्वर से परे असंयुक्त अनादि ड को ल होता है ।

ड7ल—तलायं= (तडागम्) गरुलो (गरुडो) ।

नियम २२४ (नो णः १।२२८) स्वर मे परे असंयुक्त अनादि न को

ण होता है ।

न ७ ण—मयणो (मदनः) वयणं (वदनम्) नयण (नयनम्) वण (वनम्) ।

नियम २२५ (फो भ-हौ १।२३६) स्वर से परे असंयुक्त अनादि फ को भ और ह हो जाता है ।

फ ७ भ, ह—रेभो (रेफः) सिभा (शिफा), मुत्ताहलं (मुक्ताफलम्) सभलं, सहल (सफलम्) ।

नियम २२६ (बो वः १।२३७) स्वर से परे असंयुक्त अनादि ब को व होता है । अलावू (अलाबू) सवलो (शबलः), कवरी (कबरी) सिविया (शिबिका) ।

नियम २२७ (यमुना-चामुण्डा-कामुकातिमुक्तके-मोनुनासिकश्च १।१७८) यमुना, चामुण्डा, कामुक और अतिमुक्तक के म का लुक् होता है और म के स्थान पर अनुनासिक होता है ।

म ७ अनुनासिक—जँउणा (यमुना) चाँउण्डा (चामुण्डा) काँउओ (कामुकः) अणिँउतयं (अतिमुक्तकं) । कहीं पर नही भी होता—अइमुतयं, अइमुत्तय ।

(शषो स १।२६०) नियम १९६ के अनुसार—

श ७ स—निसंसो (नृशंसः) कुसो (कुशः) वंसो (वंशः) दस (दशन्) देसो (देशः)।

ष ७ स—निहसो (निकष) कसाओ (कषायः) ।

कभी-कभी अव्ययों के प्रारंभिक व्यंजनों के साथ मध्यवर्ती व्यंजनों की तरह व्यवहार किया जाता है ।

अवि अ (अपि च) सो अ (स च) स उण (स पुनः) ।

समस्त पद में द्वितीय पद के आदि व्यंजन को आदि एवं मध्यवर्ती दोनों माना जाता है—

सुहयरो, सुहकरो (सुखकर) जलयरो, जलचरो (जलचर) ।

प्रयोग वाक्य

सनारे को वत्थाइ न परिहाइ ? ओण्णेयं संपइ मलिणं जाअं तं तुम कया पक्खालिहिसि ? धोविअं हिमाजण्णं भवइ अओ अस्स उवओगो अहिमगम्मि न सोहइ । अहं पत्तीण परिहाणं अहिलसामि । किं तुमं पइदिणं धोअवत्थं परिहासि ? हट्टीए वत्थाण वयो वड्ढइ । सुसीला पत्तीणं चडानकं परिहाइ । किमना गिहे मूलवरो वि परिहाइ । कप्पासवत्थं गिम्हकाले सत्थस्स हिअं भवइ । सपइ साहुणो पट्टसुअं न परिहान्ति । गिम्हकाले पम्हयं अहिलसन्ति जणा । अणाहूयवत्थ नत्तमवि मलिणं व्व भाइ । अत्तरिज्ज अंतरेण साडी न सोहइ । महिलाओ घग्घरस्स उवरिं ओवड्ढिं धरइ । थीणं कचुलिया आवस्सग वत्थं अत्थि । विमलो अङ्गोच्छं परिहाइ ।

इस पाठ से एक-एक उदाहरण दो।

५. वस्त्र, ऊनी वस्त्र, सूती वस्त्र, रेशमी वस्त्र, बूटेदार कौसुंभ वस्त्र, मोटा वस्त्र, बारीक वस्त्र, धोया वस्त्र, कोरा वस्त्र, साडी, लहगा, पेटीकोट, घाघरा, ओढनी, चोली, सलवार, अण्डरवीयर—इन शब्दो के लिए प्राकृत शब्द क्या है ?

६. अणुकड्ढ, अणुग्ग, अच्छ, परिहा, वुक्क, अणुगिल, अणुचर, वघ्र, विह् धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्य मे प्रयोग करो।

७. परिव्वयो, रूवगं, परियाणं, फलगं, ण्हाओ, कुल्ला, ओग्गलो जलसंगहालयो—इन शब्दों का वाक्य मे प्रयोग करो और हिन्दी मे अर्थ बताओ।

३७ मध्यवर्ती सरल व्यंजन परिवर्तन (२)

शब्द संग्रह (वस्त्र वर्ग २)

टोपी—सिरक्क	टोप—सिरत्ताण
दुपट्टा—उत्तरीय, उत्तरिज्ज	चादर—पच्छयो
पैंट—अप्पईण (सं)	पतलून—पतलूणो (स)
वासकट—वासकडी (स)	शेरवानी—पावारओ
रजाई—नीसारो (स)	तकिया—उवहाणं
पगडी—उण्हीस	धोती—अहोवत्थं, कडिवत्थं
पायजामा—पायजामो	कुर्त्ता—कच्चुओ
रूमाल—पडपुत्तिया	तौलिया, अंगोछा—अंगपुच्छणं
कौपीन—अवअच्छ (दे.)	ओवरकोट—बुहइया (स)
रात्रिपौशाक—नत्तवेसो (सं)	

० ० ०

रक्षा—ताण	चिकना—सण्ह (वि)
घर्षण—घसण, घसणं	

धातु का प्रयोग

वाह—पीडा करना	पोस—पुष्ट होना
फेल्लुस—फिसलना	पिंज—रुई धुनना
फरिस—छूना	पाल—पालन करना
फट्ट—फटना, फूटना	आरंभ—आरम्भ करना
पागड—प्रकट करना	

क7ग—एगो (एक.) अमुगो (अमुक) असुगो (असुक:) सावगो (श्रावक) आगारो (आकार:) तित्थगरो (तीर्थंकर.) आगरिसो (आकर्ष.) एगत्तं (एकत्वं)। इत्यादिषु व्यत्ययश्च (४.४४७) इत्येव कस्य गत्वम् (१।१७७ की वृत्ति)

नियम २२६ (शीकरे भहौ वा १।१८४) शीकर शब्द के क को भ और ह विकल्प से होता है।

क7भ, ह—सीभरो, सीहरो, सीअरो (शीकर)

नियम २२६ (चन्द्रिकायां मः १।१८५) चन्द्रिका शब्द के क को म होता है।

क7म—चन्दिमा (चन्द्रिका)

नियम २३० (निकष-स्फटिक-चिकुरे हः १।१८६) निकष, स्फटिक और चिकुर शब्दों के क को ह होता है।

क7ह—निहसो (निकषः) फलिहो (स्फटिकः) चिहुरो (चिकुरः)।

नियम २३१ (शृङ्खले खः कः १।१८९) शृङ्खल शब्द के ख को क होता है।

ख7क—संकलं (शृङ्खलम्)

नियम २३२ (पुन्नाग-भागिन्योर्गो मः १।१९०) पुन्नाग और भागिनी शब्दों के ग को म होता है।

ग7म—पुन्नामाइं (पुन्नागानि) भामिणी (भागिनी)

नियम २३३ (छागे लः १।१९१) छाग शब्द के ग को ल होता है।

ग7ल—छालो (छागः) छाली (छागी) स्त्री।

नियम २३४ (ऊत्वे दुर्भग-सुभगे वः १।१९२) दुर्भग और सुभग शब्दों में ऊ होने पर ग को व होता है।

ग7व—दूहवो (दुर्भगः) सूहवो (सुभगः)।

(क्वचिच्चस्य जः १।१७७ की वृत्ति) कहीं च को ज होता है।

च7ज—पिसाजी (पिशाची)

(आर्षे अन्यदपि दृश्यते १।१७७ की वृत्ति) आउण्टणं (आकुञ्चनम्) यहां च को ट हुआ है।

नियम २३५ (खचित-पिशाचयोश्च स-ल्लौ वा १।१९३) खचित के च को स और पिशाच के च को ल्ल आदेश विकल्प से होता है।

च7ल्ल, स—खसिओ खइओ (खचितः) पिसल्लो, पिसाओ (पिशाचः)

नियम २३६ (सटा-शकट-कैटभे ढः १।१९६) सटा, शकट, कैटभ शब्दों के ट को ढ होता है।

ट7ढ—सढा (सटा) सयढो (शकटः) केढवो (कैटभः)।

नियम २३७ (स्फटिके लः १।१९७) स्फटिक शब्द के ट को ल होता है।

ट7ल—फलिहो (स्फटिकः)।

नियम २३८ (चपेटा-पाटौ वा १।१९८) चपेटा शब्द और पट् धातु (णिजन्त) के ट को ल विकल्प से होता है।

ट7ल—चविला, चविडा (चपेटा) फालेइ, फाडेइ (पाटयति)।

नियम २३९ (अङ्कोठे ल्लः १।२००) अंकोठ शब्द के ठ को ल्ल आदेश होता है।

ठ7ल्ल—अङ्कोल्लो (अङ्कोठः)।

नियम २४० (पिठरे हो वा रश्च डः १।२०१) पिठर शब्द के ठ

को ह विकल्प से होता है, उसके योग मे र को ड होता है ।

ठ 7 ह—पिहडो, पिढरो (पिठर) ।

नियम २४१ (वेणौ णो वा १।२०३) वेणु शब्द के ण को ल विकल्प से होता है ।

ण7ल—वेलू, वेणू (वेणु) ।

नियम २४२ (प्रत्यादौ ड: १।२०६) प्रति आदि शब्दो के त को ड होता है ।

त 7 ड—पडिवन्न (प्रतिपन्नम्) पडिहासो (प्रतिहास.) पडिहारो (प्रतिहार) पाडिप्फद्धी (प्रतिस्पर्धा), पडिसारो (प्रतिसार) पडिनिअत्त (प्रति-निवृत्तम्) पडिमा (प्रतिमा) पडिवया (प्रतिपत्) पडसुआ (प्रति-श्रुत्) पडिकरइ (प्रतिकरोति) पहुडि (प्रभृति) पाहुड (प्राभृतम्) वावडो (व्यापृत) पडाया (पताका) बहेडओ (बिभीतक.) हरडइ (हरीतकी) मडय (मृतकम्) । दुक्कड (दुष्कृतम्) सुकड (सुकृतम्) आहड (आहृतम्) अवहड (अवहृतम्) ।

प्रयोग वाक्य

धणवालो सिरक्क न परिहाइ । उत्तरिज्जेण अणुमिज्जइ अयं विउसो अत्थि । अप्पईणस्स मुल्लो दाउं अह न समत्थो मि । तुज्झ वासकडी सुद्धकप्पासेण णिम्मिआ अत्थि । सिसिरे निसाए नीसारेणावि सीय सतावेइ । किं तुज्झ पिआमहो उण्हीस इच्छइ ? पत्तआरो रायिंदो सितं पायजाम कचुअ य पउजइ । किं तुज्झ पासे पडपुत्तिया नत्थि । बभचारिणो पइसमय अवअच्छ रक्खंति । सो नत्तवेसम्मि सुअइ । णयरे सिरत्ताणस्स आवस्सगया भवइ । सामाइयम्मि सावगा पच्छय धरइ । पुरिसाण सरीरे अज्जत्ता पावरओ न दिस्सइ । अहं उवहाणं अंतरेणावि सुहेण सुआमि । बाला अहोवत्थमवि न परिहाति । तुज्झ पिअस्स पासे केत्तिलाओ बुहइयाओ संति । सो ण्हाणस्स पच्छा अगपुछणेण सरीरं सुस्सावेइ (सुखाता है ।)

धातु प्रयोग

तुज्झ कहणमिम बाहइ । धणेण लोआ धम्माओ फेल्लुसंति । पुरिसा साहुणीओ न करिस्संति । अज्ज तुज्झ सिर कह फट्टइ ? सामी सुणय पोसइ । तुम परिसाए सभावा पागडहि । अज्ज को कप्पास पिंजिहिइ ? माअरा अजोग्गमवि पुत्त पालइ । सुवे अह अज्झयण आरभिहिमि ।

प्राकृत में अनुवाद करो

तुम धोती क्यो नही पहनते हो ? कुरता शरीर के लिए लाभप्रद है । तुम्हारी कमीज का रंग क्या है ? आजकल पगडी बहुत कम लोग रखते हैं । टोपी धूप से सुरक्षा करती है । टोप सिर की सुरक्षा करता है । मेरा तोलिया

तुम्हारे पास है । एक महिने में तीन रुमाल गिर जाते हैं। तुमने पायजामा कब पहना था ? पंडित लोग दुपट्टा रखते थे । क्या तुम पैंट को सीना जानते हो ? यह वासकट तुम अपने भाई को दे दो। रजाई ठड से सुरक्षा करती है। रजाई मे रूई (कप्पास) कितनी है ? क्या वह कौपीन पहनना चाहता है ? वह रूमाल से मुह पूछता है। मेरे पास रात की पौशाक दो हैं। टोप किस शहर मे मिलता है ? मै चादर अपने साथ ही रखता हू। पतलून सीने वाला कहा गया है ? मेरी शेरवानी कहा रखी हुई है ? तकिया के बिना उसको नीद नही आती है। तुम्हारी धोती धूप मे सूख रही है। कुर्ता का रग कैसा था ? वह तौलिया पहनकर स्नान करता है। ओवरकोट पहनने के बाद ठड नही लगती है।

धातु का प्रयोग करो

तुम्हारे शरीर का भार मुझे पीडा नही देता लेकिन तुम्हारा धातु का अशुद्ध प्रयोग पीडा देता है। चिकने आगन मे उसका पैर फिसल गया। क्या बादल आकाश को छूते है ? कोई-कोई फल पकने पर फट जाता है। दूध से शरीर पुष्ट होता है। वह रूई धुनता है इसलिए सुख से रोटी खाता है। जो अपने आश्रित का पालन नही करता वह कर्तव्य से दूर हो जाता है। तुम उसके पास पढना प्रारम्भ करो। तुम्हे अपने विचार प्रकट करना चाहिए।

प्रश्न

१. नीचे लिखे शब्दो मे किस व्यजन को क्या आदेश हुआ है ? नियम सहित स्पष्ट करो—
चंदिमा, आगरिसो, पिसाजी, एगत्त, चिहुरो, भामिणी, पिसल्लो, खसिओ, सयढो, पिहडो, फलिहो, चविडा, पिढरो, वेणू, हरडइ।
२. टोपी, टोप, दुपट्टा, पंट, वासकट, रजाई, पगडी, पायजामा, रूमाल, कौपीन, चादर, पतलून, शेरवानी, तकिया, धोती, कुर्त्ता, तौलिया, ओवरकोट, रात्रिपोशाक के लिए प्राकृत शब्द बताओ।
३. वाह, फेल्लुस, फट्ट, पिंज, पागड और पोस धातुओं के अर्थ बताओ।
४. "प्रत्यादौ डः"—इस नियम के तीन उदाहरण दो।

३८ मध्यवर्ती सरल व्यंजन परिवर्तन (३)

शब्द संग्रह (आभूषण वर्ग)

मोती की माला—हारो, पलम्ब
कान की वाली—कुडल, कण्णाआसं (दे०)
टिकुली—णडालाभूसण
कंठा—कठमुरयो, कंठमुही
नथ—णासाभरणं
मगलसूत्र—कठसुत्त
हाथ का कडा—कडगो (स)
हंसुली—गेविज्ज
मुकुट, सिरपेच—मउडो
मणियो से ग्रथित हार—एगावली
रत्नो का हार—रयणावली
भुजवंद, वाजूवद—केउरं
लच्छा—पायाभरणं
घुघुरु—घंटिया
अंगूठी—अंगुलीय, अगुलिज्जग
वंगडी—ककणं, ककणी
चूडी—वलयं, चूडो (दे०)
कदोरो—कडिमुत्तं

धातु संग्रह

पलाय—भागना
थु—स्तुति करना
परिआल—लपेटना
थिम—गीला करना
पमिलाय—मुरझाना
पम्हुअ—भूल जाना
पत्थर—विछाना
पडिहण—प्रतिघात करना

नियम २४३ (इत्वे वेतसे १।२०७) वेतस के त को ड होता है, ड होने पर।

त7ड—वेडिसो (वेतसः)।

नियम २४४ (गर्भितातिमुक्तके णः १।२०८) गर्भित और अतिमुक्तक शब्द के त को ण होता है।

त7ण—गब्भिणो (गर्भित) अणिउतय (अतिमुक्तकम्)।

नियम २४५ (सप्ततौ रः १।२१०) सप्तति शब्द के त को र होता है।

त7र—सत्तरी (सप्ततिः)।

नियम २४६ (अतसी-सातवाहने लः १।२११) अतसी और सातवाहन शब्द के त को ल होता है।

त7ल—अलसी (अतसी) सालवाहणो (सातवाहन)।

नियम २४७ (पलिते वा १।२१२) पलित शब्द के त को ल विकल्प

से होता है ।

त>ल--पलिल, पलिअ (पलितम्) ।

नियम २४८ (पीते वो ले वा १।२१३) पीत शब्द के त को व विकल्प से होता है, स्वार्थ मे होने वाला ल प्रत्यय परे हो तो ।

त>व---पीवल पीअलं (पीतलम्) ।

नियम २४९ वितस्ति-वसति-भरत-कातर-मातुलिंगे हः १।२१४) वितस्ति, वसति, भरत, कातर, मातुलिंग---इन शब्दो के त को ह होता है ।

त>ह---विहत्थी (वितस्ति) वसही (वसति) भरहो (भरत·) काहलो (कातर) माहुलिंगं (मातुलिंगम्) ।

नियम २५० (मेथि-शिथिर-शिथिल-प्रथमे थस्य ढ १।२१५) मेथि, शिथिर, शिथिल, प्रथम इन शब्दो के थ को ढ होता है ।

थ>ढ---मेढी (मेथि) सिढिलो (शिथिर·) सिढिलो (शिथिल) पढमो (प्रथमः)।

नियम २५१ (निशीथ-पृथिव्योर्वा १।२१६) निशीथ और पृथिवी शब्दो के थ को ढ विकल्प से होता है ।

थ>ढ---निसीढो, निसीहो (निशीथ) पुढवी, पुहवी (पृथिवी)।

नियम २५२ (पृथकि धो वा १।१८८) पृथक् शब्द के थ को ध विकल्प से होता है ।

थ>ध---पिध, पुध पिहं, पुह (पृथक्) ।

नियम २५३ (रुदिते दिना ण्णः १।२०९) रुदित शब्द के दित को ण्ण आदेश होता है ।

दित>ण्ण---रुण्णं (रुदितम्)।

नियम २५४ (संख्या-गद्गदे रः १।२१९) सख्यावाची शब्द और गद्गद शब्द के द को र होता है ।

द>र---एआरह (एकादश) बारह (द्वादश) तेरह (त्रयोदश) गग्गर (गद्गदम्) ।

नियम २५५ (कदल्यामद्रुमे १।२२०) कदली शब्द के द को र होता है यदि द्रुमवाची न हो तो ।

द>र---करली (कदली) केला ।

नियम २५६ (प्रदीपि-दोहदे लः १।२२१) प्रपूर्वक दीप् धातु और दोहद के द को ल होता है ।

द>ल---पलीवइ (प्रदीप्यते) दोहलो (दोहद) ।

नियम २५७ (कदम्बे वा १।२२२) कदम्ब शब्द के द को ल विकल्प से होता है।

कलम्बो, कयम्बो (कदम्बः) ।

नियम २५८ (दीपौ धो वा १।२२३) दीप् धातु के द को ध विकल्प

से होता है।

द>ध—धिप्पइ, दिप्पइ (दीप्यते)।

नियम २५९ (कदर्थिते वः १।२२४) कदर्थित शब्द के द को व होता है।

द>व—कवट्टिओ (कदर्थित)।

नियम २६० (ककुदे हः १।२२५) ककुद् शब्द के द को ह होता है।

द>ह—कउह (ककुदम्)।

नियम २६१ (निषधे धो ढः १।२२६) निषध शब्द के ध को ढ होता है।

ध>ढ—निसढो (निषध.)।

नियम २६२ (वौषधे १।२२७) औषध के ध को ढ होता है विकल्प से।

ध>ढ—ओसढ, ओसह (औषधम्)।

नियम २६३ (नीपापीडे मो वा १।२३४) नीप और आपीड शब्द के प को म विकल्प से होता है।

प>म—नीमो, नीवो (नीप) आमेलो, आमेडो (आपीड)।

नियम २६४ (पापर्द्धौ रः १।२३५) पापर्द्धि शब्द के प को र होता है।

प>र—पारद्धी (पापर्द्धि)।

नियम २६५ (कबन्धे म-यौ १।२३९) कवन्ध शब्द के व को म और य होता है।

ब>म—कमन्धो, कयन्धो (कवन्धः)।

नियम २६६ (शबरे बो म. १।२५८) शवर शब्द के व को म होता है।

ब>म—समरो (शवर)।

नियम २६७ (कैटभे भो वः १।२४०) कैटभ शब्द के भ को व होता है।

भ>व—केढवो (कैटभ.)।

प्रयोग वाक्य

सरलाए पासे पलंव अत्थि। रामस्स कण्णेसु कुंडलाइं सोहंति। सरोजा णडालाभूसण कहं न धारइ? विमलाए कंठम्मि कंठमुरयो विभाइ। सुमणाए पासे तिण्णि णासाभरणाइ संति। महिंदस्स कंठसुत्तं माआ क दास्सइ? पुरिसो वि कडग धारड। पभाए गेविज्ज दट्ठु सुलोअणा तस्स घरे गआ। सुरिंदस्स

४ सिढिलो, पुढवी, पिधं, मेढी—इन शब्दो मे किस व्यजन का परिवर्तन होकर क्या बना है ?

५. मोती की माला, कान की वाली, टिकुली, मुकुट, मणियो से ग्रथित हार, भुजवद, कठा, नथ, मंगलसूत्र, हाथ का कडा, बंगडी, चूडी, कदोरा, अंगूठी, हसुली, लच्छा, घुघरू—इन शब्दो के लिए प्राकृत शब्द बताओ।

६. पलाय, थु, परिआल, थिम, पमिलाय, पम्हुअ, पत्थर और पडिहण धातुओं के अर्थ बताओ और उन्हे वाक्य मे प्रयुक्त करो।

३९ मध्यवर्ती सरल व्यंजन परिवर्तन (४)

शब्द संग्रह (स्फुट)

उद्यम—उज्जमो	मनोरथ—मणोरहो
स्वभाव—सहावो	स्वागत—सागयं
पथ्य—पच्छ (वि)	रास्त्र—भस्सं
मर्यादा—मज्जाया	क्षेत्र—खेत्तं, छेत्तं
मगति—मंगो	श्रवण—सवणं

o————o————o————o————o

शिकारी—लुद्धगो	शासक—सासओ।

धातु संग्रह

दरिस—दिखलाना, बतलाना	ताड—ताडना करना
दिक्ख—देखना	संफुस—स्पर्श करना
दम—निग्रह करना	वच्च—जाना
तस—त्रास पाना, डरना	ताव—गर्म करना

नियम २६८ (विषमे मो ढो वा १।२४१) विषम शब्द के म को ढ विकल्प से होता है।

म>ढ—विसढो, विसमो (विषमः)।

नियम २६९ (वाभिमन्यौ १।२४३) अभिमन्यु शब्द के म को व विकल्प से होता है।

म>व—अहिवन्नू, अहिमन्नू (अभिमन्युः)।

नियम २७० (भ्रमरे सो वा १।२४४) भ्रमर शब्द के म को स विकल्प से होता है।

म>स—भसलो, भमरो (भ्रमरः)।

नियम २७१ (डाह-वौ कतिपये १।२५०) कतिपय शब्द के य को डाह (आह) और व क्रमशः होता है।

य>डाह—कइवाहं, कइअवं (कतिपयम्)।

नियम २७२ (वोत्तरीयानीय-तीय-कृद्येज्जः १।२४८) उत्तरीय शब्द और अनीय, तीय तथा कृदन्त के य प्रत्यय का य हो उसको ज्ज विकल्प से होता है।

य>ज्ज—उत्तरिज्जं, उत्तरीअं (उत्तरीयम्) करणिज्जं, करणीअं (करणीयम्)

जवणिज्जं, जवणीअ (यवनीयम्) विडज्जो, वीओ (द्वितीयः) पेज्जा, पेआ (पेया)।

य>र—ण्हारु (स्नायु) ठाणाग, पण्हावागरण, विवाहपण्णत्ति आदि आगमो मे मिलता है।

नियम २७३ (छायायां होऽकान्तौ वा १।२४९) छाया शब्द अकान्ति अर्थ मे हो तो छाया के य को ह विकल्प से होता है।

य>ह—छाही (छाया) धूप का अभाव। सच्छाहं, सच्छाय।

नियम २७४ (किरि-भेरे रो डः १।२५१) किरि और भेर शब्द के र को ड होता है।

र>ड—किडी (किरि) भेडो (भेर.) पिहडो (पिठर.)—(पिठरे हो वा रश्च ड.) नियम २४० से ठ को ह होने पर र को ड हुआ है।

नियम २७५ (पर्याणे डा वा १।२५२) पर्याण शब्द के र को डा विकल्प से होता है।

र>डा—पडायाण, पल्लाण (पर्याणम्)।

नियम २७६ (करवीरे णः १।२५३) करवीर शब्द के प्रथम र को ण होता है।

र>ण—कणवीरो (करवीर.)।

नियम २७७ (हरिद्रादौ लः १।२५४) हरिद्रा आदि शब्दो मे असयुक्त र को ल होता है।

र>ल—हलिद्दी (हरिद्रा) दलिद्दाइ (दरिद्राति) दलिद्दो (दरिद्र.) दालिद्दं (दारिद्र्यम्) हलिद्दो (हरिद्र.) जहुट्ठिलो (युधिष्ठिर) सिढिलो (शिथिर.) मुहलो (मुखरः) चलणो (चरण) वलुणो (वरुण.) कलुणो (करुण.) इङ्गालो (अङ्गार) सक्कालो (सत्कारः) सोमालो (सुकुमार) चिलाओ (किरातः) फलिहा (परिखा) फलिहो (परिघ) फालिहद्दो (पारिभद्र.) काहलो (कातरः) लुक्को (रुग्णः) अवद्दालो (अपद्वार) भसलो (भ्रमर.) जढलो (जठरः) वढलो (वठर.) निट्ठुलो (निष्ठुर.)।

नियम २७८ (स्थूले लो रः १।२५५) स्थूल शब्द के ल को र होता है।

ल>र—थोर (स्थूलम्)।

नियम २७९ (स्वप्न-नीव्यो र्वा १।२५९) स्वप्न और नीवी शब्द के व को म विकल्प से होता है।

व>म—सिमिणो, सिविणो (स्वप्नः) नीमी, नीवी (नीवी)।

नियम २८० (दश-पाषाणे हः १।२६२) दशन् और पाषाण शब्द के श और ष को ह विकल्प से होता है।

श>ह—दह, दस (दश) दहवलो, दसवलो (दश बलः)।
ष>ह—पाहाणो, पासाणो (पाषाणः)

नियम २८१ (स्नुषायां ण्हो न वा १।२६१) स्नुषा शब्द के ष को ण्ह आदेश विकल्प से होता है।

ष>ण्ह—सुण्हा, सुसा (स्नुषा)।

नियम २८२ (दिवसे सः १।२६३) दिवस शब्द के स को ह विकल्प से होता है।

स>ह—दिवहो, दिवसो (दिवसः)।

नियम २८३ (हो घोनुस्वारात् १।२६४) अनुस्वार से परे ह को घ विकल्प से होता है।

ह>घ—सिंघो, सीहो (सिंहः) संघारो, सहारो (सहारः) दाघो (दाहः)।

नियम २८४ (वोत्साहे थो हश्च रः २।४८) उत्साह शब्द के संयुक्त को थ विकल्प से आदेश होता है। उसके योग मे ह को र होता है।

ह>र—उत्थारो, उच्छाहो (उत्साहः)।

प्रयोग वाक्य

उज्जमेण सव्वाइं कज्जाइं सिज्झंति। झाणेण सहावस्स परिवट्टणं जायइ। पच्छेण विणा ओसहीए को लाहो। तुज्झ मणोरहो सहलीभविस्सइ। खणमवि साहुसगो कोडिपावणासणो भवइ। मज्जायाइ सुण्णं जीवणं जीवण नत्थि। आयरियवराण सागयं कया भविहिइ? साहूण केसलुंचणं भस्सेण सरलीभवइ। इअं खेत्त सद्धालूण अत्थि। जो सद्दो सवणे पडइ तं च्चिअ हं जाणामि।

धातु प्रयोग

आयरिओ सीसं धम्मस्स मग्गं दरिसइ। अहं तुह उत्तरपत्ताइं दिक्खामि। साहू इंदियाणि दमइ। कामभोगा णरं तावंति। पिआ पुत्त ताडइ। सो मज्झ सरीरं संफुसइ। तुमं गिहं कहं वच्चसि? कूरसासएण लोआ तसंति।

प्राकृत में अनुवाद करो

कार्य की सिद्धि मे उद्यम सबल साधन है। श्रावक के तीन मनोरथ होते हैं। अग्नि का स्वभाव जलाना है। साधु का स्वागत व्यक्ति का नही त्याग का होता है। औषधि के साथ पथ्य ज्यादा फल देता है। मनुष्य का शरीर जलने के बाद राख हो जाता है। मर्यादा हमारा प्राण है। इस क्षेत्र मे धनी लोग बहुत हैं। संगति का फल अवश्य मिलता है। उसके श्रवण बहुत पटु हैं।

संज्ञा है भी और एक अपेक्षा से नहीं भी है। प्रत्येक पद में विभक्ति आई हुई है, इसलिए पदसंज्ञा है। समास होने से विभक्ति का लुक् हो जाता है, इसलिए पदसंज्ञा नही है। प्रत्येक पद के अंतिम शब्द को अन्त्य कह सकते है और समस्त पद एक शब्द बन जाता है इस दृष्टि से पूर्व के पद के अन्तिम शब्द को अन्त्य नही भी कह सकते। इसलिए समास में अन्त्यत्व और न अन्त्यत्व दोनो होते हैं। अन्त्य मानने पर लोप हो जाता है। अन्त्य न मानने पर लोप नही होता। सभिक्खू (सद्भिक्षु:) सज्जणो (सज्जनः) एअगुणा (एतद्गुणाः) तग्गुणा (तद्गुणा.)

नियम २८६ (शरदादेरत् १।१८) शरद्, आदि शब्दो के अन्तिम व्यजन को अ आदेश हो जाता है।

>अ—सरओ (शरद्) भिसओ (भिषक्)

नियम २८७ (दिक्-प्रावृषोः सः १।१९) दिश् और प्रावृष् शब्दो के अन्तिम व्यजन को स आदेश होता है।

>स—दिसा (दिश्) पाउसो (प्रावृट्)

नियम २८८ (आयुरप्सरसो र्वा १।२०) आयुष् और अप्सरस् शब्दों के अंतिम व्यंजन को विकल्प से स आदेश होता है।

7स—दीहाउसो, दीहाऊ (दीर्घायु) अच्छरसा, अच्छरा (अप्सरा.)

नियम २८९ (ककुभो हः १।२१) ककुभ् शब्द के अन्त्य व्यंजन को ह आदेश होता है।

7ह—कउहा (ककुभ्)

नियम २९० (धनुषो वा १।२२) धनुष् शब्द के अन्तिम व्यंजन को विकल्प से ह आदेश होता है। पक्ष मे लोप हो जाता है।

7ह, लोप—धणुहं, धणू (धनुः)

नियम २९१ (रो रा १।१६) अन्त्य व्यंजन र् यदि स्त्रीलिंग मे हो तो उसे रा आदेश हो जाता है।

7रा—गिरा (गिर्) धुरा (धुर्) पुरा (पुर्)

नियम २९२ (क्षुधो हा १।१७) क्षुध् शब्द के अन्त्य व्यंजन को हा आदेश होता है।

7हा—छुहा (क्षुध्)

नियम २९३ (न श्रदुदोः १।१२) श्रद् और उद् के अन्त्य व्यंजन का लुक् नही होता। सद्धा (श्रद्धा) उग्गयं (उद्गतम्) उन्नय (उन्नतम्)

नियम २९४ (निर्दुरो र्वा १।१३) निर् और दुर् के अन्त्य व्यजन का लुक् विकल्प से होता है।

7 लुक्—निस्सहं, नीसहं (निःसहम्) दुस्सहो, दूसहो (दुःसहः) दुक्खिओ, दूहिओ (दुःखितः)

नियम २९५ (स्वरेन्तरश्च १।१४) अन्तर्, निर् और दुर् के अन्त्य व्यंजन का लुक् नहीं होता स्वर परे हो तो। अन्तरप्पा (अन्तरात्मा) निरवसेसं (निरवशेषम्) निरन्तरं (निरन्तरम्) दुरवगाहं (दुरवगाहम्) दुरुत्तरं (दुरुत्तरम्)।

नियम २९६ (स्त्रियामादविद्युतः १।१५) विद्युत् शब्द को छोड़कर अन्त्य व्यंजन यदि स्त्रीलिंग में हो तो उसे आ आदेश होता है, लुक् नहीं।
7 आ—सरिआ (सरित्) पाडिवआ (प्रतिपद्) संपआ (संपद्)

वाक्य प्रयोग

सो अमुम्मि कज्जम्मि भवंताण साउज्जं अवेक्खइ। सो मसाणे साहणं करेइ। वत्ताए तेणं अहं कहिओ जं नाहुत्तं गहिहामि। पुत्तस्स मुहे माअरा आणंदं अणुभवइ। समुद्दस्स तरंगा गगणे उच्छलंति। साहूणं गोट्ठीए का वत्ता णिच्छिया? महावीरं पइ गोयमस्स पीई आसि। तुज्झ मुहस्स कंती कहं मलिणा जाआ। अमुम्मि विसये मज्झ को वि पण्हो नत्थि। तुज्झ आकिई मं अणुहरइ।

धातु प्रयोग

सो रयणं कोसेयम्मि वेढइ। पिउस्स पायम्मि विणीया पुत्ता पणमंति। कमलविआसि पुप्फं निसाए ओमीलइ। सो घडम्मि जलपत्तं ओयत्तइ। जो णियमं पिअरंजइ सो पावस्स भागी भवइ। तीसे नेउरं रुणइ। सो मणेणावि साहुणियमा न क्कमइ। पट्ठाणकाले मुणिणो आयरिअस्स समीवं उम्मुचंति। मुणिणो आयरिअस्स समीवे भिक्खं पिंडंति।

प्राकृत में अनुवाद करो

आपके सहयोग से मैं परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाऊंगा। श्मसान में कौन साधना करता है? बातचीत कैसे भंग हुई? चुम्बन लेना स्नेह या ममता का रूप है। मन की तरंगें प्रतिक्षण उठती हैं। उसने गोष्ठी का निर्णय स्वीकार नहीं किया। प्रीति से कार्य सरलता से बन जाता है। ब्रह्मचर्य से मुख की कांति बढ़ती है। गौतम के प्रश्नों का उत्तर भगवान महावीर ने दिया था। तुम्हारी आकृति आकर्षक है।

धातु का प्रयोग करो

इस पुस्तक पर वस्त्र किसने लपेटा है? वह अपने से बड़ों के प्रति नमन करता है। तुम कभी आंखें बंद करते हो कभी खोलते हो। वह घड़े में घी का बर्तन उलटाता है। तुम गुस्से में कलम को तोड़ते हो। हार कभी भी

आवाज नही करता। रमेश नदी को उल्लंघन करता है। वह चतुर्दशी को रात को भोजन करने का परित्याग करता है। सीता कमरे मे कचरा एकत्रित करती है।

प्रश्न

१. प्राकृत मे व्यजनात शब्द होते है या नही ?

२ शब्द के अतिम व्यजन का प्राकृत मे क्या होता है ? प्रत्येक विधि का दो-दो उदाहरण दो।

३ अन्तिम व्यंजन स्त्रीलिंग मे हो तो उसको क्या आदेश होता है ? दो उदाहरण से स्पष्ट करो।

४. सहयोग, आकृति, चुम्बन, श्मसान, बातचीत, तरग, प्रीति, प्रश्न और गोष्ठी के लिए प्राकृत मे क्या शब्द है ?

५. ओयत्त, ओमील, वेढ, पिअरज, पिंड, कण और उम्मुच धातुओ के अर्थ बताओ तथा वाक्य मे प्रयोग करो।

संख्या

जिन शब्दों के द्वारा संख्या का बोध होता है, वे संख्यावाची शब्द कहलाते हैं। संख्यावाची शब्द विशेषण होते हैं। विशेष्य के अनुसार लिंग होने के कारण ये तीनों लिंगों में चलते हैं। एग और पंच से लेकर अट्ठारस तक शब्द अकारान्त हैं। एगूणवीसा से लेकर अट्ठावन्ना तक शब्द आकारान्त हैं। ति और एगूणसट्ठि से लेकर णवणवइ तक शब्द इकारान्त हैं। दु और चउ शब्द उकारान्त हैं। सय, सहस्स, अयुत, लक्ख, पउय आदि शब्द अकारान्त हैं। कोडि, कोडाकोडि शब्द इकारान्त हैं। संख्यावाची शब्द ये हैं—

एग, एअ, एक्क, इक्क (एक) एक। दु (द्वि) दो। ति (त्रि) तीन। चउ (चतुर्) चार। पंच (पञ्चन्) पाच। छ (षट्) छ। सत्त (सप्तन्) सात। अट्ठ (अष्टन्) आठ। नव (नवन्) नौ। दह, दस (दशन्) दस। एआरह, एगारह, एआरस (एकादशन्) ग्यारह। दुवालस, बारस, बारह (द्वादशन्) बारह। तेरस, तेरह (त्रयोदशन्) तेरह। चोद्दस, चोद्दह, चउद्दस, चउद्दह (चतुर्दशन्) चौदह। पण्णरस, पण्णरह (पञ्चदशन्) पन्द्रह। सोलस, सोलह (षोडश) सोलह। सत्तरस, सत्तरह (सप्तदशन्) सत्रह। अट्ठारस, अट्ठारह (अष्टादशन्) अठारह। एगूणवीसा (एकोनविंशति) उन्नीस। वीसा (विंशति) वीस। एगवीसा इक्कवीसा, एक्कवीसा (एकविंशति) इक्कीस। बावीसा (द्वाविंशति) बाईस। तेवीसा (त्रयोविंशति) तेईस। चउवीसा, चोवीसा (चतुर्विंशति) चौवीस। पणवीसा (पञ्चविंशति) पच्चीस। छव्वीसा (षड्विंशति) छब्बीस। सत्तावीसा (सप्तविंशति) सत्ताईस। अट्ठावीसा, अट्ठवीसा, अडवीसा (अष्टविंशति) अट्ठाईस। एगूणतीसा (एकोनत्रिंशत्) उनतीस। तीसा (त्रिंशत्) तीस। एक्कतीसा एगतीसा, इक्कतीसा (एकत्रिंशत्) इकतीस। बत्तीसा (द्वात्रिंशत्) बत्तीस। तेत्तीसा, तित्तीसा (त्रयस्त्रिंशत्) तेतीस। चउत्तीसा, चोत्तीसा (चतुस्त्रिंशत्) चौतीस। पणतीसा (पञ्चत्रिंशत्) पैंतीस। छत्तीसा (षट्त्रिंशत्) छत्तीस। सत्ततीसा (सप्तत्रिंशत्) सैंतीस। अट्ठतीसा, अडतीसा (अष्टत्रिंशत्) अडतीस। एगूणचत्तालिस (एकोनचत्वारिंशत्) उनचालीस। चत्तालिसा, चत्ताला (चत्वारिंशत्) चालीस। एगचत्तालिसा, इक्कचत्तालिसा, एक्कचत्तालिसा, इगयाला (एकचत्वारिंशत्) इकतालीस। बेआलिसा, बेआला दुचत्तालिसा (द्विचत्वारिंशत्) बयालीस। तिचत्तालिसा, तेआलिसा, तेआला (त्रिचत्वारिंशत्) तैतालीस। चउचत्तालिसा,

चोआलिसा, चोआला, चउआला (चतुश्चत्वारिंशत्) चौवालीस। पणचत्तालिसा, पणयाला (पञ्चचत्वारिंशत्) पैंतालीस। छचत्तालिसा, छायाला (षट्चत्वारिंशत्) छियालीस। सत्तचत्तालिसा, सगयाला (सप्तचत्वारिंशत्) सैंतालीस। अट्ठचत्तालिसा, अडयाला (अष्टचत्वारिंशत्) अडतालीस। एगूणपण्णासा (एकोन पञ्चाशत्) उनपचास। पण्णासा (पञ्चाशत्) पचास। एगपण्णासा, इक्कपण्णासा, एक्कपण्णासा एगावण्णा (एकपञ्चाशत्) एक्यावन। बावण्णा, दुपण्णासा (द्विपञ्चाशत्) बावन। तेवण्णा, तिपण्णासा (त्रिपञ्चाशत्) त्रेपन। चोवण्णा, चउपण्णासा (चतुष्पञ्चाशत्) चौपन। पणपण्णा, पणपण्णासा, पञ्चावण्णा (पञ्चपञ्चाशत्) पचपन। छप्पण्णा, छप्पण्णासा (षट्पञ्चाशत्) छप्पन। सत्तावण्णा, सत्तपण्णासा (सप्तपञ्चाशत्) सत्तावन। अट्ठावन्ना, अट्ठपण्णासा (अष्टपञ्चाशत्) अट्ठावन। एगूणसट्ठि (एकोनषष्टि) उनसठ। सट्ठि (षष्टि) साठ। एगसट्ठि (एक-षष्टि) इकसठ। बासट्ठि, बिसट्ठि (द्विषष्टि) बासठ। तेसट्ठि (त्रिषष्टि) त्रेसठ। चउसट्ठि, चोसट्ठि (चतुष्षष्टि) चौसठ। पणसट्ठि (पञ्चषष्टि) पैंसठ। छासट्ठि (षट्षष्टि) छिआसठ। सत्तसट्ठि (सप्तषष्टि) सड़सठ। अडसट्ठि, अट्ठसट्ठि (अष्टषष्टि) अडसठ। एगूणसत्तरि (एकोनसप्तति) उनहत्तर। सत्तरि (सप्तति) सत्तर। इक्कसत्तरि इक्कहत्तरि (एकसप्तति) इकहत्तर। बासत्तरि, बिसत्तरि, बाहत्तरि, बिहत्तरि, बावत्तरि (द्विसप्तति) बहत्तर। तिसत्तरि (त्रिसप्तति) तिहत्तर। चोसत्तरि, चउसत्तरि (चतुस्सप्तति) चोहत्तर। पण्णसत्तरि, पणसत्तरि (पञ्चसप्तति) पचहत्तर। छसत्तरि (षट्-सप्तति) छिहत्तर। सत्तसत्तरि (सप्तसप्तति) सतहत्तर। अट्ठसत्तरि, अडहत्तरि (अष्टसप्तति) अठहत्तर। एगूणासीइ (एकोनाशीति) उन्नासी। असीइ (अशीति) अस्सी। एगासीइ (एकाशीति) इक्यासी। बासीइ (द्व्यशीति) बयासी। तेसीइ, तेरासीइ (त्र्यशीति) तिरासी। चउरासीइ, चोरासीइ (चतुरशीति) चौरासी। पणसीइ, पञ्चासीइ (पञ्चाशीति) पचासी। छासीइ (षडशीति) छियासी। सत्तासीइ (सप्ताशीति) सत्तासी। अट्ठासीइ (अष्टा-शीति) अट्ठासी। नवासीइ, एगूणणवइ (नवाशीति) नवासी। णवइ, नवइ (नवति) नव्वे। एगणवइ, इगणवइ (एकनवति) इक्यानवे। बाणवइ (द्विनवति) बानवे। तेणवइ (त्रिनवति) तिरानवे। चउणवइ, चोणवइ (चतुर्नवति) चौरानवे। पंचणवइ, पण्णणवइ (पञ्चनवति) पचानवे। छण्णवइ (षण्णवति) छियानवे। सत्तणवइ, सत्ताणवइ (सप्तनवति) सित्तानवे। अट्ठणवइ, अडणवइ (अष्टनवति) अट्ठानवे। एगूणसय, णवणवइ, नवणवइ (नवनवति) निन्यानवे। सय (शत) सौ। दुसय (द्विशत) दो सौ। तिसय (त्रिशत) तीन सौ। बेसयाइं (द्वेशते) दो सौ। तिण्णिसयाइं (त्रीणिशतानि) तीन सौ। सहस्स (सहस्र) हजार। बेसहस्साइं (द्वेसहस्रे) दो हजार। दस-

सहस्साइं (दशसहस्राणि) दस हजार। अउअ, अयुअ, अयुत (अयुत) दस हजार। लक्खो, लक्खं (लक्ष) लाख। दसलक्ख, दहलक्ख, पउअ, पउत, पयुअ (प्रयुत) दस लाख। कोडि (कोटि) करोड। कोडाकोडि (कोटिकोटि) करोड से करोड गुणा करने पर जो संख्या आए वह। असंख, असंखिज्ज (वि) (असंख्येय) असंख्येय। अणंत (अनन्त) अनन्त।

सामान्यत. सख्यावाची शब्द एकवचन मे प्रयुक्त होते हैं। जैसे, वीसा मणुस्सा। इसको दूसरे प्रकार से भी प्रयुक्त कर सकते है—मणुस्साण वीसा। मनुष्यो की वीस सख्या हैं। सख्यावाचक शब्द जब अपनी-अपनी संख्या सूचित करते है तव वे एक वचन मे प्रयुक्त होते हैं। जैसे—वीस, तीस, चालीस। जब वे वहुत वीस, बहुत तीस आदि बहुतता बताते हैं तब वे वहुवचन मे आते हैं।

वाक्य प्रयोग

एगोहं नत्थि मे कोवि। चत्तारि कसाया दुक्खाइं देंति। तीसे तिण्णि पुत्ता छ बाला य सति। रमेसस्स गिहे अठारह धेणुओ पणवीसा महिसा पणपण्णा उट्टा आसि। अमुम्मि गामे असीई गेहा सति। धणस्स कोडीए वि सतोसो न होइ। तस्स आवणे वत्थाण सत्तरी दीसइ। तास परिवारे सट्ठी लोआ सति। सो अउअं धारेइ। अमुम्मि नयरे वीसा महापहा सत्तरी वीहिओ य संति। कम्मि णयरे कोडिपुरिसा सति ?

जो सहस्सं सहस्साणं, संगामे दुज्जये जये।
एगं जिणेज्ज अप्पाण, एस से परमो जओ।।

प्राकृत में अनुवाद करो

एक वर्ष मे वारह महीने होते है। एक मास मे तीस दिन होते हैं। आचार्य तुलसी की आज्ञा मे सात सौ से अधिक साधु-साध्विया हैं। प्राचीनकाल मे पुरुष ७२ कलाए और स्त्री चौसठ कलाएं सीखती थी। तुमने गुरु से तेतीस प्रश्न पूछे थे। पाली चतुर्मास मे ३१ साधु और ३० साध्विया थी। इस शहर मे १ लाख १० हजार आदमी रहते हैं। कलकत्ता की जनसख्या प्राय: एक करोड है। इस सरकार मे ३५ मंत्री हैं। इस परिवार में ४० सदस्य है। नक्षत्र २७ होते हैं। राशियो की संख्या १२ है। सात वार सात ग्रहो पर आधारित है। मैं दिन मे एक वार शौच जाता हू। तेरापंथ का प्रारंभ दो सौ तीस वर्ष पहले हुआ था। जैन धर्म के चौबीस तीर्थंकर है। भगवान महावीर के ग्यारह गणधर थे। चौवालीस वर्ष पूर्व मेरी दीक्षा हुई थी।

प्रश्न

१. सख्यावाची शब्द किसे कहते है ?
२. संख्यावाची शब्दो का प्रयोग किस लिंग में होता है ?

३. संख्यावाची शब्दो मे कौन से अकारान्त हैं और कौन से आकारान्त, इकारान्त और उकारान्त है ?

४. सख्यावाची शब्द कहा एकवचन मे प्रयुक्त होते हैं और कहा वहुवचन मे ?

५ नीचे लिखी सख्याओ के प्राकृत मे सख्यावाची शब्द वताएं—
तीन, चार, पन्द्रह, वीस, पैंतीस, उनचालीस, चौतालीस, एक्यावन, पचपन, वासठ, इकहत्तर, उन्नासी निन्यानवे, दस हजार, तीन सौ, असंख्येय ।

शब्द संग्रह (शाक वर्ग १)

करेला—कारेल्लय, कारिल्ली (दे)
परवल—पडोलो, पडोला
बेंगन—विंतागी, वायंगण (दे)
खीरा, काकडी—कक्कडी
मूली—मूलग
आलु—आलू (पु, न)
पपीते का शाक—महुकक्कडीसागो
चने का शाक—चणगसागो
मक्का—मकाय सागो, महाकाय सागो (स)
पालक—पालक्का
अदरख—सिंगवेर
प्याज—पलडू (पु)
लहसुन—लसुणं
वत्थुआ—वत्थुलो
लौकी—अलाउ
केले का शाक—केली
ग्वारफली—गोराणी, दढ बीया, वाउइया (वाकुचिया)
टमाटर—रत्तंगो (सं)

धातु संग्रह

आ (या)—जाना
आउंछ—खींचना, जोतना
आअक्ख—कहना
आअर (आदृ)—आदर करना
आइ (आ दा)—लेना
आइंच—सींचना, छिडकना
आयव—कांपना, हिलना
आयम—आचमन करना
आयर—आचरण करना
आयल्ल—लटकना

संयुक्त व्यंजन—संयुक्त व्यजनो को होने वाले आदेश क, ख आदि क्रम से दिए जा रहे हैं। आदेश के बाद व्यजन द्वित्व हो जाते हैं।

क, ख, ग, घ, च आदेश—

नियम २९७ (शक्त-मुक्त-दष्ट-रुग्ण-मृदुत्वे को वा २।२) शक्त, मुक्त दष्ट, रुग्ण और मृदुत्व शब्द के संयुक्त को क आदेश विकल्प से होता है।

क्त7क—शक्तः (सक्को, सत्तो)। मुक्तः (मुक्को, मुत्तो)।
ग्ण7क—रुग्णः (लुक्को, लुग्गो)।
त्व7क—मृदुत्वं (माउक्क, माउत्तणं)।
ष्ट7क—दष्टः (डक्को, दट्ठो)।

नोट १—सक्को और मुक्को ये दो शब्द नियम २१६ क-ग-च-ज-त-द-प-य-वा प्रायो लुक् १।१७७) के अपवाद रूप हैं।

नियम २९८ (क्षः खः क्वचित्तु छ-झौ २।३) क्ष को ख होता है। कहीं-कहीं पर छ और झ होता है।

क्ष 7 ख—क्षय. (खओ) क्षमा (खमा) क्षीण (खीण) क्षीरं (खीरं) इक्षु (इक्खू) ऋक्षः (रिक्खो) मक्षिका (मक्खिआ) लक्षणं (लक्खण)।

नियम २९९ (ष्क-स्कयो र्नाम्नि २।४) ष्क और स्क को ख आदेश होता है संज्ञा अर्थ मे।

ष्क 7 ख—पुष्कर (पोक्खर) पुष्करिणी (पोक्खरिणी) निष्क (निक्ख)।

स्क 7 ख—अवस्कन्दो (अवक्खरो) अवस्करः (अवक्खरो) उपस्करः (उवक्खरो) उपस्कृत (उवक्खड) स्कन्धः (खधो) स्कन्धावारः (खधावारो)।

क्ष्ण 7 ख—तीक्ष्ण (तिक्ख) (नियम २९९ से)।

नियम ३०० (शुष्क-स्कन्दे वा २।५) शुष्क और स्कन्ध शब्द के सयुक्त को ख विकल्प से होता है।

ष्क 7 ख—शुष्कं (सुक्खं, सुक्कं)।

स्क 7 ख—स्कन्दः (खन्दो, कन्दो)।

नियम ३०१ (स्तम्भे स्तो वा २।८) स्तम्भ शब्द के स्त को ख विकल्प से होता है।

स्त 7 ख—स्तम्भो (खम्भो, थम्भो)।

नियम ३०२ (स्थाणावहरे २।७) स्थाणु शब्द के स्थ को ख आदेश होता है, वह महादेव का वाचक न हो तो।

स्थ 7 ख—स्थाणुः (खाणू) ठूठा वृक्ष।

नियम ३०३ (क्ष्वेटकादौ २।६) क्ष्वेटक आदि शब्दो के संयुक्त को ख होता है।

क्ष्व 7 ख—क्ष्वेटकः (खेडओ) विष। क्ष्वोटक. (खोडओ)।

स्फ 7 ख—स्फोटकः (खोडओ)। स्फेटकः (खेडओ)। स्फेटिकः (खेडिओ)।

नियम ३०४ (रक्ते गो वा २।१०) रक्त शब्द के सयुक्त को ग विकल्प से होता है।

क्त 7 ग—रक्त. (रग्गो, रत्तो)।

नियम ३०५ (शुल्के ङ्गो वा २।११) शुल्क शब्द के ल्क को ङ्ग आदेश विकल्प से होता है।

ल्क 7 ङ्ग—शुल्क (सुङ्ग, सुक्क)।

नियम ३०६ (त्यो चैत्ये २।१३) चैत्य शब्द को छोडकर त्य को च होता है।

त्य 7 च—सत्य (सच्च) प्रत्यय. (पच्चओ) त्यागी (चाई) त्यजति (चयइ)।

नियम ३०७ (प्रत्यूषे षश्च हो वा २।१४) प्रत्यूष शब्द के त्य को च होता है।

त्य7च—प्रत्यूषः (पच्चूहो, पच्चूओ)।

नियम ३०८ (कृत्ति-चत्वरे चः २।१२) कृत्ति और चत्वर के संयुक्त को च होता है।

त्त7च—कृत्ति. (किच्ची)।

त्व7च—चत्वर (चच्चर)।

नियम ३०९ (त्व-थ्व-द्व-ध्वां च-छ-ज-झाः क्वचित् २।१५) त्व को च, थ्व को छ, द्व को ज, ध्व को झ होता है।

त्व7च—भुक्त्वा (भोच्चा) ज्ञात्वा (णच्चा) कृत्वा (किच्चा) श्रुत्वा (सोच्चा) दत्वा (दच्चा)।

प्रयोग वाक्य

सक्करारोगे कारेल्लय उवओगि अत्थि। सागेसु पडोलो मुल्लव (मूल्यवान्) भवइ। जडणा वायगण न खाअंति। कक्कडी गुणेण सीयला अत्थि। मूलय वाउणासण होइ। आलू बारहमासम्मि चेअ आवणे लभइ। पालक्का सत्थाय लाहअरा अत्थि। दालीए सिंगबेर केण दिण्णं? गिम्हकाले पलडुस्स पओओ अहियो भवइ। लसुणस्स अवलेहो भवइ, सागो वि भवइ। वत्थुलो कत्थ उप्पज्जइ? अलाउ महुर हवइ। केलीए साग अहं रुइणा भक्खामि। पुरिसा तडुलेण सह चणगसागं भुजति। मेवाडदेसवासिणो मकाय-साग पमोएण खाअंति। गोराणीए सागो बज्जरीरुट्टिआइ सह पाओ रुइअरो लग्गइ। रत्तंगस्स सागो वि रत्तं वड्ढइ।

धातु प्रयोग

वालो पढिउ विज्जालय आइ। किसीवलो (किसान) खेत्त आउछइ। सोहणो णियवत्तं आअक्खइ। सुगिहिणो अतिहिं आअरइ। सो तुवाण सिक्ख आइइ। सेट्ठी णिय उज्जाण आइचइ। वरिसाए अद्दीभूयो तस्स कायो आयंवइ। तुमं साहुणियमा सम्मं (अच्छी तरह) आयरसि। तिस्स केसकलावो खधम्मि आयल्लइ। मोहणो हडमाणदेवालये आयमइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

कल मैंने करेला का शाक खाया था। परवल का शाक मेरे पिताजी खाते थे। मेरी बहन ने बैंगन का शाक कभी नहीं खाया। मूली मौसी के गाव मे पैदा होती है। आलू जमीन के भीतर फलता है। बुआ पालक का शाक शाम को नहीं खाती है। तुम्हारी भाभी प्रतिदिन अदरख खाती है। गर्मी मे प्याज और दही मेरे दादा बहुत खाते थे। मेरा मामा प्याज कभी नहीं खाएगा। मामी ने लहसुन का शाक किसके लिए बनाया है? वत्थुए का शाक

उसकी भतीजी नही खाती है। लौकी पेट के लिए हितकर है। चने का शाक प्रशात भी खाता है। मक्की का शाक मेरे स्वास्थ्य के अनुकूल है। ग्वारफली का शाक तेल मे बनाया जाता है। टमाटर मे बीज बहुत होते हैं इसलिए कुछ लोग नही खाते है। केले का शाक कौन नही खाना चाहता है ? क्या तुम्हारे लिए लौकी का शाक बनेगा ?

धातु का प्रयोग करो

मैं कल कालेज नही जाऊगा। वर्षा होने पर भी किसान खेत को क्यों नही जोतता है ? प्रिंसिपल अध्यापक से क्या कहता है ? कुलपति का सदा आदर करना चाहिए। शिक्षक विद्यार्थी से धन लेता है। नाना अपने बाग को सीचता है। सभा मे भाषण देने वाला मोहन आज बोलते समय क्यो कांपता है ? वह पाच महाव्रतो का आचरण करता है। वृक्ष पर क्या लटकता है ? शिष्य गुरु के पाद प्रक्षालन का आचमन करता है।

प्रश्न

१ ख आदेश किन सयुक्त वर्णो को होता है ? उदाहरण दो।

२. मुक्त' का मुक्को रूप शुद्ध है या मुत्तो ? और किस नियम से ?

३. नीचे लिखे शब्दो को इस पाठ के नियमो से सिद्ध करो—किच्ची, चाई, सुक्क, पच्चओ, उवक्खड, रग्गो, खदो, लुक्को।

४. करेला, परवल, बैंगन, खीरा (काकडी) मूली, आलु, पालक, अदरख, प्याज, लहसुन, वत्थुआ, लौकी, केले का शाक, ग्वारफली, टमाटर—इन शब्दो के लिए प्राकृत शब्द बताओ।

५. आ, आअंछ, आअक्ख, आअर, आड, आइंच, आयव, आयम, आयर और आयल्ल धातुओ के अर्थ बताओ और उन्हे वाक्य मे प्रयोग करो।

४३ संयुक्त व्यंजन परिवर्तन (२)

शब्द संग्रह (शाक वर्ग २)

पोदिना—पुदिणो, रुइस्सो (सं)
चौलाई—तंदुलेज्जगो
गोभी—गोजीहा (स)
तोरई—घोसाडड, घोसालड (स)
कोहला—कुम्हडी
शकरकंदी—रत्तालु (सं)
मकोय—कागमाई (स)
फली—सिंवा
सागरी—समीफल
धनिया—कुत्थुंभरी
भिंडी—भिण्डा (स)
टिंडा—डिंडिसो (सं)
गाजर—गाजरं, गिंजणं (स)
हल्दी—हलद्दा, हलद्दी
मटर—कलायो
चोपतियासाग—सोत्थिओ
सूरनकद—सूरण
केर—करीरफलं

चटनी—अवलेहो
घाव—वणो
शाक—सागो
अपक्व—आमो

धातु संग्रह

आया—आना
आया (आ+दा) ग्रहण करना, लेना
आयाम—शौच करना, शुद्धि करना
आयाम—देना, दान करना
आयार (आ+कारय्)—बुलाना आह्वान करना
आयास—तकलीफ देना, खिन्न करना
आरज्झ—आराधना करना
आरड—चिल्लाना, बूम मारना
आरस—चिल्लाना, बूम मारना
आयाव—आतापना लेना, सूर्य के ताप मे शरीर को थोडा तपाना

छ, ज, झ, ञ आदेश—

नियम ३१० (छोक्ष्यादौ २।१७) अक्षि आदि शब्दो के संयुक्त को छ आदेश होता है।

क्ष>छ—अक्षि (अच्छि) इक्षुः (उच्छू) लक्ष्मी (लच्छी) कक्षः (कच्छो) क्षुतं (छीअ) क्षीर (छीर) सदृक्ष (सरिच्छो) वृक्ष (वच्छो) मक्षिका (मच्छिआ) क्षेत्र (छेत्त) क्षुध् (छुहा) दक्षः (दच्छो) कुक्षिः (कुच्छी) वक्षस् (वच्छ) क्षुण्ण (छुण्णो) कक्षा (कच्छा) क्षारः (छारो) कौक्षेयक (कुच्छेअय) क्षुरः (छुरो) उक्षा (उच्छा) क्षत (छय) सादृश्यं (सारिच्छ)।

नियम ३११ (क्षमायां कौ २।१८) क्षमा शब्द पृथिवीवाचक हो तो उसके क्ष को छ आदेश होता है।

क्ष>छ—क्षमा (छमा) पृथिवी। क्ष्मा (छमा)।

नियम ३१२ (क्षण उत्सवे २।२०) क्षण शब्द उत्सववाचक हो तो क्ष को छ आदेश होता है।

क्ष>छ—क्षण. (छणो) उत्सव।

नियम ३१३ (रुक्षे वा २।१९) रुक्ष शब्द के क्ष को छ आदेश विकल्प से होता है।

क्ष>छ—रुक्ष (रिच्छं) रिक्ख (नियम २९८ से)।

क्ष्व>छ—पृथ्वी (पिच्छी)। (नियम ३०९ से)।

नियम ३१४ (स्पृहायाम् २।२३) स्पृहा शब्द के स्प को छ आदेश होता है।

स्प>छ—स्पृहा (छिहा)।

नियम ३१५ (ह्रस्वात् थ्य-श्च-त्स-प्सामनिश्चले २।२१) ह्रस्व स्वर से परे थ्य, श्च, त्स, प्स को छ आदेश होता है।

थ्य>छ—पथ्यं (पच्छ) पथ्या (पच्छा) मिथ्या (मिच्छा)।

श्च>छ—पश्चिम (पच्छिम) आश्चर्य (अच्छेर) पश्चात् (पच्छा) वृश्चिक. (विंछिओ)।

त्स>छ—उत्साह (उच्छाहो) उत्सन्न (उच्छन्नो) चिकित्सति (चिइच्छइ) मत्सर (मच्छरो) मत्सर (मच्छलो) सवत्सरः (सवच्छरो) सवत्सर. (सवच्छलो)।

प्स>छ—लिप्सति (लिच्छइ) जुगुत्सति (जुगुच्छइ)। अप्सरा (अच्छरा)।

नियम ३१६ (सामर्थ्योत्सुकोत्सवे वा २।२२) सामर्थ्य, उत्सुक, उत्सव —इन शब्दो के सयुक्त को छ आदेश विकल्प से होता है।

र्थ्य>छ—सामर्थ्यम् (सामच्छ, सामत्थ)।

त्स>छ—उत्सुक (उच्छुओ, उसुओ)। उत्सवः (उच्छवो, ऊसवो)।

नियम ३१७ (द्य-य्य-र्यां जः २।२४) द्य, य्य और र्य को ज आदेश होता है।

द्य>ज—मद्यम् (मज्ज) अवद्यम् (अवज्ज) वेद्यो (वेज्जो) द्युति (जुई) द्योत (जोओ) अद्य (अज्ज)।

य्य>ज—जय्यो (जज्ज) शय्या (सेज्जा)।

र्य>ज—भार्या (भज्जा) कार्यम् (कज्ज) वर्ज्यम् (वज्ज) आर्य· (अज्जो) पर्याय. (पज्जाओ) पर्याप्तम् (पज्जत्तं) मर्यादा (मज्जाया) आर्यपुत्र. (अज्जपुत्तो)।

कलायम्मि रत्तमिरिअ अहिय अत्थि । सोवत्थिअसागो भगवया महावीरेणावि भुत्तो । सूरणो रुक्खो भवइ । गिम्हकाले जणा खट्टकरीरफलाण सागं रुइए (रुचि से) भक्खंति ।

धातु प्रयोग

तुम अत्थ कया आयाहिसि ? तुज्झ पोत्थयं अह आयाहिमि । पच्चूहे सव्वे जणा आयामति । दाणवीरो सोहणो धण आयामइ । गुरू केण कारणेण सीसा आयारइ ? मुणी सुहलालो गिम्हकाले सिलापट्टम्मि आयाविसु । सासू धणलोभत्तो पुत्तवहू आयासइ । सो णाणं आरज्झइ । पिउस्स मच्चुम्मि पुत्तो आरडइ आरसइ वा ।

प्राकृत में अनुवाद करो

पुदिना की चटनी किसने बनाई है ? वह दाल मे धनिए की चटनी मिलाकर खाता है । चौलाई के शाक से कब्ज मिटती है । गोभी के पत्तो का शाक मैं खा सकता हू । बाजार मे आज तोरई का शाक अधिक है । कोहला तुम किस स्थान से लाए हो ? शकरकदी के शाक मे उतनी मधुरता नही है । मकोय शाक त्रिदोप को नाश करता है । आज मैं मटर की फली का शाक नही खाऊगा । सागरी का शाक स्वास्थ्य के लिए हितकर है । कच्ची भिंडी का शाक पेट की शुद्धि करता है । टिंडा के भीतर लाल मीर्च देकर बना हुआ शाक कौन नही खाता है ? गाजर रक्त को बढाती है । हल्दी का शाक वायु को नाश करता है । मटर का शाक आजकल सब जगह मिलता है । चोपतिया साग को बगाल के लोग अधिक खाते है। सूरनकद तुम कल कहां से लाओगे ? केर का शाक बहुत लाभकारी होता है ।

धातु का प्रयोग करो

वह अपने घर से आता है। तुम मुझे शिक्षा दो मैं सम्यक् ग्रहण करूगा । प्रतिदिन मैं समय पर शौच जाता हू । जो दूसरो को देता है वह अधिक पाता है । भगवान महावीर ने अपने शिष्यो को आह्वान किया । भिक्षु स्वामी ने नदी मे आतापना ली । किसी को तकलीफ मत दो । मैं अपने आराध्य की आराधना करता हू । वह अपनी माता की मृत्यु सुनकर खूब रोया ।

प्रश्न

१ नीचे लिखे शब्दो मे बताओ इस पाठ के किस नियम से क्या आदेश हुआ है ?

अहिमज्जू, सज्झस, कुच्छी, छणो, रिच्छ, विछिओ, सामच्छ, सावज्जो, जुई, मज्झ, झओ, डज्झाइ, अज्जा ।

शब्द संग्रह (औषधि वर्ग १)

पीपर—पिप्पली
लौंग—लवगो, पउमा
पीपरामूल—पिप्पलीमूलं
अश्वगंध—अस्सगंधा
वंशलोचन—वंसरोअणा
अडूसा—वासओ
चूना—चुण्णं

कालीमिर्च—कण्हमिरिअ
सोंठ—सुंठी
गिलोय—गलोई, वच्छादणी
गोखरु—गोक्खुरो
फिटकड़ी—सोरट्ठिया
जमालगोटा—सारओ
खदिरसार (कत्था)—सिअखइरो (स)

० ० ० ० ०

जुकाम—पडिसायो
स्मृति—सई (स्त्री)
स्वच्छ—अच्छं

उदर—उअरं
कृमि—किमी
चामर—सीत

धातु संग्रह

आराह—भक्ति करना
आरूस—क्रोध करना, रोष करना
आलव—आश्रय लेना, सहार लेना
आलक्ख—चिह्न से पहचानना
आलव—बातचीत करना

आलिंग—गले लगाना आलिंगन करना
आलिप—पोतना, लेप करना
आली—आसक्त होना
वीअ—हवा डालना
उज्जाल—जलाना

ट, ठ, ड, ढ आदेश

नियम ३२३ (वृत्त-प्रवृत्त-मृत्तिका-पत्तन-कदर्थिते टः २।२९) इन शब्दों के संयुक्त को ट आदेश होता है।

त्त 7 ट्ट—वृत्त (वट्टो) प्रवृत्त (पयट्टो) मृत्तिका (मट्टिआ) पत्तनं (पट्टणं)
र्थ 7 ट्ट—कदर्थित (कवट्टिओ)

नियम ३२४ (र्तस्याधूर्त्तादौ २।३०) र्त को ट आदेश होता है। धूर्त्त आदि शब्दों को छोड़कर।

र्त्त 7 ट्ट—कैवर्त्त (केवट्टो) वर्त्ती (वट्टी) नर्तकी (नट्टइ) वर्तुल (वट्टुलो) जर्त (जट्टो) वर्तुल (वट्टुल) राजवर्तक (रायवट्टय)।

नियम ३२५ (पर्यस्ते थ-टौ २।४७) पर्यस्त शब्द के स्त को क्रमश थ और ट आदेश होता है।

ग्ध > ढ—दग्ध (दड्ढो) विदग्ध (विअड्ढो)
द्ध 7 ढ—वृद्धि (वुड्ढी) वृद्ध (वुड्ढो)
ब्ध 7 ढ—स्तब्ध (ठड्ढो) (नियम ३३० के अनुसार)

नियम ३३५ (श्रद्धर्द्धि-मूर्धार्धेन्ते वा २।४१) श्रद्धा, ऋद्धि, मूर्धन् और अर्ध शब्दो के अंतिम सयुक्त र्ध को ढ आदेश विकल्प से होता है।

र्ध 7 ढ—श्रद्धा (सड्ढा, सद्धा) ऋद्धि (इड्ढी, रिद्धी) मूर्ध (मुण्ढा, मुद्धा)। अर्ध (अड्ढं, अद्ध)

प्रयोग वाक्य

पिप्पलीए सह दुद्ध पाअव्व। वारहमुहुत्तपेरन्तं पाणिअम्मि दिण्णे लवग ठाऊण सलिलेण सह पाअव्वं। अस्सगधा भक्खणेण अस्ससमो वलो भवइ। पिप्पलीमूल सइवड्ढय हवइ। वालो वंसरोअणं खाअइ। कण्हमिरिअ घयेण सह भोयणे वहुलाभअरं भवइ। सुठीए पओगो अणेगहा होइ। वच्छादणीइ उअरस्स सुद्धी भवइ। गोक्खुरेण अच्छ मुत्त आयाइ। वासओ कफणासओ भवइ। सोरट्ठियाए उवओगो अणेगेसु कज्जेसु भवइ। वणे चुण्णस्स उवओगो होइ। सिअखइरेण दंता दढा भवति। सारएण उअरस्स किमिणो णस्संति।

धातु प्रयोग

कि तुम पासणाह आराहसि? पिआ पुत्त आरूसइ। सो रुक्ख आरोहइ। सघ आलविऊण मुणी साहुण करेइ। तुमं परुप्पर किं आलवसि? पिआ पुत्ति आलिगइ। रामो भरह आलिगइ। उच्छवे दक्खिणपएसवासिणो गिह आलिपति। तुम कह रुवम्मि आलीसि? अह तुम आलक्खामि। मुणी सीतेण न सय वीअइ। सीया अग्गिं उज्जालइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

पीपल मदाग्नि को दूर कर भूख बढाती है। फुनसी पर लौंग लगाने से पीडा कम होती है। अश्वगध वल देनेवाली औषधि है। पीपरामूल दिमाग की शून्यता को मिटाती है। वशलोचन हृदय को दृढ करता है। कालीमिर्च भूख को जगाती है। सूठ अनेक रोगों मे उपयोगी है। गिलोय पेट की शुद्धि करता है और वातरोग को दूर करता है। गोखरु से मूत्र का अवरोध मिटता है। अडूसा कफनाशक है और श्वास रोग मे काम आता है। फिटकडी से जुकाम (पडिसायो) मिटता है। चूना हड्डी को मजबूत (दढ) बनाता है। जमालगोटा से मल पतला होकर अनेक बार निकलता है। कत्था गुण से गरम होता है।

धातु का प्रयोग करो

वह प्रतिदिन शिव की आराधना करता है। मन के प्रतिकूल बात

४५ संयुक्त व्यंजन परिवर्तन (४)

शब्द संग्रह (औषधि वर्ग २)

आमला—धत्ती
बहेडा—बहेडओ
मेथी—मेथी (स)
ईसवगोल—ईसिगोलो (स)
णिद्धवीयं (स)
जायफल—जाइफल
जावित्री—जाइवत्तिआ
छोटी इलायची—सुहुमेला
नागकेसर—णागकेसरो
हर्रं—हरडई, अभया
त्रिफला—तिफला
अजवायन—अजम (वि) दे
ईसबगोलभुसी—ईसिगोलवुस (स)
दालचीनी—चोअ (दे) चोच (स)
इलायची—एला, थूलेला, तिपुडा (सं)
सौंफ—सयपुप्फा
गोरोचन—गोलोअणो (स)

० ० ० ०

भुना हुआ—भज्जिअ (वि)

धातु संग्रह

कख—चाहना, वाछना
कप—कापना
कज्जलाव—डूबना
कडक्ख—कटाक्ष करना
कढ (क्वथ्)—उबालना, क्वाथ करना
कत्थ—श्लाघा करना, प्रशसा करना
कप्प (कृप्)—काम मे आना, कल्पना
कयत्थ—हैरान करना
कर—करना
कराल—फाडना, छेद करना

ण,त,थ,घ,न आदेश

नियम ३३६ (म्न-ज्ञोर्णः २।४२) म्न और ज्ञ को ण आदेश होता है।
म्न>ण—निम्न (निण्ण)। प्रद्युम्नः (पज्जुण्णो)
ज्ञ>ण—आज्ञा (आणा)। ज्ञान (णाण)। संज्ञा (सण्णा)
विज्ञान (विण्णाण)। प्रज्ञा (पण्णा)

नियम ३३७ (पञ्चाशत्-पञ्चदश-दत्ते २।४३) पञ्चाशत्, पञ्चदश और दत्त शब्द के सयुक्त को ण आदेश विकल्प से होता है।
ञ्च>ण—पञ्चाशत् (पण्णासा) पञ्चदश (पण्णरह)
त्त>ण—दत्त (दिण्ण)

नियम ३३८ (वृन्ते ण्टः २।३१) वृन्त शब्द के न्त को ण्ट आदे होता है।

न्त> ण्ट—वृन्त (वेण्ट) तालवृन्त (तालवेण्ट)

नियम ३३९ (कन्दरिका-भिन्दिपाले ण्डः २।३८) कन्दरिका और भिन्दिपाल के न्द को ण्ड आदेश होता है।

न्द> ण्ड—कन्दरिका (कण्डलिआ)। भिन्दिपाल. (भिण्डिवालो)।

नियम ३४० (सूक्ष्म-श्न-ष्ण-स्न-ह्न-ह्ण-क्ष्णां ण्हः २।७५) सूक्ष्म शब्द तथा श्न, ष्ण, स्न, ह्न, ह्ण और क्ष्ण को ण्ह आदेश होता है।

श्न> ण्ह—प्रश्नः (पण्हो)। शिश्नः (सिण्हो)

ष्ण> ण्ह—विष्णुः (विण्हू)। जिष्णु· (जिण्हू)। कृष्ण. (कण्हू)। उष्णीष (उण्हीस)

स्न> ण्ह—ज्योत्स्ना (जोण्हा) स्नात. (ण्हाओ) प्रस्नुत. (पण्हुओ)

ह्न> ण्ह—वह्निः (वण्ही) जह्नुः (जण्हू)

ह्ण> ण्ह—पूर्वाह्णः (पुव्वाण्हो) अपराह्ण· (अवरण्हो)

क्ष्ण> ण्ह—तीक्ष्ण (तिण्ह) श्लक्ष्ण (सण्ह)

क्ष्म> ण्ह—सूक्ष्म (सण्हं)

नियम ३४१ (धात्र्याम् २।८१) धात्री शब्द मे र का लुक् विकल्प से होता है।

त्र> त—धात्री (धत्ती)। ह्रस्व करने से पहले र का लोप करने से धाई बनेगा।

नियम ३४२ (स्तस्य थो समस्त-स्तम्बे २।४५) समस्त और स्तम्ब को छोडकर स्त को थ आदेश होता है।

स्त> थ—हस्त. (हत्थो) स्तुति· (थुई) स्तोत्रं (थोत्त) स्तोक (थोअ) प्रस्तर (पत्थरो) प्रशस्त. (पसत्थो) अस्ति (अत्थि) स्वस्ति. (सत्थि)

स्त> थ—स्तम्भः (थभो)। (नियम ३२६ से)

नियम ३४३ (स्तवे वा २।४६) स्तव शब्द के स्त को थ आदेश विकल्प से होता है।

स्त> थ—स्तव (थओ, तवो)

स्त> थ—पर्यस्तः (पल्लत्थो) (नियम ३२५ से)

त्स> थ—उत्साह. (उत्थारो, उच्छाहो) (नियम २८४ से)

नियम ३४४ (आश्लिष्टे ल-धौ २।४९) आश्लिष्ट शब्द के श्ल को ल तथा ष्ट को ध आदेश होता है।

ष्ट> ध—आश्लिष्ट (आलद्धो)

नियम ३४५ (मन्यौ न्तो वा २।४४) मन्यु शब्द के न्य को न्त आदेश

विकल्प से होता है।

न्य 7 न्त—मन्यु (मन्तू, मन्नू)

नियम ३४६ (चिन्हे न्धो वा २।५०) चिन्ह शब्द के न्ह को न्ध आदेश विकल्प से होता है।

न्ह 7 न्ध—चिन्ह (चिन्ध, इन्ध, चिण्ह)

नियम ३४७ (मध्याह्ने हः २।८४) मध्याह्न शब्द के ह का लुक् विकल्प से होता है।

ह्न 7 न—मध्याह्न (मज्झन्नो, मज्झण्हो)

प्रयोग वाक्य

दंतेहिं चव्विऊण (चबाकर) हरडईए भक्खणे उअराग्गी वड्ढइ। ज जाइफल णिद्ध, गुरु, सहं य करेइ त उत्तम भवइ। जाइवत्तिआ जाइफलस्स तया (त्वचा) चिअ भवइ। अजमो अरस (बवासीर) णामइ। ईसिगोलवुस नीरेण सह भुजिअव्व, सीयल भवइ। चोअ मुगधमय सुसाउ य भवइ। ईसिगोलो महुरो मलरोहगो य भवइ। एला रत्तपित्तणासिया भवइ। सुहुमेला सीयला होइ। घत्ती केसेसु नेत्तेसु य हियअरा अत्थि। वहेडओ अरस-पडिसायाइरोगेसु उवओगी होइ। मेथीवीयाण उवओगो चम्मस्स मिउत्तणट्ठ (मृदुता) भवइ। सुहुमेला सीयला भवइ। गोलोअणो अवमार (पागलपन) नस्सइ। सयपुप्फा भक्खणे सुक्ककासे (सूखी खासी मे) लाभअरा भवइ। तिफलाए नीरेण नेत्तजोई वड्ढइ। णागकेसरो कोढ णासइ।

धातु प्रयोग

अह किमवि न कखामि। तस्स नाममत्तेण सो कपइ। तुम नईइ कह कज्जलावीअ। पत्ती पइं कडक्खइ। माआ क कढइ? सो अप्पाण कत्थइ। इण वत्थु म कप्पइ। तुम मित्त कह कयत्थसि? मो कट्ठ करालेइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

आमला के खट्टेपन (खट्टत्तणेण) से वायु का नाश होता है। वहेडा मस्तिष्क के लिए हितकारी है। मेथी शोथ (सूणिओ) को दूर करती है। ईसबगोल मल को बाधता है। जायफल तृषा (तण्हा) और शूल (सूलो) को दूर करती है। जावित्री खासी और जडता को दूर करती है। छोटी ईलायची केलो के भारीपन को मिटाती है। भुनी हुई हर्रे त्रिदोष का नाश करती है। त्रिफला कफ, पित्त को नाश करने वाली तथा प्रमेह (महुमेहणी) को दूर करनेवाली है। अजवायन वमन (वमण) को दूर करती है। ईसबगोल की भुसी शीतल होती है। दालचीनी शरीर को सुदर करनेवाली है। इलायची पथरी (अस्सरी) को दूर करती है। सौंफ को पीसकर पीने से पेशाब की जलन मिटती है। गोरोचन उन्माद (उम्मायो) को दूर करता है। नागकेशर

रुधिररोग (रक्तरोगो) मे काम आता है।

धातु का प्रयोग करो

तुम मुझसे क्या सहयोग चाहते हो ? आवेग आने पर मनुष्य कापता है। जो तैरता है वही डूबता है। यह लडकी किसको ओर कटाक्ष करती है ? वह औषधियो का क्वाथ करता है पर जानता नही। अपनी प्रशसा मत करो। आपको क्या कल्पता है कृपाकर हमे बताओ। जो दूसरो को हैरान करता है वह स्वयं दुख पाता है। आकाश मे किस कारण से छेद होता है।

प्रश्न

१. ज्ञ को ण करनेवाला कौनसा नियम है ? उदाहरण देकर स्पष्ट करो।
२. ण्ह आदेश किन संयुक्त वर्णो को होता है ? नियम बताओ।
३ न्द, त्त, स्त, त्र और न्य संयुक्तवर्णो को क्या-क्या आदेश होता है ?
४ नीचे लिखे शब्दो मे इस पाठ के नियमो से क्या आदेश हुआ है ?
　चिन्धं, मज्झन्नो, आलद्धो, पल्लत्थो, ण्हाओ, धत्ती, वेण्ट, भिण्डिवालो।
५. आमला, हर्र, बहेडा, त्रिफला, मेथी, अजवायन, ईसबगोल, जायफल, जावित्री, दालचीनी, ईसबगोलभुसी, इलायची, सौफ, गोरोचन, छोटी इलायची—इन शब्दो के लिए प्राकृत शब्द बताओ।
६ कंख, कप, कज्जलाव, कडक्ख, कढ, कत्थ, कप्प, कयत्थ और कराल धातुओं के अर्थ बताओ और उन्हे वाक्य मे प्रयोग करो।

संयुक्त व्यंजन परिवर्तन (५)

शब्द संग्रह (धान्य वर्ग १)

मूग—मुग्गो
उडद—मासो
जौ—जवो
मोठ—वणमुग्गो, मकुट्ठो (स)
मक्का—मकायो, महाकायो (स)
मटर—कलायो
खेसारी—तिपुडो (स)

चना—चणओ, चणो
बाजरा—वज्जरी (स)
कुलथी—कुलत्थो, कुलमासो
साठीधान—साली
चवला—आलिसंदो
सावा—सामयो (स)
शरबीज—चारुगो (स)

० ० ० ०

पापड—पप्पडो

पोला—पोल (दे०)
पदार्थ—पयत्थो

धातु संग्रह

कल—संख्या करना, गिनना
कव (कु) आवाज करना
कढ़ (क्वथ्) उबालना
कास—कासना, खासी की आवाज करना
कुच्छ—धिक्कारना, निंदा करना

किड्ड (क्रीड्) खेलना, क्रीडा करना
किर—फेंकना, बिखेरना
किलिस—थक जाना
कीण—खरीदना

प, फ, ब, भ, म आदेश—

नियम ३४८ (ड्म-क्मो २।५२) ड्म और क्म को प आदेश होता है।

ड्म>प—कुड्मलं (कुम्पलं)
क्म>प—रुक्मिणी (रुप्पिणी)। रुक्मी (रुप्पी)।
क्म>प—(क्वचित् च्मोपि) रुक्मी (रुच्मी, रुप्पी)

नियम ३४९ (भस्मात्मनोः पो वा २।५१) भस्मन् और आत्मन् शब्दो के संयुक्त को प आदेश विकल्प से होता है।

स्म>प—भस्म (भप्पो, भस्सो)।
त्म>प—आत्मा (अप्पा, अत्ता)
(क्वचिन्न भवति)
ष्प>प—निष्प्रभ (निप्पहो)। निष्पुंसन (निप्पुंसणं)
स्प>प—परस्परं (परोप्परं)

(बहुलाधिकारात् क्वचिद् विकल्पः)

स्प>प—बृहस्पति (बुहप्पई, विहप्पई)

(बहुलाधिकारात् क्वचिदन्यदपि)

स्प>प—निस्पृह. (निप्पिहो)

नियम ३५० (ष्पस्पयोः फः २।५३) ष्प और स्प को फ आदेश होता है।

ष्प>फ—पुष्प (पुप्फ)। शष्पम् (सप्फ)। निष्पेष (निप्फेसो)। निष्पाव (निप्फावो)।

स्प>फ—स्पन्दनम् (फन्दण)। प्रतिस्पर्धी (पाडिप्फद्धी, पडिप्फद्धी) प्रतिस्पर्धा (पडिप्फद्धा)। स्पन्दते (फंदए)। वनस्पति. (वणप्फई) स्पर्धते (फदए)। बृहस्पतिः (बुहप्फइ, विहप्फई)।

नियम ३५१ (भीष्मे ष्मः २।५४) भीष्म शब्द के ष्म को फ आदेश होता है।

ष्म>फ—भीष्म (भिप्फो)

नियम ३५२ (श्लेष्मणि वा २।५५) श्लेष्म शब्द के ष्म को फ आदेश विकल्प से होता है।

ष्म>फ—श्लेष्मा (सेफो, सिलिम्हो)

नियम ३५३ (ह्वो भो वा २।५७) ह्व को भ आदेश विकल्प से होता है।

ह्व>भ—जिह्वा (जिब्भा, जीहा)

नियम ३५४ (वा विह्वले वौ वश्च २।५८) विह्वल शब्द के ह्व को भ आदेश विकल्प से होता है। उसके योग मे वि शब्द के व को भ आदेश विकल्प से होता है।

ह्व>व, भ—विह्वल (भिब्भलो, विब्भलो, विहलो)

नियम ३५५ (वोर्ध्वे २।५९) ऊर्ध्व शब्द के ध्व को भ आदेश विकल्प से होता है।

ध्व>भ—ऊर्ध्वं (उब्भ, उद्ध)

नियम ३५६ (ग्मो वा २।६२) ग्म को म आदेश विकल्प से होता है।

ग्म>म—युग्म (जुम्म, जुग्ग)। तिग्म (तिम्म, तिग्ग)

नियम ३५७ (न्मो मः २।६१) न्म को म आदेश होता है। (अध के लोप का अपवाद है)

न्म>म—जन्म (जम्मो)। मन्मथः (वम्महो)। मन्मनं (मम्मण)

नियम ३५८ (ताम्राम्रे म्बः २।५६) ताम्र और आम्र के म्र को म्ब आदेश होता है।

म्र>म्ब—ताम्र (तम्ब) आम्र (अम्ब)

नियम ३५९ (कश्मीरे म्भो वा २।६०) कश्मीर शब्द के श्म को म्भ आदेश विकल्प से होता है।

श्म 7 म्भ—कश्मीरा (कम्भारा, कम्हारा)

नियम ३६० (पक्ष्म श्म-ष्म-स्म-ह्मां-म्हः २।७४) श्म, ष्म, स्म, ह्म तथा पक्ष्म शब्द के क्ष्म को म्ह आदेश होता है।

श्म 7 म्ह—कुश्मान (कुम्हाणो)। कश्मीरा (कम्हारा)

ष्म 7 म्ह—ग्रीष्म (गिम्हो)। ऊष्मा (उम्हा)

स्म 7 म्ह—अस्मादृश (अम्हारिसो)। विस्मय. (विम्हओ)

ह्म 7 म्ह—ब्रह्मा (बम्हा)। सुह्मा (सुम्हा)। ब्राह्मण (बम्हणो)

क्ष्म 7 म्ह—पक्ष्म (पम्हाइ)

(क्वचित् म्भो पि)

ह्म 7 म्भ—ब्राह्मण. (बम्भणो)। ब्रह्मचर्य (बम्भचेर)

ष्म 7 म्भ—श्लेष्मा (सिम्भो)

प्रयोग वाक्य

मुग्गस्स पप्पडो भवइ। मासम्स दालीए वडगाइ पोल्लाइ भवंति। चणस्स रुट्टिअ दहिणा सह भुजति पुरिसा। घयसक्करासजुत्त वज्जरिं को न अहिलसइ सीयकाले? जवस्स तिण्णि भेया संति। मकुट्ठो मलरोहगो भवइ। कलायो मलावरोहग णस्सइ। कुलत्थो भारहवासे पाओ सव्वत्थ मिलइ। वगदेसे दक्खिणदेसे य साली पहाण भोयण भवइ। आलिसदस्स मंयावो अज्ज मए भुत्तो। सामयष्णण्णं निद्धणा चिअ खाअंति। तिपुडवीयेसु विसपयत्थो भवइ। चाणगो महुरो सीयलो य भवइ।

धातु संग्रह

अह पायवा कलामि। गिहे को कवइ? माआ अज्ज निवपत्ताइ कहिस्सइ। जो दहिं भुजइ सो अहिय कासइ। जो नरा मारइ तं सव्वे कुच्छंति। अत्थ बाला सया किड्डंति। पयजत्त विणा सा कह किलिसिसु। उवालभ सुणिऊण वि सो न किलेसइ। तुम कम्स उट्टं कीणसि? लवणरहिय-सागस्स एग कवल भक्खिऊण सो कोवेण थाल किरिंसु।

प्राकृत में अनुवाद करो

मूग की दाल रोगी के लिए लाभदायक होती है। मेवाडवासी बाटी के साथ उडद की दाल खाते हैं। हम लोग प्राय चने के आटे (बेसण) की कढी (कढिआ) खाते हैं। बाजरा मरुभूमि का प्रमुख भोजन है। मक्का की रोटी घी सहित खाने से गर्मी दूर होती है। साठी धान्य धनवान् खाते है। हैं। मैंने कभी चवला की रोटी नही खाई। मोठ शीतल, कृमिजनक (किमी-जणयो) और ज्वर नाशक होता है। कुलथी धान्य का प्रयोग समय-समय पर

होता है। सावो धान्य वर्षा के प्रारंभ मे बोते (वपइ) हैं। जौ रूखा, शीतल और मलरोधक होता है। खेसारी की दाल खाने से लकवा (पक्खाघायो) जैसा रोग होता है। शग्वीज रक्त पित्त और कफ को नाश करता है।

धातु का प्रयोग करो

वह बालकों को गिनता है। घर के बाहर कौन आवाज करता है? तुम जो कुछ कहते हो वह सत्य है। मेरा दादा खासता है। राजा ने चोर को बहुत धिक्कारा। बच्चे घर के आगन मे खेलते हैं। बच्चे ने क्रोध मे मिठाई को बिखेर दिया। आज वह पदयात्रा मे थक गया। तुम व्यर्थ मे क्लेश क्यो पाते हो? तुम बाजार मे वस्त्र खरीदते थे।

प्रश्न

१. ड्म, न्म, श्म, ह्व, स्प — इन सयुक्तवर्णो को किस नियम से क्या आदेश होता है? उदाहरण सहित बताओ।

२ नीचे लिखे शब्दो मे किस सयुक्त वर्ण को क्या आदेश हुआ है? विम्हओ, सुम्हा, सिम्भो, वम्महो, जिब्भा भिप्फो, सप्फ, भप्पो।

३. श्म, स्म और ष्म—इन सयुक्तवर्णो को किस नियम से सामान्य रूप मे क्या आदेश होता है और शब्द विशेष मे क्या आदेश होता है?

४ मूग, उडद, जौ, मोठ, मक्का, मटर, चना, बाजरा, कुलथी, साठीधान, चवला, सावा, खेसरी, शरबीज धान्य के लिए प्राकृत शब्द बताओ।

५. कल, कव, कह, कास, कुच्छ, किड्ड, किर, किलिस, किलेस और कीण धातुओ के अर्थ लिखो और उन्हे वाक्य मे प्रयोग करो।

६. रत्तालु, गिजण, सोत्थिओ, वासओ, सुठी, पउमा, अजमो, अभया और सयपुप्फा—इन शब्दो को वाक्य मे प्रयोग करो तथा हिन्दी मे अर्थ बताओ।

४७ संयुक्त व्यंजन परिवर्तन (६)

शब्द संग्रह (धान्य वर्ग २)

चावल—तण्डुलो
गेहूं—गोहूमो
अरहर—आढकी
मसूर—मसूरो
ज्वार—जुआरी (दे)
तीसी—अलसी
सरसों—सस्सपो
कागन—कगू (स्त्री)
कोदो—कुद्दवो
कुसुंभ—लट्टा
राई—राई (स्त्री) राइगा
तीनी—णीवारो
बांस के बीज—वसजवो (स)
गरहेडुआ—गवेधुआ (सं)

चर्बी—मेओ
अस्थि—अत्थि (न)

धातु का प्रयोग

उप्फाले—उठाना, उखाडना
कुल्ल—कूदना
उप्फिड—मेढक की तरह कूदना
खअ—नष्ट होना
उप्फुस—सीचना, छिडकना
कूड—झूठा ठहरना, अन्यथा करना
किलेस—हैरान होना
खउर—डर मे विह्वल होना
कूण—सकुचित होना
खअर—संपत्ति युक्त होना

र, ल, स, ह आदेश—

नियम ३६१ (ब्रह्मचर्य-तूर्य-सौन्दर्य-शौण्डीर्ये र्यो रः २।६३) ब्रह्मचर्य, तूर्य, सौन्दर्य और शौण्डीर्य शब्दो के र्य को र आदेश होता है।

र्य7र—बम्हचेर (ब्रह्मचर्यम्) तूरं (तूर्यम्) सुदेर (सौन्दर्यम्) सोण्डीर (शौण्डीर्यम्)।

नियम ३६२ (धैर्ये वा २।६४) धैर्य शब्द के र्य को र विकल्प से होता है।

र्य7र—धीर (धैर्यम्) धिज्ज।

नियम ३६३ (एतः पर्यन्ते २।६५) पर्यन्त शब्द के एकार से परे र्य को र होता है।

र्य7र—पेरतो (पर्यन्त.)।

नियम ३६४ (आश्चर्ये २।६६) आश्चर्य शब्द के एकार से परे र्य को र होता है।

कयाइ चेअ जणा भुजति। अज्जत्ता गोहूमो किं सव्वसुलहो अत्थि ? मसूराण दाली भवइ। लट्टाधण्ण कत्थ उप्पज्जइ ? अलसीए तेल्ल जाअइ। कंगू तुडियत्थीण जुजिउं समत्था अत्थि। राई वि धण्णाणं एगो भेयो अत्थि। णीवारधण्ण णिद्धणा चिअ खाअंति। वंसजवो रुक्खो सीयलो य होइ। गवेधुआए रुट्टिआओ भक्खणेण मेओ (चर्वी) अप्पो भवइ। अलसीए तेल्ल जाअइ। लट्टाए पत्ताण सागो पडिसाये रोगे लाभअरो होइ।

धातु प्रयोग

सो अक्कमूल उप्फालेइ। तस्स पुत्तो उप्फिडतो गच्छइ। मालागारो उज्जाण उप्फुसइ। तस्स कज्ज किमवि न सिज्झिसु। केवल नयरे भमणेण सो किलेसइ। तुम सयणत्तो तलायम्मि कुल्लीअ। अह धम्मज्झाणेण कम्माइं खआमि। काओ कारणाओ तुम कूडेसि ? पुत्तवहू ससुर पासिऊण कूणइ। आयरिअस्स उवालभेण सो खउरइ। अमुम्मि वरिसम्मि अन्नस्स पउरेण सो खमरइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

चावल बगाल मे अधिक पैदा होता है। चावल सफेद रग का धान है उसके साथ अरहर की दाल का मेल करने से वायु कम बनती है। ६० वर्ष पहले मरुस्थल मे गेहू का फुलका केवल पुरुषो के लिए बनता था। मसूर बहुत कम लोग खाते हैं। सरसो का तेल निकाला जाता है। कुसुभ के बीजो मे तैल पाया जाता है। ज्वार शीतल, रूक्ष और पित्त को नष्ट करता है। कागन (कगुनी) बारह ही मासो मे सब जगह मिलता है। कोदो तृण जाति का धान्य है। तीनी तालाब या जलीय भूमि पर फैला हुआ मिलता है। बास का बीज वातपित्तकारक, कफनाशक और मूत्ररोधक होता है। गरहेडुवा बगाल मे चावल के खेतो मे होता है। बहिने कढी मे राई का सस्कार देती हैं।

धातु का प्रयोग करो

गाय घास को जड से नही उखाडती है। स्कूल के बच्चे मेढक की तरह क्यो कूदते है ? राष्ट्रपति (रट्ठवई) अपने बाग को प्रतिदिन स्वय सीचता है। वह पैदल चलने से हैरान हो गया। जो अपनी प्रशसा सुनकर सकुचित होता है वह महान् है। वह वृक्ष से कूदता है। उसने गलत बात कही इसलिए वह झूठा हो गया। वीतरागी के चार घनघाती कर्म नष्ट हो जाते हैं। पिशाच (पिसायो) का नाम सुनकर वह डर से विह्वल हो गया। इस वर्ष लोह के व्यापार ने व्यापारियो को धन मे समृद्ध बना दिया।

प्रश्न

१. र्य को क्या आदेश होता है। प्रत्येक नियम का एक-एक उदाहरण दो।

शब्द संग्रह (फल वर्ग १)

आम—अंबं, सहआरफल
अमरूद—पेरुओ (स)
केला—कयलो
नारंगी—णारगो
कमरख—कम्मरगो (सं)
कपित्थ—कविट्ठो
सहतूत—तूओ, तूलो (स)
पीलु—पीलु (पु)
वडहर—लउचो, एरावयो

बेल—बेलयो
तरबूज—कालिंगो
खरबूजा—खब्बूयं, दसंगुलं (सं)
कटहल—पणसो
अनार—दाडिमं
सेव—सेवं (सं)
अनानास—अणंणासं
जामुन—जंबूओ, जंबूगो, जबू (स्त्री)
नाशपती—अमियफलं (सं)

o——————o——————o

पुष्टिवाला—पुट्ठिम (वि०)
कब्ज—मलावरोहो

खट्टा—खट्टं (दे०)
तंत्र—तंत
पुराना—पुराअणं

धातु संग्रह

खच—पवित्र होना
खर—झरना, टपकना
खरड—लीपना, पोतना
खल—पडना, भूलना, रुकना

खुभ—क्षुब्ध होना
खिंस—निंदा करना
खुम्म—भूख लगना
गल—गलना, सडना

नियम ३७३ (स्तोकस्य थोक्क-थोव-थेवाः २।१२५) स्तोक शब्द को थोक्क, थोव, थेव—ये तीन आदेश विकल्प से होते हैं। स्तोकं (थोक्कं, थोवं, थेवं, थोअं)।

नियम ३७४ (दुहितृ-भगिन्यो धूआ-वहिण्यौ २।१२६) दुहितृ को धूआ और भगिनी को वहिणी आदेश विकल्प से होता है। दुहितृ (धूआ, दुहिआ)। भगिनी (वहिणी, भइणी)।

नियम ३७५ (वृक्ष-क्षिप्तयो रुक्ख-छूढौ २।१२७) वृक्ष और क्षिप्त शब्द को क्रमश रुक्ख और छूढ आदेश विकल्प से होता है। वृक्षः (रुक्खो, वच्छो)। क्षिप्तं (छूढं, खित्तं)।

नियम ३७६ (वनिताया विलया २।१२८) वनिता शब्द को विलया

नियम ३८८ (बहिसो बाहिं-बाहिरौ २।१४०) बहिस् शब्द को बाहिं और बाहिर आदेश होता है। बहि (बाहिं, बाहिर)।

नियम ३८९ (अधसो हेट्ठं २।१४१) अधस् शब्द को हेट्ठ आदेश होता है। अध. (हेट्ठं)।

नियम ३९० (मातृ-पितुः स्वसु सिआ-छौ २।१४२) मातृ और पितृ शब्द के आगे स्वसृ शब्द को सिआ और छा आदेश होता है। मातृस्वसा (माउसिआ, माउच्छा)। पितृस्वसा (पिउसिआ, पिउच्छा)।

नियम ३९१ (तिर्यचस्तिरिच्छि २।१४३) तिर्यच् शब्द को तिरिच्छि आदेश होता है। तिर्यक् (तिरिच्छि)। तिरिच्छि पेक्खइ। आर्ष में तिरिआ भी होती है।

नियम ३९२ (गृहस्य घरोपतौ २।१४४) गृह शब्द को घर आदेश होता है, यदि पति शब्द परे न हो तो। गृह (घरो)। घरसामी (गृहस्वामी) रायहर (राजगृहम्)।

नियम ३९३ (अतो रिआर-रिज्ज-रीअ ७।६७) आश्चर्य शब्द मे अकार से परे र्य को रिअ, अर, रिज्ज और रीअ ये चार आदेश होते हैं। आश्चर्यम् (अच्छरिअ, अच्छअर, अच्छरिज्ज, अच्छरीअ)।

प्रयोग वाक्य

फलेमु अवो निवो भवइ। पेरुओ मलावरोहस्स णासणाय पढम ओसह विज्जइ। कयलो महुरो पुट्ठिमो भवइ। नारगस्स रसो गरिट्ठो भवइ। कम्मरगस्स रुक्खो अइसुदरो होइ। कविट्ठफल खट्ट हुवइ। तूअस्स कल सिव (फली) व्व भवइ। मए अणगहा पीलू भुत्तो। लउचस्स रुक्खा उड्ढगामिणो भवति। वेलस्स पत्तरमस्स पओगो सुवण्णणिम्माणे होइ। कालिंगी किण्हवीया भवइ। खव्वूय गुणेण सीयल मलसुद्धिकारय होइ। पणसो गरिट्ठो विज्जइ। दाडिमस्स तिण्णि भेया सति। सेव पुराअण नत्थि। अणणास पुरा भारहवाने नासि। जवूए पत्ताणि अव सरिक्खाणि भवति। अमियफल खट्ट रुइयर य भवइ।

धातु प्रयोग

सो दड गहिऊण अप्पाण खचइ। तस्स णासाहिंतो नीर खरइ। मुवेणयणा घरगण खरडिहिइ। जो आस आरुहइ सो खलइ। समुद्दम्मि पत्थर खेवणेण नीर खुब्भइ। जो दहिं भुजइ सो खासइ। जो अप्पाण खिसइ सो अण्णे न खिसइ। अज्ज अह खुम्मीअ। रायसगहालये अण्ण गलइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

आम हमारे देश से बाहर भी जाता है। अमरूद कच्चा भी मीठा होता है। पक्का केला प्रकृति के घर का हलुआ है। नारगी नागपुर की प्रसिद्ध है।

कमरख के फल पर चार या पाच धार (रेखा) होती है। कपित्थ के फल बेल से छोटे होते है। सहतूत खाने मे बहुत मीठा होता है। पीलु हमारे गाव मे बहुत होता है। बड़हर के वृक्ष प्राय. बागो में देखे जाते हैं। बेल के पत्ते शिव मदिर मे शिव को चढाते हैं। तरबूज भीतर से लाल रग का होता है। कटहल बंगाल और दक्षिण प्रदेशों मे बहुत मिलती है। अनार का फल वायु-नाशक होता है। सेब कश्मीर का बहुत मीठा होता है। अनानास के फल को काटकर खाना भी एक कला है। जामुन का रस दवा मे काम आता है। नाशपाती के वृक्ष इस प्रदेश मे कहा होते हैं?

धातु का प्रयोग करो

पाप का प्रायश्चित्त करने वाला पवित्र होता है। छत से वर्षा का पानी टपकता है। पर्व के दिनो मे दक्षिण प्रदेशो मे घर के आगन को पोतते है। अभ्यास करने वाला गिरता भी है। उसके एक शब्द ने सारे घर को क्षुब्ध कर दिया। सज्जन पुरुष किसी की निंदा नही करते हैं। बुढापे मे आदमी अधिक खासता है। शारीरिक श्रम से भूख अधिक लगती है। कई दिनो तक फल खुले रहने से सड़ने लगते हैं।

प्रश्न

१. नीचे लिखे शब्दो को किस नियम से क्या आदेश होता है?
स्तोक, अस्त्रं, बृहस्पति., छुप्त., स्त्री और मार्जार।

२. नीचे लिखे शब्दो मे किस नियम से क्या आदेश हुआ है?
धूआ, कूर, दिहि, बहिणी, वेरुलिअं, पुरिमं, बाहिं, हेट्ठं, माउच्छा, अवह, सिप्पी, तिरिच्छि।

३. आम, नाशपाती, अमरूद, केला, नारगी, कमरख, कपित्थ, सहतूत, पीलु, बड़हर, बेल, तरबूज, खरबूजा, कटहल, अनार, सेब, अनानास, जामुन—इन शब्दो के लिए प्राकृत शब्द बताओ।

४. खच, खण, खर, खरड, खल, क्षुभ, खिस, खास, खुम्म और गल धातुओ के अर्थ बताओ और उन्हे वाक्य मे प्रयोग करो।

शब्द संग्रह (फल वर्ग २)

पतीता—महुकक्कडी (स)
इमली—चिंचा, कुट्ठा
खज्जूर—खज्जूरो
अगूर—दक्खा
विजौरा—माहुलिगो
फालसा—अप्पट्ठि (स)
सुपारी—पोप्फल
खुमानी—खुमाणी (स)
सिंघाडा—सिंघाडयो, सिंघाडग
अखरोट—अक्खोडवीय
मुनक्का—गोत्थणी (स)
बेर—बोरं
आलुबुखारा—आरुय (स)
बदाम—वायायो नेत्तोवमफलं
नारियल—णारिएलो
नीब का फल—णिंबोलिया
मौसबी (मौसबी) मौसंबी
अजीर—काउंबरी
काजू—काजूअगो (स)
पिस्ता—णिकायगो (स)
तालमखाना—कोडलक्खी (त्रि.)
किसमिस—अवीया, ईसिवीया (स)

ग्रास—गासो
व्याकरण—वागरण
गलना—गलणं
स्वाद—साओ

धातु संग्रह

विअक्क—विमर्श करना
विअक्ख—देखना
गस—खाना, निगलना
गाअ—गाना
गाल—छानना
गुड—नियंत्रण करना
गिज्झ—आसक्त होना
गुठ—धूसरित होना, धूलि के रंग का होना
गुण—गुनना, याद करना
गुड—हाथी के कवच आदि मे सजाना
गुट—नियंत्रण करना

संयुक्तवर्णों का लोप—

सयुक्त व्यंजनो मे पहले वर्ण को ऊर्ध्व और दूसरे को अधो कहते हैं। दूसरे शब्दो मे पहले वर्ण को पूर्ववर्ती और दूसरे को उत्तरवर्ती भी कह सकते हैं।

नियम ३६४ (क-ग-ट-ड-त-द-प-श-ष-स क⁀पा मूर्ध्वं लुक् २।७७) सयुक्त वर्णों मे क, ग, ट, ड आदि ऊर्ध्व हो तो उनका लुक् होता है।

क— भुक्तं (भुत्त)। मुक्त (मुत्त)। सिक्थं (सित्थं)।

द्वार का वार और दार दोनो रूप मिलते हैं।

नियम ३९७ (द्रे रो न वा २।८०) द्र शब्द के र का लुक् विकल्प से होता है।

द्र > द—चन्द्र (चन्दो, चन्द्रो)। समुद्र (समुद्दो, समुद्रो)। रुद्र (रुद्दो, रुद्रो। भद्र (भद्दो, भद्रो)।

नियम ३९८ (ज्ञो ञः २।८३) ज्ञ शब्द मे ञ का लुक् विकल्प से होता है। ज्ञ शब्द ज और ञ के सयोग से बना है। ञ का लोप होने के बाद ज शेष रहता है।

ज्ञ 7 ज—ज्ञान (जाणं, णाणं)। सर्वज्ञ (सव्वज्जो, सव्वण्णो)। अल्पज्ञः (अप्पज्जो, अप्पण्णू)। दैवज्ञ (दइवज्जो, दइवण्णू)। इंगितज्ञ. (इङ्गिअज्जो, इङ्गिअण्णू)। मनोज्ञ. (मणोज्ज, मणोण्ण)। अभिज्ञः (अहिज्जो, अहिण्णू)। प्रज्ञा (पज्जा, पण्णा)। आज्ञा (अज्जा, आणा)। सज्ञा (सज्जा, सण्णा)।

(नोणः १।२२८ और वादौ १।२२९) से न का ण हुआ है।

त्र 7 त—(नियम ३४१ से) धात्री—धत्ती (र का लुक् विकल्प से)

नियम ३९९ (तीक्ष्णे णः २।८२) तीक्ष्ण शब्द मे ण का लुक् विकल्प से होता है।

क्ष्ण 7 ख—तीक्ष्ण (तिक्ख, तिण्ह)।

(नियम ३४७ से ह का लुक् विकल्प से) मध्याह्नः (मज्झण्णो, मज्झण्हो)।

नियम ४०० (रात्रौ वा २।८८) रात्रि शब्द मे सयुक्त का लुक् विकल्प से होता है।

त्रि 7 इ—रात्रि (राई, रत्ती)।

नियम ४०१ (दशार्हे २।८५) दशार्ह शब्द मे ह का लुक् होता है।

र्ह 7 र—दशार्ह. (दसारो)।

नियम ४०२ (श्चो हरिश्चन्द्रे २।८७) हरिश्चन्द्र शब्द मे श्च का लुक् होता है।

श्च 7 लुक्—हरिश्चन्द्र. (हरिअन्दो)।

नियम ४०३ (आदेः श्मश्रु-श्मसाने २।८६) श्मश्रु और श्मसान शब्दो के आदि श् का लुक् होता है।

श्म > म—श्मश्रु (मासू, मसु, मस्सु)। श्मसान (मसाणं)।

प्रयोग वाक्य

महुकक्कडी मेवाडदेसम्मि वि भवइ। अज्ज मए चिंचाए पाणिअं पीअं। खज्जूरो अइमहुरो भवइ। ओरंगावायस्स दक्खा रत्ता सुसाऊ य

भवंति। माहुलिंगस्स रुक्खा सया हरिअपुण्णा (हरे भरे) चिट्ठंति। अप्प-ट्ठिणो साओ खट्टो महुरो य भवइ। आयरियतुलसीहिं पोप्फलस्स साओ न चक्खिओ। मज्झ खुमाणी रोअइ। अक्खोडवीयं केऽ लोआ कहं न खाअंति। दक्खिणपएसवासिणो अवीया वहु भुजंति। गंगे गोत्थणी वहु लाभअरा भवइ। णिकायगस्स वण्णो हरियचणव्व हरिओ भवइ। काजूअगा मासम्मि महुरा एव भवंति। काउ वग्गीए बहुवीयाणि भवंति। सिघाडया तलायम्मि भवंति। धणि-परिवारे विवाहम्मि वायायाण मिट्ठान्न भवइ। वालत्तम्मि बोर मए वहु भुत्त। नारिएलस्स नीर ओसहरूवेण पिज्जइ। णिबोलिया फग्गुणमासे चित्तमासे य हवइ। धणंजयस्स आरुय रोयइ। मद्दास (मद्रास) णयरस्स मोसवी पीअवण्णा महुरा य भवइ। विहारपएसवासिणो कोइलक्खि वहु खाअंति।

धातु प्रयोग

वट्टमाणकाले साहुणो पयजत्तं विअक्कंति। तुम अत्थ किं विअक्कसि ? भगवंतस्स महावीरस्स णिव्वाणदिवसे साहुणीओ गीइय गाअंति। गिहत्थस्स घरे सलिल गिण्हंता नीरं गालंति। सो रुवे गिज्झइ। मरुम्मि वालो धूलिम्मि खेलंतो गुठइ। सो आस गुडेइ। तुम इदियाइ गुडेसि। सो वागरण गुणइ। नो वसतस्स हत्थत्तो एग गाम गसइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

पपीता अतिमात्रा मे खाने से मूत्र का अवरोध होता है। रात भर भीगी इमली और गुड का पानी पीने से रक्त शुद्धि होती है। खज्जूर पर मक्खिया क्यो वैठती है ? दौलतावाद के अगूर विदेश भेजे जाते हैं। किसमिस अगूर का सूखा फल है। खासी और पेशाव की जलन में मुनक्का का उपयोग करते हैं। अखरोट गुण मे वादाम के सदृश होता है। काजू विदेशो मे वहुत जाता है। पिस्ता सब लोग नही खा सकते। अजीर से पेट की शुद्धि होती है, इसमे अनेक बीज होते हैं। वादाम खाने से बुद्धि बढती है। बिजौरा के छिलके (छोओ) मे सुगधित तेल होता है जिसे सिट्रोन तेल कहते हैं। फालसा तुलसी वहन को वहुत प्रिय है। तुम दिन भर सुपारी क्यो खाते हो ? हम सब खुमानी खाना चाहते हैं। सिघाडा बाजार मे अभी नही है। वेर के तीन प्रकार हैं। आलुबुखारा हमारे गांव मे नही मिलता है। किस प्रसन्नता मे तुम नारियल बांट रहे हो ? अच्छा वादाम वहुत महंगा है। नीव का फल हर कोई नही खा सकता। मैं मौसंवी का रस दोपहर में प्रतिदिन पीता हू। मेरे भाई ने मेरे लिए तालमखाना भेजे हैं।

धातु का प्रयोग करो

वडा काम करने से पहले वडो से विमर्श करना चाहिए। भगवान सबको देखता है। पुरुष ३२ ग्रास खाता है। उसने मधुर गीत गाया। अहिंसक

गलने से पानी छानकर काम मे लेता है। क्या तुम दूध मे आसक्त हो ? तुम्हारा लडका धूसरित क्यो होता है ? कवच आदि से सजे हुए हाथी पर राजा आरूढ हुआ। वह घोडे को नियंत्रित करता है। वह कौन सा पाठ याद करता है ?

प्रश्न

१ किन वर्णों का ऊर्ध्व होने से लोप होता है ? उदाहरण दो ?

२. किन वर्णों का अधो होने पर लोप होता है ?

३ जहा दो व्यजनो का एक साथ लोप करने का प्रसग आए वहा क्या करना चाहिए।

४ किस सयुक्त शब्द मे किस वर्ण का लोप हुआ है। उदाहरण सहित बताओ ?

५ पपीता, इमली, खज्जूर, अगूर, बिजौरा, फालसा, सुपारी, सिंघाडा, बेर, नारियल, आलुबुखारा, मौसबी, तालमखाना, अजीर, बादाम, काजू, पिस्ता, किसमिस, मुनक्का, अखरोट, खुमानी—इन शब्दो के लिए प्राकृत शब्द बताओ।

६ विअक्क, विअक्ख, गस, गाअ, गाल, गिज्झ, गुठ, गुण, गुड इनके अर्थ बताओ और वाक्य मे प्रयोग करो।

७. अलिसदो, वणमुग्गो, कलायो, गोधूमो, जुआरी, आढकी, पणसो, णारंगो, पेरुओ शब्दो को वाक्य मे प्रयोग करो तथा हिन्दी मे अर्थ बताओ।

शब्द संग्रह (वृक्ष वर्ग)

पीपल—अस्सत्थो
बरगद—वडो
अशोक—असोयो
बबूल—बब्बूलो
मौलसिरी—बउलो
चंदन—चंदणो
नीम—णिंबो
पीलु—पीलू (पु.)
बांस—वंसो
चिरौंजी—पिआलो

टहनी—डाली
वंशलोचन—वंसरोयणा
अपराधी—अवराहिल्लो

धातु संग्रह

गुमगुम—मधुर अव्यक्त ध्वनि करना।
गुभ—गूथना
गोव—छिपाना
घत्त—ग्रहण करना
घुरुक्क—घुडकना, गरजना
घस—रगडना, घिसना
विअंभ—जंभाई खाना
विअट—प्रकट होना
विअप्प—संशय करना

स्वरभक्ति—

संयुक्त व्यंजन में एक व्यंजन य, र, ल, व और ह हो या अनुनासिक हो उन्हें अ, इ, ई और उ में से किसी एक स्वर का आगम कर संयुक्त व्यंजन को सरल बना दिया जाता है, उसे स्वरभक्ति, विप्रकर्ष, विश्लेष या स्वरविक्षेप कहते हैं।

अ का आगम—

नियम ४०४ (स्नेहाग्न्योर्वा २।१०२) स्नेह और अग्नि शब्द में अन्त्य व्यंजन से पूर्व अकार का आगम विकल्प से होता है।
स्न>सण—स्नेह: (सणेहो, नेहो)।
ग्न>गण—अग्नि: (अग्गी)।

नियम ४०५ (शार्ङ्गे ङात् पूर्वोत् २।१००) शार्ङ्ग शब्द में ङ से पूर्व अकार का आगम होता है।
र्ङ>रङ्ग—शार्ङ्गः (सारङ्गो)।

नियम ४०६ (क्ष्मा-श्लाघा-रत्नेन्त्यव्यञ्जनात् २।१०१) क्ष्मा श्लाघा और रत्न इन तीन शब्दो मे अन्त्य व्यंजन से पूर्व अकार का आगम होता है।
क्ष्म 7 छम—क्ष्मा (छमा)।
श्ला > सला—श्लाघा (सलाहा)।
त्न > तन—रत्न (रयण)।

नियम ४०७ (प्लक्षे लात् २।१०३) प्लक्ष शब्द मे अन्त्य व्यंजन से पूर्व अकार का आगम होता है।
प्ल 7 पल—प्लक्ष: (पलक्खो)।

अ और इ का आगम—

नियम ४०८ (स्निग्धे वादितौ २।१०९) स्निग्ध शब्द में नकार से पहले अकार और इकार का आगम विकल्प से होता है।
स्न > सणि, सिणि—स्निग्धं (सणिद्धं, सिणिद्धं, निद्धं)।

नियम ४०९ (कृष्णवर्णे वा २।११०) कृष्ण शब्द वर्ण अर्थ मे हो तो न से पहले अकार और इकार का आगम विकल्प से होता है।
ष्ण 7 सण, सिण—कृष्ण. (कसणो, कसिणो, कण्हो)।

नियम ४१० (उच्चार्हति २।१११) अर्हत् शब्द मे सयुक्त के अन्त्य व्यजन से पहले अकार, इकार और उकार का आगम विकल्प से होता है।
र्ह 7 रह, रिह, रुह—अर्हत् (अरहो, अरिहो, अरुहो)।

इकार का आगम—

नियम ४११ (र्हं-श्री-ह्री-कृत्स्न-क्रिया-दिष्ट्यास्वित् २।१०४) इन शब्दो मे सयुक्त व्यजन के अन्त्य व्यजन से पूर्व इकार का आगम होता है।
र्ह 7 रिह—अर्हति (अरिहइ)। अर्हा (अरिहा)। गर्हा (गरिहा)। वर्ह:—(वरिहो)।
श्र > सिर—श्री (सिरी)।
ह्र 7 हिर—ह्री. (हिरी)। ह्रीत. (हिरिओ)। अह्रीक· (अहिरिओ)।
स्न 7 सिण—कृत्स्न. (कसिणो)।
क्र 7 किर—क्रिया (किरिआ)।

नियम ४१२ (लात् २।१०६) संयुक्त शब्द मे अन्त्य व्यंजन ल से पहले इ का आगम होता है। क्लिन्नं (किलिन्नं) क्लिष्टं (किलिट्ठं) श्लिष्टं (सिलिट्ठं) प्लुष्ट (पिलुट्ठ) प्लोष: (पिलोसो) श्लेष्मा (सिलिम्हो) श्लेष: (सिलेसो) शुक्ल (सुक्किलं) श्लोक: (सिलोओ) क्लेश: (किलेसो) अम्ल (अम्बिलं) ग्लानं (गिलाणं) म्लान (मिलाण) क्लान्तं (किलन्तं)।

नियम ४१३ (स्याद् भव्य-चैत्य-चौर्य-समेषु यात् २।१०७) भव्य,

पृथ्वी (पुहुवी)। मृद्वी (मउवी)। स्रघ्न (सुरुग्घ)। सूक्ष्मं (सुहुमं)।

नियम ४१९ (एक स्वरे श्वः स्वे २।११४) एक पद मे श्व और स्व शब्द हो तो उनसे उकार का आगम होता है। श्व (सुवे)। स्व (सुव)।

(वक्रादावन्तः १।२६) नियम १९ से वक्र आदि शब्दो मे कही पहले स्वर के बाद, कही दूसरे स्वर के बाद, कही तीसरे स्वर के बाद अनुस्वार का आगम होता है।

प्रयोग वाक्य

अस्सत्थो अज्जाण (आर्य) पूयणीओ रुक्खो अत्थि। जत्थ कत्थइ चदणो अत्थि सव्व राइक्क (राजा का) धण अत्थि। पीलू सघणो भवइ। असोयस्स छाय ठिच्चा जणा सति अणुभवति। बब्बूलस्स डाली दंतधावणाय होइ। वडस्स साहाए अणेगवडा उप्पज्जइ। णिवस्स डाली दंतधावणस्स मिट्ठा मणिज्जइ। वसेमु पाओ अग्गी उप्पज्जइ। अमुम्मि पएसे वउलो न मिलइ।

धातु प्रयोग

पणवझुणीहिं वाउमडल गुमगुमीअ। सा केसे गुभइ। एगदेसम्मि दढरूवेण विअगइ। जो खलण करेइ सो सम्माणभयेण गोवइ। अहं भवयाण सिक्ख घत्तिस्स। सूंठि घसिऊण सो पायेसु लिपइ। पास, वक्खाणे को विअभइ। एगो साहू आयरिअस्स समीवे णियभावा विअडइ। वाणरा केवल घुरुक्कति। जिणवयणे मा विअप्पउ।

प्राकृत में अनुवाद करो

श्रद्धालु लोग पीपल की पूजा करते है। चदन का सेवन उष्णता को शात करता है। मरुवासी पीलू का फल शौक से खाते हैं। अशोक वृक्ष ध्यान साधना मे सहायक होता है। बबूल के पेड तुम्हारे गाव मे कितने हैं ? बरगद का दूध कामोत्तेजक होता है। नीम की छाया स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है। वशलोचन दवा मे काम आता है। मौलसिरी वृक्ष कितने प्रकार के होते हैं ?

धातु का प्रयोग करो

भ्रमर मधुर ध्वनि करता है। माली माला को गूथता है। राजा ने अपराधी (अवराहिल्ल) के हाथ-पाव आदि कटवाए। गुप्त बात को छिपाना चाहिए। अपने दोष को छिपाना नही चाहिए। तुम जो दोगे मैं उसे ग्रहण करूगा। वह लोग को घिसकर लगाता है। दो बादाम को घिस कर दूध के साथ पीना चाहिए। रात के ९ बजे के बाद वह जभाइ लेने लगा। एक पत्र मे उसने अपने विचार प्रकट किए। बदर घुडकते है, उनसे डरना नही चाहिए। वह बात-बात मे सशय करता है।

५१ द्वित्व

शब्द संग्रह (स्फुट)

तमाचा, थप्पड़—चविडा
कटाक्ष—काणच्छि (स्त्री)
मदिरा—मइरा, सुरा
कीमती—महग्घ (वि)
दुर्लभ, महंगा—महग्घविओ
स्वच्छदी—सच्छदो (वि)
 अणोहट्टयो (वि)

जेल—कारा
जुआखाना—टेटा
चिता—चियगा
प्रशसनीय—सग्घ (वि)
जूठा, उच्छिष्ट—णवोद्धरण (दे०)
व्यक्ति—वत्ति (स्त्री)

धातु संग्रह

घोट्ट—पीना
चक्ख—चखना, स्वाद लेना
तूस—सतुष्ट होना
धुव्व—कंपना, हिलाना
चकम—बार-बार चलना
 इधर उधर घूमना

चंप (दे०) दबाना, चांपना
चप—चर्चा करना
चंप—चढना
जम्म—खाना
जेम—जीमना
चिण—इकट्ठा करना

द्वित्व

सयुक्त वर्णों को होने वाला आदेश या शेष रहा वर्ण द्वित्व होता है। द्वित्व होने वाला वर्ण वर्ग का दूसरा वर्ण हो तो पहला और चौथा वर्ण हो तो तीसरा हो जाता है। असयुक्त वर्ण का शेष रहा वर्ण द्वित्व नही होता, उसकी यश्रुति हो जाती है।

नियम ४२० (अनादौ शेषादेशयोर्द्वित्वम् २।८९) लोप होने के बाद शेष रहा वर्ण और आदेश किया हुआ वर्ण पद के आदि मे न हो तो वह द्वित्व हो जाता है।

शेष—कल्पतरु. (कप्पतरू)। भुक्तं (भुत्तं)। दुग्धम् (दुद्ध)। नग्न. (नग्गो)। उल्का (उक्का)। मूर्ख (मुक्खो)।

आदेश—दष्ट: (डक्को)। यक्ष. (जक्खो)। रक्त: (रग्गो)। कृत्ति. (किच्ची)। रुक्मी (रुप्पी)

शेषवर्ण आदि मे होने के कारण द्वित्व नहीं—

स्खलितम् (खलिअं)। स्थविर: (थेरो)। स्तम्भ (खम्भो)।

नियम ४२१ (तैलादौ वा २।९८) तैल आदि शब्दों में अनादि यथादर्शन (जैसा देखा जाता है) अन्त्य और अनन्त्य व्यंजन द्वित्व हो जाता है।

अन्त्यवर्ण— तैल (तेल्लं)। मण्डूकः (मण्डुक्को)। विचकिलः (वेइल्लं)।
ऋजु (उज्जू)। व्रीडा (विड्डा)। प्रभूतं (वहुत्तं)।

अनन्त्यवर्ण— स्रोतस् (सोत्त)। प्रेमन् (पेम्म)। यौवनं (जुव्वण)

आर्ष में— प्रतिस्रोतस् (पडिसोओ)। विस्रोतसिका (विस्सोअसिआ)।

नियम ४२२ (द्वितीय-तुर्ययोरुपरि पूर्वः २।९०) द्वित्व होने वाला वर्ण वर्ग का दूसरा वर्ण हो तो पहला और चौथा वर्ण हो तो तीसरा वर्ण हो जाता है।

शेष— व्याख्यान (वक्खाण)। व्याघ्रः (वग्घो)। मूर्छा (मुच्छा)। निर्झरः (निज्झरो)। कष्ट (कट्ठ)। तीर्थं (तित्थं)। निर्धनः (निद्धणो)। निर्भरः (निब्भरो)। गुल्फं (गुप्फं)।

आदेश— यक्ष (जक्खो)। अक्षि (अच्छी)। मध्य (मज्झ) पृष्ठम् (पट्ठी)। वृद्धः (वुड्ढो)। हस्तः (हत्थो)। आश्लिष्ट (आलिद्धो)। पुष्पम् (पुप्फं)। विह्वलः (भिब्भलो)।

(दीर्घे वा २।९१) नियम ३३१ से दीर्घ शब्द में शेष घ को ग विकल्प से होता है। दीर्घ (दिग्घो, दीहो)।

नियम ४२३ (समासे वा २।९७) शेष और आदेश वर्ण समास में द्वित्व विकल्प से होते हैं। नदीग्रामः (नइग्गामो, नइगामो)। देवस्तुति (देवत्थुई, देवथुई)। बहुलाधिकार से शेष और आदेश के बिना भी होता है— सपिपासः (सप्पिवासो, सपिवासो)। प्रतिकूलं (पडिक्कूलं, पडिकूलं)। अदर्शनम् (अद्दंसणं, अदंसणं)।

नियम ४२४ (सेवादौ वा २।९९) सेवा आदि शब्दों में अनादि यथादर्शन अन्त्य और अनन्त्य वर्ण द्वित्व विकल्प से होता है।

अन्त्यस्य— सेवा (सेव्वा, सेवा)। नीडम् (नेड्डं, नीडं)। नखाः (नक्खा, नहा)। निहित (निहित्तो, निहिओ)। व्याहृत (वाहित्तो, वाहिओ)। मृदुकं (माउक्कं, माउअं)। एकः (एक्को, एओ)। कुतूहलं (कोउहल्लं, कोउहलं)। व्याकुलः (वाउल्लो, वाउलो)। स्थूल (थुल्लो, थोरो)। हूतं, हुतं (हुत्त, हुअं)। दैवम् (दइव्वं, दइवं)। तूष्णीकः (तुण्हिक्को, तुण्हिओ)। मूकः (मुक्को मूओ)। स्थाणु (खण्णू, थाणू)। स्त्यानं (थिण्णं, थीणं)।

अनन्त्यस्य— अस्मदीयम् (अम्हक्केरं, अम्हकेरं)। चेअ (तं च्चेअ, तं चेअ)
चिअ (सो च्चिअ, सो चिअ)।

नियम ४२५ (न दीर्घानुस्वारात् २।९२) लाक्षणिक (कृत) अलाक्षणिक (अकृत) दीर्घस्वर और अनुस्वार से परे शेष और आदेश वर्ण द्वित्व

नही होता।

कृत दीर्घ—नि श्वास. (नीसासो)। स्पर्श. (फासो)।

अकृत दीर्घ—पार्श्वम् (पासं)। शीर्षम् (सीस)। ईश्वरः (ईसरो)। द्वेष्यः (वेसो)।

कृत अनुस्वार—त्र्यस्रम् (तंस)।

अकृत अनुस्वार—सन्ध्या (संझा)। विन्ध्य (विंझो)।

नियम ४२६ (र-होः २।६३) रकार और हकार द्वित्व नही होते। रकार शेष नही रहता।

आदेश र—सौन्दर्यम् (सुन्देर)। ब्रह्मचर्यम् (वम्हचेर)।

शेष—ह—विह्वलः (विहलो)

आदेश ह—कार्षापण (कहावणो)।

नियम ४२७ (धृष्टद्युम्ने ण· २।६४) धृष्टद्युम्न शब्द मे आदेश ण को द्वित्व नही होता। धृष्टद्युम्न· (धट्ठज्जुणो)

नियम ४२८ (कर्णिकारे वा २।६५) कर्णिकार शब्द में शेष ण द्वित्व विकल्प से होता है। कर्णिकार (कणिआरो, कण्णिआरो)।

नियम ४२६ (दृप्ते २।६६) दृप्त शब्द मे शेष वर्ण द्वित्व नही होता। दृप्त (दरिओ)। दरिअ सीहेण (दृप्तसिहेन)

प्रयोग वाक्य

माअरा पुत्तस्स चविड देइ। सो काणच्छीअ इत्थि पासइ। जो मइर (सुर) पिवइ तस्स पडणं ध्रुव। साहूण सागयं चरित्तस्स भवइ न उ वत्तीए (व्यक्ति)। एअं कोसेयं महग्घ अत्थि। माणुमजम्मो आगमे महग्घविओ कहिओ। काराए को गच्छइ? कितवो टेंटाए जूअं खेलइ। गजीवेण इंदिरा-चियगाए अग्गी दिण्णो। तुज्झ कज्ज सग्घं अत्थि। भोयणस्स पच्छा णवोद्धरणं न मोत्तव्व। जो सच्छदो (अणहट्टयो) होइ सो अणुमानणस्स महत्तं न जाणइ।

धातु प्रयोग

सेहो साहू संतसुहारसं घोट्टइ। चकमतस्स महावीरस्स दसणट्ठं जणा आगआ। जो सइ सुरं चक्खइ सो तस्स वसीभूओ भवइ। महावीरस्स दंसणं करित्ताण सो तूसइ। तवेण तवस्सी कम्मरयाइं धुव्वइ। सेवओ नामि पइदिवस चपइ। अमुणा मंद्धि को चपइ? माहू खवअसेणि चंपइ। मा माविया दिणे सइ जेमइ। माली पुप्फाइ चिणइ। सो निन्दाए न जम्मइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

वाद-विवाद में एक लड़के ने दूसरे को थप्पड़ मारा। सीता ने कटाक्ष दृष्टि से अपने पति को देखा। मदिरा के कारण उसका घर नष्ट हो गया। नगरवासी आपका स्वागत करते हैं। संसार में बहुमूल्य वस्तु क्या है? धर्मग्रन्थों में दुर्लभ वस्तु किसको कहा है? जुआखाने में वह कौन जा रहा है? जेल भर गया है, उसमें अब स्थान नहीं है। उसकी चिता में किसने आग लगाई? प्रेक्षाध्यान का कार्य देशभर में प्रशंसनीय है। भोजन को जूठा कभी मत छोड़ो। यह लड़का बचपन में ही स्वच्छंद रहा है।

धातु प्रयोग करो

विनोद अध्यात्मोपनिषद् को पीना चाहता है। भगवान महावीर राजगृह के पास के गांवों में घूम रहे हैं। वह इक्षुरस का स्वाद लेना चाहता है। भगवान की वाणी सुनकर सब संतुष्ट हो गए। तुम्हारी प्रचंड ध्वनि ने वायुमंडल को कंपित कर दिया। सुदर्शन पैर दबाना नहीं चाहता है। राजकरण चर्चा करने के लिए हर समय तैयार रहता है। वह पहाड़ पर चढ़ता है। आज कौन नहीं जीमेगा? हीरालाल मूषों के प्रमाण इकट्ठा कर रहा है। सरला रात को नहीं जीमती है।

प्रश्न

१. शेष और आदेश किसे कहते हैं? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दो।
२. कौनसा वर्ण द्वित्व होता है? नियम सहित बताओ।
३ कौन से नियम विकल्प से द्वित्व करते हैं और कौन से निषेध करते हैं? प्रत्येक नियम का एक-एक उदाहरण दो।
४ समास में वर्ण द्वित्व होता है या नहीं? होता है तो कौनसा पद?
५. तमाचा, कटाक्ष, मदिरा, स्वागत, बहुमूल्य, दुर्लभ, जेल, चिता, जूठा, स्वच्छंदी और प्रशंसनीय अर्थ के लिए प्राकृत शब्द बताओ।
६. घोट्ट, चक्ख, घुव्व, चप, चिण, चकम और जम्म धातुओं के अर्थ बताओ और उन्हें वाक्य में प्रयोग करो।

५२ स्वर सहित व्यंजनों का लोप

शब्द संग्रह (काल वर्ग १)

मुहूर्त—मुहुत्त	काल का सूक्ष्म भाग—समयो
दिन—दिवसो, दिवहो	रात्रि—रत्ती, राई, निसा
मास—मासो	पक्ष—पक्खो
प्रात काल—पगे, उसावेला	मध्यदिन—मज्झण्हो
सध्या—सझा	पूर्व दिन—पुव्वण्हो
घटी—घडी	ऋतु—उउ (त्रि)

० ० ० ०

रूपया—रूवग, रूवगो।

धातु संग्रह

घरिस—क्षुब्ध करना, विचलित करना	कुह—सडना
विज्ज—विद्यमान होना	बाह—बाधा करना, रोकना
सिज्ज—स्वेद का आना, पसीजना	सव—शाप देना, गाली देना
विज्झ—बीधना	मज्ज—मद्य करना, अभिमान करना

नियम ४३० (व्याकरण-प्राकारागते कगोः १।२६८) व्याकरण और प्राकार शब्दो मे क का और आगत शब्द मे ग का लुक् विकल्प से होता है।

क>लोप—व्याकरणम् (वारण, वायरण)

का 7 लोप—प्राकार (पारो, पायारो)

ग 7 लोप—आगतः (आओ, आगओ)

नियम ४३१ (लुग् भाजन-दनुज-राजकुले जः सस्वरस्य न वा १।२६७) भाजन, दनुज, राजकुल शब्दो के स्वर सहित ज का लोप विकल्प से होता है।

ज 7 लोप—भाजनम् (भाण, भायण)। दनुज (दणु, दणुअ)। राजकुलम् (राउल, रायउल)।

नियम ४३२ (दुर्गादेव्युदुम्बर-पादपतन-पादपीठन्तर्दः १।२७०) दुर्गादेवी, उदुम्वर, पादपतन और पादपीठ शब्दो के मध्य मे होने वाले सस्वर द का लुक् विकल्प से होता है।

द 7 लोप—पादपतनम् (पावडण, पायवडण)

द 7 लोप—पादपीठम् (पावीढ, पायवीढ)

दु 7 लोप—उदुम्बरः (उम्बरो, उउम्बरो)
दे 7 लोप—दुर्गादेवी (दुग्गा-वी, दुग्गाएवी)

नियम ४३३ (किसलय-कालायस-हृदये यः १।२६९) किसलय कालायस और हृदय शब्दों के सस्वर यकार का लुक् विकल्प से होता है।

य 7 लोप—किसलयम् (किसलं, किसलयं) कालायसम् (कालासं, कालायसं) हृदयम् (हिअं, हिअयं)

नियम ४३४ (यावत्तावज्जीवितावर्तमानावट-प्रावारक देवकुलैवमेवे वः १।२७१) यावत् आदि शब्दों में सस्वर वकार का लुक् विकल्प से होता है।

व 7 लोप—अवटः (अडो, अवडो) आवर्तमानः (अत्तमाणो, आवत्तमाणो) एवमेव (एमेव, एवमेव) तावत् (ता, ताव) देवकुलम् (देउलं, देवउलं) प्रावारकः (पारओ, पावरओ) यावत् (जा, जाव)
वि 7 लोप—जीवितम् (जीअं, जीविअं)

प्रयोग वाक्य

सामाइयस्स समयो एगो मुहुत्तो भवइ। समयो कालस्स सुहुमो भागो अत्थि, तस्स विभागो न भवइ। आयरिआ अत्थ पंचदिवसा ठास्संति। अज्ज दिवहस्स अवेक्खा रत्ती पलंबा अत्थि। पक्खत्तमासे सत्तवीसा नक्खत्ता होंति। मज्झ जम्मो सुक्कपक्खे जाओ। उसावेलाइ न सोअणिज्जं। मज्झण्हे सुत्तस्स सज्झायं भवइ। संझा पडिक्कमणं कायव्वं। किं सोमवारे तुमं पुव्वण्हे भोयणं भजसि?

धातु प्रयोग

दमिइंदियाण रागसत्तू चित्तं न धरिसेइ। तुज्झ पासे मइनाणं विज्जइ। गिम्हउउम्मि मुणी विहारसमये सिज्जइ। सूई सरीरं विज्झइ। घरे फलाइं को वि न खाअइ अओ ठिआइं फलाइं कुहेंति। तुज्झ असुद्धं उच्चारणं मम्मं बाधइ। संजमी साहू क्याइ न सवइ। सो सुवस्से मज्जइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

वह एक मुहूर्त के लिए सामायिक करता है। एक शब्द बोलने में काल का सूक्ष्म भाग कितना लगता है? वह दिन में नहीं सोता है। क्या तुम रात्रि में प्रतिदिन स्वाध्याय करते हो? चैत्र का महिना सबसे अच्छा लगता है। कृष्ण पक्ष में भी चंद्रमा का प्रकाश रहता है। प्रातःकाल वह गुरुदर्शन को आता है। क्या तुम मध्याह्न में भोजन करते हो? संध्या के समय स्वाध्याय करनी चाहिए। दिन के पूर्वभाग में वह भोजन करता है।

धातु का प्रयोग करो

राग से हर आदमी विचलित हो जाता है। रुपयों के प्रलोभन से

वडे-वड़े विचलित हो जाते हैं। इस गाव मे तीन सौ आदमी रहते है। जिसके शरीर मे वल होता है उसको पसीना वहुत आता है। तुम्हारा कटु व्यवहार हृदय को वीधता है। सरकार के सग्रहालय (सगहालय) मे पडा अनाज सड रहा है। तुम्हारे कथन मे मुझे कोई वाधा नही है'। असाधु शाप देता है वह फलित नही होता। धन और रूप पर अभिमान नही करना चाहिए।

प्रश्न

१ किन-किन व्यजनो का स्वर सहित लोप होता है ?

२. नीचे लिखे शब्दो मे बताओ किस व्यजन का स्वर सहित लोप होकर क्या रूप बनता है और किस नियम से ?
 व्याकरण, राजकुल, दुर्गादेवी, पादपीठ, हृदय, कालायस, जीवित, प्रावारक।

३. मुहूर्त, दिवस, मध्यदिन, सध्या, घटी, रात्रि, पूर्व दिन, ऋतु और प्रात काल के लिए प्राकृत के शब्द बताओ।

४ घरिस, सिज्ज, विज्झ, कुह, वाह, सव और मज्ज धातुओ के अर्थ बताओ और उन्हें वाक्य मे प्रयोग करो।

५ पोप्फल, णारिएलो, णिकायगो, पिआलो, णिंबो, वब्बूलो, टेंटा, काणच्छि, सच्छदो शब्दो को वाक्य मे प्रयोग करो तथा हिन्दी मे अर्थ बताओ।

५३ सस्वर व्यंजन आदेश

शब्द संग्रह (काल वर्ग २)

वर्तमानकाल—पडिपुन्नं
अतीतकाल—अईओ
भविष्यकाल—अणागय
युग—जुगो
वर्ष—वरिसो, सवच्छरो
वसंत—वसतो
ग्रीष्म—गिम्हो
वर्षा—वरिसा
शरद्—सरयो
हेमंत—हेमंतो
शिशिर—सिसिरो

० ० ० ०

कल्पना—कप्पणा
लहर—उम्मि (स्त्री)

धातु संग्रह

णिज्झ स्नेह करना
तणुअ—पतला होना
तडप्फड—तडफडाना
तज्ज—डाटना
ताड—ताडना, पीटना
तण—विस्तार करना
तुड—टूटना, अलग होना
तोल—तोलना
पकर—कार्य का प्रारभ करना
तक्क—तर्क करना

स्वर+सस्वरव्यंजन आदेश—

स्वर+व्यंजन युक्त स्वर=स्वर और उससे आगे स्वर सहित व्यंजन। इन तीनो को जो एक आदेश होता है उसे स्वर और सस्वर व्यंजन आदेश कहते है।

नियम ४३५ (एत्त्रयोदशादौ स्वरस्य सस्वरव्यञ्जनेन १।१६५) त्रयोदश इस प्रकार के संख्या शब्दो मे आदि स्वर और उसके आगे व्यंजन सहित स्वर को एकार आदेश होता है। त्रयोदश (तेरह) त्रिविंशतिः (तेवीसा) त्रिंत्रिंशत् (तेत्तीसा)।

नियम ४३६ (स्थविर-विचकिलायस्कारे १।१६६) स्थविर, विचकिल और अयस्कार शब्दो के आदि स्वर और उसके आगे स्वर सहित व्यंजन को एकार आदेश होता है। स्थविरः (थेरो) विचकिलम् (वेइल्लं) अयस्कारः (एक्कारो)।

नियम ४३७ (वा कदले १।१६७) कदल शब्द के आदि स्वर और

उसके आगे स्वर सहित व्यञ्जन को एकार विकल्प से होता है। कदलम् (केलं, कयल)। कदली (केली, कयली)।

नियम ४३८ (वेत कर्णिकारे १।१६८) कर्णिकार शब्द मे आदि स्वर और उससे आगे स्वर सहित व्यञ्जन को ए विकल्प से होता है। कर्णिकार. (कण्णेरो, कण्णिआरो)।

नियम ४३९ (अयौ वैत् १।१६९) अयि शब्द के आदि स्वर और उससे आगे के स्वर सहित व्यजन को ए आदेश होता है। अयि(ए)।

नियम ४४० (ओत्पूतर-बदर-नवमालिका-नवफालिका-पूगफले १।१७०) पूतर, वदर, नवमालिका, नवफालिका और पूगफल शब्दो के आदि स्वर और उससे आगे के स्वर सहित व्यंजन को ओ आदेश होता है। पूतर: (पोरो) वदरम् (वोर) वदरी (वोरी) नवमालिका (नोमालिआ) नवफालिका (नोहलिआ) पूगफलम् (पोप्फल)।

नियम ४४१ (न वा मयूख-लवण-चतुर्गुण-चतुर्थ-चतुर्दश-चतुर्वार-सुकुमार-कुतूहलोदूखलोलूखले १।१७१) मयूख, लवण, चतुर्गुण, चतुर्थ, चतुर्दश, चतुर्वार, सुकुमार, कुतूहल, उदूखल और उलूखल शब्दों के आदि स्वर और उसके आगे सस्वर व्यञ्जन को ओकार आदेश विकल्प से होता है। मयूख: (मोहो, मऊहो) लवणम् (लोण) चतुर्गुण. (चोग्गुणो चउग्गुणो) चतुर्थ: (चोत्थो, चउत्थो) चतुर्दश (चोद्दह, चउद्दह) चतुर्दशी (चोद्दसी, चउद्दसी)। चतुर्वार: (चोव्वारो, चउव्वारो) सुकुमार (सोमालो, सुकुमालो) कुतूहलम् (कोहल, कोउहल्ल) उदूखल (ओहलो, उऊहलो) उलूखलम् (ओक्खल, उलूहलं)।

नियम ४४२ (अवापोते १।१७२) अव और अप उपसर्ग तथा विकल्प अर्थ मे निपात उत शब्द के आदि स्वर और उससे आगे स्वर सहित व्यञ्जन को ओ विकल्प से होता है।

अव—अवतरति (ओअरइ, अवयरइ)। अवकाश (ओआसो, अवयासो)।

अप—अपसरति (ओसरइ, अवसरइ)।

उत—उत वनम् (ओ वणं, उअवणं)। उत घन. (ओ घणो, उअ घणो)।

नियम ४४३ (ऊच्चोपे १।१७३) उप शब्द के आदि स्वर तथा उससे आगे सस्वर व्यंजन को ऊ और ओ आदेश विकल्प से होता है। उपहसितम् (ऊहसिअ, ओहसिअ, उवहसिअं) उपाध्याय: (ऊज्झाओ, ओज्झाओ, उवज्झाओ) उपवास. (ऊआसो, ओआसो, उववासो)।

नियम ४४४ (उमो-निषण्णे १।१७४) निषण्ण शब्द के आदि स्वर तथा उससे आगे स्वर सहित व्यञ्जन को उम आदेश विकल्प से होता है। निषण्ण: (णुमण्णो, णिसण्णो)।

नियम ४४५ (प्रावरणे अङ्ग्वाऊ १।१७५) प्रावरण शब्द के आदि

स्वर तथा उससे आगे सस्वर व्यञ्जन को अङ्कु और आउ विकल्प से आदेश होते हैं। प्रावरणम् (पङ्कु रण, पाउरणं, पावरणं)।

प्रयोग वाक्य

पडिपुन्न अहं अप्पाणं सवरेमि। सो अईयस्स समरणं न करेइ। प्राणे अणागयस्स कप्पणा न काअव्वा। पचवरिसेहि एगो जुगो भवइ। वसंतम्मि रुक्खस्स नव्वपत्ताइं पुप्फाइं य णिक्कसंति। अहं गिम्हकाले आयवं अहिय अणुभवामि। अस्य पएसे वरिसस्स फल वरिसाए अवरि निब्भर अत्थि। नरयम्मि आयवस्स सीयस्स य संगमो भवइ। हेमंतम्मि जणा ओण्णियाइ वत्थाइं परिहाति। सिसिरे सीउम्मीआ सरीरो धुणइ। सो वक्खाणस्स अब्भासं पकरइ।

धातु प्रयोग

पिआ पोत्त णिज्जइ। सम्मज्जओ सूअर तडप्फडइ। गुरू सीस ताडेइ। कडुवयणेण सवंधो तुडइ। उवसमेण कोहो तणुअइ। सासू पुत्तवहुं तज्जइ। निवो सुवरज्ज तणिउं इच्छइ। सोवण्णिओ सुवण्णं तोलइ। जो परिवारे ववहारे तक्कइ तस्स संबंधो खिप्प तुडइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

वर्तमान काल को सफल करो। केवल अतीत के गुण मत गाओ। भविष्य के लिए विकास की योजना बनाओ। युग परिवर्तनशील होता है। इस वर्ष मे तुम्हे कितना लाभ हुआ? वसत ऋतु मन को प्रिय लगती है। ग्रीष्म मे प्यास अधिक लगती है। वर्षा ऋतु मे साधु एक स्थान पर रहते हैं। शरद पूर्णिमा की रात्रि मे हम सूक्ष्म अक्षर पढते हैं। हेमंत ऋतु मे मरुभूमि की पदयात्रा कष्टप्रद होती है। वह अपने विभाग का कार्य कब प्रारम्भ करेगा?

धातु का प्रयोग करो

तुम किससे स्नेह करते हो? किसी प्राणी को तडफडाना बहुत बुरा है। राजपुरुष चोर को पीटते हैं। वृक्ष की डाली हवा से टूट गई। अधिक कम खाने से शरीर पतला होता है। सेठ नौकर को डाटता है। धर्म का विस्तार करना चाहिए। वह अपने को तोलता है। तुम बात-बात मे तर्क करते हो।

प्रश्न

१. स्वर और सस्वर व्यजन किसे कहते है और उसको क्या आदेश होता है?
२. किन-किन नियमों से स्वर और सस्वर व्यञ्जनो को एकार आदेश

होता है ?

३. ओकार, उकार और उम आदेश किन नियम से होता है ?

४ नीचे लिखे शब्द किस आदेश से बने हैं ? वेइल्ल, एक्कारो, पोप्फलं, पोरो, ओहलो, उमवण, उज्झाओ, णुमण्णो, पाउरणं ।

५ ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, शिशिर, वसंत, हेमंत, वर्ष, युग, वर्तमानकाल, अतीतकाल और भविष्यकाल के लिए प्राकृत शब्द बताओ ।

६. णिज्झ, तडप्फड, तणुअ, तज्ज, ताड, तुड, तण और तोल धातुओ के अर्थ बताओ और उन्हे अपने वाक्य मे प्रयोग करो ।

शब्द संग्रह (पक्षी वर्ग १)

कौआ—काओ, वायसो	कोयल—कोइलो, परहुतो कोइला
चील—चिल्ला	गीध—गिद्धो
कबूतर—कवोओ	बगुला—बयो, बगो
सुआ—सुओ, कीरो	बगुली—बगी
चकोर—चकोरो	मैना—सारिआ
आडी—आडी (स्त्री)	
चोंच—चंचू (स्त्री)	पिंजडा—पंजर, पिंजरं

धातु संग्रह

तलहट्ट—सींचना	थक्कव—रखना, स्थापना करना
तुर—जल्दी करना	थण—गर्जना
थंग—उन्नत करना, ऊंचा करना	थब्भ—अहंकार करना
थंभ—स्थिर होना, रुकना	थय—आच्छादन करना
विकिर—फेंकना, बिखेरना	थरथर—थरथर कांपना

वर्ण परिवर्तन (व्यत्यय)

शब्द में एक वर्ण का परस्पर स्थान परिवर्तन होता है उसे विपर्यास या व्यत्यय कहते हैं।

नियम ४४६ (करेणु-वाराणस्योः र-णो र्व्यत्ययः २।११६) स्त्रीलिंगी करेणु और वाराणसी शब्दों में र और ण का परस्पर व्यत्यय हो जाता है। करेणु—कणेरू। वाराणसी—वाणारसी।

नियम ४४७ (अचलपुरे च-लोः २।११८) अचलपुर शब्द में च और ल का व्यत्यय होता है। अचलपुर(अलचपुरं)

नियम ४४८ (ह्रदे ह्दोः २।१२०) ह्रद शब्द के हकार और दकार का व्यत्यय होता है। ह्रद. (द्रहो)। आर्ष—हरए। धम्मेहरए।

नियम ४४९ (हरिताले रलोर्न वा २।१२१) हरिताल शब्द में र और ल का व्यत्यय विकल्प से होता है। हरिताल· (हलिआरो, हरिआलो)।

नियम ४५० (लघुके ल-होः २।१२२) लघुक शब्द में घ को ह करने के बाद ल और ह का व्यत्यय विकल्प से होता है। लघुकम् (हलुअं,

लहुअ) ।

नियम ४५१ (ह्ये ह्योः २।१२४) ह्य शब्द मे ह् और य का व्यत्यय विकल्प से होता है । सह्य. (सय्हो, सज्झो) ।

नियम ४५२ (आलाने लनोः २।११७) आलान शब्द मे ल और न का व्यत्यय होता है । आलान (आणालो) ।

नियम ४५३ (महाराष्ट्रे ह्-रो २।११९) महाराष्ट्र शब्द मे ह् और र का व्यत्यय होता है । महाराष्ट्रम् (मरहट्ठ)।

नियम ४५४ (ललाटे ल-डोः २।१२३) ललाट शब्द मे ल और ड का व्यत्यय होता है । ललाटम् (णडालं, णलाड)।

प्रयोग वाक्य

पक्खीसु वायसो धुत्तो अत्थि । चिल्ला आयासम्मि उड्डेइ । कवोओ उज्जू पक्खी अत्थि । कीरो हरिअकायो रत्तचचू य भवइ । कोइलाए सद्दो महुरो कण्णप्पिओ लग्गइ । गिद्धस्स दिट्ठी दूरगामिणी भवइ । बगाण झाण पसिद्ध अत्थि । अमुम्मि गामम्मि सारिआ नत्थि । चकोरो जोण्हापिओ भवइ । आडी रत्तिदिवा जले वसइ ।

धातु प्रयोग

पजरम्मि पक्खी सच्छदो न भवइ । रट्ठपई सुवउज्जाण सहत्थेहि पइदिवह तलहट्टइ । अत्थगयस्स सूरियस्स पुव्व गामे गमिउ मुणी तुरइ । चंडाल थगिउ को चेट्ठइ ? मतपओगेण सो तस्स गइ थभइ । रामो अवक्खर बाहिं विकिरइ । जयायरिओ सव्वससिमुणि अत्थ थक्कविऊण विहारं अकरिंसु । अज्ज मेहो गगणे थणइ कि वरिसा होस्सइ ? तस्स पासे धण नत्थि तहवि थब्भइ । सो वरिसाए अद्दकायो थरथरइ । तुम वत्थेण ठाण थयसि ।

प्राकृत मे अनुवाद करो

कौआ वृक्ष पर बैठा हुआ है । चील रोटी को लेकर आकाश मे उड गई । कबूतर रात को यहा बैठते है । सुआ क्या खाता है ? कोयल और कौए का भेद उसकी बोली (वाणी) से लगता है । गीध पशु के कलेवर (सव) को खाने दूर से उडकर आया है । बगुला और बगुली दोनो साथ-साथ उड गए । मैना क्या खाती है, क्या तुम जानते हो ? चादनी मे चकोर प्रसन्न होता है । आडी राजसमद झील मे बहुत हैं । पिंजडा आखिर पिंजडा है चाहे वह सोने का क्यो न हो ?

धातु का प्रयोग करो

उसने अपना बगीचा कल क्यो नही सीचा ? आग लगने पर लोग घर

से निकलने की जल्दी करते हैं। आचार्य तुलसी ने नारी समाज को ऊंचा उठाया है। वह चलते-चलते स्तम्भित हो गया, न जाने किसने क्या कर दिया? समाज में परिवर्तन लाने वाले को पहले अपने क्रान्तिकारी (कंतिगरो) विचार सभा या भाषण में बिखेर देना चाहिए। उसने अपने घर में भगवान पार्श्वनाथ की मूर्ति स्थापित की। जो मेघ गर्जता है वह बरसता नहीं। अपने भाषण या गीत पर अहंकार नहीं करना चाहिए। वह सभा के लिए स्थान को आच्छादित करता है। आचार्य श्री की उपस्थिति में प्रवचन सभा में भाषण देने वाला मुनि थरथर कांपता है।

प्रश्न

१ व्यत्यय किसे कहते हैं?

२. नीचे लिखे शब्दों में बताओ किस नियम से किस शब्द में किस वर्ण का व्यत्यय हुआ है? कणेरु, वाणारसी, अचलपुर, हलिआरो, हलुअ, सव्हो, आणालो, मरहट्ठं, णडाल।

३. कौआ, चील, कोयल, गीध, कबूतर, सुआ, बगुला, मैना, चकोर, आजी और चोंच के लिए प्राकृत के शब्द बताओ।

४. तलहट्ट, तुर, थग, थभ, थिकिर, थक्कथ, थण, थक्क, थय और थरथर धातुओं के अर्थ बताओ तथा उन्हें अपने वाक्य में प्रयोग करो।

५५ उवसग्ग (उपसर्ग)

प (प्र) आदि अव्यय २२ हैं। जब ये धातु के रूप के साथ प्रयुक्त होते हैं तब इनकी संज्ञा उपसर्ग होती है। दो उपसर्गों की या धातु के रूप के साथ उपसर्ग की संधि होती है। धातु से पहले उपसर्ग लगाने से कही पर धातु का अर्थ बदल जाता है, कही पर विपरीत अर्थ हो जाता है और कही पर धातु के अर्थ मे ही विशेषता लाता है। प (प्र) आदि उपसर्ग सभी धातुओ के साथ नही लगते। एक धातु के साथ एक, दो उपसर्ग लगते हैं तो किसी के साथ दो से अधिक भी लगते हैं। एक धातु के साथ एक, दो, तीन और चार उपसर्ग एक साथ देखने को मिलते हैं।

प (प्र)—पजाइ (आगे जाता है)। पजोतते (विशेष प्रकाशित होता है)। पहरइ (प्रहार करता है)।

परा (परा)—पराजिणइ (पराजय करता है)।

ओ, अव, अप (अप)—ओसरइ, अवसरइ, अपसरइ (सरकता है, दूर हटता है)।

सं (सम्)—संगच्छइ (साथ जाता है)। सचिणइ (संचय करता है, इकट्ठा करता है)।

अणु (अनु)—अणुजाइ (पीछे जाता है)। अणुकरइ (अनुकरण करता है।

ओ (अव)—ओतरइ (अवतार लेता है)।

अव (अव)—अवतरइ (नीचे जाता है, उतरता है)।

निर् (निर्)—निरिक्खइ (निरीक्षण करता है, देखता है।)

नि (निर्)—निज्झरइ (झरता है)।

नी (निर्)—नीसरइ (निकलता है)।

दुर् (दुर्)—दुग्गच्छइ (दुर्गति मे जाता है)।

दू—दूहवइ (दु खी करता है)।

अभि (अभि)—अभिगच्छइ (सामने जाता है)।

अहि (अभि)—अहिलसइ (इच्छा करता है)।

वि—विजाणइ (विशेष जानता है)। विजुंजइ (अलग करता है)। विकुव्वइ (विकृत करता है)।

अधि (अधि)—अधिगइ (जानता है, प्राप्त करता है)।

अहि (अधि)—अहिगमो (अधिगम, ज्ञान)।
सु (सु)—सुभासए (अच्छा बोलता है)।
सू (सु)—सूहवो (भाग्यवान्)।
उ (उत्)—उग्गच्छते (ऊंचा जाता है, उगता है)।
अइ (अति)—अइसेइ (अतिशय करता है, अति प्रशंसा करता है)।
अति (अति)—अतिगच्छइ (सीमा से बाहर जाना है)।
णि (नि) णिपडइ (निरंतर गिरता है, नीचे गिरता है)।
पडि (प्रति)—पडिभासए (सामने बोलता है)।
पति (प्रति)—पतिट्ठाइ (प्रतिष्ठित होता है)।
परि (प्रति)—परिट्ठा (प्रतिष्ठा)। पडिमा (प्रतिमा)। पडिकूलं (प्रतिकूल)।
परि (परि)—परिवुडो (परिवृत, चारों ओर से घिरा हुआ)।
पलि (परि)—पलिघो (परिघ, वन)।
उव (उप) उवागच्छइ (पास जाता है)।
ओ (उप)—ओज्झायो (उपाध्याय)।
उय (उप)—उवज्झायो (उपाध्याय)।
ऊ (उप)—ऊज्झायो (उपाध्याय)।
आ (आ)—आवसइ (मर्यादा में रहना है)। आगच्छइ (आता है)।

नियम ४५५ (निष्प्रती ओत्परी माल्यस्थोर्वा १।३८) निर् से परे माल्य शब्द हो तो निर् को ओत् और प्रति से परे स्था धातु हो तो प्रति को परि आदेश विकल्प से होता है।

ओमाल्लं, निम्मल्लं (निर्माल्य)। परिट्ठा, पइट्ठा (प्रतिष्ठा)। परिट्ठिअं, पइट्ठिअं (प्रतिष्ठितं)।

प्राकृत में अनुवाद करो

सूर्य पूर्व दिशा में उगता है। दो मुनि विहार कर आने वाले मुनि के सामने जाते हैं। क्या भगवान पुनः संसार में अवतार लेता है? बच्चा दूसरों का अनुसरण करता है। जो दूसरों को अधिक सताता है वह दुर्गति में जाता है। रमेश धर्मेश पर प्रहार करता है। एक आदमी दूसरे को पराजित करता है। लड़का पिता के सामने बोलता है। यह गांव पहाड़ से चारों ओर से घिरा हुआ है। वह तुम्हारे पास आता है। तुम पानी के बर्तन को ढाकते हो। वृक्ष से पत्ते नीचे गिरते हैं। अध्यापक विद्यार्थियों का निरीक्षण करता है। लड़के व्यर्थ में परस्पर लड़ते हैं। धनपाल प्रतिदिन धन का संचय करता है।

प्रश्न

१. अव्यय और उपसर्ग में क्या अन्तर है?

२ उपसर्ग कितने है और उनके नाम बताओ ?

३ एक धातु के साथ कम से कम कितने उपसर्ग लगते है और अधिक से अधिक कितने लगते है ?

४. धातु के पहले उपसर्ग लगने से उसके अर्थ मे परिवर्तन आता है या नही ? आता है तो कैसा ?

५ नीचे लिखे सस्कृत के उपसर्गों का प्राकृत मे क्या-क्या रूप बनता है ? उप, परि, अभि, अधि, निर्, अप

६ चार उदाहरण ऐसे दो जहा उपसर्ग के योग से धातु के अर्थ मे परिवर्तन आता हो ?

७ सझा, मज्झण्हो, घडी, वरिसा, सरयो, सिसिरो, चिल्ला, कोइला, वायस शब्दो को वाक्य मे प्रयोग करो तथा हिन्दी मे अर्थ बताओ ।

शब्दरूप (१)

(पुंलिंग अकारान्त शब्द)

शब्द संग्रह (पक्षी वर्ग २)

तीतर—तित्तिरो
बटेर—लावओ, लावगो
सारस—सारसो
गरुड—गरुडो, गरुलो
हंस—हंसो
कंक—कंको
घोंसला—णीड, णेड्ड

खंजन—खंजणो
पपीहा—चायओ, चायगो
बगुला—बलायाओ, बागाओ
मोर—मोर, अच्छरो (दे०)
कुरर—कुररो
[illegible]—[illegible]

धातु संग्रह

थव—स्तुति करना
थिप—तृप्त होना
थुअ—स्तुति करना
थुक्क—थूकना
थुक्कार—तिरस्कार करना

थुण—स्तुति करना
थेप्प—तृप्त होना, संतुष्ट होना
दंस—दांत से काटना
दक्खव—दिखलाना
दक्ख—देखना, अवलोकन करना

शब्दों के विषय में—

- किसी भी लोक व्यापक भाषा में द्विवचन सूचक प्रत्यय अलग उपलब्ध नहीं होते। इसी प्रकार लोक व्यापक भाषा प्राकृत में भी द्विवचन दर्शक अलग प्रत्यय नहीं है। द्विवचन का अर्थ सूचित करने के लिए शब्द के पीछे दो शब्द जोड़कर बहुवचन के प्राकृत रूपों का प्रयोग करना होता है।
- चतुर्थी विभक्ति के स्थान पर षष्ठी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। नमो देवाय—नमो देवस्स।
- अधिकांशतया लिंग का निर्णय शब्द के अंतिम वर्ण के आधार पर किया जाता है।

नियम ४२८ (द्विवचनस्य बहुवचनम् ३।१३०) स्यादि तथा त्यादि की सब विभक्तियों के द्विवचन को बहुवचन होता है।

विभक्ति प्रत्यय

विभक्ति	एकवचन		बहुवचन	
	संस्कृत	प्राकृत	संस्कृत	प्राकृत
प्रथमा	सि	डो	जस्	लोप
द्वितीया	अम्	म्	शस्	लोप
तृतीया	टा	ण, णं	भिस्	हि, हिं, हिँ
चतुर्थी	×	×	×	×
पचमी	ङसि	त्तो, दो (ओ) दु (उ) हि, हिंतो, लुक्	भ्यस्	त्तो, दो (ओ) दु (उ) हि, हिंतो, सुतो
षष्ठी	ङस्	स्स	आम्	ण, णं
सप्तमी	ङि	डे (ए) म्मि	सुप्	सु, सुं
सबोधन	सि	ओ, लोप	जस्	लोप

नियम ४५६ (अतः सेर्डो ३।२) अकारान्त नाम से परे स्यादि के सि को डो होता है । वच्छो ।

नियम ४५७ (जस्-शस्-ङसि-त्तो-दो-द्वामि दीर्घः ३।१२) जस्, शस् और ङसि इन प्रत्ययो के परे होने पर अकार दीर्घ होता है । वच्छा ।

नियम ४५८ (जस्-शसो र्लुक् ३।४) अकारान्त शब्द से परे जस् एव शस् का लोप हो जाता है । वच्छा, वच्छे ।

नियम ४५९ (अमोस्य ३।५) अकार से परे अम् के अकार का लोप हो जाता है । वच्छं ।

नियम ४६० (टा आमोर्णः ३।६) अकारान्त शब्द से परे टा तथा षष्ठी के बहुवचन आम् को ण होता है ।

नियम ४६१ (टाण शस्येत् ३।१४) टा के आदेश ण तथा शस् प्रत्यय परे हो तो अकार को एकार होता है ।

(क्त्वा-स्यादेर्ण-स्वोर्वा १।२७) नियम ७२ से क्त्वा और स्यादि प्रत्ययो के ण तथा सु के आगे अनुस्वार का आगम विकल्प से होता है । वच्छेणं, वच्छेण । वच्छेसुं, वच्छेसु ।

नियम ४६२ (भिसो हि हिँ हिं ३।७) अकार से परे भिस् के स्थान पर हि, हिँ (सानुनासिक) और हिं (सानुस्वार) आदेश होता है ।

नियम ४६३ (भिस्भ्यस्सुपि ३।१५) भिस्, भ्यस् और सुप् परे हो तो अ को ए हो जाता है । वच्छेहि, वच्छेहिँ, वच्छेहिं । वच्छेहि, वच्छेहिंतो, वच्छेसुंतो । वच्छेसुं, वच्छेसु ।

नियम ४६४ (ङसेस् त्तो-दो-दु-हि-हिंतो-लुक् ३।८) अकार से परे ङसि को त्तो, दो (ओ) दु (उ), हि, हिंतो, लोप—ये छह आदेश होते हैं । वच्छत्तो, वच्छाओ, वच्छाउ, वच्छाहि । वच्छाहिंतो, वच्छा । दो और दु मे

दकार भाषान्तर (शौरसेनी, मागधी) के उपयोग के लिए किया गया है।

नियम ४६५ (भ्यसस् त्तो-दो-दु-हि-हिंतो-सुंतो ३।९) अकार से परे भ्यस् को त्तो, दो, दु, हि, हिंतो और सुंतो आदेश होता है।

नियम ४६६ (भ्यसि वा ३।१३) भ्यस् को होने वाले आदेश परे होने पर अ को दीर्घ विकल्प से होता है। वच्छत्तो, वच्छाओ, वच्छाउ, वच्छाहि, वच्छेहि, वच्छाहिंतो, वच्छेहिंतो, वच्छासुंतो, वच्छेसुंतो।

नियम ४६७ (ङसः स्सः ३।१०) अकार से परे ङस् को स्स होता है। वच्छस्स।

नियम ४६८ (डे म्मि ङेः ३।११) अकार से परे ङि को डे तथा म्मि होता है। वच्छे, वच्छम्मि।

नियम ४६९ (डो दीर्घो वा ३।३८) अकारान्त शब्दों से आमंत्रण अर्थ को होने वाला डो प्रत्यय तथा इकारान्त और उकारान्त शब्दों को होनेवाला दीर्घ विकल्प से होता है। हे वच्छ, हे वच्छो।

प्रयोग वाक्य

रत्ता तित्तिरा धावेंति। लावगाण मंसं पउरा खाअंति। सारसाण चंचू पलवा भवइ। हंसो खीरनीराइं विवेचिउं समत्थो अत्थि। खंजणो कम्मि पएसम्मि भवइ? चायगो मुहं उग्घाडिऊण मेहं पेक्खइ। मोरो भारहवासम्मि रट्ठपक्खी अत्थि। कंको दीहपाओ भवइ। कुररो मच्छनासिन करेइ। गरुडो पक्खिणो राया होइ।

धातु प्रयोग

सेवगो सामि थवइ। सो आयरिअमुहेण जिणवयण सुणिऊण थिप्पइ। ते पासणाहं थुणंति। तो मुहुं मुहुं कहं थुक्कइ? तिणा तुमं थुक्कारिओ। सावगा जिणे थुणंति। सो मिट्ठान्नं भुंजिऊण थिप्पइ। सप्पो सव्वे डंसइ। रमेसो सुवन्नगहाणयं डंसावेइ। वानरो मणि दक्खइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

तीतर यहां से कब उड़ गया? यह बटेर कहां से आ रहा है? सारस का रंग सफेद होता है। हंस में दूध और पानी को अलग-अलग करने की जो शक्ति है वह दूसरों में नहीं है। खंजन पक्षी के विषय में तुम क्या जानते हो? पपीहा तालाब का पानी नहीं पीता है। चकवा के प्रेम का उदाहरण लगता है। मोर राजस्थान में अधिक पाए जाते हैं। कंक की पृष्ठ लोह के समान होती है। कुरर मछलियों को मारता है। गरुड़ सबसे ऊंचा उड़ता है।

धातु का प्रयोग करो

तुम भगवान महावीर की स्तुति करते हो। शांत-सुधारस का पान कर वह तृप्त हो गया। गुणवान् व्यक्तियों की स्तुति करने से अपना लाभ होता

है। यहा दीवार पर थूकना निषेध है। किसी का तिरस्कार नही करना चाहिए। वह पार्श्वनाथ की स्तुति किस प्रयोजन से करता है ? तुम्हारे दर्शन मात्र से मै संतुष्ट हो गया। मार्ग मे चलने वाला सांप विना सताए किसी को नही काटता है। उसने अपनी विद्यापीठ विनयकुमार को दिखलाई। जो अपना अवगुण देखता हैं वह साधक है।

प्रश्न

१ प्राकृत मे द्विवचन का क्या स्थान है ? उसको बताने के लिए क्या प्रयोग करना चाहिए ?

२ लिंग का निर्धारण करने के लिए प्राकृत मे सामान्य नियम क्या है ?

३. प्राकृत मे कितनी विभक्तियां होती हैं ?

४. सभी विभक्तियो के एकवचन और बहुवचन के प्रत्यय बताओ ?

५ पुंलिग के अकारान्त शब्द के लिए टा, सुप्, आम्, और भ्यम् प्रत्ययो के लिए क्या-क्या नियम हैं ? बताओ ?

६ तीतर, वटेर, खजन, पपीहा, सारस, चकवा, हस, मोर, कक, कुरर, घोसला और डाली के लिए प्राकृत शब्द बताओ।

७ थव, थिप, थुक्क, थुक्कार, थुण, थेप्प, दंस, दंसाव और दक्ख धातु के अर्थ बताओ और अपने वाक्य मे प्रयोग करो।

५७ शब्दरूप (२)

शब्द संग्रह (पक्षी वर्ग ३)

चमगादड—जउआ	उल्लू—उलूओ, उलूगो
बत्तक—वत्तओ	बाज—सेणो
भृग—भिगो	गौरैया—चडयो
मुर्गा—कुक्कुडो	क्रौञ्च—कोंचो
चाप—चासो	टिटिहिरी—टिट्टिभो

आकाश—आयास

धातु संग्रह

दम—दमन करना, निग्रह करना	दव—गति करना
दय—कृपा करना, चाहना	अड्च—अभिषेक करना
दलय—देना	दार—विदारना, चूर्ण करना, तोडना
दलाव—दिलाना	दाव—दान करवाना, दिलाना
दवाव—दिलाना	

पुंलिग अकारान्त, इकारान्त, उकारान्त शब्द

नियम ४७० (अक्लीवे सौ ३।१९) नपुंसक को छोडकर सि परे रहने पर इकार और उकार दीर्घ हो जाता है। मुणी, साहू।

नियम ४७१ (पुंसि जसो डउ डओ वा ३।२०) पुलिंग मे इकार और उकार से परे जस् को डउ (अउ) और डओ (अओ) आदेश होते हैं। मुणउ, मुणओ। साहउ, साहओ।

नियम ४७२ (जस्-शसो र्णो वा ३।२२) पुलिंग मे इकार और उकार से परे जस् तथा शस् को णो आदेश विकल्प से होता है। मुणिणो, मुणी। साहुणो, साहू।

नियम ४७३ (लुप्ते शसि ३।१८) शस् का लोप होने पर इकार और उकार दीर्घ हो जाता है। मुणी, वुद्धी, तरू, धेणू।

नियम ४७४ (इदुतो दीर्घः ३।१६) भिस्, भ्यस्, सुप् परे रहने पर इकार और उकार दीर्घ हो जाता है। मुणीहिं, वुद्धीहिं, दहीहिं। साहूहिं, धेणूहिं, महूहिं। मुणीओ, वुद्धीओ, दहीओ। साहूओ, धेणूओ, महूओ। मुणीसु, वुद्धीसु, दहीसु। साहूसु, धेणूसु, महूसु।

नियम ४७५ (टो णा ३।२४) पुंलिग तथा नपुंसक लिंग में इकार और उकार से परे टा को णा होता है। मुणिणा, गामणिणा। साहुणा, खलपुणा। दहिणा, महुणा।

नियम ४७६ (ङसि-ङसोः-पुं-क्लीबे वा ३।२३) पुंलिग तथा नपुंसक लिंग में वर्तमान इकार और उकार से परे ङसि तथा ङस् को विकल्प से णो होता है। मुणिणो, साहुणो। दहिणो, महुणो। मुणीओ, मुणीउ, मुणीहिंतो। साहूओ, साहूउ, साहूहिंतो। मुणिस्स, साहुस्स।

नियम ४७७ (ईदूतो ह्रस्वः ३।४२) संबोधन में ईकारान्त और ऊकारान्त शब्द को ह्रस्व होता है। हे गामणि, हे वहु। हे खलपु।

नियम ४७८ (वो तो डवो ३।२१) पुंलिग में उकार से परे जस् को डवो (अवो) आदेश विकल्प से होता है। साहवो, साहओ, साहउ।

नियम ४७९ (क्विपः ३।४३) क्विप् प्रत्यान्त ईकारान्त और ऊकारान्त शब्द हों तो वे ह्रस्व हो जाते हैं। गामणिणा, खलपुणा। गामणिणो, खलपुणो।

प्रयोग वाक्य

जउआ निसाए उड्डेइ। वत्तओ पाओ जले वसइ। उलूओ दिणे पासिउ न सक्कइ। सेणो पक्खिणो हणइ। चडयो नीडं णिम्माइ। कुक्कुडो सूरियोदयस्स पुव्वमेव णियतसमये जपइ। टिट्टिभस्स जपणं को जाणइ? चासो पक्खी कम्मि पएसे वसइ? कोंचस्स विसये किं तुमं जाणसि? भिंगो एगस्स पक्खिणो अभिहाणं विज्जइ।

धातु प्रयोग

साहुणो इंदियाइं दमेइ। साहू सावगं दयइ। धणी णिद्धणाय वत्थं दलयइ। रमेसो सोहणस्स धणं दलावेइ, दवावेइ वा। मुणी गामाणुगामं दवइ। निवो नियपुत्तं अइचइ। साहू जणाणं णाणं देइ। तुज्झ कडुवयणं मज्झ हिययं दारइ। तावसो धणिं दावइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

बत्तख जल में अधिक रहती है। उल्लू की आंखें मोटी होती हैं। बाज से पक्षी डरते हैं। गौरैया उछल-उछल कर चलती है। मुर्गे का शब्द सुनकर लोग समय का अनुमान लगाते हैं। क्रौंच पति पत्नी साथ रहते हैं। टिटिहिरी क्या बोलती है? चाष क्या खाना पसंद करता है? भृंग उड़ने वाला एक पक्षी है। चमगादड़ आकाश में उड़ते समय अपने पंखों को अधिक हिलाता है।

धातु का प्रयोग करो

सासू के उपालंभ देने पर बहू अपने मन का दमन करती है। श्रावक

ने साधु से प्रार्थना की कि मेरे घर पधारने की कृपा करें। साधु निःस्वार्थ उपदेश देते हैं। आचार्य शिष्य को उसकी त्रुटि पर ध्यान दिलाते हैं। जो गति करता है वह अपने गन्तव्य स्थान पर पहुंच जाता है (पहुच्चइ)। आज कौन राजा का अभिषेक करेगा? जीवन का मान रखना बहुत कठिन कार्य है। तुम्हारा व्यवहार मेरे हृदय को तोड़ता है। अध्यापक सेठ से गरीब लड़के को पुस्तकें दिलाता है।

प्रश्न

१. पुंलिंग उकारान्त शब्द से परे ङसि और ङस् को क्या आदेश किस नियम से होता है? उसका क्या रूप बनता है? लिखो।

२ शस्, भिस्, भ्यस् और सुप् प्रत्यय परे होने पर अकारान्त पुंलिंग शब्द के उकार को दीर्घ भिन्न-भिन्न नियम से होता है? उनके रूप भी लिखो।

३. ङि प्रत्यय परे होने पर उकारान्त शब्द के उकार को दीर्घ करने वाला कौन सा नियम है?

४. पुंलिंग उकारान्त शब्द से परे जस् और शस् प्रत्यय को किस नियम से क्या-क्या होता है? उसका रूप भी लिखो।

५. चमगादड़, उल्लू, बत्तख, बाज, गौरैया, मुर्गा, क्रौंच, टिटिहरी, भृंग और चाष पक्षियों के लिए प्राकृत के शब्द लिखो।

६. दम, दय, दव, दार दाय, अटच, दलय, दवाव और दलाव धातुओं के अर्थ बताओ तथा उन्हें वाक्य में प्रयोग करो।

शब्दरूप (३)

शब्द सग्रह (पशु वर्ग १)

सिंह—सीहो, सिंघो, केसरी
वाघ—साद्दुलो, वग्घो
हाथी—हत्थी, करी, गयो
भैंसा—महिसो
खच्चर—वेसरो

चीता—चित्तो
भालू, रीछ—भल्लू, रिच्छो
घोडा—घोडओ, आसो
गेडा—गडयो खग्गी (पु)
चितकवरा—चित्तो

० ० ० ०

सीग—विसाण
घोडे के मुख को वाधने का वस्त्र—कडाली

पूछ—पुच्छ
शोभा—सोहा

धातु सग्रह

दिक्ख—दीक्षा देना
दिप्प—चमकना
दिप्प—तृप्त होना
दियाव—देना
तिरोहा—अन्तर्हित होना, अदृश्य होना, लोप करना

दिस—कहना
दुक्ख—दर्द होना
दुम्मण—उद्विग्न होना, उदास होना
दुरुह—आरूढ होना, चढना
दुस्स—द्वेष करना
दिव—क्रीडा करना

ऋकारान्त पितृ शब्द

ऋकारान्त शब्द दो तरह के माने जाते हैं—(१) सवधसूचक विशेष्य और (२) सवध सूचक विशेषण। जो शब्द मूलत. ऋकारान्त हैं वे सबंधसूचक विशेष्य हैं। जैसे—जामातृ, पितृ, मातृ, भ्रातृ आदि। जो शब्द तृच् या तृन् प्रत्ययान्त हैं वे संवधसूचक विशेषण हैं। जैसे—कर्तृ, दातृ, भर्तृ आदि। प्रथमा तथा द्वितीया के एक वचन को छोडकर शब्द के अंतिम ऋकार को विकल्प से उ हो जाता है। तव वह उकारान्त शब्द वन जाता है। उसके रूप साहु की तरह चलते है। विकल्प के दूसरे पक्ष मे शब्द के अतिम ऋकार को अर तथा आर हो जाता है। शब्द अकारान्त होने से उसके रूप वच्छ की तरह चलते हैं। सस्कृत का पितृ शब्द प्राकृत मे पितु, पिउ, पितर और पिअर के रूप मे प्रयोग मे आता है। पितु का रूप पिउ और पितर का रूप पिअर

की तरह चलता है। पिआ और पिअर आदि रूपों के स्थान पर पिया और पियर रूप भी उपलब्ध होता है।

भाउ, भायर (भ्रातृ) भाई
जामाउ, जामायर (जामातृ) जमाई
दाउ, दायर (दातृ) दाता
कत्तु, कत्तार (कर्तृ) कर्ता
भत्तु, भत्तार (भर्तृ) भरण पोषण करने वाला।

इस प्रकार पुलिंग ऋकारान्त शब्द के रूप पितृ की तरह चलते हैं।

नियम ४८० (ऋतामुदस्यमौसु वा ३।४४) सि, अम्, औ को छोड़कर स्यादि प्रत्यय परे हों तो ऋकारान्त शब्दों को विकल्प से उकार हो जाता है। जस्—भत्तू, भत्तुणो, भत्तउ, भत्तओ। टा - भत्तुणा।

नियम ४८१ (आरः स्यादौ ३।४५) सि आदि परे रहने पर ऋकार को आर आदेश होता है। भत्तारो, भत्तारा, भत्तारं भत्तारे, भत्तारेण।

नियम ४८२ (नाम्न्यरः ३।४७) संज्ञावाची ऋदन्त शब्दों के ऋ को सि आदि परे रहने पर अर आदेश होता है। पिअरा, पिअर, पिअरे, पिअरेण, पिअरेहि। भायरा, भायर, भायरे, भायरेण, भायरेहि।

नियम ४८३ (आ सौ न वा ३।४८) ऋदन्त शब्द को सि परे रहने पर आ विकल्प से होता है। पिआ, जामाया, भाया।

नियम ४८४ (ऋतोद् वा ३।३९) संबोधन में सि परे रहने पर ऋकारान्त शब्द के अंतिम स्वर को अ विकल्प से होता है। हे पिअ। हे भाय।

नियम ४८५ (नाम्न्यरं वा ३।४०) संज्ञावाचक ऋकारान्त शब्द से परे संबोधन का सि परे हो तो ऋकार को अर आदेश विकल्प से होता है। हे पिअर, हे पिअ (हे पितः)। जहां संज्ञा न हो वहां हे कत्तार (हे कर्त्तः)।

प्रयोग वाक्य

सीहस्स सिरे केसरो भवइ। वग्घो धुत्तो होइ सो रन्नम्मि तिरोधाऊण पहारेइ। चित्तस्स सरीरे चित्ती भवइ। भल्लू पायवम्मि आरोहइ। राया हत्थिंसि आरोहिसु। सुरेसस्स गिहे अज्जावि आसो अत्थि। महिसो बहुभारं वहइ। जणा खग्गिस्स चम्मस्स फलग (ढाल) करेइ। कडालीइ घोडस्स सोहा भवइ। वेसरो गद्दभत्तो आसत्तो य भिन्नो भवइ। पसूण विसाणाइं परा मारिउं णियरक्खणट्ठ य सत्थं भवइ।

धातु प्रयोग

आयरिएण दसविरत्ताप्पाणो दिक्खिआ। भयवाण मुहो अइ दिप्पइ। तुज्झ गीइयं सुणिऊण अहं दिप्पामि। देवा देवीओ गावि दिवंति। 'महावीरेण

जणहियस्स उवएसो दिस्सिओ। उवालभं सुणिऊणं सो दुक्खइ। तुम केण कारणेण दुम्मणसि ? रमेसो आस दुरुहइ। केणावि सह न दुस्सिअव्वं। चंदो जलदेसु तिरोहाइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

सिह वन का राजा होता है। बाघ हिसक प्राणी है। चीता आक्रामक (अक्कामओ) होता है। भालू काले रग का होता है और वृक्ष पर उल्टा चढता है। हाथी का शरीर स्थूल होता है फिर भी वह अंकुश से वश मे होता है। घोडा तेज क्यो दौडता है ? भैसे मे प्रतिशोध (पडिसोह) की भावना होती है। गेडे के सीग का क्या उपयोग होता है ? खच्चर भारवाही पशु होता है। जिसके सीग और पूछ होता है वह पशु होता है।

धातु का प्रयोग करो

तुम किसके पास और कब दीक्षा लोगे ? आकाश मे तारे चमकते है। वस्तु के मिलने और न मिलने पर भी वह तृप्त रहता है। बच्चे आगण मे क्रीडा करते है। उसने सत्य कहा है। वह किसलिए दुखित होता है। कौनसा कार्य तुम्हारा न होने से तुम उदास हो गए ? जो चढता है वही गिरता है। किसी के प्रति द्वेष करना सज्जन व्यक्ति का कार्य नही है। कभी-कभी सूर्य भी अदृश्य होता है।

प्रश्न

१ ऋकारान्त शब्द कितने प्रकार के होते है ? प्रत्येक प्रकार के उदाहरण देकर समझाओ।

२ सस्कृत का ऋकारान्त शब्द प्राकृत मे किस रूप मे बदल जाता है ? और उसके रूप किस शब्द की तरह चलते हैं ?

३. ऋकारान्त शब्द को उकार और आर आदेश किस स्थिति मे होता है और किस नियम से ?

४ सि प्रत्यय परे रहने पर ऋकारान्त शब्द को किस नियम से क्या आदेश होता है ?

५ सिंह, चीता, बाघ, रीछ, हाथी, घोडा, भैसा, गेडा और खच्चर के लिए प्राकृत के शब्द बताओ ?

६ दिक्ख, दिप्प, दिव, तिरोहा, दिस, दुक्ख, दुम्मण, दुरुह और दुस्स धातुओ के अर्थ बताओ तथा उन्हें वाक्य मे प्रयोग करो।

नियम ४६१ (ईद्भिस्भ्यसाम्सुपि ३।५४) राजन् शब्द से संबधित जकार को भिस्, भ्यस्, आम् और सुप् परे रहने पर विकल्प से इकार होता है। भिस्—राईहि। भ्यस्—राईहि। आम्— राईण। सुप्—राईसु।

नियम ४६२ (आजस्य-टा-ङसि-ङस्सु सणाणोष्वण् ३।५५) राजन् शब्द से सबधित आज को विकल्प से अण् आदेश होता है, टा, ङसि, ङस् को आदेश होने वाले णा तथा णो परे हो तो। रण्णा, राइणो। रण्णो राइणो। रण्णो राइणो। पक्षे राएण, रायाओ, रायस्स।

नियम ४६३ (पुंस्य न आणो राजवच्च ३।५६) पुंलिंग अन्नन्त शब्द के अन् को विकल्प मे आण आदेश होता है। पक्ष में यथादर्शन राजन् शब्द की तरह रूप चलते है। अप्पाणो, अप्पाणा। अप्पाण, अप्पाणे। अप्पाणेण, अप्पाणेहि। अप्पाणाओ, अप्पाणासुतो। अप्पाणस्स, अप्पाणाण। अप्पाणम्मि, अप्पाणेसु। पक्षे राजन्वत्।

नियम ४६४ (आत्मनष्टो णिआ णइआ ३।५७) आत्मन् शब्द से परे टा को विकल्प से णिआ तथा णइआ आदेश होते हैं। अप्पणिआ, अप्पणइआ। अप्पाणेण।

- आत्मन् शब्द अत्त, अप्प, अप्पाण शब्दो मे परिवर्तित हो जाता है। अप्पाण शब्द के रूप देव शब्द की तरह चलते हैं। अत्त और अप्प के लिए देखे परिशिष्ट १ सख्या १५।
- राजन् शब्द के सारे रूप परिशिष्ट १ सख्या १४ मे देखे।

प्रयोग वाक्य

सूअरो पुरीसं चिअ भक्खइ। सियारो माणुससिसुमवि खाअइ। छाउरनयरस्स वाहिं वणे किण्हो हरिणो वि अत्थि। लाडणुणयरस्स सुआणगढ-णयरस्स य अतरा मए गवयो दिट्ठो। मेसस्स दुद्ध पिवंति केइ जणा। कमेलयो मरुभूमीए जाण अत्थि। कमेलयो उरम्मि नीराण संगहो करेइ। गद्दभो रच्छाए भमइ। वडल्लो भार वहइ। अलमलो सरलवसहा कुबुद्धि देइ।

धातु प्रयोग

तस्स माआ धेणुओ दुहइ। सुशीला सीयाइ दुहइ (द्रोह करती है) कज्ज काऊण सो कहं दूअइ? गामाणुगामं दूइज्जमाणा मुणिणो अत्थ कया आगमिस्सति? तस्स पुत्तो पहसियो व्व (उपहास किए हुए की तरह) दूमइ। पेम्माभावे पुत्तो वि दूरायइ। तिणा पिट्ठ, किं हरिणो अइयाइंसु? सो इदियाइ देवइ। किं कोइ सूरियं देहइ? तुम मज्झ कह दोहसि?

प्राकृत में अनुवाद करो

सूअर गावो मे अधिक मिलते हैं। गीदड जगल मे रहते है और छल से आक्रमण करते है। हरिण छलाग लगाकर बहुत तेज दौडता है। भेड

मरुस्थल में अधिक पाए जाते हैं। नील गाय वन में देखने को मिलती है। ऊंट मरुभूमि में सबसे तेज और लम्बी दूरी तक चलने वाला पशु है। गधा आजकल मूल्यवान बन गया है। सिवालकी देश के बैल प्रसिद्ध होते हैं। दुष्ट बैल अपनी धूर्तता से मार खाता है।

धातु का प्रयोग करो

मेरी छोटी बहन गाय को दुहती है। पिता पुत्र के साथ क्यों द्रोह करता है? तुम स्वयं ही उत्पात करते हो। संत लोग गांव-गांव में जाते हैं। दृष्टि दोष से पास की वस्तु भी दूर मालूम पड़ती है। साधुओं का संघ अभी यहां से गुजरा (गया) है। क्या तुम मन को जीतने की इच्छा नहीं करते? वह अपने दोषों को देखता है। वह समाज के साथ द्रोह करता है।

प्रश्न

१. गया, गड्डणं, गद्दभु, अप्पाणो, रासहो, अगालिआ— इन शब्द रूपों को सिद्ध करो और बताओ भिन्न-भिन्न नियम से क्या हुआ है?

२. आत्मन् शब्द प्राकृत में किन शब्दों के रूप में परिवर्तित हो जाता है और उनके रूप कैसे चलते हैं?

३. सूअर, गीदड़, हरिण, नीलगाय, भेड़, ऊंट, गधा, बैल, दुष्ट बैल—इन शब्दों के लिए प्राकृत में क्या-क्या शब्द हैं?

४. दुह, दुह्, द्रु, दुगुच्छ, दूम, दुगाय, अट्टया, देव, देह और द्रोह धातुओं के अर्थ बताओ और अपने वाक्य में प्रयोग करो।

५. चरावाओ, सावगो, तित्तिरो, पक्खो, वनओ, रिच्छो, वग्घो, गड्डो शब्दों का वाक्य में प्रयोग करो तथा हिन्दी में अर्थ बताओ।

शब्द संग्रह (पशु वर्ग ३)

भेड़िया—विओ, कोओ
लगूर—गोलागूलो (स)
बिल्ली—मज्जारो, बिडालो
चूहा—मूसियो
बकरा—अजो
वदर—वाणरो
कुत्ता—कुक्कुरो, सारमेयो
उदविडाल—उदविडालो
खरगोश—ससो
साड—गोपती (पु)

धातु संग्रह

पत्तिअ—विश्वास करना
पत्था—प्रस्थान करना
पदूस—द्वेष करना
पप्फुर—फरकना
पप्फुल्ल—विकसना
पवध—विस्तार से कहना
पम्हुस—चोरी करना
पम्हुस—भूलना
पय—पकाना
पया—प्रयाण करना

स्त्रीलिंग आकारान्त, इवर्णान्त, उवर्णान्त, ऋकारान्त शब्द

नियम ४६५ (स्त्रियामुदोतौ वा ३।२७) स्त्रीलिंग मे वर्तमान सज्ञा शब्दो से परे जस् एव शस् प्रत्यय के स्थान पर विकल्प से उ, ओ तथा पूर्व स्वर को दीर्घ हो जाता है। जस्—मालाओ, मालाउ, माला। शस्—मालाओ, मालाउ, माला। जस्—मईओ, मईउ, मई। शस्—मईओ, मईउ, मई। वाणीओ, वाणीउ, वाणी। वाणीओ, वाणीउ, वाणी। धेणुओ, धेणउ, धेणू। धेणुओ, धेणुउ, धेणू। वहूओ, वहूउ, वहू। वहूओ, वहूउ, वहू।

नियम ४६६ (ह्रस्वोमि ३।३६) स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द के अंतिम स्वर को ह्रस्व हो जाता है, अम् प्रत्यय परे होने पर। मालं। वाणिं। वहुं।

नियम ४६७ (टा-ङस्-ङे रदादिदेद्वा तु ङसेः ३।२६) स्त्रीलिंग शब्द से परे टा, ङस् और ङि के स्थान पर अ, आ, इ तथा ए होते हैं। ङसि को ये आदेश होने के साथ पूर्वस्वर दीर्घ विकल्प से होता है। मईअ, मईआ, मईइ, मईए। वाणीअ, वाणीआ, वाणीइ, वाणीए। धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए। वहूअ वहूआ, वहूइ, वहूए।

नियम ४६८ (नात आत् ३।३०) स्त्रीलिंग मे वर्तमान आकारान्त शब्द से परे टा, ङस्, ङि और ङसि को पूर्वनियम के अनुसार होने वाला

क्यो भूलते हो ? वह खीर पकाता है। तुम आत्म साधना के लिए प्रयाण करते हो।

प्रश्न

१ स्त्रीलिंग मे शब्द से परे जस् और शस् के स्थान पर क्या आदेश होता है ?

२ स्त्रीलिंग मे टा, ङसि और ङि के स्थान पर क्या आदेश होता है ? और कहा नही होता।

३. स्त्रीलिंग मे आकारान्त, इवर्णान्त और उवर्णान्त शब्दो की सिद्धि में क्या समानता है ? और कहा अंतर है ?

४ भेडिया, बिल्ली, लंगूर, खरगोश, कुत्ता, चूहा, बदर, सांड, उदबिडाल, बकरा—इन शब्दो के प्राकृत में क्या शब्द है ?

५ पत्तिअ, पत्था, पद्दूस, पप्फुर, पप्फुल्ल, पवध, पम्हुस, पय और पया धातुओं के अर्थ बताओ तथा उनको अपने वाक्यो में प्रयोग करो।

परे आम् को विकल्प से डेसिं (एसिं) आदेश होता है। सव्वेसिं, अन्नेसिं, जेसिं, तेसिं, केसिं, इमेसिं।

नियम ५०७ (ङे स्सि म्मि त्थाः ३।५६) सर्व आदि अकारान्त शब्दो से परे ङि को स्सि, म्मि और त्थ आदेश होते हैं। सव्वस्सि, सव्वम्मि, सव्वत्थ। अन्नसि, अन्नम्मि, अन्नत्थ।

नियम ५०८ (न वानिदमेतदो हिं ३।६०) इदम् (इम) और एतद् (एअ) को छोडकर शेष अकारान्त सर्व आदि शब्दो से परे ङि को विकल्प से हिं आदेश होता है। सव्वहिं, अन्नहिं, कहिं, जहिं, तहिं।

प्रयोग वाक्य

हत्थिणिं दट्ठु जणा सगहिआ। पाडी वहुरम्मा लग्गइ। छालीइ दुद्ध खिप्प पयइ। सउणचडया दाहिणपासे ठिआ सुहा भवइ। वेसरिं दट्ठु सो कत्थ गओ? सियाली गामम्मि न वसइ। गावीए पयं महुर भवइ। पडत्थीइ मुल्लो वहु भवइ। सुणई जुगवं पञ्च वा छ वा जणइ। चडया वहु जपइ। इमी उट्टी वहुवेगेण धावइ। सुसीला हत्थेण भित्तिं विलिहइ।

धातु प्रयोग

फलस्स वीयो कह फफइ? सो पच महव्वयाइ फासइ। सो कट्ठ फाडइ। उसिणेण पाणिएण तण्हा वि न फिट्टइ। तुमं णियसरीरं फुंसइ। मज्झ दाहिणभुआ फुरइ। सीयकाले कमेलयस्स मुहम्मि फेणायइ। भिक्खू तालियटेण अप्पणो काय न फुमेज्जा। पुव्व वीय फुटइ पच्छा पत्ताइं।

धातु का प्रयोग करो

इस गाव मे हाथी नही हथिनी है। जो सोता है उसके पाडी पैदा नही होती। वकरी गाव के बाहर चरने के लिए गई है। चिडिया तिनके लाकर क्या वनाती है? सोनचिडी हरे वृक्ष पर बैठी है। खच्चरी का क्या मूल्य है? मैंने कल रात सियाली की आवाज सुनी। वहुत दूध देने वाली भैंस को वह खरीदना चाहता है। गायो मे काली गाय सवसे उत्तम होती है। मेरी साड (ऊटनी) आज टमकोर जाएगी। तुम कागज पर हाथ से किस चित्र की रेखा करते हो?

धातु का प्रयोग करो

वह वात-वात मे उछलता है। साधु स्त्रियो का स्पर्श नही करते। वह कपडे को फाडता है। तेरे व्यवहार से मेरा मन फट गया। गर्मी मे वह वार-वार पसीने को पोछता है। यदि पुरुष का दाहिना अंग फरकता है तो वह शुभ है। दूध के झाग वहुत रुचिकर लगते हैं। नुशीला अग्नि को जलाने के लिए फूक मारती है। पुष्प से पहले अंकुर (अंकुरे) फूटते है।

शब्द संग्रह (स्फुट)

पडिल्ली—परदा, यवनिका
पडिवेसिओ—पडौसी
सुण्ण—खाली, रिक्त
पणो—शर्त, होड
पयारणं—ठगाई
तुमुलो—शोरगुल
पत्थयणं—पाथेय
पमइलो (वि)—अतिमलिन
परिवेसण—परोसना
पडिजायणा—प्रतिबिंब, परछाई
परिजुसियं—वासी
अट्टणं—व्यायाम

———o———o———o———o———

पात्र—पत्त

धातु संग्रह

वध—बाधना
वाह—विरोध करना
विह—डरना
बुब्बुअ—बकरे का बोलना
बोध—समझना, ज्ञान करना
बुव—बोलना
वहू—पुष्ट करना
वेस—बैठना
बू—बोलना
आमुस—आमर्श करना, एक बार स्पर्श करना, छूना

इम, एअ, क, त, ज, शब्द

नियम ५०९ (इदमेतत् किं यत्तदभ्यष्टो डिणा ३।६९) अकारान्त (इम, एअ, क, त, ज) शब्दो से परे टा को डिणा (इणा) आदेश विकल्प से होता है। इमिणा, इमेण। एदिणा, एदेण। किणा, केण। जिणा, जेण। तिणा, तेण।

नियम ५१० (किं यत्तद्भ्यो डसः ३।६३) क, त, ज शब्दों से परे ङस् को डास (आस) आदेश विकल्प से होता है। कास, कस्स। जास, जस्स। तास, तस्स।

नियम ५११ (ङे डाहे डाला इआ काले ३।६५) काल अर्थ में वर्तमान क, त, ज शब्दो से परे ङि को डाहे (आहे) डाला (आला) तथा इआ आदेश विकल्प से होता है। काहे, काला, कइआ (किस समय में)। जाहे, जाला, जइआ (जिस समय मे)। ताहे, ताला, तइआ (उस समय में)।

नियम ५१२ (ङसेर्म्हा ३।६६) किं, यत् और तत् शब्दो से परे

ङस् के स्थान पर म्हा आदेश विकल्प से होता है। कम्हा, काओ (किससे)। जम्हा, जाओ (जिससे)। तम्हा, ताओ (उससे)।

नियम ५१३ (ईद्भ्यः स्सा से ३।६४) ईकारान्त की (किम्), जी (यत्), ती (तत्) आदि शब्दों से परे ङस् को स्सा तथा से आदेश विकल्प से होता है। किस्सा, कीसे, कीअ, कीआ, कीइ, कीए। (किसका) जिस्सा, जीसे, जीअ, जीआ, जीइ, जीए। (जिसका) तिस्सा, तीसे, तीअ, तीआ, तीइ, तीए। (उसका)।

नियम ५१४ (तदश्च तः सोऽक्लीबे ३।८६) तद् और एतद् के तकार को सि (नपुंसक छोडकर) परे होने पर स हो जाता है।

नियम ५१५ (वैतत्तदः ३।३) एतद् और तद् शब्द के अकार से परे सि को डो विकल्प से होता है। एसो, एस (एषः) सो णरो, स णरो (स नरः)।

नियम ५१६ (तदो णः स्यादौ क्वचित् ३।७०) तद् शब्द को कहीं-कहीं ण आदेश होता है स्यादि विभक्ति परे हो तो। णं पेच्छ (तं पश्येत्) स्त्रीलिंग में भी—*हत्थुन्नामिअ-मुही णं तिअडा (हस्तोन्नामितमुखी तां त्रिजटा)*।

नियम ५१७ (तदो डोः ३।६७) तद् शब्द से परे ङसि को डो (ओ) आदेश विकल्प से होता है। तो, तम्हा (तस्मात्)।

नियम ५१८ (वेदं तदेतदो ङसाम्भ्यां से-सिमौ ३।८१) इदम्, तद् तथा एतद् शब्द से परे ङस् और आम् हो तो शब्द सहित ङस् को से और आम् को सिं आदेश विकल्प से होता है। इदं+ङस्=से, तद्+ङस्=से, एतद्+ङस्=से, इद+आम्=सिं, तद्+आम्=सिं, एतद्+आम्=सिं।

नियम ५१९ (किंतद्भ्यां डासः ३।६२) किं तथा तद् शब्दों से परे आम् को डास (आस) आदेश विकल्प से होता है। कास, केसिं। तास, तेसिं।

नियम ५२० (किमः कस्त्र-तसोश्च ३।७१) किं शब्द को क होता है, सि आदि विभक्ति, त्र और तस् प्रत्यय परे हो तो। को, के, कं, केण। त्र—कत्थ। तस्—कओ, कत्तो, कदो।

नियम ५२१ (किमो डिणो-डीसौ ३।६८) किं शब्द से परे ङसि को डिणो (इणो) तथा डीस (ईस) आदेश विकल्प से होता है। किणो, कीस, कम्हा (कस्मात्)।

नियम ५२२ (किमः किं ३।८०) नपुंसक लिंग में किं शब्द से परे सि और अम् प्रत्यय हो तो विभक्ति प्रत्यय सहित शब्द को किं आदेश होता है। किं, किं।

प्रयोग वाक्य

तस्स दारम्मि पडिल्ली किमट्ठं अत्थि? मज्झ पडिवेसिणी मए सह सव्ववहारं करेइ। सुण्णगिहम्मि भूओ भमइ। तुज्झ पणो वेसस्स हियाय नत्थि।

तस्स पयारणजालम्मि तुम कह आगओ ? पत्थयण विणा जत्ताए आणदो नत्थि। पमडल वत्थ पासिऊण सो खिण्णो जाओ। तम्स परिवेसणे भेदभावो अत्थि। बालो पत्तसलिलं णियपडिजायण पासइ। परिजुसिय अण्णं न भुजेयव्व।

धातु प्रयोग

मुणी तुडियाणि पत्ताणि बधइ। तस्स पतेयवत्त तुम बाहसि। सो मूसिअत्तो वि विहइ। अपरिचिय माणुस पेहिऊणं कुक्कुरो बुक्कइ। अजासिसू माअर पासिऊण वुब्बुअइ। जो सया सच्चं बुवइ तस्स विस्सासो (वीसासो) भवइ। पयो सरीर बूहइ। तुम अत्थ कहं वेसइ ? गुरू सीस धम्म बोहइ। साहू विहारे थक्किओ अओ मग्गम्मि वेसइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

द्वार पर यवनिका देखकर वह भीतर नही गया। तुम्हारा पडोसी कौन है ? इस कमरे मे खाली स्थान नही है। युद्ध समाप्त करने के लिए उसकी शर्त क्या है ? वह ठगाई करना नही जानता। परभव का पाथेय क्या है ? भावना की दृष्टि से वह अति मलिन है। विवाह मे परोसना भी एक कला है। दर्पण मे अपना प्रतिबिम्ब दिखाई देता है। साग वासी हो सकता है पर मिष्टान्न नही।

धातु का प्रयोग करो

वह अपना विस्तर बाधता है। मेरे कथन का वह विरोध क्यो करता है ? बालक पिता से डरता है। बकरी किस कारण से बोलती है ? तुम क्या बोलते हो ? शोरगुल के कारण मै सुन नही पाता हू। वह पिता के सामने झूठ क्यो बोला ? क्या तुम व्यायाम से शरीर को पुष्ट करते हो ? तुम थक गए हो तो बैठ जाओ। उसको श्रम का महत्त्व समझना चाहिए।

प्रश्न

१ प्राकृत के क (किं) ज (यत्) और त (तत्) शब्द से परे डस् और डि प्रत्यय को किस नियम से क्या आदेश होता है ? उनके रूप बताओ।
२ तद्, एतद् और किं शब्दो के सारे रूप सिद्ध करो।
३ परदा, पडोसी, खाली, शर्त, ठगाई, पाथेय, अतिमलिन, परोसना, प्रतिबिम्ब, वासी, शोरगुल और व्यायाम के लिए प्राकृत शब्द बताओ और अपने वाक्य मे प्रयोग करो।
४ बध, बाह, विह, बुब्बुअ, बुव, बू, बूह, वेस और बोध धातु का अर्थ बताओ।
५ कमेलयो, अलमलो, रासहो, गोपती, गोलागुलो, विओ, उट्टी, वेसरी, खिखिरो शब्द को वाक्य मे प्रयोग करो तथा हिन्दी मे अर्थ बताओ।

शब्दरूप (८)

शब्द संग्रह (स्फुट)

परस्पर—परोप्परं, परुप्पर
खेत, क्षेत्र—खेत्तं, पल्लवाय (दे.)
खेत में सोने वाला पुरुष—पग्घिासो
वाचाल—मुहरो
अधिक चर्बी वाला—पमेडलो
झूला—डोला
सेवा—णिवेसणा
छावनी—छायणिआ
छिलका—छोडया
दुर्दशा—दुद्दसा

धातु संग्रह

भज—भागना, तोडना
भंड—भाण्डना, भर्त्सना करना
भंस—नीचे गिरना, नष्ट होना
भक्ख—खाना
भज्ज—भुनना
भद—सुख करना, कल्याण करना
भम—भ्रमण करना
भय—सेवा करना
भर—धारण करना, पोषण करना
भव—होना

इदं, अदस् और एतद्

नियम ५२३ (इदम इमः ३।७२) इद शब्द को इम आदेश होता है। सि आदि विभक्ति परे हो तो। इमो, इमे। इम, इमे। इमेण।

नियम ५२४ (पुंस्त्रियो नं वायमिमिआ सौ ३।७३) इद शब्द को सि परे होने पर पुलिंग में अयं तथा स्त्रीलिंग में इमिआ आदेश विकल्प से होता है। अयं, इमो। इमिआ, इमा।

नियम ५२५ (णोम् शस्टा भिसि ३।७७) अम्, शस्, टा तथा भिस् परे हो तो इद शब्द को ण आदेश विकल्प से होता है। णं, इम। णे, इमे। णेण इमेण। णेहि, इमेहि।

नियम ५२६ (अमेणम् ३।७८) इद शब्द को अम् विभक्ति सहित इणं आदेश विकल्प से होता है। इणं, इमं।

नियम ५२७ (स्सि-स्सयोरत् ३।७४) स्सि तथा स्स परे रहते पर इदं शब्द को 'अ' आदेश विकल्प से होता है। अस्सि, अस्स। इमस्सि, इमस्स।

नियम ५२८ (ङो मेंन हः ३।७५) इद शब्द को म आदेश होने पर ङि परे हो तो म सहित ङि को ह आदेश विकल्प से होता है। इह, इमस्सि,

इमम्मि ।

नियम ५२९ (न त्थः ३।७६) इद शब्द को ङि प्रत्यय से होने वाले आदेश स्सि, म्मि और त्थ मे से त्थ आदेश नही होता। इमस्सि, इमम्मि (इह)।

नियम ५३० (क्लीबे स्यमेदमिणमो च ३।७९) नपुसक लिग मे वर्तमान इद शब्द को सि और अम् सहित इद, इणमो और इण आदेश नित्य होते हैं। सि—इदं, इणमो, इण। अम्—इद, इणमो, इण।

नियम ५३१ (मुः स्यादौ ३।८८) अदस् शब्द के द को मु आदेश होता है, सि आदि विभक्ति परे हो तो। अमू पुरिसो। अमूणो पुरिसा। अमु वणं। अमूइ वणाइ। अमू माला। अमूउ, अमूओ, मालाओ।

नियम ५३२ (वादसो दस्य होनोदाम् ३।८७) अदस् शब्द के दकार को सि परे रहने पर ह आदेश विकल्प से होता है। अह।

नियम ५३३ (म्मावयेऔ वा ३।८९) अदस् शब्द के अतिम व्यजन लुप्त होने पर दकारान्त शब्द को म्मि परे रहने पर अय तथा इअ आदेश विकल्प से होता है। अयम्मि, इअम्मि, अमुम्मि।

नियम ५३४ (वैसेणमिणमो सिना ३।८५) एतद् शब्द से परे सि होने पर विभक्ति सहित एस, इण और इणमो आदेश विकल्प से होता है। एस, इण, इणमो, एअं।

नियम ५३५ (वैतदो ङसेस्तो त्ताहे ३।८२) एतद् शब्द से परे ङसि को त्तो और त्ताहे आदेश विकल्प से होता है। एत्तो, एत्ताहे, पक्षे एआओ, एआउ, एआहि, एआहिंतो, एआ।

नियम ५३६ (त्थे च तस्य लुक् ३।८३) त्थ, त्तो, एवं त्ताहे परे रहने पर एतद् शब्द के तकार का लोप होता है। एत्थ, एत्तो, एत्ताहे।

नियम ५३७ (एरदीतौ म्मौ वा ३।८४) एतद् के एकार को म्मि परे रहने पर अ एव ई आदेश विकल्प से होता है। अयम्मि, ईयम्मि, एअम्मि।

प्रयोग वाक्य

परुप्पर विवाओ न कायव्वो। पल्लवायम्मि किं अन्न होहिइ? परिवासो किं जाणइ निसाए नयरम्मि किं जाअं? मुहुरस्स सुसीलस्स कत्थ वि सम्माणो न भवइ। तुम पमेइलो कया जाओ? अह मसाणम्मि साहुणं करेमि। मज्झ गिहम्मि वि डोला विज्जइ। णिवेसणाए मणुओ पिओ भवइ। भारहवासस्स छायणिआओ कत्थ-कत्थ मति? छोइया फलस्स सुरक्खं करेइ त विणा फलस्स दुद्दसा होइ।

धातु प्रयोग

निग्गं मज्झण्णं भजिअं। गुरुणा अविणीयस्सीसो भंडिओ। जो साहुणियमं न पालेइ सो भंसइ। छेणू नगरं भक्खइ। कन्ना को भज्जइ? तुमं कत्थ भमसि? भदंतो विणोदो अज्ज कत्थ विहरइ? किं तुमं मुहं भयसि? मोहणो णियगिहेण सह भरिसिमवि भरइ। किं तुमं जाणसि, कल्लं किं भविस्सइ?

प्राकृत में अनुवाद करो

समाज का आधार परस्पर सहयोग है। उस खेत में एक कुआ है। खेत में सोने वाला पुरुष खेत की सुरक्षा करता है। वाचाल आदमी का विश्वास नहीं होता। अधिक चर्बी वाला आदमी भीतर से कमजोर होता है। श्मशान की राख का तन से प्रयोग होता है। श्रावण (सावन) मास में मेरी बहन झूला झूल रही है। मेवा का फल बहुत मधुर होता है। छावनी शहर से कितनी दूर है? फल के साथ छिलके का भी मूल्य है।

धातु का प्रयोग करो

उसने अपने शत्रुओं को डांट दिया। समाज में बुरे आदमी की भर्त्सना करनी चाहिए। मनुष्य अपने आचरण से ही नीचे गिरता है। जो दिन में खाना खाता है उसको स्वास्थ्य लाभ मिलता है। वह गर्म रेत से चना भूनता है। साधु सबका कल्याण करते हैं। तुम रात में क्यों भ्रमण करते हो? वह धर्म की सेवा करता है। तुम किसका पोषण करते हो? जो धर्म करता है वह सुखी होता है।

प्रश्न

१. इदं शब्द के लिए इस पाठ में कितने नियम हैं और वे क्या कार्य करते हैं?
२. अदस् शब्द को अय तथा इअ आदेश कहां होता है?
३. अदस् शब्द के द को ह करने वाला कौनसा नियम है?
४. एतद् शब्द के तकार का लोप कहां होता है?
५. परस्पर, खेत, वाचाल, अधिक चर्बी वाला, श्मशान, झूला, मेवा, छावनी, छिलका के लिए प्राकृत शब्द बताओ?
६. भंज, भंड, भंस, भक्ख, भज्ज, भद, भम, भय और भर धातु के अर्थ बताओ तथा अपने वाक्य में प्रयोग करो।

शब्दरूप (६)

युष्मद् अस्मद् शब्द

शब्द संग्रह (रत्न और मणि)

मूगा—पवालो, पवाल
पन्ना—मरगयो, मरगय, मरअदो
पुखराज—पुप्फरागो, पुप्फरायो
हीरा—वइरो, वइरं
सूर्यकान्तमणि—सूरकतो
स्फटिकमणि—फलिहो
माणिक—माणिक्क
गोमेद—गोमेयो गोमेय
नीलम—इदनीलो, नीलमणि (पु स्त्री)
लहसुनिया— वेडुरिओ, वेरुलिय, वेडुज्जो
चंद्रकान्तमणि—चंदकतो
सर्पमणि—सप्पमणि (पु स्त्री)
मोती—मुत्ता

० ० ० ०

गीला, आर्द्र—अद्द (वि)
श्वासरोग—सासो
ज्वर—जरो
आयुर्वेद—आउव्वेयो

धातु संग्रह

सवेल्ल—लपेटना
सवस—साथ मे रहना
सविभाव—पर्यालोचन करना
समुज्झ—मुग्ध होना
आवील—पीडना, आपीडन करना
संवर—रोकना
सविद—जानना
संमिल्ल—सकोच करना
सलव—बातचीत करना
पवील—प्रपीडन करना

नियम ५३८ (युष्मदस्तं तुं तुवं तुह तुम सिना ३।६०) युष्मद् शब्द को सि सहित त आदि पाच आदेश होते हैं। त, तु, तुव, तुह, तुमं (त्वम्)

नियम ५३९ (भे तुब्भे तुज्झ तुम्ह तुय्हे उय्हे जसा ३।६१) युष्मद् शब्द को जस् सहित भे आदि छ आदेश होते हैं। भे, तुब्भे, तुज्झ, तुम्ह, तुय्हे, उय्हे (यूयम्)

नियम ५४० (ब्भो म्ह ज्झौ वा ३।१०४) युष्मद शब्द को आदेश ब्भ को म्ह और ज्झ आदेश विकल्प से होते है। तुम्हे, तुज्झे।

नियम ५४१ (तं तुं तुमं तुवं तुह तुमे तुए अमा ३।६२) युष्मद् शब्द को अम् सहित त आदि सात आदेश होते है। त, तु, तुम, तुव, तुह, तुमे, तुए (त्वाम्)

नियम ५४२ (वो तुज्झ तुब्भे तुय्हे उय्हे भे शसा ३।६३) युष्मद्

शब्द को शस् सहित वो आदि छ आदेश होते हैं। वो, तुज्झ, तुब्भ, तुब्भे, उय्हे, भे (युष्मान्)

नियम ५४३ (भे दि दे ते तइ तए तुमं तुमइ तुमए तुमे तुमाइ टा ३।९४) युष्मद् शब्द को टा सहित भे आदि ग्यारह आदेश होते हैं। भे, दि, दे, ते, तइ, तए, तुम, तुमइ, तुमए, तुमे, तुमाइ (त्वया)

नियम ५४४ (भे तुब्भेहिं उज्झेहिं उम्हेहिं तुय्हेहिं उय्हेहिं भिसा ३।९३) युष्मद् शब्द को भिस् सहित छ आदेश होते हैं। भे, तुब्भेहिं, उज्झेहिं, उम्हेहिं, तुय्हेहिं, उय्हेहिं (युष्माभिः)

नियम ५४५ (तइ तुव तुम तुह तुब्भा ङसौ ३।९६) युष्मद् शब्द को ङसि (पचमी के एक वचन) सहित पाच आदेश होते हैं। ङसि प्रत्यय को होने वाले त्तो, दो, दु, हि, हिन्तो, लुक् भी होते हैं। तइत्तो, तुवत्तो, तुमत्तो, तुहत्तो तुब्भत्तो। जहा जहा ब्भ रूप आए वहा सू ५४० से म्ह और ज्झ भी होगा। तुम्हत्तो, तुज्झत्तो। त्तो की तरह दो, दु, हि, हिन्तो और लुक् के भी रूप बनते हैं।

नियम ५४६ (तुय्ह, तुब्भ तहिन्तो ङसिना ३।९७) युष्मद् शब्द को ङसि सहित तीन आदेश होते हैं। तुय्ह, तुब्भ, तहिन्तो (त्वद्) सूत्र ५४० से तुम्ह और तुज्झ रूप और बनते हैं।

नियम ५४७ (तुब्भ तुय्होय्होम्हा भ्यसि ३।९८) युष्मद् शब्द को भ्यस् परे हो तो तुब्भ, तुय्ह आदि चार आदेश होते हैं। तुब्भत्तो, तुय्हत्तो, उय्हत्तो, उम्हत्तो, तुम्हत्तो, तुज्झत्तो (युष्मद्)। इसी प्रकार त्तो की तरह दो, दु, हि, हिन्तो, सुन्तो के भी रूप बनते हैं।

नियम ५४८ (तइ तु ते तुम्हं तुह तुहं तुव तुम तुमे तुमो तुमाइ दि दे इ ए तुब्भोब्भोय्हा ङसा ३।९९) युष्मद् शब्द को ङस् (षष्ठी के एक वचन) सहित तइ आदि अठारह आदेश होते हैं। तइ, तु, ते, तुम्ह, तुह, तुहं, तुव, तुम, तुमे, तुमो, तुमाइ, दि, दे, इ, ए, तुब्भ, उब्भ, उय्ह, तुम्ह, तुज्झ, उम्ह, उज्झ (तव)

नियम ५४९ (तु वो भे तुब्भ तुब्भं तुब्भाण, तुवाण तुमाण तुहाण उम्हाण आमा ३।१००) युष्मद् शब्द को आम् सहित दस आदेश होते हैं। तु, वो, भे, तुब्भ, तुब्भं, तुब्भाण, तुवाण, तुमाण, तुहाण, उम्हाण (युष्माकम्)

नियम ५५० (तुमे तुमए तुमाइ तइ तए ङिना ३।१०१) युष्मद् शब्द को ङि (सप्तमी एक वचन) सहित पाच आदेश होते हैं। तुमे, तुमए, तुमाइ, तइ, तए (त्वयि)

नियम ५५१ (तु तुव तुम तुह तुब्भा ङौ ३।१०२) युष्मद् शब्द को ङि परे हो तो पाच आदेश होते हैं। ङि प्रत्यय को होने वाले आदेश भी होते है। तुम्मि, तुवम्मि, तुमम्मि, तुहम्मि, तुब्भम्मि, तुम्हम्मि, तुज्झम्मि।

नियम ५५२ (सुपि ३।१०३) युष्मद् शब्द को सुप् प्रत्यय परे हो तो तु, तुव, तुम, तुह, तुब्भ ये पाच आदेश होते है। तुसु, तुवेसु, तुमेसु, तुहेसु, तुब्भेसु। सू ५४० से तुम्हेसु, तुज्झेसु भी बनते हैं। (युष्मासु)

नियम ५५३ (अस्मदो म्मि अम्मि अम्हि ह अहं अहयं सिना ३।१०५) अस्मद् शब्द को सि सहित छ आदेश होते हैं। म्मि, अम्मि, अम्हि, ह, अहं, अहयं (अहं)

नियम ५५४ (अम्ह अम्हे अम्हो मो वयं भे जसा ३।१०६) अस्मद् शब्द को जस् सहित छ आदेश होते हैं। अम्ह, अम्हे, अम्हो, मो, वय, भे (वयम्)

नियम ५५५ (णे णं मि अम्मि अम्ह मम्ह मं ममं मिमं अहं अमा ३।१०७) अस्मद् शब्द को अम् (द्वितीया का एक वचन) सहित दश आदेश होते हैं। णे, ण, मि, अम्मि, अम्ह, मम्ह, मं, मम, मिम, अहं (माम्)

नियम ५५६ (अम्हे अम्हो अम्ह णे शसा ३।१०८) अस्मद् शब्द को शस् सहित चार आदेश होते हैं। अम्हे, अम्हो, अम्ह, णे (अस्मान्)

नियम ५५७ (मि मे ममं ममए ममाइ मइ मए मयाइ णे टा ३।१०९) अस्मद् शब्द को टा सहित नव आदेश होते हैं। मि, मे, मम, ममए, ममाइ, मइ, मए, मयाइ. णे (मया)

नियम ५५८ (अम्हेहि अम्हाहि अम्ह अम्हे णे भिसा ३।११०) अस्मद् शब्द को भिस् सहित पाच आदेश होते है। अम्हेहि अम्हाहि, अम्ह, अम्हे, णे (अस्माभि.)

नियम ५५९ (मइ मम मह मज्झ ङसौ ३।१११) अस्मद् शब्द को ङसि परे हो तो चार आदेश होते हैं। ङसि को आदेश त्तो आदि होते हैं। मइत्तो, ममत्तो, महत्तो, मज्झत्तो। त्तो की तरह दो दु, हि, हिन्तो और लुक् भी जोडकर रूप बनाए जाते हैं। (मद्)

नियम ५६० (ममाम्हौ भ्यसि ३।११२) अस्मद् शब्द से परे भ्यस् हो तो मम और अम्ह आदेश होते हैं। भ्यस् को आदेश त्तो आदि होते हैं। ममत्तो, अम्हत्तो (अस्मद्)। इसी प्रकार हिन्तो, सुन्तो के भी रूप बनते हैं।

नियम ५६१ (मे मइ मम मह महं मज्झ मज्झं अम्ह अम्हं ङसा ३।११३) अस्मद् शब्द को ङस् सहित नव आदेश होते है। मे, मइ, मम, मह, महं, मज्झ, मज्झं, अम्ह, अम्ह (माम्)

नियम ५६२ (णे णो मज्झ अम्ह अम्हं अम्हे अम्हो अम्हाण ममाण महाण मज्झाण आमा ३।११४) अस्मद् शब्द को आम सहित ग्यारह आदेश होते है। णे, णो, मज्झ, अम्ह, अम्हं, अम्हे, अम्हो, अम्हाण, ममाण, महाण, मज्झाण (अस्माकम्)

नियम ५६३ (मि मइ ममाइ मए मे ङिना (३।११५) अस्मद् शब्द को ङि सहित पांच आदेश होते हैं। मि, मइ, ममाइ, मए, मे (मयि)

नियम ५६४ (अम्ह मम मह मज्झा ङौ ३।११६) अस्मद शब्द को ङि परे हो तो चार आदेश होते है। ङि का आदेश म्मि होता है। अम्हम्मि ममम्मि, महम्मि, मज्झम्मि (मयि)

नियम ५६५ (सुपि ३।११७) अस्मद् शब्द को सुप् परे हो तो अम्ह, मम, मह और मज्झ चार आदेश होते है। अम्हेसु, ममेसु, महेसु, मज्झेसु। (अस्मासु)

प्रयोग वाक्य

पवालो आउव्वेयस्स दिट्ठीए अइसत्तिसपण्णो रयणो अत्थि। मरगयो हरियवण्णो खणिजो य विज्जइ। पुप्फरायो अणेगेसु वण्णेसु मिलइ। वइरो सुक्कगहस्स पियरयणो अत्थि। नीलमणी सणिवारे गहिअव्वो। गोमेयो आउव्वेयस्स दिट्ठीए अइलाभदो अत्थि। वेडुरिओ मज्जारस्स णयणाइ पिव विभाइ। अमुम्मि णयरे सूरकतो कस्स पासे अत्थि? फलिहो पारदसी भवइ। चदकतो सोमवारे अगुलीए गहिअव्वो। सप्पमणी सुलहा नत्थि। जेउर (जयपुर) णयरे माणिक्कस्स वावारो अत्थि न वा? मुत्तावलि दट्ठु अहं अत्थ आगओ।

धातु प्रयोग

सो अगुलीए अद्वत्थखड कह सवेल्लइ? तुमए सह अह न सवसामि। अह अवररत्तीए सविभावेमि। किं तुम तम्मि संमुज्झसि? सवरो कम्माइ सवरइ। सा नवतत्ताइ सविदइ। सो मुहु मुहु कह नेत्ताइ समिल्लइ? गोयरग्गगओ मुणि न सलवे।

प्राकृत में अनुवाद करो

मूगा मूल्यवान् होता है। पन्ने मे गर्मी सहने की शक्ति अधिक है। पुखराज विश्व विख्यात रत्न है। हीरा अनेक देशो मे प्राप्त होता है पर भारत का हीरा प्रसिद्ध है। नीलम श्वासरोग और ज्वर मे लाभदायक है। गोमेद के प्रभाव को ज्योतिषी और तात्रिक दोनो स्वीकार करते है। लहसुनिया केतु ग्रह के दुष्प्रभाव को दूर करता है। सूर्यकातमणि रविवार को पहनना चाहिए। चद्रकान्तमणि का क्या मूल्य है? माणिक नवरत्नो मे एक है। मोती सफेद और चमकदार होता हे।

धातु का प्रयोग करो

वह वात को लपेट कर कहता है। जो तुम्हारे साथ मे रहता है वह तुम्हे जानता है। क्या तुम एकान्त मे पर्यालोचन करते हो? वह अन्य पुरुष पर मुग्ध नही होती है। तुम त्याग से अपने पापो को रोकते हो। मैं तुम्हारा ज्ञान जानता हू। जो सकोच करता है, वह कौन है? तुम किसके साथ बातचीत करते हो?

प्रश्न

१. युष्मद् शब्द के ङसि प्रत्यय के क्या-क्या रूप बनते है ?
२. अस्मद शब्द के ङि प्रत्यय के क्या-क्या रूप बनते है ?
३ मूगा, पन्ना, पुखराज, हीरा, सूर्यकान्तमणि, स्फटिकमणि, गोमेद, नीलम, लहसुनिया, चंद्रकान्तमणि, सर्पमणि, माणिक और मोती के प्राकृत शब्द बताओ ।
४ सवेल्ल, सवस, सविभाव, समुज्झ, सवर, सविद, संमिल्ल, आवील, पवील और सलव धातुओ के अर्थ बताओ ।

६५ शब्दरूप (१०)

शब्द संग्रह (स्फुट)

पानी की तरंग—उल्लोलो
आग्रह—अभिणिवेसो
कपट—कइअवं
कठोर—कक्कसो
मनोरथ— मणोरहो
भक्ति—भत्ती
लावण्य—लायण्ण
अग्नि —हुव्वयाहो
सैन्यरचना —वूहं
ईर्ष्या—[illegible]

धातु संग्रह

भाव—चिंतन करना
भिंद—भेदना, तोडना
भिक्ख—भीख मागना
भिड—भिडना, मुठभेड करना
भुज—भोजन करना
मद्द—मालिश करना
भुक्क—भूकना
मत—मंत्रणा करना
मक्ख—चुपडना, (घी, तेल आदि मे)
मज्ज—स्नान करना

संख्या शब्द—

एक शब्द को छोडकर सभी संख्यावाची शब्द प्राकृत मे तीनो लिंगों मे एक समान चलते है।

नियम ५६६ (दुवे दोण्णि वेण्णि च जस्-शसा ३।१२०) जस् तथा शस् सहित द्वि शब्द को दुवे, दोण्णि, वेण्णि, तथा दो ये चार आदेश होते हैं। दुवे, दोण्णि, वेण्णि, दो ठिआ पेच्छ वा।

नियम ५६७ (द्वेर्दो वे ३।११९) तृतीया आदि विभक्तियो मे द्वि शब्द को दो और वे ये दो आदेश होते हैं। दोहि, वेहि। दोण्हं, वेण्ह। दोसु, वेसु।

नियम ५६८ (त्रेस्तिण्णि ३।१२१) जस् तथा शस् सहित त्रि शब्द को तिण्णि आदेश होता है। तिण्णि।

नियम ५६९ (त्रेस्ती तृतीयादौ ३।११८) तृतीया आदि विभक्तियो मे त्रि शब्द को ती आदेश होता है। तीहि।

नियम ५७० (चतुर श्चत्तारो चउरो चत्तारि ३।१२२) जस् तथा शस् के सहित चतुर् शब्द को चत्तारो, चउरो और चत्तारि आदेश होते हैं। चत्तारो, चउरो, चत्तारि चिट्ठति पेच्छ वा

नियम ५७१ (चतुरो वा ३।१७) उकारान्त चउ शब्द को भिस्,

भ्यस् और सुप् परे होने पर दीर्घ विकल्प से होता है। चऊहि, चउहि। चऊओ, चउओ। चऊसु, चउसु।

नियम ५७२ (संख्याया आमो ण्ह ण्हं ३।१२३) संख्या शब्दों से परे आम् को ण्ह तथा ण्हं आदेश होते हैं। दोण्ह, दोण्हं। तिण्ह, तिण्हं। चउण्ह, चउण्हं। इसी प्रकार पच, छ, सत्त, अट्ठ, णव और दस शब्दो के रूप बनते हैं।

नियम ५७३ (शेषेदन्तवत् ३।१२४) शब्द सिद्धि के लिए ऊपर नियम बताए गए हैं। आकार आदि शब्दो के लिए जो नियम नही बताए गए है उनके लिए आकार आदि सारे शब्द अदन्तवत् हो जाते हैं यानि अकारान्त शब्द के नियम ही उन शब्दो मे लगते हैं। जैसे (जस् शसो लुंक् ३।४) यह नियम अकारान्त शब्द के लिए कार्य करता है। अदन्तवत् होने के कारण आकार आदि शब्दो मे भी यह नियम कार्य करेगा। माला, गिरी, गुरू, सही, वहू रेहंति पेच्छ वा। इसी प्रकार अन्य स्यादि प्रत्ययो के लिए है।

० आकारादि शब्दों के लिए अदन्तवत् प्राप्त नियमों में निषेध—

नियम ५७४ (न दीर्घो णो ३।१२५) जस्, शस् और ङि प्रत्यय को आदेश णो प्रत्यय परे हो तो इदन्त और उदन्त शब्द दीर्घ नही होता है। अग्गिणो, वाउणो।

नियम ५७५ (ङसे र्लुक् ३।१२६) आकारान्त आदि शब्द अदन्तवत् होने पर प्राप्त ङसि का लुक् नहीं होता है। मालत्तो, मालाओ, मालाउ, मालाहिंतो एव अग्गीओ, वाऊओ इत्यादि।

नियम ५७६ (भ्यसश्च हिः ३।१२७) आकारान्त आदि शब्द अदन्तवत् होने पर प्राप्त भ्यस् और ङस् को हि नही होता है। मालाहिंतो, मालासुंतो। एव अग्गीहिंतो इत्यादि।

नियम ५७७ (ङे र्डे: ३।१२८) आकारान्त आदि शब्द अदन्तवत् होने पर प्राप्त ङि को ङे नही होता है। अग्गिम्मि, वाउम्मि।

नियम ५७८ (एत् ३।१२९) आकारान्त आदि शब्द अदन्तवत् होने पर टा, शस्, भिस् और सुप् प्रत्यय परे होने पर एकार नही होता है।

प्रयोग वाक्य

समुद्दस्स उल्लोला कत्थ गमिस्संति? अभिणिवेसेण सच्चं दूरं गच्छइ। कडअवजुत्तववहारो केसिमवि पिओ न लग्गइ। कक्कसवयणं परस्स हिअय भजइ। सावगाणं तिण्णि मणोरहा पसिद्धा सति। उज्जमेण पक्खिणो वि णियउअर भरति। पेक्खाझाणेण सहावो परियट्टइ। भत्तीए भगवंतो वि पसीअइ। थीणं लावण्ण आभूसण विव भाइ। हुव्ववाहो सव्वाणि वत्थूणि भस्सीकुणइ।

धातु प्रयोग

सुहभावणं भावेज्ज । तुम कहं भित्ति भिदसि ? सो सरीरबलेण समत्थो अत्थि तहवि भिक्खइ । मोहणो मोहणेण सह भिडिस्सइ । सुणयो परसुणयं पासिऊणं च्चिअ भुक्कइ । सो तुमाए सह कल्लि पच्छे मंतइ । भगिणी रट्टिआओ घएण मक्खइ । अज्जत्त बहिणीओ दिणे वले (एव) मह मज्जंति । गामो णियमाणि मट्टइ ।

प्राकृत में अनुवाद करो

पानी की तरंगो की तरह मनुष्य का जीवन अस्थिर है । उसके आग्रह के कारण संधि नहीं हो सकी । कपट से स्त्री की योनि मिलती है । किसी के साथ कठोर व्यवहार मत करो । क्या किसी भी व्यक्ति के सब मनोरथ फलित हुए हैं ? संयम से उद्यम करना चाहिए । यदि स्वभाव-परिवर्तन नहीं होता हो तो साधना का क्या प्रयोजन है ? भक्तिरस का प्रमुख (पमुह) कवि कौन है ? तुम्हारा लावण्य ईर्ष्या का कारण बनता है । अग्नि सबके साथ समान व्यवहार करती है ।

धातु का प्रयोग करो

वह अनित्य भावना का चिंतन करता है । उसकी सैन्य रचना को तोड़ना चाहिए । जो भीख मांगता है वह कौन है ? तुम्हारी प्रकृति कैसी है सबके साथ भिड़ जाते हो ? सदा गरिष्ठ(गरिट्ठ) भोजन नहीं करना चाहिए । कुत्ता रात में भौंकता है और दिन में भी । उन्हें कानों से मंत्रणा नहीं करनी चाहिए । पुत्रवधू फुलका चुपड़ती है । वह शीतकाल में भी ठंडे पानी से नहाता है । नौकर (भिच्चो) वेतन लेकर मालिश करता है ।

प्रश्न

१. संख्यावाची शब्दों से परे आम् को क्या आदेश होता है ?
२. पंचमी विभक्ति में द्वि शब्द को क्या आदेश होता है ?
३. चत्तारि आदेश कहां होता है ?
४ पानी की तरंग, आग्रह, कपट, कठोर, मनोरथ, ईर्ष्या, उद्यम, स्वभाव, भक्ति, लावण्य, अग्नि, सैन्यरचना आदि शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ ।
५. भाव, भिद, भिक्ख, भिड, भुंज, भुक्क, मंत, मक्ख, मज्ज और मट्ट— इन धातुओं के अर्थ बताओ तथा वाक्य में प्रयोग करो ।
६. पत्ययणं, पणी, अट्टणं, णिवेसणा, छायणिआ, परिवासो, बहुरं गोमेयं, वेरुलियं शब्दों को वाक्य में प्रयोग करो तथा हिन्दी में अर्थ बताओ ।

वर्तमानकालिक प्रत्यय

शब्द संग्रह

तंबू—पडवा	लक्षण—लक्खणं
कुशल—कुसलो	विघटन—विहडणं
युद्ध—जुज्झ	खंडन—विसारण
जीर्ण—जुन्न, जुण्णं	पवित्र, निर्दोष—अणहो
फोटु—पडिच्छाया	पाप—अणो
नास्तिक—णत्थिओ (वि)	पडोसी—पाडोसिओ

धातु संग्रह

धर—धारण करना	धंस—नष्ट होना
धरिस—प्रगल्भता, ढीठाइ करना	धिप्प—चमकना
धीरव—सान्त्वना देना	धुण—कपाना
धस—धसना, नीचे जाना	धुव—धोना
धा—धारण करना	धा—दौडना
धा—ध्यान करना, चिंतन करना	

धातु रूप

१ शब्दो की तरह धातु के रूपो मे भी द्विवचन नही होता ।

२ प्राकृत मे आत्मनेपद और परस्मैपद का भेद नही होता । आत्मनेपद और परस्मैपद के प्रत्यय प्राकृत मे प्रत्येक धातु के साथ जुडते है ।

३ भाव कर्म मे भी आत्मनेपद नही होता है ।

४. प्राकृत मे व्यजनान्त धातुए नही होती हैं । संस्कृत की व्यंजनान्त धातु मे 'अ' विकरण जोडकर उसे अकारान्त बनाया जाता है । हस्+अ=हस । भण्+अ=भण । लिह्+अ=लिह ।

५. अकारान्त को छोड शेष स्वरान्त धातुओ मे अ विकरण विकल्प से जुडता है । होइ, होअइ । ठाइ, ठाअइ ।

६. प्राकृत मे धातु द्वित्व नही होती । जैसे सस्कृत मे णवादि, सन्नन्त, यङन्त और यङ्लुगन्त आदि मे होती है ।

७ प्राकृत मे १० लकार नही होते ।

८ धातु के उपसर्ग जुडने से वह धातु का अंग बन जाता है । जैसे—प+इक्ख पेक्ख । उव+इक्ख उवेक्ख ।

६. प्राकृत में धातुओं का एक ही गण होता है। संस्कृत की तरह दस गण नहीं होते हैं। अन्य गणों की धातुएं भ्वादि गण की तरह ही चलती हैं। गणों के रूपों से सीधा प्राकृत करने से कहीं-कहीं पर रूप मिलते भी हैं। जैसे—शृणोति—सुणेइ।

वर्तमान काल के धातु के प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	इ, ए	न्ति, न्ते, इरे
मध्यमपुरुष	सि, से	इत्था, ह
उत्तमपुरुष	मि, ए	मो, मु, म

उत्तमपुरुष के ए प्रत्यय का प्रयोग बहुत कम मिलता है, केवल आर्ष प्राकृत में होता है। प्रत्ययों से होने वाले धातु के रूप नीचे नियमों में स्पष्ट हैं इसलिए अलग से नहीं दिए जा रहे हैं।

नियम ५७९ (व्यञ्जनाददन्ते ४।२३९) व्यञ्जनान्त धातु के अंत में अकार का आगम होता है। वसइ, पढइ, भमइ।

नियम ५८० (स्वरादनतो वा ४।२४०) अकारान्त धातु को छोड शेष स्वरान्त धातुओं के अंत में अकार का आगम विकल्प से होता है। पाइ, पाअइ। होइ, होअइ।

नियम ५८१ (त्यादीनामाद्यत्रयस्याद्यस्येचेचौ ३।१३९) परस्मैपद और आत्मनेपद के त्यादि विभक्तियों के प्रथमपुरुष के एकवचन (तिप्, ते) प्रत्ययों को इच् (इ) और एच् (ए) आदेश होते हैं। हसइ, हसए (हसति) वह हसता है।

नियम ५८२ (बहुष्वाद्यस्य न्ति न्ते इरे ३।१४२) प्रथमपुरुष के बहुवचन (अन्ति, अन्ते) प्रत्ययों को न्ति, न्ते, इरे आदेश होते हैं। हसंति, हसंते, हसिरे (हसतः, हसंति) वे दोनों या वे हंसते हैं।

नियम ५८३ (द्वितीयस्य सि से ३।१४०) मध्यमपुरुष के एकवचन (सिप्, से) प्रत्ययों को सि और से आदेश होते हैं। हससि, हससे (हससि) तू हंसता है।

नियम ५८४ (अत एवैच् से ३।१४५) त्यादि प्रत्ययों के प्रथमपुरुष के एकवचन में ए और से प्रत्यय कहा है वह अकारान्त धातुओं से ही होता है, अन्य स्वरान्त धातुओं से नहीं। हसए, हससे। करए, करसे।

नियम ५८५ (मध्यमस्येत्था हचौ ३।१४३) मध्यमपुरुष के बहुवचन (थ, ध्वे) प्रत्ययों को इत्था और हच् (ह) आदेश होते हैं। हसित्था, हसह (हसथः, हसथ) तुम दोनों या तुम हंसते हो।

नियम ५८६ (तृतीयस्य मिः ३।१४१) उत्तमपुरुष के एकवचन

(मिप्, ए) प्रत्ययो को मि आदेश होता है।

नियम ५८७ (मौ वा ३।१५४) अदन्त धातु के अ को आ विकल्प से हो जाता है मि परे होने पर। हसमि, हसामि (हसामि) मैं हंसता हू।

नियम ५८८ (तृतीयस्य मो मु माः ३।१४४) उत्तम पुरुष के बहुवचन (मस्, महे) प्रत्ययो को मो, मु और म आदेश होते है। हसमो, हसमु, हसम (हसाव, हसामः) हम दोनो या हम हसते है।

नियम ५८९ (इच्च मो मु मे वा ३।१५५) अदन्त धातु के अ को इ और आ हो जाता है, मो, मु और म प्रत्यय परे हो तो। हसिमो, हसामो। हसिमु, हसामु। हसिम, हसाम (हसामः)। हम हंसते है।

नियम ५९० (वर्तमाना पञ्चमी शतृषु वा ३।१५८) वर्तमानकाल, पचमीविभक्ति तथा शतृप्रत्यय परे रहने पर अ को ए विकल्प से होता है। हसइ, हसेइ। हससि, हसेसि। हसमो, हसेमो। हसमु, हसेमु। हसम, हसेम।

नियम ५९१ (वर्तमाना भविष्यन्त्योश्च ज्ज ज्जा वा ३।१७७) वर्तमान, भविष्यत् तथा विधि आदि धातु प्रत्ययो के स्थान पर ज्ज और ज्जा आदेश विकल्प से होते हैं। वर्तमान—हसेज्ज, हसेज्जा, हसइ (हसति)। भविष्यत्—हसेज्ज, हसेज्जा, हसिहिइ (हसिष्यति) विधि—हसेज्ज, हसेज्जा, हसउ (हसतु, हसेद् वा)।

नियम ५९२ (मध्ये च स्वरान्ताद् वा ३।१७८) स्वरान्त धातु से वर्तमान, भविष्यत् तथा विधि आदि प्रत्ययो के स्थान पर तथा धातु और प्रत्यय के बीच मे ज्ज और ज्जा विकल्प से हो जाते है। होज्जइ, होज्जाइ, होज्ज, होज्जा, होइ (भवति)। होज्जहिइ, होज्जाहिइ, होज्ज, होज्जा होहिइ (भविष्यति)। होज्जउ, होज्जाउ, होज्ज, होज्जा, होउ। (भवतु, भवेद् वा) एव होज्जसि, होज्जासि, होज्ज, होज्जा, होसि (भवसि)।

नियम ५९३ (ज्जात् सप्तम्या इर्वा ३।१६५) ज्ज से परे इ का प्रयोग विकल्प से होता है। होज्ज, होज्जइ (भवेत्)।

नियम ५९४ (ज्जा ज्जे ३।१५९) प्रत्ययो के स्थान पर आदेश होने वाले ज्ज और ज्जा परे हो तो धातु के अकार को एकार हो जाता है। हसेज्ज, हसेज्जा।

नियम ५९५ (अत्थि स्त्यादिना ३।१४८) त्यादि प्रत्ययो के साथ अस् धातु को अत्थि आदेश होता है। अत्थि (अस्ति, सति, असि, स्थ, अस्मि, स्मः)।

नियम ५९६ (सिना स्ते सिः ३।१४६) मि प्रत्यय के साथ अस् धातु को सि आदेश होता है। सि (असि)। पूर्व नियम मे अत्थि भी।

नियम ५९७ (मि मो मै म्हि म्हो म्हा वा ३।१४७) मि, मो और म

प्रत्यय के साथ अस् धातु को क्रमशः म्हि, म्हो और म्ह आदेश विकल्प से होता है। म्हि, (अस्मि) म्हो, म्ह (स्मः)।

प्रयोग वाक्य

पडवाए केत्तिला जणा उवविसंति ? ववहारकुसलो सव्वत्थ (सब जगह) सम्माणं लभइ। देसाणं जुज्झं जया भवइ तया बहुनरसंहारो होइ। कालप्पभावेण पत्तेयं वत्थुं जुन्नं हुवइ। किं तुज्झ पासे आयरिअभिक्खुणो पडिच्छाया विज्जइ ? जीवस्स किं लक्खणं अत्थि ? जो संघस्स विहडणं कुणइ सो कूरकम्माइं बंधइ। अत्थिवायस्स को विसारणं करेइ ? अज्जत्ता अणहो सरलो नरो दंडं लहइ। जणा अणं कुणंति परं फलं न इच्छंति। मज्झ पाडोसिओ भद्दो सुसीलो य अत्थि।

धातु प्रयोग

किं तुमं धरसि ? कालप्पभावेण पव्वयो धंसइ। मोहणेण कहिअं अत्थ न आगंतव्वं तहवि सोहणो धरिसइ। आयासे तारा धिप्पंति। गिहे कस्सइ मच्चुस्स पच्छा सावगा गुरुं पासंति तया आयरिया ता धीरवंति। तवो कम्माइं धुणइ। भूकंपे भूमी धसइ। जोगी एगे पोग्गले धाइ। विजयो वत्थाइं धाइ। तुमेसुं को वेगेण धाइ ? तुमं पइदिणं वत्थाइं कहं धुवसि ?

प्राकृत में अनुवाद करो

भीषण गर्मी मे तंबू की छाया में लोग बैठना चाहते हैं। वह कुशल कलाकार है। युद्ध में जीत हमारी होगी। जीर्ण वस्त्र शीघ्र फटता है। प्रधानमंत्री (पहाणमंती) के साथ वह अपनी फोटू चाहता है। अजीव का लक्षण क्या है ? जिसका योग (जोग) होता है उसका विघटन होता है। नास्तिक लोग आत्मा का खंडन करते हैं। वह अपने आपको निर्दोष कहता है। पापी से घृणा मत करो, पाप से करो। पडौसी के साथ अच्छा व्यवहार करो।

धातु का प्रयोग करो

वह तप को धारण करता है। इस गांव का पर्वत कब नष्ट हो गया ? जो ढीठाइ करता है उसकी संगत मत करो। उसका भाग्य चमकता है। मुनि ने दुःखी परिवार को सान्त्वना दी। उसका मकान जमीन में धंस गया। मंगलवार को तुम नया सफेद वस्त्र क्यों धारण करते हो ? मुनि शुभकरण साधना शिखर पर ध्यान करते हैं। ऊंट मरुभूमि में सबसे तेज दौडता है। तपस्या से अपनी आत्मा को धोओ।

प्रश्न

१. प्राकृत में आत्मनेपद कहां होता है ?

विध्यर्थ प्रत्यय

शब्द संग्रह (साला वर्ग)

अट्टणसाला—व्यायामशाला
उदगसाला—उदकगृह
उट्टसाला—रसोई
उवट्ठाणसाला—सभास्थान
करणसाला—न्यायमंदिर
कूडागारसाला—षड्यंत्रवाला घर
गंधव्वसाला—संगीतगृह
गद्दभसाला—गधा रखने का स्थान
गोणसाला—गोशाला
घोडसाला—घुड़साल, अस्तबल
कम्मसाला—कारखाना
कुंभारसाला—कुंभारगृह
गंधियसाला—दारु आदि गंध वाली चीज बेचने की दूकान
घयसाला—अनाथमंडप, भिक्षुओं का आश्रय स्थान

० ० ० ०

चापलूस—चाडुयारी (वि)

धातु संग्रह

पइहा—परित्याग करना
पइसार—प्रवेश करना
पउंज—जोड़ना, युक्त करना
पओस—प्रक्षेप करना
पकत्थ—श्लाघा करना
पकप्प—काम में आना, उपयोग में आना
पइट्ठव—मूर्ति आदि की विधिपूर्वक स्थापना करना
पकुण—करने का प्रारंभ करना
पस—मलिन करना
पकुप्प—क्रोध करना

•—

विध्यर्थ का प्रयोग कर्तव्य का उपदेश, क्रिया की प्रेरणा और संभावना के अर्थ में होता है।

विध्यर्थक प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	ज्जए, ए, एय, ज्ज, ज्जा	ज्ज, ज्जा
मध्यमपुरुष	ज्जसि, ज्जासि	ज्जाह
उत्तमपुरुष	ज्जामि	ज्जामो

हस धातु के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	हसिज्जए, हसे, हसेय	हसिज्ज, हसेज्ज

	हसिज्ज, हसेज्ज, हसिज्जा, हसेज्जा हसिज्जइ, हसेज्जइ	हसिज्जा, हसेज्जा
मध्यमपुरुष	हसिज्जासि, हसेज्जासि हसिज्जसि, हसेज्जसि	हसिज्जाह, हसेज्जाह
उत्तमपुरुष	हसिज्जामि, हसेज्जामि	हसिज्जामो, हसेज्जामो

हो धातु के रूप

प्रथमपुरुष	होज्जए, होए, होएय होज्ज, होज्जा	होज्ज, होज्जा
मध्यमपुरुष	होज्जसि, होज्जासि	होज्जाह
उत्तमपुरुष	होज्जामि	होज्जामो

(विकरण वाली हो धातु के रूप हस धातु की तरह चलते हैं)

प्रथमपुरुष	होइज्जए, होए, होएय होइज्ज, होएज्ज होइज्जा, होएज्जा	होइज्ज, होएज्ज होइज्जा, होएज्जा
मध्यमपुरुष	होइज्जासि, होएज्जासि होइज्जसि, होएज्जसि	होइज्जाह, होएज्जाह
उत्तमपुरुष	होइज्जामि, होएज्जामि	होइज्जामो, होएज्जामो

० ० ० ०

(१) यदि क्रियापद के साथ उअ और अवि अव्ययो का सबध हो तो इस पाठ मे बताए गए विध्यर्थ प्रत्ययो का प्रयोग हो सकता है। उअ कुज्जा (चाहता हू वह करे) अवि भुजिज्ज (खाए भी)।

(२) श्रद्धा अथवा सभावना अर्थ वाली धातुओ के प्रयोग के साथ इन प्रत्ययो का प्रयोग हो सकता है। सद्दहामि लोएसो लेह लेहिज्ज। श्रद्धा (विश्वास) करता हू लोकेश लेख लिखे। सभावेमि तुम न जुज्झिज्जसि (सभावना करता हूं तुम नही लडो)।

(३) ज के साथ कालवाचक कोई भी शब्द हो तो वहा विध्यर्थ प्रत्ययो का प्रयोग होता है। कालो ज भणिज्जामि (समय है मै पढू)। वेला जं गाएज्जासि (समय है तू गा)।

(४) जहा एक क्रिया दूसरी क्रिया का निमित्त बने वहा विध्यर्थ प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है। जइ ह गुरु उवासेय सत्थन्त गच्छेय (यदि गुरु की उपासना करे तो शास्त्र का अंत पावे)।

आर्ष प्राकृत में उपलब्ध कुछ अन्य रूप—

कुज्जा (कुर्यात्)	अभिभासे (अभिभाषेत)
निहे (निदध्यात्)	सिया, सिंआ (स्यात्)

वापस उसे ग्रहण मत करो। वस्त्रो को जोडना सरल है, मनो को जोडना दुष्कर (दुक्करं) है। वह अपने पुत्रो को आज अच्छी स्कूल मे प्रवेश कराएगा। जो प्रद्वेष करता है उसका मानस कलुष होता है। कुशलता के अभाव मे तुम अपने वस्त्रो को मलिन करते हो। जो अधिक श्लाघा करता है वह चापलूस (चाडुयार) होता है। यह वस्त्र मेरे काम मे आता है। उसने शातसुधारस पढना प्रारभ कर दिया है। माता बच्चे पर बार-बार क्रोध करती है।

विध्यर्थक प्रत्ययों का प्रयोग करो

मैं चाहता हू वह नमस्कार मत्र (णमुक्कार मत) का जप करे। वह तप भी करे। मैं विश्वास करता हू वह ध्यान से पढे। सभावना करता हू तुम विद्वान् बनो। समय है मैं ध्यान करू। समय है स्वाध्याय करूं। चतुर्मास है मैं सूत्र पढू। यदि वह ध्यान से पढे तो पास हो जाए। यदि वर्षा हो तो अन्न अधिक हो जाए। यदि आपकी उपासना मिले तो व्याकरण का ज्ञान हो जाए। यदि वेतन मिल जाए तो घर मे वस्त्र ले आऊं।

प्रश्न

१ एकवचन और बहुवचन के विध्यर्थक प्रत्यय प्राकृत मे कौन-कौन से हैं?

२ इस पाठ मे विध्यर्थक प्रत्ययो के अतिरिक्त आर्ष प्राकृत के रूप कौन-कौन से हैं?

३ विध्यर्थक प्रत्ययो का प्रयोग कहा-कहा किया जाता है?

४ दो वाक्य ऐसे बनाओ जहा एक क्रिया दूसरी क्रिया का निमित्त बनती हो और वहा विध्यर्थ प्रत्ययो का प्रयोग होता हो?

५ सभास्थान, न्यायमदिर, पड्यत्रवाला घर, व्यायामशाला, गोशाला, घुडसाला, गदहा रखने का स्थान, उदकगृह और रसाला के लिए प्राकृत शब्द बताओ।

६ पइट्ठव, पडहा, पउज, पइसार, पओस, पस, पकत्थ, पकप्प, पकुण और पकुप्प धातुओ के अर्थ बताओ और वाक्य मे प्रयोग करो।

शब्द संग्रह (शरीर के अंग उपांग १)

सिर—मत्थओ, सिरं | केस—केसो, वालो, कयो
मस्तकहीन शरीर, धड—कबंधो | कपाल—कवालो, भालो, कप्परो
खोपडी—रणिआ | भापण—झंपणी, पम्हाइं
भौं—भुमया, भमुहा | आँख की पुतली—अक्खरन
आँख—णयण, नेत्त, चक्खु | नाक—णासिआ, णासा
कान—कण्णो, सोत्तं, सवणो | मूंछ—आमरोमो
दाढी—दाढिआ | दाढी मूंछ—मसू

कचरा—कयवरो | व्यायाम—वायामो
पानी से गीला—उदओल्लं

धातु संग्रह

पकुव्व—करना | पक्खिव—फेंक देना, त्यागना
पक्कम—चला जाना, प्रयत्न होना | पच्छोड (प्र+छादय्)—ढकना, आच्छादन करना
पक्किर—फेंकना
पक्खर—अश्व को कवच से सज्जित करना, सन्नद्ध करना | पक्खुभ—क्षोभ पाना, बढना, वृद्ध होना
पक्खल—पडना, गिरना | पक्खोभ—क्षोभ उत्पन्न कर हिला देना
पक्खोट (प्र+स्फोटय्)—बार-बार झाडना

आज्ञार्थक—

इसका प्रयोग किसी को आशीर्वाद देने, विधि और सम्भावना अर्थ में होता है।

जानने योग्य—

- प्रत्यय लगाने से पूर्व अ विकरणवाली (हसान्त) धातु के अन्त्य अ को ए विकल्प से होता है। हसउ, हसेउ।
- प्रथम पुरुष के एकवचन उ अथवा तु प्रत्यय लगाने से पूर्व अ विकरण वाली धातु के अन्त्य अ का आ भी उपलब्ध होता है। सुणाउ, सुणउ, सुणेउ।

० उत्तम पुरुष के प्रत्यय लगाने से पूर्व अ विकरण वाली धातु के अन्त्य अ को आ तथा इ विकल्प से होता है। हसामु, हसिमु, हसमु।

नियम ५९८ (दु सु मु विध्यादिष्वेकस्मिंस्त्रयाणाम् ३।१७३) विधि आदि अर्थ में तीनों पुरुषों के एकवचन के प्रत्ययों को क्रमश. दु, सु और मु आदेश होते है। हसउ (हसतु), हससु (हस), हसमु (हसानि)।

नियम ५९९ (बहुषु न्तु ह मो ३।१७६) विधि आदि अर्थ में तीनों पुरुषों के बहुवचन के प्रत्ययों को क्रमश. न्तु, ह और मो आदेश होता है। हसन्तु (हसन्तु), हसह (हसत), हसमो (हसाम)।

नियम ६०० (अत इज्जस्विज्जहीज्जे लुको वा ३।१७५) अ से परे 'सु' को इज्जसु, इज्जहि, इज्जे तथा लुक् ये चार आदेश विकल्प से होते है— हसेज्जसु, हसेज्जहि, हसेज्जे, हस, हसमु। अन्य स्वरान्त धातुओं (आकारान्त, इवर्णान्त, उवर्णान्त, एकारान्त और ओकारान्त को ये आदेश नहीं होते है।

नियम ६०१ (सो हिं वा ३।१७४) पूर्व सूत्र विहित (दु, सु, मु) मे सु प्रत्यय को हि विकल्प से होता है। हससु, हसहि। देहि, देसु।

आज्ञार्थक प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	उ, तु	न्तु
मध्यमपुरुष	सु, हि, इज्जसु, इज्जहि, इज्जे, लुक्	ह
उत्तमपुरुष	मु	मो

हस धातु के आज्ञार्थक रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	हसउ, हसेउ, हसतु, हसेतु	हसन्तु, हसितु, हसेतु
मध्यमपुरुष	हससु, हसेसु, हसेज्जसु हसेज्जहि, हसेज्जे, हस हसहि, हसाहि	हसह, हसेह
उत्तमपुरुष	हसमु, हसामु, हसिमु, हसेमु	हसमो, हसामो, हसिमो, हसेमो

(सर्व पुरुष सर्व वचन में—हसेज्ज, हसेज्जा और होते हैं)

हो धातु के आज्ञार्थक रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	होउ, होअउ, होएउ होज्जउ, होज्जाउ, होतु, होएतु होज्जतु, होज्जातु	होन्तु, होइन्तु, होएन्तु होज्जन्तु, होज्जान्तु
मध्यमपुरुष	होसु, होअसु, होएसु	होअह, होएह, होह

को स्थिर रखता है ? व्यायाम से आख की ज्योति वढती है। देखने की शक्ति आख की पुतली मे है। अपने कान मे स्वय स्पंदन करना कठिन है। नासा के अग्रभाग पर ध्यान का अभ्यास करो। दाढी और मूछ होना पुरुषत्व का लक्षण है। वहादूर सिंह मूछ पर नीबू रख सकता है।

धातु का प्रयोग करो

जो पाप करता है वही उसका फल भोगता है। पक्षी सवेरे भोजन की खोज मे पूर्व दिशा मे चला गया। वह धूलि को वाहर फेकता है। तुम घोडे को किसलिए सज्जित करते हो ? जो चढने का अभ्यास करता है वही गिरता है। सीता अपने घर से गदे (मलिण) पानी को वाहर फेंकती है। तुम्हारे व्यवहार से मैं क्षुब्ध होता हू। गर्म दूध के वर्तन को तत्काल ढको। वस्त्र को वार-वार मत झाडो। किसी की आस्था को हिला देना अच्छा कार्य नही है।

आज्ञार्थक प्रत्ययो का प्रयोग करो

तुम गाव के वाहर मत जाओ। हम लोग स्वाध्याय करे। चतुर्मास मे सभी भाई वहन यथाशक्ति तप करे। तुम व्याख्यान दो, लोग आएंगे। तुम लोग घर जाओ, किसी की प्रतीक्षा मत करो। वे सब नदी मे क्यो उतरे ? सवेरे जल्दी उठो और जल्दी सोओ। सव लोग अपना-अपना काम करो। तुम व्यर्थ ही उसकी चिंता मत करो। तुम पढने मे ध्यान दो। किसी को शिक्षा मत दो। दिन मे शरीर का श्रम भी करो। दूसरों की वात मत करो। प्रतिदिन नमस्कार महामन्त्र का जाप अवश्य करो। बुरे व्यक्तियो की संगत मत करो।

प्रश्न

१ आज्ञार्थक प्रथम और उत्तम पुरुष के एकवचन और वहुवचन के प्रत्ययो को क्या आदेश होता है ?
२ आज्ञार्थक मध्यमपुरुप के एकवचन को नु प्रत्यय को क्या-क्या आदेश होता है ?
३ हस धातु के आज्ञार्थक प्रत्ययो के रूप लिखो।
४ सिर, खोपडी, कपाल, केश, भौं, भांपण, आंख, आंख की पुतली, कान, नाक और दाढीमूछ के लिए प्राकृत शब्द वताओ।
५ पकुव्व, पक्कम, पक्किर, पक्खर, पक्खल, पक्खिव, पक्खुब्भ, पक्खोड, और पक्खोभ धातुओ के अर्थ वताओ और वाक्य मे प्रयोग करो।
६ हुव्ववाहो, अभिणिवेसो, इस्सा, अणहो, विहडणं, फरुससाला, घयसाला, उवट्ठाणसाला शब्दो को वाक्य मे प्रयोग करो तथा हिन्दी मे अर्थ वताओ।

६९ भूतकालिक प्रत्यय

शब्द संग्रह (शरीर के अंग-उपांग २)

मुंह—वयणं, मुह — जीभ—जीहा, रसणा
दांत—दसणो, दंतो — ओठ—अहरो, ओट्ठो
ठोडी—चिबुअं — कंठ—कंठो
कंठमणि—अवडू, किआडिआ — गाल—कवोलो, गल्लो
कंधा—अंसो — कांख—कक्खो, भुअमूलं

दतवन—दंतसोहणं — केंद्र—किंदियं
फुनसी—फुडिया — तिल—तिलो
जूं—जूआ — स्वर—सरो
गले का—गलिच्च (वि)

धातु संग्रह

पगड्ढ—खींचना — पघंस—फिर-फिर घसना
पगल—झरना, टपकना — पघोल—मिलना, संगत करना
पगिण्ह—ग्रहण करना — पचाल—खूब चलाना
पच्चक्खीकर—साक्षात् करना — पच्चक्ख—त्याग करना
पगिज्झ—आसक्ति का प्रारंभ करना — ईर—गमन करना

भूतकाल

प्राकृत में भूतकाल का कोई भेद नहीं है। अनद्यतन, भूतमात्र और परोक्ष इन तीनों भूतकालिक अर्थों में एक समान प्रत्यय होते हैं।

नियम ६०२ (सी ही हीअ भूतार्थस्य ३।१६२) स्वरान्त धातुओं से भूतार्थ में विहित प्रत्ययों को सी, ही और हीअ आदेश होते हैं।

भूतकालिक प्रत्यय

	एकवचन, बहुवचन		
प्रथम पुरुष	सी, ही, हीअ	होसी, होअसी	= (अभवत्, अभूत, बभूव
मध्यम पुरुष	सी, ही, हीअ	होही, होअही	
उत्तम पुरुष	सी, ही, हीअ	होहीअ, होअहीअ	

नियम ६०३ (व्यञ्जनादीअः ३।१६३) व्यंजनांत (अविकरण वाली) धातुओं से भूतार्थ में विहित प्रत्ययों को ईअ आदेश होता है।

	एकवचन, बहुवचन	
प्रथम पुरुष	ईअ	हसीअ (अहसत्, अहासीत्, जहास)
मध्यम पुरुष	ईअ	
उत्तम पुरुष	ईअ	

नियम ६०४ (तेनास्तेरास्यहेसि ३।१६४) अस् धातु को भूतार्थ प्रत्ययो के साथ आसि और अहेसि आदेश होता है। सब पुरुष और सबवचनो मे रूप बनेंगे—आसि, अहेसि।

आर्ष प्राकृत में भूतकाल के उपलब्ध रूप—

कर—अकरिस्सं (अकार्षम्) उत्तम पुरुष एकवचन

अकासी (अकार्षीत्) प्रथम पुरुष एकवचन

ब्रू—अब्बवी (अब्रवीत्) प्रथम पुरुष एक वचन

वच—अवोच (अवोचत्) प्रथम पुरुष एकवचन

ब्रू—आह (आह) प्रथम पुरुष एकवचन

ब्रू—आहु (आहुः) प्रथम पुरुष बहु वचन

दृश्—अदक्खू (अद्राक्षुः) प्रथम पुरुष एकवचन

आर्ष प्राकृत मे उत्तम पुरुष अस् धातु के लिए आसिमो और आसिमु (आस्म) रूप मिलते है। वद धातु का वदीअ रूप होना चाहिए पर वदासी और वयासी रूप मिलते है। सी प्रत्यय स्वरान्त धातुओ के लगता है परन्तु आर्ष प्राकृत मे प्राय. प्रथम पुरुष के एकवचन के लिए त्था, इत्था और इत्थ प्रत्यय तथा बहुवचन के लिए इत्थ, इंसु और अंसु प्रत्यय भी मिलते हैं।

था—हो—होत्था।

इत्था—री—रीइत्था। भुंज—भुजित्था। पहार—पहारित्था, पहारेत्था।

विहर—विहरित्था। सेव—सेवित्था।

इंसु—गच्छ—गच्छिसु। कर—करिंसु। नच्च—नच्चिसु।

अंसु—आह—आहसु।

कर धातु भूतकाल मे (नियम ७० से) का के रूप मे बदल जाने से रूप बनते है—कासी, काही, काहीअ।

प्रयोग वाक्य

मुहेण मिउवयणं वदेज्जा। जीहा रसस्स गहण करेइ। सो दंतसोहणेण दसणा सोहइ। ओट्ठम्मि फुडिआ जाआ। माया पुत्तस्स कवोलं चुंबइ। सुमेरो महुरकंठेण गीअं गाअइ। विसुद्धकिंदियस्स ठाणे अवडू अत्थि। पुरिसस्स चिबुअस्स दक्खिणभागे तिलस्स वरं फल भवइ। आयरिअस्स कंधे जिणसासणस्स भारो अत्थि। अस्स कक्खे जूआओ कहं उप्पज्जति ?

धातु प्रयोग

केवली समुग्घाएण कम्माइं पगड्ढईअ। भवणस्स छईअ नीरं कहं

वृक्ष से मधुर फल आम गिरा। उसने तीस वर्ष तक संयम की साधना की। तुम्हारा मन साधुत्व से विचलित क्यो हुआ ? गाय ने उसको सींग (सिंगं) से मारा। आकाश से तारा कब टूटा ? तुम्हारे भाई ने उसके घर से चोरी क्यो की ? उसकी प्रगति को देखकर चेतना ने विमला पर झूठा आरोप लगाया।

प्रश्न

१ प्राकृत मे भूतकाल के कितने भेद है ? उनके प्रत्ययो मे क्या अन्तर है ?

२ प्राकृत मे भूतकाल के प्रत्ययो को किस नियम से क्या आदेश होता है ? एकवचन और बहुवचन के आदेश मे क्या अंतर है ?

३ आर्ष प्राकृत मे भूतकाल के अर्थ मे नियमो के अतिरिक्त कौन-कौन से रूप और प्रत्यय मिलते है ?

४. इत्था, इसु और असु प्रत्यय के रूप बताओ।

५ मुँह, जीभ, दात, ओठ, ठोडी, गाल, कठ, कठमणि, कधा और कांख के लिए प्राकृत शब्द बताओ ?

६ पगड्ढ, पगल, पगिण्ह, पच्चक्खीकर, पगिज्झ, पघंस, पघोल, पचाल, पच्चक्ख और ईर धातुओ के अर्थ बताओ और वाक्य मे प्रयोग करो।

भविष्यत्कालिक प्रत्यय (१)

शब्द संग्रह (शरीर के अंग-उपांग ३)

भुजा—भुआ, बाहु
कोहनी—कुहणी
हाथ—करो, पाणी, हत्थो
उंगली—अंगुली
हथेली—करयलं
अंगूठा—अंगुट्ठो
स्तन—थणो
नाखून—नहो
नाखून के नीचे का भाग—पटिमेणं
मुट्ठी—मुट्ठिआ, मुट्ठी
छाती=उरो, वच्छ
पेट—उयरं, कुच्छि (पु, स्त्री)
मसूढा—दंतवेट्ठो (म)

० ० ० ०

पतला—पतल (वि)

धातु संग्रह

पच्चणुभव—अनुभव करना
पच्चभिजाण—पहचानना
पच्चाचक्ख—परित्याग करना
पच्चप्पिण—वापस देना, सौंपे हुए कार्य को करके निवेदन करना
पच्चापड—लौटकर आ पड़ना
पच्चाय—प्रतीति करना
पच्चाया—उत्पन्न होना
पच्चाइक्ख—उपदेश देना
पच्चुण्णम—थोड़ा ऊंचा होना
पच्चाणी—वापस ले आना

भविष्यत्कालिक प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	हिइ, हिति, हिए, हिते	हिन्ति, हिन्ते हिइरे
	स्सइ, स्सति, (स्यति)	स्संति, (स्यन्ति)
	स्सए, स्सते (स्यते)	स्संते (स्यन्ते)
मध्यमपुरुष	हिसि, हिसे	हित्था, हिह
	स्ससि (स्यसि)	स्सह, स्सथ (स्यथ)
	स्ससे (स्यसे)	
उत्तमपुरुष	हिमि, हामि	स्सामो (स्यामः) स्सामु, स्साम
	स्सामि (स्यामि)	हामो, हामु, हाम, हिमो, हिमु, हिम
	स्सं	हिस्सा, हित्था

(कोष्ठक में दिए गए प्रत्यय नहीं हैं। संस्कृत के रूप के साथ समानता

दिखाई गई है।

नियम ६०५ (भविष्यति हिरादिः ३।१६६) भविष्यत् अर्थ में विहित प्रत्ययों के पूर्व 'हि' का प्रयोग होता है। होहिइ, होहिन्ति, होहिइरे, होहिसि, होहित्था।

नियम ६०६ (मेः स्सं ३।१६९) भविष्यत्काल मे धातु से परे मि प्रत्यय के स्थान पर 'स्सं' का प्रयोग विकल्प से होता है। होस्सं (भविष्यामि)

नियम ६०७ (मि मो मु मे स्सा हा न वा ३।१६७) भविष्यत् अर्थ मे मि, मो, मु, म परे रहने पर उनके पूर्व स्सा और हा विकल्प से प्रयोग होता है। होस्सामि, होहामि, होहिमि। होस्सामो, होहामो। होस्सामु, होहामु। होस्साम, होहाम। कही हा नही होता। हसिस्सामो, हसिहिमो।

नियम ६०८ (मो-मु-मानां हिस्सा हित्था ३।१६८) भविष्यत् अर्थ मे धातु से परे मो, मु और म प्रत्ययो के स्थान पर हिस्सा और हित्था आदेश विकल्प से होता है। होहिस्सा, होहित्था। पक्ष मे होहिमो, होहिमु होहिम।

(एच्चक्त्वातुम्तव्यभविष्यत्सु ३।१५७)

नियम ६५ से क्त्वा, तुम्, तव्य भविष्यत्काल में विहित प्रत्यय परे रहने पर अ को इ तथा ए होते हैं। हसेहिइ, हसिहिइ।

हस् धातु के रूप

	एक वचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	हसिस्सइ, हसेस्सइ	हसिस्संति, हसेस्सति
	हसिस्सति, हसेस्सति	हसिस्सते, हसेस्सते
	हसिस्सए, हसेस्सए	हसिहिंति हसेहिंति
	हसिस्सते, हसेस्सते	हसिहिंते हसेहिंते
	हसिहिइ, हसेहिइ	हसिहिइरे, हसेहिइरे
	हसिहिति, हसेहिति	
	हसिहिए, हसेहिए	
	हसिहिते, हसेहिते	
मध्यमपुरुष	हसिस्ससि, हसेस्ससि	हसिस्सह, हसेस्सह
	हसिस्ससे, हसेस्ससे	हसिस्सथ, हसेस्सथ
	हसिहिसि, हसेहिसि	हसिहित्था, हसेहित्था
	हसिहिसे, हसेहिसि	हसिहिह, हसेहिह
उत्तमपुरुष	हसिस्सामि, हसेस्सामि	हसिस्सामो, हसेस्सामो
	हसिहामि, हसेहामि	हसिस्सामु, हसेस्सामु
	हसिहिमि, हसेहिमि	हसिस्साम, हसेस्साम
	हसिस्सं, हसेस्सं	हसिहामो, हसेहामो

सर्वपुरुष सर्ववचन मे	हसिहामु, हसेहामु
हसिज्ज, हसिज्जा	हसिहाम, हसेहाम
हसेज्ज, हसेज्जा	हसिहिमो, हसेहिमो
	हसिहिमु, हसेहिमु
	हसिहिम, हसेहिम

प्रयोग वाक्य

तस्स बाहूए सोरियं विज्जइ। सेणिगो अब्भासकाले कुहिणीइ बलेण चलइ। नरस्स करेसु लच्छी विज्जइ। तस्स लद्धिजोगेण अंगुली फासमत्तेण रोगीण रोगो नस्सइ। मज्झ बहूए करयलामलगं इव फुडं अत्थि। बालो भाआए थणाइ पिबइ। तहा पलम्बा नई थवा? आमनहकत्तणेण पडिसेगम्मि पीडा जाया। तेण अहवारंण कहियं मज्झ मुट्ठीए तव्वा सत्ती अत्थि। तस्स वच्छं बहुं विद दढ अत्थि। तुज्झ उअरस्स किमिआ मुद्धा नत्थि।

धातु प्रयोग

माया अप्पाणं पच्चणुभवइ। पोत्थयं पढिऊण सो पच्चप्पिणइ। सत्तदिवसे सुत्तं लिहिऊण सीसो गुरु पच्चप्पिणइ। अहं तुमं पच्चभिजाणामि। सो एगमुहुत्तपेरंत नादव्व पोस पच्चाचाएइ। तवस्सिणा भत्तस्स भोयण न गिण्हिअ। सो पच्चाणिज्जइ (पच्चाणेइ)। बालेण रुक्खम्मि पत्थरं खित्तं सो पच्चापडइ। वयं पच्चागमो तं कज्जं पूरिस्सामो। सूरियो पुव्वि पच्चायाइ। आयरिआ अत्थ पच्चाहरइ परं तस्स सरो गामत्तो बाहिं गच्छइ। पिअरं पणमिऊण पुत्तो जया पच्चुण्णमइ तया देवदत्तं जाअ।

भविष्यत् प्रयोग

तुम किं कज्जं करिहिसि? तस्स पुत्तो कत्थ गमिस्सइ? सीसो गुरुण समीवे उत्तरज्झयणं सुत्त पढिहिइ। वसंते अमुम्मि रुक्खम्मि नव्वाइं पत्ताइं निक्कसिस्संति। वरिसा कया होहिइ? तुज्झ परिक्खाए परिणामो कया बाहिं आगमिहिइ? अहं सद्दा सचिणिस्सामि। साहुणो सव्वा भविस्सति। पक्खिणो आगासे निसाए न उड्डीस्संति। अम्हे का वि न अवमन्निस्साम। सुसीला पय ताविस्सइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

उसकी भुजा पतली है। वह एक हाथ की कोहनी को दूसरे हाथ की हथेली पर रखकर क्यों बैठा है? मैं अपने हाथ से अपना भाग्य लिखूंगा। वह अंगुली से मधुर वीणा बजाएगा। हथेली की रेखाएं क्या बोलती हैं? स्तन में दूध कम है। नाखून का निचला भाग फट जाता है। तुम मुट्ठी से युद्ध करते हो। उसकी छाती चौडी है। पेट में चूहे कूदते हैं।

धातु का प्रयोग करो

मैं आत्मा को शरीर से भिन्न अनुभव करता हू। विद्यार्थी स्कूल मे दिया हुआ घर का कार्य करके अध्यापक को निवेदन करता है। मैंने तुमको पहचान लिया हम दोनो पूर्वभव मे भाई-भाई थे। उसने अपनी स्त्री का परित्याग कर दिया। वह अपने पुत्र को स्कूल से वापस ले आया। जो आकाश मे पत्थर फेंकता है वह उसी पर पडता है। उसने अपने कार्य से प्रतीति कराई। क्या नक्षत्र पूर्व दिशा मे पैदा होते (उगते) है? वह मनोयोग से उपदेश देता है। पौधा थोडा ऊचा हुआ है।

भविष्यत् प्रत्यय का प्रयोग करो

वह आज वृक्षो को नही सींचेगा। मै तुम्हारे घर आज के बाद कभी नही आऊंगा। तुम्हारा भविष्य कौन बताएगा? देश मे किसकी सरकार बनेगी? आज तुम क्या खाओगे? तुम्हारी सेवा कौन करेगा? शुक्र का तारा आकाश मे कब उदित होगा? रमेश कल स्कूल नही जाएगा। साधुओ की उपासना कल कौन करेगा? हमारी कक्षा का गणित का प्रश्नपत्र कौन बनाएगा? तुम्हारे साथ परीक्षा देने कौन जाएगा? सूर्य कब अस्त होगा? पत्रिका मे लेख कौन लिखेगा? मैं तुम्हारे साथ खाना नही खाऊगा।

प्रश्न

१ भविष्य के अर्थ मे होने वाले प्रत्ययो से पहले किस का प्रयोग होता है और किस नियम से?

२. भविष्य काल के विहित प्रत्यय से परे अ को किस नियम से क्या आदेश होता है?

३ भविष्य अर्थ मे मि प्रत्यय के स्थान पर किसका प्रयोग होता है और किस नियम से?

४ मध्यम पुरुष के एकवचन मे कौन-कौन से प्रत्यय होते है?

६ भुजा, कोहनी, हाथ, उंगली, हथेली, स्तन, नाखून, मुट्ठी, छाती, पेट और नाखून के नीचे का भाग, इनके लिए प्राकृत शब्द बताओ।

७ पच्चणुभव, पच्चप्पिण, पच्चभिजाण, पच्चाचक्ख, पच्चाणी, पच्चापड, पच्चाया, पच्चाहर, पच्चाय और पच्चुण्णम धातुओ के अर्थ बताओ।

७१ भविष्यत्कालिक प्रत्यय (२)

शब्द संग्रह (शरीर के अंग-उपांग ४)

पीठ—पिट्ठ
पसली—पासो
कलेजा—हियय
नाभि—णाही
नितंब—नियबो, ढेल्लिका
लिंग—सिण्हो, सिण्हं
कमर—कडी
जाघ—जघा, टंका
घुटना—जाणु (न), जण्हुआ
टाग—टगो
पैर—चरणो, पाओ
ऐडी—पण्हिया

धातु संग्रह

पच्चुत्तर—नीचे आना
पच्चुवगच्छ—सामने जाना
पच्चुवेक्ख—निरीक्षण करना
पच्चोगिल—स्वाद लेना
पच्चोणिवय—उछलकर नीचे गिरना
पच्चोरुह—पीछे उतरना
पच्चोसक्क—पीछे हटना
पच्छ—प्रार्थना करना
पच्छाअ—ढकना
पजप—बोलना

भविष्यत्काल

(आ कृगो भूत-भविष्यतोश्च ४।२१४) नियम ७० से कृ धातु के अंतिम वर्ण को आ आदेश होता है, भूतकाल, भविष्यत्काल, क्त्वा, तुम्, और तव्य प्रत्यय परे हो तो। काहिइ (करिष्यति, कर्ता वा)

नियम ६०९ (कृ दो हं ३।१७०) करोति और ददाति धातु से परे भविष्यत्काल के मि प्रत्यय के स्थान पर 'हं' आदेश विकल्प से होता है। काहं, काहिमि (करिष्यामि) दाहं, दाहिमि (दास्यामि)

नियम ६१० (श्रु गमि रुदि विदि दृशि मुचि वचि छिदि भिदि भुजां सोच्छं गच्छं रोच्छं वेच्छं दच्छं मोच्छं वोच्छं छेच्छं भेच्छं भोच्छं ३।१७१) श्रु आदि १० धातुओ के भविष्यत् अर्थ मे होने वाला मि प्रत्यय के स्थान पर सोच्छं आदि रूप निपात है।

सोच्छ (श्रोष्यामि) गच्छं (गमिष्यामि)
रोच्छ (रोदिष्यामि) - वेच्छ (वेदिस्यामि)
दच्छं (द्रक्ष्यामि) मोच्छ (मोक्ष्यामि)
वोच्छ (वक्ष्यामि) छेच्छं (छेत्स्यामि)
भेच्छ (भेत्स्यामि) भोच्छं (भोक्ष्ये)

नियम ६११ (सोच्छादय इजादिषु हि लुक् च वा ३।१७२) भविष्य अर्थ में होने वाले इच् आदि (इ,ए,न्ति,न्ते,इरे,सि,से,इत्था,ह,ए) प्रत्यय परे होने पर पूर्व नियम ६१० से होने वाले सोच्छ आदि रूप में अंतिम स्वर और अगला अवयव (अ) का वर्जन होता है और पूर्व नियम से होने वाला हि का लुक् विकल्प से होता है।

सोच्छ+हिमि=सोच्छिमि, सोच्छेमि, सोच्छिहिमि, सोच्छेहिमि आदि।

—एकवचन

प्रथमपुरुष— सोच्छिइ, सोच्छेइ, सोच्छिहिइ, सोच्छेहिइ
सोच्छिए, सोच्छेए, सोच्छिहिए, सोच्छेहिए।

मध्यमपुरुष— सोच्छिसि, सोच्छेसि सोच्छिहिसि, सोच्छेहिसि
सोच्छिसे, सोच्छेसे, सोच्छिहिसे, सोच्छेहिसे

उत्तमपुरुष— सोच्छ, सोच्छिमि, सोच्छिस्सामि, सोच्छिस्सं, सोच्छेस्सं, सोच्छेमि
सोच्छेस्सामि, सोच्छिहिमि, सोच्छेहिमि, सोच्छिस्सामि, सोच्छे-स्सामि, सोच्छिहामि, सोच्छेहामि।

आर्ष प्राकृत में प्राप्त कुछ अन्य रूप

मोक्खामो (मोक्ष्यामः)	भविस्सइ (भविष्यति)
करिस्सइ (करिष्यति)	चरिस्सइ (चरिष्यति)
भविस्सामि (भविष्यामि)	होक्खामि (भविष्यामि)

प्रयोग वाक्य

पिउणो पिट्ठम्मि पुत्तो आरुहइ। सीहस्स कडी पत्तली भवइ। तस्स टका थूला अत्थि। जराए पाओ जाणुम्मि पीला भवइ। चाइणो पाएसु सव्वे नमंति। णाही सरीरस्स मज्झभागे अत्थि। सत्थकिंदियस्स (स्वास्थ्य केंद्र) ठाण नियवो विज्जइ। पासम्मि केवलाइ अत्थीइ संति। सिण्ह मुत्तस्स दारं अत्थि। हियय विणा मणुअस्स किं महत्तणं? पण्हियाए कटगो लग्गिओ।

धातु प्रयोग

राया पासायत्तो पच्चुत्तरइ। सीसा आयरिअस्स पच्चुवगच्छंति। विज्जालयस्स निरिक्खिओ सत्तदिवसे सइ विज्जालयं पच्चुवेक्खइ। अण्णाणी वत्थूइ पच्चोगिलिऊण खाअइ। सयणत्तो पच्चोणियवत बालं पासिऊण सव्वे रक्खिउं पयत्तंति। सो आसत्तो पच्चोरुहइ। अहं कहिऊण न कया वि पच्चो-सक्कामि। अह पच्छामि भयत। सो णियट्ठाणं पच्छाअइ। अज्ज पेरंत सो बालो कह न पजपइ?

भविष्यत्कालिक प्रत्यय प्रयोग

रुक्खो कम्मि मासे फलिस्सइ? सो गीइय गाइहिइ। मज्झण्हे सूरिओ

तविस्सइ अहुणा समयो सीओ अओ सिग्घं चल। तुज्झ साउज्ज को करिस्सइ? अमुम्मि वरिसम्मि तुम किं अग्ग वविस्ससि? अहं सोमवारे लुचिहिमि। सो तु पियघरं दच्छिस्सइ। अहं तुमए सह न आलविस्सामि। सुरेसो सुवे दिक्खिहिइ। सा धेणू न दुहिस्सइ। अम्हे कम्मसत्तुं जिणिस्साम।

प्राकृत में अनुवाद करो

उसकी पसली साफ दिखाई देती है। मेरा कलेजा चुराकर कौन ले गया? सूप न खाने से उसके लिंग में पीड़ा है। उसने मुझे एड़ी से मारा। इस शहर में एक विद्यापीठ है। नीचे का धड़ कमर के आधार पर टिकता है। जंघा मोटी नहीं होनी चाहिए क्योंकि उससे चलने में कठिनाई होती है। भगवान के चरणों में देवता भी नमस्कार करते हैं। घुटने का व्यायाम करना चाहिए। उसकी नाभि का आकार सुन्दर नहीं है। नितंब को बढ़ाना नहीं चाहिए।

धातु का प्रयोग करो

वह पर्वत से नीचे आता है। गांव के लोग अतिथि नेता के सामने जाते हैं। प्रतिदिन अपनी गलतियों का निरीक्षण करना चाहिए। वह भोजन को स्वाद लेकर खाता है। पहाड़ से उतरती हुई गाड़ी से वह उछल नीचे गिर गया। नीचे उतरना कोई नहीं चाहता। वीर योद्धा युद्ध से पीछे नहीं हटता है। तुम्हें मेरे लिए प्रार्थना करनी चाहिए। मुझे स्थान को मत ढको। वह पूछने पर भी बहुत कम बोलता है।

भविष्यत्कालिक प्रत्ययों का प्रयोग करो

मेरे स्थान पर कौन आएगा? हमारे साथ तीर्थयात्रा में कौन जाएगा। भारत का प्रधान मंत्री कौन बनेगा? उसका विवाह कब होगा? उसकी बीमारी की चिकित्सा कौन करेगा। वह विदेश कब जाएगा? प्रेक्षाध्यान की कक्षा कौन लेगा? क्या उसके पुत्र होगा? तुम्हारे भाग्य का उदय कब होगा? वह गरीब क्या कभी धनवान बनेगा? तुम सभा को कब उद्बोधन करोगे? क्या वह आज कथा कहेगा?

प्रश्न

१. धातु के अन्त्य को आ आदेश कहां होता है?
२. काहं और दाहं रूप किस नियम से और किस प्रत्यय के स्थान पर बना है?
३. भविष्यत् अर्थ में होने वाले मि प्रत्यय के स्थान पर किन धातुओं को क्या आदेश होता है?
४. पीठ, कमर, जांघ, घुटना, पैर, नाभि, नितंब, लिंग, टांग, पसली

कलेजा, एडी शब्दो के लिए प्राकृत शब्द बताओ ।

५ पच्चुत्तर, पच्चुवगच्छ, पच्चुवेक्ख, पच्चोगिल, पच्चोणिवय, पच्चोरुह, पच्चोसक्क, पच्छ, मच्छाअ और पजप धातुओ के अर्थ बताओ और वाक्य मे प्रयोग करो ।

६. आसरोमो, पम्हाइ, भुमया, अवडू, कवोलो, असो, वच्छ, करयल, कुहुणी शब्दो को वाक्य मे प्रयोग करो तथा हिन्दी मे अर्थ बताओ ।

शब्द संग्रह (शरीर के अंग-उपांग ५)

मास—मंसं	चर्बी—मेदो, मेद, वसा
मज्जा—मज्जा	खून—रत्तं, अहिर
पीव—किलेओ, पूय	नस—सिरा
तिल्ली, प्लीहा—पिलिहा	झिल्ली—झिल्लिआ
फेफड़ा—फुप्फुस (दे)	आंत—अंत
मसा—मसो	हड्डी—अत्थि (न)
वीर्य (शुक्र)—वीरिओ	तिल—तिलो।

० ० ० ०

उपासना—उवासण	अभाव—अहावो, अभावो
तो—ता	गड्ढा—खड्ड
पाचन—पायण	

धातु संग्रह

पजल—विशेष जलना	पज्जुवट्ठा—उपस्थित होना
पजह—त्याग करना	पज्जुवास—सेवा करना, भक्ति करना
पज्ज—पिलाना, पान करना	पज्जोय—प्रकाशित करना
पज्जाल—जलाना, सुलगाना	पज्जोसव—वास करना, रहना
आयण्ण—सुनना	पज्झझ—शब्द करना

क्रियातिपत्ति

क्रिया की अतिपत्ति (असंभवता)। जहां एक काम के न होने में भविष्य में होने वाले दूसरे कार्य का अभाव दिखाना हो वहां क्रियातिपत्ति का प्रयोग किया जाता है।

क्रियातिपत्ति का अर्थ है—एक क्रिया के हुए बिना दूसरी क्रिया का न होना। जैसे—यदि अच्छी वर्षा होती तो सुकाल होता। यदि तुम पढ़ते तो उत्तीर्ण हो जाते। यदि तुम मुनि दुलहराज के पास रहते तो पढ़ जाते।

नियम ६११ (क्रियातिपत्तेः ३।१७९) क्रियातिपत्ति में प्रत्ययों को ज्ज और ज्जा आदेश होता है।

नियम ६१२ (न्त-माणौ ३।१८०) क्रियातिपत्ति में प्रत्ययों को न्त और माण आदेश होता है।

हस धातु क रूप सभी पुरुष सभी वचनों में—हसेज्ज, हसेज्जा, हसंतो, हसमाणो।

हो धातु के रूप सभी पुरुष सभी वचनो में—होएज्ज, होएज्जा, होज्ज, होज्जा। होतो, होमाणो, होअतो, होअमाणो।

प्रयोग वाक्य

तस्स अत्थि सुदढ अत्थि। राइभोयण मसेण सम विज्जइ। अस्स मेदेण थूलत्त अओ वलाभावो दिस्सइ। तस्स रत्त कण्ह कह जाअ? किलेएण सह को मोहो? चम्मस्स रगेण मज्ज मज्जा रगिआ अत्थि। सिराए रत्तस्स पवाहो चलइ। भोयण पुरा कस्सि अतम्मि गच्छइ? तुज्झ फुप्फुस सुद्ध नत्थि अओ सासग्गहणे पीडा भवइ। रत्ततिलो सुहो भवइ। वीरियस्स पडण मच्चुसम भवइ। वालस्स उप्पत्तिकाले तस्स सरीरस्स उवरि झिल्लिआ भवइ। सुद्ध पिलिह अतरेण पायणकिरिया सम्म न भवइ।

धातु प्रयोग

इधणस्स अहावेण (अभाव) अग्गी केच्चिर पजलिस्सइ? अग्गी धूम पजहइ। धाई सिसु दुद्ध पज्जेइ। तुज्झ सव्व वत्त अह आयण्णामि। मुणी अग्गि न पज्जालेज्जा। अह गुरुणो उवासणम्मि पज्जुवट्ठामि। सावगा साहुणो पज्जुवासति। चदो निसाए पज्जोयइ। अमुम्मि णयरे केत्तिआ जणा पज्जोसवति। तुब्भे परुप्पर न पज्झझेज्जा।

क्रियातिपत्ति प्रत्यय प्रयोग

जइ तुम मज्झ मणस्स अवत्थ मुणेज्जा ता कयावि मज्झ उवहास ण कुणेज्जा। जइ ह एग छण पुव्वं आगच्छेज्जा ता वप्फजाणस्स (रेलगाडी) उवरिं आसीणो होज्जा। जइ तुम रहस्स जाणेज्जा ता सच्चमग्गम्मि कयावि विचलिय ण होज्जा। जइ रायमग्गम्मि पयासो होज्जा ता अम्हे खड्ड न पडेज्जा। जइ इण पोत्थय ह तस्स देज्जा ता सो पसण्णो होज्जा। जइ तुज्झ पिआ अत्थ णिवसेज्जा ता तुज्झ सो वहुधण देज्जा। तुम एगग्गचित्तेण पढेज्जा अण्णहा अणुत्तीण्णो होज्जा।

प्राकृत में अनुवाद करो

मनुष्य का शरीर जल जाता है, हड्डिया शेष रहती हैं। शाकाहारी मास नही खाते हैं। शरीर मे चर्बी बढाना किनको अच्छा लगता है? खून की अल्पता से स्मरण शक्ति कमजोर पडती है। पीव की तत्काल शुद्धि करो, उससे होने वाले दर्द से मत डरो। शरीर की सात धातुओ मे मज्जा का कौन-सा स्थान है? आतो म मल भी रहता है। दीर्घ श्वास से फेफडे की शुद्धि होती है। पुरुष के दाहिने भाग मे तिल का होना क्या शुभ होता है? उसके नम-

नख में सौरस्य भरा है। वीर्य की सुरक्षा परम आवश्यक है। झिल्ली से शरीर की सुरक्षा होती है। उसकी तिल्ली ठीक प्रकार से काम नहीं करती है।

धातु का प्रयोग करो

हमारी बातों को कौन ध्यान से सुनता है? धूआं बहुत उठता है, देखो आग कहां जलती है? जो त्याग करता है वह पाता है। घर में जो भी आता है उसे वह ठंडा पानी पिलाता है। शीतकाल में लोग स्थान-स्थान पर अग्नि जलाते हैं। स्कूल में आज सब लड़के उपस्थित हैं? बड़े जनों की सेवा करनी चाहिए। नक्षत्र रात में ही प्रकाशित होते हैं। इस शहर में अब हमें नहीं रहना चाहिए। वे परस्पर क्यों शब्द करते हैं?

क्रियातिपत्ति प्रत्ययों का प्रयोग करो

मेरे पास पर्याप्त धन होता तो मैं विदेश अवश्य जाता। यदि वैद्य समय पर न पहुंचता तो रोगी मर जाता। यदि पास में जलाशय न होता तो सारा गांव जल जाता। यदि उसे भूखा रहना पड़ता तो वह स्वस्थ हो जाता। यदि वह भगवान के पास जाता तो उसके दुःख दूर हो जाते। यदि वह मेरे पास पढ़ता तो पास हो जाता। यदि यहां आचार्यश्री का चतुर्मास होता तो धर्म की जागरणा होती। यदि वह प्रेक्षाध्यान करता तो रोग से मुक्त हो जाता।

प्रश्न

१. क्रियातिपत्ति किसे कहते हैं?
२. क्रियातिपत्ति में किस नियम से क्या-क्या आदेश होता है?
३. हो धातु के प्रथमपुरुष, मध्यमपुरुष और उत्तमपुरुष के एकवचन तथा बहुवचन के रूप बताओ।
४. मांस, मज्जा, पीव, चर्बी, खून, नस, आंत, फेफड़ा, तिल, मसा, हड्डी, वीर्य, तिल्ली, झिल्ली शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ।
५. पजल, पजह, पज्ज, पज्जाल, पज्जुवट्ठ, पज्जुवास, पज्जोय, पज्जोसव, आयण्ण, पज्झंझ धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो।

शब्द संग्रह (वृत्तिजीवी वर्ग १)

धोबी—रजओ
नाई—णाविओ, ण्हाविओ
तेली—घचियो, तेल्लिओ
कुंभार—कुलालो, कुंभआरो
माली मालिओ, आरमिओ
दर्जी—सूइयारो
भडभूजा—भट्ठयारो
०
जूता—उवाणहा
हजामत—उवासणा

सुनार—सोवण्णिओ, सुवण्णयारो
लुहार—लोहारो, लोहयारो
जुलाहा—कोलिओ, पडयारो
कदोई—कदवियो
मोची—मोचिओ, चम्मयारो
तम्बोली—तंबोलिओ
ठठेरा—तबकुट्टओ
०
कर्तव्य—कायव्व
चमडे की धौंकनी—भत्थी

धातु संग्रह

पडह—जलाना, दग्ध करना
पडिअग्ग—सभालना
पडिअर—बीमार की सेवा करना
पडिअर—बदला चुकाना
पडिआइय—फिर से पान करना

पडिआइय—फिर से ग्रहण करना
पडिइ—पीछे लौटना, वापस आना
पडिउज्जम—सपूर्ण प्रयत्न करना
पडिउच्चार—उच्चारण करना
पडिउस्सस—पुनर्जीवित होना

लिंगबोध

लिंग तीन प्रकार के होते है—पुरुषलिंग, स्त्रीलिंग और नपुसकलिंग। जिस प्रकार विभक्ति और वचन के बिना नाम या सज्ञा का प्रयोग नही होता उसी प्रकार लिंग के बिना भी उसका प्रयोग नही होता। इसलिए लिंग का ज्ञान भी आवश्यक है। प्राकृत मे लिंग व्यवस्था सस्कृत से कुछ भिन्न है। वह इस प्रकार है—

नियम ६१४ (प्रावृट्-शरत्-तरणय पुंसि १।१३) प्रावृट्, शरत् और तरणि—ये तीनो शब्द सस्कृत मे स्त्रीलिंगी है परन्तु प्राकृत मे ये पुलिंगी होते है। प्रावृष्—पाउसो। शरद्—सरओ। तरणि—तरणी।

नियम ६१५ (स्नमदाम-शिरो-नभः १।३२) दामन्, शिरस् और नभस् शब्दो को छोडकर शेष सकारान्त और नकारान्त शब्द सस्कृत मे नपुसकलिंगी है परन्तु प्राकृत मे पुलिंगी है।

संस्कृत (न)	प्राकृत (पुं)	संस्कृत (न)	प्राकृत (पुं)
यशस्	जसो	तेजस्	तेओ
पयस्	पओ	उरस्	उरो
तमस्	तमो	जन्मन्	जम्मो
नर्मन्	नम्मो	वर्मन्	वम्मो
मर्मन्	मम्मो	धामन्	धामो

नीचे लिखे तीन शब्द प्राकृत में भी नपुंसकलिंगी हैं—

दामन्—दाम । सिरस्—सिरं । नभस्—नहं ।

बहुलाधिकार से नीचे लिखे शब्द नपुंसक लिंग में हैं—

श्रेयस्—सेयं । वयस्—वयं । सुमणस्—सुमण

शर्मन्—सम्मं । चर्मन्—चम्म

नियम ६१६ (वाक्ष्यर्थ-वचनाद्याः १।३३) अक्षि के पर्यायवाची और वचन आदि शब्द विकल्प में पुंलिंग होते हैं ।

संस्कृत	प्राकृत (पुं)	प्राकृत (न)	संस्कृत	प्राकृत (पुं)	प्राकृत (न)
अक्षि	अक्खो	अक्खि	नयन	नयणो	नयण
	अच्छी	अच्छि	लोचनं	लोयणो	लोयण
चक्षु	चक्खू	चक्खु	वचन	वयणो	वयणं
कुलम्	कुलो	कुल	छन्द	छदो	छंदं
माहात्म्य	माहप्पो	माहप्पं	दुःखं	दुक्खो	दुक्खं
भाजनं	भायणो	भायण	विद्युत्	विज्जुणा	विज्जूए (स्त्री)

नियम ६१७ (गुणाद्याः क्लीबे वा १।३४) गुण आदि शब्द विकल्प से नपुंसक लिंग में प्रयुक्त होते हैं ।

संस्कृत	प्राकृत (न)	प्राकृत (पुं)	संस्कृत	प्राकृत (न)	प्राकृत (पुं)
गुण.	गुणं	गुणो	देवः	देवं	देवो
बिन्दुः	बिंदु	बिंदू	मण्डलाग्रः	मंडलग्ग	मंडलग्गो
कररुहः	कररुह	कररुहो	वृक्ष	रुक्खं	रुक्खो

नियम ६१८ (वेमाञ्जल्याद्याः स्त्रियाम् १।३५) भाववाची इमन् प्रत्ययान्त शब्द और अञ्जलि आदि शब्दों का प्रयोग स्त्रीलिंग में विकल्प से होता है ।

संस्कृत	प्राकृत (स्त्री)	प्राकृत (पुं या नपुं)
गरिमन्	एसा गरिमा	एस गरिमा (पु)
महिमन्	एसा महिमा	एस महिमा (पु)
धर्त्तत्व	एसा धत्तिमा	एस धत्तिमा (प)

शब्द—

अञ्जलिः (पु)	अजली	अजलि (पु)
पृष्ठम्	पिट्ठी	पिट्ठ (न)
अक्षि (न)	अच्छी	अच्छि (न)
प्रश्नः	पण्हा	पण्हो (पु)
चौर्यं	चोरिआ	चोरिअ (न)
कुक्षिः	कुच्छी	कुच्छी (पु)
वलि	वली	वली (पुं)
निधि.	निही	निहो (पुं)
रश्मि.	रस्सी	रस्सी (पु)
विधि	विही	विही (पुं)
ग्रन्थि.	गंठी	गंठी (पु)

प्रयोग वाक्य

रजओ वत्थाइं सच्छाइ धावइ। णाविओ तस्स उवासण मगलवारे न करिस्सइ। तेल्लिओ तेल्ल विक्किणइ। कुभआरो घडाइं घडइ। सूइआरो सूइणा वत्थाइ सिव्वइ। मालिओ पुप्फेहिं मालं गुमइ। सोवण्णिओ कुडलं णिम्माइ। लोहआरो भत्थीए लोहस्स सडासं करेइ। कोलिओ तंतुहिं वत्थाइं णिम्माइ। किं तवोलिओ तवोलाणि सयं खामइ? कदवियो घेउर करेइ। मोचिओ कस्स उवाणहं न करेइ? अस्स गामस्स भट्ठयारस्स किं अभिहाणं अत्थि? तवकुट्टओ तंवस्स अणेगाणि वत्थूणि णिम्माइ।

धातु प्रयोग

दावाणलो वण पडहइ। मणिमोत्तियाइयं सारदव्वं पडिअग्ग। साहुणीओ बिदासरणयरे लुक्कसाहुणीए पडिभरति। जो चत्तभोगा इच्छइ सो वंतं पडिआइयइ। जो दिण्णधण्ण पडिआइयइ सो कायव्वत्तो भट्ठो। मुणिणो मणो सिया सजमत्तो वहिं गच्छेज्ज तया पडिक्कमणे पडिइड। संजमे पडिउज्जमेज्जा। सेहो सम्मं न पडिउच्चारइ। मुच्छिओ लक्खमणो (लक्ष्मण) ओसहिणा पडिउस्ससिओ।

प्राकृत में अनुवाद करो

धोबी के पास कपडे मत धुलाओ। मनुष्यो मे नाई चालाक होता है। तेली के घर से सरसो का तेल लाओ। चंदन कुम्हार गधे को घोडा क्यो कहता है? माली के पास किन फूलो की माला है? दर्जी कपडे सीने के लिए हमारे घर कब आएगा? भडभुजा चनो को रेत मे भुनता है (सेकता है)। सुनार सोने की चोरी करता है। लुहार कितने दिनो से यहा आया हुआ है? जुलाहा मोटा वस्त्र बुनता है। कदोई लड्डू और पेडा बनाता है। मोची के पास

कितने प्रकार के जूते हैं ? तंबोली के पान मीठे नहीं है । ठठेरा तांबे से घड़ा बनाता है ।

धातु का प्रयोग करो

अग्नि ने गांव का एक भाग जला दिया । धनी लोग रत्नों को संभालकर रखते हैं । जो साधु बीमार साधु की सेवा करता है वह निर्जरा का लाभ कमाता है । किए हुए उपकार का बदला चुकाना चाहिए । वमन किए हुए पदार्थ को फिर से खाने वाला कौन है ? दिए हुए दान को कोई भी वापस ग्रहण करना नहीं चाहता । युद्ध से सेना कभी-कभी पीछे भी लौटती है । याद करने के लिए बाल साधु को पूर्ण प्रयत्न करना चाहिए । प्रतिक्रमण करते समय शुद्ध उच्चारण करना चाहिए । उसने इस बीमारी के बाद पुनः जीवन धारण किया है ।

प्रश्न

१. लिंग कितने प्रकार के होते हैं ? लिंग का ज्ञान आवश्यक क्यों है ?
२. तीन ऐसे शब्द बताओ जो संस्कृत में स्त्रीलिंग हैं और प्राकृत में पुंलिंगी हैं ?
३. अक्षिवाची और वचन आदि शब्दों का प्राकृत में कौन-सा लिंग होता है ?
४. कौन-से शब्द संस्कृत में नपुंसकलिंगी हैं और प्राकृत में पुंलिंगी हैं ?
५. भाववाची इमन् प्रत्ययान्त शब्दों का प्रयोग किस लिंग में होता है ?
६. धोबी, नाई, तेली, कुंभार, माली, दर्जी, सुनार, लुहार, भटभूजा, [illegible], [illegible], मोची, तंबोली, ठठेरा—इन शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ ।
७ पडिरुह, पडिक्कम, पडिअर, पडिअर, पडिआदय, पडिआय, पडिइ, पडिवज्ज, पडिउच्चार, पडिस्सण धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो ।

शब्द संग्रह (वृत्ति जीवी वर्ग २)

चिकित्सक—चिइच्छओ
वैद्य—वेज्जो
चित्रकार—चित्तयारो (सं)
कारीगर—सिप्पी, कारु
मिस्त्री—जतिओ
ज्योतिषी—खणदो (स) जोइसिओ
कंबल वेचने वाला—कावलिओ
ड्राइक्लीनर—णिण्णेजओ (स)
प्रतिमा बनाने वाला—पडिमायारो
गवैया—गायओ, गाओ
बजाने वाला—वायगो
नाचने वाला—णच्चओ
चटाई बनाने वाला—वरुडो
बनिया—वणिओ, वावारि (वि)
जिल्दसाज—पोत्थारो
रसोइया—पाचओ

प्रतिमा—पडिमा
छुट्टी—अवगासो
विवाह—विआहो
भाग्य—भग्गं

धातु संग्रह

पडिकप्प—सजावट करना
पडिकोस—आक्रोश करना
शाप देना, गाली देना
पडिक्ख—प्रतीक्षा करना
पडिक्खल—गिरना, हटना
पडिक्कम—निवृत्त होना, पीछे हटना
पडिखिज्ज—खिन्न होना
पडिजागर—सेवाशुश्रूषा करना,
निभाना, निर्वाह करना
पडिगाह—ग्रहण करना
पडिच्छ—ग्रहण करना
पडिणिक्खम—बाहर निकलना

स्त्री प्रत्यय

पुंलिग शब्दो को स्त्रीलिंगी शब्द बनाने के लिए प्राकृत मे आ, ई (ङी) और उ प्रत्यय लगते हैं। आ और ई संस्कृत के आप् तथा ईप् के प्रतिरूपक है।

(नियम २९६ स्त्रियामादविद्युतः १।१५ से) विद्युत् शब्द को छोडकर स्त्रीलिंग मे होने वाले शब्दो के अन्त्य व्यंजन को आ हो जाता है।

अन्त्य व्यंजन 7 आ—सरित् (सरिआ) प्रतिपत् (पाडिवआ) संपद् (सपआ)
बाहुलकात् य श्रुति भी होती है—सरिया, पाडिवया, सपयो।

नियम ६१९ (स्वस्रादे र्डा ३।३५) स्वसृ आदि शब्दो को स्त्रीलिंग मे डा प्रत्यय होता है। स्वसृ (ससा) बहन। ननान्दृ (णणंदा) ननंद। दुहितृ

(दुहिआ) दोहित्री । गवय: (गउआ) गाय ।

नियम ६२० (छाया-हरिद्रयोः ३।३४) छाया और हरिद्रा शब्दों से स्त्रीलिंग में ङी (ई) प्रत्यय विकल्प से होता है। छाया (छाया, छाही) छाया। हरिद्रा (हलिद्दी, हलिद्दा) हल्दी ।

नियम ६२१ (अजातेः पुंसः ३।३२) अजातिवाची पुल्लिंग शब्दों से स्त्रीलिंग में ङी प्रत्यय विकल्प से होता है । नीलः (नीली, नीला) नीली। कालः (काली, काला) काली । हसमानः (हसमाणी, हसमाणा) हंसती हुई। सूर्पणखी (सुप्पणही, सुप्पणहा)। अनया (इमीए, इमाए) एतयो (एईए, एआए) अजातेरितिकिम् ? जाति अर्थ में जातिवाची अकारान्त शब्दों में स्त्रीलिंग में ई प्रत्यय जोड़ा जाता है । हरिणी, सिंही, करिणी इत्यादि । कहीं आ प्रत्यय भी जोड़ते हैं--एलया, अया ।

नियम ६२२ (किं यत् तदोस्यमामि ३।३३) किं, यद्, तद्--इन तीन शब्दों में सि, अम् और आम् प्रत्ययों को छोड़कर शेष स्यादि प्रत्ययों में स्त्रीलिंग में ङी (ई) प्रत्यय विकल्प से होता है । कीओ, काओ । कीए, काए । कीसु, कासु । जीओ, जाओ । जीए, जाए । जीसु, जासु । तीओ, ताओ । तीए, ताए । तीसु, तासु ।

(नियम २६१ रो रा १।१६ से) स्त्रीलिंग में अन्त्य र् को रा आदेश होता है । गिर् (गिरा) वाणी । पुर् (पुरा) प्राचीन । धुर् (धुरा) धुरी ।

नियम ६२३ (बाहोरात् १।३६) स्त्रीलिंग में बाहु शब्द के अंतिम उ को आ आदेश होता है । बाहा (बाहुः) भुजा ।

नियम ६२४ (प्रत्यये ङीर्न वा ३।३१) अण् आदि प्रत्ययों को संस्कृत में स्त्रीलिंग में ङी (ईप्) प्रत्यय कहा गया है । प्राकृत में उनमें ङी प्रत्यय विकल्प से होता है । पक्ष में आप् (आ) प्रत्यय भी होता है । साहणी, साहणा । कुरुचरी, कुरुचरा ।

प्रयोग वाक्य

चिकित्सओ गुणसायरो किं तुज्झ चिइच्छं करेइ ? वेज्जो सामसुंदरो अम्ह गामस्स पमुहो वेज्जो अत्थि । चित्तयारो पासणाहस्स चित्तं चित्तेइ । सिप्पी सिप्पसिप्पं जणा दच्छेंट । जत्तिएण अज्ज अवगासो कहं गहिओ ? जोइसिओ गहाण पभावेण जणाणं भग्गं कहेइ । कंबलिअस्स पासे केत्तिलाणि कंबलाणि संति ? णिण्णेजओ नीरं विणा वत्थाइं धावइ । पडिबिंबयारेण पासणाहस्स पडिमा सव्वा कया । गायओ सुमेरो मंदसरेण महुरं गाअइ । वायगो वि गायएण सह अत्थ आगमिहिइ । विआहे वरस्स भाआ चे णच्चओ भवेज्ज त न सोहणं । वड्ढइ पइदिणं कज्जं कहं न करेइ ? वणिओ वावारम्मि पडू भवइ । पोत्थारो अत्थ कया आगमिस्सइ ? पाचओ बहु सम्मं पयइ (पकाता है) ।

धातु प्रयोग

खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! कूणियस्स रण्णो भिंभिसारस्स आभिसेक्क हत्थिरयण पडिकप्पेहि । सो तुव कह पडिकोसेइ ? साहू मुहु-मुहु असजम पडिक्कमइ । तुमं कं पडिक्खसि ? गगणत्तो पाणिअविंदूइ पडिक्खति । तुम अप्पे परिस्समे किं पडिखिज्जसि ? साहू भिक्ख पडिगाहेइ पडिच्छइ वा । सोहणो सपुण्ण परिवारं पडिजागरइ । सो जिणसासणे गिहवासत्तो पडिणिक्खमइ ।

प्राकृत में अनुवाद करो

चिकित्सक आज घर पर नही है । वैद्य नया शोध कार्य नही करता है । चित्रकार क्या चित्र बनाना सिखाता है ? कारीगर अपनी कला मे बहुत प्रसिद्ध है । मिस्त्री के साथ कितने आदमी और है । ज्योतिषी तीनो काल को जानता है । कवल बेचने वाला कहा से आया है ? ड्राइक्लीनर अपने कार्य में कुशल है । प्रतिमा बनाने वाला कब तक प्रतिमा बनाकर देगा ? क्या तुम गवैया बनना चाहते हो ? वाद्य बजाने वाला कितना रुपया मागता है ? नाचने वाला केवल मूक नृत्य करता है । चटाई बनाने वाले के पास जाकर कहो वह जल्दी अपना काम पूरा करके दे । बनिये की बुद्धि सबके पास नही होती है । जिल्दसाज जैन विश्व भारती मे एक मास मे दो बार आता है । रसोइया क्या विवाह मे मीठाई बना देगा ?

धातु का प्रयोग करो

आज दीपावली है, घर की सजावट दीपको से करो । लडाई मे भाई भाई को गाली देता है । दो वर्ष के बाद वह व्यापार से निवृत्त हो जाएगा । उसने तुम्हारी प्रतीक्षा क्यो नही की ? वह सयम से क्यो गिर गया ? तुम्हे देखते ही वह खिन्न क्यो होता है ? उसने मेरे द्वारा दिए गए वस्त्र ग्रहण क्यो नही किए ? आज के युग मे जो परिवार का निर्वाह करता है, वही जानता है । दीक्षा के लिए उसने किस गाव से निष्क्रमण किया था ?

प्रश्न

१. पुंलिग शब्दो को स्त्रीलिंगो बनाने के लिए कौन-कौन से प्रत्यय लगते है ?

२ स्त्रीलिंग मे डा और डी प्रत्यय किस नियम से किन-किन शब्दो को होता है ?

३ स्त्रीलिंग मे अन्त्य व्यंजन मे किम नियम से क्या आदेश होता है ? उदाहरण सहित बताओ ।

४. चिकित्सक, वैद्य, चित्रकार, कारीगर, मिस्त्री, ज्योतिपी, कवल वेचने वाला, ड्राइक्लीनर, प्रतिमा बनाने वाला, गवैया, वजाने वाला,

नाचने वाला, चटाई बनाने वाला, बनिया, जिल्दसाज—इन शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ ?

५. पडिकप्प, पडिकोस, पडिपदम, पडिक्ख, पडिक्खल, पडिखिज्ज, पडिग्गाह, पडिच्छ, पडिजागर और पडिणिक्खम—इन धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो।

६. जण्हुआ, पातो, टंगो, किनेलो, मत्तो, अंतं, पंचिलो, कोलिलो, ण्हाविओ—इन शब्दों को वाक्य में प्रयोग करो तथा हिन्दी में अर्थ बताओ।

शब्द संग्रह (वृत्ति जीवी वर्ग ३)

किसान—किसीवलो
अहीर—अहिरो, गोवालो
गडरिया—अयाजीवो, अयापालो
घसियारा—तणहारो
मजदूर—भारहरो
पसारी—गंधिओ
चौकीदार—पहरी, दारवालो
सपेरा—आहितुंडिओ
भंगी—संमज्जओ
नौकर—सेवओ, भिच्चो
बढई—रहयारो, तक्खो, वड्ढई
मूल्य लेकर धान काटने वाला—अत्थारिओ
चपरासी—पेसो
चुराई वस्तु को खोजकर लाने वाला—कूवियो

० ० ●

जूठा—णवोद्धरणं (दे०)
ब्राह्मण—बंभणं
दुर्लभ—दुलहो
धूम्रपान—धूमपाण

धातु संग्रह

पडिचर—परिभ्रमण करना
पडिणिज्जाय—अर्पण करना
पडिदा—दान का बदला देना
पडितप्प—भोजनादि से तृप्त करना
पडिदंस—दिखलाना
पडिपेहा—ढकना, आच्छादन करना
पडिणिग्गच्छ—बाहर निकलना
पडिन्नव—प्रतिज्ञा कराना, नियम दिलाना
पडिपाअ—प्रतिपादन करना
पडिपुच्छ—पूछना, पृच्छा करना

कारक—प्राकृत मे कारक संबधी विधान सस्कृत के समान हैं। कुछ विशेष नियम ये हैं—

नियम ६२५ (चतुर्थ्याः षष्ठी ३।१३१) चतुर्थी विभक्ति के स्थान पर षष्ठी विभक्ति होती है। मुनये मुनिभ्यो वा ददाति (मुणिस्स मुणीणं वा देहि) नमो देवाय देवेभ्यो वा (नमो देवस्स देवाणं वा)।

नियम ६२६ (तादर्थ्यङे र्वा ३।१३२) तादर्थ्य मे होने वाली चतुर्थी विभक्ति के एकवचन को षष्ठी विभक्ति विकल्प से होती है। देवार्थम् (देवाय, देवस्स वा)।

नियम ६२७ (वधाड्डाइश्च ३।१३३) वध शब्द से चतुर्थी विभक्ति को डाइ (आइ) और षष्ठी विभक्ति विकल्प से होती है। वधार्थम् (वहाइ,

प्राकृत में अनुवाद करो

किसान खेत मे बीज बोता है। अहीर गायो का पालन करता है। घसियारा घास काटकर बेचता है। चौकीदार सजगता से अपना कार्य करता है। मजदूर दिन भर भार ढोता है फिर भी उसकी भूख नही मिटती। तुम्हारे खेत मे वेतन लेकर धान काटने वाले कितने हैं? गडरिया चार सौ भेड़, बकरियो को चराता है। पसारी की दुकान पर कितने आदमी बैठे है? सपेरा साप को पकड़ने के लिए वन मे गया है। भगी घर की सफाई क्यो नही करता है? बढई एक दिन मे एक किवाड भी नही बनाता है। चपरासी आज कार्य पर क्यो नही आया है? राजा का हार गुम हो गया है, खोज करने वाले को कहो, वह खोज कर लाए। वेतन नेकर घास को काटने कितने व्यक्ति आए है?

धातु का प्रयोग करो

सपूर्ण भारत का परिभ्रमण किसने किया है? वह भगवान को जलाजलि अर्पण करता है। उसको देश से बाहर निकाल दिया। वह सार्धमिको को भोजन से तृप्त करता है। रमेश घर मे आने वालो को अपना घर दिखाता है। मुनि भिक्षा लेते है और उन्हे जीवन का मार्ग बताते है। साधु ग्रामवासियो को मद्यमास छोडने का नियम दिलवाते है। उसने तर्क सहित सत्य का प्रतिपादन किया। मैं आपसे आपके जीवन के सस्मरण पूछता हू। स्त्रिया अपने मुह को ढाकती है।

प्रश्न

१. प्राकृत मे चतुर्थी के स्थान पर कौन-सी विभक्ति किस नियम से होती है? तादर्थ्यचतुर्थी विभक्ति के एकवचन को क्या आदेश होता है? और किस नियम से? तीन उदाहरण दो।
२ द्वितीया, तृतीया, पंचमी और सप्तमी के स्थान पर कौन-कौन सी विभक्ति किस नियम से आदेश होती है? दो-दो उदाहरण दो।
३. षष्ठी विभक्ति किन विभक्तियो के स्थान पर होती है? उदाहरण दो।
४. किसान, अहीर, गडरिया, घसियारा, मजदूर, पसारी, चौकीदार, सपेरा, भगी, नौकर, बढई, चपरासी, चुराई वस्तु को खोजकर लाने वाला—इन शब्दो के लिए प्राकृत शब्द बताओ।
६. पडिचर, पडिणिज्जाय, पडिदा, पडितप्प, पडिदस, पडिणिगच्छ पडिन्नव, पडिपाअ, पडिपुच्छ, पडिपेहा धातुओ के अर्थ बताओ और वाक्य मे प्रयोग करो।

हो जाता है। अन्तर्वेदि (अन्तावेई)। सप्तविंशतिः (सत्तावीसा)।

कहीं पर विकल्प से होते हैं—

भुजयन्त्रम् (भुआयत, भुअयंत) पतिगृहम् (पईहर, पइहर) वेणुवनं (वेलूवण) वारिमति (वारीमई, वारिमई)।

दीर्घ को ह्रस्व विकल्प से—

नदी स्रोतस् (नइसोत्त, नईसोत्तं) गौरीगृहम् (गोरिहर, गोरीहरं) यमुनातटम् (जंउणयडं, जउणायडं), वधूमुखम् (वहुमुहं, वहूमुह)।

अव्ययीभाव समास

समास मे दो पद होते हैं—पूर्वपद और उत्तरपद। पूर्व (पहले) होने वाले पद को पूर्वपद और आगे होने वाले पद को उत्तरपद कहते हैं। उत्तर-पद के कुछ अर्थों के लिए अव्यय प्रयोग मे आते हैं। अव्ययीभाव समास मे उन अव्ययो का प्राग् निपात हो जाता है यानि वह अव्यय उत्तरपद से पूर्वपद मे आ जाता है। उत्तरपद का शब्द नपुसकलिंगी हो जाता है। दीर्घ शब्द हो तो वह ह्रस्व हो जाता है। कुछेक अर्थों के लिए निम्नलिखित अव्यय निश्चित हैं।

अर्थ	अव्यय	अर्थ	अव्यय
समीप अर्थ मे	उव	सप्तमी विभक्ति के अर्थ मे	अहि
योग्य अर्थ मे	अणु	अनतिक्रमण के अर्थ में	जहा
विनाश अर्थ मे	अइ	वस्तु के अभाव मे	निर् नि+ अगला वर्ण द्वित्व)
पश्चाद् अर्थ मे	अणु	वीप्सा अर्थ मे	पइ
साथ के अर्थ मे	सह	समृद्धि अर्थ मे	सु
एकसाथ अर्थ मे	स		

उदाहरण

गुरुणो समीप—उवगुरु
अप्पंसि—अज्झप्प
रूवस्स जोग्गं—अणुरूव
सत्ति अणइक्कमिऊण—जहासत्ति
हिमस्स अच्चओ—अइहिमं
बलस्स अहाओ—णिब्बलं
आयरियस्स पच्छा—अणुआयरिय
पुरं पुरं पइ—पइपुर
चक्केण सह—सचक्कं
भद्दाणं समिद्धी—सुभद्द
चक्केण जुगवं—सचक्क

प्रयोग वाक्य

पत्तेयदेसस्स अण्णदेसम्मि चरा भवति। कितवो टेंटाए जूअं खेलइ।

खिगस्स मणम्मि (मणंसि) सत्ती नत्थि। पतारगो वायेण लोएहिन्तो धण गिण्हइ। जणसमूहे पाओ (प्राय) गंठिछेओ मिलइ। चिप्पपुरिसो थीणं वत्थाणि परिहाइ। परम्म किमवि वत्थु आण विणा जो गिण्हइ सो चोरो भवइ। दस्सू दिणे चेअ लुटइ। रमेसो अणड मग्गिउ अहिलसइ। अत्थ सुडिअस्स वावारं न चलिस्सइ। केवट्टो पवंपुलिण मच्छा गिण्हइ भक्खइ य। तुमं सोणिअ णासिऊण किं उवदिससि ? लुद्धो पुच्छइ जं किं दओ हरिणो गओ ?

धातु प्रयोग

तुज्झ कज्जम्मि को वि न पडिवंधइ। किं तुम सकप्पेण पुव्वगहिअ सकप्प पडिवंधमि ? करकडू मय पडिवुज्झइ। मज्झ पत्तं कह पडिभजिअ ? गणवाहिसाहू अण्ण साहुं गणाओ पडिभंसइ। सीयकाले पयजत्ताए को पडिभमइ ? झाणम्मि त भविस्सं पडिभासइ। सेट्ठिणा भिच्च पडिमुंचिउं वहु पयत्तईअ। अह पडियाइक्खामि तिणा सह विवाद न करिहिमि। सो रायाण पडिमतेइ।

अव्ययप्रयोग वाक्य

अहं उवगुरु उवविसामि। अणुआयरिय मघस्स विआसो को करिस्सइ ? अज्झप्प रमण साहुस्स मेय। अणुरुव सम्माण मिलइ। पइमुणि सो मुहपुच्छं पुच्छइ। णिद्धणाण साउज्जं (सहयोग) को करिहि ? णिव्वलाण को मित्त ? जहासत्ति तवो करणीओ। जणा मुजेण असूअति। हिमवम्मि पव्वये अइहिम कया जाअ ? सो सचक्क मगडिआ कीणइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

जासूस ने क्या नई सूचना दी है ? राज्य कर्मचारी ने जुआरी को जुवाखाने मे जुआ खेलते हुए पकडा। ठग की किसी के साथ मित्रता नही है। पाकिटमार भी प्रशिक्षण लेता है। भारत का सुप्रसिद्ध जादूगर आजकल विदेश गया हुआ है। समाज ही व्यक्ति को डाकू बनाता है। हिजडो का भी एक समाज होता है। चोर किसके मकान मे घुसा है ? जार पुरुष की दुर्गति होती है। सुरा विक्रेता सुरा का प्रचार करता है। मच्छीमार रात मे भी समुद्र मे जाकर मछलियो को पकडते हैं।

धातु का प्रयोग करो

साधु बनने मे उसके लिए कोई अवरोध नही है। सकल्प को दोहरा कर वह संकल्प को सकल्प मे वेष्टित करता है। कुछ महापुरुष स्वय प्रतिबोध पाते हैं। उनकी मित्रता कैसे टूटी ? धर्मपथ से किसी को भ्रष्ट मत करो। वह प्रतिवर्ष कई तीर्थस्थानो का पर्यटन करता है। उसकी आत्मा निर्मल है इसीलिए उसे भविष्य की घटना प्रतिभासित होती है। उसने

कोई उत्तर नही दिया वह पिंजडे से पक्षी को छोडता है। वह स्त्री का त्याग करता है।

प्राकृत में अनुवाद करो (अव्यय का प्रयोग)

तेरे घर के पास किसका घर है? भगवान महावीर के बाद कौन हुए? घर मे कौन रहेगा? प्रतिष्ठा के अनुरूप कार्य करो। समय मात्र का भी प्रमाद मत करो। यह स्थान मनुष्यो रहित क्यो है? यह स्थान मक्षिका रहित है। यथाशक्ति गुरु की सेवा करनी चाहिए। जैनो की समृद्धि ईर्ष्या का कारण बनती है। शिमला मे बर्फ का विनाश कब हुआ? उसने कुँए सहित खेत को खरीद लिया। कसाई को हिंसा न करने का उपदेश दो। शिकारी हरिण को मारना चाहता है।

प्रश्न

१ प्राकृत मे समास के लिए क्या विधान है?

२ नीचे लिखे शब्दो मे बताओ किस नियम से किस शब्द को ह्रस्व या दीर्घ हुआ है? अन्तावेई भुआयत, पईहर, नईसोत्तं, सत्तावीसा, वहूमुह।

३ नीचे लिखे अव्यय किस अर्थ मे प्रयुक्त होते है? उव, पड, अणु, जहा, अइ, सु, अहि, सह।

४. अव्ययीभाव समास मे पूर्वपद कौनसा शब्द होता है? और उत्तरपद किन-कन लिंगो मे प्रयुक्त होता है?

५. जासूस, जुआरी, ठग, पाकिटमार, हिंजडा, जादूगर, चोर, डाकू, जारपुरुष, सुराविक्रेता, मच्छीमार, कसाई, शिकारी—इन शब्दो के लिए प्राकृत शब्द बताओ।

६ पडिवध, पडिवध, पडिवुज्झ, पडिभज, पडिभस, पडिभम, पडिभास, पडिमत, पडिमुच और पडियाइक्ख धातुओ के अर्थ बताओ तथा वाक्य मे प्रयोग करो।

चोरत्तो भय—चोरभय । पावाओ भीओ—पावभीओ । कम्माओ मुत्तो—कम्ममुत्तो । आसत्तो पडिओ—आसपडिओ ।

षष्ठी— पासस्स मंदिर—पासमदिर । विज्जाए मदिर—विज्जामंदिरं । समाहिणो ट्ठाण—समाहिट्ठाणं । लोगस्स उज्जोयगरो—लोगोज्जोयगरो । धम्मस्स आलयो—धम्मालयो । गामस्स सामी—गामसामी । रट्ठस्सपई—रट्ठपई ।

सप्तमी— ववहारे कुसलो—ववहारकुसलो । पुरिसेसु उत्तमो—पुरिसोत्तमो णयरे सेट्ठी—णयरसेट्ठी । पुरिसेसु सीहो—पुरिससीहो । लोगेसु उत्तमो—लोगुत्तमो । लेहणे दक्खो—लेहणदक्खो ।

तत्पुरुष समास का दूसरा रूप भी मिलता है। पहले पद मे प, अइ अणु आदि अव्यय होते हैं और दूसरे पद मे प्रथमा आदि छह विभक्तिया। इसका प्रयोग दो पदो के अन्य अर्थ मे होता है, इसलिए इसे वहुव्रीहि रूपक तत्पुरुप कहते हैं। वहुव्रीहिसमास और वहुव्रीहिरूपकतत्पुरुप की पहचान विग्रह से होती है। दोनो के विग्रह मे अन्तर है। वहुव्रीहिरूपकतत्पुरुप समास के विग्रह मे अव्यय का अर्थ साथ मे रहता है, वहुव्रीहिसमास मे नही रहता। वहुव्रीहिसमास मे उत्तरपद का लिंग नही रहता, वह विशेषण वन जाता है और विशेष्य के अनुसार चलता है।

प्रथमा—प—पगओ आयरिओ—पायरिओ
द्वितीया—अइ—अइक्कतो गग—अइगग
तृतीया—अणु—अणुगयं अत्थेण—अन्वत्थ
चतुर्थी—अलं—अलं कुमारीए—अलकुमारी
पंचमी—उत्—उक्कतो मग्गाओ—उम्मग्गो

प्रयोग वाक्य

अस्स णयरस्स णायिआए कि अभिहाण अत्थि ? धाई सिसु खेलावेइ। णट्टई सहाए णट्टइ। लोहआरी लोहआरस्स ठाणे कज्जं करेइ। सुवण्णआरी पगईए सरला अत्थि। सेट्ठिणी सेट्ठि सिक्खइ। खत्तिआणी वीरा पुत्ता जणेइ। बभणी जाव जवइ। सुत्तगारी कप्पासेहि सुत्त करेइ। वुत्तगारी पोत्थयं लिहइ। किच्चा इदजालिअत्तो अहिया पडू अत्थि।

धातु प्रयोग

कूवो पडिरुइ। कज्जकत्ता पइघर धणं पडिलभइ पडिलभइ वा। सावगो साहु पडिलाभेइ। मुणी वत्थाइ पत्ताइं य पडिलेहइ। तुमं पत्तेयं पण्ह मा पडिवक्क। सो चरित्तं पडिवज्जइ। ओज्झरो पव्वयाओ पडिवयइ। अहं अमुम्मि नयरे पचवरिसाओ पडिवसामि। आयरिओ गणस्स भारं पडिवहइ। तिणा विसयो मम्मं पडिवायिओ।

उण्हं जलं=सीउण्हं जलं। रत्तं य पीअं वत्थं=रत्तपीअं वत्थं।

(४) उपमान पूर्वपद—जिसमें पहला पद उपमान वाची हो। घणो इव सामो=घणसामो (घनश्याम:)। वज्ज इव देहो=वज्जदेहो (वज्रदेह:)

(५) उपमेय उत्तरपद—जिसमें उत्तरपद उपमेयवाची हो। पुरिसो सीहो इव=पुरिससीहो। मुहं चंदो इव=मुहचंदो।

(६) अवधारण बोधक—जिनका पहला पद किसी भी अर्थ में हो और वह दूसरे पद से जोडा जाए उसे अवधारण बोधक कहते हैं। विज्जा एव धणं=विज्जाधणं। संजमो चिअ धणं=संजमधणं। णाणं चेअ गंगा=णाणगंगा

द्विगु समास

कर्मधारय का प्रथमपद यदि संख्या परक हो तो उसको द्विगु समास कहते है। द्विगुसमास प्राय: समुदाय बोधक होता है। णवण्ह तत्ताण समाहारो=णवतत्तं। तिण्णि लोया=तिलोयं। चउण्हं कसायाणं समूहो=चउक्कसायं।

नञ्तत्पुरुष

अभाव या निषेधार्थक अ अथवा अण के साथ संज्ञा शब्दों के समास को नञ्तत्पुरुष समास कहते है। उत्तरपद में व्यंजन आदि वाला संज्ञा शब्द हो तो अ के साथ तथा स्वर आदि वाला हो तो अण के साथ समास होता है।

न हिंसा (अहिंसा)	न आयारो (अणायारो)
न सच्चं (असच्चं)	न इट्ठ (अणिट्ठं)
न धम्मो (अधम्मो)	न इड्ढी (अणिड्ढी)

प्रयोग वाक्य

चेलणा सेणिअरण्णो महिसी आसि। किन्नरिं पासिऊण जो विचलिरो न भवइ सो एव बंभयारी। सुंदरिं णिआलिऊणं मणो चंचलो भवइ। रुक्खिनी जणा भयमेरवा करेइ। पणसुंदरी णयरवासिणो पत्ती भवइ। कुलडा परपुरिसाओ पेम्मं करेइ। धम्मेसस्स पत्ती कामुआ नत्थि। रमेसस्स एगा बहिविणा गिहस्स पासे चेअ वसइ। चवलाए चवलत्तं थीणं दोसो होइ। अविधाउरीए पुत्तस्स अहिलासा बहुभवइ।

धातु प्रयोग

पडिसवमाणो सोहणो नहलो (सफल) न भवइ। सो कल्लं जावज्जीवं असच्चजंपणस्स पडिसेविस्सइ। रज्जा हिगारी कोट्ठागारे संगहियस्स अन्नं किमट्ठ पडिसाइइ? मोहणो रमेसस्स कोवं पडिसंजलइ। तुडियकायो (काच) न पडिसधइ। अह कल्लं पावाओ पडिसमिस्सामि। सावगो सामाइयम्मि सावज्जजोगाओ अप्पाण पडिसहरइ। सो सव्वं वेयणं पडिसवेयइ। मुणी ससारस्स सरुवं पडिसविक्खइ। सरलो णियतुंडं पडिसंवाइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

राजा के एक पटरानी होती थी। कई स्त्रिया अप्सरा के समान रूपवती होती है। इस वर्ष की भारतसुदरी कौन है? स्त्री को राक्षसी क्यो कहा गया है? वेश्या किसी की भी पत्नी नहीं होती है। कुलटा का समाज मे सम्मान नही होता है। कामी स्त्री जगह-जगह पुरुष को खोजती है। कामी पुरुष उपपत्नी को पत्नी से अधिक चाहता है। चचल स्त्री का मन स्थिर नही रहता है। वन्ध्या को माता बनने की प्रबल इच्छा होती है।

धातु का प्रयोग करो

किसी को शाप के बदले शाप मत दो। प्रतिदिन एक प्रतिज्ञा अवश्य करो। फल नही खाते हो इसीलिए घर मे पडे हुए फल सड रहे हैं। क्या तुम अग्नि को उद्दीपित करते हो? साधु अपने पात्र को फिर से साधते हैं। क्या तुम सासारिक कार्यों से विरत हो गए? उसने अपनी इन्द्रियो को विषय से निवृत्त किया। मुनि प्रतिक्षण सुख का अनुभव करता है। पारस मुनि ने तपस्या पर विचार किया। वह चित्त समाधि को स्वीकार करता है। अपने व्यवहार से तुमने टूटी हुई मित्रता को फिर से साध लिया।

प्रश्न

१. कर्मधारय समास किसे कहते है? उसके कितने भेद होते है?
२. विशेषण पूर्वपद, विशेषण उत्तरपद और विशेषण उभयपद किसे कहते हैं? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दो।
३. उपमान पूर्वपद और उपमेय उत्तरपद मे क्या अतर है? दो-दो उदाहरण दो।
४. द्विगु समास के तीन उदाहरण दो।
५. नञ् तत्पुरुष समास के चार उदाहरण दो।
६ नीचे लिखे शब्दो का समास विग्रह करो और बताओ ये किस भेद के अन्तर्गत है।
पीअवत्थ, कण्हसाडी, सीउण्हो वातो (वायु)। पुरिसगधहत्थी, गुरुवरो, सेअपीअ गुह, आसवरो, लोहदेहो, तवधणं, छदव्व, अपरिग्गहो, पचमहव्वय, अपुण्ण, अणुत्तर
७ पटरानी, अप्सरा, सुदरी, राक्षसी, वेश्या, कुलटा, कामीस्त्री, उपपत्नी, वंध्या, चचलस्त्री—इनके लिए प्राकृत शब्द बताओ।
८. पडिसव, पडिसव, पटिसाड, पडिसंजल, पडिसंध, पडिसम, पडिसंहर, पडिसवेय, पडिसंचिक्ख, पडिसध—इन धातुओ के अर्थ बताओ और वाक्य मे प्रयोग करो।

शब्द संग्रह (स्त्रीवर्ग ४)

ऊंचे नाक वाली—तुगणासिआ
वड़े पेट वाली—दीहोअरी
अच्छे केश वाली—सुएसी
शीघ्र प्रसववाली—अणुसूआ
मोटी स्त्री—पीवरी

युवती—जुवई
पुत्रवती—पुत्तवई
चतुरस्त्री—णिउणा
गृहपत्नी—गिहिणी
परतंत्रस्त्री—आविउज्झा (दे०)

० ० ० ०

वार्ता—वत्ता
वैक्रिय शरीर से संबधित—विउव्विअ (वि)
स्वतंत्र—सतंत (वि)

घटना—घडणा
लब्धि—लद्धि (स्त्री)

धातु संग्रह

पडिसखा—व्यवहार करना
पडिसखेव—समेटना
पडिसचिक्ख - चिंतन करना
पडिसाह—उत्तर देना
पडिसेव—निषिद्ध वस्तु का सेवन करना

पडिहर—फिर से पूर्ण करना
पडिहा—मालूम होना, लगना
पडिहास—मालूम होना, लगना
पडिसुण—प्रतिज्ञा करना, स्वीकार करना
पडिसाहर—निवृत्त करना

बहुव्रीहि

वहुव्रीहि समास मे पूर्वपद और उत्तरपद की प्रधानता नही होती है, तीसरे पद की प्रधानता होती है, इसलिए उसे अन्यपदप्रधान समास भी कहते है। वहुव्रीहिसमास करने के वाद वह समासित पद किसी शब्द का विशेषण ही वनता है, विशेष्य नही होता। विशेष्य के अनुसार उसमे लिंग और वचन होते है। वहुव्रीहिसमास दो प्रकार का होता है—समानाधिकरण और व्यधिकरण। जिस विग्रह मे दोनो पदो मे समान अधिकरण (विभक्ति) होती है उसे समानाधिकरण कहते है। जहा दोनो पदो मे भिन्न-भिन्न विभक्ति होती है उसे व्यधिकरण कहते है। विग्रह मे ज (यत्) शब्द का प्रयोग किया जाता है, वह विशेष्य से संवध रखता है। ज शब्द मे द्वितीया से लेकर सप्तमी विभक्ति तक का प्रयोग किया जाता है। वहुव्रीहिसमास मे जिन शब्दो मे समास होता है, वे शब्द त (तत्) के द्वारा सूचित अर्थ के विशेषण वनते है।

समानाधिकरण बहुव्रीहि के उदाहरण—

आरूढो वाणरो ज रुक्ख मो आरूढवाणरोरुक्खो (वृक्ष)। जिआणि इंदियाणि जेण सो जिइंदियो मुणी। जिआ परीसहा जेण सो जिअपरीसहो महावीरो। णट्ठो मोही जस्स सो णट्ठमोहो वीयराओ। सेअ अंबर जेसिं ते सेयंवरा। वीरा णरा जम्मि गामे सो वीरणरो गामो। जिओ कामो जेण सो जिअकामो महादेवो। पीअ अवर जस्स सो पीआवरो। आसा (दिशा) अवरं जेसि ते आसवरा। एगो दंतो जस्स सो एगदतो गणेसो। सुत्तो सीहो जाए सा सुत्तसीहा गुहा।

व्यधिकरण के उदाहरण

चक्कं पाणिम्मि जस्स सो चक्कपाणी विण्हू (विष्णु)। गडीव करे जस्स सो गंडीवकरो अज्जुणो।

उपमान पूर्वपद वाला बहुव्रीहि

मिगनयणाइ इव णयणाणि जाए सा मिगनयणा। चदस्स मुहं इव मुह जाए सा चंदमुही।

प्रयोग वाक्य

नुसीला तुगणासिआ अत्थि। दक्खिणपएसवासिणीओ इत्थीओ दीहउरीओ कहं भवति? मज्झ बहिणी सुएसी अत्थि। किं तस्स भगिणी अणुसूआ अत्थि? पीवरी दसणे वि सोहणा न लग्गइ। जुवई पइणा सह उज्जाणम्मि परिअडइ। णिउणा गिहस्स कज्ज कुसलत्तेण करेइ। गिहिणी पइणा सह चिंतण करेइ। पुत्तवई एग कण्ण अहिलसइ। आविउज्झा सतता भविउं इच्छइ।

धातु प्रयोग

सो सम्म पडिसन्नाइ। सो णियवत्त पडिसखेवइ। भोगे धम्मं, जो एवं पडिसचिक्खे सो असच्च जपउ। मणोजा मच्चं पडिसाहइ। मुणी वेउव्विअलद्धि पडिसाहरइ। मए लसुणभक्खण पडिसुणिअ। पडिसेवी मुणी अणायार पडिसेवइ। आयरियो जोइसगंथं पडिहरइ। केण कारणेण तुम भविस्स पडिहासि? सो झाणजोगी अत्थट्ठिओ अमेरिआए घडण सक्ख पडिहासइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

ऊंचे नाकवाली स्त्री अपने पति मे झगडा करती है। बडे पेटवाली स्त्री को चलने मे कठिनाई अनुभव होती है। अच्छे केशवाली स्त्री हमारे घर में कुसुम ही है। शीघ्र प्रसववाली स्त्री के दस बच्चे है। युवती श्रम करने मे नही थकती है। चतुर स्त्री बातचीत मे अपनी चतुराई दिखाती है। पुत्रवती अपने भाग्य की सराहना करती है। गृहपत्नी ही वास्तव मे घर है। परतंत्र

स्त्री मन मे दुःख पाती है ।

धातु का प्रयोग करो

वह सबके साथ अच्छा व्यवहार करता है । वह अपने भाषण को क्यो नही समेटता है ? परस्पर के व्यवहार पर चिंतन करना चाहिए। उसने अपने आरोपो का उत्तर दिया । तुमने अपनी इद्रियो को विषयो से निवृत्त किया । प्रतिदिन साधुओ के एक बार दर्शन करने की मैंने प्रतिज्ञा ली है। असत्य बोलने का त्याग लेकर भी वह असत्य बोला । उसने उत्तराध्ययन सूत्र फिर से पूर्ण किया । आचार्य भिक्षु ने किस ज्ञान से जाना कि साधु विहार कर आ रहे हैं, तुम सामने जाओ। एक महिला ने बताया कि इस वर्ष भारत का शासक बदलेगा ।

प्रश्न

१ बहुव्रीहिसमास का दूसरा नाम क्या है ? उसके नामकरण के पीछे कारण क्या है ?

२ बहुव्रीहि समास करने के बाद उसमे लिंग और वचन कौन से होते है ? तथा क्यो ?

३ समानाधिकरण और व्यधिकरण किसे कहते है ?

४ बहुव्रीहि समास के विग्रह मे किस शब्द का प्रयोग आवश्यक होता है और उसमे कौन सी विभक्ति होती है ?

५ नीचे लिखे शब्दों का समास विग्रह करो—
पीअवरो, नट्ठमोहो, महाबाहू, अपुत्तो, अणुज्जमो पुरिसो। चरणवणा साहवो। विहवा, अवरूवो, जिअकामो, जराजज्जरियदेहे ।

६ नीचे लिखे समास किए हुए शब्दो को वाक्य मे प्रयोग करो—
भट्ठो आयारो जाओ सो—भट्ठायरो । धुओ सव्वो किलेसो जस्स सो—धुअसव्वकिलेसो। णिग्गया लज्जा जस्स सो—णिलज्जो। अइक्कतो मग्गो जेण सो—अइमग्गो रहो ।

७ ऊचे नाक वाली, बडे पेट वाली, अच्छे केशवाली, शीघ्र प्रसववाली, मोटी स्त्री, युवती, पुत्रवती, चतुरस्त्री, गृहपत्नी, परतत्रस्त्री—इन शब्दो के लिए प्राकृत शब्द बताओ ।

८ पडिसंखा, पडिसखेव, पडिसचिक्ख, पडिसाह, पडिसाहर पडिहर, पडिहा, पडिहास, पडिसुण, पडिसेव—इन धातुओ के अर्थ बताओ और वाक्य मे प्रयोग करो ।

शब्द संग्रह (स्त्री वर्ग ४)

पनिहारी—पाणिअहारी
गंधद्रव्य चुनने वाली—गंधिआ
फूल चुनने वाली—अंबोच्ची
ज्योतिषी की स्त्री—गणई
नौकरानी—दुल्लसिआ (दे०)
पान बेचने वाली—[illegible] (दे०)
बच्चों को रोग रहित करने वाली—[illegible]
नटी—नडी
दूती—अतीहारी
दासी—दासी
धीवर की स्त्री—धीवरी
धनी की स्त्री—धणवत्ती, धणमंती
अध्यापिका—उवज्झायणी

० ० ० ०

विशाल (उदार)—उराल (वि)
भक्ति—भत्ति (स्त्री)
जन्मपत्रिका—जम्मपत्तिया
कृपापात्र—किवापत्तं

धातु संग्रह

पणच्च—नृत्य करना
पणय—स्नेह करना
पणाम—नमाना
पणाम—उपस्थित करना
पणास—नाश करना
पण्णा—प्रकर्ष से जानना
पणिवय—नमन करना, वंदन करना
पणिहा—ध्यान करना, एकाग्र चिंतन करना
पणोल्ल—प्रेरणा करना
पण्हुअ—झरना, टपकना

द्वंद्व—

जिसमें सब पद प्रधान हों तथा जिसके विग्रह में च, अ या य शब्द का प्रयोग होता हो उसे द्वन्द्वसमास कहते हैं। इसके दो भेद हैं—(१) इतरेतर (२) समाहार।

(१) इतरेतर—जिसमें पृथक्-पृथक् प्रत्येक शब्द का समान महत्त्व होता है उसे इतरेतर द्वंद्व कहते हैं। इसमें प्राकृत में बहुवचन ही आता है। लिंग अंतिम शब्द के अनुसार होता है।

नेत्तं अ नेत्तं य त्ति नेत्ताइं
माआ य पिआ य इत्ति पिअरा
सासू य ससुरो य इत्ति ससुरा

देवा य देवीओ य = देवदेवीओ

(२) समाहार—जिसमें पृथक्-पृथक् शब्दो का महत्त्व न होकर केवल समूह का महत्त्व होता है उसे समाहारद्वन्द्व कहते हैं। इसमें एकवचन और नपुंसकलिंग होते हैं।

घडो य संख य पडो य = घडसखपडं

तवो य संजमो य एएसिं समाहारो तवसंजम

पुण्ण य पावं य = पुण्णपावं

णाण य दसणं य चरित्तं य = णाणदंसणचरित्तं

असण य पाणं य असणपाणं

एकशेष द्वंद्व—

जिसमें दो शब्दों या अनेक शब्दो में से एक शेष रहकर दोनो या सब का बोध कराए उसे एकशेपद्वन्द्व कहते हैं।

जिणो य जिणो य जिणो य त्ति = जिणा

माआ अ पिआ य त्ति - पिअरा

सासू य ससूरो अ त्ति - ससुरा

प्रयोग वाक्य

पाणिअहारी जुगव दो घडाइं तलायत्तो आणेइ। किड्डाविया सिसुणो कीडावेइ। धीवरी मच्छा पयावेइ। नडी आपणम्मि खेल पदंसइ। धणपत्ती उरालचित्तेण धणं वितरइ। दुल्लसिआ गिहस्स सव्वाइं कज्जाइं करेइ। दासी-परपरा अज्जत्ता न चलइ। गणई वि जम्मपत्तियं करेइ। अंबोच्ची मालमवि गुफइ। अंतीहारी अतेउरीए किवापत्तं भवइ। उवज्झायणी सिसू पढावेइ। डोंगिली दिवहम्मि एव तंबोलाइं विक्कीणइ। समये समये गधिआ वि हट्टे उवविसइ।

धातु प्रयोग

णट्टई किमट्ठ पणच्चइ। सुसीला विमलेण सह पणयइ। आयरिएण भिक्खुणा रायणयरवासीणं (राजनगरवासी) सावगा पणामिआ। नायमंदिरे तेण तुम पणामिओ। माली कहं उज्जाण पणासइ? सावगा भत्तिपुण्णेण गुरुं पणिवयति। मुणी सुहो (शुभ) एगते पणिहाइ। थेरो सेहं पढिउं पणोल्लइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

बच्चो को खेल कूद कराने वाली के मन में ममत्व नही है। नौकरानी सेठानी के कटु वचनो को सहन नही करती है। नटी का खेल देखने कल कौन-कौन जाएंगे? धीवर की स्त्री ने कभी भी आम नहीं खाया। पनीहारी आज हमारे घर मे क्यो नही आई? वस्तुओ की तरह स्त्री का भी विक्रय होता था,

वह दासी कहलाती थी। क्या ज्योतिषी की स्त्री ज्योतिष के विषय मे कुछ नही जानती ? गधद्रव्य बेचने वाली स्त्री का नाम क्या आप जानते है ? फूल चुनने वाली स्त्री दिन मे ३० माला बनाती है। दूती बहुत चालाक होती है। अध्यापिका बच्चो को स्नेह से पढाती है। पान बेचने वाली दिन मे १०० रु० कमाती है। धनी की स्त्री भावना से उदार नही है।

धातु का प्रयोग करो

सुशीला क्या तुम कल स्कूल मे नाचोगी ? जो जितना जल्दी स्नेह करता है वह उतना ही जल्दी तोडता भी है। मुनि ने अहकारी को भी नमाया। कल मैं आपको न्यायाधीश के सामने उपस्थित करूगा। उसने अपनी कुल परंपरा का नाश कर दिया। मैं भगवान पार्श्वनाथ को वदन करता हू। क्या तुम प्रतिदिन घर मे ध्यान करते हो ? उसने मुझे तुम्हारे पास आने की प्रेरणा दी। ध्यानयोगी ने अपनी प्रज्ञा से तत्त्वो को प्रकर्ष से जाना। तुम्हारी स्कूल की छत से वर्षा मे पानी टपकता है।

प्रश्न

१. द्वन्द्व समास किसे कहते है ?

२. द्वन्द्व समास के कितने भेद है ? प्रत्येक भेद को समझाते हुए दो-दो उदाहरण दो।

३. द्वन्द्व समास के पाच उदाहरण दो और उन्हे दूसरे भेदो मे परिवर्तन करो।

४. समास विग्रह करो—पिअरा, ससुरा. असणपाण, तवसजम, पइपुत्ता, वाणरमोरहसा, सुहदुक्खाइ, सुहदुक्ख, जिणा, देवदाणवगधव्वा, उसहवीरा, अजियसतिणो, पुण्णपावाइं, पट्टदेअरपुत्त।

५ नीचे लिखे समासितपदो मे बताओ कौनसा पद शुद्ध या अशुद्ध है और क्यो ? पुण्णपाव, पुण्णपावाइ। सुहदुक्खाइ, सुहदुक्ख। तवसजमा, तवसजम। णाणदसणचरित्ताइ, णाणदसणचरित्त।

६. पनिहारी, बच्चो को खेलकूद कराने वाली, गंधद्रव्य बेचने वाली, फूल चुनने वाली, ज्योतिष की स्त्री, नौकरानी, पान बेचने वाली, नटी, दूती, दासी, धीवर की स्त्री, धनी की स्त्री, अध्यापिका—इन शब्दो के लिए प्राकृत शब्द बताओ।

७. पणच्च, पणय, पणाम, पणाम, पणास, पणिहा, पणिवय, पणोल्ल, पण्णा, पण्हुअ—इन धातुओ के अर्थ बताओ और वाक्यो मे प्रयोग करो।

८. णट्टई, बभणी, किन्चा, कामुआ, पणसुंदरी, चवला, पीवरी, णिउणा, सुएसी—इन शब्दो को वाक्य मे प्रयोग करो तथा हिन्दी मे अर्थ बताओ।

८१ तद्धित

शब्द संग्रह (राजनीति वर्ग)

राष्ट्रपति—रट्ठवई (पु)
मन्त्री—मती (पु)
नेता—अग्गणी
राज्यपाल—रज्जवालो
दूत—दूयो
छावनी—छायणिया
ससद—ससया
विधानसभा—विहाणसहा
उपराष्ट्रपति—उवरट्ठवई (पु)
विधायक—विहाअगो (स)
तमाखू—तवूकूडो

प्रधान मन्त्री—पहाणमती
मुख्य मन्त्री—मुहमंती
सरपच—गामणी
कलेक्टर—जिलाहीसो
सेनापति—सेणावई
वोट—मय
सदस्य—सब्भ (वि)
प्रतिनिधि—पइणिही (पु)
प्रस्ताव—पत्थावो
निर्वाचन—णिव्वायणं (स)
समर्थन—समत्थण

धातु सग्रह

ममा—ममता करना
मरह—क्षमा करना
मरिस—सहन करना
मह—मथना, विलोडन करना
मिस्स—मिश्रण करना, मिलाना

मा—माप करना
माण—सम्मान करना
मिल—मिलना
गिला—म्लान होना
अक्खोड—आस्फोटन करना, एक वार झडकाना

तस्येदं

सस्कृत मे 'तस्येद' का अर्थ है—उसका यह। प्राकृत मे इस अर्थ मे केर आदि प्रत्यय होते हैं।

नियम ६३४ (इदमर्थस्य केरः २।१४७) इद अर्थ मे होने वाले प्रत्ययो को प्राकृत मे केर प्रत्यय होता हैं। युष्मदीय (तुम्हकेरो) तुम्हारा। अस्मदीय (अम्हकेरो) हमारा।

नियम ६३५ (पर-राजभ्यां क्क-डिक्कौ च २।१४८) 'उसका यह' अर्थ मे पर शब्द से क्क और केर प्रत्यय तथा राजन् शब्द से डिक्क और केर प्रत्यय होते है। परकीयम् (पारक्क, परक्क, परकेर) पराया, दूसरे का।

राजकीयम् (राइक्कं, रायकेरं) राजा का।

(नियम ८५ अतः समृद्ध्यादौ वा १।४४) से राइक्कं के आदि अ को आ हुआ है।

नियम ६३६ (युष्मदस्मदोञ एच्चयः २।१४९) तुम्ह और अम्ह शब्द से 'उसका यह' अर्थ में संस्कृत के अञ् प्रत्यय को एच्चय प्रत्यय होता है। यौष्माकम् (तुम्हेच्चय) तुम्हारा। आस्माकम् (अम्हेच्चय) हमारा।

संस्कृत शब्दों से बने प्राप्त प्राकृत शब्द—

मईयो (मदीयः) मेरा। आरिसो (आर्ष) ऋषियों का। उवरितन (उवरिल्लं) ऊपर का।

प्रयोग वाक्य

सतंतभारहस्स पढमो रट्ठवई सिरीराजिंदपसायो आसि। राहाकिण्हो कया उवरट्ठवई आसि? पहाणमंती चेव खिप्पं परिअट्टइ तया देसस्स विगासो कहं भवे? मुहमंती केवल भासणं देइ। सिक्खामंती अम्हम्मि नयरे कया आगमिहिइ? अज्जणा रज्जणिणो परिभासा भिण्णा अत्थि। रायपो रायस्स विगासस्स विसये चिंतइ। रट्ठवइसासणे चेअ रज्जवालस्स पभावो वड्ढइ। दूयो तम्मि देसे सदेसस्स पइणिहित्तं करेइ। सेणावई देसस्स रक्खणट्ठं पइसमयं जागरूओ भवइ। छावणियाए सेणा वसंति। सय राहिच्च तुमं अज्ज कहं आगओ? सभयाए सब्भो न वेइ को न अहिलसइ? विहाणसहाए सज्जकओ कोऽत्थि? जिलाहीसो अहिआरपुण्णो भवइ। किं भवओ पन्थावे तुज्झ समत्थणं अत्थि? विहाणसहाए केत्तिला जणा संति?

धातु प्रयोग

सो परिवारं ममाइ। डीवो पइक्खणं मरइ। बहू सासुं नरिसइ। मरहतु ण देवाणुप्पिया। महिंदो दहिं महइ। बावरी भवणम्मि बन्धाइ माइ। किं तुम पिउं न माणसि? तिवस्सिस्स पच्छा दक्खिणदेसे साहुणो साहुहिन्तो मिलिस्सन्ति। पाणिअस्स अहावे पुप्फाइं मिलाणि। सुक्को तरुकूडम्मि घडं निल्लइ।

प्रत्यय प्रयोग

राइक्को पुरिसो अहिआरेण संपण्णो भवइ। पारक्कं धणं धूलिव्व होइ। तुम्हेच्चयो भाया अज्ज कत्थ गमिस्सइ? अम्हेच्चय कज्जं किं तुम करिस्ससि? तुम्हकेरं णाणं तुज्झ पासे एव विज्जइ। अम्हकेरं गिहं आयरिओ अज्ज किं आगमिस्सइ?

प्राकृत में अनुवाद करो

राष्ट्रपति देश का पहला नागरिक होता है। प्रधानमंत्री बार-बार राष्ट्रपति के पास जाता है। उपराष्ट्रपति विद्वान व्यक्ति है। मंत्री काम करने
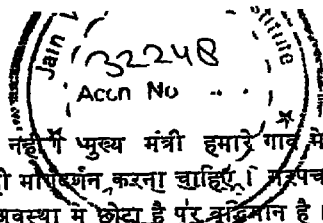
का आश्वासन देते हैं पर करते नहीं। मुख्य मंत्री हमारे गाव मे कभी नही आए। नेता को जनता का सही मार्गदर्शन करना चाहिए। सरपंच रुपये लेकर काम करा देता है। कलेक्टर अवस्था मे छोटा है पर बुद्धिमान है। राज्यपाल जब सत्ता मे नही होते तब शांति का जीवन जीते हैं। दूत अपने देश का प्रतिनिधित्व अपनी पटुता से करता है। सेनापति की कुशलता ही देश को विजय दिलाती है। अपने क्षेत्र मे ससद सदस्य का महत्त्व होता है। रमेश इस क्षेत्र से विधान सभा मे जाएगा। छावनी ही सेना का घर होता है। कार्यकर्ता वोटो के लिए प्रचार करते है। ग्रामवासियो ने मत्री के सामने क्या कहा? कौन सा प्रस्ताव महत्त्वपूर्ण है?

धातु का प्रयोग करो

वीतराग किसी पर ममत्व नही करते। आज गाव में कौन मर गया? आप मुझे क्षमा कर दे। जो सहता है, वह परिवार के साथ चल सकता है। देवो ने और असुरो ने समुद्र का मथन किया। उस साधु ने अपना वस्त्र क्यो नही मापा? जो दूसरो का सम्मान करता है, वह सम्मान पाता है। भाई बहन से मिलने के लिए उसके गाव गया। उसका मुख म्लान क्यो हो गया? धर्म मे किसी का मिश्रण नही होता है।

प्रत्यय का प्रयोग करो

तुम्हारी माता सुशील है। दूसरे की स्त्री माता के समान होती है। तुम्हारा भाषण कल बहुत अच्छा था। हमारी दुकान मे सब चीजे मिलती है। राजा की सेना हमारे गाव मे आ गई। तुम्हारी स्कूल मे कितने लडके पढते हैं?

प्रश्न

१. प्राकृत मे इद अर्थ मे क्या-क्या प्रत्यय होते हैं? दो उदाहरण दो।

२ पर और राजन् शब्द से इद अर्थ मे क्या प्रत्यय होता है?

३. तुम्हेच्चय और अम्हेच्चय इन रूपो मे किस नियम से किस अर्थ मे क्या प्रत्यय हुआ है?

४ नेता, मत्री, मुख्यमत्री, सरपच, प्रधानमत्री, दूत, सेनापति, छावनी, राज्यपाल, जिलाधीश, ससद, विधान सभा, विधायक, कलेक्टर, वोट, सदस्य, प्रस्ताव, निर्वाचन, आदेश, न्याय और प्रतिनिधित्व—इन शब्दो के लिए प्राकृत के शब्द बताओ।

५ ममा, मरह, मरिस, मह, मा, माण, मिल, गिला अक्खोड और मिस्स धातुओ के अर्थ बताओ और इन्हें वाक्य मे प्रयोग करो।

उल्ल—विचारवान् (विआरुल्लो) विचार वाला। श्मश्रुवान् (मसुल्लो) दाढीवाला।

आल—शब्दवान् (सद्दालो) शब्दवाला। ज्योत्स्नावान् (जोण्हालो) ज्योत्स्ना वाला।

वन्त—धनवान् (धणवंतो) धनवाला। भक्तिमान् (भत्तिवतो) भक्तिवाला।

मन्त—श्रीमान् (सिरिमतो) लक्ष्मीवाला। धीमान् (धीमतो) बुद्धिवाला।

इत्त—काव्यवान् (कव्वइत्तो) काव्यवाला। मानवान् (माणइत्तो) मानवाला।

इर—गर्ववान् (गव्विरो) गर्ववाला। रेखावान् (रेहिरो) रेखावाला।

मण—धनवान् (धणमणो) धनवाला। शोभावान् (सोहामणो) शोभावाला। भयवान् (वीहामणो) भयवाला।

संस्कृत शब्दो से बने शब्द

धनिन् (धणि) धनवाला। तपस्विन् (तवस्सि) तपस्वी। मनस्विन् (मणसि) बुद्धिमान्।

प्रयोग वाक्य

सुवण्णस्स अगुलीयो मज्झ करागुलीए विज्जइ। रययस्स नेउरं तुज्झ भगिणीए पासे नत्थि। राभचदो कसस्स थालम्मि भोयण करेइ। लोहस्स दीहकडाहो मज्झ गिहे अत्थि। पित्तलस्स सुफणीए सागो अत्थि। कालायसस्स खणी दक्खिणपएसे अत्थि। जसदां सास (श्वासरोग) नस्सइ। तउं गुणेसु रगसमाण विज्जइ। चुण्णजोगेण तवस्स सुवण्ण भवइ। रगस्स भस्स वग कहिज्जइ। अब्भपडलस्स खणी कस्सि पएसे विज्जइ? तुत्थ कच्छु (खाज) कुट्ठ (कोढ) य नस्सइ। रगस्स चुण्ण रययस्स मिस्सेण 'कलइ' भवइ।

धातु प्रयोग

मुग्गदालीए तुवरी दाली न मीसउ। सो धम्म न कयावि मुचिहिइ। लट्ठिपहारेण सो मुच्छिओ। धणवतो णियसदण रगइ। सो परचित्तरजणे कुसलो अत्थि। भगिणी किसर रंधइ। किं तुम धम्म रज्जसि? मोहणो न रमइ। सो महावीरस्स जीवण उक्किरइ।

प्रत्यय प्रयोग

दयालुस्स हिअए करुणा विज्जइ। छाइल्लम्मि रुक्खम्मि लोआ गिम्ह-काले वीसमंति। विआरुल्लो णरो पत्तेयम्मि विसये चिंतेइ। धणवतो धणेण सत्ति पदसइ। धीमतो धणजयो सुदर लेह लिहइ। माणइत्तो मोहणो कत्थ वि न नमइ। गव्विरो णरो मोरउल्ला अथिरे रूवे गव्व करेइ।

प्राकृत मे अनुवाद करो

कारीगर पत्थर पर अक्षर उत्कीर्ण कर उसमे सीसा भरता है।

सोने का कलश तुम्हारे पास है। चादी की तरह मन को उज्ज्वल रखो। कासे की गिलास मे वह पानी पीता है। काला लोह कहा मिलता है? लोहे की संडासी हर घर मे मिलती है। वह पीतल के बर्तन बेचता है? जस्ता नेत्रो के लिए हितकर है। सीसा प्रमेहनाशक होता है। सोना बनाने मे शुद्ध तावा काम मे आता है। अभ्रक चादी के समान चमकती है। रांगे की भस्म औषधि मे काम आती है। कलई तावे और पीतल के बर्तनो पर किया जाता है।

धातु का प्रयोग करो

लोभी मनुष्य अनेक वस्तुओ मे मिश्रण करता है। उसने तुमको क्यो छोड दिया? लक्ष्मण युद्ध मे मूर्च्छित हो गया। उसने अपनी बहन को खुश कर दिया। धार्मिक संस्कारो से उसका मन रग दो। उसका धर्म के प्रति अनुराग क्यो नही है? सभाभवन मे भिक्षु स्वामी का जीवन कौन उत्कीर्ण करेगा?

प्रत्यय का प्रयोग करो

स्नेही व्यक्ति का हृदय स्नेह से पूर्ण होता है। दाढी-मूछ वाला मनुष्य अपनी दाढी और बढाता है। आज शब्द वाली हवा चलती है। इस मनुष्य मे भक्ति बहुत है। लक्ष्मीवान् भी लक्ष्मी की पूजा करता है। रेखा वाला पत्र मेरे पास लाओ। भय वाला आदमी रात मे अंधेरे से भी डरता है।

प्रश्न

१. मत्वर्थ किसे कहते है?
२. मतु प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत मे कौन से प्रत्यय आदेश होते है?
३. आलु, इल्ल, आल, उल्ल, वन्त, मन्त, इर, मण, इत्त इन प्रत्ययो के दो-दो उदाहरण दो।
४. सोना, चादी, तावा, लोहा, कास्य, सीसा, रागा, काला लोह, अभ्रक, कलई, जस्ता, पीतल, तूतिया—इन शब्दो के लिए प्राकृत शब्द बताओ।
५. मीस, मुज, मुच, मुच्छ, रंज, रग, रग्घ, रज्ज, रम, उक्किर—इन धातुओ के अर्थ बताओ और वाक्य मे प्रयोग करो।

शब्द संग्रह (स्पर्श वर्ग)

गरम—उसिण (वि)	हल्का—लहुय (वि)
ठंडा—सीय (वि)	भारी, वडा—गरुय (वि)
कठोर—कक्कस (वि)	कोमल—मउय (वि)
रूखा—लुक्ख (वि)	चिकना—णिद्धं
न भारी न हल्का—अगरुलहु (वि)	शीतोष्ण, ठंडा तथा गरम—सीउण्ह

० ० ० ० ०

वर्फ—हिमं	गूद—णिज्जासो

धातु संग्रह

रय—वनाना, निर्माण करना	रिज्झ—रीझना, खुशी होना
रव—वोलना	री—जाना, चलना
रस—चिल्लाना, आवाज करना	रुअ—रोना
रा—शब्द करना,	रुंध—रोकना, अटकाना
रा—चिपकना, श्लेष करना	रुच (दे)—पीसना

भव अर्थ

संस्कृत के तत्रभव (उसमे होने वाला) अर्थ के लिए प्राकृत मे इल्ल और उल्ल प्रत्यय होता है।

नियम ६३८ (डिल्ल-डुल्लौ भवे २।१६३) भव अर्थ मे नाम से डिल्ल (इल्ल) और डुल्ल (उल्ल) प्रत्यय होते हैं।

गाम+इल्ल=गामिल्ल (ग्रामे भवं) ग्राम मे होने वाला
हेट्ठ+इल्ल=हेट्ठिल्लं (अधस्तन) नीचे होने वाला
घर+इल्ल=घरिल्ल (गृहे भव) घर मे होने वाला
अप्प+उल्ल=अप्पुल्लं (आत्मनि भव) आत्मा मे होने वाला
नयर+उल्ल=नयरुल्ल (नगरे भव) नगर मे होने वाला

प्रयोग वाक्य

सो उसिण दुद्धं पिवइ। गिम्हकाले सीय जलं रोअइ। कक्कसा भासा न जंपणीआ। तुम ववहारम्मि लुक्खो सि। कप्पासो लहुयो भवइ। सो कम्मणा गरुयो अत्थि। तस्स हिअयं मउयं अत्थि। णिद्धम्मि वत्थुम्मि रयो खिप्प लग्गइ। अहं सीउण्हेहिं सलिलेहिं ण्हामि। आआसो अगरुलहू अत्थि।

शब्द संग्रह (रोग वर्ग १)

ग्रीवाफूलन—गंडमाला	कंपनवात—वेवयो
कोढ—कोढो	हाथीपगा—सिलिवइ (वि)
पागलपन—अवमारो	राजयक्ष्मा (टी. बी) रायंसि (पुं)
काणापन—काणियं	उदररोग—उदरं
कूबड़ापन—खुज्जियं	हस्तविकलता—कुणियो
गूंगापन—मूय	पंगुता—पीढसप्पि (पु)
भस्मकरोग—गिलासिणी	आधासीसी—अवहेडगो
शोथ—सूणिओ	बवासीर—अरसो
जलधर—जलोयरं	केशझडना (गजापन)—केसघायो (स)
ब्याऊ—पायफोडो	पीठ मे गांठ—पिट्ठिगंठि (पु० स्त्री)
फुनसी—फुडिआ	

० ० ० ०

स्मृति—सई (स्त्री) प्रस्थान—पत्थाण

धातु संग्रह

रोअ—निर्णय करना	लक्ख—जानना, पहचानना
रोह—उत्पन्न होना	लग्ग—लगना, संग करना
लंघ—लाघना	लज्ज—शरमाना
लछ—कलंकित करना	लल—विलास करना, मौज करना
लभ, लंभ—प्राप्त करना	लय—ग्रहण करना, लेना

शील आदि प्रत्यय

शील आदि के तीन अर्थ है—शील (स्वभाव), धर्म (कुल आदि आचार), साधु (अच्छा)। संस्कृत मे तृन्, इष्णु आदि प्रत्यय शील अर्थ मे कर्ता से होते हैं। प्राकृत मे इस अर्थ मे इर प्रत्यय होता है।

नियम ६३९ (शीलाद्यर्थस्येरः २।१४५) शील, धर्म और साधु अर्थ मे होने वाले प्रत्ययो को इर आदेश होता है।

हसनशील. (हसिरो)	रोदनशील. (रोविरो)
लज्जावान् (लज्जिरो)	जल्पनशील: (जम्पिरो)
वेपनशील: (वेविरो)	भ्रमणशील: (भमिरो)
उच्छ्वसनशील: (ऊससिरो)	

कम होती है। छोटी फुन्सी भी असावधानी से बहुत दुख देती है। एक साध्वी ने जलधर रोग के कारण प्राण त्याग दिया।

धातु का प्रयोग करो

जहा शका हो वहा अपनी बुद्धि से निर्णय करना चाहिए। आम का वृक्ष यहा पैदा नही होता है। क्या तुम इस पानी के प्रवाह को लाघ सकते हो ? धन का लोभी धन के लिए दूसरो को कलकित करता है। वह तुम से ज्ञान प्राप्त करता है। क्या तुम मुझे नही पहचानते ? तुम्हे देखकर वह क्यो शरमाती है ? विनय से विद्या प्राप्त होती है। जो विलास करता है वह अपना अमूल्य समय व्यर्थ मे खोता है। वह विद्यालय से सम्मान ग्रहण करता है।

प्रश्न

१ शीलादि के तीन अर्थ कौन से है ?

२ शील अर्थ मे होने वाले प्रत्ययो को क्या प्रत्यय आदेश होता है। कोई पाच उदाहरण दो।

३ ग्रीवाफूलन, कोढ, पागलपन, काणापन, कूबडापन, जलधर, गूगापन, गजापन, भस्मकरोग, शोथ, पीठ मे गाठ, कपनवात, हाथीपगा, राजयक्ष्मा, उदररोग, हस्तविकलता, पगुता, आधासीसी, बवासीर, व्याऊ, फुनसी आदि शब्दो के लिए प्राकृत शब्द बताओ ?

४ रोअ, रोह, लंघ, लछ, लभ, लक्ख, लग्ग, लज्ज, लल, लभ, लय—इन धातुओ के अर्थ बताओ और वाक्य मे प्रयोग करो।

८५ भाव

शब्द संग्रह (रोग वर्ग २)

बुखार—जरो
भगंदर—भगंदरो
स्नेह—सिणेहो
जुकाम—पडिस्साओ
कफ, मलमूत्रावरोधजन्यरोग —दुप्पहो (सं)
अंडकोषवृद्धि—अंडवड्ढणं
खाज—कंडू (स्त्री)
खांसी रोग—कासो
व्रण—फोडो
पित्तरोग—पित्तो, पित्तं
पेट की गांठ—उदरगांठ (पुं, स्त्री)
नासूर—नाडीवणो (सं)
वमन—वमणं
दस्तों का रोग—गहणी (सं) स्त्री
हिचकी—हिक्का
पथरी—मुत्तकिच्छं (सं)
अस्थि के फटकर सोजन—विद्दहि (सं)
छींकरोग—छिक्का (दे०)
कफरोग—कफो
वायुरोग—वाउ (पुं)

व्याधि—विआहि

धातु संग्रह

लल—स्नेह करना, ललकना
लहुअ—लघू करना
लाव—काटना, छेदना
लाल—स्नेहपूर्वक पालन करना
लाय—लगाना, जोड़ना
लालप्प—खूब बकना
लास—नाचना
लाह—प्रशंसा करना
लिच्छ—प्राप्त करने की इच्छा
लिप—लेप करना, लीपना

भाव

जिस गुण के होने से द्रव्य में शब्द का सन्निवेश (संबंध) होता है उस गुण को भाव कहते हैं। साधुता गुण के कारण ही साधु शब्द अपना अर्थ बोध देता है। संस्कृत में उन शब्दों से भाव में त्व और तल् प्रत्यय होता है। इनके अतिरिक्त कुछ शब्दों से इमन् और ष्यण् आदि प्रत्यय भी होते हैं। प्राकृत में भाव अर्थ में इमा, त्तण और त्त प्रत्यय होते हैं।

नियम ६४० (त्वस्य डिमा-त्तणौ वा २।१५४) भावसूचक त्व प्रत्यय को डिमा (इमा) और त्तण प्रत्यय विकल्प से होता है। पक्ष में त्व को त्त प्रत्यय होता है।

इमा—पीनिमा, पीनत्व (पीणिमा) मोटापन। पुष्पत्वं (पुप्फिमा) पुष्पपना।
त्तण—पीनत्वम् (पीणत्तण) मोटापन। पुष्पत्व (पुप्फत्तण) पुष्पपना
त्त—देवत्वम् (देवत्त) देवपना। साधुत्वम् (साहुत्त) साधुपना।

संस्कृत परक पीनता शब्द का प्राकृत मे पीणया भी होता है। इसी प्रकार अन्य शब्दो के भी रूप बनते है।

प्रयोग वाक्य

तुम मुहु-मुहु जरपीडिओ कहं जाओ? अत्थ भगदरस्स चिइच्छा वरा न भवइ। पमेहेण सरीरो सिढलो भवइ। केन कारणेण तुमं पडिस्साएण पीडिओ जाओ। रमेसस्स गुदगह पासिऊण तस्स पिआ चिंतापुण्णो जाओ। मरुभूमीए वि कस्सइ अडवड्ढण भवइ। कस्स विद्दही विज्जइ? दहि-भक्खणेण कासो वड्ढइ। केन कारणेण तस्स फोडो न भरइ। महुरवत्थुणा पित्तो उवसामइ। तस्स उदरगंठी कहं वड्ढइ? नाडीवणो वि भयकरो भवइ। किं कारणमत्थि, सेट्ठी साहू जं किमवि खाअइ तस्स वमण भवइ? गहणीए सरीरो सिढिलो होइ। हिक्का वि दीहकाला चलइ। मुत्तकिच्छे पाणिअ अहिय पाअव्व। भूविदो मुणी सइ जुगव सत्त छिक्काओ करेइ। केन कारणेण कफो विवड्ढइ। वाउरोगिस्स अवत्था अदसणीआ भवइ।

धातु प्रयोग

सण्हम्मि वत्थुम्मि रयाइ खिप्प लसति। मुक्खेण सद्धिं विवायो नर लहुअइ। सो तुम्ह सबंध लायइ। माआ पुत्त लालइ। विरोही मित्तेण सह लालप्पइ। सा अज्ज न लासिस्सइ। गुरुणा अज्ज तुमं लाहिओ। मुणी पत्तीए खडाइ लायइ। अहं किमवि न लिच्छामि। सो वरिसम्मि सइ गिहं लिपइ।

प्रत्यय प्रयोग

पीणिमा मह किंचि वि न रोअइ। आयारेण साहुत्त सोहइ। संजम-दिट्ठीए देवत्ताओ मणुअस्स बहुमहत्त अत्थि। पुप्फत्तणेण पायवो सोहइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

मुझे इस वर्ष पाच बार बुखार आया। किस कर्म के उदय से भगदर होता है? प्रमेह मे मूत्र साफ नही आता। जुखाम भी कभी-कभी लवे समय तक चलती है। मलावरोध (कब्ज) से मनुष्य कष्ट पाता है। अडकोशवृद्धि दक्षिण के लोगो मे अधिक मिलती है। अस्थि के सूजन की चिकित्सा सरल नही है। खासी से नीद कम आती है। चीनी की बीमारी वाले का व्रण जल्दी नही भरता है। पित्त का लक्षण क्या है? उसकी पेट की गाठ प्रतिदिन बढ रही है। एक साधु के नासूर का रोग मैंने देखा था। वमन होने के बाद मन मे प्रसन्नता होती है। इस वर्ष किसको दस्तो का रोग हुआ था? क्या हिचकी वायु ने

आती है ? पथरी का रोग क्यो होता है ? खाज रोगी को खाज करना मीठा लगता है। जुखाम मे छीक अधिक आती है। श्वेत वस्तु के प्रयोग से कफ बढता है। वायु रोग कितने प्रकार का होता है ?

धातु का प्रयोग करो

गूद दो पन्नो का श्लेष करता है। स्त्री के साथ विवाद करने से मनुष्य की लघुता होती है। वह खेत को नही काटेगा। उसकी बहन ने भाई का स्नेह-पूर्वक पालन किया। जो वस्त्रो को जोड़ता है, क्या वह मन को नही जोड सकता ? सुशील उसके घर पर जाकर बहुत बका। विमला घर मे ही नाचती है। जो दूसरो की प्रशंसा करता है, वह उसका प्रिय बनता है। तुम क्या प्राप्त करना चाहते हो ? वह अपनी दुकान को लीप रहा है।

प्रत्यय प्रयोग करो

मोटापन किसको प्रिय लगता है ? साधुत्व पूजनीय होता है, व्यक्ति नही। देव होकर भी यदि दूसरो को सताता है तो उसमें देवत्व नही है। मनुष्यत्व ही मनुष्य को आगे बढाता है।

प्रश्न

१. भाव किसे कहते है ?
२. प्राकृत मे भाव अर्थ मे कौन-कौन से प्रत्यय होते है ?
३. भाव मे होने वाले प्रत्ययो का लिंग क्या है ?
४. बुखार, भगदर, प्रमेह, जुखाम, मलावरोध (कब्ज), अंडकोशवृद्धि, अस्थि मे सूजन, खासी, व्रण, पित्त, कफ, वायु, पेट की गाठ, नासुर, वमन, दस्तो का रोग, हिचकी, पथरी, खाज, छीक रोग—इन शब्दो के लिए प्राकृत शब्द बताओ।
५. लस, लहुअ, लाय, लाल, लाय, लालप्प, लास, लाह, लिच्छ, लिप—इन धातुओ का अर्थ बताओ और वाक्य मे प्रयोग करो।

शब्द संग्रह (रोगी वर्ग)

अधा—अधो	काणा—काणो
वहरा—वहिरो	लूला (हस्तरहित) कुटो
वेहोशीवाला—मुच्छिर (वि)	गूगो—मूयो
प्रलंब अड वाला—पलवंडो (सं)	वामन—वडभो
खाज का रोगी—कच्छुल्लो	बुखारवाला—जरि (वि)
लंगडा—पगू (पु)	पित्त का रोगी—पित्तिओ
दस्त का रोगी—अइसारिओ	मोटे पेट वाला—तुदिलो
दाद का रोगी—दद्दुलो	कोढी—कोढिओ
वायु का रोगी—वाइओ	कफ का रोगी—सिलिम्हिओ
कूवडो—खुज्जो	चित्तकबरा—सवलो
खासी का रोगी—कासिल्लो ।	

धातु संग्रह

लिह्—चाटना	लुढ—लुढकना
लुअ—छेदना, काटना	लुभ—लोभ करना
लुंच—वाल उखाडना, लुचन करना	लूड—लूटना
लुप—लोपकरना, विनाश करना	लोअ—देखना
लुक्क—छिपना	उंज—सीचना, उत्सेचन करना

त्रस्, त्र और दा प्रत्यय

संस्कृत मे पंचमी विभक्ति के अर्थ मे तस् प्रत्यय होता है। प्राकृत मे पचमी विभक्ति के अर्थ मे त्तो और दो प्रत्ययो का प्रयोग होता है।

० सप्तमी विभक्ति के अर्थ मे सस्कृत मे त्रस् प्रत्यय होता है प्राकृत मे त्र के स्थान पर हि, ह और त्थ प्रत्यय आदेश होता है।

० कालसूचक सप्तमी विभक्ति के अर्थ मे संस्कृत के दा प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत मे सि, सिअ और इआ प्रत्यय विकल्प से होता है।

नियम ६४१ (त्तो दो तसो वा २।१६०) तस् प्रत्यय के स्थान पर त्तो और दो प्रत्यय विकल्प से आदेश होते हैं।

सर्वत. (सव्वत्तो, सव्वदो, सव्वओ) सब प्रकार से। एकत (एगत्तो, एगदो, एगओ) एक प्रकार से। अन्यतः (अन्नत्तो, अन्नदो, अन्नओ) अन्य

प्रकार से। कुत (कत्तो, कदो, कओ) कहा से, किससे। यत. (जत्तो, जदो, जओ) जहा से, जिससे। तत (तत्तो, तदो, तओ) वहा से, उससे। इत: (इत्तो, इदो, इओ) यहा से, इससे।

नियम ६४२ (त्रपो हि-ह-त्थाः २।१६१) त्र प्रत्यय को हि, ह और त्थ ये प्रत्यय आदेश होते है।

हि—ज+हि=जहि (यत्र) यहा। त+हि=तहि (तत्र) वहा।
ह—ज+ह=जह (यत्र) यहा। त+ह=तह (तत्र) वहा।
त्थ—क+त्थ=कत्थ (कुत्र) कहां। अन्न+त्थ=अन्नत्थ (अन्यत्र) दूसरे मे।

नियम ६४३ (वैकाद्द सि-सिअं-इआ २।१६२) एक शब्द से परे दा प्रत्यय को सि, सिअ और इआ ये आदेश विकल्प से होते हैं। एक्कसि, एक्कसिअं, एक्कइआ, एगया (एकदा) एक समय मे।

(ङे र्डाह् डाला इआ काले ३।६५) नियम ५११ से कि यत् और तत् शब्दो से कालवाची सप्तमी को डाह, डाल और इआ ये तीन प्रत्यय विकल्प से आदेश होते हैं।

कदा (काहे, काला, कइआ) कब। यदा (जाहे, जाला, जइआ) जब। तदा (ताहे, ताला, तइआ) तब।

संस्कृत शब्दों से बने दा प्रत्यय के रूप—

यदा (जया) जब। सर्वदा (सव्वया) हमेशा। कदा (कया) कब। अन्यदा (अण्णया) अन्य समय में। तदा (तया) तब।

प्रयोग वाक्य

अधो वि अण्णस्स साउज्ज अतरेण समण्णाए पहे चलइ। बहिरो किमवि न सुणइ। मूयो न जंपइ न सुणइ। काणेण लोआ भीअंति। कुंटो कि लिहिस्सइ? सा खुज्जा कहं जाआ? सो कोढिअस्स पासे आसित्तए न इच्छइ। एगया लक्खमणो (लक्ष्मण) वि मुच्छिरो जाओ। णिद्धणो पलवंडो वुड्ढो चिइच्छ इच्छइ। कच्छुल्लो अणेगहुत्तो णियसरीरं कण्डूअइ। पंगू केण साहज्जेण (सहयोग) अत्थ आगओ? एगया अहमवि अइसारिओ जाओ। वगदेसे अणेगे जणा दद्दुला भवंति। वाइओ बहु किच्छ अणुभवइ। लोआ वडभं भगवतस्स अवतारं मण्णंति। जरी संतचित्तेण मोजेण वा सव्व सहइ। पित्तिओ किं खादिउ इच्छइ? तुंदिलो पइक्खणं दुक्खं अणुभवइ। साहूसु को सिलिम्हिओ अत्थि? सबलो सुंदरो न लगइ। कासिल्लो निसाए न निद्दाइ सुहेण।

धातु प्रयोग

सो ओसहिं लिहइ। अहं कल्लं लुचिस्सामि। साहू भविऊण चे धणं रक्खेज्ज सो साहुत्तं लुपइ। मेलम्मि बालो अण्णं बालं पासिऊण लुक्कइ।

निद्दाए सो लुढईअ । कयावि न लुभियव्व । सो लुडिउ अमुम्मि गामे आगओ । किं तुमं सूर चक्खुहिं लोअसि ?

प्रत्यय प्रयोग

एसो नरो कओ आगओ ? तुम जओ आगओ तत्थ चेअ गच्छ । नयर इओ अइदूर नत्थि । तुमं तओ णाण लहृ । जहिं केत्तिला मुक्खा संति ? तेण सद्धि तुम तहिं गच्छ । कल्ल सो कत्थ गमिस्सइ ? एक्कसि अहृ अत्थ आगओ ।

प्राकृत में अनुवाद करो

अंधे व्यक्ति के लिए ससार का रूप कुछ नही है । बहिरा व्यक्ति गूगा भी होता है । गूगा जानकर भी वस्तु का स्वाद नही वता सकता । इस गाव के वामन व्यक्ति का नाम क्या है ? काणा कुबुद्धि चलाता है । लूला परवश होकर जीता है । कूवडे की दशा को देखकर जवानी में सावधान रहे । कोढी होने पर सुदर रूप कुरूपता मे वदल जाता है । लगडा अंधे के सहयोग से मार्ग को पार कर जाता है । वेहोशीवाला कुछ समय के लिए मृत्यु के समान है । प्रलव अडवाला किस भोजन से या वायुमडल से होता है ? खाज के रोगी को खाज प्रिय लगती है । दस्त रोगी दस मिनट भी शाति की नीद नही लेता है । आर्द्र प्रदेश की आर्द्रता से दाद के रोगी अधिक होते है । वायु के रोगी को क्या नही खाना चाहिए ? मोटे पेट वाला उठने और वैठने में कष्ट की अनुभूति करता है । वुखार वाले को आज अन्न मत खिलाओ । क्या पित्त का रोगी मीठा भोजन खाएगा ? कफ का रोगी कोई भी वनना नही चाहता । रमेश चित्तकवरा कव हुआ ? खासी वाला दही क्यो खाता है ?

धातु का प्रयोग करो

तुमने आज मधु के साथ कौन सी दवा चाटी ? तुम काटना जानते हो, जोडना नही । साधु एक साल मे कम से कम एक वार लुचन करते हैं । सुरक्षा के अभाव मे पशुओ की कई जातिया लुप्त हो जाएगी । अविनयी गुरु से छिपना चाहता है । आयुष्य पूर्ण होने पर वह खाना खाते-खाते लुढक गया । तुम किसके लिए क्षोभ करते हो ? वे दिन मे ही सबको लूटते है । मुह धोने के वाद वह नही पोछता है । वह सुदर रूप को देखता है ।

प्रत्यय प्रयोग करो

प्रमादी को सव प्रकार से भय हैं । तुमने यह पुस्तक किससे ली है ? वह वहा से घर जाएगा । तुम्हारे भाई के विवाह मे यहा से कोई नही आएगा । गुरु दर्शन करने वहा कौन जाएगा ? तुम यहा मत आओ । ये लोग कहा रहते हैं ? एक समय यह इस देश का राजा था । तुम ध्यान कव करोगे ? जव भारत स्वतत्र होगा तव मैं अपने देश मे वापस आऊंगा ।

प्रश्न

१. संस्कृत की पंचमी विभक्ति और सप्तमी विभक्ति के अर्थ में प्राकृत में कौन-कौन से प्रत्यय होते हैं ? तीन-तीन उदाहरण दो।
२. डाह, डाल और डआ—ये तीन प्रत्यय किस अर्थ में होते हैं ?
३. इस पाठ में नियमों के अतिरिक्त कौन से शब्द हैं जो संस्कृत शब्दों से बने हैं ?
४ अंधा, बहरा, वेणीवाला, प्रलंब अंड वाला, खाज का रोगी, लंगड़ा, दस्त का रोगी, दाद का रोगी, वायु का रोगी, कूबड़ा, काणा, लूला, गूंगा, वामन, बुखार वाला, पित्त का रोगी, कफ का रोगी, मोटे पेट वाला और कोढ़ी—इन शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ
५. लिह, लुभ, लुंच, लुप, लुणक, लुढ, लुभ, लूर, लोअ—इन धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो।
६. लुक्क, मउय, णिद्ध, गुज्जिम, मिलिवइ, पायकोसो नाडीयणो, जरो, कासो—इन शब्दों को वाक्य में प्रयोग करो तथा हिन्दी में अर्थ बताओ।

शब्द संग्रह (वाद्य वर्ग)

झालर—झल्लरी | तूर्य—तुरिअं
वीणा—तंती | घंटा—घंटो
ताल—तालो | मृदंग—मुइंगो
शंख—संखो | डुग्डुगी—डिंडिमं
छोटी घटी—घटिया | नगारा, ढोल—ढोल्ल (दे.)
डमरु—डमरुगो

० ० ० ०

वाद्य—वाइअ | बजाना—वायण
भक्त—भत्तो

धातु संग्रह

लोट्ट—लेटना | वंच—ठगना
लोल—विलोडन करना | वंज—व्यक्त करना
लोव—लोपकरना, | वक्कम—उत्पन्न होना
वअल—पसरना, फैलना | वक्खा—विवरण करना, कहना
वईवय—जाना | वंद—प्रणाम करना

व्व और हुत्त प्रत्यय

संस्कृत मे इव (उसके जैसा) अर्थ मे वत् प्रत्यय होता है। उस वत् प्रत्यय को प्राकृत मे 'व्व' प्रत्यय आदेश होता है।

नियम ६४४ (वते व्वः २।१५०) वत् प्रत्यय को 'व्व' प्रत्यय होता है।

मथुरावत् पाटलिपुत्रे प्रासादा (महुरव्व पाडलिपुत्ते पासाया) मथुरा के जैसे पाटलिपुत्र मे प्रासाद है। क्षत्रियवत् शूरा. (खत्तियव्व सूरा) क्षत्रिय के समान शूर है। साधुवत् त्यागी (साहुव्व चाई) साधु जैसा त्यागी है। पर्वतवत् ऊर्ध्वम् (पव्वयव्व उड्ढ) पर्वत जैसा ऊचा है। सुशीलवत् धर्मिष्ठा (सुसीलव्व धम्मिट्ठा) सुशील के जैसे धार्मिक हैं।

हुत्त प्रत्यय

वार के अर्थ को बताने के लिए संस्कृत मे कृत्वस् प्रत्यय आता है। प्राकृत मे उस अर्थ के लिए हुत्त प्रत्यय का प्रयोग होता है। जैनागमो मे हुत्त

प्रत्यय का प्रयोग कम और खुत्तो प्रत्यय का प्रयोग अधिक हुआ है ।

नियम ६४५ (कृत्वसो हुत्तं २।१५८) कृत्वस् प्रत्यय को हुत्त आदेश होता है ।

शतकृत्वस् (सयहुत्त) सौ वार। एककृत्वस् (एगहुत्तं) एक वार। त्रिकृत्वस् (तिहुत्तं) तीन वार। त्रिकृत्वस् (तिक्खुत्तो) तीनवार (आगम प्रयोग)

प्रयोग वाक्य

देवालये झल्लरी निनायो होइ । तंतिं को वाएइ ? तालवायओ सपइ अत्थ न आगओ । तुरियाण णिणायो गगण फुसे । भत्ता पूयाकाले देवालये घंटं वाएइ । विज्जालये समय-सूअणट्ठं घटियाए पओगो भवइ । जुज्झस्स सख-णिणायो जाओ । सो डिंडिम वाइऊण जणा संगहिऊण य वाणरस्स गेलं पदंसइ । जीअस्स ढोल्लं को वाएइ ? मुइगवायणं को जाणइ ?

धातु प्रयोग

अत्थ गद्दभो कह लोट्टइ ? किं दहीइं सरला लोलिहिइ ? वागरणे इसण्णा (इत् सज्ञा) लोवइ। सलिलं वअलइ। साहू गामाणुगाम वईवयइ। मुसीलो जणा वंचइ। महेसो णियविआरा वजइ। अत्थ किं वयकमइ ? मुणी महावीरस्स जीवणं वक्खाइ। अह पइदिणं आयरिअ वदामि।

प्रत्यय प्रयोग

तुज्झ मणो सायरव्व गहिरो । कुसुमव्व मिऊ तस्स हियय । वायव्व सया गइमंतो ठायव्वं । अहं दसहुत्तो अमुम्मि गामे आगओ । मए सयहुत्तं लुचण कयं ।

प्राकृत में अनुवाद करो

आज शाम को मदिर मे झालर देर से क्यो वजी ? वीणा का स्वर मधुर होता है । ताल का प्रयोग कौन करता है ? ग्रामो मे मदिर मे पूजा के वाद शख वजता है । तूर्य की ध्वनि दूर तक जाती है । घटा दुर्ग मे वजता है । डुगडुगी वजाने से लटके और पुरुष इकट्ठे हो जाते है । कई विवाहो मे ढोल वजाया जाता है । साधना केंद्र मे भी छोटी घटी वजाकर समय की सूचना देते हैं । मृदग को सीखाने वाला कौन है ? युद्ध मे नगारा वजाने से सैनिको को जोश आता था ।

धातु का प्रयोग करो

घोडा थकान मिटाने के लिए लेटता है । देवताओ और दानवो ने समुद्र का विलोडन किया । सूर्य के प्रकाश मे चद्रमा का लोप हो जाता है । वात वहुत जल्दी फैलती है । आयुष्य पल-पल जा रहा है । क्या तुम मुझे ठगना चाहते हो ? वह शब्दो के माध्यम से अपनी वात व्यक्त करना चाहता है । तुम

अपने जीवन की घटना का विवरण करते हो। मैं सब साधुओं को प्रणाम करता हूं। जो पैदा होता है उसका नाश होता है।

प्रत्यय का प्रयोग करो

तुम्हारी तरह वह भी प्रमाद करता है। मैं उसकी तरह तपस्या करना चाहता हूं। क्या अमेरीका की तरह भारत भी शक्तिशाली बनेगा ? मैंने तुमको अनेक बार कहा फिर भी तुम ध्यान नहीं देते हो। वह दिन मे तीन बार खाना खाता है। मैं तुम्हारी दुकान पर अनेक बार आया हू।

प्रश्न

१ इव (उसके जैसा) अर्थ मे प्राकृत मे कौन सा प्रत्यय होता है ? उसके तीन उदाहरण दो।

२. वार अर्थ मे क्या प्रत्यय होता है ? पाच उदाहरण बताओ।

३ झालर, वीणा, ताल, शख, घंटा, डमरु, तूर्य, घटा, मृदग, डुगडुगी, नगारा (ढोल) शब्दो के लिए प्राकृत के शब्द बताओ ?

४. लोट्ट, लोल, लोव, वअल, वईवय, वच, वज, वक्कम, वमखा, वद—इन धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्य मे प्रयोग करो।

शब्द संग्रह (कीड़ा आदि क्षुद्र जन्तु)

मधुमक्खी—महुमक्खिआ
भौंरा—भमरो
मक्खी—मच्छिआ, मक्खिआ
खटमल—मंकुणो
मच्छर—मसओ
दीमक—उवदेही
जुगनू—खज्जोओ
कानखजूरा—कण्णजलूया
जोंक—जलूया, जलूगा

शलभ (पतंग)—सलहो
मकोड़ा—मंकोडो, पिपीलिआ
कीड़ी—कीडी, कीडिआ
लीख—लिक्खा
जूं—जूआ
डांस—डंसो
तिलचट्टा, झींगुर—झिंगिरो (दे०)
बीरबहूटी—इंदगोवो, इंदगोवी

धातु संग्रह

वग्ग—कूदना, जाना
वच्च—जाना
वज्जाव—बजाना
वग्ग—वर्ग करना, किसी अंक को समान अंक से गुणा करना

वण्ण—वर्णन करना
वद्धाव—बधाई देना
वम—वमन करना
विज्झाव—बुझाना
वट्ट—वर्तना
वय—बोलना

परिमाणार्थ प्रत्यय

परिमाण अर्थ में प्राकृत में इत्तिअ आदि प्रत्यय होते हैं।

नियम ६४६ (यत्तदेतदोतोरित्तिअ एतल्लुक् च २।१५६) यत् (ज) तत् (त) और एतत् (एअ) शब्द परिमाण अर्थ में हों तो डावतु प्रत्यय को इत्तिअ आदेश होता है तथा एतत् शब्द का लुक् हो जाता है। यावत् (जित्तिअं) जितना। तावत् (तित्तिअं) उतना। एतावत् (इत्तिअं) इतना।

नियम ६४७ (इदं किमश्च डेत्तिअ-डेत्तिल-डेद्दहाः २।१५७) इदं (इम) किं (क) यत् (ज) तत् (त) एतत् (एअ) शब्द से परिमाण अर्थ में अतु और डावतु प्रत्यय को प्राकृत में डेत्तिअ (एत्तिअ), डेत्तिल (एत्तिल) डेद्दह (एद्दह)—ये तीन आदेश होते हैं।

इयत् (एत्तिअं, एत्तिलं, एद्दहं) इतना
कियत् (केत्तिअं, केत्तिलं, केद्दहं) कितना

यावत् (जेत्तिअं, जेत्तिलं, जेद्दहं) जितना
तावत् (तेत्तिअं, तेत्तिलं, तेद्दहं) उतना
एतावत् (एत्तिअं, एत्तिलं, एद्दहं) इतना

नियम ६४८ (मात्रटि वा ११८१) मात्रट् प्रत्यय के आकार को एकार विकल्प से होता है। इयन्मात्रम् (एत्तिअमेत्तं, एत्तिअमत्तं)।

प्रयोग वाक्य

महुमक्खिआ जणा कया पीडइ ? भसलो रूवेण कण्हो भवइ। भद्दवये मासे मच्छिआओ वहुलाओ भवंति। मक्कुणो राओ वत्थम्मि पविसित्ता जणा पीडइ। सलही पगासे पडइ जीवण य नासइ। पिवीलिआ पुण्णदिवहं परिस्समइ। लिक्खा कत्थ वसइ ? जलूया मणुअस्स सरीरस्स रत्तं आगसइ। कीडो वेगेणं चलइ। तुम जूआओ कह मारसि ? डसा कत्थ उप्पज्जंति ? वरिसाए इंदगोवा पासिऊणं वाला हत्थे गिण्हंति। झिंगिरस्स वण्णो केरिसो भवइ ? अहं कण्णजलूयाए भीएमि। उवदेही कट्ठमवि खाअइ। खज्जओ निसाए जहासंति पगासइ। तुमए केत्तिलाओ लिक्खाओ मारिआओ ?

धातु प्रयोग

रमेसो वग्गिउं न इच्छइ। सो पंचसंखं वग्गइ। तुमं सुए किं सहाए भासिउं वच्चिहिसि ? अहं संखं वज्जाविस्सामि। तुज्झ पासे किं वट्टइ ? अहं तस्स पयार वण्णामि। सो तु वद्धावेइ ज तुम पढमो जाओ परिक्खाए। जो अहिय खाअइ सो वमइ। अह अमुम्मि विसये किमवि न वयामि।

प्रत्यय प्रयोग

तुमं केत्तिआ अवा चूसिउं इच्छसि ? जेत्तिअं पाणिअं पिविउं तुमं इच्छसि तेत्तिअ पिव। एत्तिअं कज्ज अवस्सं कर। एत्तिअमेत्तं मज्झ देहि।

प्राकृत में अनुवाद करो

इतनी मधुमक्खिया आकाश मे क्यो उडती है ? वर्षा ऋतु मे भौंरा मिट्टी से घर बनाकर किसको भीतर प्रवेश कराता है ? मक्खियां बहुत सताती है। खट्मल कहा ज्यादा होते हैं ? पानी की प्रचुरता से यहां मच्छर अधिक हो गए। पतंग मे कितनी आसक्ति होती है ? कमरे मे मकोडे घूमते हैं। चीटियो का श्रम सबके लिए अनुकरणीय है। लीख पैदा होने का कारण क्या है ? उसके सिर मे कितनी जूएं हैं ? जौक रक्त को क्यो पीती है ? दीमक किस भूमि मे अधिक होते हैं ? जुगनू के प्रकाश में तुम क्या करना चाहते हो ? कानखजूरा कान मे कैसे घुस गया ? झींगुर की आवाज क्या तुमने सुनी है ? वीरवहूटी का रग लाल होता है। डास बहुत तेज काटता है। तिलचटा यहां बहुत कम है।

धातु का प्रयोग करो

वह मकान से तालाब में कूदता है। ८४ की संख्या का मौखिक वर्ग करना सरल नहीं है। वह आज आपके यहां से जाना चाहता है। तुम वाद्य बजाकर क्या कमाना चाहते हो? क्या तुम हिमालय का वर्णन कर सकते हो? वह सुशील को बधाई देता है कि तुम्हारे पुत्र हुआ है। आज उसने वमन क्यों किया? तुम क्या बोलते हो? मुझे सुनाई नहीं देता।

प्रत्यय प्रयोग करो

मनुष्य जितना जानता है उतना कह नहीं सकता। कितने लोग यहां बाहर से आए हैं। इतने जोर से मत बोलो जिससे दूसरों को बाधा हो।

प्रश्न

१. प्रमाण अर्थ में प्राकृत में कौन से प्रत्यय होते हैं?
२. परिमाण अर्थ में होने वाले संस्कृत के वतु और डावतु प्रत्यय को प्राकृत में किन शब्दों में क्या प्रत्यय होता है?
३. मधुमक्खी, भौंरा, मक्खी, खटमल, मच्छर, पतंग, मकोड़ा, कीटी, जू, लीख, डांस, जौंक, दीमक, जुगनू, कानखजूरा, तिलचटा, बीरबहूटी, झींगुर—इन शब्दों के लिए प्राकृत के शब्द बताओ।
४. वग्ग, वग्ग, वच्च, वज्जाव, वट्ठ, वण्ण, वद्धाव, वम, वय—इन धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो।

शब्द संग्रह (रेंगने वाले, आदि प्राणी)

सांप—सप्पो, भुयंगो
बिच्छू—विच्छिओ
गिरगिट—सरडो
गिलहरी—तिल्लहडी (दे०)
खाडहिला (दे०)
छछूंदर—छच्छुंदरं, छच्छुंदरी (दे०)
छिपकली—घरोलिया, घरोली
अजगर—अयगरो, अजगरो
नेवला—णउलो
मछली—मच्छो
गोह—गोहा

धातु संग्रह

वरिस—बरसना
वव—बोना
ववस—चेष्टा करना, प्रयत्न करना
ववहर—व्यापार करना
वस—बसना, वास करना
वह—ढोना, पहुंचाना
वह—पीड़ा करना
वाए—बजाना
वाए—पढ़ाना
वागर—प्रतिपादन करना

स्वार्थ

स्वार्थ का अर्थ है—शब्द का अपना अर्थ। शब्द से प्रत्यय लगने के बाद भी शब्द का वही अर्थ रहता है। ऐसे अर्थ में होने वाले प्रत्ययों को स्वार्थिक प्रत्यय कहते हैं। प्राकृत में स्वार्थ में क, इल्ल और उल्ल प्रत्यय का प्रयोग होता है। संस्कृत में भी स्वार्थ में कप् (क) प्रत्यय होता है।

नियम ६४९ (स्वार्थे कश्च वा २।१६४) स्वार्थ में क, डिल्ल (इल्ल) डुल्ल (उल्ल) प्रत्यय विकल्प से होते हैं।

क—चन्द्रकः (चंदओ) चन्द्रमा। गगनकः (गयणयं) गगन। इहकम् इह (इहयं) यहां। आश्लेष्टुकं, आश्लेष्टुं (आलेट्ठुअं)

इल्ल—पल्लवकः, पल्लवः (पल्लविल्लो) पत्र। पुरा, पुरो वा (पुरिल्लो) पहले

उल्ल—मुखकः (मुहुल्लं) मुंह। हस्तकः (हत्थुल्लो) हाथ

नियम ६५० (ल्लो नवैकाद्वा २।१६५) नव और एक शब्द से स्वार्थ में ल्लो प्रत्यय विकल्प से होता है। नवः (नवल्लो, नवो) नया, नवीन। एकः (एकल्लो, एक्कल्लो, एक्को, एओ) एक, अकेला।

नियम ६५१ (उपरेः संव्याने २।१६६) संव्यान (प्रावरण) अर्थ में उपरि शब्द से स्वार्थ में ल्ल प्रत्यय होता है। उपरितनः (अवरिल्लो)

ऊपर का।

नियम ६५२ (भ्रुवो मया-डमया वा २।१६७) भ्रू शब्द से स्वार्थ में मया, डमया—ये दो प्रत्यय होते हैं। भ्रूः (भुमया, भमया) भौंह।

नियम ६५३ (शनैसो डिअम् २।१६८) शनैः शब्द से स्वार्थ में डिअं (इअं) प्रत्यय होता है। सण+इअं = सणिअं (शनैः) धीरे-धीरे।

नियम ६५४ (मनको न वा डयं च २।१६९) मनाक् शब्द से स्वार्थ में डय (अय) और डिअं (इअ) प्रत्यय विकल्प से होते है। मणा+डयं मणायं (मनाक्) थोडा। मणा+डिअं=मणियं (मनाक्) थोडा। पक्ष में मणा (मनाक्) थोडा।

नियम ६५५ (मिश्राड्डालिअं २।१७०) मिश्र शब्द से स्वार्थ मे डालिअ प्रत्यय विकल्प से होता है। मिश्रम् (मीसालिअं, मीसं) मिला हुआ।

नियम ६५६ (रो दीर्घात् २।१७१) दीर्घ शब्द से स्वार्थ में र प्रत्यय विकल्प से होता है। दीर्घम् (दीहरं, दीहं) दीर्घ, लम्बा।

नियम ६५७ (त्वादेः सः २।१७२) संस्कृत मे भाव में त्व, तल् आदि प्रत्यय होते है। उन प्रत्ययान्त शब्दो से स्वार्थ में त्व, तल् आदि विकल्प से होते है। मृदुकत्वम् (मउअत्तया) मृदुता।

नियम ६५८ (विद्युत्पत्रपीतान्धाल्लः २।१७३) विद्युत्, पत्र, पीत और अन्ध शब्द से स्वार्थ मे ल प्रत्यय विकल्प से होता है। विद्युत् (विज्जुला, विज्जू) बिजली। पत्रम् (पत्तलं, पत्तं) पत्र, पत्ता। पीतम् (पीअलं, पीअं) पीला। अन्धः (अन्धलो, अंधो) अंधा।

प्रयोग वाक्य

दो कण्हा सप्पा अत्थ केत्तिलत्तो समयत्तो वसति? अमुम्मि गामे केद्दहा विच्छिआ संति? सरडव्व रूवो न परिवट्टियव्वो। समुद्दस्स पासे वासिणो पुरिसा मच्छा खाअंति। सो खाडहिलाए भीअइ। घरोलिया निसाए भोयणट्ठं भमइ। अयगरो दूरत्तो जीवा आकड्ढइ। णउलस्स सप्पस्स य जुज्झं भवइ। गोधाए डंसिओ नरो खिप्पमेव मरइ। छच्छुंदरस्स अवरनाम अत्थि गंधमूसिओ।

धातु प्रयोग

जो अक्कं ववइ सो अंबं कहं पाविस्सइ? सो तुज्झ कज्जं पूरिइत्तए ववसइ। सो मए सह सम्मं न ववहरइ। तुमं मज्झ हिययम्मि वससि। गद्दभो-णवरं चंदणस्स भारं वहइ। विच्छिओ जणा कहं वहइ? संझाकाले देवालये को संखं वाएस्सइ? अम्हे सिरी भिक्खुसद्दाणुसासण को वाएहिइ? आयरिओ महावीरस्स सिद्धंतं वागरइ।

प्रत्यय प्रयोग

चंदओ गगणयम्मि पगासइ। असोय पल्लविल्ल पासिऊण सदेहो जाओ। किं तुज्झ मुहुल्लम्मि पूगीफलं अत्थि ? मज्झ हत्थे सव्वा सत्ती अत्थि। अहं एक्कल्लो न मि, संपुण्णसंघो मए सद्धि अत्थि। तुज्झ अवरिल्लो ववहारो सोहणो नत्थि। तुमं भमयाइ झाणं करेहि। सा सणिअं-सणिअं कहं चलइ ? मणियं फलरस वालस्स वि देहि। मीसालिअं ओसहं न फलइ। अंधल्लो अत्थ कह आगओ ?

प्राकृत में अनुवाद करो

साप क्या खाता है ? विच्छु क्यो पैदा होते हैं ? गिरगिट अपने रूपो को क्यो बदलता है ? आठ मंगलो मे युगलमछली भी एक मगल है। गिलहरी वक्ष पर चढती है। छछुदर कहा रहते है ? छिपकली रात मे ही क्यो घूमती है ? अजगर सांप की तरह जीवो को डसता नही है, निगलता है। नेवले की शक्ति साप से अधिक होती है। गोह का जहर वहुत प्रवल होता है।

धातु का प्रयोग करो

वच्चो मे धर्म के संस्कार (सक्कालो) वोने चाहिए। वह विवाद को मिटाने के लिए प्रयत्न करता है। वह परस्त्री को माता के समान मानता है। क्या देश की सीमा पर सैनिक वसते हैं ? वह केवल ज्ञान का भार ढोता है। तुम्हारा व्यवहार मेरे मन को पीडा करता है। वीणा कौन वजाएगा ? न्याय का ग्रंथ हमे कौन पढाएगा ? वह अपने विचारो का अच्छी तरह प्रतिपादन करता है।

प्रत्यय प्रयोग करो

गगन मे चंद्रमा कव उदय हुआ ? पहले पत्र पर लिखते थे। हाथ और मुह को पानी से धो लो। उसे नया जीवन मिला है। वह अकेला ही साधना करता है। ऊपर का मकान खाली है। भौंह पर किस रंग का ध्यान करना चाहिए ? धीरे-धीरे उसने घर पर अधिकार कर लिया। थोडा खाना स्वास्थ्य के लिए अच्छा है। मिश्रित और पीसी हुई दवा मे वस्तु का ज्ञान हरेक को नही होता। उसका दीर्घजीवन कुछ लोगो के लिए हितकर रहा। मृदुता दूसरे के मन को जीतती है। विजली आकाश मे चमकती है। पीला पत्ता अपने जीवन की कहानी कहता है। अंधा मनुष्य आवाज से पहचान करता है।

प्रश्न

१. 'स्वार्थेकश्च वा' इस नियम के अनुसार स्वार्थ मे कितने प्रत्यय होते हैं। प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दो।

२. एक्कल्लो, अवरिल्लो, नवल्लो, ममया, तणिअं, मीसालिअं, दीहरं, पीअलं, मउअत्तया, विज्जुला—इन शब्दों में किस नियम से क्या प्रत्यय हुआ है ? अपने वाक्य मे इन्हें प्रयोग करो ।

३. सांप, बिच्छु, गिरगिट, मछली, छछुंदर, छिपकली, अजगर, नेवला, गोह और गिलहरी—इन शब्दो के लिए प्राकृत शब्द बताओ ।

४. वव, ववस, ववहर, वस, वह, वह, वाए, वारिस, वाए और वागर—इन धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्य मे प्रयोग करो ।

५. कच्छुल्लो, वडभो, मूयो, डिंटिमं, तंती, घंटिया, मसओ, लिक्खा—इन शब्दो का वाक्य मे प्रयोग करो तथा हिन्दी मे अर्थ बताओ ।

शब्द संग्रह (शस्त्र वर्ग १)

हथियार—अत्थ, आउहं
तलवार—असी (पु) खग्गो
ढाल—फलगो
भाला—कुंतो
बंदूक—भुसुंढि (दे० स्त्री)
दांती—लवित्तं
गुप्ती—करवालिआ
हथौडा—घणो (दे०)
बर्छी—सल्लं
बंब—फोडत्थं (सं)
तोप—सयग्घी (दे० स्त्री)
राइफल—कुच्छिभरियत्थ (स)
टैंक—सत्थावरुहं (सं)
कटार—करवालिआ
लाठी—लगुडो, डंडो, दंडो
कैंची—कत्तिया
सुई—सुई (स्त्री)

०

धान्य—सस्स
वेतन लेकर काम करने वाला—वेयणियो
अभिषेक—अभिसेओ, अभिसेगो
वास्तव—जहत्थं

धातु संग्रह

वाय—पढना, पढाना
वायाम—कसरत करना
वार—रोकना
वा—गति करना
वा—बुनना
वावाल—मार डालना
वास—संस्कार डालना
वाह—वहन कराना
वाहर—बोलना
वाल—मोडना

मयट् प्रत्यय

नियम ६५६ (सर्वाङ्गादीनस्येकः २।१५१) सर्वाङ्ग शब्द से व्याप्नोति (व्याप्त) अर्थ मे होने वाले (इन) प्रत्यय को इक आदेश होता है। सर्वाङ्गीणम् (सव्वंगीओ) सब अंगो मे व्याप्त।

नियम ६६० (पथोणस्येकट् २।१५२) पथ शब्द से नित्य जाने के अर्थ मे होने वाले ण प्रत्यय को इकट् (इअ) आदेश होता है। पह+इअ= पहिओ (पथिकः) पथिक।

नियम ६६१ (ईयस्यात्मनो णयः २।१५३) आत्मन् शब्द से शेष अर्थ मे होने वाले ईय प्रत्यय को प्राकृत में णय आदेश होता है। अप्प+णय =

अप्पणयं (आत्मीयम्) अपना ।

नियम ६६२ (अनङ्कोठात्तैलस्य डेल्लः २।१५५) अकोठ शब्द को छोड़कर 'उसका तैल' इस अर्थ में डेल्ल (एल्ल) प्रत्यय होता है । कटुतैलम् (कडुएल्लं) कटु का तैल ।

(मयट्य इर्वा १।५०) नियम ८१ के अनुसार—संस्कृत के मयट् प्रत्यय में म के अ को अइ आदेश विकल्प से होता है । विषमयः (विसमइओ, विसमओ) जिसका अधिकांश भाग विषयुक्त हो ।

प्रयोग वाक्य

अत्थस्स परंपराए अवसाणो न भवइ । धानिओ धग्गेण सत्तुं (शत्रु) मारइ । फलगस्स पओगो सुरक्खाए (सुरक्षा) कज्जइ । गामवासिणो जुज्झकाले परुप्परं मल्लस्स पओगं करेंति । महारायपयावस्स (महाराणा प्रताप) कुंतं किं को वि हत्थे गिण्हिउं समत्थो ? तुज्झ भाउणा भुसुंढीए पंच जणा मारिआ । किमीवलो लवित्तेण सस्साइं लुणइ । आण विणा णियघरे को फोडल्लाइं णिम्माइ ? गोपालेण करवालिआए मुल्लं दिण्णं । विमलेण दंडस्स पओगो कहं कओ ? सुसीला कत्तिआए वत्थाणि कत्तइ । लोहारेण घणेण पहारो दिण्णो । रायाभिसेआवसरे सयग्घीए पओगो केण कओ ? सत्थावरहस्स पहारो पलंबो भवइ । सुसीला सूईए वत्थाइं सिव्वइ ।

धातु प्रयोग

उवज्झायो मुत्तं वायइ । अहं पच्चूसे वायामामि । माआ सिसुं बाहिं गमिउं वारेइ । वाऊ मंदं वाइ । तंतुवायो वत्थाइं वाइ । सो मुक्खो मच्छिओ वावाअइ । आयरिओ सावगा वामइ । सासू पुत्तवहूए सह मिउं वाहरइ । किं तुमं लोहं वाम्भिउं समत्थो ?

प्रत्यय प्रयोग

तुज्झ लेहो सव्वंगीओ वरो अत्थि । पहिओ मग्गे पिवासिओ जाओ । संसारे अप्पणयं किं अत्थि ? अयसी एल्लं आवणे किं सुलहमत्थि ? घयमइअं भोयणं भक्खिउं को-को इच्छइ ?

प्राकृत में अनुवाद करो

हथियार मात्र साधन है । एक समय तलवार का अधिक महत्त्व था । ढाल किसके पास है ? बर्छी अनेक घरों में उपलब्ध होती है । भाले का प्रयोग शक्तिशाली व्यक्ति ही कर सकता है । उसने बंदूक से हरिण को मारा । हरगोपाल की दुकान में बम कैसे फूटा ? तुम तोप का प्रयोग कब करोगे ? राइफल किसके पास थी ? उसने टैंक से अनेक लोगों को मारा । विवाह में दुलहा कटार रखता है । वह खेत में दाती से घास (तणं) काटता है । क्या

तुम लाठी चलाना सीखते हो ? कैंची से ही कोट, पतलून आदि बनते हैं। हथौडा किसके पास मिलेगा ? सूई का काम करो, कैंची का नहीं।

धातु का प्रयोग करो

दूसरों को पढाना सरल नहीं है। स्वास्थ्य के लिए प्रतिदिन व्यायाम करना चाहिए। तुम मुझे उसके पास जाने के लिए क्यो रोकते हो ? आज हवा नहीं चलती है। गाव-गांव में कपडे बुनना चाहिए। सिंह पशुओ को और मनुष्य को मार डालता है। माता अपने बच्चो मे संस्कार डालना चाहती है। तप को वहन कराना आचार्य का कार्य है। ध्यान के समय कौन बोलता है ? जो अपने विचारो को सत्य की ओर मोडता है, वही वास्तव मे सत्य का शोधक है।

प्रत्यय का प्रयोग करो

हमारा सर्वांगीण विकास होना चाहिए। पथिक का काम है मार्ग मे चलते रहना। अपने देश का गौरव किसको नही होता ? सरसो का तेल कहां मिलेगा ? आज दहिमय साग खाने की इच्छा है।

प्रश्न

१ मयट् प्रत्यय को क्या आदेश होता है ? तीन शब्द बताओ।
२. उनका तेल अर्थ में क्या प्रत्यय होता है ?
३. इस पाठ में इक इकट् और णय प्रत्यय किस शब्द मे किस अर्थ में किस प्रत्यय को हुआ है ?
४. तलवार, भाला, बंदूक, दाती, बर्छी, तोप, बंब, राइफल, टैंक, कटार, हथौडो, लाठी, कैंची, ढाल, गुप्ती, सूई—इन शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ।
५. वाय, वायाम, वार, वा, वा, वावाअ, वास, वाह, वाहर, वाल—इन धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो।

प्रयोग वाक्य

रामो घणुणा वालिं मारीअ। वावामे अहं मोग्गर चलावेमि। सो कुहाडीए कट्ठाइं कट्टइ। सो करकयेण रुक्ख कट्टइ। चक्को णर मारिउं समत्थो। दीहकायो नागो अंकुसेण वसीभवइ। आसवरो कसं न इच्छइ। सुसीला छुरियाए साग कट्टइ। रामस्स सरो वालीइ हिअये पविसीअ। भीमस्स गया पसिद्धा अत्थि। सिवस्स तिसूलस्स उवओगो किं आसि? देविंदो वज्जेण देव मारइ। विजएण गुलिअत्थेण तिण्णि जणा मारिआ। सुसीला संकुलाइ पोग्गफलाइ कट्टइ। अमुम्मि णयरे अज्ज गुलिआजंतस्स पओगो कह जाओ? किसीवलो गुफणेण चडआओ मारइ। देविंदो कस्स उवरिं वज्जं अक्खिवइ।

धातु प्रयोग

गोवालो धेणूओ हुक्कइ। चोरो सेट्ठित्तो धण हरइ। तुज्झ विआस सुणिऊण अहं हरिसामि। झाणेण कोहो कमसो हसइ। सो जावज्जीवं सुरं हाइ। तुम कत्थ हिंडसि? अणायार सेवित्ता सो हिरिंसु। सो तु कह हीलइ?

प्रत्यय प्रयोग

सपइ अत्थ मुणी जयचंदो साहुसु जेट्ठयरो अत्थि। कणिट्ठो साहू गिरीसो किं पढइ? गरिट्ठं भोयणं साहूणं न हियअरं अत्थि। तेरापंथधम्मसंघे उच्चअमं पय आयरियस्स अत्थि। अणुव्वयस्स पयारे भूयिट्ठो पयासो (प्रयास) केण कओ?

प्राकृत में अनुवाद करो

राम के युग मे धनुष का विशेष महत्त्व था। किसान ने कब कुल्हाडी से इस वृक्ष की शाखा को काटा? आरा (करोत) विशाल वृक्षो को भी काट देती है। अंकुश वहुत छोटा होता है, पर शक्तिशाली होता है। तुम घोडे को चाबुक क्यो मारते हो? आपकी छुरी किस पर चलेगी? हनुमान की गदा से सब भयभीत हो जाते थे। उसका हृदय वज्र के समान कठोर है। त्रिशूल किन सन्यासियो की पहचान है? मेरा मुद्‌गर किसके पास है? सुदर्शन चक्र बडा शक्तिशाली है। तुम सरौता किस दुकान से लाए हो? वीरेन्द्रसिंह के पास पिस्तौल है। मशीनगन कितनी दूर तक मार करता है? उसने म्यान से तलवार निकाली। राम का तूणीर तुम ले जाओ। वज्र केवल देवो के इन्द्र का ही शस्त्र है।

धातु का प्रयोग करो

किसान का लडका पशुओ को हाकता है। कसाई (सोणिओ) बकरो

को मारता है। रावण ने सीता का हरण किया। आचार्य को अपने गाव मे पाकर गाव के लोग बहुत प्रसन्न हैं। तुम्हारा प्रभाव कम क्यों हुआ? साधु बनने वाला परिवार के मोह को त्यागता है। हमने अनेक प्रान्तो का भ्रमण किया। किसी को हिंसा नही करनी चाहिए। अनुत्तीर्ण मे अपना नाम सुनकर वह लज्जित हुआ। तुम उसकी अवज्ञा क्यो करते हो?

प्रत्यय का प्रयोग करो

वह सबसे छोटा है। तुम मेरे से बडे हो। तुम मुझे सबसे प्रिय हो। राम भाइयो मे सबसे बडा था। क्या वह तुमसे बडा है? सुशील अपने परिवार मे सबसे छोटा है। इसकी धार उससे तीक्ष्ण है। इस गाव मे सबसे ऊंचा मकान किसका है? गरीष्ठ भोजन मत करो। विनय सबसे अधिक पटु है। सोहन मोहन से क्षुद्र है। तुम्हारे मे उससे अधिक गुण है।

प्रश्न

१. तरतम प्रत्ययो के स्थान पर कौन से प्रत्यय होते है? दोनो मे क्या अंतर है?
२. अर और अम प्रत्ययान्त शब्द किस लिंग मे व्यवहृत होते है?
३ पाच वाक्य अम प्रत्यय लगाकर बनाओ।
४. धनुप, मुद्गर, कुल्हाडी, आरा, चक्र, अंकुश, चाबुक, सरोता, छुरी, वाण, गदा, त्रिशूल, वज्र, मशीनगन, पिस्तौल, पत्थर फेकने का अस्त्र, म्यान और तूणीर के लिए प्राकृत शब्द बताओ।
५. हक्क, हर, हरिस, हस, हा, हिंड, हिरि और हील धातुओ के अर्थ बताओ और वाक्य मे प्रयोग करो।

९२ प्रेरणार्थक प्रत्यय (१)

णिजन्त (ञिन्नन्त)

शब्द संग्रह (सुगंधित पत्र-पुष्प वाले पौधे)

कमल—पोम्मं
गुलाब—पाडलो
चंपा—चंपा, चंपयो
मौलसिरी—वउलो
मरुआ—मरुअगो, मरुअओ
मरुवयो
अगस्तिया—अगत्थियो
केवडा—केअगो
वासंती—णवमालिया
मोगरा, वेला—मल्लिआ

चमेली—जाई, मालई
जूही—जूही, जूहिआ
अडहुल—जासुमणो
तिलक—तिलगो, तिलयो
दौना—दमणगो, दमणगं
सिन्दुरिया—सिन्दुरो
कूजा—कुज्जयो
तुलसी—तुलसी
गेंदा—झंडु (सं)

धातु संग्रह

सिंच—सींचना, छिडकना
सिंज—अस्फुट आवाज करना
सिक्ख—सीखना, पढना
सिज्झ—सीझना, निष्पन्न होना
सिणा—स्नान करना

सिणिज्झ—स्नेह करना
सिर—बनाना, निर्माण करना
सिलाह—प्रशसा करना
सिलेस—आलिंगन करना
सिव्व—सीना, सांधना

प्रेरणार्थक प्रत्यय

जहा एक कर्त्ता को दूसरा कर्त्ता कार्य करने को प्रेरित करता हो वहां सस्कृत मे णि प्रत्यय आता है। भिक्षु शब्दानुशासन मे णि के स्थान पर ञिन् प्रत्यय आता है। इसलिए णिजन्त को ञिन्नन्त कहते है।

नियम ६६३ (णेरदेदावावे ३।१४९) णि के स्थान पर अत्, एत्, आव और अवे—ये चार आदेश होते हैं।

नियम ६६४ (अदेल्लुक्यादेरत आः ३।१५३) णि को अत् या ऐत् आदेश होने पर या णि का लुक् होने पर धातु के आदेश अ को आ हो जाता है। अत्—हासइ। एत्—हासेइ। आव—हसावइ। आवे—हसावेइ। कारइ, कारेइ, करावइ, करावेइ। उवसामइ, उवसामेइ, उवसमावइ उवसमावेइ।

नियम ६६५ (गुर्वादेरविर्वा ३।१५०) उपधा मे गुरु या दीर्घस्वर

वाली धातु हो तो अवि प्रत्यय विकल्प से होता है। अत्, एत्, आव और आवे प्रत्यय भी होते है। चूस—चूसइ, चूसेइ, चूसावइ, चूसावेइ, चूसविइ।

नियम ६६६ (भ्रमेस्तालिअण्ट-तमाडौ ४।३०) णि प्रत्ययान्त भ्रम धातु को तालिअण्ट और तमाड विकल्प से आदेश होते हैं। भ्रमयति (तालि-अण्टइ, तमाडइ) पक्ष मे

नियम ६६७ (भ्रमेराडो वा ३।१५१) भ्रम धातु से परे णि को आड आदेश विकल्प से होता है। भमाडइ, भमाडेइ। पक्ष मे भामइ, भामेइ, भमावइ, भमावेइ (भ्रमयति) घूमता है।

नियम ६६८ (छदेर्णेणुमनूमसन्नुम-ढक्कौम्बाल-पव्वालाः ४।२१) णि प्रत्ययान्त छद धातु को णुम, नूम, सन्नुम, ढक्क, ओम्वाल और पव्वाल आदेश विकल्प से होते है। छादयति (णुमइ, नूमइ, सन्नुमइ, ढक्कइ, ओम्वालइ, पव्वालइ, छायइ) ढकवाता है।

नियम ६६९ (निविपत्योर्णिहोडः ४।२२) नि उपसर्गपूर्वक वृन् धातु और पत् धातु णि प्रत्ययान्त हो तो उसे णिहोड आदेश विकल्प से होता है। निवारयति (णिहोडइ, निवारेइ) निवारण करवाता है। पातयति (णिहोडइ, पाडेइ) गिराता है।

नियम ६७० (दूङो दूमः ४।२३) णि प्रत्यान्त दूङ् धातु को दूम आदेश होता है। दावयति (दूमेइ) दुःखित करवाता है।

नियम ६७१ (धवले र्दुमः ४।२४) णि प्रत्ययान्त (धवलयति) रूप को दुम आदेश विकल्प से होता है। धवलयति (दुमइ, धवलइ) सफेद करना, चूना आदि से पोतना।

प्रयोग वाक्य

जाईए पुप्फाइं सुन्दराइं भवंति। जुहिआ देसस्स सव्वभागे उप्पज्जइ। पोम्मं पके उप्पज्जइ परं उवरि चिट्ठइ। पाडलस्स पुप्फाइं पसिद्धाइं संति। चपयस्स पुप्फाणि अत्थ न सति। कयवो गुणेण सीयलो भवइ। वउलस्स बीएसु एगविहं तेल्ल भवइ। कुज्जयो पाडलस्स चेअ जाई (जाति) अत्थि। मल्लिआए अणेगे भेया संति। केअगो कफं नासइ। तिलगस्स पुप्फ तिलसमं भवइ। जासुमणो अणेगवण्णो भवइ। सिन्दुरस्स रुक्खो सुदरो होइ। अगत्थियो दक्खिणदेसे वंगदेसे य पउरेण भवइ। तुलसीए पत्ताणि ओसहीए उवओगीइ भवंति। दमणगो सयं उप्पज्जइ। मरुवयो देसस्स सव्वभागे मिलइ। अडू-जरणासगो भवइ।

धातु प्रयोग

रट्ठवई गिहुज्जाणं पइदिण सिंचइ। बालो किं सिंजइ? अहं तुहाओ सिक्खिउं अहिलसामि। घरे अन्नं सिज्झइ। तुमं दिणे कइहुत्तो सिणासि। सो

कमवि न सिणिज्जइ। तुमं कं सिलाहसि ? रामो लहुभाउर सिलेसइ। सरोया वत्थाइं सिव्वइ। तुज्झ पसंस सुणिऊण सो कहं तुमं सिणिज्झइ ? अहं कव्वं सिरामि।

प्रेरणार्थक प्रत्यय प्रयोग

असोगो तु कह हसावेइ ? सो तुमं कज्जं कराइ। माआ वाल अंवं चूसावेइ। कम्माइं णर ससारे भमाडेति। गिहसामी भिच्चेण सयणं ओम्वालइ। सो रक्खत्तो फलाइं णिहाडेइ। साहू जणाण दुक्ख णिहोडइ। तस्स हियय को दूमेइ ? रमेसो भीइं दुमेइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

नेहरुजी गुलाव का फूल अपने पास रखते थे। इस गाव मे भी कमल पैदा होता है। हमारे वाग मे चमेली के फूल वहुत हैं। क्या इस उद्यान में जूही नही है ? चपा का वृक्ष १२ मास हरा रहता है। कदंव कफकारक और वायुजनक होता है। मौलसिरी कुष्ठ के रोग को दूर करता है। कूजा की लता वहुत फैलती है। वेला के पुष्प मेरे भाई को वहुत प्रिय है। केवडा दो प्रकार का होता है। तिलक दात संवंधी रोगो को दूर करनेवाला है। जवाकुसुम (अडहुल)का तेल महंगा मिलता है। सिन्दुरिया के फूल प्रसिद्ध हैं। अगस्तिया प्रतिश्याय, ज्वर और कास मे लाभकारी है। लोग तुलसी को पवित्र मानते है। दौना वालको के उदर संवधी वीमारी मे वहुत उपयोगी है। मरुआ की सुगध मीठी होती है। गेदा के फूलो का रस रक्त ववासीर में लाभप्रद है।

धातु का प्रयोग करो

तपस्वी साधु-साध्वियो ने अपनी तपस्या से सघ को सीचा है। अस्फुट आवाज करनेवाला शिशु इस घर मे कोई नही है। मैं प्रकृति के प्रत्येक पदार्थ से सीखता हूं। खीचडी अभी सीझी नही है। तुम स्नान क्यो करते हो ? उसने तुमसे स्नेह कव किया ? मनुष्य का निर्माण कौन करेगा ? वे नव विमल की प्रशंसा करते हैं। पिता ने पुत्री का आलिंगन किया। टूटे दिल को सीने का प्रयास करो।

णिन्नन्त धातु का प्रयोग करो

तुम उसको क्यो हसाते हो ? वह तुमसे अप्रामाणिक कार्य क्यो करवाता है ? पिता पुत्र को क्यो चूमता है ? मंत्री राजा को राज्य मे घुमाता है। वह तुम्हारी प्रतिष्ठा को क्यों गिराता है ? वैद्य से वह रोग का निवारण करवाता है।

प्रश्न

१. णि के स्थान पर क्या आदेश होते हैं ?

२. अवि प्रत्यय विकल्प से कहां होता है और किस नियम से ?

३. तालिअण्ट और तमाड आदेश किसको होता है ?
४. निपूर्वक वृन् धातु से णि प्रत्यय को क्या आदेश होता है ?
५. धवलयति और दावयति को किस नियम से क्या आदेश होता है ?
६. कमल, गुलाब, चंपा, गेंदा, मौलसिरी, खस, वेला, चमेली, जूही औडहुल और केवडा के लिए प्राकृत शब्द बताओ।
७. सिंच, सिंच, सिक्ख, सिज्झ, सिणा, सिणिज्झ, सिर, सिलाह, सिलेस, सिव्व और सीभ धातुओं का अर्थ बताओ और वाक्य मे प्रयोग करो।
८. णउलो, सरडो, खाडहिला, कुंतो, कारवलिआ, फलगो, कसो सरो, छुरिया—इन शब्दो को वाक्य में प्रयोग करो तथा हिन्दी मे अनुवाद करो।

९३ प्रेरणार्थक प्रत्यय (२)

शब्द संग्रह [सुगंधित द्रव्य]

केसर—कुंकुम
इत्र—पुप्फसारो
केवडाजल—केअडजल
अगर—अगरो
तगर—तगरो, टगरो
खस—उसीर
मुलहठी—लट्ठिमहु (स)
चदन—चंदणो
शिलारस—सिल्हग

कस्तूरी—कत्थूरी, कत्थूरिआ
गुलावजल—पाडलजलं
गूगल—गुग्गुलो
कर्पूर—कप्पूरो
कुंदरु—कुंदुरुक्को
सुगंधवाला—हिरिवेरो
नख—नखं (सं)
ककोल—ककोलो
लोहवान—लोवाणो (स)

० ० ०

मुसलमान—जवणो
धुआ—धुम्मो
यत्र—जंत

धातु संग्रह

सील—अभ्यासकरना
सुअ—सुनना
सुघ—सूघना
सुज्झ—शुद्धहोना
सुत्त—बुनना

सुप—मार्जनकरना
सुप्प—सोना
सुव—सोना
सुसमाहर—अच्छी तरह ग्रहण करना
सुस्स—सूखना

नियम ६७२ (तुलेरोहामः ४।२५) णि प्रत्ययान्त तुल् धातु को ओहाम आदेश विकल्प से होता है

तुलयति (ओहामड, तुलड) तौलता है, तुलना करता है।

नियम ६७३ (विरिचेरोलुण्डोल्लुण्ड-पल्हत्थाः ४।२६) वि पूर्वक रेचयति को ओलुण्ड, उल्लुण्ड और पल्हत्थ—ये तीन आदेश विकल्प से होते हैं। विरेचयति (ओलुण्डइ, उल्लुण्डइ, पल्हत्थइ, विरेअइ) विरेचन करवाता है।

नियम ६७४ (तडेराहोड-विहोडौ ४।२७) णि प्रत्ययान्त तड् धातु को आहोड, और विहोड आदेश विकल्प से होता है। ताडयति (आहोडइ, विहोडइ, ताडइ) पिटवाता है।

नियम ६७५ (मिश्रे वीसालमेलवौ ४।२८) णि प्रत्ययान्त मिश्र् धातु को वीसाल और मेलव—ये दो आदेश विकल्प से होते हैं। मिश्रयति (वीसालइ, मेलवइ मिस्सइ) मिलाता है।

नियम ६७६ (उद्धूलेर्गुण्ठः ४।२९) उद्धूलयति को गुण्ठ आदेश विकल्प से होता है।

उद्धूलयति (गुण्ठइ, उद्धूलेइ) धूसरित करता है।

नियम ६७७ (नशो विउडनासव-हारव-विप्पगाल-पलावाः ४।३१) णि प्रत्ययान्त नश् धातु को विउड, नासव, हारव, विप्पगाल, पलाव—ये पाच आदेश विकल्प से होते हैं। नाशयति (विउडइ, नासवइ, हारवइ, विप्पगालइ, पलावइ, नासइ) नाश करवाता है।

नियम ६७८ (दृशो दाव-दंस-दक्खवाः ४।३२) णि प्रत्ययान्त दृश् धातु को दाव, दंस और दक्खव—ये तीन आदेश विकल्प से होते हैं।

दर्शयति (दावइ, दंसइ, दक्खवइ, दरिसइ) दिखाता है।

नियम ६७९ (घटेः परिवाडः ४।५०) णि प्रत्ययान्त घट्-धातु को है परिवाड आदेश विकल्प से होता है। घटयति (परिवाडइ, घडेइ) -घटाता है, सगत करता है।

नियम ६८० (उद्घटे रुग्गः ४।३३) णि प्रत्ययान्त उद्पूर्वक घट् धातु को उग्ग आदेश विकल्प से होता है। उद्घाटयति (उग्गइ, उग्घाडइ) खोलता है।

नियम ६८१ (वेष्टेः परिआलः ४।५१) णि प्रत्ययान्त वेष्ट् धातु को परिआल आदेश विकल्प से होता है। वेष्टयति (परिआलेइ, वेढेइं) वेष्टन करता है, लपेटता है।

नियम ६८२ (स्पृहः सिहः ४।३४) णि प्रत्ययान्त स्पृह् धातु को सिह आदेश होता है। स्पृहयति (सहइ) चाहता है।

नियम ६८३ (संभावेरासंघः ४।३५) सभावयति को आसंघ आदेश विकल्प से होता है। सभावयति (आसघइ, सभावइ) सभावना करता है।

प्रयोग वाक्य

तेण कुंकममीसियपयो कह पिज्जइ ? पारसो गिम्हकाले पाडलपुप्फसारस्स पओग करेइ। से जंतलेहणे पाडलजलं मग्गइ। सा केअइजल नेत्तपीलाए नेत्तेसु पाडेइ। अमुम्मि गामम्मि केसि पासे महग्घा कत्थूरी अत्थि ? सो कप्पूरेलाकंकोल तवोल खाअइ। कप्पूरो सेयवण्णो होइ। तगरस्स अवरनामं सुगंधवाला अत्थि। कुदुरुक्को सल्लईए (सल्लकी वृक्ष) णिय्यासो भवइ। नखं नक्खसरिसं होइ अओ नखं कहिज्जइ। अंगारे ठविएण लोवाणे सेयवण्णस्स धुम्मो (धूआ) णिस्सरइ। चंदणो सीयलदो भवइ। कंकोलो मुहस्स दुगंधत्तं

दूरीकरेइ। लड्डिमधुम्मि सेयवण्णी महुरपयत्थो भवइ। हिरिबेरम्मि कत्थूरीसमो सुगंधो भवइ। उसीरं तणस्स मूलं अत्थि। सिल्हगम्मि णिय्यासमो सुगंधो होइ। पुराणरुक्खस्स कट्ठम्मि अगरो कत्थइ मिलइ।

धातु प्रयोग

सो मासम्मि चत्तारि सामाइयाणि सीलइ। सो सव्वा सुणइ, पर करेइ णियमईए। अहं पुप्फाइ न सुघामि। सो पायच्छित्तेण सुज्झइ। सिरीभिक्खु-सद्दाणुसासणस्स सुत्ताइ केण सुत्तीअ ? सा भायणाणि सुपड। साहू रोग अन्तरेण दिणे कहं सुप्पइ ? अहं रत्तीए सिग्घ सुवामि। तुज्झ सरीरं कह सुस्सइ ? तुम सिक्ख सुसमाहरसि।

भिन्नन्न धातु का प्रयोग

सो तुम केण सह ओहामइ, तुलइ वा। वेज्जो रोगिं विरेअइ, ओलुण्डइ, पल्हत्थइ वा। रमेसो सत्तु अण्णेण पुरिसेण विहोडइ, आहोडइ, ताडइ वा। पिआ पुत्तेण सुद्धघयम्मि वणस्सइघयं वीसालइ, मेलवइ, मिस्सइ वा। को वत्थाइ गुण्ठइ, उद्धूलेइ वा ? सो तुम्हे पोत्थय दाऊण कह विउडइ, नासवइ, हारवइ, विप्पगालइ, पलावइ, नासइ वा। तुम णियनव्वभवण क दावइ दसइ, दक्खवइ, दरिसवइ वा ? को घड परिवाडइ, घडेइ वा ? मंती सहाभवण उग्गइ, उग्घाडइ वा। हत्थलिहियपोत्थय को परिआलेइ, वेढेइ वा ? साहू तवस्सि भत्तपाणपच्चक्खाण सिहइ। किं तुमं न सभावसि मग्गे अवरोहं आगमिस्ससि ?

प्राकृत में अनुवाद करो

वह मिठाई मे केसर मिलाता है। इत्र की सुगध से सारा कमरा भर गया। केवडे का जल ठडा होता है। कस्तूरी मृग के नाभि मे होती है। गुलाव जल वाजार मे किसके पास मिलेगा ? पान मे कर्पूर कौन खाता है ? लोग गर्मी मे ठंडी हवा के लिए खस को काम मे लेते हैं। तगर का मूल्य क्या है ? कुदुरु कहा पैदा होता है ? लोवान का प्रयोग मुसलमान अधिक करते हैं। औषधि मे सुगधवाला के मूल का व्यवहार होता है। मुलहठी चीनी से ५० गुणा अधिक मीठी होती है। नख समुद्री जीव के मुख के ऊपर का आवरण है। क्या तुम्हारे पास शिलारस है ? ककोल अंधापन को दूर करती है। हमारे घर मे अगर है।

धातु का प्रयोग करो

निद्रा कम करने का अभ्यास करना चाहिए। तुम मौन रहकर किन की बात सुनते हो ? कुत्ता चोर को पकडने के लिए क्या सूंघता है ? वह स्नान कर शरीर को शुद्ध करता है। वह रुई से कौन-सा वस्त्र बुनना चाहता

है ? सीता अपने सम्पूर्ण घर का मार्जन करती है । तुम दिन में बार-बार क्यों सोते हो ? वह रात मे भी नहीं सोता है । तुम्हारी बात को वह अच्छी तरह ग्रहण करता है । किस चिंता से उसका शरीर सूख रहा है ?

ञिन्नन्त धातुओं का प्रयोग करो

वह वायु की गति से मन की तुलना करता है । उसका शरीर स्वस्थ है फिर भी वैद्य विरेचन क्यो करवाता है ? मोहन अध्यापक से सोहन को पिटवाता है । तुम अपनी पत्नी से दूध मे पानी क्यो मिलवाते हो ? वह मिठाई को बाजार मे खुली छोडकर धूल से धूसरित क्यों करवाता है ? तुम उसको पर्वत पर स्थित भगवान पार्श्वनाथ का मदिर दिखाते हो । वह पर्वत पर देवालय करवाता है । तुम पुस्तकालय का उद्घाटन किससे करवाते हो ? वह अपने बिस्तर को वेष्टित करवाता है । अहिंसा की यात्रा मे साथ चलने के लिए वह तुम्हारी इच्छा करवाता है । क्या वह संभावना नही करता कि इससे वह उसका शत्रु बनेगा ?

प्रश्न

१. ञिन् (णि) प्रत्ययान्त तुल, तड, मिश्र, रेचय और वश धातुओं को क्या-क्या आदेश किस नियम से होता है ?
२. गुण्ठ, परिवाड, दाव, उग्ग, परिआल और आसंघ ये आदेश किस-किस धातु से हुए हैं ?
३. केसर, कस्तूरी, इत्र, गुलाबजल, केवडा जल, गूगल, अगर, तगर, कर्पूर, कुंदरु, खस, सुगधबाला, मुलहठी, नख, चंदन, कंकोल, लोबान, शिलारस शब्दो के लिए प्राकृत शब्द बताओ ।
४. सील, सुअ, सुध, सुज्झ, सुत्त, सुप, सुप्प, सुव, सुसमाहर, सुस्स—इन धातुओ के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो ।

९४ प्रेरणार्थक प्रत्यय(३)

शब्द संग्रह [वस्ती और मार्ग वर्ग]

ग्राम—गामो
बडा कस्बा—दोणमुह
नगर—णयर
उपनगर—उवणयर
छोटीवस्ती (गाव)—पल्ली (स्त्री)
मुहल्ला—गोमड्डा (दे.) रच्छा
हवेली—हम्मिओ (दे.)
झोपडी—झुपडा (दे)
कुटिया—इरिया (दे.)

महानगर—महाणयर
राजधानी—रायहाणी
व्यापारीनगर—पट्टण
सडक—महापहो, रायमग्गो
मार्ग—मग्गो
गली—वीहि (स्त्री)
गुफा—गुहा, कफाडो (दे०)
पगडंडी—पद्धड
प्रासाद—पासायो,

समस्या—समस्सा

धातु संग्रह

से, सेअ—सोना
सेह—सिखाना
सोअ—सोना, शोक करना
सोभ—शोभायुक्त करना
सोह—शुद्धिकरना

सोह—शोभना, चमकाना
साडज्ज—स्वाद लेना
सार—ठीक करना
सार—याद दिलाना
सारक्ख—अच्छी तरह रक्षण करना

नियम ६८४ (उन्नमेरुत्थंघोल्लालगुलुगुञ्छोप्पेलाः ४।३६) णि प्रत्ययान्त उद्पूर्वक नम् धातु को उत्थघ, उल्लाल गुलुगुञ्छ, उप्पेल—ये चार आदेश विकल्प से होते हैं। उन्नमयति (उत्थघइ, उल्लालइ, गुलुगुञ्छइ, उप्पेलइ, उन्नामइ) ऊंचा करता है, उन्नत करता है।

नियम ६८५ (प्रस्थापेः पट्ठव-पेण्डवौ ४।३७) प्रस्थापयति को पट्ठव और पेण्डव आदेश विकल्प से होते हैं। प्रस्थापयति (पट्ठवइ, पेण्डवइ, पट्ठावइ) प्रस्थान करवाता है, भेजता है।

नियम ६८६ (विज्ञपेर्वोक्कावुक्कौ ४।३८) विज्ञापयति को वोक्क और अवुक्क आदेश विकल्प से होते हैं। विज्ञापयति (वोक्कइ, अवुक्कइ, विण्णवइ) विज्ञप्ति करता है।

नियम ६८७ (अर्पेरल्लिव-चच्चुप्प-पणामाः ४।३९) अर्पयति को

अल्लिव, चच्चुप्प और पणाम आदेश विकल्प से होता है। अर्पयति (अल्लिवइ, चच्चुप्पइ, पणामइ) पक्ष में।

(वार्पो १।६३) नियम ९४ से अर्पयति के आदि अ को ओ विकल्प से होता है। अर्पयति (ओप्पेइ, अप्पइ) अर्पण करता है।

नियम ६८८ (यापेर्जवः ४।४०) णि प्रत्ययान्त या धातु (यापयति) को जव आदेश विकल्प से होता है। यापयति (जवइ, जावेइ) कालयापन करता है।

नियम ६८९ (प्लावेरोम्वाल-पव्वालौ ४।४१) प्लावयति को ओम्वाल और पव्वाल आदेश विकल्प से होते हैं। प्लावयति (ओम्वालइ, पव्वालइ, पावेइ) खूब भिजाता है।

नियम ६९० (विकोशेः पक्खोडः ४।४२) नाम धातु विकोशयति को पक्खोड आदेश विकल्प से होता है। विकोशयति (पक्खोडइ, विकोसइ) खोलता है, फैलाता है।

नियम ६९१ (रोमन्थेरोग्गाल-वग्गोलौ ४।४३) नाम धातु रोमन्थयति को ओग्गाल और वग्गोल—ये दो आदेश विकल्प से होते है। रोमन्थयति (ओग्गालइ, वग्गोलइ, रोमन्थइ) चबाई वस्तु को पुनः चबाता है।

नियम ६९२ (प्रकाशेर्णुव्वः ४।४५) प्रकाशयति को णुव्व आदेश विकल्प से होता है। प्रकाशयति (णुव्वइ, पयासेइ) प्रकाशित करता है, चमकाता है।

नियम ६९३ (कम्पेर्विच्छोलः ४।४६) कम्पयति को विच्छोल आदेश विकल्प से होता है। कम्पयति (विच्छोलइ, कम्पेइ) कपाता है।

नियम ६९४ (आरोहेर्वलः ४।४७) आरोहयति को वल आदेश विकल्प से होता है। आरोहयति (वलइ, आरोवेइ, आरोहेइ) ऊपर चढाता है।

नियम ६९५ (रञ्जे रावः ४।४९) णि प्रत्ययान्त रञ्ज् धातु को राव आदेश विकल्प से होता है। रञ्जयति (रावेइ, रञ्जेइ) खुशी करता है।

नियम ६९६ (कमेर्णिहुवः ४।४४) कम् धातु स्वार्थ मे णि प्रत्ययान्त हो तो णिहुव आदेश विकल्प से होता है। कामयते (णिहुवइ, कामेइ)।

नियम ६९७ (दोले रङ्खोलः ४।४८) दुल् धातु स्वार्थ मे णि प्रत्ययान्त हो तो रङ्खोल आदेश विकल्प से होता है। दोलायते (रङ्खोलइ, दोलइ) झूलता है।

प्रयोग वाक्य

गामवासिणो समक्खे का समस्सा अत्थि ? सुसीलो कम्मि दोणमुहे

वसइ ? णयरवासिणो गामम्मि वसिउं न इच्छति । रायहाणीए लोआ पइवरिसं वड्ढति । भारहे केत्तिलाइ महाणयराइ संति ? चोरपल्लीइ चोरा च्चेअ वसति । वरिसाए साहुणो झुपडाइ ठाअंति । किं तुज्झभवणं रायमग्गे अत्थि ? वीहीए सूअरा भमंति । गोमट्टाए केत्तिला जणा निवसंति ? रायहाणीए महरोलीए उवणयरे मज्झ भाआ वसइ । कुड्डल्लीए साहू अत्थि न वा । अहं पट्टणं गमिउं इच्छामि । एगो साहू गुहाए झाणं झाएइ । पासायम्मि राया कहं नत्थि ? अजत्ता रायिंदो णियणव्वम्मि हम्मिअम्मि वसइ ।

धातु प्रयोग

तुमं रत्तिदिवहं कहं सोअसि ? तुज्झ मित्तं तु किं सेहइ ? तुमं किमट्ठं अज्ज सोअसि ? परिवारेण सह चदो राईए सोहइ । तुज्झ लेहं पसंतो सोहइ । गगणे राओ चंदो सोहइ । साहू वत्थूइ न साइज्जइ । सो असुद्धं सिलोगं सारइ । रमेसो सारइ जं तुमए तं कज्जं कयं न वा ? खत्तियो सरणागयं सारक्खइ ।

प्रत्यय प्रयोग

आयरिअतुलसीए तेरापंथधम्मसघे नारीजाइ उत्थघीअ, उल्लालीअ, गुलुगुञ्छीअ, उप्पेलीअ वा । पिआ णियपुत्तं रायहाणिं पट्ठवइ, पट्ठावइ, पेण्डवइ वा । गुरु सीसा धम्मं वोक्कइ, अवुक्कइ, विण्णवइ वा । सो जीवणं धम्मपयारट्ठं अल्लिवइ, चुच्चुप्पइ, पणामइ, ओप्पेइ वा । सो धम्मं अतरेण केवलं जीवणं जावेइ, जवेइ वा । तुमं रत्तीइ लवगा कहं ओम्वालइ, पव्वालइ, पावेइ वा ? ठाणं लभिऊण सो आसणाइं पक्खोडइ, विकोसइ वा । पसुणो सइ (एकबार) भोयणं सगिण्हंति राओ य ओग्गालइ, वग्गोलइ, रोमन्थइ वा । आयरिअतुलसी जेणधम्मं णुव्वइ, पयासेइ वा । अहिणिवेसिणो सासगस्स भय जणा विच्छोलइ, कम्पेइ वा । भिच्चो भारं पव्वयम्मि वलइ, आरोवेइ, आरोहेइ वा । पई पत्ति आभूसणं दाऊण रावेइ, रञ्जेइ वा । विरत्तो न णिहुवइ कामेइ वा । सीला दोलाए रङ्खोलइ, दोलइ वा ।

प्राकृत में अनुवाद करो

आजकल शहरो मे समस्याए बहुत हैं । गाव मे सडक क्यो नही है ? चोरपल्ली मे कोई जाना नही चाहता । गर्मी मे झोपडी ठंडी रहती है । राजधानी मे कई देशो के दूतावास होते है । उसका घर गली मे ही है । सडक पर चलने का सबको अधिकार है । बडे शहरो मे शुद्ध वायु कम मिलती है । इस मार्ग से दूसरा मार्ग भी निकलता है । राजा का महल गाव मे सबसे ऊंचा है । सेठ की हवेली मे कौन रहता है ?

धातु का प्रयोग करो

बच्चा सुख से सोता है । उसे व्यावहारिक ज्ञान सिखाना चाहिए ।

किस प्रदेश के लोग अधिक शोक करते हैं ? बच्चों से घर शोभायमान लगता है। वह पानी से उसके भोजन के स्थान को शुद्ध करता है। गण में साधुओं के बीच आचार्य शोभायमान होते हैं। बच्चा बर्फ का स्वाद लेता है। उसे उच्चारण ठीक करना चाहिए। उसने पुनर्जन्म के संबंध को याद दिलाया। राजा शरण में आए हुए का अच्छी तरह संरक्षण करता है।

णिजन्त धातुओं का प्रयोग करो

प्रधानमंत्री ने अपने भाई की उन्नति की। जैनधर्म के प्रचार के लिए वह समणियों को विदेश प्रस्थान करवाता है। मैं आपकी पुस्तक को आपके हाथों में अर्पण करता हूं। वह संयम से काल यापन करता है। तुम मूट को पानी में अधिक भिजोते हो। क्या तुम आर्द्रवस्त्र को धूप में फैलाते हो ? ऊट खाई वस्तु को रात में फिर चबाता है। आचार्य युवाचार्य को प्रकाश में लाते हैं। शीतकाल में ठंडी हवा मनुष्यों को कंपाती है। मंत्री अपने परिवार वालों को ऊंचा उठाता है। पिता बच्चों को मिठाई देकर खुशी करता है। सावन में कौन झूले में नहीं झूलती है।

प्रश्न

१. नीचे लिखे आदेश किस नियम से और किस धातु को हुए हैं—उत्थघ, पेण्डव, चच्चुप्प, जव, पक्खोड, खिच्छोल, राव।
२. उन्नमयति, विज्ञापयति, प्रस्थापयति, अर्पयति, प्लावयति और रोमन्थयति को क्या-क्या आदेश होता है ?
३. स्वार्थ में णि प्रत्यय किन धातुओं को होता है ?
४. ग्राम, बड़ा कस्बा, शहर, महानगर, राजधानी, व्यापारी नगर, उपनगर, मुहल्ला, सड़क, मार्ग, गली, गुफा, कुटिया, झोपड़ी—इन शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ।
५. से, सेअ, सेह, सोअ, सोभ, सोह, साउज्ज, सार, सार, सारक्ख—इन धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो।

९५ भावकर्म

शब्द संग्रह (मास वर्ग)

श्रावण—सावणं
भाद्रव—भद्दवयं
आसोज—आसोओ
कार्तिक—कत्तिओ
मृगसर—मग्गसिरो
पोष—पोसो
माह—माहो
फाल्गुन—फग्गुणो
चैत्र—चइत्तो
वैशाख—वइसाहो
जेठ—जेट्ठो
आषाढ—आसाढो

धातु संग्रह

सक—समर्थ करना
संखा—गिनती करना
संकम—गति करना, जाना
संगच्छ—स्वीकार करना
संकल—जोडना, संकलन करना
संघट्ट—स्पर्श करना
संकेअ—संकेत करना
संघस—संघर्ष करना
संकोअ—संकुचित करना
संचाय—समर्थ होना

भावकर्म

भाव का अर्थ है क्रिया। जहा प्रत्यय केवल क्रिया अर्थ मे ही होता है उसे भाववाच्य कहते हैं। जहा धातु से प्रत्यय कर्म मे होता है उसे कर्मवाच्य कहते हैं। भाव मे कर्म नही होता। जहा कर्म होता है उसे भाव नही कह सकते। दोनो मे से एक रहता है, दोनो साथ नही रह सकते।

भाव का प्रयोग अकर्मक धातु से होता है। रोना, पैदा होना, सोना, लज्जित होना आदि उनके अर्थ वाली धातुए अकर्मक होती हैं। खाना, पीना, देखना, करना आदि अर्थों मे सकर्मक धातु का प्रयोग होता है। इन सकर्मक धातुओ मे विवक्षा से कर्म का प्रयोग न करने से अकर्मक रह जाती हैं। प्राकृत मे भाव-कर्म मे दो प्रत्यय आते हैं—ईअ (ईय) और इज्ज। इन प्रत्ययो मे से कोई एक प्रत्यय धातु के लगाने से भावकर्म की धातु के रूप बन जाते हैं। इन प्रत्ययो का प्रयोग वर्तमानकाल, विध्यर्थ, आज्ञा और ह्यस्तन भूतकाल मे ही होता है। भविष्यत्काल और क्रियातिपत्ति मे भावकर्म के प्रत्ययो के रूप कर्तृवाच्य की तरह ही चलते है।

नियम ६९८ (ईअ-इज्जौ क्यस्य ३।१६०) संस्कृत मे भावकर्म मे क्य प्रत्यय होता है। प्राकृत मे क्य प्रत्यय को ईअ और इज्ज ये दो आदेश होते

हैं। हस्+ईअ = हसीअइ। हस+इज्ज = हसिज्जइ। हो+ईअ = होईअइ। हो+इज्ज = होइज्जइ। पढ+ईअ = पढीअइ। पढ+इज्ज = पढिज्जइ।

नियम ६९९ (दृशि-वचेर्डीस-डुच्चं ३।१६१) दृश् और वच् धातु में क्य प्रत्यय को क्रमश: डीस और डुच्च प्रत्यय होते हैं। दृश्+डीस = दीसइ (दृश्यते), वच्+डुच्च = वुच्चइ (उच्यते)।

नियम ७०० (म्मश्चेः ४।२४३) भाव कर्म में चि धातु के अन्त में म्म विकल्प से होता है, उसके योग में क्य का लुक् हो जाता है। चिम्मइ (चीयते) पक्ष में।

नियम ७०१ (न वा कर्मभावे व्व: क्यस्य च लुक् ४।२४२) चि, जि, श्रु, हु, स्तु, लू, पू और धून्—इन आठ धातुओं के अंत में भाव कर्म में व्व का आगम विकल्प से होता है। उसके योग में क्य का लुक् हो जाता है। चीयते (चिव्वइ, चिणिज्जइ)। जीयते (जिव्वइ, जिणिज्जइ)। श्रूयते (सुव्वइ, सुणिज्जइ)। हूयते (हुव्वइ, हुणिज्जइ)। स्तूयते (थुव्वइ, थुणिज्जइ) लूयते (लुव्वइ, लुणिज्जइ)। पूयते (पुव्वइ, पुणिज्जइ)। धूयते (धुव्वइ, धुणिज्जइ)।

नियम ७०२ (हन्खनोन्त्यस्य ४।२४४) हन् और खन् धातु के अंत को भाव कर्म में म्म प्रत्यय विकल्प से होता है। उसके योग में क्य प्रत्यय का लुक् होता है। हन्यते (हम्मइ, हणिज्जइ)। खन्यते (खम्मइ, खणिज्जइ)।

नियम ७०३ (ब्भो दुह-लिह-वह-रुधामुच्चातः ४।२४५) दुह्, लिह्, वह् और रुध् धातु को 'ब्भ' प्रत्यय विकल्प से होता है और क्य प्रत्यय का लुक् होता है। दुह्यते (दुब्भइ, दुहिज्जइ)। लिह्यते (लिब्भइ, लिहिज्जइ)। उह्यते (वुब्भइ, वहिज्जइ)। रुध्यते (रुब्भइ, रुन्धिज्जइ)।

नियम ७०४ (समनूपाद्रुधेः ४।२४८) स, अनु, उप उपसर्ग पूर्वक रुध् धातु को भाव कर्म में ज्झ विकल्प से होता है और क्य प्रत्यय का लुक् होता है। संरुध्यते (संरुज्झइ, संरुन्धिज्जइ)। अनुरुध्यते (अणुरुज्झइ, अणुरुन्धिज्जइ)। उपरुध्यते (उवरुज्झइ, उवरुन्धिज्जइ)।

नियम ७०५ (दहो ज्झः ४।२४६) दह् धातु को भाव कर्म में ज्झ प्रत्यय विकल्प से होता है। उसके योग में क्य प्रत्यय का लुक् होता है। दह्यते (डज्झइ, डहिज्जइ)।

नियम ७०६ (लुगावी क्त भावकर्मसु ३।१५२) भावकर्मविहित क्त प्रत्यय परे हो तो णि (णिजन्त) के स्थान पर लुक् और आवि ये दो आदेश होते हैं। कारिअ, कराविअ। हासिअ, हसाविअ।

प्रयोग वाक्य

जइणधम्माणुसारेण पुव्व वरिसस्स आरंभो सावण सुक्का पडिवयाए

होहीअ। भद्दवये-जेणाण सवच्छरी महापव्व भवइ। आसोयम्मि दसहरापव्व होइ। दीवावली कत्तिअम्मि भवइ। मग्गसिरंम्मि सीअ वड्ढइ। पोसो मलमासो कहिज्जइ। तेरापथधम्मसघस्स पमुहपव्व मेरामहोच्छव माहम्मि हवइ। भारहे पाओ सव्वत्थ सव्वे जणा फग्गुणम्मि होलिं खेलति। चइत्तम्मि सरीरस्स रत्त परिअट्टण भवइ। अक्खयतइया वइसाहमासे भवइ। जेट्ठे आइच्चस्स आयवो जणा तावइ। आसाढो वरिसस्स अवसाणमासो अत्थि।

धातु-प्रयोग

जो सकेइ सो विणस्सइ। मुणी सकमेण न सकमेज्ज। असीई पच सट्ठी य सकलेहि। रमेसो तं किं सकेइ? तुम त पण्हेण कह संकोअइ? तुम घराइ सखासि। तुज्झ कहण ह सगच्छामि। पुरिसा साहुणिं न संघट्टति। सो अग्गिणो अट्ठ कट्ठाइ सघसइ। अह त कज्ज करिउ सचाएमि।

प्रत्यय प्रयोग

तुमए कहं हसिज्जइ, हसीअइ वा। सुसीलाए पत्ताइ पढिज्जइ। किं तुमए उज्जाण दीसइ? तिणा किं वुच्चइ? तुमए उज्जाणे किं चिम्मइ, चिव्वइ, चिणिज्जइ वा। मुणिणा इदियाइं जिव्वति, जिणिज्जति वा। किं तुमए सम्म न सुणिज्जइ? मए चदपभु थुव्वइ, थुणिज्जइ। जणेहिं साहू सव्वत्थ पुव्वइ, पुणिज्जइ वा। विमलाए किं हुव्विहिइ, हुणिज्जिस्सइ वा? तिणा रुक्खाणि कह लुव्वति, लुणिज्जति वा। साहुहिं कम्माइं धुव्वति, धुणिज्जति वा। सजमिणा के वि जीवा न हम्मति, हणिज्जति वा? अज्ज तुमए भूमी कह खम्मइ, खणिज्जइ वा। मए गावी दुब्भइ, दुहिज्जइ वा। मए भारो न वुब्भिहिइ, वहिज्जिहिइ वा। तस्स मग्गो तुमए कह रुब्भइ, रुन्धिज्जइ वा? इरिसाए हिअय डज्झइ, डहिज्जइ वा।

प्राकृत में अनुवाद करो

श्रावण मे वर्षा होती है। भाद्रव मे जैन साधु केशलुचन करते है। साधक आसोज की नवरात्रि मे जाप करते है। कार्तिक मे बहिने गंगा स्नान करती है। चतुर्मास के बाद मृगसर मे साधु विहार करते है। पोष मे ठड अधिक पडती है। माघ मे विवाह अधिक होते हैं। फाल्गुन मे हवाए तेज चलती है। कुछ प्रदेशो मे चैत्र मास मे वर्ष का प्रारंभ होता है। वैशाख और जेठ मास मे सूर्य का ताप असह्य होता है। आषाढ की पूर्णिमा के दिन तेरापथ धर्म सघ की स्थापना हुई थी।

धातु का प्रयोग करो

धर्म मे श्रद्धा करो, सशय मत करो। वह उससे बात करने के लिए राजधानी जाता है। इस गाव के साधार्मिक भाइयो की गिनती करो। वह

मौन में संकेत करता है। मुनि अपनी इंद्रियों को संकुचित करता है। वह पुत्री के विवाह के लिए धन को जोड़ता है। सीमा अपने पति की बात को स्वीकार नहीं करती है। साधु सचित्त का स्पर्श नहीं करते हैं। शांति चाहने वालों को किसी से संघर्ष नहीं करना चाहिए। क्या तुम इन कार्य को करने के लिए समर्थ हो ?

प्रत्यय का प्रयोग करो

वह क्यों हसता है ? तुम कौन-सी पुस्तक पढ़ते हो ? वह विद्वान् बनेगा। वह पांच मिनट तक आकाश को देखता है। तुम किसको कहते हो ? वह अवगुणों को चुनता है। विमला मन को जीतती है। सरोज सबकी बात सुनती है। तुम किस तीर्थंकर की स्तुति करते हो ? आजकल धन की पूजा होती है। क्या भगवान का साक्षात्कार होता है ? वह वृक्ष को क्यों काटता है ? वह साप को मारता है। वे इन दिनों से खान को खोदते हैं। मेरी बहन भैंस को दुहती है। तुम किसका भार उठाते हो ? हमारी प्रगति को कौन रोकता है ?

प्रश्न

१. भाव कर्म एक है या दो ? विस्तार से समझाओ ?
२. भाव कर्म के रूप बनाने के लिए किन प्रत्ययों का प्रयोग करना होता है ?
३. नीचे लिखे रूप किन-किन धातुओं के हैं—दीसइ, वुच्चइ, चिम्मइ, जिव्वइ, लुव्वइ, वुब्भइ, दुब्भइ, पुव्वइ, थुव्वइ।
४. श्रावण, भाद्रव, आसोज, कार्तिक, मृगसर, पोष, माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, जेठ और आषाढ—इन मासों के लिए प्राकृत के शब्द बताओ ?
५. सक, सकम, सकल, सकेअ, सकोअ, सग्गा, संगच्छ, सघट्ट, सघस और सचाय धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो।
६. केअगो, पाडलो, मालई, टगरो, नाट्टिमहु, कप्पूरो, उवणयरं, कुद्दुल्ली, कफाटो—इन शब्दों को वाक्य में प्रयोग करो तथा हिन्दी में वाक्य बनाओ।

९६ भावकर्म (२)

शब्द संग्रह [ग्रह-नक्षत्र वर्ग]

सूर्य—आइच्चो, दिणअरो
चंद्रमा—चंदो, हिमयरो
मंगल—अगारयो
बुध—बुहो
बृहस्पति—वहस्सई (पु)
शुक्र—सुक्को
शनि—सणी (पु)
राहु—राहू (पुं)
केतु—केऊ (पु)
नक्षत्र—णक्खत्त
तारा—तारा
ग्रह—गहो

धातु संग्रह

संचिण—संग्रह करना, इकट्ठा करना
संझाअ—ध्यान करना, चिंतन करना
संचुण्ण—खण्ड-खण्ड करना, चूर-चूर करना
संणज्झ—कवच धारण करना
संतर—तैरना
संजम—निवृत्त होना
संताव—हैरान करना, तपाना
संजय—सम्यक् प्रयत्न करना
संथर—बिछौना करना
संजोअ—संबद्ध करना, संयुक्त करना

नियम ७०७ (बन्धो न्ध ४।२४७) बन्ध् धातु के न्ध को भावकर्म मे ंझ विकल्प से आदेश होता है, उसके योग मे क्य प्रत्यय का लुक् होता है। बध्यते (बज्झइ, बन्धिज्जइ)।

नियम ७०८ (गमादीनां द्वित्वम् ४।२४९) गम्, हस् भण्, छुप्, लभ्, कथ् और भुज् धातुओ के अन्त्यवर्ण को भावकर्म मे द्वित्व विकल्प से होता है। उसके योग मे क्य प्रत्यय का लुक् होता है।

गम्यते (गम्मइ, गमिज्जइ)। हस्यते (हस्सइ, हसिज्जइ)।
भण्यते (भण्णइ, भणिज्जइ)। छुप्यते (छुप्पइ, छुविज्जइ)।
रुद्यते (रुव्वइ, रुविज्जइ)। लभ्यते (लब्भइ, लहिज्जइ)।
कथ्यते (कत्थइ, कहिज्जइ)। भुज्यते (भुज्जइ, भुञ्जिज्जइ)

नियम ७०९ (हृ-कृ-तृ-ज्रामीरः ४।२५०) हृ, कृ, तृ और जृ धातुओ के अन्त्य को ईर आदेश विकल्प से होता है, क्य का लुक् होता है।

ह्रियते (हीरइ हरिज्जइ)। क्रियते (कीरइ, करिज्जइ)।
तीर्यते (तीरइ, तरिज्जइ)। जीर्यते (जीरइ, जरिज्जइ)।

नियम ७१० (अर्जे विढप्प. ४।२५१) अर्ज् धातु को विढप्प आदेश विकल्प से होता है, क्य का लुक् होता है। अर्ज्यते (विढविज्जइ, अज्जिज्जइ)

नियम ७११ (ज्ञो णव्व-णज्जौ ४।२५२) जानाति को कर्मभाव मे णव्व और णज्ज—ये दो विकल्प से आदेश होते हैं। उसके योग मे क्य का लुक् होता है। ज्ञायते (णव्वइ, णज्जइ, जाणिज्जइ, मुणिज्जइ)

नियम ७१२ (व्याहृगे र्वाहिप्पः ४।२५३) व्याहरति को भावकर्म मे वाहिप्प आदेश विकल्प से होता है। उसके योग मे क्य का लुक् होता है। व्याह्रियते (वाहिप्पइ, वाहरिज्जइ)

नियम ७१३ (आरभे राढप्पः ४।२५४) आरभते को भावकर्म मे आढप्प आदेश विकल्प से होता है, उसके योग मे क्य का लुक् होता है। आरभ्यते (आढप्पइ, आढवीअइ)

नियम ७१४ (स्निह-सिचोः सिप्पः ४।२५५) स्निह् और सिच् धातु को भावकर्म मे सिप्प आदेश होता है। उसके योग मे क्य का लुक् होता है। स्निह्यते (सिप्पइ) प्रीति करना। सिच्यते (सिप्पइ)

नियम ७१५ (ग्रहे र्घेप्पः ४।२५६) ग्रह् धातु को भावकर्म मे घेप्प आदेश विकल्प से होता है। उसके योग मे क्य का लुक् होता है। गृह्यते (घेप्पइ, गिण्हिज्जइ)

नियम ७१६ (स्पृशेश्छिप्पः ४।२५७) स्पृश् धातु को भावकर्म मे छिप्प आदेश विकल्प से होता है। उसके योग मे क्य का लुक् होता है। स्पृश्यते (छिप्पइ, छिविज्जइ)

नियम ७१७ (क्यङो र्यं लुक् ३।१३८) नाम धातु से होने वाले क्यङ्, क्यज्, क्यङ्ष् प्रत्ययो के य का लुक् होता है। गरुआइ, गरुआअइ (अगुरु-र्गुरुर्भवति, गुरुरिवाचरति वा इत्यर्थः)। दमदमशब्दंकरोति (दमदमाइ, दमदमाअइ)

प्रयोग वाक्य

सोहव्व सत्तिमतो सूरगहो अत्थि। चद चइऊण सव्वे गहा दिणअरस्स चोद्दहअंसाओ अतरो अत्थंगया भवंति। मंगलगहस्स उवममणट्ठं पवाल परिहियव्वं। बुधगहो वावर कारवेइ। वहस्सइस्स रंगो पीओ भवइ। सुक्कस्स रंगो सुक्को होइ। सणी सणिअ चलइ। राहू चंदं गसइ। केऊ कूरगहो अत्थि। पुस्सणक्खत्त सव्वेसु कज्जेसु सुहं भवइ। पत्तेयणक्खत्तस्स भिण्णाओ ताराओ संति।

धातु प्रयोग

विमलाए जराइ घण सचिणइ। महिंदो मोअग सचुण्णइ। संजमी सावज्जजोगाओ सजमइ। सामाइयम्मि सावगो संजयइ। सो समासे पयाइ

सजोअइ-। सुहमुणी-अहियसमय-सज्झावइ-। खत्तियो-जुज्झे - सणज्झइ । - गंगानई को संतरिस्सइ-? सेट्ठी- भिक्खारिं-कह-संतावइ-? राओ पढमपहरस्स पच्छा अह-सयरामि-।

प्रत्यय-प्रयोग -

अट्ठदससु-पावेसु कम्मेहिं वज्झइ, वन्धिज्जइ वा-। तुमए कत्थ गम्मइ, गम्मिज्जइ वा ? तुम्हेहिं किं भण्णइ, भणिज्जइ वा ? तस्स माआइ को रुव्वइ, रुविज्जइ वा ? सुमणाइ सच्च कत्थइ, कहिज्जइ वा। सुवण्णवावारे तेण किं लब्भइ, लहिज्जइ वा ? आवणे तुमए किं भुज्जइ, भुज्जिज्जइ वा ? तुज्झ सरीरं तिणा कह छुप्पइ, छुविज्जइ वा ? तेण सिसुहत्थाओ पत्थर हीरइ, हरिज्जइ वा। सुरेसेण नई तीरइ, तरिज्जइ वा। सव्वेहिं वत्थूहिं जीरइ, जरिज्जइ वा। मए किमवि न कीरइ, करिज्जइ वा। तेण दिवहे किं विढविज्जइ अज्जिज्जइ, वा ? तुमए अहं णव्वामि, णज्जामि, जाणिज्जामि; मुणिज्जामि वा। रमेसेण गारुडो वाहिप्पइ, वाहरिज्जइ वा। अज्ज तुमए किं कज्जं आढप्पइ, आढवीअइ वा ? तेण-तुम सिप्पइ। गिहसामिणा णियउज्जाण सिप्पइ। तस्स गिहाओ तुमए किं घेप्पइ; गिण्हिज्जइ वा ? तेण तुज्झ सरीर किमट्ठ छिप्पइ, छिविज्जइ वा ?

प्राकृत में अनुवाद करो

सूर्यग्रह का दोष मिटाने के लिए मत्र का जाप करो। चादी की अगूठी पहनने से चंद्रग्रह का दोप कम होता है। चन्द्रमा का सवंध मन से है। मंगल का सबन्ध शरीर के रक्त से है। बुध ग्रह के कारण मनुष्य ज्योतिष सीखता है। बृहस्पति ग्रह अध्यात्म की ओर प्रवृत्त करता है। गोचर (गोअर) ग्रहो मे शुक्र अस्त हो तव दीक्षा देनी चाहिए। शनि मनुष्य को घर से सडक पर खडा कर देता है। राहु की गति धीमी होती है। बारहवें घर मे बैठा केतु अच्छा फल देता है। वह स्वातिनक्षत्र मे गाव मे प्रवेश करता है। दिन मे तारा कौन दिखाता है ? चद्रप्रज्ञप्ति सूत्र मे ८४ ग्रहो के नाम है।

धातु का प्रयोग करो

वह किसके अवगुणो को सग्रह करता है ? महेश ने घडे के टुकडे-टुकडे कर दिए। क्या तुम भोजन से निवृत्त होते हो ? वह ईर्यासमिति (इरियासमिइ) मे सम्यक् प्रयत्न करता है। तुम अपने विवाद मे मुझे क्यो सवद्ध करते हो ? वह ध्यान क्यो नहीं करता है ? आज तुम कवच धारण क्यो करते हो ? यमुना नदी को वह भुजाओ से तैरेगा। पढाने के लिए तुम विद्यार्थियो को क्यों हैरान करते हो ? वह किसके लिए दिन मे बिछौना करता है ?

प्रत्यय प्रयोग करो

वह तुमको प्रेम की रज्जु से बाधता है। क्या तुम आज अपने देश को

जा रहे हो । वह कौन सा आगम पढता है ? देखो, रात को कौन और क्यो रोता है ? माता बच्चो को कहानी कहती है । मुझे तुम्हारा स्नेह प्राप्त होता है । मैं मिठाई नही खाता हू । साधु अग्नि को नही छूते है । उसकी निंदा करने से तुम क्या प्राप्त करते हो ? जो हिंसा करता है वह जीवों के प्राण छीनता है । वह भवसागर को तैरता है । अब तुम क्या करते हो ? समय के साथ वस्त्र जीर्ण होते हैं । धर्म के साथ तुम पुण्य का भी अर्जन करते हो । मैं तुमको नही जानता । वह तुम्हारे से क्यो नही बोलता है ? मैं आज से साधना प्रारंभ करता हूं । पहले सोचकर जो प्रीति करता है वह दुःख नहीं पाता । वह अपने खेत को क्यों नही सीचता है ? वह प्रकृति से शिक्षा ग्रहण करता है । क्या वह आकाश को छूता है ?

प्रश्न

१ सूर्य, चंद्र, मगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु, ग्रह, नक्षत्र और तारा के लिए प्राकृत शब्द बताओ ।

२. संचिण, संचुण्ण, संजम, संजय, संजोअ, सझाअ, सणज्झ, संतर, संताव और सथर—इन धातुओ के अर्थ बताओ और वाक्य मे प्रयोग करो ।

९७ कृत्यप्रत्यय

शब्द संग्रह (यंत्र वर्ग)

घडी यन्त्र (घडीजंत)
टाइपराइटर—लेहणजंतं
टेलीफोन—वत्ताजतं
थर्मामीटर—तावभावअ
प्रेस—मुद्दणालयो
रेडियो—झुणिखेवअजंतं
लाउडस्पीकर—सुइजंतं
दूरवीक्षण—दूरविक्खणजंतं
बिजली का पंखा—संपावीजणं
साउण्ड बॉक्स—झुणिमंजूसा

धातु संग्रह

आलुप—हरण करना
आलोअ—देखना
आलोअ—आलोचना करना, गुरु को अपना अपराध कहना
आलोड—हिलोरना, मंथन करना
आव (आ+या)—आना
आवआस—आलिंगन करना
आवज्ज—प्राप्त करना
आवट्ट—चक्र की तरह घूमना,
आवड—आना, आगमन करना
आवत्त—आना
आवर—ढांकना

कृत्यप्रत्यय

जहा अंत मे चाहिए का प्रयोग आए अथवा यह करने योग्य हैं, खाने योग्य है या करना है, खाना है, जाना है—इत्यादि स्थानो पर कृत्य प्रत्ययो का प्रयोग होता है। इन्हें विध्यर्थ कृदन्त कहते हैं। संस्कृत मे कृत्य प्रत्यय पाच हैं—तव्य, अनीय, य, क्यप्, घ्यण्। प्राकृत मे धातु से तव्व, अणीअ और अणिज्ज प्रत्यय लगाने से विध्यर्थ कृदन्त के रूप बनते हैं। य, क्यप् और घ्यण् प्रत्ययो मे य शेष रहता है। संस्कृत के य प्रत्यय को प्राकृत मे 'ज्ज' हो जाता है। पूर्व नियम (९५) के अनुसार तव्व प्रत्यय के पूर्ववर्ती अ को इ और ए आदेश होता है।

तव्व प्रत्यय—

हस—हसितव्यम् (हसितव्वं, हसेतव्वं, हसिअव्वं, हसेअव्वं) हंसना चाहिए
हो—भवितव्यम् (होइतव्वं, होएतव्वं, होइअव्वं, होएअव्व) होना चाहिए

अणीअ प्रत्यय—

हस—हसनीयम् (हसणीअं) हंसना चाहिए
कर—करणीअं (करणीयम्) करना चाहिए

दूरविक्खणजत कस्स पासे अत्थि ? सो सपावीजणं अंतरेण अत्थ ठाउं न समत्थो अत्थि। जइणविस्सभारईए अगणे एगो मुद्दणालयो अत्थि। झुणिमंजूस अतरेण सुइजंतस्स किं उवओगित्त ?

धातु प्रयोग

पुढविजीवाण पाणा को लुपइ ? सो अट्ठ तत्थ गतव्व जत्थ कोवि न आलोएइ। आयरियाणं पासे सुद्धभावेण आलोएयव्व। जेणसुत्ताणि के के साहुणो आलोडति ? अत्थ अज्ज को आविस्ससि ? भाआ भाअर आवआसइ। विवादेण तुम किं आवज्जिस्ससि ? णमोक्कारमहामंतस्स सो अणेगहुत्तो आवट्टइ। तुम कया अमुम्मि णयरे आवडिहिसि, आवत्तिहिसि वा ? सो णियखलण कह आवरइ ?

प्रत्यय प्रयोग

केण सद्धि कयावि अड न हसिअव्व, हसेअव्वं वा। तुमए विणीओ होइतव्वो, होएतव्वो वा। तस्स गिहे न गमणिज्ज। पइदिण सज्झाय करणिज्ज। तुमए मोरउला कोवि न हसावणीओ, हसावणिज्जो वा। मत्ताए अहियं न भोत्तव्व। सया सच्च वोत्तव्व। परवत्थु आण अन्तरेण न घेत्तव्व। गुत्तवत्ता सया गुज्झा।

प्राकृत में अनुवाद करो

भारत का कौन सा घडी यन्त्र प्रसिद्ध है ? टाइपराइटर का मूल्य क्या है ? टेलीफोन पर मैं तुमसे बात करूंगा। क्या थर्मामीटर सही ज्वर वताता है ? रेडियो सुनने के लिए यहा कितने लोग आए हैं ? लाउडस्पीकर से दूर वैठे लोग वक्ता का भाषण सुनते हैं। वह दूरवीक्षण से चंद्रमा को देखता है। ग्रीष्म मे विजली का पखा गर्म हवा देता है। इस प्रेस का मालिक कौन है ? साउण्डवॉक्स किसके पास है ?

धातु का प्रयोग करो

किसी के अधिकार को हरण नही करना चाहिए। वह केवल तुम्हारे दोप ही देखता है। साधु आचार्य के पास प्रतिदिन आलोचना करते हैं। हमारे घर मे माता प्रात दधि का मथन करती है। तुम्हारी इच्छा के विना तुम्हारे घर कोई भी नही आएगा। वडे साधु छोटे साधु का आलिंगन करते हैं। वह गुरु के सान्निध्य मे वैठकर शिक्षा प्राप्त करता है। तपस्विनी साध्वी कनकावली तप की कौनसी आवृत्ति करती है ? आचार्य तुम्हारे गुणो को क्यो ढाकते हैं ? तुम्हारे व्यवहार के कारण तुम्हारे साथ कोई भी नही आएगा।

प्रत्यय का प्रयोग करो

तुम्हे सदा पाच मिनट हंसना चाहिए। उसे वडो के साथ नम्र होना

चाहिए। गलत काम कभी नही करना चाहिए। तुम्हे उसके साथ जाना चाहिए। यह काम तुम्हे नही करना चाहिए। रात मे नही खाना चाहिए। उसे अपने भाग्य पर रोना नही चाहिए। तुम्हे धूम्रपान छोड देना चाहिए। उसे कुछ न कुछ नियम अवश्य ग्रहण करना चाहिए। साधक को अपनी उपलब्धि छिपानी चाहिए, किसी को कहनी नहीं चाहिए। किसी के अवगुण उसे ही कहना चाहिए दूसरो को नही।

प्रश्न

१. संस्कृत मे कृत्यप्रत्यय कितने होते हैं। प्राकृत मे उनके लिए कितने प्रत्यय है। शेष प्रत्ययो के लिए क्या नियम काम मे लिया जाता है? उदाहरण सहित समझाओ।
२. कृत्य प्रत्ययो का प्रयोग किस अर्थ मे होता है?
३ घडीयंत्र, टाइपराइटर, टेलीफोन, थर्मामीटर, रेडियो, लाउडस्पीकर, प्रेस, दूरवीक्षण और बिजली का पखा—इन शब्दो के लिए प्राकृत शब्द बताओ।
४ आलुप, आलोअ, आलोम, आलोड, आय, आवजाम, आवज्ज, आवट्ट, आवड, आवत्त और आवर धातुओ के अर्थ बताओ।

शब्द संग्रह (स्फुट)

विरह—अवहायो
असमर्थ—असंथड (वि)
तिरस्कार—अवहेरी
दुर्भिक्ष—दुब्भिक्ख
मैथुन—अवहिट्ठं (दे०)
निरर्थक—अट्टमट्ट (वि) (दे०)
पुराना मंदिर—अहिहरं (दे०)
आश्चर्य—अब्भुय
चमकदार, प्रकाशित—अब्भुत्तिअ (वि)
दोष का झूठा आरोप—अलग्ग (दे०)
अनवसर—अवरिक्क (वि)

धातु संग्रह

आवास—वास करना, रहना
आवा—पीना
आविअ—पीना
आविंध—बीधना
आविहव—प्रगट होना
आवीड—पीडना
आवेस—भूताविष्ट करना
आस—बैठना
आसंघ—संभावना करना
आसाअ—स्वाद लेना, चखना

क्त प्रत्यय

क्त प्रत्यय का प्रयोग भूतकाल के अर्थ मे होता है। यह कार्य की समाप्ति बताता है। किया, गया, खाया, पीया आदि। क्त प्रत्यय सब धातुओ से होता है। सकर्मक धातु से कर्म मे और अकर्मक धातु से भाव तथा कर्ता मे होता है। भाव मे प्रत्यय होने से धातु के रूपों मे नपुंसक लिंग और एक वचन होता है। कर्म मे प्रत्यय होने से कर्म के अनुसार धातु (क्रिया) के रूप तीनो लिंगो मे होते है। कर्ता मे प्रत्यय होने से कर्ता के अनुसार धातु के रूप तीनो लिंगो मे होते हैं। क्त प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत मे त और अ प्रत्यय होता है।

नियम ७१८ (क्ते ३।१५६) क्त प्रत्यय परे होने पर पूर्ववर्ती अ को इ हो जाता है। गम्—गत. (गमिओ) गया। हस्—हसित. (हसिओ) हंसा। चल्—चलित. (चलिओ) चला। पठ्—पठित. (पढिओ) पढा।

प्रेरक (ण्यिन्नन्त) में क्त प्रत्यय—

कर—कारित (कारिओ कराविओ) करवाया हुआ।

हस्—हासित (हासिओ, हसाविओ) हसाया हुआ।

भाव में क्त प्रत्यय के रूप—

गतम् (गमिअ, गमित) गया हुआ।
हसित (हसिअं, हसित) हंसा हुआ।
कर्म में क्त प्रत्यय के रूप—
पढिआ विज्जा (पठिता विद्या)
गमिओ गामो (गत ग्राम)
भणिय नाण (भणित ज्ञान)
संस्कृत शब्दों से बने प्राकृत के क्त प्रत्यय के रूप—

गय (गतम्) गया हुआ। नग्नम् (नत्त) नगा हुआ। मतम् (मय) माना हुआ। दृष्टम् (दट्ठं, दिट्ठ) देखा हुआ। कृतम् (कड) किया हुआ। कृतम् (कयं) किया हुआ। हृतम् (हडं) हरण किया हुआ। मृष्टम् (मट्ठ) शुद्ध किया हुआ। मृतम् (मड) मरा हुआ। म्लानम् (मिलाण) कुम्हलाया हुआ। जितम् (जिअं) जीता हुआ। आख्यातम् (अक्खाय) कहा हुआ। निहितम् (निहियं) स्थापित किया हुआ। संस्कृतम् (सक्कयं) संस्कृत। आज्ञप्तम् (आणत्त) आज्ञा किया हुआ। विनष्टम् (विनट्ठ) विनष्ट। सत्कृतम् (सक्कय) सत्कृत किया हुआ। हतम् (हय) मरा हुआ। आक्रुष्टम् (आकुट्ठ) आक्रोश किया हुआ। जातम् (जाय) पैदा हुआ। प्रणष्टम् (पणट्ठं) नाश। ग्लानम् (गिलाण) ग्लान हुआ। प्रस्थापितम् (पट्ठविअ) प्रस्थापित किया हुआ। स्थित (ठिअं) स्थित। पिहितम् (पिहिअ) ढका हुआ। प्रज्ञप्तम् (पण्णत्त) कहा हुआ। प्रज्ञपितम् (पण्णविअं) प्रज्ञापित किया हुआ। विशिष्टम् (विसिट्ठं) विशेषयुक्त। स्मृतम् (सुअ) स्मरण किया हुआ। श्रुतम् (सुय) सुना हुआ। संसृष्टम् (संसट्ठ) समर्ग युक्त। घृष्टम् (घट्ठ) घिसा हुआ।

नियम ९१६ (क्तेनाप्फुण्णादयः ४।२५८) क्त प्रत्यय सहित आक्रम आदि धातुओं के स्थान में अप्फुण्ण आदि शब्द निपात हैं। आक्रान्त (अप्फुण्णो)। उत्कृष्टम् (उक्कोसं)। स्पृष्टम् (फुड)। अतिक्रान्तः (वोलीणो)। विकसित (वोसट्टो)। निपतित (निसुट्टो)। रुग्ण (लुग्गो)। नष्टः (ल्हिक्को)। प्रमृष्टः, प्रमुषितोवा (पम्हुट्ठो)। अर्जितम् (विढत्त)। स्पृष्टम् (छित्तं)। स्थापितम् (निमिअ)। आस्वादितम् (चक्खिअ)। लूनम् (लुअ)। त्यक्तम् (जढं)। क्षिप्तम् (झोसिअ)। उद्वृत्तम् (निच्छूढ)। पर्यस्तम् (पल्हत्थं, पल्लोट्ट)। हेषितम् (हीसमण)।

प्रयोग वाक्य

सो तुज्झ विरहं सहिउ असमत्थो अत्थि। केसिं वि अवहेरी न कायव्वा। दुब्भिक्खम्मि अन्न दुलह (दुर्लभ) भवइ। साहुणो अवहिट्ठं न इच्छइ। अट्टमट्टाए वत्ताए समयो न पूरिअव्वो। गामम्मि अहिहर केण णिम्मियं अत्थि? संसारे केत्तिलाइं अब्भुयाइं सन्ति? अब्भुत्तिअ वत्थं मज्झ न रोएइ। तस्स अवरिं किं अलग्ग अत्थि? महापुरिसेण सह अवरिक्कणिवेसणं न कायव्वं।

धातुःप्रयोग

अहं रायहाणीए आवासामि। घरसामी रत्तीए दुद्ध आवाइ। भसलो पुप्फाण रस आविअइ। रामस्स सराइ लक्ख आविंधइ। साहूणाए णिम्मल-भावेण किं नाणं आविहवइ? खेत्तसामी खेत्ते उक्खु आवीढइ। तस्स भज्जाए मूओ (मूत) आवेसइ। गिम्हकाले रुक्खछायाए अह आसामि। अहं आसधामि तुम साहुत्त अगीकरिस्ससि। सो पत्तेय वत्थु आसाएइ।

प्रत्यय प्रयोग

को मुणी विएसे गओ? लोएसेण आयारसुत्त पढिअ। सावगेण साहुट्ठाण गय। मए जोइसविज्जा पढिआ। रिसभेण दसवेयालिय सुत्त भणियं। तुमए तस्स माला कह हुडा? केण पुण्णरूवेण मणो जिओ। महिंदेण न कोवि आकुट्ठो। तुमए कत्थ जाअ? भगवया महावीरेण किं अक्खायं अत्थि अमुम्मि विसये। विमलो मट्ठ जल न पिवइ। कि एअ नीर तत्तं? अत्थ मग्गे केण दुद्धपत्त निहिय? किं तुमए चदलोअ दिट्ठ? सीहेण मिग्गो अप्फुण्णो। तस्स णाण फुड अत्थि। अज्ज भोयणस्स सव्व वत्थु केण जढ। तेण मट्ठ 'जीवणं न चक्खिअ।

प्राकृत में अनुवाद करो

विरह को सहन करने वाला साधक होता है। वह आगम के शोध का कार्य करने मे असमर्थ है। उसने तुम्हारा तिरस्कार क्व किया था? दुर्भिक्ष मे मनुष्य धैर्य (धिज्ज) खो देते हैं। उसे मैथुन से विरति हो गई है। वह निरर्थक कार्यो मे धन देता है। वह पुराने मदिर को नया बनाता है। तुम्हारा यहा आना मुझे आश्चर्य लगता है। सूर्य के प्रकाश से प्रत्येक वस्तु प्रकाशित हो जाती है। उसने तुम्हारे पर आरोप क्यो लगाया? जो अनवसर मे बात करता है, वह सफल नही होता।

धातु का प्रयोग करो

पक्षी रात मे वृक्षो पर वास करते हैं। प्यासे पशु तालाब मे पानी पीते हैं। पपीहा वर्षा की बूदो को पीता है। जगल मे शिकारी (लुद्धो) ने हरिण को बीधा। किस साधु को अवधिज्ञान प्रगट हुआ है? तेली पत्नी को पीडता है। सुशीला के ही शरीर मे भूताविष्ट क्यो हुआ? कुत्ता रात को गली मे बैठता है। मैं सभावना करता हू तुम इस वर्ष एकान्त साधना करोगे। वह मदिरा को क्यो चखता है?

प्रत्यय प्रयोग

साधुत्व को छोडकर वह घर मे क्यो गया? उसने तुम्हारा काव्य ध्यान से पढा है। यह कार्य तुमने स्वय नही किया है, अपितु तुमसे कराया

गया है। क्या वह सांप मर गया? वह खेल में जीत गया। तुमने उस पर क्यों आक्रोश किया? तुम कब पैदा हुए थे? इस वर्ष जेठ मास में सूर्य बहुत अधिक तपा। यह बगीचा क्यों मुरझाया? तुमने उस साधु को कब देखा? यह भोजन साधु को नहीं कल्पता है, क्योंकि इसके लिए स्थापित है। स्वाध्याय के लिए भगवान ने आज्ञा दी है। यह मकान नष्ट क्यों हुआ? विहार करना सिद्धांत के द्वारा माना हुआ है।

प्रश्न

१. क्त प्रत्यय का प्रयोग किस काल के अर्थ में होता है?

२. कर्ता, कर्म और भाव में प्रत्यय होने से कौनसा लिंग और वचन होता है?

३. प्राकृत में क्त प्रत्यय के स्थान पर कौनसा प्रत्यय होता है?

४. विरह, असमर्थ, तिरस्कार, दुर्भिक्ष, मैथुन, निरर्थक, पुराना मंदिर, आश्चर्य, आरोप, चमत्कार (प्रकाशित) और अनवरत के लिए प्राकृत शब्द बताओ।

५. आयाम, आया, आचिञ्ज, आविध, आविहय, आवीड, आवेस, आस, आसघ और आसय धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्यों में प्रयोग करो।

६. फग्गुणो, कत्तिओ, मग्गसिरो, गग्गी, बुहो, अंगारओ, वत्ताजंत, तावमावअ शब्दों का वाक्य में प्रयोग करो तथा हिन्दी में अर्थ बताओ।

६६ शतृ और शान प्रत्यय

शब्द संग्रह (यान वर्ग)

वायुयान—वाउजाण (स)
मोटर—तेलजाण (स)
बस —परिवहणं (स)
साइकल—पायजाण (स)
रथ—रहो
भैसागाडी—महिसजाण
ऊंटगाडी—उट्टजाण
नौका—णावा

रेलगाडी—वप्फग (स)
मुसाफिरगाडी—पारिजाणिओ (स)
ट्रक—भारवाहजाणं (सं)
अगनबोट—अग्गिबोओ (स)
बैलगाडी—बलीवद्दजाणं
घोडागाडी—आसजाणं
गधागाडी—गद्दभजाण
जलजहाज—जलजाण

० ० ० ०

लाइसेंस—आणावण (स)
पेट्रोल—भूतेलसारो (स)

टिकट— वहणदल (स)
रेल की लाइन—लोहसरणि (पुं)

धातु संग्रह

आहा—कहना
आहर—छीनना, खींच लेना
आहार—खाना
आहिंड—घूमना
आसास—आश्वासन देना,
सान्त्वना देना

आसास—आशा करना
आहर—लाना
आहल्ल—हिलना
आहव—बुलाना
आहम्म—आना

शतृ-शान प्रत्यय

हिन्दी भाषा मे जाता हुआ, खाता हुआ, पीता हुआ आदि अर्थों मे शतृ और शान प्रत्यय आते है। ये दोनो वर्तमान कृदन्त के प्रत्यय हैं। ये प्रत्येक धातु से वर्तमान अर्थ मे होते हैं। जहा ये भविष्यत् अर्थ मे होते हैं वहा 'स्स' प्रत्यय और जुड जाता हैं। इनके रूप तीनो लिंगो मे व्यवहृत होते है। सस्कृत भाषा मे शतृ प्रत्यय परस्मैपदी धातुओ से और शान प्रत्यय आत्मनेपदी धातुओ से होता है। प्राकृत भाषा मे यह भेद नही है। शतृ प्रत्यय को जो आदेश होता है वही शान प्रत्यय को आदेश होता है, इसलिए दोनो प्रत्ययो के रूपो मे भेद नही होता। हेमचंद्राचार्य ने जिसे आनश् प्रत्यय की संज्ञा दी है, भिक्षुशब्दानुशासन मे उसकी शान प्रत्यय सज्ञा है।

नियम ७२० (शत्रानशः ३।१८१) शतृ प्रत्यय को न्त और माण आदेश होता है। शान प्रत्यय को भी न्त और माण आदेश होता है। हस्—हसन् (हसंतो, हसमाणो) हसता हुआ। हो—भवन् (होअंतो, होमाणो) होता हुआ। दा- ददन्, ददान. (दिंत, देंत, ददत, देयमाण) देता हुआ।

नियम ७२१ (ई च स्त्रियाम् ३।१८२) स्त्रीलिंग में शतृ और शान दोनों प्रत्ययों को ई, न्त और माण—ये तीन आदेश होते हैं। न्त और माण के आगे आप (आ) या ङीप् (ई) और जुड जाता है। हसन्ती (हसई, हसन्ती, हसंता, हसमाणी, हसमाणा) हंसती हुई।

(वर्तमाना-पंचमी शतृषु वा ३।१५८) नियम ४६७ से वर्तमान काल, पंचमी विभक्ति और शतृ प्रत्यय परे हो तो अ को ए विकल्प से होता है।

(१) अंत आदेश के रूप—

हस्—(पुंलिग)- हसंतो, हसिंतो, हसेंतो (हसन्) हसता हुआ।
(स्त्रीलिंग)—हसंती, हसिंती, हसेंती (हसन्ती) हंसती हुई।
हसंता, हसिंता, हसेंता (हसन्ती) हंसती हुई।
(नपुंसकलिंग)—हसंत, हसिंत, हसेंत (हसत्) हंसता हुआ।
हो—(पुंलिंग)—होअंतो, होइंतो, होएंतो, होंतो, हुंतो (भवन्) होता हुआ।
(स्त्रीलिंग)—होअंती, होइंती, होएंती, होंती, हुंती (भवन्ती) होती हुई।
होअंता, होइंता, होएंता, होंता, हुंता ,, ,, ,,
(नपुंसकलिंग)—होअंत, होइंत, होएंत, होंत, हुंत (भवत्) होता हुआ।

माण आदेश के रूप -

हस्— (पुंलिग)—हसमाणो, हसेमाणो (हसन्) हसता हुआ।
(स्त्रीलिंग)—हसमाणी, हसेमाणी, हसमाणा, हसेमाणा (हसन्ती) हंसती हुई।
(नपुंसकलिंग)— हसमाण, हसेमाण (हसत्) हंसता हुआ।
हो—(पुंलिंग)—होअमाणो, होएमाणो, होमाणो (भवन्) होता हुआ।
(स्त्रीलिंग)—होअमाणी, होएमाणी, होमाणी, होअमाणा, होएमाणा, होमाणा (भवन्ती) होती हुई।
(नपुंसकलिंग)—होअमाण, होएमाण, होमाण (भवत्) होता हुआ।

ई आदेश के रूप—

हस्—(स्त्रीलिंग)—हसई, हसेई (हसन्ती) हंसती हुई।
हो—(,,)—होअई, होएई, होई (भवन्ती) होती हुई।

णिजंत (ण्यन्त) में शतृ शान रूप—

हासंतो, हासेंतो। हसावंतो, हसावेंतो। हासमाणो, हासेमाणो, हसाव-

माणो, हसावेमाणो (हसयन्) हसाता हुआ।

(२) भाव में शतृ-शान के रूप—

हस्—हस्+इज्ज+न्त हसिज्जत
हस्+इज्ज+माण हसिज्जमाण
हस्+ईअ+न्त हसीअत
हस्+ईअ+माण = हसीअमाणं
} (हास्यमानं) हंसा जाता हुआ, हंसने मे आने वाला

ख—भविष्यत् शतृ-शान के रूप—

भविष्यत् काल मे शतृ शान प्रत्ययो के स्थान पर धातु से स्सन्त, स्समाण, स्सई प्रत्यय होते हैं। हसिस्सतो, हसिस्समाणो, हसिस्सई (हसिष्यन्ती)।

(३) कर्मवाच्य में शतृ-शान के रूप—

पुंलिग—भणीअंतो, भणिज्जतो गथो (भण्यमानो ग्रन्थ.) पढा जाता हुआ ग्रथ।

भणीअमाणो, भणिज्जमाणो सिलोगो (भण्यमान श्लोक.) पढा जाता हुआ श्लोक।

स्त्रीलिंग—भणीज्जती, भणीअती गाहा (भण्यमाना गाथा) पढी जाती हुई गाथा।

भणिज्जमाणी, भणीअमाणी भणिज्जई, भणीअई पती (भण्यमाना पडि्क्त.) पढी जाती हुई पक्ति।

नपुंसकलिंग—भणीअतं, भणीअमाण, भणिज्जत, भणिज्जमाण पगरण (भण्यमान प्रकरण) पढा जाता हुआ प्रकरण।

ख—कर्मवाच्य में प्रेरणार्थक शतृ शान रूप—

भणाविज्जतो, भणाविज्जमाणो, भणावीअतो, भणावीअमाणो मुणी (भण्यमानो मुनि.) पढाया जाता हुआ मुनि। भणाविज्जती, भणाविज्जमाणा, भणावीअती, भणावीअमाणा, भणाविज्जई, भणावीअई साहुणी (भण्यमाना साध्वी) पढाई जाती हुई साध्वी।

प्रयोग वाक्य

सो वाउजाणेण विएस गमिस्सइ। मज्झ गामे वप्फजाण न आजाइ। सतिपसायस्स सेट्ठिणो पासे केत्तिलाइं तेलजाणाइ सति? अज्जत्ता पायजाणं घरे घरे अत्थि। भारवाहजाणेण दूरट्ठाणत्तो अणेगाणि वत्थूणि आजाअति, जाअति य। पुव्वकाले रहस्स पओगो हुत्था। तुम्हे बलीवद्दजाणम्मि अहियं भार न देह। गामे जणा महिसजाणेण खेत्तस्स अन्न घरे आणेंति। अह आसजाणम्मि न आसामि। आसजाण पिव गद्दभजाण वि णयरे चलइ। मरुभूमीए उट्टजाणं मरुगो वाउजाण कहिज्जइ। मए अग्गिपोगण गगाजत्ता कया। णावाहि जलजत्ता केण न कय? अम्हेहिं बबईमहानयरे विमान-

जलजाणं दिट्ठं ।

धातु प्रयोग

सो तं आसामइ तुज्झ जीवणभागे हं वहिहिमि । पत्तेयजीवो पोग्गलाइं आहरइ । अहं पइदिण अन्न आहारेमि । तुमं किमट्ठं वणे आहिंडसि ? सा तलायत्तो नीरं आहरइ । मज्झ दंतपंतो (अंतिमदांत) कहं आहिल्लइ । आयरिओ साहुणो आहवेइ । कि साहुणो अज्ज अम्हाण गामे आगमिस्संति ?

प्रत्यय प्रयोग

सो हसंतो कहं जपइ ? विमला हसंई कहं आगच्छइ ? सो धणं देयमाणो णयरत्तो बाहिं गओ । लोएसो हसावमाणो किं जंपइ ? हसिज्जमाणस्स धणजयस्स णयणाहिंतो असूइं (आसू) पडंति । तेण भणिज्जमाणो गंथो गभीरो अत्थि । तुमए भणाविज्जई साहुणी सघपमुहा होहिइ ।

प्राकृत में अनुवाद करो

वायुयान तेज गति से चलता है । रेलगाडी यहा नही ठहरेगी । मोटर सडक पर चलती है । साइकल की यात्रा सस्ती होती है । ट्रक के द्वारा कल कश्मीर से सेवें आएगी । रथ मे बैठने वाला कोई नही है । बैलगाडी मे लोग क्यो बैठते हैं ? किस जाति के लोगो के पास भैसागाडी अधिक हैं ? क्या तुम घोडा गाडी पर चढना चाहते हो ? गधागाडी भार अधिक ढोती है । गाव के लोग ऊंटगाडी पर चढ कर यात्रा करते हैं । अगनबोट की यात्रा सुख से होती है । नौकायात्रा मे तूफान का भय रहता है । विशाल जहाज मे आवश्यक सामग्री उपलब्ध होती है ।

धातु का प्रयोग करो

रमेश ने उसको सान्त्वना दी । तुमने सत्य कभी नही कहा । माता ने बच्चे के हाथ से छुरी छीन ली । मनुष्य क्या नहीं खाता है ? तुम गली मे इधर-उधर क्यो घूमते हो ? माता आशा करती है कि मेरा पुत्र मेरी सेवा करेगा । तुम शहर मे क्या लाए हो ? तुम्हारा दात क्यो हिलता है ? तुम उसको यहा बुलाओ । उसका इस गाव मे आना सफल हुआ ।

प्रत्यय का प्रयोग करो

हसता हुआ जो आदमी बोलता है उसे कहो वह न हसे । उसने रोटी देती हुई बहन को देखा । हंसा जाता हुआ मनुष्य क्यो रोने लगा । हंसाता हुआ रमेश स्वय नही हंसता है । पढी जाती हुई गाथा को शुद्ध करो । पढाया जाता हुआ मुनि क्या कहना चाहता है ?

प्रश्न

१. आनश् और शान प्रत्यय एक है या दो ? शान संज्ञा कौन मानता है ?
२. शतृ और शान प्रत्यय किस अर्थ में आता है ?
३. शतृ और शान प्रत्यय के रूप किस लिंग में व्यवहृत होते हैं ।
४ शतृ और शान प्रत्ययों को प्राकृत मे क्या आदेश होता है ?
५. शतृ और शान प्रत्यय वर्तमानकाल मे होता है या भविष्यकाल में भी। दोनो के रूपो मे क्या अंतर है ?
६. वायुयान, रेलगाडी, मोटर, साइकल, ट्रक, रथ, बैलगाडी, भैंसागाडी, घोडागाडी, गधागाडी और ऊंटगाडी के लिए प्राकृत शब्द बताओ ।
७ आसास, आहा, आहर, आहार, आहिंड, आसास, आहर, आहल्ल, आहव और आहम्म धातुओ के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो ।

गुहा—गुफा
उड्ड(वि)—उड़ना
पोओ—पोत
अणुदिअह—प्रतिदिन
वणानलो—दावानल
उम्हि(पु)—उष्मा
गहिरं—गहरा
दोहि(वि)—दोनों
[illegible]—([illegible]) [illegible]
दुमो—वृक्ष
चन्दो—चंद्र

नियम ७२२ (इदितो वा ४।१) सूत्र में [illegible] आने वाली धातुओं के आदेश विकल्प से होते हैं।

नियम ७२३ (कथेर्वज्जर-पज्जरोप्पाल-पिसुण-संघ-बोल्ल-चव-जम्प-सीस-साहाः ४।२) कथि धातु को वज्जर, पज्जर, उप्पाल, पिसुण, संघ, बोल्ल, चव, जम्प, सीस और साह—ये आदेश होते हैं। कथयति (वज्जरइ, पज्जरइ, उप्पालइ, पिसुणइ, संघइ, बोल्लइ, चवइ, जम्पइ, सीसइ, साहइ) कहता है। कथित (वज्जरिओ) कथनम् (वज्जरणं) कथयित्वा (वज्जरिऊण) कथयन् (वज्जरन्तो) कथयितव्यं (वज्जरिअव्वं)। इसी प्रकार अन्य धातुओं के आदेश के रूप बना सकते हैं।

नियम ७२४ (दुःखे णिव्वरः ४।३) दुःखविषयक कथ् धातु को णिव्वर आदेश विकल्प से होता है। दुःखं कथयति (णिव्वरइ) दुःख कहता है।

नियम ७२५ (जुगुप्सेर्झुण-दुगुच्छ-दुगुञ्छाः ४।४) जुगुप्सि धातु को झुण, दुगुच्छ और दुगुञ्छ—ये तीन आदेश विकल्प से होते हैं। जुगुप्सति (झुणइ, दुगुच्छइ, दुगुञ्छइ जुगुच्छइ) घृणा करता है।

नियम ७२६ (बुभुक्षि वीज्योर्णीरव-वोज्जौ ४।५) बुभुक्षि धातु को णीरव और वीजि धातु को वोज्ज आदेश विकल्प से होता है। बुभुक्षति (णीरवइ) खाना चाहता है। वीजयति (वोज्जइ) हवा करता है।

नियम ७२७ (ध्या-गोर्झा-गौ ४।६) ध्या धातु को झा और गा धातु को गा आदेश विकल्प से होता है। ध्यायति (झाइ, झाअइ)। णिज्झाइ, णिज्झाअइ (निध्यायति) देखता है। गाइ, गाअइ (गायति) गाता है।

नियम ७२८ (ज्ञो जाण-मुणौ ४।७) जानाति को जाण और मुण आदेश होता है। जानाति (जाणइ, मुणइ) जानता है। बहुलाधिकारात् कहीं

विकल्प से होता है। जाणिअं, णाय (ज्ञातम्) जाणिऊण, णाऊण (ज्ञात्वा) जाणण, णाण (ज्ञान)। मणड रूप तो मन्यति का बनता है।

नियम ७२९ (उदो ध्मो धुमा ४।८) उद् पूर्वक ध्मा धातु हो तो ध्मा को धुमा आदेश होता है। उद्ध्माति (उद्धुमाइ) जोर से धमनी चलाता है।

नियम ७३० (श्रदो धो दहः ४।९) श्रद् से परे धा (दधाति) धातु को दह आदेश होता है। श्रद्दधाति (सद्दहइ) श्रद्धा करता है।

नियम ७३१ (पिबे. पिज्ज-डल्ल-पट्ट-घोट्टाः ४।१०) पिबति को पिज्ज, डल्ल, पट्ट और घोट्ट—ये चार आदेश विकल्प से होते है। पिबति (पिज्जइ, डल्लइ, पट्टइ, घोट्टइ, पिअइ) पीता है।

नियम ७३२ (उद्वातेरोरुम्मा वसुआ ४।११) उत्पूर्वक वाति को ओरुम्मा और वसुआ आदेश विकल्प से होता है। उद्वाति (ओरुम्माइ, वसुआइ, उव्वाइ) सूखाता है।

नियम ७३३ (निद्रातेरोहीरोङ्घौ ४।१२) निपूर्वक द्राति को ओहीर और उङ्घ आदेश विकल्प से होता है। निद्राति (ओहीरइ, उङ्घइ, निद्दाइ) नीद लेता है।

नियम ७३४ (आघ्रेराइग्घः ४।१३) आजिघ्रति को आइग्घ आदेश विकल्प से होता है। आजिघ्रति (आइग्घइ) सूंघता है।

नियम ७३५ (स्नातेरब्भुत्तः ४।१४) स्नाति को अब्भुत्त आदेश विकल्प से होता है। स्नाति (अब्भुत्तइ, ण्हाइ) स्नान करता है।

नियम ७३६ (समः स्त्यः खाः ४।१५) स पूर्वक स्त्यायति को खा आदेश होता है। सस्त्यायति (संखाइ) सान्द्र होता है, जमता है।

नियम ७३७ (स्थष्ठा-थक्क-चिट्ठ-निरप्पाः ४।१६) स्था धातु को ठा, थक्क, चिट्ठ और निरप्प आदेश होता है। तिष्ठति (ठाइ, ठाअइ थक्कइ, चिट्ठइ, निरप्पइ) ठहरता है। स्थान (ठाण) प्रस्थित (पट्ठिओ) प्रस्थापित. (पट्ठाविओ) बहुलाधिकारात् कहीं पर नहीं भी होता है—थिअ, थाणं, पत्थिओ, उत्थिओ।

नियम ७३८ (उदष्ठ-कुक्कुरौ ४।१७) उत् से परे तिष्ठति को ठ और कुक्कुर आदेश होता है। उत्तिष्ठति (उट्ठइ, उकुक्कुरइ) उठता है।

नियम ७३९ (म्लेर्वा-पव्वायौ ४।१८) म्लायति को वा और पव्वाय आदेश विकल्प से होता है। म्लायति (वाइ, पव्वायइ मिलाइ) म्लान होता है, निस्तेज होता है।

नियम ७४० (निर्मो निम्माण-निम्मवौ ४।१९) निर्मिमीति को निम्माण और निम्मव आदेश होता है। निर्मिमीति (निम्माणइ, निम्मवइ) बनाता है, रचना करता है।

वह अपना नया घर बनाता है। उसका पुण्य क्षीण होता है।

प्राकृत में अनुवाद करो

एक बार एक राजा अपना कारावास देखने गया। उसने वहां के सभी कैदियो को देखना चाहा। कारावास का अधिकारी सभी कैदियो को एक-एक करके राजा के सामने लाया। राजा ने सभी से अपने दोष को कहने के लिए कहा, जिसके कारण उन्हे कारावास का दड मिला था। सभी ने कहा हम निर्दोष थे। राजा ने पुन. उन लोगो को कारावास मे भेज दिया। अत मे एक योग्य मनुष्य आया और राजा के सामने खडा हो गया। राजा ने वही प्रश्न उससे भी किया। उसने उत्तर दिया—मैंने अपने गाव मे एक धनी की कीमती अंगूठी चुराई थी। इसलिए मैं इस दण्ड के योग्य हूं। राजा उसकी दोष-स्वीकृति पर प्रसन्न हो गया और मुक्ति के लिए आज्ञा देते हुए कहा—इसने चोरी की है इसलिए यह दण्डित हुआ। अब यह सत्य बोलता है इसलिए यह पुरस्कार के योग्य है।

प्रश्न

१ गुहा, दोहि, उअहि, थोअ, खयाणल, गहिर, कज्जलाव, पवअ, अमुणिअ और उइअ शब्दो के अर्थ बताओ।

२ नीचे लिखी धातुए किन-किन धातुओ के आदेश है ? झा, मुण, जाण, वसुआ, आइग्घ, पिज्ज, णिव्वर, णीरव, पव्वाय, णिज्झर, अब्भुत्त, चिट्ठ, थक्क, उड्घ, ओहीर, वोल्ल, जप, साह।

१०१ धात्वादेश (२)

शब्द संग्रह

विशाल—विसाल (वि)
दया—दया
वर्षा—वरिसा
घास—तणं
आवाज—झुणि (पु)
तट—तडो
आगम—मुहं
अल्प—अप्पं (वि)
जोर—वेगो, वेओ

धातुओं को आदेश—

नियम ७४२ (क्रिय. किणो वेस्तु क्के च ४।५२) क्रीणाति को किण आदेश होता है। वि से परे हो तो विक्कण हो जाता है। क्रीणाति (किणइ) खरीदता है। विक्रीणाति (विक्किणइ) बेचता है।

नियम ७४३ (भियो भा-बीहौ ४।५३) बिभेति को भा और बीह आदेश होता है। बिभेति (भाइ, बीहइ) डरता है। भीत (भाइअ, बीहिअं) डरा हुआ। बहुलाधिकारात् भीओ।

नियम ७४४ (आलीङोल्ली ४।५४) आलीयति को अल्ली आदेश होता है। आलीयति (अल्लीअइ) लीन होता है। आलीनो (अल्लीणो)।

नियम ७४५ (निलीङ णिलीअ-णिलुक्क-णिरिग्घ-लुक्क-लिक्क-ल्हिक्काः ४।५५) निलीङ् को छ आदेश विकल्प से होते हैं। निलीयते (णिलीअइ, णिलुक्कइ, णिरिग्घइ, लुक्कइ, लिक्कइ, ल्हिक्कइ, निलिज्जइ) छिपता है।

नियम ७४६ (विलीङ विरा ४।५६) विलीङ् को विरा आदेश विकल्प से होता है। विलीयते (विराइ, विलिज्जइ) पिघलता है, नष्ट होता है।

नियम ७४७ (रुते रुञ्ज-रुण्टौ ४।५७) रौति को रुञ्ज और रुण्ट— ये दो आदेश विकल्प से होते हैं। रौति (रुञ्जइ, रुण्टइ, रवइ) आवाज करता है।

नियम ७४८ (श्रुटेर्हणः ४।५८) शृणोति को हण आदेश विकल्प से होता है। शृणोति (हणइ, सुणइ) सुनता है।

नियम ७४९ (धुगेर्धुवः ४।५९) धुनाति को धुव आदेश विकल्प से होता है। धुनाति (धुवइ, धुणइ) हिलाता है, कंपाता है।

नियम ७५० (भुवे र्हो-हुव-हवाः ४।६०) भू धातु को हो, हुव और हव—ये आदेश विकल्प से होते हैं। भवति (होइ, हुवइ, हवइ, भवइ) होता है।

नियम ७५१ (अविति हुः ४।६१) वित् प्रत्यय (भिक्षुशब्दानुशासन मे पित् प्रत्यय) छोडकर भू धातु को हु आदेश विकल्प से होता है। भवंति (हुंति)। पित् प्रत्यय होने से हु आदेश नही हुआ। भवति (होइ)।

नियम ७५२ (पृथक्-स्पष्टे णिव्वड: ४।६२) पृथक्भूत और स्पष्ट अर्थ में भू धातु को णिव्वड आदेश होता है। पृथक् भवति (णिव्वडइ) पृथक् होता है। स्पष्टो भवति (णिव्वडइ) स्पष्ट होता है।

नियम ७५३ (प्रभौ हुप्पो वा ४।६३) प्रभु कर्तृक (प्र पूर्वक भू धातु) को पहुप्प आदेश होता है। प्रभवति (पहुप्पइ, पभवेड) समर्थ होता है, पहुचता है।

नियम ७५४ (क्ते हूः ४।६४) भू धातु को हू आदेश होता है क्त प्रत्यय परे हो तो। भूतं (हूअं) हुआ। अनुभूतं (अणुहूअं)। प्रभूतं (पहूअं)।

नियम ७५५ (कृगे कुणः ४।६५) कृ धातु को कुण आदेश विकल्प से होता है। करोति (कुणइ, करइ) करता है।

नियम ७५६ (काणेक्षिते णिआरः ४।६६) काना देखना विषय में कृ धातु को णिआर आदेश विकल्प से होता है। काणेक्षित करोति (णिआरइ) कानी नजर से देखता है।

नियम ७५७ (निष्टम्भावष्टम्भे णिट्ठुह-संदाणं ४।६७) निष्टम्भ अर्थ मे और अवष्टम्भ अर्थ मे कृ धातु को क्रमशः णिट्ठुह और संदाण आदेश विकल्प से होता है। निष्टम्भ करोति (णिट्ठुहइ) स्तब्ध करता है। अवष्टम्भं करोति (संदाणइ) सहारा लेता है, अवलम्बन लेता है।

नियम ७५८ (श्रमे वावम्फः ४।६८) श्रम विषय मे कृ धातु को वावम्फ आदेश विकल्प से होता है। श्रमं करोति (वावम्फइ) श्रम करता है।

नियम ७५९ (मन्युनौष्ठमालिन्ये णिव्वोलः ४।६९) क्रोध से ओष्ठ को मलिन करने के अर्थ मे कृ धातु को णिव्वोल आदेश विकल्प से होता है। मन्युना ओष्ठं मलिनं करोति (णिव्वोलइ) क्रोध से होठ मलिन करता है।

नियम (७६० शैथिल्य-लम्बने पयल्लः ४।७०) शैथिल्य और लम्बन विषय मे कृ धातु को पयल्ल आदेश विकल्प से होता है। शिथली भवति (पयल्लइ) शिथिल करता है। ढीला करता है।

नियम ७६१ (निष्पाताच्छोटे णीलुञ्छः ४।७१) निष्पतन और आच्छोटन विषय में कृ धातु को णीलुञ्छ आदेश विकल्प से होता है। निष्पतति (णीलुञ्छइ) निष्पतन करता है। आच्छोटयति (णीलुञ्छइ)

धातुओं का प्रयोग करो

वह घास खरीदता है। तुम घी बेचते हो। वह किसी से नही डरता है। विद्यार्थी अध्यापक से क्यो छिपता है ? अग्नि से नवनीत पिघलता है। पक्षी आवाज करते हैं। मेरी बात कौन सुनता है ? तुम तालाब के पानी को क्यो कंपाते हो ? जो होना होता है वही होता है। फूल वृक्ष से पृथक् होता है। साधु सघ से पृथक् क्यो होता है ? वह तुम्हारे सामने स्पष्ट होता है। तुम वर्षा मे घर पहुचते हो। क्या तुम उसका हित करते हो ? गांव की स्त्रिया नव वधू के वर को कानी नजर से देखती हैं। तुम्हारी गति को किसने स्तब्ध किया ? वह वृक्ष की डाली का आलम्बन लेता है। मैं प्रतिदिन शरीर का श्रम करता हूं। उसकी इच्छा के प्रतिकूल होने से उसने क्रोध से होठ को मलिन किया। वह अपने अधोवस्त्र को ढीला करता है। वृक्ष पर क्या लटकता है ? तुम व्यर्थ मे पानी का निष्पतन करते हो। वह आच्छोटन क्यो करता है ?

प्रश्न

१. घोसला, विशाल, दया, बर्फ, घास, तट, आराम, अल्प, जोर और आवाज—इन शब्दो के लिए प्राकृत शब्द बताओ।
२. किण, भा, वीह, अल्ली, णिलुक्क, विलिज्ज, लुक्क, हुण, णिव्वड, णिआर, सदाण, णिल्वोल, पयल्ल आदेश किन धातुओ को किस अर्थ मे आदेश होता है ?

शब्द संग्रह

महल—पासाओ	गाड़ी—सगड
दाता—दाणी	वृत्ति—वित्ति (स्त्री)
कारागार—बन्दागार	सवारी—पवहणं
कुटिल—कुडिल्ल (वि)	नानवाई—कंदुआरओ
मूर्ख—मुक्ख (वि)	रसोई बनाने वाली—महाणसिणी
संसार—संसारो	

नियम ७६२ (क्षुरे कम्मः ४।७२) क्षुर विषय में कृ धातु को कम्म आदेश विकल्प से होता है। क्षुरं करोति (कम्मइ) हजामत करता है।

नियम ७६३ (चाटौ गुललः ४।७३) चाटु विषय में कृ धातु को गुलल आदेश विकल्प से होता है। चाटु करोति (गुललइ) खुशामद करता है।

नियम ७६४ (स्मरेर्झर-झूर-भर-भल-लढ-विम्हर-सुमर-पयर-पम्हुहाः ४।७४) स्मर धातु को झर, झूर, भर, भल, लढ, विम्हर, सुमर, पयर और पम्हुह—ये नव आदेश विकल्प से होते हैं। स्मरति (झरइ, झूरइ, भरइ, भलइ, लढइ, विम्हरइ, सुमरइ, पयरइ, पम्हुहइ) स्मरण करता है, याद करता है।

नियम ७६५ (विस्मुः पम्हुस-विम्हर-वीसराः ४।७५) विस्मरति को पम्हुस, विम्हर और वीसर आदेश होते हैं। विस्मरति (पम्हुसइ, विम्हरइ, वीसरइ) भूलता है।

नियम ७६६ (व्याहृगेः कोक्क-पोक्कौ ४।७६) व्याहरति को कोक्क और पोक्क आदेश विकल्प से होता है। व्याहरति (कोक्कइ, कुक्कइ। पोक्कइ, वाहरइ) बुलाता है।

नियम ७६७ (प्रसरेः पयल्लोवेल्लौ ४।७७) प्रसरति को पयल्ल और उवेल्ल आदेश विकल्प से होता है। प्रसरति (पयल्लइ, उवेल्लइ, पसरइ) फैलता है।

नियम ७६८ (महमहो गन्धे ४।७८) गंध का फैलना अर्थ में महमह आदेश होता है। गंधो प्रसरति (महमहइ) गंध फैलती है।

नियम ७६९ (निस्सरेर्णीहर-नील-धाड-वरहाडाः ४।७९) निस्सरति

को णीहर, नील, धाड और वरहाड—ये चार आदेश विकल्प से होते हैं। निस्सरति (णीहरड, नीलइ, धाडइ, वरहाडइ, नीसरइ) बाहर निकलता है।

नियम ७७० (जाग्रेर्जग्गः ४।८०) जागर्ति को जग्ग आदेश विकल्प से होता है। जागर्ति (जग्गइ, जागरइ) जागता है।

नियम ७७१ (व्याप्रेराअड्डः ४।८१) व्यापिपर्त्ति को आअड्ड आदेश विकल्प से होता है। व्यापिपर्त्ति (आअड्डेइ, वावरेइ) काम में लगता है, व्यापृत होता है।

नियम ७७२ (संवृगेः साहर-साहट्टौ ४।८२) संवृणोति को साहर और साहट्ट आदेश विकल्प से होता है। संवृणोति (साहरइ, साहट्टइ, संवरइ) समेटता है, सवरण करता है।

नियम ७७३ (आदृङः सन्नामः ४।८३) आद्रियते को सन्नाम आदेश विकल्प से होता है। आद्रियते (सन्नामइ) आदर करता है।

नियम ७७४ (प्रहृगेः सारः ४।८४) प्रहरति को सार आदेश विकल्प से होता है। प्रहरति (सारइ) प्रहार करता है।

नियम ७७५ (अवतरेरोह-ओरसौ ४।८५) अवतरति को ओह और ओरस आदेश विकल्प से होता है। अवतरति (ओहइ, ओरसइ) नीचे उतरता है।

नियम ७७६ (शकेश्चय-तर-तीर-पाराः ४।८६) शक् धातु को चय, तर, तीर और पार ये चार आदेश विकल्प से होते हैं। शक्नोति (चयइ, तरइ, तीरइ, पारइ, सक्कइ) सकता है। त्यजति को चयइ, तरति को तरइ, तीरयति को तीरइ, पारयति को पारेइ आदेश भी होते हैं।

नियम ७७७ (फक्कस्थक्कः ४।८७) फक्कति को थक्क आदेश होता है। फक्कति (थक्कइ) नीचे आता है।

नियम ७७८ (श्लाघः सलहः ४।८८) श्लाघते को सलह आदेश होता है। श्लाघते (सलहइ) प्रशंसा करता है।

नियम ७७९ (खचेर्वेअडः ४।८९) खच् धातु को वेअड विकल्प से आदेश होता है। खचते (वेअडइ, खचइ) पावन करता है।

नियम ७८० (पचेः सोल्ल-पउल्लौ ४।९०) पचति को सोल्ल और पउल आदेश विकल्प से होता हैं। पचति (सोल्लइ, पउलइ, पचइ) पकाता है।

नियम ७८१ (मुचेश्छड्डावहेड-मेलोस्सिक्क-रेअव-णिल्लुञ्छधंसाडाः ४।९१) मुञ्चति को छड्ड, अवहेड, मेल्ल, उस्सिक्क, रेअव, णिल्लुञ्छ, धंसाड —ये सात आदेश विकल्प से होते है। मुञ्चति (छड्डइ, अवहेडइ, मेल्लइ, उस्सिक्कइ, रेअवइ, णिल्लुञ्छइ, धंसाडइ, मुअइ) छोडता है।

नियम ७८२ (दुःखे णिव्वलः ४।९२) दुख विषयक मुंच धातु को णिव्वल आदेश विकल्प से होता है। दुःखं मुञ्चति (णिव्वलेइ) दुख को

छोडता है ।

नियम ७८३ (वञ्चे वेंहव-वेलव-जूरवोमच्छाः ४।९३) वञ्चति को वेहव, वेलव, जूरव, उमच्छ—ये चार आदेश विकल्प से होते हैं । वञ्चति (वेहवइ, वेलवइ, जूरवइ, उमच्छइ, वञ्चइ) ठगता है ।

प्रयोग वाक्य

रायिदो सयं कम्मइ । सो गुललइ, सभवामि, कज्जसिद्धीए एरिसं करेइ । सेहो साहू दिवहे वीसगाहाओ झरइ, जूरइ, भरइ, भलइ, लढइ, विम्हरइ, सुमरइ, पयरइ, पम्हुहइ वा । तुम एगमासस्स पुव्व जं सिक्खियं तं कहं पम्हुससि, विम्हरसि, वीसरसि वा ? गुरु चिज्जाहिणो कहं कोक्कइ, कुक्कइ, पोक्कइ, वाहरइ वा ? पंकयज्जाणं चिएसु वि पयल्लइ, उवेल्लइ, पसरइ वा । वाउणा पुप्फाण गंधो महमहइ । सूरियो अब्भेहितो णीहरइ, नीलइ, धाडइ, वरहाडइ नीसरइ वा । अज्ज राओ को जग्गिहिइ, जागरिस्सइ वा ? पुत्तवहू पच्चूसे घरकज्जम्मि न आअड्डेइ, वावरेइ वा । नाहगो मणं साहरइ, साहट्टइ, संवरइ वा । अह तुं सन्नामामि । सो कं णामइ ? अहं पव्वयत्तो ओरसामि, ओहामि वा । तुम एअं कज्ज करित्तए चयसि, तरसि, तीरसि, पारसि, सक्कसि वा । नीराइं पव्वयत्तो थक्कंति । लोगसो वणजयं [illegible] । गुरुणो चरणाइं ठाण वेअडंति, खचंति वा । विमला ओयणं सोल्लइ, पउलइ, पचइ वा । अह घयं छड्डामि, अवहेडामि, मेल्लामि, उस्सिक्कामि, रेअवामि, णिल्लुञ्छामि, धंसाडामि वा । तुम कहं न णिव्वलसि ? धणेसो रमेसं वेहवइ, वेलवइ, जूरवइ, उमच्छइ, वञ्चइ वा ।

हिन्दी में अनुवाद करो

कस्सइ कुलपुत्तयस्स भाया वेरिएण वावाइओ । सो जणणीए भन्नइ— पुत्त । पुत्तघायग घायसु त्ति । तओ सो तेण नियपोरुसाओ जीवग्गाह गिण्हिऊण जणणीसमीवमुवणीओ, भणिओ य भाइघायग ! कहिं आहणामि ? त्ति । तेण वि खग्ग मुग्गामिय दट्ठूण भयभीएण भणिय—जहिं सरणागया आहम्मंति । इम च सोऊण तेण जणणीमुहमवलोइयं । तीए महासत्तत्तणमवलवंतीए उप्पन्न-करुणाए भणियं—न पुत्त सरणागया आहम्मति ।

जओ—सरणागयाण विस्सभियाण, पणयाण वसणपत्ताणं ।
रोगिय अजंगमाण, सप्पुरिसा नेव पहरंति ॥१॥

तेण भणिय—कह रोस सफलं करेमि ? तीए भन्नइ—न पुत्त ! सव्वत्थ रोसो सफलो करेयव्वो । पच्छा सो तेण विसज्जिओ चलणेसु निवडिऊण खामेऊण य गओ ।

धातु का प्रयोग करो

मगलवार को कौन हजामत करता है ? वह उसकी खुशामद क्यो करता है ?

क्या तुम मुझे याद करते थे ? क्या वह मुझे भूल गया ? विनय को वहा कौन बुलाता है ? तेल की बूद पानी पर फैलती है । तुम्हारा यश चारो ओर फैलता है । इत्र की गध फैलती है । उसके घर से वर्षा का पानी बाहर क्यो नही निकलता ? तुम किस समय जागते हो ? कल से वह अपने काम मे लगेगा । वह अपने भाषण को पाच मिनट मे समेटता है । विनीत शिष्य अध्यापक का आदर करता है । उसने तुम्हारे पर प्रहार क्यो किया ? क्या भगवान स्वर्ग से नीचे उतरता है ? मैं तुम्हारा सब काम कर सकता हूं । क्या वह कभी महल से नीचे आता है ? वह स्वार्थवश ही तुम्हारी प्रशसा करता है । वह भोजन को स्वय पकाता है । तुम अपने अवगुणो को क्यो नही छोडते ? जो दु ख को सहता है वह साधक होना चाहिए । उसने तुमको क्यो ठगा ?

प्राकृत में अनुवाद करो

एक सेठ के चार पुत्रवधूए थी । उनकी परीक्षा के लिए सेठ ने चारो को चावल के पाच-पाच दानें दिए और सुरक्षित रखने के लिए कहा । पहली पुत्रवधू ने लापरवाही से फेक दिए और सोचा मागेंगे तब धान्यागार से लाकर दे दूगी । दूसरी ने उनको खा लिया । तीसरी ने उनको आभूषण की छोटी पेटी मे सुरक्षित रख दिया । सोचा—ससुर ने दिए है तो कोई रहस्य होना चाहिए । चौथी पुत्रवधू ने खेत मे उनकी बुवाई कराई । अच्छी फसल हुई । पाच वर्षों मे विशाल भडार हो गया । सेठ पाच वर्ष बाद घर आया । सब बहुओ से दाने मागे । तीनो ने लाकर दे दिए । चौथी ने कहा—दानें मगाने हो तो गाडी भेजो । सेठ ने चारो को पूछा, क्या-क्या किया ? सब ने अपनी-अपनी क्रिया बताई । चारो का कार्य सुन सेठ ने चारो को घर का एक-एक कार्य सौंप दिया । दानो को फेंकने वाली बहू को सफाई का, खाने वाली को रसोई का, सुरक्षित रखने वाली को भडार का कार्य सौप दिया । चौथी को घर की स्वामिनी का भार दिया ।

प्रश्न

१ महल, दाना, धान्यागार, सुरक्षित, रहस्य, भडार, गाडी, वृत्ति, सफाई, लापरवाही, रसोई बनाने वाली शब्दो के प्राकृत शब्द बताओ ।

२. कम्म, गुलल, सुमर, विम्हर, भल, वीसर, पम्हुस, पोक्क पयल्ल, महमह, उवेल्ल, धाड, णीहर, जग्ग, आअड्ड, सन्नाम, ओरस, तीर, पार, थक्क, सोल्ल, धसाड, णिव्वल आदेश किन किन धातुओ को होता है ?

१०३ धात्वादेश (४)

शब्द संग्रह

पद्य—पज्ज	अनुयायी—अणुगमिर (वि)
व्यक्तित्व—वत्तित्तण	अपशकुन—अवसउणं
उपहार—उवहारो	पति—दइओ
सज्जन—सुअणो	स्वप्न—सिविण
जो दीखता न हो—अईसन्तो	चुगली—पिट्ठिमंस
स्वाधीन—साहीण (वि)	यात्री—जत्तिओ

नियम ७८४ (रचेरुग्गहावह-विडविड्डाः ४।९४) रच् धातु को उग्गह, अवह और विडविड्ड—ये तीन आदेश विकल्प से होते हैं। रचयति (उग्गहइ, अवहइ, विडविड्डइ, रयइ) बनाता है।

नियम ७८५ (समारचेरुवहत्थ-सारव-समार-केलायाः ४।९५) समारच् धातु को उवहत्थ, सारव, समार और केलाय—ये आदेश विकल्प से होते हैं। समारचयति (उवहत्थइ, सारवइ, समारइ और केलायइ, समारयइ) बनाता है।

नियम ७८६ (सिचेः सिञ्च-सिम्पौ ४।९६) सिञ्चति (सिच्) को सिञ्च और सिम्प आदेश विकल्प से होते हैं। सिञ्चति (सिञ्चइ, सिम्पइ, सेअइ) सींचता है, छिडकता है।

नियम ७८७ (प्रच्छः पुच्छः ४।९७) प्रच्छ् धातु को पुच्छ आदेश होता है। पृच्छति (पुच्छइ) पूछता है।

नियम ७८८ (गर्जे र्बुक्कः ४।९८) गर्जति को बुक्क आदेश विकल्प से होता है। गर्जति (बुक्कइ, गज्जइ) गरजता है।

नियम ७८९ (वृषे ढिक्कः ४।९९) वृष कर्ता हो तो गर्ज् धातु को ढिक्क आदेश विकल्प से होता है। वृषभो गर्जति (ढिक्कइ) सांड गरजता है।

नियम ७९० (राजेरग्घ-छज्ज-सह-रीर-रेहाः ४।१००) राज् धातु को अग्घ, छज्ज, सह, रीर और रेह—ये पांच आदेश विकल्प से होते हैं। राजति, राजते (अग्घइ, छज्जइ, सहइ, रीरइ, रेहइ, रायइ) शोभता है, चमकता है।

नियम ७९१ (मस्जेराउड्ड-णिउड्ड-बुड्ड-खुप्पाः ४।१०१) मज्जति को आउड्ड, णिउड्ड, बुड्ड और खुप्प—ये चार आदेश विकल्प से होते हैं।

मज्जति (आउड्डइ, णिउड्डइ, वुड्डइ, खुप्पइ, मज्जइ) डूबता है।

नियम ७९२ (पुञ्जेरारोल-वमालौ ४।१०२) पुञ्ज् धातु को आरोल और वमाल ये आदेश विकल्प से होते हैं। पुञ्जति (आरोलइ, वमालइ, पुञ्जइ) इकट्ठा करता है।

नियम ७९३ (लस्जेर्जीहः ४।१०३) लज्जति को जीह आदेश विकल्प से होता है। लज्जति (जीहइ, लज्जइ) लज्जा करता है।

नियम ७९४ (तिजेरोसुक्कः ४।१०४) तिज् धातु को ओसुक्क आदेश विकल्प से होता है। तेजते (ओसुक्कइ) तीक्ष्ण करता है।

नियम ७९५ (मृजेरुग्घुस-लुञ्छ-पुञ्छ-पुंस-फुस-पुस-लुह-हुल-रोसाणाः ४।१०५) मृज् धातु को उग्घुस, लुञ्छ, पुञ्छ, पुस, फुस, पुस, लुह, हुल और रोसाण—ये आदेश विकल्प से होते हैं। मार्जति (उग्घुसइ, लुञ्छइ, पुञ्छइ, पुसइ, फुसइ, पुसइ, लुहइ, हुलइ, रोसाणइ, मज्जइ) साफ करता है।

नियम ७९६ (भञ्जेर्वेमय-मुसुमूर-मूर-सूर-सूड-विर-पविरञ्ज-करञ्ज-नीरञ्जाः ४।१०६) भञ्ज् धातु को वेमय, मुसुमूर, मूर, सूर, सूड, विर, पविरञ्ज, करञ्ज, नीरञ्ज—ये आदेश विकल्प से होते हैं। भनक्ति (वेमयइ, मुसुमूरइ, मूरइ, सूरइ, सूडइ, विरइ, पविरञ्जइ करञ्जइ, नीरञ्जइ, भञ्जइ) तोडता है, भागता है।

नियम ७९७ (अनुव्रजेः पडिअग्गः ४।१०७) अनुव्रजति को पडिअग्ग आदेश विकल्प से होता है। अनुव्रजति (पडिअग्गइ, अणुवच्चइ) अनुसरण करता है।

नियम ७९८ (अर्जेर्विढवः ४।१०८) अर्ज् धातु को विढव आदेश विकल्प से होता है। अर्जति (विढवइ, अज्जइ) पैदा करता है, उपार्जन करता है।

नियम ७९९ (युजो जुञ्ज-जुज्ज-जुप्पा. ४।१०९) युज् धातु को जुञ्ज, जुज्ज, जुप्प—ये आदेश होते हैं। युनक्ति (जुञ्जइ, जुज्जइ, जुप्पइ) जोडता है।

नियम ८०० (भुजो भुञ्ज-जिम-जेम-कम्माण्ह-चमढ-समाण-चड्डाः ४।११०) भुज्, धातु को भुञ्ज, जिम, जेम, कम्म, अण्ह, चमढ, समाण और चड्ड—ये आदेश होते हैं। भुङ्क्ते (भुञ्जइ, जिमइ, जेमइ, कम्मइ, अण्हइ, चमढइ, समाणइ, चड्डइ) भोजन करता है।

नियम ८०१ (वोपेन कम्मवः ४।१११) उप सहित भुज् धातु को कम्मव आदेश विकल्प से होता है। उपभुज्यते (कम्मवइ, उवहुञ्जइ) भोजन करता है।

नियम ८०२ (घटे र्गढः ४।११२) घटते को गढ आदेश विकल्प से होता है। घटते (गढइ, घडइ) बनाता है, चेष्टा करता है।

नियम ८०३ (समो गलः ४।११३) सघटते को गल आदेश विकल्प से होता है। सघटते (गलइ, संघटइ) प्रयत्न करता है।

नियम ८०४ (हासेन स्फुटे मुर: ४।११४) हास के कारण जो स्फुटित होता है उसको मुर आदेश विकल्प से होता है। हासेन स्फुटति (मुरइ) हंसी फूट पडती है।

धातु प्रयोग वाक्य

किं तुम सिलोगा उग्गहसि, अवहसि, विउविरुसि, रयसि वा ? सो आउव्वेयगंथ उवहत्थइ, सारवइ, समारइ, केलायइ समारयइ वा। सो रुक्खाइं सिंचइ, सिंपइ, सेअइ वा। तुम मिम किं पुच्छसि ? मेहो सावणे बुक्कइ, गज्जइ वा। किं रायणयरम्मि उसहो ढिक्कइ ? गाहण मज्झे आयरिओ अग्घइ, छज्जइ, सहइ, रीरइ, रेहइ, रायइ वा। पक्खिणो जलासये न आउड्डति, णिउड्डति, बुड्डति, खुप्पति, मज्जति वा। सो किमट्ठं जणा आरोलइ, वमालइ, पुंजइ वा ? णवोढा सासूओ जीहइ, लज्जइ वा। सो किमट्ठं छुरिआ ओसुक्कइ ? सीया भायणाइं उग्घुसइ, लुञ्छइ पुञ्छइ, पुसइ, फुसइ, पुसइ, लुहइ, हुलइ, रोसाणइ, मज्जइ वा। सो रइ लट्ठि वेमयइ, मुसुमुरइ, मूरइ, सूरइ, सूडइ, विरइ, पविरञ्जइ, करञ्जइ, नीरञ्जइ, भञ्जइ वा। बालो पुरिसा पटिअगइ, अणुवच्चइ वा। सो घणेहिं घण विढवइ अज्जइ वा। किं तुम कट्ठखण्डाइं जुञ्जसि, जुज्जसि, जुप्पसि वा। सुदसणो पइदिण मिट्ठान्न भुजइ, जिमइ, जेमइ, कम्मइ, अण्हइ, चमढइ, समाणइ, चड्डइ वा। सो मज्झण्हे किमवि न कम्मवइ, उवहुज्जइ वा। किं राया दुग्ग गढइ, घडइ वा ? तुमं किमट्ठं एअ गलसि, सघडसि वा ?

हिन्दी में अनुवाद करो

ना पुट्ठो वागरे किंचि, पुट्ठो वा नालियं वए।
कोह असच्चं कुव्विज्जा धारेज्जा पियमप्पियं ॥१॥
जरा जाव न पीडेइ, वाही जाव न वड्ढइ।
जाविंदिया न हायंति, ताव धम्मं समायरे ॥२॥
ता मज्झिमो च्चिअ वर, दुज्जणसुअणेहिं दोहिं वि न कज्ज।
जह दिट्ठो तवइ खलो, तहेअ सुअणो अदीसन्तो ॥३॥
धण्णा ता महिलाओ जा दइअं सिविणाए वि पेच्छन्ति।
णिद्द च्चिअ तेण विणा ण एइ, का पेच्छए सिविणं ॥४॥
बहु सुणेइ कण्णेहिं, बहु अच्छीहिं पेच्छइ।
न य दिट्ठं सुयं सव्वं, भिक्खू अक्खाउमरिहइ ॥५॥
अपुच्छिओ न भासेज्जा, भासमाणस्स अंतरा।
पिट्ठिमंसं न खाएज्जा, मायामोसं विवज्जए ॥६॥

जे य कते पिए भोए, लद्धे विपिट्ठिकुव्वई।
साहीणे चयइ भोए, से हु चाइ त्ति वुच्चई ॥७॥

धातु का प्रयोग करो

क्या वह पद्य मे काव्य वना सकता है? वह भगवान महावीर के जीवन को सस्कृत मे पद्यरूप मे वनाता है। वह वृक्षो के मूल की अपेक्षा पत्रो को सीचता है। तुमने ज्योतिषी से क्या प्रश्न पूछा? आज वादल नही गरजे। यदि दाहिने पार्श्व मे साड गरजता है तो यात्री शुभ फल पाता है। क्या चद्रमा दिन मे भी आकाश मे चमकता है? नदी मे पशु नही डूवते फिर आदमी क्यो डूवता है? कीडी अपने स्वभाव से इकट्ठा करती रहती है। आजकल वहूए ससुराल मे भी लज्जा नही करती। तुम्हारा भाई शस्त्र को तेज किसलिए करता है? तुम वस्त्रो को कव साफ करोगे? शैक्ष साधु पात्रो को अधिक क्यो तोडता है? अनुयायी साधुओ का अनुसरण करते हैं। तुम एक मास मे कितने रुपए उपार्जन करते हो? वह दोनो के मन को जोडने के लिए प्रयत्न करता है। साधु टूटे हुए पात्र को कुशलता से जोडता है। तुम सायकाल भोजन मे क्या खाते हो? वह व्यक्तित्व वनाने के लिए प्रयत्न करता है।

प्राकृत में अनुवाद करो

एक राजा ने एक वार स्वप्न देखा कि मेरे सभी दात गिर गए हैं। इसे अपशकुन जानकर उसने स्वप्नज्ञाता को वुलाया और अपने स्वप्न का फल पूछा। स्वप्नज्ञाता ने उत्तर दिया इसका फल वहुत वुरा है। आपके परिवार के सभी सदस्य आपके सामने ही मर जाऐंगे। यह सुनकर राजा कुपित हो गया और उसे कैद मे वद करा दिया। राजा ने दूसरे स्वप्नज्ञाता को वुलाया और स्वप्न का फल पूछा। वह होशियार था। उसने उत्तर दिया राजन्! स्वप्न वहुत अच्छा है। इसका फल होगा, आप अपने परिवार मे दीर्घजीवी होगे। राजा उसके उत्तर से प्रसन्न हुआ और उसे वहुमूल्य उपहार दिया। दोनो स्वप्नज्ञाताओ का फलित एक था, पर वाणी की कला भिन्न-भिन्न थी।

प्रश्न

१ आयुर्वेद, पद्य, व्यक्तित्व, उपहार, जो दीखता न हो, स्वाधीन, अनुयायी, अपशकुन, पंति, और चुगली के लिए प्राकृत शब्द वताओ?

२ उग्गह, अवह, सारव, समार, केलाय, सिम्प, वुक्क, ढिक्क, गीर, छज्ज, सह, वुड्ड, खुप्प, आरोल, वमाल, जीह, ओसुक्क, पुस, मूर, विर, पडिअग्ग, विढव, जुज्ज, जेम, चमढ, समाण, कम्मव, गढ, गन्न, भूर आदेश किन-किन धातुओ को होता है?

है, विलोडन करता है।

नियम ८१२ (ह्लादेरवअच्छः ४।१२२) णिजन्त और अणिजन्त ह्लाद् धातु को अवअच्छ आदेश होता है। ह्लादते (अवअच्छइ) खुश होता है। ह्लादयति (अवअच्छइ) खुश करता है।

नियम ८१३ (नेः सदो मज्जः ४।१२३) निपूर्वक सद् धातु को मज्ज आदेश होता है। निषीदति (णुमज्जइ) बैठता है। अत्ता एत्थ णुमज्जइ (आत्मा यहां बैठती है)।

नियम ८१४ (छिदे र्दुहाव-णिच्छल्ल-णिज्झोड-णिव्वर-णिल्लूर-लूराः ४।१२४) छिद् धातु को दुहाव, णिच्छल्ल, णिज्झोड, णिव्वर, णिल्लूर और लूर—ये आदेश विकल्प से होते हैं। छिदति (दुहावइ, णिच्छल्लइ, णिज्झोडइ, णिव्वरइ, णिल्लूरइ, लूरइ, छिंदइ) छेदता है, खंडित करता है।

नियम ८१५ (आङा ओअन्दोद्दालौ ४।१२५) आ युक्त छिद् धातु को ओअन्द और उद्दाल आदेश विकल्प से होते हैं। आच्छिदति (ओअन्दइ, उद्दालइ, आच्छिन्दइ) हाथ से छीनता है।

नियम ८१६ (मृदो मल-मढ-परिहट्ट-खड्ड-चड्ड-मड्ड-पन्नाडाः ४।१२६) मृद्नाति को मल, मढ, परिहट्ट, खड्ड, चड्ड, मड्ड और पन्नाड—ये सात आदेश होते हैं। मृद्नाति (मलइ, मढइ, परिहट्टइ, खड्डइ, चड्डइ, मड्डइ, पन्नाडइ) मर्दन करता है।

नियम ८१७ (स्पन्देश्चुलुचुलः ४।१२७) स्पन्द् धातु को चुलुचुल आदेश विकल्प से होता है। स्पन्दते (चुलुचुलइ, फन्दइ) फड़कता है, थोड़ा हिलता है।

नियम ८१८ (निरः पदेर्वलः ४।१२८) निर् पूर्वक पद् धातु को वल आदेश विकल्प से होता है। निष्पद्यते (निव्वलइ, निप्पज्जइ) निष्पन्न होता है, सिद्ध होता है।

नियम ८१९ (विसंवदेर्विअट्ट-विलोट्ट-फंसाः ४।१२९) वि और सं पूर्वक वद् धातु को विअट्ट, विलोट्ट और फंस—ये आदेश विकल्प से होते हैं। विसंवदते (विअट्टइ, विलोट्टइ, फंसइ, विसंवयइ) अप्रमाणित होता है।

नियम ८२० (शदो झड-पक्खोडौ ४।१३०) शीयते को झड और पक्खोड आदेश होते हैं। शीयते (झडइ, पक्खोडइ) झड़ता है, पके फल गिरता है।

नियम ८२१ (आक्रन्दे र्णीहरः ४।१३१) आक्रन्दति को णीहर आदेश होता है। आक्रन्दति (णीहरइ) चिल्लाता है।

नियम ८२२ (खिदेर्जूर-विसूरौ ४।१३२) खिद् धातु को जूर और विसूर आदेश विकल्प से होता है। खिद्यते (जूरइ, विसूरइ, खिज्जइ) खेद करता है, अफसोस करता है।

नियम ८२३ (रुधेरुत्थङ्घः ४।१३३) रुध् धातु को उत्थंघ आदेश विकल्प से होता है। रुणद्धि, रुंधे (उत्थंघइ, रुंधइ) रोकता है।

नियम ८२४ (निषेधेर्हक्कः ४।१३४) निषेधति को हक्क आदेश विकल्प से होता है। निषेधति (हक्कइ, निसेहइ) निषेध करता है।

नियम ८२५ (क्रुधेर्जूरः ४।१३५) क्रुध् धातु को जूर आदेश विकल्प से होता है। क्रुध्यति (जूरइ, कुज्झइ) क्रोध करता है।

नियम ८२६ (जनो जा-जम्मौ ४।१३६) जायते को जा और जम्म आदेश होता है। जायते (जाअइ, जम्मइ) उत्पन्न होता है।

धातु प्रयोग वाक्य

धणगामो वणट्ठाणंमि णिच्चलइ, णिट्टुअइ, पज्झरइ, झरइ, पच्चडइ, खरइ वा। तुम कवाडं पइ तोडसि, तुट्टसि, खुट्टसि, खुडसि, उक्खुडसि, उल्लुक्कसि, णिलुक्कसि, लुक्कसि, उल्लूरसि, तुडसि वा? सो गामस्स बाहिं उज्जाणम्मि घुलइ, घोलइ, घुम्मइ, पहल्लइ वा। भूकंपेण भूमी ढंसइ, विवट्टइ वा। विज्जो आउव्वेयस्स ओसहाणं अट्टइ, कढइ वा। तुमं णीरं कहं घुसलसि, विरोलसि वा? विमला णिसेणिं गंठइ। तुम पुत्ताणं पाढेण अवअच्छइ। सो णिद्धणा भोअणं दाऊण अवअच्छइ। अस्सिम्म विज्जालये विज्जत्थिणो कत्थ णुमज्जन्ति? सो णावं दुहावइ, णिच्छल्लइ, णिज्झोडइ, णिव्वरइ, णिल्लूरइ, लूरइ, छिंदइ वा। धणजयो जोगिगणस्स हत्थत्तो पत्तं ओअंदइ, उद्दालइ, अच्छिंदइ वा। विजयो नगरे तंत मलइ, मढइ, परिहट्टइ, खड्डइ, चड्डइ, मड्डइ, पन्नाडइ वा। णवर मज्झ दाहिणभुआ चुलुचुलइ, फंदइ वा। मंतजवेण तस्स कज्जं निव्वलइ, निप्पज्जइ वा। तुज्झ वयणं विअट्टइ, विलोट्टइ, फंसइ, विसंवयइ वा। रुक्खत्तो पुप्फाइं झडंति, पक्खोडंति वा। जो णीहरइ सो कम्माइं बंधति। तुज्झ घरे साहू गोयरट्ठं आगओ तया तुम किमट्ठं जूरसि, विसूरसि खिज्जसि वा? भीडाए आगच्छियं बालं सो उत्थंघइ, रुंधइ वा। आयरिओ साहु तस्स घरं गमिउं कहं हक्कइ, निसेहइ वा? सो कस्स जूरइ, कुज्झइ वा। एगदिवहे केत्तिया बाला जाअंति, जम्मंति वा?

हिन्दी में अनुवाद करो

वासुदेवस्स पुत्तो ढंढो पत्तजोव्वणो सुणिऊण चाउमहव्वयाइं समणधम्मं परिच्चइय उदारे कामभोगे संसारविरत्तो अरिट्ठनेमिस्स सगासे निक्खंतो। तं गहिय दुविहसिक्खो विहरए भगवया सह। अन्नया उदय त पुव्वोवज्जियमंतराइय कम्म समिद्धेसु गामणगरेसु हिंडतो न लहइ कहिंचि भिक्खं। जया वि लहइ तया वि ज वा त वा। तेण सामी पुच्छिओ। पच्छा तेण अभिग्गहो गहिओ—जहा परस्स लाभो न मए गिण्हियव्वो। वासुदेवो भयवं वंदणत्थं बारवइं गओ। तित्थयरं पुच्छइ—एयासि अट्ठारसण्ह समणसाहस्सीणं को

दुक्करकओ ? भयवया भणिअं—जहा ढंढणअणगारो । सो कहिं ? सामी भणइ, नयरिं पविसंतो पेच्छिहिसि । दिट्ठो य सुक्को निम्मंससरीरो पसंतप्पा ढढणो अणगारो णयरिं पविसतेणं । तओ भत्तिनिब्भरमणेण ओयरिऊण करिवराओ, वदिओ सविणय, पमज्जिया सहत्थेण चलणा, पुच्छिओ य पजलिउडेण सुहविहारं । एक्केण इब्भसेट्ठिणा दिट्ठो चिंतिय च—जहा महप्पा एस कोइ तवस्सि, जो वासुदेवेण वि एव सम्माणिज्जइ । सो (ढढणो) य भवियव्वयावसेण तस्सेव घर पविट्ठो । तेण परमाए सद्धाए मोयगेहिं पडिलाभिओ । आगओ सामिस्स दावइ, पुच्छइ य—जहा मम लाभतराइयं खीणं ? सामिणा भण्णइ न खीणं, एस वासुदेवस्स लाभो त्ति । कहिओ सेट्ठिभत्तिकरणवइयरो तओ "न परलाभ उवजीवामि, न वा अन्नस्स देमि' त्ति अमुच्छियस्स परिट्ठवतस्स अस्खलितपरिणामस्स तस्स केवलनाणं समुप्पन्नं ।

प्राकृत में धातु प्रयोग करो

वह अपने शरीर को विभूषित करता है । तुम दीवार को क्यो तोडते हो ? स्तूप के ऊपर चक्र घूमता है । पोली जमीन जल्दी धसती है । तुम किन औषधियो का क्वाथ करते हो ? देवताओ और असुरो ने समुद्र का मथन किया था । गणधरो ने भगवान् महावीर की वाणी को गूथा जो आगम कहलाए । आपके आगमन से मैं बहुत खुश हू । धर्मेश भूखो को भोजन खिलाकर उन्हे खुश करता है । क्या वह जमीन पर नही बैठता है ? किस कारण से तुम मकान को खंडित करते हो ? उसने मेरे हाथ से पुस्तक छीन ली । वह प्रतिदिन मर्दन क्यो करता है ? दर्शनकेन्द्र पर ध्यान करने से वह स्थान फडकता है । गुरु के आशीर्वाद से कार्य निष्पन्न होता है । जंगल मे कौन चिल्लाता है ? भोजन मे तुम्हारे न आने से वह खेद करता है । तुम्हारे मार्ग को कौन रोकता है ? तुमको वहा जाने से कौन निषेध करता है ? जो क्रोध करता है, उसका शरीर पतला हो जाता है । जो उत्पन्न होता है वह एक दिन मरेगा ।

धातु का प्रयोग करो

एक परिवार मे तीन भाई थे । तीनो ही विवाहित थे । सबसे छोटा भाई अधिक बुद्धिमान था । उसकी पत्नी तीनो मे सबसे छोटी थी । इसलिए उसे काम भी अधिक करना पडता था । जिस दिन बडी वहू के खाना बनाने का क्रम आता उस दिन भी वह सहयोग करती । और जिस दिन दूसरे नम्बर की बहू का क्रम आता उस दिन भी वह सहयोग करती । यह नई बहू थी फिर भी दोनो बडी बहुओ से अधिक काम करती । काम करना उसके लिए भारी नही था । दुःख तो इस बात का था कि काम करने पर भी वह सासू की कृपापात्र नही थी । खाने को शेष रहा हुआ मिलता था । पति भी

माता का आज्ञाकारी पुत्र था। इसलिए वह अपनी पत्नी की बात पर ध्यान नही देता था। बहू के मन की बात सुनने वाला श्वसुर-पक्ष मे कोई नही था। मायके मे अपनी माता के पास आकर वह सारी घटना सुनाती थी। सुनाने से उसका दिल हल्का होता था।

प्रश्न

१. दीवार, पोला, क्रम, आज्ञाकारी, उपार्जित, मांसरहित, प्रसंग, स्तूप, मायका, पक्ष, भरपूर, नियम आदि शब्दो के लिए प्राकृत शब्द बताओ।

२. रोस, चिञ्च, गुड, लुरा, गुड्ड, घोल, पहल्ल, दंस, अड्ड, सुगन्ध गठ, अवअच्छ, भज्ज, दुहाव, लूर, ओअन्द, मग्ग, मट, चुलुचुल, वल, झड, णीहर, जूर, विसूर, उत्थंघ, जम्भ—ये आदेश किन-किन धातुओ को होता है?

१०५ धात्वादेश (६)

शब्द संग्रह

खत्तं (दे)—सेंध	अण्डं—अण्डा
चेड (दे)—दास, नौकर	कुक्कुटी—मुर्गी
उद्दवेउं—मारने के लिए	संतुट्ठो—संतुष्ट
धाहा (दे)—पुकार, चिल्लाहट	सुवण्णिअ (वि)—सोने का
मुक्खत्तण—मूर्खता	असंतोसो—असतोष
लोभो—लालच	

नियम ८२७ (तनेस्तड-तड्ड-तड्डव-विरल्लाः ४।१३७) तन् धातु को तड, तड्ड, तड्डव, विरल्ल—ये चार आदेश विकल्प से होते हैं। तनोति (तडइ, तड्डइ, तड्डवइ, विरल्लइ, तणइ) फैलाता है।

नियम ८२८ (तृपस्थिप्पः ४।१३८) तृप्यति को थिप्प आदेश होता है। तृप्यति (थिप्पइ) तृप्त होता है, संतुष्ट होता है।

नियम ८२९ (उपसर्पेरल्लिअः ४।१३९) उपपूर्वक सर्पति को अल्लिअ आदेश विकल्प से होता है। उपसर्पति (अल्लिअइ, उवसप्पइ)।

नियम ८३० (संतपे झंड्ख ४।१४०) संपूर्वक तप् धातु को झङ्ख आदेश विकल्प से होता है। सतपति (झङ्खइ, संतप्पइ) सतप्त होता है।

नियम ८३१ (व्यापेरोअग्गः ४।१४१) व्याप्नोति को ओअग्ग आदेश विकल्प से होता है। व्याप्नोति (ओअग्गइ, वावेइ) व्याप्त करता है।

नियम ८३२ (समापेः समाणः ४।१४२) समाप्नोति को समाण आदेश विकल्प से होता है। समाप्नोति (समाणइ, समावेइ) पूरा करता है। समास करता है।

नियम ८३३ (क्षिपेर्गलत्थाड्डक्ख-सोल्ल-पेल्ल-णोल्ल-छुह-हुल-परी-घत्ताः ४।१४३) क्षिप् धातु को गलत्थ, अड्डक्ख, सोल्ल, पेल्ल, णोल्ल, (ह्रस्वे णुल्ल) छुह, हुल, परी, घत्त—ये आदेश विकल्प से होते हैं। क्षिपति (गलत्थइ, अड्डक्खइ, सोल्लइ, पेल्लइ, णोल्लइ, (णुल्लइ), छुहइ, हुलइ, परीइ, घत्तइ, खिवइ) फेंकता है।

नियम ८३४ (उत्क्षिपे र्गुलगुञ्छोत्थंघाल्लत्थोब्भुत्तोस्सिक्क-हक्खुवाः ४।१४४) उत् पूर्वक क्षिप् धातु को गुलगुञ्छ, उत्थङ्घ, अल्लत्थ, उब्भुत्त, उस्सिक्क, हक्खुव—ये आदेश होते हैं। उत्क्षिपति (उक्खिवइ गुलगुञ्छइ,

उत्थङ्घइ, अल्लत्थइ, उब्भुत्तइ, उस्सिक्कइ, हक्खुवइ) ऊंचा करता है, उठाता है।

नियम ८३५ (आक्षिपेर्णीरवः ४।१४५) आ पूर्वक क्षिप् धातु को णीरव आदेश विकल्प से होता है। आक्षिपति (णीरवइ, अक्खिवइ) आक्षेप करता है।

नियम ८३६ (स्वपेः कमवस-लिस-लोट्टाः ४।१४६) स्वप् धातु को कमवस, लिस और लोट्ट—ये आदेश विकल्प से होते हैं। स्वपिति (कमवसइ, लिसइ, लोट्टइ, सुअइ) सोता है, लेटता है।

नियम ८३७ (वेपेरायम्बायज्झौ ४।१४७) वेप् धातु को आयम्ब और आयज्झ आदेश विकल्प से होते हैं। वेपते (आयम्बइ, आयज्झइ, वेवइ) कांपता है, हिलता है।

नियम ८३८ (विलपेर्झङ्ख-वडवडौ ४।१४८) वि पूर्वक लप् धातु को झङ्ख और वडवड आदेश विकल्प से होते हैं। विलपति (झंखइ, वडवडइ, विलवइ) विलाप करता है, चिल्लाता है।

नियम ८३९ (लिपो लिम्पः ४।१४९) लिम्पति को लिम्प आदेश होता है। लिम्पइ (लिम्पते) लीपता है।

नियम ८४० (गुप्येर्विर-णडौ ४।१५०) गुप्यति को विर और णड आदेश विकल्प से होता है। गुप्पइ (विरइ, णडइ, गुप्यति) व्याकुल होता है।

नियम ८४१ (क्रपोवहो णिः ४।१५१) कृप् धातु को णिजन्त अवह आदेश होता है। कृपा करोति (अवहावेइ) कृपा करता है।

नियम ८४२ (प्रदीपेस्तेअव-सन्दुम-सन्धुक्काब्भुत्ताः ४।१५२) प्रदीप्यति को तेअव, सन्दुम, सन्धुक्क, अब्भुत्त—ये चार आदेश होते हैं। प्रदीप्यति (तेअवइ, सन्दुमइ, सन्धुक्कइ, अब्भुत्तइ, पलीवइ) जलता है।

नियम ८४३ (लुभेः संभावः ४।१५३) लुभ्यति को संभाव आदेश विकल्प से होता है। लुभ्यति (संभावइ, लुब्भइ) लोभ करता है।

नियम ८४४ (क्षुभेः खउर-पड्डुहौ ४।१५४) क्षुभ् धातु को खउर और पड्डुह आदेश विकल्प से होते हैं। क्षुभ्यति (खउरइ, पड्डुहइ, खुब्भइ) क्षुब्ध होता है।

नियम ८४५ (आङो रभे रम्भ-ढवौ ४।१५५) आपूर्वक रभ् धातु को रम्भ और ढव आदेश विकल्प से होते हैं। आरभते (आरम्भइ, आढवइ, आरभइ) आरंभ करता है।

नियम ८४६ (उपालम्भेर्झङ्ख-पच्चार-वेलवाः ४।१५६) उपालंभते को झङ्ख, पच्चार और वेलव—ये तीन आदेश विकल्प से होते हैं। उपालंभते (झङ्खइ, पच्चारइ, वेलवइ उवालंभइ) उपालंभ देता है।

नियम ८४७ (अवेर्जृम्भो जम्भा ४।१५७) जृम्भति को जम्भा आदेश

होता है। वि सहित नही होता है। जृम्भति (जम्भाइ) जंभाइ लेता है। केलिपसरो विअम्भइ (केले के वृक्ष का फैलाव विकसित होता है)।

नियम ८४८ (भाराक्रान्ते नमेर्णिसुढः ४।१५८) भाराक्रान्त कर्ता हो तो नम् धातु को णिसुढ आदेश विकल्प से होता है। भाराक्रान्तो नमति (णिसुढइ, णवइ)।

नियम ८४९ (विश्रमेर्णिव्वा ४।१५९) विश्राम्यति को णिव्वा आदेश विकल्प से होता है। विश्राम्यति (णिव्वाइ, वीसमइ) विश्राम करता है।

नियम ८५० (आक्रमे रोहावोत्थारच्छुन्दाः ४।१६०) आक्रमति को ओहाव, उत्थार और छुन्द—ये तीन आदेश विकल्प से होते है। आक्रमति (ओहावइ, उत्थारइ, छुन्दइ, अक्कमइ) आक्रमण करता है।

नियम ८५१ (भ्रमेष्टिरिटिल्ल-ढुण्ढुल्ल-ढण्ढल्ल-चक्कम्म-भम्मड-भमड भमाड-तलअण्ट-झण्ट-झम्प-भुम-गुम-फुम-फुस-ढुम-ढुस-परी-पराः ४।१६१) भ्रम् धातु को टिरिटिल्ल आदि अठारह आदेश विकल्प से होते हैं। भ्रमति (टिरिटिल्लइ, ढुण्ढुल्लइ, ढण्ढल्लइ, चक्कम्मइ, भम्मडइ, भमडइ, भमाडइ, तलअण्टइ, झण्टइ, झम्पइ, भुमइ, गुमइ, फुमइ, फुसइ, ढुमइ, ढुसइ, परीइ, परइ, भमइ) घूमता है।

धातु प्रयोग वाक्य

वातो गंधं तडइ, तड्डइ, तड्डवइ, विरल्लइ, तणइ वा। तुज्झ महुरं वयण सुणिऊण अहं थिप्पामि। मुणी आयरिय अल्लिअइ, उवसप्पइ वा। केण कारणेण, तुम झङ्खसि, संतप्पसि वा? सोहुणो घयेण घड ओअग्गइ, वावेइ वा। आयरिओ कल्लं सिग्घं वक्खाण समाणिस्सइ, समाविस्सइ वा। रमेसो रुक्खस्स अवरिं पत्थराणि कह गलत्थइ, अड्डक्खइ, सोल्लइ, पेल्लइ, णोल्लइ, छुहइ, हुलइ, परीइ, घत्तइ, खिवइ वा? सुसीला तणस्स भार गुलगुञ्छइ, उत्थघइ, अल्लत्थइ, अब्भुत्तइ, उस्सिक्कइ, हक्खुवइ, उक्खिवइ वा। तुम महेसं कह णीरवसि, अक्खिवसि वा? किं सो गिम्हकाले वि दिवहे न कमवसइ, लिसइ, लोट्टइ, सुअइ वा? अप्पेणावि वातेण पाणियं आयम्बइ, आयज्झइ, वेवइ वा। किं तुज्झ भगिणी झङ्खइ, वडवडइ, विलवइ वा। विमला भीइं लिम्पइ। मुणी गिम्हकाले विहारम्मि विरइ, णडइ, गुप्पइ वा? गुरु सीस अवहावेइ। दीवो सयं तेअइ, सन्दुमइ, सन्धुक्कइ, अब्भुत्तइ, पलीवइ वा। तुम णवरं घणं संभावइ, लुब्भइ वा। तुज्झ पत्थरखेअणपमाएण पाणिअ खउरइ, पड्डुहइ, खुब्भइ वा। धम्मेसो अज्ज वागरणस्स अज्झयणं आरम्भइ, आढवइ, आरभइ वा। सासू पुत्तवहु झङ्खइ, पच्चारइ, वेलवइ, उवालम्भइ वा। अज्जाहं जम्भामि। रुक्खो णिसुढइ, णवइ वा। रुक्खम्मि पहिओ णिव्वाइ,

वीसमइ वा । सीहो पसुं ओहावइ, उत्थारइ, छुंदइ, अवक्कमइ वा । सो गामे कहं टिरिटिल्लइ, ढुण्ढुल्लइ, ढण्ढल्लइ, चक्कम्मइ, भम्मडइ, भमडइ, भमाडइ, तलअण्टइ, झण्टइ, झम्पइ, भुमइ, गुमइ, फुमइ, फुसइ, ढुमइ, ढुसइ, परीइ, परइ, भमइ वा ।

हिन्दी में अनुवाद करो

एगम्मि नयरे एगो चोरो । सो रत्तिं विभवसंपन्नेसु घरेसु खत्तं खणिउं सुबहुं दव्वजायं घेत्तु अप्पणो घरेगदेसे कूवं सयमेव खणित्ता तत्थ दव्वजायं पक्खिवइ । जहिच्छियं सुवन्नं दाऊण कन्नगं विवाहेउं पसूयं संतिं उद्दवेत्ता तत्थेवागडे पक्खिवइ "मा मे भज्जा चेडरूवाणि य पच्चप्पण्णाणि होऊण रयणाणि परस्स पगासिस्संति ।" एवं कालो वच्चइ । अन्नया तेणेगा कन्नगा विवाहिया अईवरूविणी । सा पसूया संती तेण न मारिया । दारगो य से अट्ठवरिसो जाओ । तेण चिंतियं—सुचिरं धारिया एयं पुव्वं उद्दवेउं पच्छा दारयं उद्दविस्सामि । तेण सा उद्दवेउं अगडे पक्खित्ता । तेण य दारगेण गिहाओ निग्गच्छिऊण वाहा कया । लोगो मिलिओ । तेण भन्नइ एएण मम माया मारिय त्ति । रायपुरिसेहिं सुयं । ते हिं गहिओ । दिट्ठो कूवो दव्वभरिओ अट्ठियाणि सुबहूणि । सो बंधेऊण रायसभं समुवणीओ जायणा पगारेहिं । सव्वं दव्वं दवावेऊण कुमारेण मारिओ ।

धातु का प्रयोग करो

गुणग्राही दूसरों के गुणों को फैलाता है । गुरु के दर्शन से श्रावक तृप्त होता है । भाई बहन के पास जाता है । मरुभूमि की गर्मी से लोग संतप्त होते हैं । गुणों से वह अपने को व्याप्त करता है । मैं अपने काम को पूर्ण करता हूं । वह तुम्हारे पर शब्दों का बाण फेंकता है । वह तुम्हारे हाथ को ऊंचा उठाता है । वे परस्पर एक-दूसरे पर आक्षेप करते हैं । वह प्रतिदिन दिन में लेटता है । राजा के भय से जनता कांपती है । इस घर में बहनें क्यों विलाप करती हैं ? विमला घर के आंगन को चतुराई से लीपती है । कौन किस पर कृपा करता है ? आज दीपक क्यों नहीं जलता है ? जो लोभ करता है, क्या वह अधिक कमाता है ? कभी-कभी प्रकृति भी क्षुब्ध होती है । मैं अपने ग्रंथ निर्माण का कार्य कल आरंभ करूंगा । तुम उसको क्यों उपालंभ देते हो ? वह बार-बार क्यों जंभाई लेता है ? पेड़ फलों के भार से झुकते हैं, (नमते हैं ।) जो जलता है, वह विश्राम करता है । कौन देश किस देश पर आक्रमण करता है ? समय की सूई प्रतिक्षण घूमती है ।

प्राकृत में अनुवाद करो

एक किसान के पास एक मुर्गी थी, जो प्रतिदिन सोने का एक अण्डा देती थी । वह लालची मनुष्य इससे संतुष्ट नहीं था । एक दिन उसने सोचा

यह मुर्गी मुझे प्रतिदिन एक ही अण्डा देती है। इसके पेट मे सोने के ऐसे बहुत से अण्डे होगे। यदि मैं इन सभी को एक ही समय मे पाऊं तो मैं धनी हो सकता हूं। अतएव उसने मुर्गी को मारकर उसके पेट को छुरी से काट दिया। लेकिन उसके पेट मे एक अण्डा भी नही मिला। इस प्रकार जो वह सोने का अण्डा प्रतिदिन पाता था, समाप्त हो गया। साथ ही वह मुर्गी भी समाप्त हो गई। किसान ने अपनी मूर्खता पर खेद प्रकट किया और पश्चात्ताप मे डूब गया। वस्तुतः असंतोष और लालच सब दु खो की जड है।

प्रश्न

१. सेंध, दास, पुकार, मूर्खता, अंडा, मुर्गी, सतुष्ट, असतोष के लिए प्राकृत शब्द बताओ।

२. विरल्ल, थिप्प, अल्लिअ, झङ्ख, ओभग्ग, समाण, पेल्ल, उत्थंघ, सोल्ल, णीरव, कमवस, आयम्व, झङ्ख, तडवड, लिम्प, णड, अवह, सन्दुम, संभाव, खउर, आढव, झङ्ख, पच्चार, जम्भ, णिसुढ, उत्थार, झुण्ट, झम्प आदेश किन-किन धातुओ को होता है?

शब्द संग्रह

ऋद्धिसंपन्न—खद्धादाणिअ (वि)	अनार्य देश—पच्चंतो
पहनना—आविध (धातु)	छिपाना—गोव (धातु)
दूरकरना—अवणी (धातु)	वापस लौट गया—अवक्कंत (वि)

नियम ८५२ (गमेरई अइच्छाणुवज्जावज्जसोक्कुसाक्कुस-पच्चड्ड-पच्छन्द-णिम्मह-णी-णीण-णीलुक्क-पदअ-रम्भ-परिअल्ल-वोल-परिअल-णिरिणास-णिवहावसेहावहराः ४।१६२) गम् धातु को अई आदि इक्कीस आदेश विकल्प से होते हैं। गच्छति (अईइ, अइच्छइ, अणुवज्जइ, अवज्जसइ, उक्कुसइ, अक्कुसइ, पच्चड्डइ, पच्छंदइ, णिम्महइ, णीइ, णीणइ, णीलुक्कइ, पदअइ, रम्भइ, परिअल्लइ, वोलइ, परिअलइ, णिरिणासइ, णिवहइ, अवसेहइ, अवहरइ, गच्छइ, हम्मइ) जाता है। णिहम्मइ, णीहम्मइ, आहम्मइ, पहम्मइ—ये हम्म धातु से बनते हैं।

नियम ८५३ (आङा अहिपच्चुअः ४।१६३) आ सहित गम् धातु को अहिपच्चुअ आदेश विकल्प से होता है। आगच्छति (अहिपच्चुअइ, आगच्छइ) आता है।

नियम ८५४ (समा अब्भिडः ४।१६४) सपूर्वक गम् धातु को अब्भिड आदेश विकल्प से होता है। सगच्छते (अब्भिडइ, सगच्छइ) मिलता है, संगति करता है।

नियम ८५५ (अभ्यडोम्मत्थः ४।१६५) अभि और आ सहित गम् धातु को उम्मत्थ आदेश विकल्प से होता है। अभ्यागच्छति (उम्मत्थइ, अब्भागच्छइ) सामने आता है।

नियम ८५६ (प्रत्याङा पलोट्टः ४।१६६) प्रति और आ सहित गम् धातु को पलोट्ट आदेश विकल्प से होता है। प्रत्यागच्छति (पलोट्टइ, पच्चागच्छइ) वापस आता है।

नियम ८५७ (शमेः पडिसा-परिसामौ ४।१६७) शम् धातु को पडिसा और परिसाम आदेश विकल्प से होता है। शाम्यति (पडिसाइ, परिसामइ, समइ) शांत होता है।

नियम ८५८ (रमेः संखुड्ड-खेड्डोब्भाव-किलिकिञ्च-कोट्टुम-मोट्टाय णीसर-वेल्लाः ४।१६८) रम् धातु को संखुड्ड, खेड्ड, उब्भाव, किलिकिञ्च,

कोट्टुम, मोट्टाय, णीसर, वेल्ल—ये आदेश विकल्प से होते हैं। रमति (सखुड्डइ, खेड्डइ, उब्भावइ, किलिकिञ्चइ, कोट्टुमइ, मोट्टायइ, णीसरइ, वेल्लइ, रमइ) क्रीडा करता है।

नियम ८५९ (पूरेरग्घाडाग्घवोद्धुमाङ्गुमाहिरेमाः ४।१६९) पूर् धातु को अग्घाड, अग्घव, उद्धुम, अङ्गुम, अहिरेम—ये आदेश विकल्प से होते हैं। पूरयति (अग्घाडइ, अग्घवइ, उद्धुमाइ, अङ्गुमाइ, अहिरेमइ, पूरइ) पूरा करता है, पूर्ति करता है।

नियम ८६० (त्वरस्तुवर-जअडौ ४।१७०) त्वरति को तुवर और जअड आदेश विकल्प से होता है। त्वरति (तुवरइ, जअडइ) शीघ्र होता है, तेज होता है।

नियम ८६१ (त्यादिशत्रोस्तूर ४।१७१) त्वरति को ति (तिप्) आदि और शतृ प्रत्यय परे हो तो तूर आदेश होता है। त्वरति (तूरइ) त्वरन् (तूरन्तो) शीघ्र होता हुआ।

नियम ८६२ (तुरोत्यादौ ४।१७२) अत्यादि (तिप् आदि छोड) प्रत्यय परे हो तो त्वर् धातु को तुर आदेश होता है। त्वरन् (तुरिओ, तुरन्तो)।

नियम ८६३ (क्षरः खिर-झर-पज्झर-पच्चड-णिच्चल-णिट्टुआः ४।१७३) क्षर् धातु को खिर, झर, पज्झर, पच्चड, णिच्चल, णिट्टुअ—ये छह आदेश होते हैं। क्षरति (खिरइ, झरइ, पज्झरइ, पच्चडइ, णिच्चलइ, णिट्टुअइ) टपकता है, गिरता है।

नियम ८६४ (उच्छल उत्थल्ल ४।१७४) उच्छलति को उत्थल्ल आदेश होता है। उच्छलति (उत्थल्लइ) उछलता है।

नियम ८६५ (विगलेस्थिप्प-णिट्टुहौ ४।१७५) विगलति को थिप्प और णिट्टुह आदेश विकल्प से होते हैं। विगलति (णिट्टुहइ, विगलइ) गल जाता है, नष्ट हो जाता है।

नियम ८६६ (दलि-वल्यो विसट्ट-वम्फौ ४।१७६) दल् धातु को विसट्ट और वल् धातु को वम्फ आदेश विकल्प से होता है। दलयति (विसट्टइ, दलइ) विकसता है, फटता है। वलते (वम्फइ, वलइ) लौटता है, वापस आता है।

नियम ८६७ (भ्रंशेः फिड-फिट्ट-फुड-फुट्ट-चुक्क-भुल्लाः ४।१७७) भ्रंश् धातु को फिड, फिट्ट, फुड, फुट्ट, चुक्क और भुल्ल—ये छह आदेश विकल्प से होते हैं। भ्रश्यति (फिडइ, फिट्टइ, फुडइ, फुट्टइ, चुक्कइ, भुल्लइ, भसइ) च्युत होता है, गिरता है।

नियम ८६८ (नशेर्णिरणास-णिवहावसेह-पडिसा-सेहावहराः ४।१७८) नश् धातु को णिरणास, णिवह, अवसेह, पडिसा, सेह, अवरेह—ये आदेश विकल्प से होते हैं। नश्यति (णिरणासइ, णिवहइ, अवसेहइ, पडिसाइ,

सेहइ, अवरेहइ, नस्सइ) भागता है, पलायन करता है।

नियम ८६६ (अवात् काशो वासः ४।१७६) अव से परे काश् धातु को वास आदेश होता है। अवकाशते (ओवासइ) अवकाश पाता है।

नियम ८७० (संदिशेरप्पाहः ४।१८०) संदिशति को अप्पाह आदेश विकल्प से होता है। संदिशति (अप्पाहइ, संदिसइ) संदेश देता है।

नियम ८७१ (दृशोनिअच्छपेच्छावयच्छावयज्झ-वज्ज-सव्वव-देक्खो अक्खावक्खावअक्ख-पुलोअ-पुलअ-निआवआस-पासाः ४।१८१) दृश् धातु को निअच्छ आदि पन्द्रह आदेश होते हैं। पश्यति (निअच्छइ, पेच्छइ, अवयच्छइ, अवयज्झइ, वज्जइ, सव्ववइ, देक्खइ, ओअक्खइ, अवक्खइ, अवअक्खइ, पुलोएइ, पुलएइ, निअइ, अवआसइ, पासइ) देखता है।

धातु प्रयोग वाक्य

किं समणीओ विएन अउंति, अइच्छंति, अणुवज्जंति, अवज्जसंति, उक्कुसंति, अक्कुसंति, पच्चड्डुंति, पच्छंदंति, णिम्महंति, णीति, णीणंति, णीलुक्कंति, पदअंति, रम्भंति, परिअल्लंति, वोलंति, परिअलंति, णिरिणासंति, णिवहंति, अवसेहंति, अवहरंति, गच्छंति वा। मनीसा विएगाओ अहिपच्चुअंति, आगच्छंति वा। सावगो साहुणो अभिमहुटइ, संगच्छइ वा। सो तुम उम्मत्थइ, अब्भागच्छइ। बालो विज्जालयाओ पल्लोट्टइ, पच्चागच्छइ वा। उवज्झायं पासिऊण विज्जट्ठिणो पटिसाति, परिसामति, समति वा। बाला उज्जाणे संखुट्टंति, खेड्डंति, उब्भावंति, किलिकिंचंति, कोट्टुमंति, मोट्टायंति, णीसरंति, वेल्लंति वा। तुज्झ गंथं अहं अग्घाडामि अग्घवामि, उद्धुमामि, अङ्गुमामि, अहिरेमामि, पूरामि वा। पहिओ वरिसं पासिऊण तुवरइ, जअडइ वा। तुरन्तो पहिओ पडइ। तुज्झ सिरकेसाओ पाणियबिंदूइं खिरंति, झरंति, पज्झरंति, पच्चडंति, णिच्चलंति, णिट्टुअंति वा। विवादे ईसरो उत्थल्लइ। कालपभावाओ नव्वाइं वत्थाइं वि णिट्टुहंति, विगलंति वा। रुक्खस्स पुप्फाइं विसट्टंति, दलंति वा। मंती णियदेसं वम्फइ, वलइ वा। समयं पूरित्ता देवा देवलोगाओ फिड्डंति, फिट्टंति, फुडंति, फुट्टंति, चुक्कंति भुल्लंति वा। साहूणं परीसेहिंतो पराभूओ सो णिरणासइ, णिवहइ, अवसेहइ, पडिसाइ, सेहइ, अवरेहइ, नस्सइ वा। किं तुम दिणे न ओवाससि? आयरियो जणा अप्पाहइ, संदिसइ वा। सो णियावगुणा निअच्छइ, पेच्छइ, अवयच्छइ, अवयज्झइ, वज्जइ, सव्ववइ, देक्खइ, ओअक्खइ, अवक्खइ, अवअक्खइ, पुलोएइ, पुलएइ, निअइ, अवआसइ, पासइ वा।

हिन्दी में अनुवाद करो

एगो मरुओ परदेसं गतूण साहापाराओ होऊण सविसयमागओ। तस्सऽन्नेण मरुएण 'ब्रह्मादाणिअ' त्तिकाउ दारिगा दिन्ना। सो य लोए

दक्खिणाओ लहइ। परे विभवे वट्टइ। तेण तीसे भारियाए सुबहुं अलंकारजायं दिन्न। सा निच्चमडिया अच्छइ। तेण भन्नइ—एस पच्चतगामो तो तुमं एयाणि आभरणणाणि तिहिपव्वणीसु आविधाहि, कहिं चि चोरा आगच्छेज्जा तो सुहं गोविज्जंति। सा भणइ—अह ताए वेलाए सिग्घमेवावणिस्सामि। अन्नया तत्थ चोरा पडिया। ते तमेव निच्चमडिया गिहमणुपविट्ठा। सा तेहिं सालकारा गहिया। सा य पणीयभोयणत्ताओ मसोवच्चियपाणिपाया न सक्कइ कडाईणि अवणेउ। तओ चोरेहिं तीसे हत्थे पाए छेत्तूण अवणीयाणि गिण्हिउं च अवक्कंता।

धातु का प्रयोग करो

वह अपने काम पर जाता है। जो जाता है वह कहा आता है? वह अच्छे व्यक्तियो की संगति करता है। श्रावक स्वागत के लिए साधुओ के सामने आते है। जो जाता है वह यहां वापस नही आता। उसके ध्यान से क्रोध शात होता है। क्या बालक सारे दिन क्रीडा करेगा? तुम्हारा अपूर्ण वाक्य मैं पूरा करता हू। वह युद्ध की गति को तेज करता है। मकान की छत से वर्षा की बूदे टपकती है। भडभुजे का चना गर्म रेत से उछलता है। बर्फ गलती है। अकुर फूटता है। पाच वर्षो के बाद वह अपने देश वापस आता है। जो धर्म से च्युत होता है उसके लिए स्थान कौन-सा है? किस दु ख के कारण तुम घर से पलायन करते हो? प्रधानमत्री देश को सदेश देता है। ईर्ष्या स्त्री जाति का जातिगत स्वभाव है। पुरुष का हृदय कठोर होता है। स्त्री का हृदय कोमल होता है। मनुष्य दूसरे की प्रगति को सहन नही करता है। किसी पर सदेह से आरोप मत लगाओ। अपनी संकल्पशक्ति बढाओ। संकल्प से असंभव कार्य भी सभव हो जाता है। मैं तुम्हारी प्रतीक्षा मे बहुत समय से वर्षा मे खडा हूं।

प्राकृत में अनुवाद करो

एक वृद्ध आदमी के छ पुत्र थे। वे हमेशा एक दूसरे से लडते थे। बूढे आदमी ने हर प्रकार से उनके बीच पारस्परिक स्नेह उत्पन्न करने का प्रयत्न किया। लेकिन उसके सारे प्रयास व्यर्थ हुए। अन्तत. एक दिन उसने सभी को अपने समक्ष बुलवाया। उसने उन्हे छडियो का एक बंडल दिया और बारी-बारी से उसे तोडने का आदेश दिया। क्रमानुसार प्रत्येक ने पूरे बल के साथ प्रयत्न किया लेकिन कार्य सिद्ध न हुआ। उसके बाद पिता ने बडल को खोल देने की आज्ञा दी। उसमे से प्रत्येक को एक-एक छडी देकर उसे दो भागो मे तोडने का आदेश दिया। बिना किसी प्रयास के प्रत्येक ने छडी तोड दी। पिता ने पुत्रो को कहा—एकता की शक्ति देखो। यदि तुम मित्रता के बंधन मे बधे रहोगे तो तुम्हे कोई भी हानि पहुंचाने मे समर्थ न होगा। यदि

तुम एक दूसरे से घृणा करोगे और आपस में कलह करोगे तो तुम लोग आसानी से शत्रुओं के शिकार हो जाओगे ।

प्रश्न

१. बर्फ, ऋद्धिसंपन्न, अंकुर, अनार्यदेश, वापस लौटना –इनके लिए प्राकृत शब्द बताओ ।

२. खद्धादाणिअ और आविच, अवणी तथा गोव धातु का अपने वाक्य में प्रयोग करो ।

३. णिम्मह, णीण, अहिपच्चुअ, अब्भिड, उम्मत्थ, पन्नोट्ट, पडिसा, परिसाम, उब्भाव, मोट्टाय, उद्धुम, अहिराग, तुवर, थिर, पज्झर, उत्थल्ल, णिट्टुह, विसट्ट, वम्फ, फिड, चुक्क, णिवह, ओवास, अप्पाह, अवयच्छ, पुलोअ आदेश किन-किन धातुओ को होता है ?

१०७ धात्वादेश (८)

शब्द संग्रह

दीक्षित—पव्वइयो
विश्राम—विस्सामं
प्रद्वेष—पओसो
हाकना—खेड (धातु)
गवाले की लडकी—गोवदारया
देखता हुआ—पलोइतो
उत्पथ—उप्पहो
बहुश्रुत, शास्त्रज्ञ—बहुस्सुओ
पास जाता हुआ—उवसप्पंत
अणालोड्य—प्रायश्चित्त के लिए अपने दोष को गुरु को न बताना
व्याकुल—अक्खित्त (वि)
पास—अब्भास (वि)

नियम ८७२ (स्पृशः फास-फंस-फरिस-छिव-छिहालुङ्खालिहाः ४।१८२) स्पृशति को फास, फस, फरिस, छिव, छिह, आलुङ्ख और आलिह—ये सात आदेश होते हैं। स्पृशति (फासइ, फसइ, फरिसइ, छिवइ, छिहइ, आलुङ्खइ, आलिहइ) छूता है।

नियम ८७३ (प्रविशेरिअः ४।१८३) प्रविशति को रिअ आदेश विकल्प से होता है। प्रविशति (रिअइ, पविसइ) प्रवेश करता है।

नियम ८७४ (प्रान्मृश-मुषोर्म्हुसः ४।१८४) प्र पूर्वक मृशति और मुष्णाति को म्हुस आदेश होता है। प्रमृशति (पम्हुसइ) स्पर्श करता है। प्रमुष्णाति (पम्हुसइ) चोरी करता है।

नियम ८७५ (पिषेर्णिवह-णिरिणास-णिरिणज्ज-रोञ्च-चड्डाः ४।१८५) पिष् धातु को णिवह, णिरिणास, णिरिणज्ज, रोञ्च, चड्ड—ये पाच आदेश विकल्प से होते हैं। पिनष्टि (णिवहइ, णिरिणासइ, णिरिणज्जइ, रोञ्चइ, चड्डइ, पीसइ) पीसता है।

नियम ८७६ (भषेर्भुक्कः ४।१८६) भष् धातु को भुक्क आदेश विकल्प से होता है। भषति (भुक्कइ, भसइ) भौंकता है।

नियम ८७७ (कृषेः कड्ढ-साअड्ढाञ्चाणच्छायञ्छाइञ्छाः ४।१८७) कृष् धातु को कड्ढ, साअड्ढ, अञ्च, अणच्छ, अयञ्छ, आइञ्छ—ये छ आदेश विकल्प से होते हैं। कर्षति (कड्ढइ, साअड्ढइ, अञ्चइ, अणच्छइ, अयञ्छइ, आइञ्छइ, करिसइ) खींचता है।

नियम ८७८ (असावक्खोडः ४।१८८) असि विषय में कृष् धातु को अक्खोड आदेश होता है। असिं कोशात् कर्षति (अक्खोडइ)।

नियम ८७६ (गवेषेर्डुण्ढुल्ल-ढण्ढोल-गमेस-घत्ताः ४।१८६) गवेष् धातु को ढुण्ढुल्ल, ढण्ढोल, गमेस, घत्त—ये चार आदेश विकल्प से होते हैं। गवेषयति (ढुण्ढुल्लइ, ढण्ढोलइ, गमेसइ, घत्तइ, गवेसइ) ढूढ़ता है, खोजता है।

नियम ८८० (श्लिषेः सामग्गावयास-परिअन्ताः ४।१९०) श्लिष्यति को सामग्ग, अवयास, परिअन्त—ये तीन आदेश विकल्प से होते हैं। श्लिष्यति (सामग्गइ, अवयासइ, परिअन्तइ, सिलेसइ) आलिंगन करता है।

नियम ८८१ (म्रक्षेश्चोप्पडः ४।१९१) म्रक्ष् धातु को चोप्पड आदेश विकल्प से होता है। म्रक्षति (चोप्पडइ, मक्खइ) चोपड़ता है।

नियम ८८२ (काङ्क्षेराहाहिलङ्घाहिलङ्ख-वच्च-वम्फ-मह-सिह-विलुम्पाः ४।१९२) काङ्क्षति को आह, अहिलंघ, अहिलङ्ख, वच्च, वम्फ, मह, सिह, विलुम्प—ये आठ आदेश विकल्प से होते हैं। काङ्क्षति (आहइ, अहिलङ्घइ, अहिलङ्खइ, वच्चइ, वम्फइ, महइ, सिहइ, विलुम्पइ, कङ्खइ) चाहता है।

नियम ८८३ (प्रतीक्षेः सामय-विहीर-विरमालाः ४।१९३) प्रतीक्षते को सामय, विहीर, विरमाल—ये तीन आदेश विकल्प से होते हैं। प्रतीक्षते (सामयइ, विहीरइ, विरमालइ, पडिक्खइ) प्रतीक्षा करता है।

नियम ८८४ (तक्षेस्तच्छ-चच्छ-रम्प-रम्फाः ४।१९४) तक्ष् धातु को तच्छ, चच्छ, रम्प, रम्फ—ये चार आदेश विकल्प से होते हैं। तक्ष्णोति (तच्छइ, चच्छइ, रम्पइ, रम्फइ, तक्खइ) पतला करता है, छीलता है।

नियम ८८५ (विकसेः कोआस-वोसट्टौ ४।१९५) विकसति को कोआस, वोसट्ट—ये दो आदेश विकल्प से होते हैं। विकसति (कोआसइ, वोसट्टइ, विअसइ)—विकास करता है।

नियम ८८६ (हसेर्गुञ्जः ४।१९६) हसति को गुञ्ज आदेश विकल्प से होता है। हसति (गुञ्जइ, हसइ हसता है।

नियम ८८७ (स्रंसेर्ल्हस-डिम्भौ ४।१९७) स्रंस् धातु को ल्हस, डिम्भ —ये दो आदेश विकल्प से होते हैं। स्रंसते (ल्हसइ, डिम्भइ, संसइ) खिसकता है, नीचे गिरता है।

नियम ८८८ (त्रसेर्डर-वोज्ज-वज्जाः ४।१९८) त्रस् धातु को डर, वोज्ज और वज्ज—ये तीन आदेश विकल्प से होते है। त्रस्यति, त्रसति (डरइ, वोज्जइ, वज्जइ, तसइ) डरता है।

नियम ८८९ (न्यसो णिम-णुमौ ४।१९९) न्यस्यति को णिम और णुम आदेश होते हैं। न्यस्यति (णिमइ, णुमइ) स्थापना करता है।

नियम ८९० (पर्यसः पलोट्ट-पल्लट्ट-पल्हत्थाः ४।२००) पर्यस्यति को पलोट्ट, पल्लट्ट, पल्हत्थ—ये तीन आदेश होते हैं। पर्यस्यति (पलोट्टइ, पल्लट्टइ, पल्हत्थइ) फेंकता है।

नियम ८९१ (निःश्वसेर्झङ्ख ४।२०१) निःश्वसिति को झङ्ख आदेश विकल्प से होता है। निःश्वसिति (झङ्खइ, नीससइ) नीसास लेता है।

नियम ८९२ (उल्लसेरूसलोसुम्भ-णिल्लस-पुलआअ-गुञ्जोल्लारोआः ४।२०२) उल्लसति को ऊसल, ऊसुम्भ, णिल्लस, पुलआअ, गुञ्जोल्ल, आरोअ—ये छ आदेश विकल्प से होते हैं। उल्लसति (ऊसलइ, ऊसुम्भइ, णिल्लसइ, पुलआअइ, गुञ्जोल्लइ ह्रस्वे गुञ्जुल्लइ आरोअइ, उल्लसइ) उल्लास पाता है।

नियम ८९३ (भासेर्भिसः ४।२०३) भास् धातु को भिस आदेश विकल्प से होता है। भासते (भिसइ, भासइ) शोभता है, चमकता है।

नियम ८९४ (ग्रसेर्घिसः ४।२०४) ग्रसति को घिस आदेश विकल्प से होता है। ग्रसति (घिसइ, गसइ) निगलता है।

नियम ८९५ (अवाद्गाहेर्वाहः ४।२०५) अव से परे गाह् को वाह आदेश विकल्प से होता है। अवगाहते (ओवाहइ, ओगाहइ) अवगाहन करता है।

नियम ८९६ (आरुहेश्चड-वलग्गौ ४।२०६) आरोहति को चड और वलग्ग आदेश विकल्प से होते हैं। आरोहति (चडइ, वलग्गइ, आरुहइ) चढता है।

नियम ८९७ (मुहे र्गुम्म-गुम्मडौ ४।२०७) मुह् धातु को गुम्म और गुम्मड आदेश विकल्प से होता है। मुह्यति (गुम्मइ, गुम्मडइ, मुज्झइ) मुग्ध होता है।

नियम ८९८ (दहेरहिऊलालुङ्खौ ४।२०८) दहति को अहिऊल और आलुङ्ख आदेश विकल्प से होता है। दहति (अहिऊलइ, आलुङ्खइ) जलाता है।

नियम ८९९ (ग्रहो-वल-गेण्ह-हर-पङ्ग-निरुवाराहिपच्चुआः ४।२०९) ग्रह् धातु को वल, गेण्ह, हर, पङ्ग, निरुवार और अहिपच्चुअ—ये आदेश विकल्प से होते हैं। गृह्णाति (वलइ, गेण्हइ, हरइ, पङ्गइ, निरुवारइ, अहि-पच्चुअइ) ग्रहण करता है।

धातु प्रयोग

पुत्तो पिअरस्स चरणा फासइ, फंसइ, फरिसइ, छिवइ, छिहइ, आलुङ्खइ, आलिहइ वा। मुणी चाउम्मासस्स पवेसाय णयरं रिअइ, पविसइ वा। सो तुज्झ सरीरं कहं पम्हुसइ? चोरो कस्स गिहं पम्हुसइ? मनीसा गोहूमं णिवहइ, णिरिणासइ, णिरिणज्जइ, रोञ्चइ, चड्डइ, पीसइ वा। कुक्कुरो भुक्कइ, भसइ वा। किसीवलो हलं कड्ढइ, साअड्ढइ, अञ्चइ, अणच्छइ, अयञ्छइ, आइञ्छइ। सेट्ठिणी पलवं ढुण्ढुल्लइ, ढण्ढोलइ, गमेसइ, घत्तइ,

गवेसइ वा। माआ पुत्ति सामग्गइ, अवयासइ, परिअन्तइ, सिलेसइ वा। भगिणी रुट्ठिअ चोप्पडइ, मक्खइ वा। तुमं किं अहिलंघसि, अहिलखसि, वच्चसि, वम्फसि, महसि, सिहसि विलुंपसि वा ? सो क सामयइ, विहीरइ, विरमालइ, पडिक्खइ वा। मोहणो लोभं तच्छइ, चच्छइ, रम्पइ, रम्फइ, तक्खइ वा ? रामो पइदिण कोआसइ, वोसट्टइ, विअसइ वा। तुमं कहं गुञ्जसि, हससि वा ? सण्हागणे पाया ल्हसंति, टिम्भति, ससंति वा। भगिणी णिसाए भूआओ डरइ, वोज्जइ, वज्जइ, तसइ वा। सो गिहे पडिमं णिमइ, णुमइ वा। रामो सरं पलोट्टइ, पल्लट्टइ, पल्हत्थइ वा। पत्तेयजीवो पऽक्खण भइइ, नीससइ वा। पुत्तस्स पगइं पासिऊण माआ ऊसलइ, ऊसुम्भइ, णिल्लसइ, पुलआअइ, गुञ्जो, ल्लइ, आरोअइ, उल्लसइ वा। तुज्झ कंठे हारो भिसइ, भासइ वा। धेणू तणाइं घिसइ, गसइ वा। मुणी अगसुत्ताणि ओवाहइ, ओगाहइ वा। मुणी झाणसेणिं चडइ, वलग्गइ, आरुहइ वा। तुम तस्स रुक्खस्स उवरिं कह गुम्मइ, गुम्मडइ, मुज्झइ वा ? तुज्झ ववहारो मज्झ हिअयं अहिऊलइ, आलुंखइ वा। सो तुज्झ पाणिं वलइ, गेण्हइ, हरइ, पङ्गइ, निरुवारइ, अहिपच्चुअइ वा।

हिन्दी में अनुवाद करो

दो भायरो पव्वइया। तत्थेगो बहुस्सुओ, एगो अप्पसुओ। जो बहुस्सुओ सो आयरिओ। सो सीसेहिं सुत्तत्थाणं निमित्तमुवसप्पतेहिं दिवसओ विस्सामं न लभइ। रत्तिं पि परिपुच्छणाईहिं सुविउं न लहइ। जो सो अप्पसुओ सो दिवसओ रत्तीए य सेच्छाए (स्वेच्छा) अच्छइ। अन्नया सो आयरिओ चिंतेइ—मे भाया पुन्नवंतो जो सुहं जेमेऊण सुहेण सुयइ। अम्हं पुण मंदपुन्नाणं रत्तिं पि निद्दा नत्थि। एवं च नाणपओसओ तेण नाणावरणिज्जं कम्म बद्ध। सो तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंतो कालमासे कालं किच्चा देवलोएसु उववन्नो। तओ चुओ इहेव भारहे वासे आहीरघरे दारओ जाओ। कमेण वड्ढिओ जोव्वणत्थो जाओ विवाहिओ य। दारिया जाया अतीवरूववई। सा य भद्दकन्नया। कयाणि ताणि पियापुत्ताणि अन्नेहिं आभीरेहिं समं सगड घयस्स भरेऊण नगरं विक्किणणट्ठं पट्ठियाणि। सा य कन्नया सारहित्तं सगडस्स करेइ। ततो ते गोवदारया तीए रूवेणऽक्खित्ता तीसे सगडस्स अब्भासगयाइं सगडाइ उप्पहेण खेडंति तं पलोइंता। ताइं सव्वाइं सगडाइं उप्पहेणं भग्गाइं। तओ तीए नामक कयं 'असगड' त्ति इयरस्स 'असगडपिय' त्ति। तस्स त चेव वेरग्ग जायं। तं दारियं परिणावेउ सव्वं च घरसारं दाऊण पव्वइओ।

धातु का प्रयोग करो

श्रावक साध्वियो को नही छूते है। वह अपने नए घर मे शुभ वेला मे प्रवेश करता है। उसका छोटा पुत्र अभी चोरी क्यो करता है ? अधिकारी ने कहा—समय आने पर मैं उसको पीस दूगा। कुत्ता रात मे कब भौंकता है ?

वह मुश्किल से अपने परिवार का भार खीचता है। क्षत्रिय म्यान से तलवार को किसलिए खीचता है? साधु घर-घर मे जाकर शुद्ध आहार को खोजता है। शीत से बचाने के लिए माता बच्चे का आलिंगन करती है। रोगी तेल से अपने शरीर को चोपडता है। तुम मुझ से क्या चाहते हो? प्रतिदिन मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करता हू। साधु अपने पात्र को पतला करता है। प्रति वर्ष वह विकास करता है। बात कहने से पूर्व वह क्यों हंसता है? पहाड से बर्फ नीचे गिरती है। कठोर अनुशासन से सब डरते है। कौन वस्तु तुम मेरे लिए स्थापना करते हो? बालक क्रोध से पुस्तक को फेंकता है। उसने उच्छ्वास लिया पर निःश्वास नही लिया। शिष्य गुरु के पास रहकर उल्लास पाता है। उसके शरीर पर धुले हुए श्वेत वस्त्र अधिक शोभते हैं। सांप चूहे को निगल जाता है। उसने २५ वर्षों तक सूत्रो का अवगाहन किया। वह क्रमशः ऊपर चढता है। तुम किस रूप पर मुग्ध हुए हो?

प्राकृत में अनुवाद करो

एक वृद्ध मनुष्य अपने उद्यान मे आम्र वृक्षों के रोपने मे अत्यन्त-परिश्रम कर रहा था। एक युवक मनुष्य ने उन्हे देखकर हंसी उडाई और कहा—आपके ये प्रयत्न अत्यन्त निरर्थक हैं। आप अत्यन्त वृद्ध हैं और इन वृक्षो के फलो का स्वाद लेने के लिए आप जीवित नही रहेगे। वृद्ध मनुष्य ने शातिपूर्वक अपनी आखे उठायी और युवक पुरुष की ओर देखते हुए कहा—प्यारे बच्चे! तुमने अच्छा प्रश्न किया है। मेरे जन्म लेने के पूर्व ही किसी ने इन विशाल वृक्षों को उद्यान मे रोपा था और मैं उनके मधुर फलो को खा रहा हू। अब मैं इन वृक्षो को रोपता हूं ताकि तुम्हारे जैसे नवयुवक लोग मेरी मृत्यु के बाद फल खा सकें। यह उत्तर सुनकर वह लडका लज्जित हुआ और उसने वृद्ध मनुष्य के अच्छे विचारों की प्रशंसा की।

प्रश्न

१ पव्वइयो, विस्सामं, पओसो, बहुस्सुओ, उवसप्पंत, अणालोइय, अक्खित्त, पलोइंत, अब्भास—इन शब्दो का अर्थ बताओ।

२. फास, फंस, रिअ, पम्हुस, पम्हुस, णिरिणास, चड्ड, भुक्क, सामड्ढ, अणच्छ, घत्त, ढुण्ढुल्ल, अवयास, चोप्पड, अहिलङ्घ, मह, सामय, रम्प, गुञ्ज, ल्हस, डर, वोज्ज, णम, पलोट्ट, झङ्ख, ऊसल, पुलआअ, भिस, घिस, ओवाह, गुम्म—ये आदेश किन-किन धातुओ को होता है?
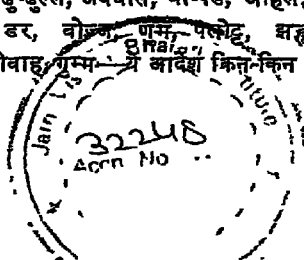
शब्द संग्रह

असिवं—मारी रोग	उवद्दवं—उपद्रव
भूयवाइय—भूतवादिक	निहालेयव्वं—देखना चाहिए
अलाहि—अलं, बस	चिप्पिड—चिपटे नाक वाला
आमय—रोग	नायरया—नगर जन
पिवासा—प्यास	

नियम ६०० (गमिष्यमासां छः ४।२१५) गम्, इष्, यम् और आस् धातुओं के अंत को छ होता है। गच्छइ, इच्छइ, जच्छइ, अच्छइ।

नियम ६०१ (छिदि-भिदो न्दः ४।२१६) छिद् और भिद् के अन्त्य को न्द आदेश होता है।

द्7न्द—छिद्=छिन्द। भिद्=भिन्द।

नियम ६०२ (युध-बुध-गृध-क्रुध-सिध-मुहां ज्झः ४।२१७) युध्, बुध्, गृध्, क्रुध्, सिध् और मुह् धातुओं के अन्त को ज्झ होता है।

ध्7झ—युध्=जुज्झ। बुध्=बुज्झ। गृध्=गिज्झ। क्रुध्=कुज्झ। सिध्=सिज्झ।

ह्>झ—मुह्=मुज्झ।

नियम ६०३ (रुधो न्ध म्भौ च ४।२१८) रुध् के अन्त्य वर्ण को न्ध, म्भ और ज्झ होता है।

ध्7न्ध, म्भ—रुध्=रुन्धइ, रुम्भइ, रुज्झइ।

नियम ६०४ (सद-पतोर्डः ४।२१९) सद् और पत् धातु के अन्त्य को ड होता है।

द्, त्7ड—सद्=सडइ। पत्=पडइ।

नियम ६०५ (क्वथ-वर्धां ढः ४।२२०) क्वथ् और वर्ध् धातु के अन्त्य को ढ होता है।

थ्, ध7ढ - क्वथ्=कढइ। वर्ध्=वड्ढइ।

नियम ६०६ (वेष्टः ४।२२१) वेष्ट् वेष्टने धातु के (नियम ३६४ क ग ट ड २।७७) से ष् का लोप होने के बाद अन्त्य ट को ढ होता है।

ट्>ढ—वेष्ट्=वेढइ।

नियम ६०७ (समो ल्लः ४।२२२) सं पूर्वक वेष्ट् धातु को ल्ल

होता है।
ट्>ल्ल—संवेष्ट्=संवेल्लइ।

नियम ६०८ (वोदः ४।२२३) उद् से परे वेष्ट् के अन्त्य को ल्ल विकल्प से होता है।

ट्>ल्ल—उद्वेष्ट्=उव्वेल्लइ, उव्वेढइ।

नियम ६०९ (स्विदां ज्जः ४।२२४) स्विद् जैसी दकारान्त धातुओं के अन्त्य को ज्ज होता है।

द्>ज्ज—स्विद्=सिज्जइ। संपद्=सपज्जइ। खिद्=खिज्जइ।

नियम ६१० व्रज-नृत-मदां च्चः ४।२२५) व्रज्, नृत् और मद् धातुओ के अन्त्य वर्ण को च्च होता है।

ज,त,द 7 च्च—व्रज्=वच्चइ। नृत्=नच्चइ। मद्=मच्चइ।

नियम ६११ (रुद-नमो वं. ४।२२६) रुद् और नम् धातु के अन्त्य वर्ण को व होता है।

द्, म्>व—रुद्=रुवइ। नम्=नवइ।

नियम ६१२ (उद्विज ४।२२७) उद् पूर्वक विज् धातु के अन्त्य वर्ण को व होता है।

ज् 7 व—उद्विज्—उव्विवइ।

नियम ६१३ (खाद-धावो लुंक् ४।२२८) खाद् और धाव् धातु के अन्त्य वर्ण का लुक् होता है।

द् 7 लुक्—खाद्=खाइ, खामइ। खाहिइ, खाउ।

व् 7 लुक्—धाव=धाइ, धाहिइ, धाउ। बहुलाधिकारात् वर्तमान, भविष्य और विध्यर्थ के एकवचन मे ही लुक् होता है। बहुवचन होने से यहा नही हुआ है—खादन्ति, धावन्ति। कही पर नही भी होता—धावइ पुरओ (आगे दौडता है।)

हिन्दी में अनुवाद करो

असिवोवद्दवे नयरे आदन्नस्स स पुरजणवयस्स राइणो समीव तिन्नि भूयवाइया आगया। भणन्ति—अम्हे असिवं उवसमावेमो त्ति। राइणा भणियं—सुणेमो केणुवाएण ? त्ति। तत्थेगो भणइ—अत्थि मम भतसिद्धमेगं भूयं अलकियविभूसिय त सव्वजणमणहरं रूवं विउव्विऊण गोपुररत्थासु लीलायत परियडइ, त न निहालेयव्वं, तं निहालियं रूसइ। जो पुण त निहालेइ सो विणस्सइ। जो पुण त पेच्छिऊण अहोमुहो ठाइ सो रोगाओ मुच्चइ। राया भणइ—अलाहिं मे एएण अइरूसणेण।

बीयो भणइ—महव्वयं भूयं महइ महालयं रूव विउव्वइ लंबोयर चिप्पिटं विउअकुच्छि पंचसिरं एगपायं विसिहं विभत्सरूव अट्टट्टहास मुयंतं

गायंतं पणच्चमाणं तं च विकयरूवं परिभमंतं दट्ठूण जो पओसइ उवहसइ पवंचेइ वा तस्स सत्तहा सिरं फुट्टइ। जो पुण तं सुहाहिं वायाहिं अहिनंदइ धूवपुप्फाइएहिं पूएइ सो सव्वामयाण मुच्चइ। राया भणइ—अलाहि एएणं वि। तइओ भणइ—ममावि एव विज्जा चेव गाढवेगकरं भूयमत्थि, पियापियकारि दंसणाओ एव रोगेहिंतो मोयइ। एवं होउ त्ति। तेण तहा कए असिवं उवसंतं। तुट्ठो राया। आणंदिया नायरया। पूइओ सो भूयवाई सव्वेहिं पि।

प्राकृत में अनुवाद करो

ग्रीष्म ऋतु में एक दिन एक यात्री जंगल में होकर जा रहा था। जब अपराह्न काल हुआ तब उसे प्यास लग गई। सभी जलाशय और नदियां सूख गई थीं। उसे अपनी प्यास बुझाने के लिए कहीं भी पानी नहीं मिला। अंत में वह नारियल के वृक्ष के नीचे आया। वृक्ष पर कोमल नारियल लगे थे। वृक्ष लम्बे होने के कारण वह नारियल के फल तक नहीं जा सकता था। वृक्ष पर अनेक बंदरों को बैठा हुआ देखकर उस चतुर यात्री ने एक उपाय सोचा। उसने भूमि पर से कुछ पत्थरों को लेकर लगातार बंदरों पर फेंका। बंदर भी नारियल फल को तोड़कर यात्री को मारने लगे। उसने उन नारियलों को बड़े आनंद से संगृहीत कर लिया। उनके मधुर जल से अपनी प्यास बुझा कर वह अपने पथ पर चल दिया। सहजबुद्धि मनुष्य का परम साथी है।

प्रश्न

१. नीचे लिखे रूपों में बताओ धातु के किस वर्ण को किस नियम से क्या आदेश हुआ है? जच्छ, गिज्झ, सिज्झ, रुम्भ, रुज्झ, मढ, पढ, वेढ, संवेल्ल, उव्वेल्ल, खिज्ज, वच्च, मच्च, उव्विव।

२ असिव, अलाहि, चिप्पिड, जत्ती, नायरया—इन शब्दों के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो।

१०६ धातुवर्णादेश (२)

शब्द संग्रह

पट्ठिओ—प्रस्थान किया	पच्छओ—पीछे से
खुड्डओ—छोटा साधु	समावडिया—सामने आई
तिसा—प्यास	नित्थर—पार करना (धातु)
खतओ (दे०)—बाप	पडिच्छइ—ग्रहण करना
सत्तसारय—जीवो को याद करने वाला	विउस (वि)—विद्वान्
मलिण—मैला	फट्टिअंवत्थं—फटे वस्त्र
पारेवय—कबूतर	आसा—आशा, अभिलाषा

नियम ६१४ (सृजोरः ४।२२६) सृज्, धातु के अन्त्य को र होता है। ज्>र सृज्—निसिरइ, वोसिरइ। वोसिरामि।

नियम ६१५ (शकादीनां द्वित्वम् ४।२३०) शक् आदि धातुओ का अन्त्य वर्ण द्वित्व हो जाता है। शक्—सक्कइ। जिम्—जिम्मइ। लग्—लग्गइ। मग्—मग्गइ। कुप्—कुप्पइ। नश्—नस्सइ। अट्—अट्टइ। परिअट्टइ। लुट्—पलोट्टइ। तुट्—तुट्टइ। नट्—नट्टइ। सिव्—सिव्वइ। इत्यादि।

नियम ६१६ (स्फुटि चले. ४।२३१) स्फुट् और चल् धातु के अन्त्य को द्वित्व विकल्प से होता है। स्फुट्—फुट्टइ, फुडइ। चल्—चल्लइ, चलइ।

नियम ६१७ (प्रादे र्मीलः ४।२३२) प्र आदि से परे मील् धातु के अन्त्य वर्ण को द्वित्व विकल्प से होता है। पमील्—पमिल्लइ, पमीलइ। निमिल्लइ, निमीलइ। समिल्लइ समीलइ। उम्मिलइ, उम्मीलइ। प्र आदि न होने से द्वित्व नही होता है—मीलइ।

नियम ६१८ (उवर्णस्यावः ४।२३३) धातु के अन्त्य उवर्ण को अव आदेश होता है।

उवर्ण 7 अव न्हुङ्—निण्हवइ। हु—निहवइ। च्युङ्—चवइ। रु—रवइ। कु—कवइ। सू—सवइ, पसवइ।

नियम ६१९ (ऋवर्णस्यार. ४।२३४) धातु के अन्त्य ऋवर्ण को अर आदेश होता है।

ऋवर्ण 7 अर कृ—करइ। धृ—धरइ। मृ—मरइ। वृ—वरइ। सृ—सरइ

हृ—हरइ। तृ—तरइ। जृ—जरइ।

नियम ९२० (वृषादीनामरिः ४।२३५) वृष् जैसी धातुओं के ऋवर्ण को अरि आदेश होता है।

ऋवर्ण 7 अरि वृष्—वरिसइ। कृष्—करिसइ। मृष्—मरिसइ। हृष्—हरिसइ। जिन धातुओं के अरि आदेश दिखाई दें उन्हें इस नियम के अन्तर्गत समझें।

नियम ९२१ (रुषादीना दीर्घः ४।२३६) रुस् जैसी धातुओं का स्वर दीर्घ हो जाता है।

उ 7 ऊ रुस्—रूसइ। तुष्—तूसइ। शुष्—सूसइ। दुष्—दूसइ। पुष्—पूसइ। शिष्—सीसइ।

नियम ९२२ (युवर्णस्य गुणः ४।२३७) धातु के इवर्ण और उवर्ण को गुण हो जाता हैं, क्ङिति प्रत्यय परे हो तो।

इवर्ण, उवर्ण 7 गुण जि—जेऊण। णी—नेऊण, नेइ, नेंति। डी—उड्डेइ, उड्डेंति। मुच्—मोत्तूण। श्रु—सोऊण।

नियम ९२३ [स्वराणां स्वराः ४।२३८] धातुओं के स्वरों के स्थान पर स्वर विकल्प से होते हैं।

स्वर 7 स्वर हवइ—हिवइ। चिणइ, चुणइ। सद्दहणं, सद्दहाणं। धावइ, धुवइ। रुवइ, रोवइ। कहीं-कहीं पर नित्य होता है।

दा—देइ। ली—लेइ। हा—विहेइ। नश्—नासइ।

नियम ९२४ (चि-जि-श्रु-हु-स्तु-लू-पू-धूगां-णो ह्रस्वश्च ४।२४१) चि, जि, श्रु, हु, स्तु, लू, और पू धातु के अंत में णकार का आगम होता है और इनका स्वर ह्रस्व हो जाता है। चिणइ, जिणइ, सुणइ, हुणइ, थुणइ, लुणइ, पुणइ। बहुलाधिकार से कहीं ण विकल्प से होता है। उच्चिणइ, उच्चेइ। जेऊण, जिणिऊण। जयइ, जिणइ। सोऊण, सुणिऊण।

नियम ९२५ (धातवोर्थान्तरेपि ४।२५९) धातुओं के अर्थ बताए गए हैं उनसे भिन्न अर्थ में भी धातुएं प्रयुक्त होती हैं। जैसे—बलि. प्राणने खादने पि। बलइ खादति, प्राणन करोति वा। कलिः संख्याने सज्ञानेपि। कलइ जानाति, संख्यान करोति वा। रिगिर्गतौ प्रवेशेपि। रिगइ गच्छति, प्रविशति वा। काक्षते वंम्फ आदेश. प्राकृते। वम्फइ इच्छति, खादति वा। फक्कतेस्थक्क आदेश.। थक्कइ नीचागतिकरोति, विलम्बयति वा। विलप्युपालम्भ्योर्झङ्ख आदेशः। झङ्खइ, विलपति, उपालभते, भाषते वा। पडिवालेइ प्रतीक्षते, रक्षति वा।

हिन्दी में अनुवाद करो

उज्जेणी णयरी। तत्थ धणमित्तो नाम वाणियओ। तस्सपुत्तो धणसम्मो नाम। सो धणमित्तो पुत्तेण सह पव्वइओ। अन्नया य ते साहू विहरता मज्झण्ह-

समए एलगच्छपुरपहे पट्ठिया । सो वि खुड्डओ तिसाए अभिभूओ सणियं सणियमेइ। सो वि से खतओ सिणेहाणुरागेण पच्छओ एइ । साहुणो वि पुरओ वच्चंति । अतरा य नई समावडिया । खंतएण भणिय—एहि पुत्त ! पियसु पाणिय । नित्थरेसु आवइ, पच्छा आलोएज्जासि । सो न इच्छइ । खतो नई उत्तिन्नो, चितइ य ओसरामि मणागं जावेस खुड्डओ पाणियं पियइ । मा मम आसकाए न पाहिति एगते पडिच्छइ जाव खुड्डो पत्तो नइं । दढव्वयाए सत्तसारयाए ण पीय । अन्ने भणति—अईववाहिओ ह त पिवामि पाणियं । पच्छा गुरुमूले पायच्छित्त पडिवज्जिस्सामि त्ति उक्खित्तो जलजली । अह से चिता जाया । कहमेए हलाहलए जीवे पिवामि । जओ एगम्मि उदगबिंदुम्मि, जे जीवा जिणवरेहिं पन्नत्ता ।

ते पारेवयमेत्ता, जबूद्दीवे ण माएज्जा ॥१॥

सो अइसविग्गेण न पीय, उत्तिन्नो नइ । आसाए छिन्नाए नमोक्कार झायंतो सुहपरिणामो कालगओ देवेसु उववन्नो ।

प्राकृत में अनुवाद करो

एक समय एक बहुत बडा विद्वान् जो गरीब था, राजा के घर खाना खाने के लिए गया। फटे वस्त्रो से सज्जित होने के कारण राजा ने एक भी शब्द स्वागत मे नही कहा। पडित ने शीघ्र ही इसे समझ लिया। इस प्रकार के व्यवहार का कारण मेरे ये वस्त्र है। दूसरे दिन वह अच्छे वस्त्रो से भूषित होकर उसी सज्जन के घर गया। राजा ने उसका स्वागत किया और आदर दिया। वह उन्हे भोजनगृह मे ले गया। भोजन करने के पहले ही अतिथि ने अपने ऊपर के वस्त्रो को पृथ्वी पर फैला दिया और तीन मुट्ठी भात उन पर फेंक दिया। जब ब्राह्मण मे पूछा गया कि आपने ऐसा क्यो किया ? तब उसने उत्तर दिया—कल मैं आपके पास गदे वस्त्रो मे आया था। आपने मुझे कुछ शब्दो के योग्य भी न समझा। लेकिन आज इन वस्त्रो के कारण ही आपने मुझे आदर दिया है।

प्रश्न

१ सृज्, शक्, स्फुट्, चल्, पमील्—इन धातुओ के अन्त्य वर्ण को क्या आदेश होता है ? उदाहरण सहित बताओ।

२ धातु के अन्त्य उवर्ण और ऋवर्ण को क्या आदेश होता है।

३ रुस् आदि और वृष् आदि धातुओ को क्या आदेश होता है ? सोदाहरण बताओ।

४. किन धातुओ के अत मे णकार का आगम होता है और दीर्घस्वर ह्रस्व हो जाता है ?

५. नीचे लिखी धातुए किन-किन अर्थों मे प्रयुक्त होती है ? वलि, कलि, रिग्, काक्षति, फक्क, पडिवाल।

नियम ६२७ (अधः क्वचित् ४।२६१) शौरसेनी मे वर्णान्तर के पश्चाद् कही-कही अध स्थित त को द होता है।

त 7 द—निश्चिन्त (निच्चिन्दो)। शकुन्तला (सउन्दला)। अन्त.पुरम् (अन्देउर)।

नियम ६२८ (वादे स्तावति ४।२६२) शौरसेनी मे तावत् शब्द के आदि त को द विकल्प से होता है।

त 7 द—तावत् (दाव, नाव)।

नियम ६२९ (थो धः ४।२६७) शौरसेनी में पद के अनादि मे होने वाले थ को ध विकल्प से होता है।

थ 7 ध—नाथः (णाधो, णाहो)। कथम् (कध, कह्)। राजपथ. (राजपधो)।

नियम ६३० (न वा र्यो य्यः ४।२६६) शौरसेनी मे र्य के स्थान मे य्य विकल्प से होता है।

र्य 7 य्य—आर्यपुत्रः (अय्यउत्तो)। पर्याकुल (पय्याकुलो) पक्षे पज्जाकुलो (द्य य्य र्यां जः २।२४ नियम ३१७ से ज हुआ है।)

नियम ६३१ (पूर्वस्य पुरवः ४।२७०) शौरसेनी मे पूर्व शब्द को पुरव आदेश विकल्प से होता है। अपूर्वं (अपुरवं) पक्षे अपुव्वं। (सर्वत्र लवरा २।७९ नियम ३९६ से र लोप, अनादौ शेषादेशयो २।८९ नियम ४२० से द्वित्व)।

नियम ६३२ (मोन्त्याण्णो वेदेतोः ४।२७९) शौरसेनी मे अन्त्य मकार से परे इकार और एकार को णकार का आगम विकल्प से होता है। युक्तमिदम् (जुत्तंणिमं, जुत्त मिण), किमेतत् (किं णेद, किमेद) एवमेतत् (एवं णेदं, एवमेदं)। सदृशं इदं (सरिसं णिमं, सरिसमिणं)।

शब्दसिद्धि

नियम ६३३ (अतो ङसेर्डादो-डादू ४।२७६) शौरसेनी मे अकार से परे ङसि को डादो और डादु आदेश विकल्प से होता है।

ङसि 7 डादो, डादु—जिनात् (जिणादो, जिणादु), वीरात् (वीरादो, वीरादु)।

नियम ६३४ (तस्मात् ताः ४।२७८) शौरसेनी मे तस्माद् को ता आदेश होता है।

तस्माद् 7 ता—तस्माद् (ता)। तस्मात् यावत् प्रविशामि (ता जाव पविसामि) तस्मात् अल एतेन मानेन (ता अलं एदिणा माणेण)।

नियम ६३५ (भवद्-भगवतोः ४।२६५) शौरसेनी मे भवत् और भगवत् शब्द से परे सि प्रत्यय हो तो न् को म् हो जाता है।

न् 7 म्—भवान् (भव) भगवान् (भगव)। कही पर अन्य शब्दो को भी म् हो जाता है। मघवान् (मघव), संपादितवान् (संपाइअवं) कृतवान्

(कयवं)।

नियम ६३६ (आ आमन्त्र्ये सौ वेनो नः ४।२६३) शौरसेनी में इन् के नकार को आ विकल्प से होता है, आमन्त्रण अर्थ में होने वाला सि प्रत्यय परे हो तो। हे सुखिन् (सुहिआ, सुहि।)

नियम ६३७ (मो वा ४।२६४) शौरसेनी में आमन्त्रण सि परे हो तो नकार को म विकल्प से होता है।

न् > म्—हे भगवन् (भयवं, भयव)।

नियम ६३८ (इह-हचो र्हस्य ४।२६८) शौरसेनी में (मध्यमस्ये त्थाहचौ ३।१४३) से इह शब्द के होने वाले हच् (ह) को ध विकल्प से होता है।

ह > ध—इह (इध, इह)। भव (होध, होह)। परित्रायध्वम् (परित्तायध, परित्तायह)।

नियम ६३९ (इदानीमो दाणिं ४।२७७) शौरसेनी में इदानी के स्थान पर दाणि आदेश होता है।

इदानीं > दाणि—इदानीम् (दाणि)। अन्याम् इदानी बोधिम् (अण्ण दाणि बोहिं)।

अव्यय

नियम ६४० (एवार्थे य्येव ४।२८०) शौरसेनी में एव अर्थ में य्येव निपात है। स एव एषः (सो य्येव एसो)।

नियम ६४१ (हञ्जे चेट्याह्वाने ४।२८१) दासी को बुलाने में हञ्जे निपात है। हे चतुरिके (हञ्जे चदुरिके)।

नियम ६४२ (हीमाणहे विस्मय-निर्वेदे ४।२८२) विस्मय और निर्वेद अर्थ में हीमाणहे निपात है। विस्मये—आश्चर्यं यत् जीवत्वत्सा मे जननी (हीमाणहे जीवन्तवच्छा मे जननी)। निर्वेदे—दुःखं, यत् परिश्रान्ता वयं एतेन निजविधे: दुर्व्यवसितेन (हीमाणहे पलिस्सन्ता हगे एदेण नियविधिणो दुव्वसिदेण)।

नियम ६४३ (णं नन्वर्थे ४।२८३) ननु अर्थ मे णं निपात है। ननु भवान् मम अग्रत: चलति (ण भवं मे अग्गदो चलदि) आर्ष में वाक्यालंकार में भी—नमोत्थु णं, जया णं, तया ण।

नियम ६४४ (अम्महे हर्षे ४।२८४) हर्ष अर्थ मे अम्महे निपात है। हर्षः, यत् एतस्या सूर्मिलया सुपरिगृद्धः भवान् (अम्महे एआए सुम्मिलाए सुपलिगढिदो भवं)।

नियम ६४५ (हीहीविदूषकस्य ४।२८५) शौरसेनी मे विदूषको के हर्ष मे हीही निपात है। हर्षः यत् सपन्ना मनोरथाः प्रियवयस्यस्य (हीही

भो संपन्ना मणोरधा पियवयस्सस्स) ।

धातु रूप

नियम ६४६ (भुवो भः ४।२६९) शौरसेनी मे भुव (भू) के ह को भ विकल्प से होता है।

ह>भ—भवति (भोदि, होदि)।

नियम ६४७ (दिरिचेचोः ४।२७३) इच् (इ) एच् (ए) के स्थान पर दि होता है। भवति (भोदि, होदि)।

नियम ६४८ (अतो देश्च ४।२७४) अकार से परे इ और ए के स्थान पर दे और दि होता है। भवति (भुवदे, भुवदि, हुवदे, हुवदि)। गच्छति (गच्छदे, गच्छदि)। रमते (रमदे, रमदि)।

नियम ६४९ (भविष्यति स्सिः ४।२७५) शौरसेनी मे भविष्य अर्थ मे विहित प्रत्यय (हि, हा, स्सा) को स्सि होता है। भविष्यति (भविहिदि, भविस्सिदि)। गमिष्यति (गमिहिदि, गमिस्सिदि)।

कृदन्त

नियम ६५० (क्त्व इय-दूणौ ४।२७१) शौरसेनी मे क्त्वा प्रत्यय को इय, दूण आदेश विकल्प से होते हैं। भूत्वा (भविय, भोदूण)। रन्त्वा (रमिय, रन्दूण) पक्ष मे भोत्ता, रन्ता।

नियम ६५१ (कृ-गमो डडुअ ४।२७२) कृ और गम् से परे क्त्वा प्रत्यय को डडुअ आदेश विकल्प से होता है। कृत्वा (कडुअ, करिय, करिदूण)। गत्वा (गडुअ, गच्छिय, गच्छिदूण)।

नियम ६५२ शेषं प्राकृतवत् ४।२८६) शौरसेनी मे बताए गए नियमो के अतिरिक्त शेप नियम प्राकृत के ही लगते है।

प्रयोग वाक्य

(१) भयव मज्झ भाव जाणदि (भगवान् मेरे भाव को जानते है)। (२) पादेसु पणामिअ णिव्वत्तेहि ण (चरणो मे प्रणाम कर लौट आओ)। (३) इध राअउले त दे भोदु (इस राजकुल मे वह तुम्हारे लिए हो)। (४) भव कध गच्छदि तस्स पासे (आप उसके पास कैसे जाते हैं) ? (५) णाधस्स का परिभाषा भोदि (नाथ की क्या परिभाषा होती है) ? (६) दाणि अय्याए कय्य को करिस्सदि (इस समय आर्या का कार्य कौन करेगा) ? (७) अम्हाण पुरदो को गच्छदि (हमारे आगे कौन जाता है) ? (८) ईदिस भयव दूरे वन्दीअदि (ऐसे भगवान को दूर से नमस्कार किया जाता है)। (९) सो कय्य करिदूण निश्चिन्दो रादीए सुवइ (वह कार्य करके रात मे निश्चिन्त हो सोता है)। (१०) अण्णं अण्णं णिमन्तेदु दाव भवं (तब तक आप दूसरे-दूसरे को निमन्त्रित करें)। (११) एसो

वाआए पच्चाचक्खिदो (वह वाणी से प्रत्याख्यात (अस्वीकृत) करे। (१२) हिअएण अणुबन्धीअमाणो गच्छीअदि (हृदय से अनुसरण किया जा रहा है)। (१३) दक्खिणाए रक्खणा भविस्सदि (दक्षिणा से रक्षा होगी)। (१४) सो एव्व दाणि गच्छदि (वही इस समय जाता है)। (१५) भवं अप्पेणावि तुस्सदि (आप थोड़े से ही संतुष्ट हो जाते हैं)। (१६) ता अहं इदो य्येव आअच्छदि (मैं यहां ही आ रहा हूं)। (१७) कव्वं जेव दे कइत्तणं पिसुणेदि (काव्य ही तुम्हारे कवित्व को बता रहा है)। (१८) आवेअक्खलिदाए गदीए परिभट्टं मे हत्थादो पुप्फभाअणं (आवेग से स्खलित गति के कारण मेरे हाथ से पुष्पों का बर्तन गिर गया)।

शौरसेनी में अनुवाद करो

इस घर में मेरा कौन है? इस समय तुम्हारे पुत्र कहां मिलेंगे? भगवान के पास क्या मांगते हो? भगवान सबको देखते हैं। आप क्या करेंगे, मेरे भगवान आप ही हैं। मैतार्य क्या कहेगा? आप यहां कैसे आएंगे? आपने मेरा कार्य किया (कयवं)। राजपथ पर सब चलते हैं। वह रात्रि में निश्चित हो सुख की नींद सोता है। वह गुरु के आगे क्यों चलता है? क्या आप संतुष्ट हैं? अनाथ कौन नहीं है? शकुन्तला कण्वमुनि का सेवन करती है। सुता विकथा नहीं करती है। प्रभा प्रभात में प्रभु के प्रवचन को पढ़ती है। तुम्हें सत्य कथा कहनी चाहिए (भणिदव्व)। अच्छा (होदु) इन (एदाण) लोगों का कार्य कौन करेगा? वहां जाकर मैं बात पूछूंगा। पुस्तक पढ़कर मैं उत्तर दूंगा। वीर से कौन नहीं डरता है?

प्रश्न

१. शौरसेनी में त और थ को किस नियम से क्या आदेश कहां होता है?
२. र्य को य्य होता है या और कुछ आदेश होता है, किस नियम से?
३. शौरसेनी में नकार को णकार कहां होता है?
४. अकारान्त शब्द से ङसि प्रत्यय परे होने पर क्या रूप बनता है?
५. शौरसेनी में इदानीं, एव, विस्मय और ननु अर्थ में क्या अव्यय है?
६. हीही, अम्महे अव्यय किस अर्थ में प्रयोग में आते हैं? एक-एक वाक्य बनाओ।
७. क्त्वा प्रत्यय को क्या-क्या आदेश होता है?
८. भविष्य अर्थ में क्या प्रत्यय होता है?

○ प्राकृत मे जो उपसर्ग है वे ही मागधी मे है। मागधी के नियमों के अनुसार अक्षर परिवर्तन कर लेना चाहिए। नियम ६५४ के अनुसार र को ल और स को श होता है। परि=पलि, परा=पला, सं=श आदि।

○ नियम ६५३ से ज को य और नियम ६५५ से छ को श्च होता है। इन नियमो के अनुसार शब्द परिवर्तन इस प्रकार होता है— अरिहत=अलिहंत। जिण=यिण। पुच्छ=पुश्च। पिच्छ=पिश्च। सर्व=शव्व। वीर=वील। महावीर=महावील आदि।

○ मागधी मे अकारान्त पुंलिग शब्द के रूप प्राकृत की तरह चलते है किन्तु मागधी मे कुछ विशेप परिवर्तन होता है। प्रथमा के एकवचन में वीरो का वीले बनता है, वीलो नही। पचमी के एकवचन का वीर शब्द का वीलादो और वीलादु बनता है।

○ षष्ठी के एक वचन का वीलाह, वीलश्श (वीरस्य) बनता है।

○ षष्ठी के बहुवचन का वीलाहं, वीलाण (वीराणाम्) बनता है।

○ मागधी में क्त्वा प्रत्यय को दाणि होता है। कृत्वा=करिदाणि, सोढ्वा—शहिदाणि।

○ मागधी मे क्त प्रत्ययान्त शब्द के प्रथमा के एकवचन (सि) प्रत्यय को उ होता है। हसिदु, हसिदे (हसितः) पढिदु (पठित)

○ मागधी मे धातु रूप मे भी शाब्दिक परिवर्तन होता है। क्रियातिपत्ति मे हो धातु के रूप—होन्दो (पु) होन्दी (स्त्री) होन्द (नपु) इसी प्रकार अन्य धातुओ के बनते हैं।

भण् धातु के भविष्यकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भणिश्शदि, भणिश्शदे	भणिश्शिंति, भणिश्शिते, भणिश्शिइरे
म० पु०	भणिश्शिशि, भणिश्शिशे	भणिश्शिह, भणिश्शिध, भणिस्सिइत्था
उ० पु०	भणिश्शं, भणिश्शिमि	भणिश्शिमो, भणिश्शिमु, भणिश्शिम

सरल (असंयुक्त) व्यंजन

नियम ६५३ (ज-द्य-या य. ४।२९२) मागधी मे ज, द्य और य को य आदेश होता है।

ज>य—जानति (याणदि)। जन. (यणे)। जनपद. (यणवदे)। अर्जुनः (अय्युणे)। दुर्जनः (दुय्यणे)। गर्जति (गय्यदि)। गुणवर्जितः (गुणवय्यिदे)।

य>य—यदा (यधा)। याति (यादि)। यदि (यदि)। यानपात्रम् (याणवत्तं)। यस्य यत्वविधानं (आदे यॊजः १।२४५) बाधनार्थम्।

नियम ९५४ (रसोर्ल-शौ ४।२८८) मागधी में र को ल और स को श होता है।

र>ल—नर (नले)। धीवर. (धीवले)। कर. (कले)। पुरुष. (पुलिशे)।
स>श—हंस. (हंशे)। सः (शे)। सारस. (शालशे)। नाना (नाणा)। मासे (माप)।
श>श—शलणे (शरणः) शत्तू (शत्रु.) पिशल पारा २२१ के अनुसार श को श।

संयुक्त व्यंजन परिवर्तन

द्य>य—मय्यं (मद्यम्)। अय्य (अद्य)। यिय्याहले (विद्याधर)। नियम ९५३ से।

नियम ९५५ (छस्यश्चोनादौ ४।२९५) मागधी में अनादि छ को श्च होता है।

छ>श्च—गश्च (गच्छ)। पुश्चदि (पृच्छति)। उश्चलदि (उच्छलति)। पिश्चिले (पिच्छिलः)।

नियम ९५६ (ट्ट-ष्ठयोस्टः ४।२९०) मागधी में ट्ट और ष्ठ को स्ट होता है।

ट्ट>स्ट—पट्टः (पस्टे)। भट्टारिका (भस्टालिका)। भट्टिनी (भस्टिणी)।
ष्ठ>स्ट—कोष्ठ (कोस्टे)। सुष्ठु. (शुस्टु)। कोष्ठागारं (कोस्टागालं)।

नियम ९५७ (न्य-ण्य-ज्ञ-ञ्जां ञ्ञः ४।२९३) मागधी में न्य, ण्य, ज्ञ और ञ्ज को ञ्ञ होता है।

न्य>ञ्ञ—मन्युः (मञ्ञू)। अभिमन्युः (अहिमञ्ञू)। अन्य. (अञ्ञे)। सामान्यः (शामञ्ञे)। कन्यका (कञ्ञका)।
ण्य>ञ्ञ—पुण्यवान् (पुञ्ञवन्ते)। अब्रह्मण्यम् (अवम्हञ्ञं)। पुण्याहं (पुञ्ञाहं)। पुण्यम् (पुञ्ञ)।
ज्ञ>ञ्ञ—प्रज्ञा (पञ्ञा)। अवज्ञा (अवञ्ञा)। सर्वज्ञः (शव्वञ्ञे)।
ञ्ज>ञ्ञ—अञ्जली (अञ्ञली)। धनञ्जयः (धणञ्ञए)। प्राञ्जलः (पञ्ञले)।

नियम ९५८ (स-षो: संयोगे सोऽग्रीष्मे ४।२८९) मागधी में संयोग में सकार और षकार हो तो उसे स हो जाता है ग्रीष्म शब्द को छोड़कर।

यह नियम ऊर्ध्वलोपादि का अपवाद है। प्रस्खलति (प्रस्खलदि)। हस्तिन् (हस्ती)। बृहस्पति. (बुहस्पदी)। मस्करी (मस्कली)। विस्मयः (विस्मये)। शुष्क (शुस्क)। कष्टम् (कस्टं)। विष्णुम् (विस्नुं)। निष्फलं (निस्फलं)।

नियम ९५९ (स्थ-र्थयोः स्तः ४।२९१) मागधी में स्थ और र्थ को स्त होता है।

स्थ7स्त—उपस्थित. (उवस्तिदे)। सुस्थित. (शुस्तिदे)।

र्थ>स्त—अर्थः (अस्ते)। सार्थवाह. (शस्तवाहे)।

नियम ९६० (क्षस्य ᳵकः ४।२९६) मागधी मे अनादि मे होने वाले क्ष को ᳵक होता है।

क्ष>ᳵक—यक्षः (यᳵके)। राक्षसः (लᳵकशे)।

शब्द रूप

नियम ९६१ (अत एत्सौ पुंसि मागध्याम् ४।२८७) मागधी मे अकार को एकार होता है पुलिंग की सि परे हो तो।

अ7ए—नरः (नले)। कतर (कयरे)। एष. (एशे)। मेष. (मेशे)। पुरुष (पुलिशे)।

नियम ९६२ (अवर्णाद् वा ङसो डाहः ४।२९९) मागधी मे अवर्ण से परे ङस् को डाह आदेश विकल्प से होता है।

ङस्7डाह—जिनस्य (यिणाह)। पक्षे यिणस्स। कर्मण. (कम्माह)। इदृशस्य (एलिशाह)। शोणितस्य (शोणिदाह)।

नियम ९६३ (आमो डाहं वा ४।३००) मागधी मे अवर्ण से परे आम् को डाह आदेश विकल्प से होता है। जिनानाम् (यिणाहं, यिणाण)।

व्यत्ययात् प्राकृतेपि—कर्मणाम् (कम्माहँ) तेषां (ताहँ) युष्माकम् (तुम्हाहँ) सरिताम् (सरिआहँ) अस्माकम् (अम्हाहँ)

आदेश

नियम ९६४ (अहं-वयमोर्हगे ४।३०१) अहं और वयं को हगे आदेश होता है। अहं (हगे)। वयं (हगे)

[अस्मद. सौ हके हगे अहके ११।९] वररुचि के अनुसार मागधी मे अहं को हके, हगे और अहके—ये तीन आदेश होते हैं। अह भणामि (हके, हगे अहके भणामि)

[शृगालशब्दस्य शिआला शिआलका ११।७ वररुचि] शृगाल को शिआल और शिआलक आदेश होते हैं। शृगालः आगच्छति (शिआले, शिआलके आगच्छदि)

[हृदयस्य हडक्कः ११।६ वररुचि] हृदय शब्द को हडक्क आदेश होता हैं। हृदये आदरो मम (हडक्के आदले मम)

धातु रूप

नियम ९९५ (व्रजो जः ४।२९४) मागधी में व्रज् के ज् को ञ्ज होता है। व्रजति (वञ्जदि)।

नियम ९९६ (तिष्ठश्चिष्ठः ४।२९८) मागधी में स्था धातु के तिष्ठ को चिष्ठ आदेश होता है। तिष्ठति (चिष्ठदि)।

नियम ९९७ (स्कः प्रेक्षाचक्षोः ४।२९७) मागधी में प्रेक्ष और आचक्ष के क्ष को स्क होता है। प्रेक्षते (पेस्कदि)। आचक्षते (आचस्कदि)।

कृदन्त प्रत्यय

[क्त्वो दाणिः ११।१६ वररुचि] क्त्वा प्रत्यय के स्थान पर दाणि आदेश होता है। सोढ्वा गतः (शहिदाणि गडे)। कृत्वा आगत (करिदाणि आअडे)।

[क्तान्तादुश्च ११।११ वररुचि] क्त प्रत्ययान्त शब्द से परे सि को उ होता है। हसितः (हशिदु, हशिदे)।

[कृञ् मृङ् गमां क्तस्य डः ११।१५ वररुचि] कृञ् करणे, मृ और गम् धातु से परे क्त को ड होता है। कृतः (कडे)। मृतः (मडे)। गतः (गडे)।

नियम ९९८ (शेषं शौरसेनीवत् ४।३०२) शेष नियम प्राकृत शौरसेनी के समान है।

प्रयोग वाक्य

(१) अश कहिं गश्चदि (यह कहां जाता है)? (२) हगे कुडुम्बभलणं कलेमि (मैं कुटुम्ब का भरण करता हूं)। (३) यणे शव्वं न याणदि (मनुष्य सब नहीं जानता है)। (४) शे भोयणं कलिदाणि गश्चदि (वह भोजन करके जाता है)। (५) अज्जा! धम्मशञ्चअं कलेध (आर्यो! धर्म का संचय करो)। (६) शञ्जमेध णिअपोटं (अपने पेट को नियन्त्रण में रखो)। (७) इंदियचोला हलन्ति चिलशञ्चिदं धम्मं (इंद्रिय रूपी चोर चिरसंचित धर्म को हरण करते हैं)। (८) णिच्चं जग्गेध झाणपडहेण (ध्यान रूपी नगारे से हमेशा जागृत रहो)। (९) एकश्शिं दिवशे शे गुणवय्यिदे कह गय्यिदे (एक दिन वह गुण वर्जित होने पर भी कैसे गरजा)? (१०) पुलिशे! अस्तश्श पभावं पेक्खिश्शं (पुरुष! अर्थ का प्रभाव देखूंगा)। (११) अणिच्चदाए पेक्खिअ यवन्न दाव धम्माण शलणं म्हि (अनित्यता से (संसार) को देखकर मैं अब केवल धर्म की शरण में आ गया हूं)। (१२) हडक्के आदले मम (मेरे हृदय में आदर है)। (१३) हगे केलिशे अस्तशञ्चअं कलेमि, मए शह न गमिश्शं (मैं कैसा अर्थ संचय करता हूं, मेरे साथ नहीं जाएगा)। (१४) तश्श दालिद्दं पणट्ठं (उसका दारिद्र्य नष्ट हो गया)। (१५) हगे पुञ्ञवन्ते, गुलुशलणे आअडे (मैं पुण्यवान हूं,

गुरु की शरण मे आ गया हूं)। (१६) अय्य तुए सुस्टु कडे (आज तुमने अच्छा किया)। (१७) कस्टे आगडे वि शे शत्तुशलणं न गश्चदि (कष्ट आने पर भी वह शत्रु की शरण मे नही जाता है)। (१८) शे कोस्टागालं पेस्कदि (वह कोष्ठागार को देखता है)। (१९) यधा शे तत्थ गमिश्श तधा हगे आगमिश्शं (जब वह वहा जाएगा तब मैं आऊंगा)। (२०) तुए कधं हसिदु (तुम कैसे हसे)? (२१) शे णलं शग्ग गाहदि (वह मनुष्य स्वर्ग जाता है)। (२२) हगे गामान्तलवाशी म्हि (मैं गाम मे रहने वाला हूं)।

मागधी में अनुवाद करो

यह नर क्या पूछता है? पुरुष क्या चाहता है? कष्ट सहन कर वह स्वर्ग मे जाएगा। आज वह उसके घर आएगा। तुम क्या जानते हो? वह मनुष्य कहा जाएगा? (वञ्जिश्श)? दुर्जनो का कार्य मैं नही करूगा (करिश्श)। वह अभी (शम्पद) मद्य नही पीएगा। वह केवल (णवल) घर-वासी है। मैं धर्म की शरण मे जाता हू। उसकी अवज्ञा कौन करेगा? धनंजय पुण्यवान् है। हस पूर्व कर्मो का फल पूछता है। कौन उछलता है? तुमने अच्छा किया। क्या अन्य मनुष्य भी ऐसा करेंगे? सामान्य मनुष्य भी आचार्य को जानता है? क्या उसका पुण्य निष्फल होगा? जब जब वह हंसता है तब तब मैं उसकी अवज्ञा करता हू। मैं उसकी जाति (यादि) नही पूछूगा। तुम्हारे कर्मों का फल किसके पास जाएगा?

प्रश्न

१ मागधी मे द्य, ज और य को क्या आदेश होता है?

२. र, स और श को मागधी मे होने वाले आदेशो के एक-एक उदाहरण दो।

३. मागधी मे क्त्वा प्रत्यय को कौन सा प्रत्यय आदेश होता है? दो उदाहरण दो।

४ क्त प्रत्ययान्त शब्दो को सिं प्रत्यय परे होने पर क्या आदेश बनता है?

५ आम् प्रत्यय को क्या आदेश होता है?

६ मागधी मे हृदय के लिए क्या शब्द प्रयोग में आता है?

७ व्रज्, तिष्ठ, प्रेक्षा और चक्ष् धातुओ को मागधी मे क्या आदेश होता है?

८. ट्ट, ष्ठ, न्य, ण्य, ज्ञ और ञ्ज शब्दो को किस नियम से क्या आदेश होता है? एक-एक उदाहरण दो।

सरल व्यंजन परिवर्तन

नियम ९६९ (टोस्तुर्वा ४।३११) पैशाची में टु को तु विकल्प से होता है।

टु>तु—कटुकम् (कतुकं, कटुकं)। कुटुम्बकम् (कुतुम्बकं, कुटुम्बकम्)।

नियम ९७० (णो नः ४।३०६) पैशाची में ण को न होता है।

ण>न—गुणः (गुनो)।

नियम ९७१ (लो ळः ४।३०८) पैशाची में ल को ळ होता है।

ल>ळ—जलम् (जळं)। सलिलम् (सळिळं)। कमलम् (कमळं)। नीलं (नीळं)।

नियम ९७२ (श-षोः सः ४।३०९) पैशाची में श और ष को स होता है।

श>स—शक्रः (सक्को)। शशी (ससी)। शोभते (सोभति)। शोभनं (सोभनं)।

ष>स—विषमः (विसमो)।

नियम ९७३ (हृदये यस्य पः ४।३१०) पैशाची में हृदय शब्द के य को प होता है।

य>प—हृदयकम् (हितपकं)।

नियम ९७४ (तदोस्तः ४।३१०) पैशाची में त और द को त होता है। भगवती (भगवती)। सदनं (सतन)।

संयुक्त व्यंजन परिवर्तन

नियम ९७५ (ज्ञोञ्ञः पैशाच्याम् ४।३०३) पैशाची में ज्ञ को ञ्ञ होता है।

ज्ञ>ञ्ञ—सर्वज्ञः (सव्वञ्ञो)। संज्ञा (सञ्ञा)। प्रज्ञा (पञ्ञा)। विज्ञानम् (विञ्ञानं)।

नियम ९७६ (राज्ञो वा चिञ् ४।३०४) पैशाची में राजन् शब्द के ज्ञ को चिञ् आदेश विकल्प से होता है।

ज्ञ>चिञ्—राज्ञा (राचिञा, रञ्ञा)।

नियम ९७७ (न्य-ण्योर्ञ्ञः ४।३०५) पैशाची में न्य और ण्य को ञ्ञ होता है।

न्य>ञ्ञ—कन्यका (कञ्ञका)। अभिमन्यु: (अभिमञ्ञू)।
ण्य 7ञ्ञ—पुण्याहं (पुञ्ञाहं)।

नियम ९७८ (र्य-स्न-ष्टां रिय-सिन-सटाः क्वचित् ४।३१४) पैशाची मे र्यं, स्न और ष्ट के स्थान पर क्रमशः रिय, सिन और सट आदेश कहीं-कहीं होते है।

र्यं 7रिय—भार्या (भारिया)।
स्न>सिन—स्नातं (सिनातं)।
ष्ट 7ड—कष्ट (कसटं)।

शब्दरूप

नियम ९७९ (अतो ङसेर्डातो डातू ४।३२१) पैशाची मे अकार से परे ङसि को डातो (आतो) और डातु (आतु) आदेश होते हैं। त्वद् (तुमातो, तुमातु)। मद् (ममातो, ममातु)।

नियम ९८० (तदिदमोष्टा नेन स्त्रियां तु नाए ४।३२२) पैशाची में तद् और इदं को टा प्रत्यय सहित नेन आदेश होता है। स्त्रीलिंग मे नाए आदेश होता है। तेन, अनेन, एनेन (नेन)। तया, अनया (नाए)।

नियम ९८१ (यादृशादेर्दुस्तिः ४।३१७) पैशाची मे यादृश जैसे शब्दों के दृ को ति आदेश होता है। यादृशः (यातिसो)। तादृशः (तातिसो)। अन्यादृश (अञ्ञातिसो)।

धातु रूप

नियम ९८२ (इचेचः ४।३१८) पैशाची मे इच् (इ) एच् (ए) को ति आदेश होता है। भवति (भोति)। नयति (नेति)।

नियम ९८३ (आत्तेश्च ४।३१९) पैशाची मे अकार से परे इ और ए को ते तथा चकार से ति आदेश होता है। रमति (रमति, रमते)। लपति (लपति, लपते)। आस्ते (अच्छति, अच्छते)। गच्छति (गच्छति, गच्छते)।

नियम ९८४ (भविष्यत्येय्य एव ४।३२०) पैशाची मे भविष्यकाल की इ और ए परे हो तो उनको एय्य ही होता है। स्सि नही। भविष्यति (हुवेय्य)।

कृदन्त प्रत्यय

नियम ९८५ (क्त्वस्तून. ४।३१२) पैशाची मे क्त्वा प्रत्यय को तून आदेश होता है।

क्त्वा 7तून—गत्वा (गन्तून)। हसित्वा (हसितून)। पठित्वा (पठितून)। कथित्वा (कधितून)।

नियम ९८६ (द्धून-त्थूनौ ष्ट्वः ४।३१३) पैशाची मे ष्ट्वा रूप को द्धून और त्थून होते हैं। दृष्ट्वा (तद्धून, तत्थून)। नष्ट्वा (नद्धून, तत्थून)।

नियम ९८७ (क्यस्येय्य: ४।३१५) पैशाची में क्य प्रत्यय को इय्य आदेश होता है। दीयते (दिय्यते)। रम्यते (रमिय्यते)। पठ्यते (पठिय्यते)।

नियम ९८८ (कृगो डीर: ४।३१६) पैशाची में कृ धातु से परे क्य को डीर आदेश होता है। क्रियते (कीरते)।

नियम ९८९ (न क-ग-च-जादि षट्-शम्यन्त-सूत्रोक्तम् ४।३२४) पैशाची में (कगचजतदपयवा प्रायो लुक् १।१७७) से लेकर (षट् शमी शाव सुधा सप्तपर्णे ष्वादे श्छ: १।२६५) तक के सूत्र जो कार्य करते हैं वह पैशाची मे नहीं होता है।

नियम ९९० (शेषं शौरसेनीवत् ४।३२३) पैशाची में शेप नियमों का कार्य शौरसेनी के समान है।

चूलिका पैशाची

नियम ९९१ (चूलिका-पैशाचिके तृतीय-तुर्ययो राद्य-द्वितीयौ ४।३२५) चूलिकापैशाची में वर्ग के तृतीय और चतुर्थ वर्ण को क्रमश: पहला और दूसरा वर्ण हो जाता है। नगरं (नकर)। मेघ: (मेखो)। राजा (राचा)। निर्झर. (निच्छरो)। डमरुक: (टमरुको)। गाढम् (काठं)। मदन. (मतनो)। मधुरम् (मथुरं)। बालक. (पालको)। रभस (रफसो)।

नियम ९९२ (नादि-युज्योरन्येषाम् ४।३२७) चूलिकापैशाची में अन्य आचार्यों के मत से वर्ण का तीसरा और चतुर्थवर्ण आदि मे हो तो उसे प्रथम और द्वितीय वर्ण नहीं होते हैं। तथा युज् धातु को आदेश नहीं होता है। गति: (गती)। धर्म: (धम्मो)। जीमूत: (जीमूतो)। झर्झर. (झच्छरो)। डमरुक: (डमरुको)। ढक्का (ढक्का)। दामोदर: (दामोतरो)। बालक: (बालको)। भगवती (भकवती)। नियोजितम् (नियोजितं)।

नियम ९९३ (रस्य लो वा ४।३२६) चूलिका पैशाची मे र को ल विकल्प से होता है। हरम् (हलं, हरं)।

नियम ९९४ (शेषं प्राग्वत् ४।३२८) चूलिका पैशाची मे शेप नियम पैशाची के समान चलते हैं। नकर, मक्कनो—इनके न को ण नहीं होता। ण का न तो हो जाता है।

प्रयोग वाक्य

तत्तो तुम सयगुनो वुद्धिमंतो सि। तुज्झ हितपके केत्तिलो णेहो अत्थि? मतन मारिउं को समत्थो अत्थि? किं तस्स पुञ्ञं पवल विज्जति? यातिसो अहं मि तातिसो तुम्हाण समक्खं मि। पञ्ञ अतरेण तस्स को मुल्लो अत्थि? तुम्ह कुतुम्बकस्स पालणं को करेय्य? सो सव्वञ्ञं महावीरं किं पुच्छइ? कञ्ञाए पण्हो को अत्थि? घर गन्तून सा किं पढेय्य? सो पोत्थय तद्धून उत्तरं लिहति। सो-केणावि सह न गच्छेय्य। किं सा तुज्झ साउज्जं

करेय्य ? नरो यातिसं करेति तातिसं फल लभति। सा पठिनून कि करेय्य। रायपहे को याचति ? अय्यस्स किं अभिहाणं अत्थि ? सो घरे गन्तून रमेय्य। नाए किं कीरते। ससी निसाए गगने सोभति। तुज्झ सतने (सदने) सता (सदा) सुद्धी कथं न भवति ? तु पासिउं अह सता जागरूओ मि। तुज्झ मुह-मडल तत्थून, नाममतं जवितून य अह आनंद अनुभवामि। नेन किं दिय्यते ? सिसुना घरागने रमिय्यते अज्जत्ता तुज्झदसण देवयाए अहिय दुल्लह अत्थि। तुज्झ भगस्स णिम्माण तुज्झ हत्थेसु विज्जति। तुमं ममातो किं इच्छसि ? हितपके सता गुणाण पइट्ठं करेहि सो पढितून विएस गच्छेय्य। कल्लं सो किं जंपेय्य। समयं नद्धून सो किं पाएय्य ?

चूलिका पैशाची

सपइ नकरस्स पिआ को अत्थि? मेखो आकाशे सोभइ। निच्छरो सयमं वहइ। कूरकम्मेहिं काठ वघण वघइ। अह मथुर फळ भुंजिउ अभिलसामि। पालको विज्जालये पढइ। हळस्स देवालये सख को वायइ ? नती (नदी) रफसेण वहइ। भकवतीए सरस्सईए देवीए आराहण पालको करेइ। अस्स पएसस्स को राचा अत्थि ?

पैशाची में अनुवाद करो

(पैशाची के नियमो मे आए हुए शब्दो का प्रयोग करो। जो शब्द उसमे न मिले उन्हे शौरसेनी मे खोजो। वहा भी न मिले तो प्राकृत के शब्दो का प्रयोग करो।)

तुम्हारे कुटुम्ब मे कितने आदमी हैं ? दूध मे क्या गुण है ? क्या तुम जानते हो ? शक्र ने कब दर्शन दिए थे ? शशी तारो के साथ आकाश मे अच्छा लगता है। मेरे हृदय की बात क्या तुम जान सकते हो ? आज हमारे सदन मे कौन आएगा ? मदन (कामदेव) बहुत बलवान् होता है। सदा सत्य बोलना चाहिए। सर्वज्ञ को पूर्णरूप से कौन जान सकता है ? प्रज्ञा का महत्त्व तुम नही जानते। आहार संज्ञा के कारण मनुष्य क्या करता है ? विज्ञान का कार्य है सत्य को प्राप्त करना। कन्या का अध्ययन लडके से कई गुना अधिक है। अभिमन्यु ने कब क्या सीखा था ? जैसा तुम व्यवहार करोगे वैसा फल पाओगे। उसने कथा कब कही थी ? कथा कहकर वह कब उठेगा ? वह पढेगा या घर जाएगा ? सूर्य को आंखो से कौन देखेगा ? चद्रमा को देखकर उसने क्या कहा था ? विवाद मे समय नष्ट कर वह हानि मे रहेगा। क्या वह खेलकर अपनी शक्ति को बढाता है। परीक्षा का परिणाम देखकर वह हसेगा या रोएगा ? जो परीक्षा मे अनुत्तीर्ण होता है, वह अगले वर्ष मे दुगुणे परिश्रम से पढता है। तुम्हे देखकर उसकी याद आती है। तुम्हारा हृदय क्या पत्थर से भी अधिक कठोर है। तुम पढते हो तो बिना मन से पढते हो।

तुम्हारा मन स्थिर नही है। मन मे संकल्प करो इस वर्ष मैं परीक्षा में प्रथम आऊंगा। मन का संकल्प बलवान् होता है। जब तक तुम्हारा पुण्य बलवान् है, तुम्हारा नुकसान नही होगा। हृदय में भगवान का स्मरण करो। कुटुम्ब मे कौन ब्रह्मचारी है ? जैसी शक्ति हो वैसी तपस्या करो।

चूलिका पैशाची में अनुवाद करो

नगर के बाहर उद्यान है। इस नगर मे तुम कितने वर्षों से रहते हो ? मेघ को देखकर मन प्रसन्न होता है। मेघ का रंग कैसा है ? निर्झर किस गांव के पास है ? निर्झर का पानी मीठा है। किस क्रिया से कर्मो का गाढ बंधन बंधता है। मधुर फल कौन-कौन से है ? मधुर व्यवहार से मनुष्य दूसरे के दिल को जीत लेता है। बालक कहा रोता है ? बालक की माता कहा गई है ? महादेव की पूजा मंदिर मे होती है। महादेव का मंदिर यहा से कितनी दूर है ? भगवती चण्डी देवी की आराधना कौन करता है ? पानी वेग से बहता है।

प्रश्न

१. पैशाची मे ट्, ण और ल को क्या आदेश होता है ?
२. य को प कहा होता है ?
३. ज्ञ, न्य और ण्य को किस नियम से क्या आदेश होता है ? उदाहरण देते हुए स्पष्ट करो।
४. भारिया, सिनातं, कसटं में किस शब्द को क्या आदेश हुआ है ?
५. टा प्रत्यय को नेन और नाए आदेश कहां और किन शब्दो को होता है ?
६. भविष्यकाल के इ और ए प्रत्यय को क्या आदेश होता है ? पाच उदाहरण दो।
७. क्त्वा प्रत्यय को क्या आदेश होता है ? द्धून और त्थून रूप किस प्रत्यय को किस धातु के योग से होता है ?
८. चूलिका पैशाची में वर्ग के तृतीय और चतुर्थ वर्ण को क्या-क्या आदेश होता है ? प्रत्येक के एक-एक उदाहरण दो।

शब्द संग्रह

हउं—मैं	अम्हे, अम्हइं—हम दोनो/हम सब
तुहु—तू, तुम	तुम्हे, तुम्हइं—तुम दोनो/तुम सब
सो—वह	ते—वे दोनो/वे सब
सा—वह (स्त्री)	ता—वे दोनो/वे सब (स्त्री)
ज—जो (पु)	क (पु, नपुं)—कौन
जा—जो (स्त्री)	का (स्त्री)—कौन
कवणा (स्त्री)—कौन	कवण (पुं, नं) कौन

धातु संग्रह

वइट्ठ—बैठना	रूस—रूसना
सय—सोना	णच्च—नाचना
जग्ग—जागना	ण्हा—स्नान करना
लुक्क—छिपना	हरिस—प्रसन्न होना
जीव—जीना	हस—हसना

- जिण और मुणि शब्द याद करो। देखो—परिशिष्ट ३ संख्या १,२ गामणी, साहु और सयभू शब्द के रूप मुणि शब्द की तरह चलते है। देखो—परिशिष्ट ३ संख्या ३,४,५।
- हस धातु और हो धातु के वर्तमान काल के रूप याद करो। देखो—परिशिष्ट ४ संख्या १,२।

अपभ्रंश

१. अपभ्रंश मे चार प्रकार के ही शब्द मिलते हैं—(१) अकारान्त (२) आकारान्त (३) इकारान्त (४) उकारान्त।

२. अपभ्रंश मे चार प्रकार के कालवर्णित हैं—(१) वर्तमानकाल (२) विधि एवं आज्ञा (३) भूतकाल (४) भविष्यकाल।

सरल व्यंजन परिवर्तन

नियम ९९५ (अनादौ स्वरादसंयुक्तानां क-ख-त-थ-प-फां ग-घ-द-ध-ब-भाः ४।३९६) अपभ्रंश मे पद की अनादि मे क, ख, त, थ, प, फ हो तो उनको क्रमश ग, घ, द, ध, ब और भ आदेश होते हैं। क को ग—करं

(गरु)। ख को घ—सुखेन (सुघि)। त और थ को द और ध—कथितं (कधिदु)। प को ब—शपथं (सबधु)। फ को भ—सफलं (सभलउं)। ये शब्द श्लोकों के अन्तर्गत हैं, इसलिए आदि में नहीं हैं।

नियम ९९६ (मोनुनासिको वो वा ४।३९७) अपभ्रंश में अनादि असंयुक्त वर्तमान म को अनुनासिक व (वँ) विकल्प से होता है। कमलं (कँवलु, कमलु)।

संयुक्त वर्णपरिवर्तन

नियम ९९७ (वाधो रो लुक् ४।३९८) अपभ्रंश में संयुक्त वर्ण में र अधः (दूसरा) हो तो उसका लोप विकल्प से होता है। प्रियः (पिउ, प्रिय)।

नियम ९९८ (म्हो म्भो वा ४।४१२) अपभ्रंश में म्ह को म्भ विकल्प से होता है। ग्रीष्मः (गिम्भो)। म्ह शब्द संस्कृत में नहीं है। प्राकृत में (पक्ष्म-श्म-ष्म-स्म-ह्मां म्हः २।७४) से म्ह आदेश होता है। उसी का यहां ग्रहण है।

नियम ९९९ (आपद्-विपत्-संपदां द इः ४।४००) अपभ्रंश में आपद्, विपद् और संपद् के द् को इ होता है। आपद् (आवइ)। विपद् (विवइ)। संपद् (संपइ)।

आगम

नियम १००० (अभूतोपि क्वचित् ४।३९९) अपभ्रंश में कहीं पर न होने पर भी र हो जाता है। व्यासो महर्षिः (व्रासु महारिसी)।

नियम १००१ (परस्परस्यादिर: ४।४०९) अपभ्रंश में परस्पर शब्द के आदि में अकार हो जाता है। परस्परम् (अवरोप्परु)।

आदेश

नियम १००२ (स्वराणां स्वराः प्रायोपभ्रंशे ४।३२९) अपभ्रंश में स्वरों के स्थान पर प्रायः स्वर होते हैं। क्वचित् (कच्चु, काच्च)। वीणा (वेण, वीण)। बाहु (बाह, बाहा, बाहु)। पृष्ठम् (पट्ठि, पिट्ठि, पुट्ठि)। तृणः तणु, तिणु, तुणु)। प्राय. शब्द का अर्थ है—अपभ्रंश के नियमों से कहे जाते हैं उनका भी कहीं प्राकृत की तरह और कहीं शौरसेनी की तरह कार्य होता है।

नियम १००३ (अन्यादृशोऽन्नाइसावराइसौ ४।४१३) अपभ्रंश में अन्यादृश शब्द को अन्नाइस और अवराइस दो आदेश होते हैं। अन्यादृशः (अन्नाइसो, अवराइसो)।

नियम १००४ (प्रायसः प्राउ-प्राइव-प्राइम्ब-पग्गिम्वाः ४।४१४) अपभ्रंश में प्रायस् शब्द को प्राउ, प्राइव, प्राइम्व, पग्गिम्व—ये चार आदेश

होते हैं। प्रायस् (प्राउ, प्राइव, पाइम्व, पग्गिम्व)।

नियम १००५ (वान्यथोनु ४।४१५) अपभ्रंश मे अन्यथा शब्द को अनु आदेश विकल्प से होता है। अन्यथा (अनु, अन्नह)।

नियम १००६ (कुतसः कउ-कहन्ति हु ४।४१६) अपभ्रंश मे कुतस् शब्द को कउ और कहन्तिहु ये दो आदेश होते हैं। कुतः (कउ, कहन्तिहु)।

नियम १००७ (ततस्तदो स्तोः ४।४१७) अपभ्रंश मे ततः (तस्मात्) और तदा शब्दो को तो आदेश होता है। ततः (तो)। तदा। (तो)।

नियम १००८ (एवं-परं-समं-ध्रुवं-मा-मनाक-एम्व पर समाणु ध्रुवु मं मणाउं ४।४१८) अपभ्रंश मे एवं, पर, समं, ध्रुव, मा और मनाक् शब्दो को क्रमशः एम्व, पर, समाणु ध्रुवु, म और मणाउं आदेश होते हैं। एव (एम्व)। परं (पर)। समं (समाणु)। ध्रुवं (ध्रुवु)। मा (मं)। मनाक् (मणाउं)।

नियम १००९ (किलाथवा-दिव-सह-नहेः किराहवइ दिवे सहुं नाहिं ४।४१९) अपभ्रंश मे किल आदि शब्दो को क्रमशः किर आदि आदेश होते हैं। किल (किर)। अथवा (अहवइ)। दिवा (दिव)। सह (सहुं)। नहि (नाहिं)।

नियम १०१० (पश्चादेवमेवैवेदानीं-प्रत्युतेततः पच्छइ-एम्वइ-जि-एम्वहिं पच्चलिउ-एत्तेह ४।४२०) अपभ्रंश मे पश्चात् आदि शब्दो को पच्छइ आदि आदेश होते हैं। पश्चाद् (पच्छइ)। एवमेव (एम्वइ)। एव (जि)। इदानीम् (एम्वहिं)। प्रत्युत (पच्चलिउ)। इतः (एत्तहे)।

नियम १०११ (विषण्णोक्त-वर्त्मनो वुन्न-वुत्त-विच्चं ४।४२१) अपभ्रंश मे विषण्ण आदि को वुन्न आदि आदेश होते हैं। विषण्णः (वुन्नउ)। उक्तः (वुत्तउ)। वर्त्म (विच्चउ)।

नियम १०१२ (शीघ्रादीनां वहिल्लादयः ४।४२२) शीघ्र आदि शब्दो को वहिल्ल आदि आदेश होते हैं। शीघ्रम् (वहिल्लउ)। झकटः (घंघलु)। अस्पृश्य ससर्गः (विट्टालु)। भयः (द्रवक्कउ)। आत्मीयः (अप्पणउ)। नव (नवखु)। दृष्टिः (द्रेहि)। गाढः (निच्चट्टु)। साधारणः (सड्ढलु)। कौतुकः (कोड्डु)। कीडा (खेड्डु)। रम्यः (रवण्णु)। अद्भुतम् (ढक्करि)। हे सखि (हेल्लि)। पृथक्पृथक् (जुअजुअ)। मूढः (नालिउ)। मूढः (वढउ)। अवस्कन्दः (दडवडउ)। यदि (छुड्डु)। सम्बन्धी (केरउ)। सम्बन्धी (तणु)। माभैषीः (मब्भीसडी)। यद् यद् दृष्टम् (जाइट्ठिआ)।

नियम १०१३ (इवार्थे नं-नउ-नाइ-नावइ-जणि-जणवः ४।४४४) इव के अर्थ मे नं आदि छ आदेश होते हैं। इव (नं, नउ, नाइ, नावइ, जणि,

सोती है। तुम दोनो बैठती हो। हम सब जीते है। मैं रूसता हूं। वे सब छिपते है। वे दोनो सोते हैं। वे सब नाचती हैं। मैं हंसता हूं। तुम जागते हो। हम सब हंसती हैं। तुम दोनो प्रसन्न होते हो। तुम जीते हो। मैं बैठता हूं। हम दोनो सोते हैं। मैं स्नान करता हू। तुम स्नान करते हो। तुम दोनो स्नान करते हो। वे सब स्नान करती हैं। हम दोनो स्नान करते हैं। वह छिपता है। हम दोनो हंसते हैं। वे दोनो जीते हैं।

वाक्यों को शुद्ध करो (क्रिया बदलो)

सो हसउं। हउं रूसहि। अम्हे सयहु। सा हरिसेमि। अम्हइं हसित्था। तुम्हे सयमो। तुहु णच्चह। ते जीवमि। तुम्हइं सयन्ति। सा रूसहु। हउं जग्गन्ते। तुहु लुक्कह। सा जीवसि। हउ रूसए। अम्हे जीवउं। अम्हइं हसए। सो जीवेमि। तुम्हे वइट्ठसि। हउं सयहु। तुम्हइं जीवहि। अम्हे हसित्था। हउं रूससे। सा वइट्ठाइ।

वाक्य को शुद्ध करो (सर्वनाम बदलो)

हउं वइट्ठमो। तुहुं सयउ। अम्हे जग्गेह। तुम्हइं णच्चामो। तुम्हे लुक्केमो। ते लुक्कउ। सो हरिसह। ता सयह। अम्हे वइट्ठन्तु। सो ण्हाऊं। तुम्हइं जीव। अम्हे णच्चसु। ते रूसह। हउ वइट्ठइ। तुम्हे हसन्ति। तुहु जीवेइ। अम्हइं जगगउं।

प्रश्न

१. अपभ्रंश मे कितने प्रकार के काल वर्णित हैं?
२. अपभ्रंश मे कितने प्रकार के शब्द मिलते हैं?
३. पद की अनादि मे क,ख,त,थ,प, फ को क्या आदेश होता है?
४. संयुक्त वर्ण मे किन वर्णो को क्या आदेश होता है?
५. अपभ्रंश मे कहां किन वर्णो का आगम होता है?
६. अन्यादृश, प्रायस्, अन्यथा, कुतस्, तदा, समं, मनाक्, नहि, सह, प्रत्युत, इदानीम्, इतः, इव को अपभ्रंश मे क्या-क्या आदेश होता है?
७. नियम १०१२ के आदेश होने वाले चार शब्द बताओ।

शब्द संग्रह (पुंलिंग)

गंथ—पुस्तक
जणेर—बाप
कियंत—मृत्यु
करह—ऊंट
नरिंद—राजा
पट—वस्त्र
सप्प—साप
गव्व—गर्व
सायर—समुद्र
रयण—रत्न
बालअ—बालक
गाम—गाव
मित्त—मित्र
सलिल—पानी
मेह—मेघ
घर—मकान
दुक्ख—दु:ख

धातु संग्रह

गल—गलना
गज्ज—गर्जना
घाल—डालना
चोप्पड—स्निग्ध करना, चोपडना
धो—धोना
फाड—फाडना
लज्ज—शरमाना
डर—डरना
धोक—बुलाना
कुट्ट—कूटना
छोल्ल—छीलना
छोट—छोडना
उपकार—उपकार करना
रोक्क—रोकना
उच्छल—उछलना
घूम—घूमना

अव्यय

जाम—जब तक	ताम—तब तक	जेम—जिस प्रकार
तेम—उस प्रकार	जहा—जिस प्रकार	तहा—उस प्रकार

- माला शब्द याद करो। देखो परिशिष्ट ३ संख्या ६। मइ, वाणी, धेणु और वहू शब्द के रूप माला की तरह चलते है। देखो—परिशिष्ट ३, संख्या ७,८,९,१०)।
- हस और हो धातु के विधि एवं आज्ञा के रूप याद करो। देखो—परिशिष्ट ४, संख्या १,२।

नियम १०१७ (सौ पुंस्योद् वा ४।३३२) अपभ्रंश मे पुंलिंग में अकारान्त नाम परे सि हो तो अकार को ओकार विकल्प से होता है।

नियम १०१८ (स्यम् जस्-शसां लुक् ४।३४४) अपभ्रंश मे सि, अम्, अम् और शस् का लुक् हो जाता हैं। जिणो। पक्ष में।

नियम १०१६ (स्यमोरस्योत् ४।३३१) अपभ्रंश मे अकार को उकार हो जाता है सि और अम् (द्वितीया का एकवचन)परे हो तो। जिणु।

नियम १०२० (स्यादौ दीर्घ ह्रस्वौ ४।३३०) अपभ्रंश मे पुलिंग मे नाम का अन्त्य अक्षर ह्रस्व हो तो दीर्घ और दीर्घ हो तो ह्रस्व विकल्प से होता है, स्यादि विभक्ति परे हो तो। जिणा, जिण। जिणु। जिणा, जिण।

नियम १०२१ (एट्टि ४।३३३) अपभ्रंश में अकार को एकार होता है, टा प्रत्यय परे हो तो।

नियम १०२२ (आट्टो णानुस्वारौ ४।३४२) अपभ्रंश मे अकार से परे टा प्रत्यय को ण और अनुस्वार ये दो आदेश होते हैं। जिणेण, जिणें।

नियम १०२३ (भिस्येद् वा ४।३३५) अपभ्रंश मे अकार को एकार विकल्प से होता है भिस् (तृतीया का बहुवचन) परे हो तो।

नियम १०२४ (भिस् सुपोर्हि ४।३४७) अपभ्रंश मे भिस् और सुप् (सप्तमी का बहुवचन) को हि आदेश होता है। जिणेहि। पक्ष मे जिणहि।

नियम १०२५ (ङसे र्हे-हू ४।३३६) अपभ्रंश मे अकार से परे ङसि को हे और हु ये दो आदेश होते है। जिणहे, जिणहु।

नियम १०२६ (भ्यसो हुं ४।३३७) अपभ्रंश मे अकार से परे भ्यस् (चतुर्थी का बहुवचन)को हुं आदेश होता है। जिणहुं।

नियम १०२७ (ङसः सु-हो स्सवः ४।३३८) अपभ्रंश मे अकार से परे ङस् (षष्ठी का एकवचन) को सु, हो, स्स ये तीन आदेश होते हैं। जिणसु, जिणहो, जिणस्सु।

नियम १०२८ (आमो हं ४।३३९) अपभ्रंश मे अकार से परे आम् (षष्ठी का बहुवचन) को हं आदेश होता है। जिनानाम् (जिणहं)।

नियम १०२९ (षष्ठ्याः ४।३४५) अपभ्रंश मे षष्ठी विभक्ति का प्राय. लुक् हो जाता है। जिनस्य, जिनानाम् (जिण)।

नियम १०३० (ङि नेच्च ४।३३४) अपभ्रंश मे अकार से परे ङि (सप्तमी का एकवचन) प्रत्यय हो तो प्रत्यय सहित अकार को इकार और एकार होता है। जिणि, जिणे। जिणेहिं, जिणहि हे जिणो, हे जिणु।

नियम १०३१ (आमन्त्र्ये जसो हो ४।३४६) अपभ्रंश मे आमन्त्रण अर्थ मे नाम से परे जस् को हो आदेश होता है। जिणहो।

नियम १०३२ (सर्वस्य साहो वा ४।३६६) अपभ्रंश मे सर्व शब्द को साह आदेश विकल्प से होता है। सर्व (साहु, सव्वु)।

नियम १०३३ (सर्वा दे र्ङसे र्हां ४।३५५) अपभ्रंश मे सर्वादि शब्दो के अकार से परे ङसि (पंचमी का एकवचन) को हा आदेश होता है। सर्व-

स्मात् (सव्वहां)।

नियम १०३४ (ङेर्हिं ४।३५७) अपभ्रंश में सर्वादि शब्दों के अकार से परे ङि को हिं आदेश होता है। सर्वस्मिन् (सव्वहिं)। शेष रूप जिन के समान चलते हैं।

नियम १०३५ (यत्तदः स्यमोर्ध्रुं त्रं ४।३६०) अपभ्रंश में यत् और तत् शब्द के स्थान पर क्रमशः ध्रुं, त्रं आदेश विकल्प से होता है, सि और अम् परे हो तो। तत् (त्रं)। यत् (ध्रुं)।

नियम १०३६ (यत्तत् किम्भ्यो ङसो डासुर्न वा ४।३५८) अपभ्रंश में यत्, तत् और किं शब्द के अकार से परे ङस् को डासु आदेश विकल्प से होता है। तस्य (तासु)। यस्य (जासु)।

प्रयोग वाक्य (विधि एवं आज्ञा)

सो हसउ, हसेउ (वह हंसे)। अम्हे, अम्हइं हसमो, हसामो, हसेमो (हम हंसें)। हउं हसमु (मैं हंसूं)। ते हसन्तु, हसेन्तु (वे दोनों/वे सब हंसें)। तुम्हे हसह, हसेह (तुम दोनों/तुम सब हंसो)। अम्हे न्हामो। तुम्हे न्हेह। हउं ठामु। ते जग्गेन्तु। रामु न्हाउ। हउं डरमु। सो फुल्लउ। तुम्हइं भिडेह। हउं घूमेमु। सा लज्जउ। ते पसरतु। तुम्हे डरह। सूरिओ उगउ। देविंदो उच्छलउ। जणेरु घूमउ। मउ (यति) गंथ पढउ। कण्हो उच्छलउ। कियंतो लुक्कउ। इंदधणु उगउ। गामी न्हाउ। बालआ जग्गन्तु। तुहुं हसु। हउं लुक्केमु। सो मरेउ। सा होउ। अम्हे लुक्कामो। तुहुं उच्छल। हउं भिडेमु। अम्हे घूमेमो। तुहुं नच्चहि। हउं जीवमु। सो लुटउ। तुहुं पसरु। तुम्हे पसरह। अम्हइं थक्कमो। तुहुं थक्कि। तुम्हइं थक्कह। हउं थक्कमु। सुशीला पढउ। नरिंदो उपकरउ। सा दुक्ख छोडउ। सीया धोउ। तुहुं छोडे। अम्हे छोल्लेमो। ता टालंतु। विमला चोप्पडउ। तुम्हे पोक्कह। मेहो गज्जउ। तुहुं रोक्केहि। सा कुट्टउ। तुहुं पड फाडि। सायर गज्जउ। कियंतो रोक्कउ। तुम्हे दुक्ख छोडह। मित्तो फोक्कउ।

अपभ्रंश में अनुवाद करो

तुम दोनो घूमो। वह शरमाए। वे दोनों भिडें। हम कूटें। तुम धोओ। वह छीले। हम सब छोडें। तुम फाडो। हम दोनो रोकें। तुम सब सोओ। वे दोनो छिपें। हम बुलाएं। वे धोएं। हम दोनो नाचें। वे सब स्नान करें। हम सब बैठें। तुम सोओ। मैं जागूं। तुम दोनो जागो। मैं जीऊं। तुम छिपो। तुम दोनो हसो। वे नाचें। हम सब नाचें। वे सोएं। मैं सोऊं। वे उपकार करें। वे दोनो टालें। मैं नाचूं। तुम सब बैठो। वे दोनों जीवें। वे सब जागें। हम सब डरें। तुम गर्जो। वे रोकें। तुम छीलो। हम धोएं। वे सब धोएं। वह नाचे। सीता कूटे। हम रोकें। मैं रोकूं। वह उछले।

हम दोनो उछले। वे दोनो शरमाएं। तुम उछलो। मैं उछलू। मैं उपकार करूं। तुम उपकार करो।

वाक्य शुद्ध करो (क्रिया बदलो)

तुम्हे ण्हामु। अम्हे लुक्कह। तुहुं ण्हाउ। सा गच्चे। हउं भिडु। ते कोकहि। सो रूसेमो। हउं डरि। सा भिडह। तुहु कुट्टेमु। हउं हरिसउं। ते ण्हामु। अम्हइं घूम। हउं घालइ। तुम्हे लज्जामो। सा ण्हासु। तुहुं चोप्पडउ। तुम्हइं चोप्पडंतु। हउं ण्हाह। अम्ह सयह।

प्रश्न

१. जणेर, कियंत, करह, गंथ, सलिल, रयण, मित्त, पड, मेह, दुक्ख और सायर शब्द का अर्थ बताओ।

२ गर्जना, डालना, स्निग्ध करना (चोपडना) धोना, फाडना, कूटना, छीलना, बुलाना, रोकना, उछालना, उपकार करना, छोडना, कूटना के अर्थ मे धातु बताओ।

३. पुलिंग मे अकार से परे, टा, भिस्, भ्यस्, आम् और ङि प्रत्यय परे हो तो क्या-क्या आदेश होता है।

४ सु, हा, स्स, हो, रहा, हिं, त्र, डासु—ये आदेश किस शब्द को कौन-सा प्रत्यय परे होने पर होता है?

अपभ्रंश (३)

शब्द संग्रह (नपुंसकलिंग)

भायण—बर्तन　　वत्थ—वस्त्र　　जोव्वण—यौवन
मण—मन　　पत्त—कागज　　घय—घी
भोयण—भोजन　　णायर—नागरिक　　जीवण—जीवन
रज्ज—राज्य　　खीर—दूध　　पट्ठ—पाठ
मुह—मुख　　मक्कुर—मकड़ी　　णाण—ज्ञान
वेरग्ग—वैराग्य　　मज्ज—मद्य　　झाण—ध्यान
मरण—मरण

धातु संग्रह

कुद्द—कूदना　　पीस—पीसना
उक्खाड—उखाड़ना, खोदना　　धाव—भागना
लिह—लिखना　　णिज्झर—झरना
कट्ट—काटना　　मुड—मुड़ना
वक्खाण—व्याख्यान करना　　पिब—पीना
सुंघ—सूंघना

अव्यय

अज्जु—आज　　म—मत　　जेत्थु—जहां
केत्थु—कहां　　ण—नहीं　　तेत्थु—वहां

- नपुंसकलिंग में कमल, वारि, महु शब्द को याद करो। देखो—परिशिष्ट ३ संख्या ११,१२,१३।
- इस और हो धातु के भविष्यकाल के रूप याद करो। देखो—परिशिष्ट ४।

नियम १०३७ (अदस ओइ ४।३६४) अपभ्रंश में अदस् के स्थान पर ओइ आदेश होता है, जस् और शस् परे हों तो। अमी, अमून् (ओइ)।

नियम १०३८ (इदम आयः ४।३६५) अपभ्रंश में इदं शब्द को आय आदेश होता है, स्यादि विभक्ति परे हो तो। अयं (आयउ)।

नियम १०३९ (एतदः स्त्री-पुंक्लीबे एह-एहो-एहु ४।३६२) अपभ्रंश में एतत् शब्द को स्त्रीलिंग में एह, पुलिंग में एहो और नपुंसकलिंग में एहु आदेश होता है, सि और अम् परे हो तो। एह कुमारी। एहो नर। एहु

मणोरह-ठाणु ।

नियम १०४० (एइर्जस्-शसोः ४।३६३) अपभ्रंश मे एतत् शब्द को एइ आदेश होता है, जस् और शस् परे हो तो। एते घोटकाः (एइ घोडा) एतान् पश्य (एइ पेच्छ)।

नियम १०४१ (किम काइं-कवणौ वा ४।३६७) अपभ्रंश मे किं शब्द को काइं और कवण आदेश विकल्प से होता है। किम् (काइं, कवणु, किं) ।

नियम १०४२ (किमो डिहे वा ४।३५६) अपभ्रंश मे किं शब्द के अकारान्त से परे ङसि को डाहे आदेश विकल्प से होता है। कस्मात् (किहे) । मुनिः (मुणी)।

नियम १०४३ (एं चेदुतः ४।३४३) अपभ्रंश मे इकार और उकार से परे टा को एं, ण और अनुस्वार होता है। मुनिना (मुणिएं, मुणिण, मुणिं) । मुनिभि (मुणिहिं) ।

नियम १०४४ (ङसि-भ्यस्-ङीनां हे-हुं-हय ४।३४१) अपभ्रंश मे इकार और उकार से परे ङसि, भ्यस् और ङि को क्रमशः हे, हु और हि—ये तीन आदेश होते हैं। मुने (मुणिहे) । मुनिभ्य (मुणिहु) । मुनौ (मुणिहि) मुने (मुणि) षष्ठी मे विभक्ति का लुक् हुआ है ।

नियम १०४५ (हुं चेदुद्भ्याम् ४।३४०) अपभ्रंश मे इकार और उकार से परे आम् को हुं, हु आदेश होते हैं। मुनीनाम् (मुणिहुं, मुणिहु) इसी प्रकार उकारान्त शब्द के भी रूप बनते हैं। प्रायो अधिकार से कही पर सुप् प्रत्यय को भी हुं आदेश होता है। द्वयो (दुहुं)।

स्त्रीलिंग

नियम १०४६ (स्त्रियां जस्-शसोरुदोत् ४।३४८) अपभ्रंश मे स्त्रीलिंग मे नाम से परे जस् और शस् हो तो प्रत्येक को उ और ओ आदेश होते हैं। माला (मालाउ, मालाओ)। माला. (मालाउ, मालाओ) ।

नियम १०४७ (ट ए ४।३४९) अपभ्रंश मे स्त्रीलिंग मे नाम से परे टा को ए आदेश होता है। मालया (मालाए) । मालाभि. (मालाहिं) ।

नियम १०४८ (ङस्-ङस्यो र्हे ४।३५०) अपभ्रंश मे स्त्रीलिंग मे वर्तमान नाम से परे ङस् और ङसि हो तो उनको हे आदेश होता है। मालाया, मालाया. (मालाहे) ।

नियम १०४९ (भ्यसामोर्हु. ४।३५१) अपभ्रंश मे स्त्रीलिंग में वर्तमान नाम से परे भ्यस् और आम् प्रत्यय हो तो प्रत्ययो को हु आदेश होता है। मालाभ्य, मालानाम् (मालाहु) ।

नियम १०५० (ङे हि ४।३५२) अपभ्रंश मे स्त्रीलिंग मे वर्तमान

नाम से परे ङि को हि आदेश होता है। मालायाम् (मालाहि)। हे माला, हे मालाहो।

नियम १०५१ (स्त्रियां डहे ४।३५९) अपभ्रंश में स्त्रीलिंग में वर्तमान यत्, तत् और किं शब्द से परे ङस् को डहे आदेश विकल्प से होता है। तस्या (तहे)। यस्याः (जहे)। कस्याः (कहे)।

नपुंसकलिंग

नियम १०५२ (क्लीबे जस्-शसो रिं ४।३५३) अपभ्रंश में नपुंसक लिंग में वर्तमान नाम से परे जस् और शस् को इं आदेश होता है। कमलानि (कमलइं)। कमलानि (कमलइं)। शेष रूप पुल्लिंग के समान चलते हैं।

नियम १०५३ (कान्तस्यात उं स्यमोः ४।३५४) अपभ्रंश में नपुंसक लिंग में वर्तमान ककारान्त नाम में जो अकार हो उससे परे सि और अम् को उं आदेश होता है। तुच्छकम्, तुच्छकम् (तुच्छउं)।

नियम १०५४ (इदमः इमुः क्लीबे ४।३६१) अपभ्रंश में नपुंसक लिंग में वर्तमान इदम् शब्द से परे सि और अम् को शब्द सहित इमु आदेश होता है। इदं (इमु) इदं (इमु)। इदं कुलं (इमुकुलु)। इदं कुलं पश्य (इमुकुलु देक्खु)।

प्रयोग वाक्य (भविष्यकाल)

सा णच्चेसइ/णच्चेसए/णच्चिहिइ/णच्चिहिए (वह नाचेगी)। ता णच्चेसंहि/णच्चेसंति/णच्चिहिंहि/णच्चिहिंति (वे नाचेंगी)। हउं ण्हासउं/ण्हासामि/ण्हाहिउं/ण्हाहिमि (मैं नहाऊंगा)। अम्हे ण्हासहुं/ण्हासमो/ण्हासमु/ण्हासम/ण्हाहिहुं/ण्हाहिमो/ण्हाहिमु/ण्हाहिम (हम सब/हम दोनों नहाएंगे)। तुहुं णच्चेसहि/णच्चेससि/णच्चेससे/णच्चिहिहि/णच्चिहिसि (तुम नाचोगे)। तुम्हे णच्चेसहु/णच्चेसह/णच्चेसइत्था/णच्चिहिहु/णच्चिहिह/णच्चिहित्था (तुम दोनों/तुम सब नाचोगे)। हउं णच्चेसउं/णच्चेसमि/णच्चिहिउं/णच्चिहिमि (मैं नाचूंगा)। अम्हे णच्चेसहुं / णच्चेसमो / णच्चेसमु / णच्चेसम / णच्चिहिहुं / णच्चिहिमो / णच्चिहिमु/णच्चिहिम (हम नाचेंगे)। सुसीला पीसेसइ। सा पड कट्टेहिइ। अम्मे अज्जु वखाणेसहुं। मइं (मुझको) को कोकिहिइ? सो पइं (तुमको) रोक्किहिए। तुहुं भायणि घय घालिसहि। सीया वत्थ फाडिहिहि। हउं सच्च उग्घाडि हिउं। माया चोप्पडिहिइ। सा पत्त लिहिहिए। तुहुं कट्ठ छोल्लेससि। तुम्हे उपकरिहिहु। अम्हे बोल्लिसहुं। बालअ सलिल पिविहिइ। सो लक्कुडाइं कट्टेसइ। सा पत्तु लिहिसए। तुहुं कट्टइं न कट्टि हिहि। सा धण्णाइं पीसिहिए। तुहुं सच्च कोकिहिसे। हउं खीरइं पिवेसउं।

अपभ्रंशमें अनुवाद करो

वह शरमाएगी। हम सब कूदेंगे। वे दोनो बैठेंगे। वह उछलेगा। हम नही थकेंगे। मैं नही मरूगा। तुम दोनो कहां घूमोगे? वे सब नही सोएंगे। मैं नही डरूंगा। तुम सत्य नही बोलोगे। वह वस्त्र नही काटेगी। वह चुपडेगी। तुम कहा व्याख्यान करोगे? तुम्हे कौन रोकेगा? मुझे कौन बुलाएगा? मैं काष्ठ नही छीलूगा। वह घी नही डालेगी। तुम आज कहां बैठोगे? मैं आज बोलूगा। वे दोनो नही पीसेगी। वह वस्त्र फाडेगा। मैं उपकार करूगा। तुम पत्र नही लिखोगे। वह स्नान नही करेगी। तुम कहां छिपोगे? मैं नही नाचूगा। आज वे पत्र लिखेंगे। तुमको कौन बुलाएगा? मैं सत्य उघाडूगा। तुम कहा कूदोगे? वे कहा बैठेंगे? वह आज दूध पीएगा। वह वस्त्र सुखाएगी। मैं नही थकूगा। हम कहा घूमेगे? मैं व्याख्यान करूंगा। हम सब कूदेंगे।

रिक्तस्थान की पूर्ति करो

(१)· ··लज्जेसइत्था।(२)····· हसेसहुं।(३)····· वोल्लिहिमु। (४) ·उग्घाडेसउं। (५)· · कट्टेसहु। (६)···· उपकरिहिसे। (७) · · चोप्पडेसमु। (८)··· ··फाडिहिहिं। (९)······वक्खाणिहिसि। (१०)· ·· रोक्किहिमि। (११)··· ·घालिसउ। (१२)······पीसेसन्ति। (१३) ·····वोल्लेसहु। (१४)······लिहिहिए। (१५)··· फाडिहिहु। (१६)·· ·· करेसामि। (१७)······ण्हाहिमु। (१८) कोकित्था। (१९) ···वोल्ल। (२०) · उपकरेमु। (२१)··· फाडसि। (२२) ··· लिहउ। (२३) · वडट्ठहु। (२४) ·· रोक्कमु। (२५)······ घालहु। (२६)····· पीसतु। (२७)··· · फाडसु। (२८) · ·· उग्घाडए। (२९)····· छोल्लउं। (३०)······कट्टहु।

प्रश्न

१. स्त्रीलिंग मे ओ, ए, हे, हु, डहे आदेश किन-कन प्रत्ययो को होता है?
२ नपुसक लिंग मे जस् और शस् प्रत्यय को क्या आदेश होता है।
३. नपुसक मे उं आदेश किस प्रत्यय को होता है?
४ पुलिंग मे ओइ, काइ, कवण, एइ, हे आदेश किस को किस प्रत्यय परे होने पर होता है।
५. लकडी, वस्त्र, नागरिक, यौवन, भोजन, वैराग्य, घी, पत्र, जीवन, ज्ञान, मरण, सुख—इन शब्द के लिए अपभ्रंश शब्द बताओ।
६. फुल्ल, थक्क, णिज्झर, लुढ, पिव, पीस, उग्घाड, लिह, कट्ट, वक्खाण, सुक्क धातु के अर्थ बताओ।

शब्द संग्रह (आकारान्त शब्द)

जणेरी—माता
वाया—वाणी
कमला—लक्ष्मी
संझा—संध्या
सुया—पुत्री
सोहा—शोभा
जरा—बुढापा
पसंसा—प्रशंसा
महिला—स्त्री
झुंपडा—झोंपडी
मेहा—बुद्धि
तिसा—तृषा
निसा—रात्रि

धातु संग्रह

वड्ढ—बढना
उवविस—बैठना
खुम्म—भूख लगना
खास—खांसना
उवसम—शांत होना
लग—लगना
उस्सस—सांस लेना
छिज्ज—छीजना
विअस—खिलना
लोट्ट—लोटना
चिट्ठ—ठहरना, बैठना
चुक्क—भूल करना, चूकना
कुद्द—कूदना
छुट्ट—छूटना
ओढ—ओढना

अव्यय

जइ—यदि
तो—तो
इय—इस प्रकार
जह—जैसे
तह—वैसे
तम्हा—इसलिए
जम्हा—चूंकि
वि—भी
णवि—नहीं

० सव्व, त, ज, क एत, इम शब्द याद करो। देखो—परिशिष्ट ३ संख्या १४,१५,१६,१७,१८,१९।

युष्मदस्मत् और स्त्री प्रत्यय

नियम १०५५ (युष्मदः सौ तुहुं ४।३६८) अपभ्रंश में युष्मद् शब्द से परे सि हो तो तुहुं आदेश होता है। त्वम् (तुहुं)।

नियम १०५६ (जस्-शसोस्तुम्हे तुम्हइं ४।३६९) अपभ्रंश में युष्मद् शब्द को जस् और शस् प्रत्यय सहित तुम्हे और तुम्हइं आदेश होते हैं। यूयम् (तुम्हे, तुम्हइं)। युष्मान् (तुम्हे, तुम्हइं)।

नियम १०५७ (टा-ड्यमा पइं तइं ४।३७०) अपभ्रंश मे युष्मद् शब्द को टा, ङि और अम् प्रत्यय सहित पइं और तइं आदेश होते हैं। त्वया (पइं, तइं)। त्वयि (पइ, तइ)। त्वाम् (पइं, तइं)।

- नियम १०५८ (भिसा तुम्हेंहिं ४।३७१) अपभ्रंश मे भिस् प्रत्यय सहित युष्मद् शब्द को तुम्हेंहिं आदेश होता है। युष्माभिः (तुम्हेंहिं)।

नियम १०५९ (ङसि-ङस्भ्यां तउ-तुज्झ-तुध्र ४।३७२) अपभ्रंश मे ङसि और ङस् प्रत्यय सहित युष्मद् शब्द को तउ, तुज्झ और तुध्र आदेश होते हैं। त्वत् (तउ, तुज्झ, तुध्र)। तव (तउ, तुज्झ, तुध्र)।

नियम १०६० (भ्यसाम्भ्यां तुम्हहं ४।३७३) अपभ्रंश में भ्यस् और आम् प्रत्यय सहित युष्मद् शब्द को तुम्हहं आदेश होता है। युष्मभ्यम् (तुम्हहं)। युष्माकम् (तुम्हह)।

नियम १०६१ (तुम्हासु सुपा ४।३७४) अपभ्रंश मे सुप् प्रत्यय सहित युष्मद् शब्द को तुम्हासु आदेश होता है। युष्मासु (तुम्हासु)।

नियम १०६२ (सावस्मदो हउ ४।३७५) अपभ्रंश मे सि प्रत्यय सहित अस्मद् शब्द को हउ आदेश होता है। अहम् (हउं)।

नियम १०६३ (जस्-शसो रम्हे अम्हइं ४।३७६) अपभ्रंश मे जस् और शस् प्रत्यय सहित अस्मद् शब्द को अम्हे और अम्हइं आदेश होते हैं। वयम् (अम्हे, अम्हइ)। अस्मान् (अम्हे, अम्हइ)।

नियम १०६४ (टा-ड्यमा मइं ४।३७७) अपभ्रंश मे टा, ङि और अम् प्रत्यय सहित अस्मद् शब्द को मइ आदेश होता है। मया (मइ)। मयि (मइ)। माम् (मइ)।

नियम १०६५ (अम्हेंहिं भिसा ४।३७८) अपभ्रंश मे भिस् प्रत्यय सहित अस्मद् शब्द को अम्हेंहिं आदेश होता है। अस्माभि. (अम्हेंहिं)।

नियम १०६६ (महु मज्झु ङसि-ङस् भ्याम् ४।३७९) अपभ्रंश मे ङसि और ङस् प्रत्यय सहित अस्मद् शब्द को महु और मज्झु आदेश होते हैं। मत् (महु, मज्झु)। मम (महु, मज्झु)।

नियम १०६७ (अम्हह भ्यसाम्भ्याम् ४।३८०) अपभ्रंश मे भ्यस् और आम् प्रत्यय सहित अस्मद् शब्द को अम्हह आदेश होता है। अस्मभ्यम् (अम्हह)। अस्माकम् (अम्हह)।

नियम १०६८ (सुपा अम्हासु ४।३८१) अपभ्रंश में सुप् प्रत्यय सहित अस्मद् शब्द को अम्हासु आदेश होता है। अस्मासु (अम्हासु)।

स्त्री प्रत्यय

नियम १०६९ (स्त्रियां तदन्ताड्डी ४।४३१) अपभ्रंश मे स्त्रीलिंग मे वर्तमान प्राक्तन सूत्रद्वय (अ-डड-डुल्लाः स्वार्थिक-क-लुक् च ४।४२९ और

हसिआ/हसिउ/हसिओ (वह हंसा)। ते हसिअ/हसिआ (वे दोनो हंसे/वे सब हसे)। रज्ज/रज्जा/रज्जु वड्ढिअ/वड्ढआ/वड्ढिउ (राज्य बढा)। कमल/कमला/कमलइ/कमलाइं विउसिअ/विउसिआ/विउसिअइं/विउसिआइं (सब कमल खिले। नरिंदु बोल्लिओ। महुइ भुंजिआइं। सा लज्जिआ। ता उट्ठिअउ। साहू जग्गिउ। तुहु लुक्किओ। ता वड्ढिओ। महेलीओ डरिअओ। जणेरी बोल्लिअ। कमला उस्सासिअ। कोवु उवसमिओ। तिसा लग्गिअ। जणेरी खासिआ। पससा वड्ढिअ। जणेरु उवविसउ। सुसीला चुक्किआ। जणेरी पड घोआ। कमल विअसिउ। वेराग्ग वड्ढिअ। लक्कुड कट्टिआ।

अपभ्रंश में अनुवाद करो (बहुवचन के सारे रूपो का उपयोग करो प्रत्येक वाक्य में)

स्वामी डरा। माता जागी। महिलाएं बैंठी। वस्तुएं बढी। राजा सोया। महिलाए छिपी। शक्ति जागी। सुशीला शरमाइ। राज्य बढा। साधु आज नहीं सोया। कमल खिला। वह उठा। तुम ठहरे। तुम सब कहां बैंठे ? सीता नही डरी। माता ने वस्त्र ओढा। उन्हें प्यास लगी। महिलाए शांत हुईं। राजा को भूख लगी। उसकी प्रशसा हुई। बालक बैठा। पुत्री ने सांस लिया। बुद्धि बढी। पिता बैठा। महिलाए ठहरी। पुत्री जगी। वह छिपी। वे चुके। पुत्रिया थकी। महिलाएं घूमी। सीता ने धान्य पीसा। यौवन लुढक गया। सत्य खोला। लकडिया काटी। सुख बढा। माता भूली। दूध पीया। यौवन बढा।

प्रश्न

१. पइ, तइ, मइं, तउ, तुध्र, तुम्हह, महु, अम्हासु—ये रूप किस शब्द के किस विभक्ति और वचन के हैं ?
२. स्त्रीलिंग मे डी और डा प्रत्यय कहां होता है ?
३. भूतकाल के रूप बनाने का क्या तरीका है ?
४. जणेरी, कमला, मुया, जरा, महिला, मेहा, वाया, संझा, सोहा, पसंसा, झुपडा और तिसा—इन शब्दों को अपने वाक्य मे प्रयोग करो।
५ तम्हा, इय और जह—इन अव्ययो का वाक्य मे प्रयोग करो।
६. वड्ढ, खुम्म, उवसम, उस्सस, विअस, चिट्ठ, कुद्द, ओढ, उवविस, खास, लग्ग, छिज्ज, लोट्ट, चुक्क और छुट्ट धातु के अर्थ बताओ।

११७ अपभ्रंश (५)

शब्द संग्रह

कइ (पुं)—कवि	दहि (न)—दही	वत्थु (न)—पदार्थ
साहु (पु)—साधु	आगि (स्त्री)—आग	भत्ति (स्त्री)—भक्ति
गुरु (पु)—गुरु	गव्व (पु)—गर्व	माया (स्त्री)—माता
बिन्दु (पु)—बूंद	पुत्ती (स्त्री)—पुत्री	सामि (पु)—स्वामी
जंतु (पु)—प्राणी	दिवायर (पु)—सूर्य	

धातु संग्रह

दा—देना	सुण—सुनना	भुल—भूलना
मग्ग—मांगना	गवेस—खोज करना	वण्ण—वर्णन करना
सेव—सेवा करना	गरह—निंदा करना	पढ—पढ़ना
कर—करना	मार—मारना	सुमर—स्मरण करना
जेम—जीमना	चोर—चुराना	गच्छ—जाना
थुण—स्तुति करना	सीख—सीखना	

○ अम्ह और तुम्ह शब्द तथा संख्यावाची शब्दों को याद करो। देखो—परिशिष्ट ३ संख्या २३,२४,२६ से ३५।

तद्धित

नियम १०७२ (पुनर्विनः स्वार्थे डुः ४।४२६) अपभ्रंश में पुनर् और विना को स्वार्थ में डु प्रत्यय होता है। पुनः (पुणु)। विना (विणु)।

नियम १०७३ (अवश्यमो डें-डौ ४।४२७) अपभ्रंश में अवश्यम् को स्वार्थ में डें और ड—ये प्रत्यय होते हैं। अवश्यम् (अवसें, अवस)।

नियम १०७४ (एकशसो डिः ४।४२८) अपभ्रंश में एकशस् शब्द से स्वार्थ में डि प्रत्यय होता है। एकशः (एक्कसि)।

नियम १०७५ (अ-डड-डुल्लाः स्वार्थिक-क-लुक् च ४।४२९) अपभ्रंश में नाम से परे स्वार्थ में अ, डड, डुल्ल—ये तीन प्रत्यय होते हैं, इनके योग में स्वार्थ में हुए क प्रत्यय का लोप हो जाता है। अग्निष्ठः (अग्गिट्ठउ)। दोषा (दोसडा)। कुटी (कुडुल्ली)।

नियम १०७६ (योगजाश्चैषाम् ४।४३०) अपभ्रंश में अ, डड, डुल्ल और इनके योग से बनाने वाले डडअ आदि प्रत्यय प्रायः स्वार्थ में होते हैं। हृदयम् (हिअडउं)। चूटकः (चुडुल्लउ)। बलम् (बलुल्लडा)। बलम्

(वलुल्लडउ)।

नियम १०७७ (युष्मदादेरीयस्य डारः ४।४३४) अपभ्रंश मे युष्मद् आदि शब्दो से परे ईय प्रत्यय को डार आदेश होता है। युष्मदीयम् (तुहारउ) अस्मादीयम् (अम्हारउ)।

नियम १०७८ (अतो र्डेत्तुलः ४।४३५) अपभ्रंश मे इद, किं, यत्, तत्, एतद् शब्दो से परे अतु प्रत्यय को डेत्तुल आदेश होता है। इयत् (एत्तुलो)। कियत् (केत्तुलो)। यावत् (जेत्तुलो)। तावत् (तेत्तुलो)। एतावत् (एत्तुलो)।

नियम १०७९ (त्रस्य डेत्तहे ४।४३६) अपभ्रंश मे सर्व आदि शब्द सप्तम्यन्त हो, उस अर्थ मे होने वाले त्र प्रत्यय को डेत्तहे आदेश होता है। अत्र (एत्तहे)। तत्र (तेत्तहे)।

नियम १०८० (त्वतलो: प्पणः ४।४३७) अपभ्रंश मे त्व और तल् प्रत्यय को प्पण आदेश होता है। बहुत्व, बहुता (बहुप्पणु)। वृद्धत्वं, वृद्धता (वड्डप्पणु)।

नियम १०८१ (कथ-यथा-तथां थादेरेमेमेहेधा डितः ४।४०१) अपभ्रंश मे कथ, यथा, तथा शब्द के थ से अगले वर्ण तक डेम, डिम, डिह और डिध आदेश होता है। कथ (केव, किव, किह, किध, केम, किम)। यथा (जेवं, जिव, जेम, जिम, जिह, जिध)। तथा (तेव, तिव, तेम, तिम, तिह, तिध)। नियम ६९६ से म को (व) विकल्प से हुआ है।

नियम १०८२ (यादृक्-तादृक्-कीदृगीदृशां दादेर्डेहः ४।४०२) अपभ्रंश मे यादृक्, तादृक्, कीदृक् और ईदृक् शब्दो के दृ से आगे के वर्णों को डेह आदेश होता है। यादृक् (जेहु)। तादृक् (तेहु)। कीदृक् (केहु)। ईदृक् (एहु)।

नियम १०८३ (अतां डइसः ४।४०३) अपभ्रंश मे यादृक्, तादृक्, कीदृक्, ईदृक्—इन अदन्त शब्दो के द से आगे के वर्णो को डइस आदेश होता है। यादृशः (जइसो)। तादृश. (तइसो)। कीदृश (कइसो)। ईदृशः (अइसो)।

नियम १०८४ (यत्र-तत्रयोस्त्रस्य-डिदेत्थ्वत्तु ४।४०४) अपभ्रंश मे यत्र और तत्र शब्द के त्र को डेत्थु और डत्तु आदेश होते हैं। यत्र (जेत्थु, जत्तु)। तत्र (तेत्थु, तत्तु)।

नियम १०८५ (एत्थु कुत्रात्रे ४।४०५) अपभ्रंश मे कुत्र और अत्र के त्र को डेत्थु आदेश होता है। कुत्र (केत्थु)। अत्र (एत्थु)।

नियम १०८६ (यावत्-तावतोर्वादेर्म उं महिं ४।४०६) अपभ्रंश मे यावत् और तावत् के वत् को म, उ और महिं आदेश होता है। यावत् (जाम, जाउं, जामहिं)। तावत् (ताम, ताउं, तामहिं)।

नियम १०८७ (वा यत्तदोऽतोर्डेवडः ४।४०७) अपभ्रंश में यत् और तत् शब्द अतु प्रत्ययान्त (यावत्, तावत्) के वत् अवयव को डेवड आदेश विकल्प से होता है। यावत् (जेवडु, जेत्तुलो)। तावत् (तेवडु, तेत्तुलो)।

नियम १०८८ (वेदं किमोर्यादेः ४।४०८) अपभ्रंश में इदं और किं शब्द अनुप्रत्ययान्त (इयत्, कियत्) के यत् अवयव को डेवड आदेश विकल्प से होता है। इयत् (एवडु, एत्तुलो)। कियत् (केवडु, केत्तुलो)।

संबंधभूत कृदन्त (क्त्वा प्रत्यय) पूर्वकालिक क्रिया

धातु के साथ पूर्वकालिक क्रिया (क्त्वा प्रत्यय) जोडने से संबंधभूत कृदन्त के रूप बनते हैं। क्त्वा प्रत्यय का अर्थ है करके। क्त्वा प्रत्ययान्त शब्द अव्यय होता है। यह अर्द्धक्रिया के रूप में प्रयुक्त होता है। इसके आगे पूर्वकालिक क्रिया होती है, वह किसी भी काल की हो सकती है। अपभ्रंश में क्त्वा प्रत्यय के स्थान पर आठ प्रत्यय होते हैं—इ, इउ, इवि, अवि, एप्पि, एप्पिणु, एवि और एविणु। हस् धातु के इन आठ प्रत्ययों के रूप क्रमशः ये बनते हैं—हसि, हसिउ, हसिवि, हसवि, हसेप्पि, हसेप्पिणु, हसेवि, हसेविणु (हंसकर)। इसी प्रकार अन्य धातु के रूप बनते हैं।

हेत्वर्थ कृदन्त (तुम् प्रत्यय)

तुम् प्रत्यय का अर्थ होता है—के लिए। अपभ्रंश में तुम् प्रत्ययान्त शब्द भी अव्यय होते हैं। तुम् प्रत्यय को अपभ्रंश में प्रत्यय आदेश होते हैं—एवं, अण, अणहं, अणहिं, एप्पि, एप्पिणु, एवि, एविणु। हस् धातु के तुम् प्रत्ययान्त रूप ये हैं—हसेवं, हसण, हसणहं, हसणहिं, हसेप्पि, हसेप्पिणु, हसेवि, हसेविणु। इसी प्रकार अन्य धातुओं के रूप बनाए जा सकते हैं। शेष चार प्रत्यय क्त्वा और तुम् प्रत्यय के समान हैं, प्रसंग से अर्थ निकाला जाता है।

प्रयोग वाक्य (संबंधभूत कृदन्त)

हउं हसि जीवउं (मैं हंसकर जीता हूं)। हउं हसिवि जीवेसउं (मैं हंसकर जीऊंगा। हउं हसिउ जीवमु (मैं हंसकर जीऊं)। हउं हसवि बोल्लिअ (मैं हंसकर बोला)। सो हसेप्पि बोल्लइ (वह हंसकर बोलता है)। सो हसेप्पिणु बोल्लउ (वह हंसकर बोले)। सो हसेवि बोल्लेसइ। (वह हंसकर बोलेगा)। सो हसेविणु बोल्लिआ (वह हंसकर बोला)। तुहुं बोल्लि वड्ढहि। तुहुं बोल्लिउ वड्ढसु। तुहुं बोल्लिवि वड्ढेसहि। तुहुं बोल्लवि वड्ढिअ। सा भुंजेप्पि सयइ। सा भुंजेप्पिणु सयउ। सा भुंजेवि सयिहिइ। सा भुंजेविणु सयिआ। सो घूमि उववसइ। तुहुं लिहिउ सयिहिहि। तुहुं पढिवि वखाणसु। ते थक्किवि वड्ढंति। तुम्हे सयवि जग्गिहित्था बालअ खीरं पिवेवि सयइ। अम्हे सुणिवि कहहं। तुहुं दाइ भणाइ।

प्रयोग वाक्य (तुम् प्रत्यय)

हउं जग्गेवं सयउं (मै जागने के लिए सोता हू)। हउं जग्गण सयेसउं। (मैं जागने के लिए सोऊंगा)। हउ जग्गणहि सयिअ (मै जागने के लिए सोया। हउं जग्गणह सयमु (मैं जागने के लिए सोऊं)। सो जग्गेप्पि सयइ (वह जागने के लिए सोता है। सो जग्गेप्पिणु सयउ (वह जागने के लिए सोए)। सो जग्गेवि सयेहिइ (वह जागने के लिए सोएगा)। सो जग्गेविणु सयिअ (वह जागने के लिए सोया)। तुहु णच्चेव उट्ठहि। तुहु कोकण उट्ठसु। तुहु णच्चणहं उट्ठेसहि। हउं वोल्लणहिं उट्ठिउ। सा लुक्केवि उट्ठेसइ। सा णच्चेविणु उट्ठिआओ। सो णच्चिण उववसिइ। तुहु खासणहं दहि भुजहि। हउं जीवेप्पि खीर पिवउ। अम्हे लिहेव पढहु। ते लक्कुड कट्टेवं घूमसि।

अपभ्रंश में अनुवाद करो (क्त्वा प्रत्यय का प्रयोग करो)

वह वस्त्र धोकर सोता है। तुम घी डालकर कहा जाते हो? वह पुत्री को मारकर भागता है। तुम कहकर भूलते हो। वह छूकर वस्तु को जानता है। वे स्तुति कर मागेंगे। तुम पुस्तक चुराकर पढते हो। मैं सेवा कर सीखता हू। वे पढकर वर्णन करेंगे। वह तुमको कहकर नाचेगा। वे स्तुति कर निंदा करते हैं। सीता धान्य कूटकर पीसती है। तुम यादकर भूलते हो। साधु गवेषणा कर खाता है। वह खाकर पीता है। तुम पीकर खाते हो। वह रुष्ट होकर सोता है।

अपभ्रंश में अनुवाद करो (तुम् प्रत्यय का प्रयोग करो)

वह मागने के लिए जाता है। वह ज्ञान सीखने के लिए सेवा करता है। तुम याद करने के लिए सुनते हो। वे मारने के लिए भागते हैं। तुम देने के लिए मांगते हो। वे खाने के लिए जाते हैं। वह कूदने के लिए दौडता है। वह जीने के लिए सास लेती है। उसे खाने के लिए भूख लगती है। वह थकने के लिए दौडता है। तुम लिखने के लिए सुनते हो। वह वस्त्र धोने के लिए मागता है। मैं स्तुति करने से डरता हूं। बालक नहाने के लिए छिपता है। वह नाचने के लिए जागती है। तुम जागने के लिए सोते हो।

प्रश्न

१ स्वार्थ में किस शब्द से क्या प्रत्यय होता है?

२. ईय, अतु, त्र और त्व प्रत्ययो को अपभ्रंश मे क्या आदेश होते हैं?

३. जेत्तुलो, तेत्तुलो, तामहिं, जइसो, जेहु—इन शब्दो का वाक्य में प्रयोग करो।

४ कवि, साधु, गुरु, बूद, प्राणी, सूर्य, स्वामी, दही, पदार्थ, आख, भक्ति, गर्व, माता, स्त्री—इन शब्दों के लिए अपभ्रंश के शब्द बताओ।

५ दा, मग्ग, सेव, कर, जेम, थुण, सीख, गरह, सुण, भुल, कह, मार, सुमर, चोर, गच्छ, वण्ण धातु के अर्थ बताओ।

शब्द संग्रह

घर (पुं)—मकान	ससा (स्त्री)—बहिन
पियामह (पुं)—दादा	कहा (स्त्री)—कथा
मारुअ (पु)—पवन	सद्धा (स्त्री)—श्रद्धा
बप्प (पु)—पिता	सासू (स्त्री)—सासू
सरिआ (स्त्री)—नदी	वहू (स्त्री)—बहू
भुक्खा (स्त्री)—भूख	आगि (स्त्री)—आग
णिद्दा (स्त्री)—नींद	णारी (स्त्री)—नारी
तण्हा (स्त्री)—तृष्णा	लच्छी (स्त्री)—लक्ष्मी

धातु संग्रह

उट्ठ—उठना	नस्स—नष्ट होना
पड—गिरना	पसर—फैलना
रुव—रोना	जल—जलना
खेल—खेलना	बुभुक्ख—भूख लगना
बिह—डरना	उतर—उतरना, नीचे आना
पणम—प्रणाम करना	पाल—पालना
खा—खाना	चर—चरना

० आय, अवस्, कवण शब्दों को याद करो। देखो परिशिष्ट ३ संख्या २०,२१,२२।

उच्चारणलाघव

नियम १०८९ (कादि-स्वंदोतोरुच्चार-लाघवम् ४।४१०) अपभ्रंश में क आदि वर्णों मे ए और ओ का प्रायः उच्चारण—लाघव होता है। सुखेन चिन्त्यते मानः, (सुघें चितिज्जइ माणु) तस्य अहं कलियुगे दुर्लभस्य (तसु हउं कलिजुगि दुल्लहहों)।

नियम १०९० (पदान्ते उं-हुं-हिं-हंकाराणाम् ४।४११) अपभ्रंश में पदान्त में उं, हुं, हिं, हं का उच्चारणलाघव होता है।

तिबन्त

नियम १०९१ (त्यादेराद्यत्रयस्य संबंधिनो बहुत्वे हिं-न-वा ४।३८२) अपभ्रंश में त्यादि के पहले त्रिक के बहुवचन को हिं आदेश विकल्प से होता है।

कुर्वन्ति (करहिं, करन्ति)।

नियम १०९२ (मध्यत्रयस्याद्यस्य हिः ४।३८३) अपभ्रंश में त्यादि के मध्यत्रिक के एकवचन को हि आदेश विकल्प से होता है। करोषि (करहि, करसि)।

नियम १०९३ (बहुत्वेहु ४।३८४) अपभ्रंश मे त्यादि के मध्यत्रय के बहुवचन को हु आदेश विकल्प से होता है। कुरुथ (करहु, करहे)।

नियम १०९४ (अन्त्यत्रयस्याद्यस्य उं ४।३८५) अपभ्रंश मे त्यादि के अन्त्यत्रय के एकवचन को उं आदेश विकल्प से होता है। करउं। पक्षे करोमि (करेमि)।

नियम १०९५ (बहुत्वे हुं ४।३८६) अपभ्रंश मे त्यादि के अन्त्य त्रय के बहुवचन को हुं आदेश विकल्प से होता है। कुर्मः (करहुं)। पक्षे करिमु।

नियम १०९६ (हि-स्वयोरिदुदेत् ४।३८७) अपभ्रंश मे तुवादि के हि और स्व को इ, उ और ए—ये तीन आदेश होते है। कुरु (करि, करु, करे)। पक्षे करहि।

नियम १०९७ (वर्त्स्यति स्यस्य सः ४।३८८) अपभ्रंश मे भविष्य अर्थविषयक त्यादि के स्य को स विकल्प से होता है। करिष्यति (कासइ)। पक्षे काहिइ।

नियम १०९८ (क्रियेः कीसु ४।३८९) अपभ्रंश मे क्रिये इस क्रियापद को कीसु आदेश विकल्प से होता है। क्रिये (कीसु)। पक्ष मे (किज्जउं)। क्रिये यह संस्कृत का सिद्ध रूप है।

नियम १०९९ (भुवः पर्याप्तौ, हुच्चः ४।३९०) अपभ्रंश मे भू धातु पर्याप्त अर्थ मे हो तो उसे हुच्च आदेश होता है। प्रभवति (पहुच्चइ) समर्थ है।

नियम ११०० (ब्रूगो ब्रुवो वा ४।३९१) अपभ्रंश मे ब्रू धातु को ब्रुव आदेश विकल्प से होता है। ब्रवीति (ब्रुवइ)। पक्षे ब्रोइ।

नियम ११०१ (व्रजे र्वुञः ४।३९२) अपभ्रंश मे व्रजति के व्रज् को वुञ् आदेश होता है। व्रजति (वुञइ)।

नियम ११०२ (दृशेः प्रस्स. ४।३९३) अपभ्रंश मे दृश् धातु को प्रस्स आदेश होता है। पश्यति (प्रस्सदि)।

नियम ११०३ (ग्रहे र्गृण्ह· ४।३९४) अपभ्रंश मे ग्रह् धातु को गृण्ह आदेश होता है। गृह्णाति (गृण्हइ)।

नियम ११०४ (तक्ष्यादीनां छोल्लादय ४।३९५) अपभ्रंश मे तक्ष् आदि धातुओ को छोल्ल आदि आदेश होते हैं। तक्षति (छोलिज्जइ)। आदि शब्द से देशी धातु के जो क्रियापद मिलते हैं उनके उदाहरण—दहइ

(झलक्किअउ) अनुगच्छति (अब्भडइ)। शब्दायते (गुलुगुलाइ)। गर्जति (घुडुक्कइ)। तिष्ठति (थनि)। आक्रम्यते (चम्पिज्जइ)। शब्दायते (घुट्ठुअउ)।

कृदन्त प्रत्यय

नियम ११०५ (तव्यस्य इएव्वउं एव्वउं एवा ४।४३८) अपभ्रंश में तव्य प्रत्यय को इएव्वउं, एव्वउं, एवा—ये तीन आदेश होते हैं। कर्तव्यम् (करिएव्वउं)। सोढव्यम् (सहेव्वउं)। स्वपितव्यम् (सोएवा)।

नियम ११०६ (क्त्व इ-इउ-इवि-अवयः ४।४३६) अपभ्रंश में क्त्वा प्रत्यय को इ, इउ, इवि, अवि—ये चार आदेश होते हैं। मारयित्वा (मारि, मारिउ, मारिवि, मारवि)।

नियम ११०७ (एप्प्येप्पिण्वेव्येविणवः ४।४४०) अपभ्रंश में क्त्वा प्रत्यय को एप्पि, एप्पिणु, एवि, एविणु—ये चार आदेश होते हैं। पूर्व सूत्र से इस सूत्र को अलग करने का कारण है, इन चार प्रत्ययों को अगले सूत्र में भी लेना है। जित्वा (जेप्पि, जेप्पिणु, जेवि, जेविणु)।

नियम ११०८ (तुम एवमणाणहमणहिं च ४।४४१) अपभ्रंश में तुम् प्रत्यय को एवं, अण, अणहं, अणहिं—ये चार आदेश होते हैं। च शब्द से एप्पि, एप्पिणु, एवि, एविणु—ये चार और आदेश होते हैं। दातुम् (देवं)। कर्तुम् (करण, करणहं, करणहिं)। जेतुम् (जेप्पि)। त्यक्तुम् (चएप्पिणु)। लातुम् (लेविणु)। पालयितुम् (पालेवि)।

नियम ११०९ (गमेरेप्पिण्वेप्प्योरेर्लुग् वा ४।४४२) अपभ्रंश में गम् धातु से परे एप्पिणु, एप्पि हो तो उनके एकार का लुक् विकल्प से होता है। गत्वा (गम्प्पिणु, गम्पि)। पक्ष में—गमेप्पिणु, गमेप्पि।

नियम १११० (तृनोऽणअः ४।४४३) अपभ्रंश में तृन् प्रत्यय को अणअ आदेश होता है। कथयिता (बोल्लणउ)।

नियम ११११ (लिङ्गमतन्त्रम् ४।४४५) अपभ्रंश में लिंग का नियम निश्चित नहीं है।

(१) गय कुम्भइं दारन्तु। (२) अब्भा लग्गा डुङ्गरिहिं।
(३) पाइ विलग्गी अन्त्रडी। (४) डालइं मोडन्ति।

(१) कुम्भ शब्द पुंलिंग है, परन्तु यहां नपुंसकलिंग में है।
(२) अभ्र शब्द नपुंसकलिंग है, यहां पुंलिंग में है।
(३) अंत्र शब्द नपुंसक है, यहां स्त्रीलिंग में है।
(४) डाली शब्द स्त्रीलिंग है, यहां नपुंसकलिंग में है।

नियम १११२ (शेषं शौरसेनीवत् ४।४४६) अपभ्रंश में प्रायः शौरसेनी के समान कार्य होता है। इति अपभ्रंश।

नियम १११३ (व्यत्ययश्च ४।४४७) प्राकृत आदि भाषाओं में

व्यत्यय होता है। मागधी मे (तिष्ठश्चिष्ठः ४।२९८) से तिष्ठ को चिष्ठ होता है। उसी प्रकार प्राकृत, पैशाची और शौरसेनी मे भी होता है। क्रियाओ मे भी व्यत्यय होता है। वर्तमान काल की क्रिया भूतकाल के अर्थ मे आती है। जैसे—अह पेच्छइ रहुतणओ। (अथ प्रेक्षाञ्चक्रे इत्यर्थः)। आभासइ रयणीअरे (आ बभाषे रजनीचरान् इत्यर्थं)। भूतकाल की क्रिया वर्तमान काल मे प्रयुक्त होती है—सोहीअ एस वण्ठो (शृणोति एष वण्ठ इत्यर्थः)।

नियम १११४ (शेषं संस्कृतवत् सिद्धम् ४।४४८) प्राकृत भाषा आदि मे जो नियम नही कहे गए हैं वे सस्कृत व्याकरण के अनुस्वार चलते हैं। हेट्ठट्ठिअ सूर निवारणाय—यहां चतुर्थी का आदेश प्राकृत मे नही कहा गया है, वह संस्कृत से ही समझे। कहीं-कही पर नियम कहा भी गया है तो भी सस्कृत के समान होता है, जैसे—प्राकृत मे उरस् शब्द का सप्तमी का एक वचन का उरे, उरम्मि बनता है, तो भी कही उरसि भी होता है। इसी प्रकार सिरे, सिरम्मि के साथ शिरसि। सरे, सरम्मि के साथ सरसि। इत्यादि।

वर्तमान कृदन्त (शतृ-शान)

हसता हुआ, खाता हुआ, उठता हुआ आदि अर्थों मे वर्तमान कृदन्त आता है। वर्तमान कृदन्त के रूप विशेषण होते हैं। विशेष्य के अनुसार इनमे लिंग और वचन होते हैं। अपभ्रंश मे वर्तमान कृदन्त के प्रत्यय न्त और माण ये दो हैं। पुंलिग मे इनके रूप जिण शब्द की तरह, स्त्रीलिंग मे माला शब्द की तरह और नपुसक लिंग मे कमल शब्द की तरह चलते हैं।

	एकवचन	बहुवचन
पुंलिंग—	हसन्तु/हसन्तो/हसंत/हसता	हसन्त/हसन्ता
	हसमाणु/हसमाणो/हसमाण/ हसमाणा	हसमाण/हसमाणा
स्त्रीलिंग—	हसता/हसंत	हसता/हसत/हसताउ/हसतउ हसंताओ/हसंतओ
	हसमाण/हसमाणा	हसमाणा/हसमाण/हसमाणाउ/ हसमाणउ/हसमाणाओ/ हसमाणओ
नपुंसकलिंग—	विअसंतु/विअसत/ विअसंता/विअसमाणु/ विअसमाण/विअसमाणा	विअसंत/विअसता/विअसतइ/ विअसताइं/विअसमाण/ विअसमाणा/विअसमाणइं/ विअसमाणाइ

प्रयोग वाक्य (शतृ-शान प्रत्यय)

(१) सु/सो/लिहन्तु/लिहन्तो/लिहन्त/लिहन्ता भुंजइ (वह लिखता

हुआ खाता है)। (२) स/सु/लिहमाणु/लिहमाणो/लिहमाण/लिहमाणा भुंजउ (वह लिखता हुआ खाए)। (३) ते लिहन्त/लिहन्ता भुंजेसहिं (वे लिखते हुए खाएंगे)। (४) ते लिहमाण/लिहमाणा उट्ठिआ (वे लिखते हुए उठे)। (५) सा भुंजन्ता/भुंजन्त पढइ (वह खाती हुई पढती है)। (६) ता भुंजंता/भुंजंत/भुंजंताउ/भुजंतउ/भुंजंताओ/भुजंतओ पढंति। (७) कमलु विअसंतु/विअसंत/विअसंता/विअसमाणु/विअसमाण/विअसमाणा हसइ। (८) कमलइं विअसंत/विअसंता/विअसंतइं/विअसंताइं/विअसमाण/ विअसमाणा/विअसमाणइं / विअसमाणाइं हसंति (कमल खिलते हुए हंसते हैं)।

बालओ उट्ठन्तु पडइ। सो आखिउ चोरन्तो लुक्कइ। विन्दू पडमाणा नस्संति। जंतू उत्समंता मरंति। साहु जेमन्तो भोयण न मग्गइ। तुहुं खेलन्तो उवविससि। मेहा गुमगन्ता वट्टइ। महिलाउ णच्चन्ताउ थक्कंति। सा घुमन्त पडइ।

अपभ्रंश में अनुवाद करो (शतृ-शान का प्रयोग करो)

तुम वर्णन करते हुए भूल गए। तुम पढते हुए हंसते हो। वे देते हुए मागने लगे। तुम जीमते हुए उठे। मैं स्मरण करता हुआ भूल गया। मैं हंसता हुआ जीता हू। पानी फैलता हुआ सूखता है। श्रद्धा बढती हुई शोभती है। महिलाएं हंसती हुई घूमती हैं। पुत्री जागती हुई उठी। वह नाचती हुई गिरी। मेघ गरजते हुए गए। वह हंसता हुआ बोला। माता कथा कहती हुई सोई। पुत्री सेवा करती हुई उठी। बालक दौडता हुआ खाता है। बहिन खेलती हुई रोने लगी। आग जलती हुई नष्ट हो गई। आग जलती हुई फैलने लगी। दादा मकान मे गिरता हुआ उठा। पुत्री स्तुति करती हुई निंदा करने लगी। बुढापा बढता हुआ रुक गया।

प्रश्न

१. उच्चारण-लाघव किन स्वरो का होता है?
२ अपभ्रंश मे दृश् और ग्रह् धातु को क्या आदेश होता है?
३ अनुगच्छति, तिष्ठति, आक्रम्यते, दहइ—इन रूपों का अपभ्रंश मे क्या-क्या रूप बनता है?
४. क्त्वा और तुम् प्रत्यय को कौन-कौन से प्रत्यय आदेश होते हैं? प्रत्येक के एक-एक उदाहरण दो।
५. अणअ आदेश किस प्रत्यय को होता है?
६. तव्य प्रत्यय को कितने आदेश होते हैं। प्रत्येक के एक-एक उदाहरण दो।
७ इस पाठ में आई हुई किन्ही सात धातुओं और सात शब्दों का अपने वाक्य मे प्रयोग करो।

परिशिष्ट

परिशिष्ट १

पुंलिगाः शब्दाः

१ अकारान्त जिण (जिन) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	जिणो (जिणे)	जिणा
द्वि०	जिणं	जिणा, जिणे
तृ०	जिणेण, जिणेणं	जिणेहि, जिणेहिं, जिणेहिँ
पं०	जिणत्तो, जिणाओ, जिणाउ जिणाहि, जिणाहितो, जिणा	जिणत्तो, जिणाओ, जिणाउ जिणाहि, जिणेहि, जिणाहितो, जिणेहितो, जिणासुंतो, जिणेसुंतो
च०, ष०	जिणस्स	जिणाण, जिणाणं
स०	जिणे (जिणंसि) जिणम्मि	जिणेसु, जिणेसुं
सं०	हे जिण, हे जिणो, हे जिणा	हे जिणा

वीर, वच्छ, राम, देव, सावग आदि सभी अकारान्त पुंलिग शब्दो के रूप जिण शब्द की तरह चलते है।

(कोष्ठक मे दिए गए रूप आर्ष रूप हैं)।

२ आकारान्त गोवा (गोपा) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	गोवो	गोवा
द्वि०	गोवा	गोवा
तृ०	गोवाण, गोवाणं	गोवाहि, गोवाहिं, गोवाहिँ
पं०	गोवत्तो, गोवाओ, गोवाउ, गोवाहितो	गोवत्तो, गोवाओ, गोवाउ, गोवाहितो, गोवासुंतो
च०, ष०	गोवस्स	गोवाण, गोवाणं
स०	गोवम्मि	गोवासु, गोवासुं
सं०	हे गोवो, हे गोवा	हे गोवा

३ इकारान्त मुणि (मुनि) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० मुणी	मुणिणो, मुणी, मुणउ, मुणओ
द्वि० मुणि	मुणिणो, मुणी
तृ० मुणिणा	मुणीहि, मुणीहिँ, मुणीहिं
पं० मुणिणो, मुणित्तो, मुणीओ मुणीउ, मुणीहिंतो	मुणित्तो, मुणीओ, मुणीउ मुणीहिंतो, मुणीसुंतो
च०, प० मुणिणो, मुणिस्स	मुणीण, मुणीणं
स० मुणिम्मि (मुणिंसि)	मुणीसु, मुणीसुं
सं० हे मुणि, हे मुणी	हे मुणिणो, हे मुणी, हे मुणउ, हे मुणओ

कवि, रिसि, पाणि, हरि, अग्गि, णरवइ, बोहि, समाहि आदि शब्दों के रूप मुणी शब्द की तरह चलते हैं।

४ ईकारान्त गामणी (ग्रामणी) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० गामणी	गामणिणो, गामणी, गामणउ, गामणओ
द्वि० गामणिं	गामणिणो, गामणी
तृ० गामणिणा	गामणीहि, गामणीहिँ, गामणीहिं
पं० गामणिणो, गामणित्तो गामणीओ, गामणीउ गामणीहिंतो	गामणित्तो, गामणीओ, गामणीउ गामणीहिंतो, गामणीसुंतो
च०, ष० गामणिणो, गामणिस्स	गामणीण, गामणीणं
स० गामणिम्मि (गामणिंसि)	गामणीसु, गामणीसुं
सं० हे गामणि, हे गामणी	हे गामणिणो, हे गामणी, हे गामणउ, हे गामणओ

पही (प्रधी) के रूप गामणी शब्द की तरह चलते हैं।

५ उकारान्त साहु (साधु) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० साहू, साहु	साहुणो, साहू, साहओ, साहउ, साहवो (साहवे)[1]
द्वि० साहुं	साहुणो, साहू
तृ० साहुणा	साहूहि, साहूहिँ, साहूहिं

१. अवे प्रत्यय का रूप (साहवे आदि) आर्ष प्राकृत में पर्याप्त रूप से मिलता है।

प० साहुणो, साहुत्तो, साहूओ साहूउ, साहूहिंतो	साहुत्तो, साहूओ, साहूउ साहूहिंतो, साहूसुतो
च०, ष० साहुणो, साहुस्स	साहूण, साहूणं
स० साहुम्मि (साहुसि)	साहूसु, साहूसु
स० हे साहू, हे साहु	हे साहुणो, हे साहू, हे साहउ हे साहओ, हे साहवो

गुरु, गउ, भिक्खु, धणु, मेरु, इदु, मच्चु, सेउ, सव्वण्णु आदि उकारान्त शब्दो के रूप साहु शब्द की तरह चलते है।

६ ऊकारान्त खलपू (खलपू) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० खलपू	खलपुणो, खलपू, खलपउ, खलपओ, खलपवो
द्वि० खलपु	खलपुणो, खलपू
तृ० खलपुणा	खलपूहि, खलपूहिं, खलपूहिँ
प० खलपुणो, खलपुत्तो, खलपूओ, खलपूउ, खलपूहिंतो	खलपुत्तो, खलपूओ, खलपूउ खलपूहिन्तो, खलपूमुन्तो
च०, ष० खलपुणो, खलपुस्स	खलपूण, खलपूण
स० खलपुम्मि, (खलपुसि)	खलपूसु, खलपूसु
स० हे खलपू, हे खलपु	हे खलपुणो, हे खलपू, हे खलपउ हे खलपओ, हे खलपवो

७ ऊकारान्त सयंभू (स्वयंभू) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० सयभू	सयभुणो, सयभू, सयभओ, सयंभउ

शेष रूप खलपू शब्द के समान चलते हैं।

गोत्तभू, नरभू, अभिभू आदि शब्दो के रूप सयभू शब्द की तरह चलते हैं।

८ ऋकारान्त पिउ, पितु, पिअर, पितर (पितृ) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० पिआ, पिअरो	पिअवो, पिअओ पिअउ, पिऊ, पिअरा
द्वि० पिअर	पिऊ, पिउणो, पिअरे, पिअरा
तृ० पिउणा, पिअरेण पिअरेण	पिऊहि, पिऊहिं, पिऊहिँ, पिअरेहि, पिअरेहिं, पिअरेहिँ
प० पिउणो, पिउत्तो, पिऊओ	पिउत्तो, पिऊओ, पिऊउ, पिऊहिंतो

	एकवचन	बहुवचन
	पिऊउ, पिऊहिंतो, पिअरत्तो, पिअराओ, पिअराउ, पिअराहि, पिअराहिंतो, पिअरा	पिऊसुन्तो, पिअरत्तो, पिअराओ, पिअराउ, पिअराहि, पिअरेहि, पिअराहिन्तो, पिअरेहिन्तो, पिअरासुंतो, पिअरेसुंतो
च०, ष०	पिउणो, पिउस्स, पिअरस्स	पिऊण, पिऊणं, पिअराण, पिअराणं
स०	पिउम्मि (पिउंमि) पिअरम्मि (पिअरंमि) पिअरे	पिऊसु, पिऊसुं, पिअरेसु, पिअरेसुं
सं०	हे पिअ, हे पिअरं, हे पिअरो, हे पिअरा, हे पिअर	हे पिउणो, हे पिऊ, हे पिअवो, हे पिअओ, हे पिअउ, हे पिअरा

(पिउ के रूप साहु और पिअर के रूप जिण की तरह चलते हैं)।

पितु के रूप पिउ के समान और पितर के रूप पिअर के समान चलते हैं। पिआ के स्थान पिया तथा पिअ के स्थान पर पिय रूप भी मिलता है।

९ ऋकारान्त कत्तु, कत्तार (कर्तृ) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	कत्ता, कत्तारो	कत्तारा, कत्तओ, कत्तुणो
द्वि०	कत्तारं	कत्तारा, कत्तुणो
तृ०	कत्तारेण, कत्तुणा	कत्तारेहि, कत्तारेहिं, कत्तारेहिँ
पं०	कत्तुणो, कत्तुत्तो, कत्तूओ, कत्तूउ, कत्तूहिन्तो, कत्तारत्तो, कत्ताराओ, कत्ताराउ, कत्ताराहि, कत्ताराहिंतो, कत्तारा	कत्तुत्तो, कत्तूओ, कत्तूउ, कत्तूहिन्तो, कत्तूसुन्तो, कत्तारत्तो, कत्ताराओ, कत्ताराउ, कत्ताराहिन्तो, कत्तारासुंतो
च०, ष०	कत्तुणो, कत्तुस्स, कत्तारस्स	कत्तूण, कत्तूणं, कत्ताराण, कत्ताराणं
स०	कत्तारम्मि, कत्तुम्मि, कत्तारे	कत्तूसु, कत्तूसुं, कत्तारेसु, कत्तारेसुं
सं०	हे कत्त, हे कत्तारो	हे कत्तू, हे कत्तुणो, हे कत्तउ, हे कत्तओ, हे कत्तवो, हे कत्तारा

इसी प्रकार अन्य ऋकारान्त शब्दों के रूप चलते हैं।

भ्रातृ—भायर, भाउ वक्तृ—वत्तार, वत्तु
दातृ—दायार, दाउ ज्ञातृ—णायार, णाउ
जामातृ—जामायर, जामाउ

१० ऋकारान्त भत्तु, भत्तार (भर्तृ) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	भत्ता, भत्तारो	भत्तुणो, भत्तू, भत्तउ, भत्तओ, भत्तारा, भत्तवो

द्वि० भत्तार	भत्तुणो, भत्तू, भत्तारे, भत्तारा
तृ० भत्तुणा, भत्तारेण, भत्तारेण	भत्तुहि, भत्तुहिं, भत्तुहिँ, भत्तारेहि, भत्तारेहिं भत्तारेहिँ
प० भत्तुणो, भत्तुत्तो, भत्तूओ भत्तूउ, भत्तूहिन्तो, भत्तारत्तो, भत्ताराओ, भत्ताराउ भत्ताराहि, भत्ताराहिन्तो, भत्तारा	भत्तुत्तो, भत्तूओ, भत्तूउ, भत्तूहिन्तो भत्तूसुन्तो भत्तारत्तो, भत्ताराओ, भत्ताराउ, भत्ताराहि, भत्तारेहि, भत्ताराहिंतो, भत्तारेहिंतो, भत्तारासुन्तो, भत्तारेसुन्तो
च०, ष० भत्तुणो, भत्तुस्स, भत्तारस्स	भत्तूण, भत्तूणं, भत्ताराण, भत्ताराणं
स० भत्तुम्मि, भत्तारम्मि, भत्तारे	भत्तूसु, भत्तूसुं, भत्तारेसु, भत्तारेसुं
स० हे भत्त, हे भत्तारो	हे भत्तू, हे भत्तुणो, हे भत्तउ, हे भत्तओ, हे भत्तवो, हे भत्तारा

उकारान्त भत्तु शब्द के रूप साहु की तरह और अकारान्त भत्तार शब्द के रूप जिण की तरह चलते हैं।

११ ऐकारान्त सुरेअ (सुरै) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० सुरेअ	सुरेआ
द्वि० सुरेअ	सुरेआ, सुरेए
तृ० सुरेण	सुरेएहि, सुरेएहिं, सुरेएहिँ
पं० सुरेअत्तो, सुरेआओ सुरेआउ, सुरेआहि, सुरेआहिंतो, सुरेआ	सुरेअत्तो, सुरेआओ, सुरेआउ, सुरेआहि, सुरेएहि, सुरेआहिंतो सुरेएहिंतो, सुरेआसुंतो, सुरेएसुंतो
च०, ष० सुरेअस्स, सुरेअसि, सुरेअम्मि	सुरेआण, सुरेआणं, सुरेएसु, सुरेएसुं

संस्कृत के ऐकारान्त शब्द प्राकृत मे अकारान्त हो जाते हैं।

१२ औकारान्त गिलाअ (ग्लौ) शब्द

गिलोअ शब्द के रूप पुंलिग अकारान्त जिण शब्द की तरह चलते हैं।

१३ तवस्सि (तपस्विन्) शब्द

(इसके रूप इकारान्त पुंलिग मुणि शब्द की तरह चलते हैं। दण्डिन् (दण्डि) करिन् (करि) प्राणिन् (पाणि) आदि इन्नन्त पुंलिग शब्द तवस्सि की तरह यानि मुणि की तरह चलते हैं)।

१४ नकारान्त राय (राजन्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० राया, रायो, रायाणो	रायाणो राइणो, राया रायाणो

द्वि० राइणं, रायं, रायाण	राइणो, रायाणो, रण्णो, राए, राया, रायाणा
तृ० राइणा, रण्णा, राएण, राएणं रायाणेण, रायणेणं, रायणा	राईहि, राईहिं, राईहिँ, राएहि, राएहिं, राएहिँ, रायाणेहि, रायाणेहिं, रायाणेहिँ
पं० राइणो, रण्णो, रायत्तो, रायाओ, रायाउ, रायाहि, रायाहिंतो	राइत्तो, राईओ, राईउ, राईहिन्तो, राईसुन्तो, रायत्तो, रायाओ, रायाउ, रायाहि, राएहि, रायाहिन्तो, राएहिन्तो रायासुन्तो, राएसुन्तो, रायाणत्तो, रायाणाओ, रायाणाउ
च०, ष० राइणो, रण्णो, रायस्स रायाणस्स, रायणो	राईण, राईणं, राइण, रायाण, रायाणं, रायाणाण, रायाणाणं
स० (राइसि) राइम्मि (रायाणम्मि) रायम्मि, राये, रायाणे, रायाणम्मि	राईसु, राईसुं, राएसु, राएसुं, रायाणेसु रायाणेसुं
सं० हे राया, हे राय, हे रायं, हे रायाण, हे रायाणं	हे राइणो, हे रायाणो, हे राया, हे रायाणा

प्राकृत में व्यंजनान्त शब्द नहीं होते हैं। या तो उनके अंतिम व्यंजन का लोप हो जाता है या वे अकारान्त के रूप में बदल जाते हैं। संस्कृत की अपेक्षा ये व्यंजनान्त होते हैं।

१५ नकारान्त अप्पाण, अत्ताण, अप्प और अत्त (आत्मन्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० अप्पा, अत्ता, अप्पाणो, अप्पो	अप्पाणो, अत्ताणो, अप्पाणा, अप्पा
द्वि० अप्पिणं, अत्ताणं, अप्पाणं, अप्पं	अप्पाणो, अत्ताणो, अप्पाणे, अप्पे
तृ० अप्पणिआ, अप्पणइआ अप्पणा, अत्ताणा, अप्पेण अप्पेणं, अप्पाणेण, अप्पाणेणं	अप्पेहि, अप्पेहिं, अप्पेहिँ अप्पाणेहि, अप्पाणेहिं, अप्पाणेहिँ
पं० अप्पाणो, अप्पाणत्तो, अप्पाणाओ, अप्पाणाउ, अप्पाणाहि, अप्पाणाहिन्तो अप्पाणा, अप्पणो, अप्पत्तो, अप्पाओ, अप्पाउ, अप्पाहि,	अप्पाणत्तो, अप्पाणाओ अप्पाणाउ, अप्पाणाहि, अप्पाणेहि अप्पाणाहिन्तो, अप्पाणेहिन्तो अप्पाणासुन्तो, अप्पाणेसुन्तो, अप्पत्तो, अप्पाओ, अप्पाउ, अप्पाहि, अप्पेहि,

अप्पाहिन्तो, अप्पा	अप्पाहिन्तो, अप्पेहिन्तो, अप्पासुन्तो, अप्पेसुन्तो
च०, ष० अप्पाणस्स, अप्पस्स, अप्पणो, अत्तणो	अप्पाणाण, अप्पाणाण, अप्पाण अप्पाण, अप्पिण, अत्ताणाण, अत्ताणाण
स० अप्पाणम्मि, अप्पाणे, अप्पम्मि अप्पे, अत्ताणम्मि (अप्पसि) (अप्पाणसि)	अप्पाणेसु, अप्पाणेसु, अप्पेसु अप्पेसु, अत्ताणेसु, अत्ताणेसु
स० हे अप्पाणो, हे अप्पो, हे अप्प	हे अप्पाणो, हे अप्पाण, हे अप्पा

(अप्प शब्द के रूप राजन् की तरह और अप्पाण शब्द के रूप जिण शब्द की तरह चलते हैं। इसी प्रकार ब्रह्मन् (बम्ह, बम्हाण) युवन् (जुव, जुवाण) ग्रावन् (गाव, गावाण) उक्षन् (उच्छ, उच्छाण) शब्दो के रूप चलते है।)

१६ नकारान्त महव, महवाण (मघवन्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० महवा	महवा
द्वि० महव	महवा
तृ० महवेण, महवेण	महवेहि, महवेहिं, महवेहिँ
प० महवत्तो महवाओ महवाउ महवाहि, महवाहिंतो, महोणो	महवत्तो, महवाओ, महवाउ, महवाहि, महवेहि, महवाहिंतो, महवासुंतो
च०, ष० महवस्स,	महवाण, महवाणं
स० महवे, महविम्मि	महवेसु, महवेसुं

अकारान्त महवाण शब्द के रूप जिण शब्द की तरह चलते हैं।

१७ नकारान्त मुद्ध, मुद्धाण (मुग्धन्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० मुद्धा	मुद्धा
द्वि० मुद्ध	मुद्धा
तृ० मुद्धेण, मुद्धेण	मुद्धेहि, मुद्धेहिं, मुद्धेहिँ
पं० मुद्धत्तो, मुद्धाओ, मुद्धाउ, मुद्धाहि, मुद्धाहिंतो	मुद्धत्तो, मुद्धाओ, मुद्धाउ, मुद्धाहि मुद्धेहि मुद्धाहिंतो, मुद्धासुन्तो
च०, ष० मुद्धणो, मुद्धस्स	मुद्धाण, मुद्धाण
स० मुद्धम्मि, मुद्धे	मुद्धेसु, मुद्धेसु

(मुद्धाण शब्द के रूप जिण शब्द की तरह चलते हैं)

१८ नकारान्त जन्मन् (जम्म) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० जम्मो	जम्मा
द्वि० जम्म	जम्मे, जम्मा
तृ० जम्मेण, जम्मेण	जम्मेहि, जम्मेहिं, जम्मेहिँ
पं० जम्मत्तो, जम्माओ, जम्माउ, जम्माहि, जम्माहिंतो	जम्मत्तो, जम्माओ जम्माउ, जम्माहि, जम्मेहि, जम्माहिंतो, जम्मेहिन्तो, जम्मासुंतो, जम्मेसुंतो
च०, ष० जम्मस्स	जम्माण, जम्माण
स० जम्मे, जम्मम्मि	जम्मेसु, जम्मेसु

१९ सकारान्त चन्दम (चन्द्रमस्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० चन्दमो	चन्दमा
द्वि० चन्दमं	चन्दमा, चन्दमे
तृ० चन्दमेण, चंदमेणं	चन्दमेहि, चन्दमेहिं, चन्दमेहिँ
पं० चन्दमत्तो, चन्दमाओ चन्दमाउ, चन्दमाहि, चन्दमाहिंतो	चन्दमत्तो, चन्दमाओ, चन्दमाउ, चन्दमाहि, चन्दमेहि, चन्दमाहिंतो, चन्दमासुन्तो
च०, ष० चन्दमस्स	चन्दमाण, चन्दमाणं
स० चन्दमे, चन्दमम्मि	चन्दमेसु, चन्दमेसु

२० शतृ प्रत्यय हसन्त, हसमाण (हसत्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० हसन्तो, हसमाणो	हसन्ता, हसमाणा
द्वि० हसन्त, हसमाण	हसन्ते, हसमाणे
तृ० हसन्तेण, हसमाणेण हसन्तेणं, हसमाणेणं	हसन्तेहि, हसन्तेहिं, हसन्तेहिँ, हसमाणेहि, हसमाणेहिं हसमाणेहिँ
पं० हसन्तत्तो, हसमाणत्तो हसंताओ, हसंताउ, हसंताहि, हसंताहिंतो, हसमाणाओ, हसमाणाउ, हसमाणाहि, हसमाणाहिंतो	हसन्तत्तो, हसन्ताओ, हसन्ताउ, हसन्ताहि, हसन्तेहि, हसन्ताहिन्तो, हसन्तेहिंतो, हसन्तासुंतो, हसेन्तेसुंतो, हसमाणत्तो, हसमाणाओ, हसमाणाउ, हसमाणाहि, हसमाणेहि, हसमाणाहिंतो, हसमाणेहिन्तो, हसमाणासुंतो, हसमाणेसुंतो
च०, ष० हसन्तस्स, हसमाणस्स	हसन्ताण, हसन्ताण, हसमाणाण, हसमाणाण
स० हसन्तम्मि, हसमाणम्मि	हसन्तेसु, हसन्तेसु, हसमाणेसु, हसमाणेसु

२१ तकारान्त भगवन्त (भगवत्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० भगवन्तो	भगवन्ता
द्वि० भगवन्त	भगवन्ते, भगवन्ता
तृ० भगवन्तेण, भगवन्तेणं	भगवन्तेहि, भगवन्तेहिं, भगवन्तेहिँ
पं० भगवन्तत्तो, भगवन्ताओ भगवन्ताउ, भगवन्ताहि, भगवन्ताहिंतो	भगवन्तत्तो, भगवन्ताओ, भगवन्ताउ, भगवन्ताहि, भगवन्तेहि भगवन्ताहिंतो, भगवन्तासुन्तो
च०, ष० भगवन्तस्स	भगवन्ताण, भगवन्ताणं
स० भगवन्तम्मि	भगवन्तेसु, भगवन्तेसुं

स्त्रीलिङ्गाः शब्दाः

२२ आकारान्त माला (माला) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० माला	मालाओ, मालाउ, माला
द्वि० मालं	मालाओ, मालाउ, माला
तृ० मालाअ, मालाइ, मालाए	मालाहि, मालाहिं, मालाहिँ
पं० मालाअ, मालाइ, मालाए मालत्तो, मालाओ, मालाउ, मालाहिन्तो	मालत्तो, मालाओ, मालाउ, मालाहिंतो मालासुन्तो
च०, ष० मालाअ, मालाइ, मालाए	मालाण, मालाणं
स० मालाअ, मालाइ, मालाए	मालासु, मालासुं
सं० हे माले, हे माला	हे मालाओ, हेमालाउ, हेमाला

इसी प्रकार रमा, कण्णा, कहा, आणा, पण्णा, स्पृहा (छिहा) लता (लदा) ससा (स्वसृ) छुहा (क्षुध्) हलिद्दा, मट्टिआ आदि शब्द चलते हैं।

२३ इकारान्त स्त्रीलिंग मइ शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० मई, मईआ	मईओ, मईउ, मई
द्वि० मइं	मईओ, मईउ, मई
तृ० मईअ, मईआ, मईइ, मईए	मईहि, मईहिं, मईहिँ
पं० मईअ, मईआ, मईइ, मईए मइत्तो, मईओ, मईउ, मईहिन्तो	मइत्तो, मईओ, मईउ, मईहिन्तो मईसुन्तो
च०, ष० मईअ, मईआ, मईइ, मईए	मईण, मईणं
स० मईअ, मईआ, मईइ, मईए	मईसु, मईसुं

सं० हे मइ, हे मई हे मई, हे मईउ, हे मईओ

इसी प्रकार मुत्ति, राइ, थुइ, इड्ढि, धिइ (धृति) वसहि (वसति) आदि शब्द चलते हैं।

(स्त्रीलिंग सभी इकरान्त शब्द मइ की तरह ही चलते है।)

२४ ईकारान्त स्त्रीलिंग वाणी (वाणी) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	वाणी, वाणीआ	वाणी, वाणीआ, वाणीउ, वाणीओ
द्वि०	वाणिं	वाणी, वाणीआ, वाणीउ, वाणीओ
तृ०	वाणीअ, वाणीआ, वाणीइ, वाणीए	वाणीहि, वाणीहिं, वाणीहिँ
प०	वाणीअ, वाणीआ, वाणीइ, वाणीए, वाणित्तो, वाणीओ, वाणीउ	वाणित्तो, वाणीओ, वाणीउ, वाणीहिन्तो, वाणीसुन्तो
च०,ष०	वाणीअ, वाणीआ, वाणीइ, वाणीए	वाणीण, वाणीणं
स०	वाणीअ, वाणीआ, वाणीइ, वाणीए	वाणीसु, वाणीसुं
सं०	हे वाणि	हे वाणीआ, हे वाणीउ, हे वाणीओ, हे वाणी

इसी प्रकार नदी, इत्थी, पुढवी, बहिणी, सई (सती) लच्छी (लक्ष्मी) रुप्पिणी (रुक्मणी) आदि शब्दो के रूप चलते हैं।

२५ उकारान्त स्त्रीलिंग धेणु (धेनु) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	धेणू	धेणूउ, धेणूओ, धेणू
द्वि०	धेणुं	धेणूउ, धेणूओ, धेणू
तृ०	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए	धेणूहि धेणूहिं, धेणूहिँ,
प०	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए, धेणुत्तो, धेणूओ, धेणूउ, धेणूहिन्तो	धेणुत्तो, धेणूओ, धेणूउ धेणूहिन्तो, धेणूसुन्तो
च०, ष०	धेणूअ, धेणुआ, धेणूइ, धेणूए	धेणूण, धेणूणं
स०	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए	धेणूसु, धेणूसुं
	हे धेणु	हे धेणुउ, हे धेणुओ, हे धेणु

इसी प्रकार तणु (तनु) रज्जु आदि शब्द चलते है।

२६ ऊकारान्त स्त्रीलिंग वधू [वहू] शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	वहू	वहूउ, वहूओ, वहू
द्वि०	वहुं	वहूउ, वहूओ, वहू

तृ० वहूअ, वहूआ, वहूइ, वहूए	वहूहि, वहूहिं, वहूहिँ
प० वहूअ, वहूआ, वहूइ, वहूए	वहूत्तो, वहूओ, वहूउ
वहुत्तो, वहूओ, वहूउ, वहूहिन्तो	वहूहिन्तो, वहूसुन्तो
च०, ष० वहूअ, वहूआ, वहूइ, वहूए	वहूण, वहूण
स० वहूअ. वहूआ वहूइ, वहूए	वहूसु, वहूसुं
हे वहु	हे वहूओ, हे वहूउ, हे वहू

इसी प्रकार सासू (श्वश्रू) चमू (चमू) आदि शब्द चलते हैं ।

रूपो की समानता

- स्त्रीलिंग के आकारान्त, इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त और ऊकारात शब्दो के सभी रूप समान हैं, केवल दीर्घ ईकारान्त शब्दो के प्रथमा और द्वितीया विभक्ति के बहुवचन मे आ प्रत्यय का रूप विशेष होता है ।
- आकारान्त को छोड, इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त और ऊकारान्त शब्दो के तृतीया विभक्ति से लेकर सप्तमी विभक्ति तक एक वचन मे आकारान्त से आ प्रत्यय अधिक लगता है ।
- द्वितीया के एकवचन और पचमी के त्तो प्रत्यय परे रहने पर शब्द का अन्तिम दीर्घस्वर ह्रस्व हो जाता है । शेष स्थानो पर शब्द का अतिम स्वर दीर्घ हो जाता है ।
- ईकारान्त और ऊकारान्त के संबोधन के एकवचन मे ह्रस्व होता है तथा इकारान्त और उकारान्त के सम्वोधन के एकवचन मे विकल्प से ह्रस्व होता है ।

२७ ऋकारान्त स्त्रीलिग माआ, माअरा, माउ (मातृ) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० माआ, माअरा	माअरा, माअराउ, माअराओ, माआ, माआउ, माआओ, माऊ, माऊउ, माऊओ
द्वि० माअ, माअर	माअरा, माअराउ, माअराओ, माआ, माआउ, माआओ, माऊ, माऊउ, माऊओ
तृ० माअराअ, माअराइ, माअराए	माअराहि, माअराहिं, माअराहिँ
माआअ, माआइ, माआए	माआहि, माआहिं, माआहिँ
माऊअ, माऊआ, माऊइ, माऊए	माऊहि, माऊहिं, माऊहिँ
प० माअराअ, माअराइ, माअराए	माअरत्तो, माअराओ, माअराउ,
माअरत्तो, माअराओ माअराउ	माअराहिन्तो, माअरासुन्तो
माअराहिन्तो, माआअ, माआइ,	माअत्तो, माआओ, माआउ
माआए माअत्तो, माआओ	माआहिन्तो, माआसुन्तो,

माआउ, माआहिन्तो, माऊअ, माऊआ, माऊइ, माऊए माउत्तो, माऊओ, माऊउ, माऊहिन्तो	माउत्तो,माऊओ माऊउ, माऊहिन्तो, माऊसुन्तो
च०, ष० माअराअ, माअराइ, माअराए माआअ, माआइ, माआए माऊअ, माऊआ, माऊइ, माऊए	माअराण, माअराणं, माआण, माआणं माऊण, माऊणं, माईण, माईणं
स० माअराअ, माअराइ, माअराए माआअ, माआइ, माआए माऊअ माऊआ, माऊइ, माऊए	माअरासु, माअरासुं, माआसु, माआसुं, माऊसु, माऊसुं
सं० हे माआ	हे माआओ, हे माआउ, हे माआ

इसी प्रकार दुहितृ (दुहिआ) ननान्दृ (णणंदा) पितृस्वसृ (पिउसिया, पिउच्छा) मातृस्वसृ (माउसिया, माउच्छा) आदि शब्दो के रूप मातृ शब्द की तरह चलते हैं।

२८ ओकारान्त गो (गो) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० गावी, गावीआ	गावीआ, गावीउ, गावीओ, गावी
द्वि० गाविं	गावीआ, गावीउ, गावीओ, गावी
तृ० गावीअ, गावीआ, गावीइ, गावीए	गावीहि, गावीहिं, गावीहिँ
प० गावीअ, गावीआ, गावीइ, गावीए, गावित्तो, गावीओ, गावीउ, गावीहिन्तो	गावित्तो, गावीओ, गावीउ, गाविहिन्तो, गावीसुन्तो
च०, ष० गावीअ, गावीआ, गावीइ, गावीए	गावीण, गावीणं
स० गावीअ, गावीआ, गावीइ, गावीए	गावीसु, गावीसुं
सं० हे गावि	हे गावीआ, हे गावीउ, हे गावीओ, हे गावी

गावी शब्द के रूप वाणी की तरह चलते है।

२९ औकारान्त नावा (नौ) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० नावा	नावाओ, नावाउ, नावा
द्वि० नावं	नावाओ, नावाउ, नावा

तृ० नावाअ, नावाइ, नावाए — नावाहि, नावाहिं, नावाहिँ
प० नावाअ, नावाइ, नावाए नावत्तो, नावाओ, नावाउ, नावाहिन्तो — नावत्तो, नावाओ, नावाउ, नावाहिन्तो नावासुन्तो
च०, ष० नावाअ, नावाइ, नावाए — नावाण, नावाणं
स० नावाअ, नावाइ, नावाए — नावासु, नावासुं
सं० हे नावा — हे नावाओ, हे नावाउ, हे नावा

नावा के रूप माला की तरह चलते हैं।

नपुंसकलिङ्गाः शब्दाः

३० अकारान्त नपुंसक वण (वन) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० वण	वणाइँ, वणाइं, वणाणि
द्वि० वण	वणाइँ, वणाइं, वणाणि
तृ० वणेण	वणेहि, वणेहिं, वणेहिँ
प० वणत्तो, वणाओ, वणाउ, वणाहि, वणाहिन्तो, वणा	वणत्तो, वणाओ, वणाउ, वणाहि वणाहिन्तो, वणासुन्तो
च०, ष० वणस्स	वणाण, वणाणं
स० वणे, वणम्मि	वणेसु, वणेसुं
सं० हे वण	हे वणाइँ, हे वणाइं, हे वणाणि

३१ इकारान्त (दधि) दहि शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० दहिं	दहीइँ, दहीइं, दहीणि
द्वि० दहिं	दहीइँ, दहीइं, दहीणि
तृ० दहिणा	दहीहि, दहीहिं, दहीहिँ
प० दहिणो, दहित्तो, दहीओ दहीउ, दहीहिन्तो	दहित्तो, दहीओ, दहीउ, दहीहिन्तो दहीसुन्तो
च०, ष० दहिणो, दहिस्स	दहीण, दहीणं
स० दहिम्मि	दहीसु, दहीसुं
सं० हे दहि	हे दहीइँ, हे दहीइं, हे दहीणि

(प्रथमा, द्वितीया और संबोधन को छोड़कर शेष रूप मइ शब्द की तरह चलते हैं।)

३२ उकारान्त महु (मधु) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० महु	महूइँ, महूइं, महूणि

द्वि० महुं	महूइँ, महूइं, महूणि
तृ० महुणा	महूहि महूहिं, महूहिँ,
पं० महुणो, महुत्तो, महूओ महूउ, महूहिन्तो	महुत्तो, महूओ, महूउ, महूहिन्तो महूसुन्तो
च०, ष० महुणो, महुस्स	महूण, महूणं
स० महुम्मि	महूसु, महूसु
सं० हे महु	हे महूइँ, हे महूइं, हे महूणि

(प्रथमा, द्वितीया और संबोधन को छोडकर शेष रूप साहु शब्द की तरह चलते हैं।

व्यंजनान्त शब्द नपुंसकलिंग

नपुसकलिंग मे व्यंजनान्त शब्द के अंतिम वर्ण का लोप हो जाता है। शेष शब्द अकारान्त, इकारान्त, और उकारान्त रहते है। उनके रूप वण, दहि और महु की तरह चलते हैं। सुविधा की दृष्टि से कुछेक शब्दो के रूप नीचे दिए जा रहे है।

३३ अश्रु (अंसु) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० असुं	असूइँ, असूइं, अंसूणि
द्वि० असु	असूइँ, अंसूइं, अंसूणि

(शेप रूप महु शब्द (३२) की तरह चलते हैं)।

३४ नकारात्मक दाम (दामन्) नपुंसकलिंग शब्द

प्र० दामं	दामाइँ, दामाइं, दामाणि
द्वि० दामं	दामाइँ, दामाइ, दामाणि
तृ० दामेण	दामेहिं, दामेहि, दामेहिँ
प० दामत्तो, दामाओ, दामाउ दामाहि, दामाहितो	दामत्तो, दामाओ, दामाउ, दामाहि दामाहिन्तो, दामासुन्तो
च०, ष० दामस्स	दामाण, दामाणं
स० दामम्मि	दामेसु, दामेसु
स० हे दाम	हे दामाइँ, हे दामाइ, हे दामाइ

३५ नकारान्त नाम (नामन्) नपुंसकलिंग शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० नामं	नामाइँ, नामाइं, नामाणि
द्वि० नामं	नामाइँ, नामाइं, नामाणि

३६ नकारान्त पेम्म (प्रेमन्) नपुंसकलिंग शब्द

प्र० पेम्मं पेम्माइँ, पेम्माइं, पेम्माणि
द्वि० पेम्मं पेम्माइँ, पेम्माइं, पेम्माणि
(शेष रूप दामन् शब्द की तरह चलते हैं)

३७ नकारान्त अह (अहन्) नपुंसकलिंग शब्द

प्र० अहं अहाइँ, अहाइ, अहाणि
द्वि० अहं अहाइँ, अहाइं, अहाणि
(शेष रूप दामन् शब्द की तरह चलते हैं)

३८ सकारान्त सेय (श्रेयस्) नपुंसकलिंग शब्द

एकवचन बहुवचन
प्र० सेयं सेयाइँ, सेयाइं, सेयाणि
द्वि० सेयं सेयाइँ, सेयाइं, सेयाणि
(शेष रूप वण शब्द की तरह चलते हैं)

३९ सकारान्त वय (वयस्) नपुंसकलिंग शब्द

प्र० वयं वयाइँ, वयाइं, वयाणि
द्वि० वयं वयाइँ, वयाइं, वयाणि
(शेष रूप वण शब्द की तरह चलते हैं)

४० शतृ प्रत्ययान्त हसंत, हसमाण (हसत्) नपुंसकलिंग शब्द

प्र० हसन्त हसन्ताइँ, हसन्ताइं, हसन्ताणि
द्वि० हसन्त हसन्ताइँ, हसन्ताइं, हसन्ताणि
(शेष रूप वण शब्द की तरह चलते हैं)
प्र० हसमाणं हसमाणाइँ, हसमाणाइं, हसमाणानि
द्वि० हसमाणं हसमाणाइँ, हसमाणाइं, हसमाणाणि
(शेष रूप वण शब्द की तरह चलते हैं)

४१ वत् प्रत्ययान्त भगवन्त (भगवत्) शब्द

प्र० भगवन्त भगवन्ताइँ, भगवन्ताइं, भगवन्ताणि
द्वि० भगवन्तं भगवन्ताइँ, भगवन्ताइं, भगवन्ताणि
(शेष रूप वण शब्द की तरह चलते हैं)

४२ सकारान्त आउ, आउस (आयुष्) शब्द

प्र० आउं आऊइँ, आऊइं, आऊणि
द्वि० आउं आऊइँ, आऊइं, आऊणि
(शेष रूप महु शब्द की तरह चलते हैं)

त्रिलिंगाः शब्दाः

४३ क पुंलिंग अकारान्त सव्व (सर्व) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	सव्वो (सव्वे)	सव्वे
द्वि०	सव्व	सव्वे, सव्वा
तृ०	सव्वेण, सव्वेण	सव्वेहि, सव्वेहिं, सव्वेहिँ
प०	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ सव्वाहि, सव्वाहिन्तो, सव्वा	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहि सव्वेहि, सव्वाहिंतो, सव्वेहिंतो, सव्वासुतो सव्वेसुतो
च०, ष०	सव्वस्स	सव्वेसिं, सव्वाण, सव्वाण
स०	सव्वस्सि, सव्वम्मि, सव्वत्थ, सव्वहिं	सव्वेसु, सव्वेसु
सं०	हे सव्व, हे सव्वो, हे सव्वा, (हे सव्वे)	हे सव्वे

४३ ख स्त्रीलिंग सव्वा (सर्वा) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	सव्वा	सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वा
द्वि०	सव्वं	सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वा
तृ०	सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए	सव्वाहि, सव्वाहिं, सव्वाहिँ
प०	सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहिंतो	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहिंतो सव्वासुन्तो
च०, ष०	सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए	सव्वेसिं, सव्वाण, सव्वाण
स०	सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए	सव्वासु, सव्वासु
सं०	हे सव्वा	हे सव्वाओ, हे सव्वाउ, हे सव्वा

(सव्वा शब्द के रूप माला की तरह चलते है। चतुर्थी और षष्ठी के बहुवचन मे सव्वेसिं रूप विशेष बनता है।)

सर्व आदि शब्दो को स्त्रीलिंग मे ये आदेश होते है—

सर्व=सव्वी, सव्वा। यद्=जी, जा। तद्=ती, ता। किं=की, का। इदम्=इमी, इमा। एतद्=एई, एआ। अदस्=अमु। आकारान्त के रूप माला, ईकारान्त के रूप वाणी और उकारान्त के रूप धेणु की तरह चलते हैं। कुछेक रूप विशेष बनते हैं, इसलिए इन शब्दो के सब रूप दिए जा रहे है।

४३ ग अकारान्त नपुंसक सव्व (सर्व) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	सव्व	सव्वाइँ, सव्वाइ, सव्वाणि
द्वि०	सव्व	सव्वाइँ, सव्वाइ, सव्वाणि

(शेष रूप पुलिंग सर्व शब्द के समान चलते हैं।)

विश्व (विस्स) उभय (उभय) कतर (कयर) अपर (अवर) इतर (इयर) आदि सर्वादि अकारान्त शब्द सर्व (सव्व) शब्द की तरह ही चलते है।

४४ क ज (यद्) पुंलिग शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	जो, (जे)	जे
द्वि०	ज	जे, जा
तृ०	जेण, जेण, जिणा	जेहि, जेहिं, जेहिँ
प०	जत्तो, जाओ, जाउ, जाहि, जाहिन्तो, जा, जम्हा	जत्तो, जाओ, जाउ, जाहि, जेहि, जाहिन्तो, जेहिन्तो, जासुन्तो, जेसुन्तो
च०, ष०	जस्स	जेसिं, जाण, जाण
स०	(जसि) जस्सि, जम्मि, जत्थ, जहिं, जाहे, जाला, जइया	जेसु, जेसु

४४ ख जा, जी (यद्) स्त्रीलिंग शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	जा	जीओ, जीउ, जीआ, जी, जाओ, जाउ, जा
द्वि०	जं	जीओ, जीउ, जीआ, जी, जाओ, जाउ, जा
तृ०	जीअ, जीआ, जीइ, जीए, जाअ, जाइ, जाए	जीहि, जीहिं, जीहिँ, जाहि, जाहिं, जाहिँ
प०	जीअ, जीआ, जीइ, जीए, जित्तो, जीओ, जीउ, जीहिन्तो, जाअ, जाइ, जाए, जम्हा, जत्तो, जाओ, जाउ, जाहिन्तो	जित्तो, जीओ, जीउ, जीहिन्तो, जीसुन्तो जत्तो, जाओ, जाउ, जाहिन्तो, जासुन्तो
च०, ष०	जिस्सा, जीसे, जीअ, जीआ, जीइ, जीए, जाअ, जाइ, जाए	जेसिं, जाण, जाण
स०	जाअ, जाइ, जाए, जीअ, जीआ, जीइ, जीए	जीसु, जीसुं, जासु, जासुं

४४ ग यत् (ज) नपुंसकलिंग शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	जं	जाइँ, जाइं, जाणि
द्वि०	जं	जाइँ, जाइं, जाणि

(शेष रूप पुंलिंग के समान चलते हैं।)

४५ क त, ण (तद्) पुंलिंग शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	स, सो, ण(से)	ते, णे
द्वि०	तं, ण	ते, ता, णे, णा
तृ०	तेण, तेण, तिणा	तेहि, तेहिं, तेहिँ, णेहि, णेहिं, णेहिँ
पं०	तो, तत्तो, ताओ, ताउ, तम्हा ताहि, ताहिन्तो, ता, णत्तो णाओ, णाउ णम्हा, णाहि, णाहिन्तो, णा	तत्तो, ताओ, ताउ, ताहि, तेहि, ताहिन्तो, तेहिन्तो, तासुन्तो, तेसुन्तो, णत्तो, णाओ, णाउ, णाहि, णेहि, णाहिन्तो, णेहिन्तो, णासुन्तो, णेसुन्तो
च०, ष०	तस्स, तास	सिं, तास, तेसिं, ताण, ताण
स०	(तसि) तस्सि, तहिं, तत्थ ताहे, ताला, तइआ, (णसि) णस्सि, णहिं, णम्मि, णत्थ णाहे, णाला, णइआ	तेसु, तेसु, णेसु, णेसु

४५ ख ता ती, णा, णी (तद्) स्त्रीलिंग शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	सा, ता, णा	तीआ, तीउ, तीओ, ती, नाउ, ताओ, ता
द्वि०	तं, ण	तीआ, तीउ, तीओ, ती, ताउ, ताओ, ता
तृ०	तीअ, तीआ, तीइ, तीए ताअ, ताइ, ताए	तीहि, तीहिं, तीहिँ, णाहि, णाहिं, णाहिँ ताहि, ताहिं, ताहिँ
पं०	तीअ, तीआ, तीइ, तीए तित्तो, तीओ, तीउ, तीहिन्तो ताअ, ताइ, ताए, तो, तम्हा तत्तो, ताओ, ताउ, ताहिन्तो	तित्तो, तीओ, तीउ, तीहिन्तो, तीसुन्तो तत्तो, ताओ; ताउ, ताहिन्तो, तासुन्तो
च०, ष०	तिस्सा, तीसे तीअ, तीआ तीइ, तीए, तास, से, ताअ ताइ, ताए,	ताण, ताणं, तास
स०	तीअ, तीआ, तीइ, तीए ताअ, तइ, ताए	तीसु, तीसु, तासु, तासु

(तद् के आदेश णी और णा के रूप प्रथमा के एकवचन को छोड़कर

ती और ता की तरह चलते हैं।)

४५ ग त, ण (तद्) नपुंसकलिंग शब्द

प्र०, द्वि० तं, णं ताइँ, ताइ, ताणि, णाइँ, णाइं, णाणि

(शेप रूप पुलिंग की तरह चलते हैं।)

४६ क क (किं) पुंलिंग शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	को (के)	के
द्वि०	क	के, का
तृ०	केण, केणं, किणा	केहि, केहिं, केहिँ
प०	कत्तो, काओ, काउ, काहि काहिन्तो, कम्हा, किणो, कीस	कत्तो, काओ, काउ, काहि, केहि, काहिन्तो केहिन्तो, कासुन्तो, केसुन्तो
च०, प०	कस्स, कास	काण, काणं, केसिं, कास
स०	कस्सि, कम्मि, कत्थ, कहिं काहे (कंसि) काला, कइआ	केसु, केसुं

४६ ख की, का (किं) स्त्रीलिंग शब्द

प्र०	का	कीआ, कीउ, कीओ, की, काउ, काओ, का
द्वि०	क	कीआ, कीउ, कीओ, की, काउ, काओ, का
तृ०	कीअ, कीआ, कीइ, कीए काअ, काइ, काए	कीहि, कीहिं, कीहिँ, काहि, काहिं, काहिँ
प०	कीअ, कीआ, कीइ, कीए कित्तो, कीओ, कीउ, कीहिन्तो काअ, काइ, काए, कम्हा कत्तो, काओ, काउ, काहिन्तो	कित्तो, कीओ, कीउ, कीहिन्तो, कीसुन्तो कत्तो, काओ, काउ, काहिन्तो, कासुन्तो
च०, प०	कास, किस्सा, कीसे, कीअ कीआ, कीइ, कीए, काअ काइ, काए	केसिं, काण, काणं
स०	कीअ, कीआ, कीइ कीए, काअ, काइ, काए	कीसु, कीसुं, कासु, कासुं

४६ ग क (किं) नपुंसकलिंग शब्द

प्र०, द्वि० किं काइँ, काइं, काणि

(शेप रूप पुलिंग की तरह चलते हैं।)

४८ क एअ (एतद्) पुंलिंग शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	एसो, एस, इणं, इणमो (एसे)	एए
द्वि०	एअ	एए, एआ
तृ०	एएण, एएणं, एइणा	एएहि, एएहिं, एएहिँ
प०	एअत्तो, एआओ, एआउ एआहि, एआहिन्तो, एआ एत्तो, एत्ताहे	एअत्तो, एआओ, एआउ, एआहि, एएहि एआहिन्तो, एएहिन्तो, एआसुन्तो, एएसुन्तो
च०, ष०	एअस्स, से	एएसिं, एआण, एआणं, सिं
स०	एअस्सि, एअम्मि, अयम्मि, ईयम्मि, एत्थ (एअसि)	एएसु, एएसुं

४८ ख एई, एआ (एतद्) स्त्रीलिंग शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	एसा, एस, इण, इणमो एई, एइआ	एईओ, एईउ, एईआ, एई, एयाओ, एयाउ एआ
द्वि०	एइ, एअ	एईओ, एईउ, एईआ, एई, एआओ, एआउ एआ
तृ०	एईअ, एईआ, एईइ, एईए एआअ, एआइ, एआए	एईहि, एईहिं, एईहिँ, एआहि, एआहिं एआहिँ
प०	एईअ, एईआ, एईइ, एईए एइत्तो, एईओ, एईउ, एईहिन्तो, एअत्तो, एआअ एआइ, एआए, एत्तो, एआओ एआउ, एआहिन्तो	एइत्तो, एईओ, एईउ एईहिन्तो एईसुन्तो एत्तो, एआओ, एआउ, एआहिन्तो एआसुन्तो,
च०, ष०	एईअ, एईआ, एईइ, एईए एआअ, एआइ, एआए, से	एईण, एईणं, एआण, एआणं, सिं, एएसिं
स०	एईअ, एईआ, एईइ, एईए एआअ, एआइ, एआए	एईसु, एईसुं, एआसु, एआसुं

४८ ग एअ, एत (एतद्) नपुंसकलिंग शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	एअ, एस, इण, इणामो	एआइँ, एआइं, एआणि
द्वि०	एअ	एआइँ, एआइं, एआणि

(शेष रूप पुंलिंग की तरह चलते हैं।)

४९-क अमु (अदस्) पुंलिंग शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	अह, अमू	अमुणो, अमओ, अमवो, अमउ, अमू

द्वि० अमु	अमुणो, अमू
तृ० अमुणा	अमूहि, अमूहिं, अमूहिँ
पं० अमुणो, अमुत्तो, अमूओ अमूउ, अमूहिन्तो	अमुत्तो, अमूओ, अमूउ, अमूहिन्तो अमूसुन्तो
च०, ष० अमुणो, अमुस्स	अमूण, अमूणं
स० अमुम्मि, अयम्मि, इअम्मि (अमुंसि)	अमूसु, अमूसुं

४९-ख अमु (अदस्) स्त्रीलिंग शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० अह, अमू	अमूओ, अमूउ, अमू
द्वि० अमुं	अमूओ, अमूउ, अमू
तृ० अमूअ, अमूआ, अमूइ, अमूए	अमूहि, अमूहिं, अमूहिँ
पं० अमूअ, अमूआ, अमूइ, अमूए अमुत्तो, अमूओ, अमूउ अमूहिन्तो	अमुत्तो, अमूओ, अमूउ, अमूहिन्तो अमूसुन्तो
ष० अमूअ, अमूआ, अमूइ, अमूए	अमूण, अमूणं
स० अमूअ, अमूआ, अमूइ, अमूए अयम्मि, इअम्मि	अमूसु, अमूसुं

४९-ग अमु (अदस्) नपुंसकलिंग शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० अह, अमुं	अमूइँ, अमूइं, अमूणि
द्वि० अमुं	अमूइँ, अमूइं, अमूणि

(शेष रूप पुंलिंग की तरह चलते हैं)

५० अम्ह (अस्मद्) शब्द (तीनों लिंगों में)

एकवचन	बहुवचन
प्र० हं, अहं, अहयं, म्मि, अम्हि अम्मि	मो, अम्ह, अम्हे, अम्हो, वयं, मे
द्वि० मं, मम, मिमं, अहं, णे, णं मि, अम्मि, अम्ह, मम्ह	अम्हे, अम्हो, अम्ह, णे
तृ० मि, मे, ममं, ममए, ममाइ मइ, मए, मयाए, णे	अम्हेहि, अम्हाहि, अम्ह, अम्हे, णे
पं० मइत्तो, मईओ, मईउ, मईहिन्तो ममत्तो, ममाओ, ममाउ, ममाहि ममाहिन्तो, ममा, महत्तो	ममत्तो, ममाओ, ममाउ, ममाहि ममाहिन्तो, ममासुन्तो, ममेहि, ममेहिन्तो ममेसुन्तो, अम्हत्तो, अम्हाओ, अम्हाउ

	महाओ, महाउ, महाहि महाहिन्तो, महा, मज्झत्तो मज्झाओ, मज्झाउ, मज्झाहि मज्झाहिन्तो, मज्झा	अम्हाहि, अम्हाहिन्तो, अम्हासुन्तो अम्हेहि, अम्हेहिन्तो, अम्हेसुन्तो
च०, ष०	मे, मइ, मम, मह, महं मज्झ, मज्झ, अम्ह, अम्ह	णे, णो, मज्झ, अम्ह, अम्हं, अम्हे, अम्हो अम्हाण, अम्हाणं, ममाण, ममाणं, महाण महाण, मज्झाण, मज्झाणं
स०	मि, मइ, ममाइ, मए, मे अम्हस्सि, अम्हम्मि (अम्हसि) ममस्सि, ममम्मि (ममंसि) महस्सि, महम्मि (महसि) मज्झसि, मज्झम्मि (मज्झंसि) अम्हे, ममे, महे, मज्झे (मम्मि)	अम्हसु, अम्हसुं, अम्हेसु, अम्हेसुं, ममसु ममसुं, ममेसु, ममेसुं, महसु, महसुं, महेसु, महेसुं, मज्झसु, मज्झसुं, मज्झेसु, मज्झेसुं अम्हासु, अम्हासुं

५१ तुम्ह (युष्मद्) शब्द (तीनों लिंगों में)

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	त, तु, तुव, तुह, तुम	भे, तुब्भे, तुम्हे, तुज्झे, तुज्झ, तुम्ह, तुय्हे उय्हे,
द्वि०	त, तु, तुव, तुम, तुह, तुमे तुए	वो, तुज्झ, तुब्भे, तुम्हे, तुज्झे, तुय्हे उय्हे, भे
तृ०	भे, दि, दे, ते, तइ, तए, तुम तुमइ, तुमए, तुमे, तुमाइ	भे, तुब्भेहिं, तुम्हेहिं, तुज्झेहिं, उज्झेहिं उम्हेहिं, तुय्हेहिं, उय्हेहिं
प०	तइत्तो, तईओ, तईउ, तईहि तईहिन्तो, तई, तुवत्तो, तुवाओ तुवाउ, तुवाहि, तुवाहिन्तो तुवा, तुमत्तो, तुमाओ, तुमाहि तुमाहिन्तो, तुमा, तुहत्तो तुहाओ, तुहाउ, तुहाहि तुहाहिन्तो, तुहा, तुब्भत्तो तुब्भाओ, तुब्भाउ, तुब्भाहि तुब्भाहिन्तो, तुब्भा, तुम्हाओ तुम्हाउ, तुम्हाहि, तुम्हाहिन्तो तुम्हा, तुज्झत्तो, तुज्झाओ तुज्झाउ, तुज्झाहि, तुज्झाहिन्तो तुय्ह, तुब्भ, तुम्ह	तुब्भत्तो, तुब्भाओ, तुब्भाउ, तुब्भाहि तुब्भाहिन्तो, तुब्भासुतो, तुब्भेहि, तुब्भेहिन्तो, तुब्भासुतो, तुम्हत्तो, तुम्हाओ, तुम्हाउ, तुम्हाहि, तुम्हाहिन्तो, तुम्हासुन्तो, तुम्हेहि, तुम्हेहिन्तो, तुम्हेसुन्तो, तुज्झत्तो, तुज्झाओ तुज्झाउ, तुज्झाहि, तुज्झाहिन्तो तुज्झासुन्तो, तुज्झेहि, तुज्झेहिन्ता तुज्झेसुन्तो, तुय्हत्तो, तुय्हाओ, तुय्हाउ तुय्हाहि, तुय्हाहिन्तो, तुय्हासुन्तो, तुय्हेहि तुय्हेहिन्तो, तुय्हेसुन्तो, उय्हत्तो, उय्हाओ उय्हाउ, उय्हाहि, उय्हाहिन्तो, उय्हासुन्तो उय्हेहि, उय्हेहिन्तो, उय्हेसुन्तो, उम्हत्तो उम्हाओ, उम्हाउ, उम्हाहि, उम्हाहिन

	एकवचन	बहुवचन
	तुज्झ, तहिन्तो	उम्हासुन्तो, उम्हेहि, उम्हेहिन्तो उम्हेसुन्तो
च०, प०	तइ, तु, ते, तुम्ह, तुह तुहं, तुव, तुम, तुमे, तुमो तुमाइ, दि, दे, इ, ए, तुब्भ तुम्ह, तुज्झ, उब्भ, उम्ह उज्झ, उय्ह	तु, वो, भे, तुब्भ, तुब्भ तुम्ह, तुज्झ, तुम्हं, तुज्झ, तुब्भाण, तुब्भाण, तुवाण, तुवाण तुम्हाण, तुम्हाण, तुमाण, तुमाण, तुज्झाण तुज्झाण, तुहाण, तुहाणं, उम्हाण, उम्हाण
स०	तुमे, तुमाइ, तुमए, तए, तइ तुम्मि, तुवम्मि, तुवंस्सि (तुवंसि) तुमम्मि, तुमंस्सि (तुमंसि) तुहम्मि, तुहंस्सि (तुहंसि) तुब्भम्मि, तुब्भंस्सि (तुब्भसि) तुम्हम्मि, तुम्हंस्सि (तुम्हसि) तुज्झम्मि, तुज्झंस्सि (तुज्झसि)	तुसु, तुसुं, तुवसु, तुवसुं, तुवेसु, तुवेसुं तुमसु, तुमसुं, तुमेसु, तुमेसुं, तुहसु, तुहसुं तुहेसु, तुहेसुं, तुब्भसु, तुब्भसुं, तुब्भेसु तुब्भेसुं, तुम्हसु, तुम्हसुं, तुम्हेसु, तुम्हेसुं तुज्झसु, तुज्झसुं, तुज्झेसु, तुज्झेसुं, तुब्भासु तुब्भासुं, तुम्हासु, तुम्हासुं, तुज्झासु तुज्झासुं

संख्यावाची शब्दाः

५२-क एग (एक) पुंलिंग शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	एगो, गगे	एगे
द्वि०	एगं	एगे, एगा
च०, प०	एगस्स	एगण्ह, एगण्हं, एगेसिं

(शेष सब्वा ४३-क शब्द की तरह चलते हैं)

५२-ख एगा (एक) स्त्रीलिंग शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	एगा	एगाओ, एगाउ, एगा
द्वि०	एग	एगाओ, एगाउ, एगा
च०, प०	एगस्स	एगासिं, एगेसिं, एगण्ह, एगण्हं

(शेष रूप सब्वा ४३-ख की तरह चलते हैं)

५२-ग एग (एक) नपुंसकलिंग शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०, द्वि०	एगं	एगाइँ, एगाइं, एगाणि

(शेष रूप सब्व ४३-क की तरह चलते हैं)

संख्यावाची शब्द एग को छोडकर शेष शब्द बहुवचन मे और तीनो लिंगो मे एक समान चलते हैं।

५३ दो, वे शब्द (द्वि) (तीनों लिंगो में)

(दो से लेकर दस शब्द तक के रूप बहुवचन मे चलते हैं।)

प्र० दुवे, दोण्णि, दुण्णि, वेण्णि, विण्णि, दो, वे
द्वि० दुवे, दोण्णि, दुण्णि, वेण्णि, विण्णि, दो, वे
तृ० दोहि, दोहिं, दोहिँ, वेहि, वेहिं, वेहिँ
पं० दुत्तो, दोओ, दोउ, दोहिन्तो, दोसुन्तो, वेओ, वेउ, वेहिन्तो, वेसुन्तो
च०, प० दोण्ह, दोण्हं, दुण्ह, दुण्हं, वेण्ह, वेण्हं, विण्ह, विण्हं
स० दोसु, दोसुं, वेसु, वेसुं

५४ ति (त्रि) शब्द

प्र० तिण्णि
द्वि० तिण्णि
तृ० तीहि, तीहिं, तीहिँ
प० तित्तो, तीओ, तीउ, तीहिन्तो, तीसुन्तो
च०, प० तिण्ह, तिण्हं
स० तीसु, तीसुं

५५ चउ (चतुर) शब्द

प्र० चत्तारो, चउरो, चत्तारि
द्वि० चत्तारो, चउरो, चत्तारि
तृ० चऊहि, चऊहिं, चऊहिँ
प० चउत्तो, चऊओ, चऊउ चऊहिन्तो, चऊसुन्तो, चउओ चउउ, चउहिन्तो, चउसुन्तो
च०, प० चउण्ह, चउण्हं
स० चऊसु, चऊसुं, चउसु, चउसुं

५६ पञ्च (पञ्चन्) शब्द

प्र० पंच
द्वि० पच
तृ० पचहि, पचहिं, पचहिँ
प० पंचत्तो, पचाओ, पचाउ, पचाहिन्तो पंचासुन्तो
च०, प० पंचण्ह, पचण्हं
स० पचसु, पचसुं

५६ छ (षष्ठ) शब्द

प्र० छ
द्वि० छ
तृ० छहि, छहिं, छहिँ
पं० छत्तो, छाओ, छाउ, छाहिन्तो छासुन्तो
च०, प० छण्ह, छण्हं
स० छसु, छसुं

	५७ सत्त (सप्तन्) शब्द	५८ अट्ठ (अष्टन्) शब्द	५९ नव (नवन्) शब्द
प्र०	सत्त	अट्ठ	नव
द्वि०	सत्त	अट्ठ	नव
तृ०	सत्तहि, सत्तहिं, सत्तहिँ	अट्ठहि, अट्ठहिं, अट्ठहिँ	नवहि, नवहिं, नवहिँ
प०	सत्तत्तो, सत्ताओ, सत्ताउ सत्ताहिन्तो, सत्तासुन्तो	अट्ठत्तो, अट्ठाओ, अट्ठाउ अट्ठाहिन्तो, अट्ठासुन्तो	नवत्तो, नवाओ, नवाउ नवाहिन्तो, नवासुन्तो
च०/प०	सतण्ह, सतण्हं	अट्ठण्ह, अट्ठण्हं	नवण्ह, नवण्हं
स०	सतसु, सतसुं	अट्ठसु, अट्ठसुं	नवसु, नवसुं

६० दस, दह (दशन्) शब्द

प्र० दह, दस
द्वि० दह, दस
तृ० दहहि, दहहिं, दहहिँ
दसहि, दसहिं, दसहिँ
पं० दहत्तो, दहाओ, दहाउ
दहाहिन्तो, दहासुन्तो
दसत्तो, दसाओ, दसाउ
दसाहिन्तो, दसासुन्तो
च०/ष० दसण्ह, दसण्ह
स० दहसु, दहसुं, दससु, दससु
इसी प्रकार एगारह—
अट्ठारह शब्दों के रूप चलते हैं।

६१ वीसा (विंशति) स्त्रीलिंग शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	वीसा	वीसाओ, वीसाउ, वीसा
द्वि०	वीसं	वीसाओ, वीसउ, वीसा
तृ०	वीसअ, वीसाइ वीसाए	वीसाहि, वीसाहिं वीसाहिँ

(शेष रूप माला शब्द की तरह)
इसी प्रकार एगूणवीसा, एगवीसा, एगूणतीसा, तीसा, एगतीसा, एगूणचत्तालीसा, चत्तालीसा, पण्णासा, अट्ठावणा आदि शब्द चलते हैं।

६२ सट्ठि (षष्टि) शब्द स्त्रीलिंग

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	सट्ठी	सट्ठीउ, सट्ठीओ, सट्ठी
द्वि०	सट्ठिं	सट्ठीउ, सट्ठीओ, सट्ठी
तृ०	सट्ठीअ, सट्ठीआ, सट्ठीइ, सट्ठीए	सट्ठीहि, सट्ठीहिं, सट्ठीहिँ
पं०	सट्ठीअ, सट्ठीआ, सट्ठीइ, सट्ठीए सट्ठित्तो, सट्ठीओ, सट्ठीउ, सट्ठीहिन्तो	सट्ठित्तो सट्ठीओ, सट्ठीउ, सट्ठीहिन्तो सट्ठीसुन्तो
च०/ष०	सट्ठीअ, सट्ठीआ, सट्ठीइ सट्ठीए	सट्ठीण, सट्ठीण
स०	सट्ठीअ, सट्ठीआ, सट्ठीइ, सट्ठीए	सट्ठीसु, सट्ठीसु

इसी प्रकार एगूणसट्ठि, एगसट्ठि, एगूणसत्तरि, एगसत्तरि, एगूणसीइ, एगासीइ, एगूणनवइ, नवइ, एगनवइ, नवनवइ आदि शब्द चलते हैं।

६३ सय (शत) नपुंसक शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	सयं	सयाइँ, सयाइं, सयाणि
द्वि०	सय	सयाइँ, सयाइ, सयाणि
तृ०	सएण, सएण	सएहि, सएहिं, सएहिँ

(शेष रूप वण (३०) की तरह चलते हैं।)

परिशिष्ट २ प्राकृत धातु रूपावली
हस् (हस्) धातु के कर्तृ वाच्य के रूप

धातोर्वर्तमानकालस्य रूपाणि

	एक वचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसइ, हसेइ, हसए	हसन्ति, हसन्ते, हसिरे, हसेन्ति, हसेन्ते, हसेइरे, हसिन्ति, हसिन्ते, हसइरे
म० पु०	हससि, हसेसि, हससे	हसित्था, हसह, हसेत्था, हसेह, हसइत्था, हसेइत्था
उ० पु०	हसमि, हसामि, हसेमि	हसमो, हसमु, हसम, हसामो, हसामु, हसाम, हसिमो, हसिमु, हसिम, हसेमो, हसेमु, हसेम

सर्ववचन, सर्वपुरुष—हसिज्ज, हसेज्ज, हसिज्जा, हसेज्जा

विधिआज्ञार्थयो रूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसउ, [हसए, हसे]	हसन्तु, हसिन्तु, हसेन्तु
म० पु०	हसहि, हसेहि, हससु, हसेसु, हसिज्जसु, हसेज्जसु, हसिज्जहि, हसेज्जहि, हसिज्जे, हसेज्जे, हस, हसे	हसह, हसेह
	*[हसिज्जसि, हसेज्जसि, हसिज्जासि, हसेज्जासि, हसिज्जाहि, हसेज्जाहि, हसाहि]	[हसिज्जाह, हसेज्जाह]

इस [ ] कोष्ठक मे जो रूप है वे आर्प मे मिलते हैं।

सर्वपुरुष, सर्ववचन—हसित्था, हसिसु

उ० पु०	हसमु, हसामु, हसिमु, हसेमु	हसमो, हसामो, हसिमो, हसेमो

सर्वपुरुष, सर्ववचन—हसिज्ज, हसेज्ज हसिज्जा, हसेज्जा

'हस्' (हस्) धातोर्भूतकालस्य रूपाणि

सर्वपुरुष, सर्ववचन—हसीअ

'हस्' (हस्) धातोर्भविष्यत्कालस्य रूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसिहिइ, हसिहिए, हसेहिइ, हसेहिए, [हसिस्सइ, हसिस्सए हसेस्सइ, हसेस्सए]	हसिहिन्ति, हसिहिन्ते, हसिहिरे, हसेहिन्ति, हसेहिन्ते, हसेहिरे, [हसिस्सन्ति, हसिस्सन्ते, हसेस्सन्ति, हसेस्सन्ते]
म० पु०	हसिहिसि, हसिहिसे, हसेहिसि, हसेहिसे, [हसिस्ससि, हसिस्ससे, हसेस्ससि, हसेस्ससे]	हसिहित्था, हसिहिह, हसेहित्था, हसेहिह, [हसिस्सह, हसेस्सह]
उ० पु०	हसिस्सं, हसिस्सामि, हसेस्सं, हसेस्सामि, हसिहामि, हसेहामि, हसिहिमि, हसेहिमि	हसिस्सामो, हसिस्सामु, हसिस्साम, हसेस्सामो, हसेस्सामु, हसेस्साम, हसिहामो, हसिहामु, हसिहाम, हसेहामो, हसेहामु, हसेहाम, हसिहिमो, हसिहिमु, हसेहिम, हसेहिमो, हसेहिमु, हसेहिम, हसिहिस्सा, हसिहित्था, हसेहिस्सा, हसेहित्था

सर्व पुरुष, सर्ववचन— हसेज्ज, हसेज्जा, हसिज्ज, हसिज्जा

'हस्' (हस्) धातोः क्रियातिपत्त्यर्थस्य रूपाणि

सर्ववचन, सर्वपुरुष— हसिज्ज, हसिज्जा, हसेज्ज, हसेज्जा

	एकवचन	बहुवचन
पुंल्लिग	हसन्तो, हसेन्तो, हसिन्तो, हसमाणो, हसेमाणो, (हसन्ते, हसेन्ते, हसिन्ते, हसमाणे, हसेमाणे)	हसन्ता, हसेन्ता, हसिन्ता, हसमाणा, हसेमाणा
स्त्रीलिंग	हसन्ती, हसेन्ती, हसिन्ती, हसमाणी, हसेमाणी, हसन्ता, हसेन्ता, हसिन्ता, हसमाणा, हसेमाणा, हसन्तं, हसेन्तं, हसिन्तं, हसमाण, हसेमाण	हसन्तीओ, हसेन्तीओ, हसिन्तीओ, हसमाणीओ, हसेमाणीओ, हसन्ताओ, हसेन्ताओ, हसिन्ताओ, हसमाणाओ, हसेमाणाओ, हसन्ताइ हसेन्ताइं, हसिन्ताइं, हसमाणाइं, हसेमाणाइं

इसी प्रकार कह् (कथ्) गच्छ् (गम्) जाण् (ज्ञा) देक्ख् (दृश्) नम् (नम्) बीह् (भी) बोल्ल् (कथ्) रुव् (रुद्) आदि हसान्त धातुओ के रूप चलते है।

'हो' (भू) धातोर्वर्तमानकालस्य रूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होइ	होन्ति, होन्ते, होइरे, हुन्ति, हुन्ते

म० पु० होसि — होउत्था, होह
उ० पु० होमि — होमो, होमु, होम

'होअ' (भू) अंगस्य वर्तमानकालरूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होअइ, होअए, होएइ	होअन्ति, होअन्ते, होइरे, होएन्ति, होएन्ते, होएइरे, होइन्ति, होइन्ते, होअइरे
म० पु०	होअसि, होअसे, होएसि	होइत्था, होअह, होएत्था, होएह, होअइत्था होएइत्था
उ० पु०	होअमि, होआमि, होएमि	होअमो, होअमु, होअम, होआमो, होआमु होआम, होइमो, होइमु, होइम होएमो, होएमु, होएम

'होज्ज-होज्जा' (भू) अंगस्य वर्तमानकालरूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होज्जइ, होज्जाइ, होज्जेइ, होज्जए, होज्ज, होज्जा	होज्जन्ति, होज्जन्ते, होज्जइरे, होज्जान्ति, होज्जान्ते, होज्जाइरे, होज्जेन्ति, होज्जेन्ते, होज्जेइरे, होज्जिन्ति, होज्जिन्ते, होज्जिरे, होज्ज, होज्जा
म० पु०	होज्जसि, होज्जासि, होज्जेसि, होज्जसे, होज्ज, होज्जा	होज्जित्था, होज्जह, होज्जेत्था, होज्जइत्था, होज्जाह, होज्जेइत्था, होज्जेह, होज्जाइत्था, होज्ज, होज्जा
उ० पु०	होज्जमि, होज्जामि, होज्जेमि, होज्ज, होज्जा	होज्जमो, होज्जमु, होज्जम, होज्जामो, होज्जामु, होज्जाम, होज्जिमो, होज्जिमु, होज्जिम, होज्जेमो, होज्जेमु, होज्जेम, होज्ज, होज्जा

'होएज्ज-होएज्जा' (भू) अंगस्य वर्तमानकालरूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होएज्जइ, होएज्जाइ, होएज्जेइ, होएज्जए, होएज्ज, होएज्जा	होएज्जन्ति, होएज्जन्ते, होएज्जइरे, होएज्जान्ति, होएज्जान्ते, होएज्जाइरे, होएज्जेन्ति, होएज्जेन्ते, होएज्जेइरे, होएज्जिन्ति, होएज्जिन्ते, होएज्जिरे, होएज्ज, होज्जा
म० पु०	होएज्जसि, होएज्जासि, होएज्जेसि, होएज्जसे,	होएज्जित्था, होएज्जह, होएज्जेत्था, होएज्जाह, होएज्जइत्था, होएज्जेह,

होएज्ज, होएज्जा — होएज्जेइत्था, होएज्जाइत्था, होएज्ज, होएज्जा

उ०पु० होएज्जमि, होएज्जामि, होएज्जेमि, होएज्ज, होएज्जा — होएज्जमो, होएज्जमु, होएज्जम, होएज्जामो, होएज्जामु, होएज्जाम, होएज्जिमो, होएज्जिमु, होएज्जिम, होएज्जेमो, होएज्जेमु, होएज्जेम, होएज्ज, होएज्जा

* होज्ज-होज्जा-होएज्ज-होएज्जा-इत्यादि ज्ज-ज्जा-अङ्गस्य रूपाणि भूतकाले क्रियातिपत्त्यर्थे च न भवन्ति।

'हो' (भू) धातोर्विधि-आज्ञार्थयो रूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	होउ	होन्तु हुन्तु
म०पु०	होहि, होसु (होइज्जमि, होइज्जामि, होइज्जाहि)	होह (होज्जाह)
उ०पु०	होमु	होमो

'होअ' (भू) अंगस्य रूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	होअउ, होएउ (होअए)	होअन्तु, होएन्तु, होइन्तु
म०पु०	होअहि, होएहि, होअसु, होएसु होइज्जसु, होएज्जसु, होइज्जहि होएज्जहि, होइज्जे, होएज्जे होअ, होए, (होइज्जमि होएज्जमि होइज्जामि, होएज्जामि होइज्जाहि, होएज्जाहि, होआहि)	होअह, होएह (होइज्जाह, होएज्जाह)
उ०पु०	होअमु, होआमु, होइमु, होएमु	होअमो, होआमो, होइमो, होएमो

होज्ज, होज्जा, (भू) अंगस्य आज्ञार्थयो रूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	होज्जउ, होज्जाउ, होज्जेउ (होज्जे) (होज्जए) होज्ज होज्जा	होज्जन्तु, होज्जान्तु, होज्जेन्तु होज्जिन्तु, होज्ज, होज्जा
म०पु०	होज्जहि, होज्जेहि, होज्जाहि होज्जसु, होज्जेसु, होज्जासु होज्जिज्जसु, होज्जेज्जसु होज्जिज्जहि, होज्जेज्जहि	होज्जह, होज्जेह, होज्जाह, होज्ज होज्जा (होज्जिज्जाह, होज्जेज्जाह)

होज्जिज्जे, होज्जेज्जे, होज्ज
होज्जा (होज्जिज्जसि, होज्जेज्जसि
होज्जिज्जासि, होज्जेज्जासि
होज्जिज्जाहि, होज्जेज्जाहि
होज्जाहि)

उ०पु०	होज्जमु, होज्जामु, होज्जिमु होज्जेमु, होज्ज, होज्जा	होज्जमो, होज्जामो, होज्जिमो होज्जेमो, होज्ज, होज्जा

होएज्ज, होएज्जा (भू) अंगस्य विधि-आज्ञार्थयो रूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	होएज्जउ, होएज्जाउ, होएज्जेउ (होएज्जए) होएज्ज, होएज्जा	होएज्जन्तु, होएज्जान्तु, होएज्जेन्तु होएज्जिन्तु, होएज्ज, होएज्जा
म०पु०	होएज्जहि, होएज्जाहि, होएज्जेहि होएज्जसु, होएज्जासु, होएज्जेमु होएज्जिज्जमु, होएज्जेज्जमु होएज्जिज्जहि, होएज्जेज्जहि होएज्जिज्जे, होएज्जेज्जे, होएज्ज होएज्जा (होएज्जिज्जसि, होएज्जेज्जसि, होएज्जिज्जासि होएज्जेज्जासि, होएज्जिज्जाहि होएज्जेज्जाहि, होएज्जाहि)	होएज्जह, होएज्जाह, होएज्जेह होएज्ज, होएज्जा (होएज्जिज्जाह होएज्जेज्जाह)
उ०पु०	होएज्जमु, होएज्जामु, होएज्जिमु होएज्जेमु, होएज्ज, होएज्जा	होएज्जमो, होएज्जामो, होएज्जिमो होएज्जेमो, होएज्ज, होएज्जा

'हो' (भू) धातोर्भूतकालस्य रूपाणि

सर्वपुरुष, सर्ववचन—होसी, होही, होहीअ

'हो' अंगस्य रूपाणि

सर्वपुरुष, सर्ववचन—होअसी, होअही, होअहीअ

आर्षरूपाणि

सर्वपुरुष, सर्ववचन—होत्था, होसु, होइत्था, होइमु

'हो' (भू) धातोर्भविष्यत्कालस्य रूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	होहिइ, होहिए, (होस्सइ होस्सए)	होहिन्ति, होहिन्ते, होहिरे (होस्सन्ति, होस्सन्ते)

म०पु०	होहिसि, होहिसे (होस्सासि, होस्ससे)	होहित्था होहिह (होस्सह)
उ०पु०	(होस्सं, होस्सामि) होहामि होहिमि	(होस्सामो, होस्सामु, होस्साम) होहामो, होहामु, होहाम, होहिमो होहिमु, होहिम होहिस्सा, होहित्था

'होअ' (भू) अंगस्य भविष्यत्कालस्य रूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	होइहिइ, होइहिए, होएहिइ होएहिए (होइस्सइ, होइस्सए होएस्सइ, होएस्सए)	होइहिन्ति, होइहिन्ते, होइहिरे होएहिन्ति, होएहिन्ते, होएहिरे (होइस्सन्ति, होइस्सन्ते, (होएस्सन्ति होएस्सन्ते)
म०पु०	होइहिसि, होइहिसे, होएहिसि होएहिसे (होइस्ससि, होइस्ससे होएस्ससि, होएस्ससे)	होइहित्था, होइहिह, होएहित्था होएहिह (होइस्सह, होएस्सह)
उ०पु०	(होइस्सं, होइस्सामि, होएस्स, होएस्सामि) होइहामि, होएहामि होइहिमि, होएहिमि	(होइस्सामो, होइस्सामु, होइस्साम होएस्सामो, होएस्सामु, होएस्साम) होइहामो, होइहामु, होइहाम, होएहामो, होएहामु, होएहाम, होइहिमो, होइहिमु, होइहिम, होएहिमो, होएहिमु, होएहिम, होइहिस्सा, होइहित्था, होएहिस्सा, होएहित्था

'होज्ज-होज्जा' (भू) अंगस्य भविष्यत्कालरूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	होज्जहिइ, होज्जहिए, होज्जाहिइ होज्जहिए होज्ज, होज्जा	होज्जहिन्ति, होज्जहिन्ते, होज्जहिरे, होज्जाहिन्ति, होज्जाहिन्ते, होज्जाहिरे, होज्ज, होज्जा
म०पु०	होज्जहिसि, होज्जहिसे, होज्जाहिसि, होज्जाहिसे, होज्ज होज्जा	होज्जहित्था, होज्जहिह, होज्जाहित्था, होज्जाहिह, होज्ज, होज्जा
उ०पु०	होज्जस्सं, होज्जस्सामि, होज्जास्सं होज्जास्सामि, होज्जहामि होज्जाहामि, होज्जहिमि होज्जाहिमि, होज्ज, होज्जा	होज्जस्सामो, होज्जसामु, होज्जसाम, होज्जास्सामो-मु-म, होज्जहामो-मु-म होज्जाहामो-मु-म, होज्जहिमो-मु-म होज्जाहिमो-मु-म,. होज्जहिस्सा

	होज्जहित्था, होज्जाहिस्सा
	होज्जाहित्था, होज्ज, होज्जा

'होएज्ज-होएज्जा' (भू) अंगस्य भविष्यत्कालरूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	होएज्जहिइ, होएज्जहिए	होएज्जहिन्ति, होएज्जहिन्ते
	होएज्जाहिइ, होएज्जाहिए	होएज्जहिरे, होएज्जाहिन्ति
	होएज्ज, होएज्जा	होएज्जाहिन्ते, होएज्जाहिरे, होएज्ज होएज्जा
म०पु०	होएज्जहिसि, होएज्जहिसे	होएज्जहित्था, होएज्जहिह
	होएज्जाहिसि, होएज्जाहिसे	होएज्जाहित्था, होएज्जाहिह
	होएज्ज, होएज्जा	होएज्ज, होएज्जा
उ०पु०	होएज्जस्सं, होएज्जसामि	होज्जसामो-मु-म
	होएज्जास्सं, होएज्जास्सामि	होएज्जास्सामो-मु-म
	होएज्जहामि, होएज्जाहामि	होएज्जहामो-मु-म
	होएज्जहिमि, होएज्जाहिमि	होएज्जाहामो-मु-म, होएज्जहिमो-मु-म
	होएज्ज, होज्जा	होएज्जहिस्सा, होएज्जहित्था
		होएज्जाहिस्सा, होएज्जाहित्था
		होएज्ज, होएज्जा

'हो-होअ' (भू) धातोः क्रियातिपत्त्यर्थस्य रूपाणि

सर्वपुरुष } हो—होज्ज, होज्जा, हुज्ज, हुज्जा
सर्ववचन } होअ—होएज्ज, होएज्जा

	एकवचन	बहुवचन
पुंलिंग—	होन्तो, हुन्तो, होमाणो (होन्ते हुन्ते, होमाणे) होअन्तो, होएन्तो होइन्तो, होअमाणो, होएमाणो (होअन्ते, होएन्ते, होइन्ते होअमाणे, होएमाणे)	होन्ता, हुन्ता, होमाणा, होअन्ता होएन्ता, होइन्ता, होअमाणा होएमाणा
स्त्रीलिंग—	होन्ती, हुन्ती, होमाणी	होन्तीओ, हुन्तीओ, होमाणीओ
	होमाणा, होअन्ती, होएन्ती	होमाणाओ, होअन्तीओ, होएन्तीओ
	होइन्ती, होअमाणी, होएमाणी	होइन्तीओ, होअमाणीओ, होएमाणीओ
	होअमाणा, होएमाणा	होअमाणाओ, होएमाणाओ
नपु०—	होन्त, हुन्त, होमाण	होन्ताइ, हुन्ताइं, होमाणाइं
	होअन्त, होएन्त,	होअन्ताइ, होएन्ताइं, होइन्ताइं
	होइन्तं होअमाण, होएमाणं	होअमाणाइ, होएमाणाइं

इसी प्रकार नी (ने), डी (डे), जि (जे), स्ना (ण्हा), ध्यै (झा), स्था (ठा), पा (पा), या(जा), आदिस्वरान्त-धातुओं के रूप चलते हैं।

अस् (अस्) धातु

वर्तमानकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	अत्थि	अत्थि
म०पु०	सि, अत्थि	अत्थि
उ०पु०	अत्थि, म्मि	अत्थि, म्हो, म्ह

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	आसि, अहेसि	आसि, अहेसि
म०पु०	आसि, अहेसि	आसि, अहेसि
उ०पु०	आसि, अहेसि	आसि, अहेसि

आगम में उपलब्ध रूप

(वर्तमाने)

प्र०पु०	अत्थि	सन्ति
म०पु०	सि अंसि,	ह
उ०पु०	मि	मो

(विध्यर्थे)

प्र०पु०	सिया	सिया
म०पु०	सिया	सिया
उ०पु०	सिया	सिया

(आज्ञायाम्)

प्र०पु०	अत्थु	०
म०पु०	०	०
उ०पु०	०	०

(भूतकाले)

प्र०पु०	आसि, आसी	०
म०पु०	०	०
उ०पु०	०	आसिमं

इति कर्तरिरूपाणि

भावे कर्मणि च रूपाणि

हसीअ, हसिज्ज (हस्-हस्य) अंगस्य भावे कर्मणि च वर्तमानकालस्य रूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हसीअइ, हसीअए, हसीएइ	हसीअन्ति, हसीअन्ते, हसीइरे
		हसीएन्ति, हसीएन्ते, हसीएइरे
		हसीइन्ति, हसीइन्ते, हसीअइरे
	हसिज्जइ, हसिज्जए, हसिज्जेइ	हसिज्जन्ति, हमिज्जन्ते, हसिज्जइरे
		हसिज्जेन्ति, हसिज्जेन्ते, हसिज्जेइरे
		हसिज्जिन्ति, हसिज्जिन्ते, हसिज्जिइरे
म०पु०	हसीअसि, हसीअसे, हसीएसि	हसीइत्था, हसीअह, हसीएइत्था
	हसिज्जसि, हसिज्जसे, हसिज्जेसि	हसीएह, हसीअइत्था, हसिज्जित्था
		हसिज्जह, हसिज्जेइत्था, हसिज्जेह
		हसिज्जइत्था
उ०पु०	हसीअमि, हसीआमि, हसीएमि	हसीअमो, हसअमु, हसीअम
	हसिज्जमि, हसिज्जामि	हसीआमो, हसीआमु, हसीआम
	हसिज्जेमि	हसीइमो, हसीइमु, हसीइम
		हसीएमो, हसीएमु, हसएम
		हसिज्जमो, हसिज्जमु, हसिज्जम
		हसिज्जामो, हसिज्जामु, हसिज्जाम
		हसिज्जिमो, हसिज्जिमु, हसिज्जिम
		हसिज्जेमो, हसिज्जेमु, हसिज्जेम

सर्वपुरुष, सर्ववचन—हसीएज्ज, हसीएज्जा, हसिज्जेज्ज, हसिज्जेज्जा

हसीअ, हसिज्ज (हस्-हस्य) अंगस्य भावे कर्मणि च विधि-आज्ञार्थयो रूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हसीअउ, हसीएउ,	हसीअन्तु, हसीएन्तु, हसीइन्तु
	हसिज्जउ, हसिज्जेउ	हसिज्जन्तु, हसिज्जेन्तु, हसिज्जिन्तु
म०पु०	हसीअहि, हसिएहि, हसीअसु	हसीअह, हसीएह, हसिज्जह
	हसीएसु, हसीइज्जसु, हसीएज्जसु	हसिज्जेह, (हसीइज्जाह,
	हसीइज्जहि, हसीएज्जहि	हसीएज्जाह, हसिज्जिज्जाह
	हसीइज्जे, हसीएज्जे, हसीअ	हसिज्जेज्जाह)
	हसिज्जहि, हसिज्जेहि, हसिज्जसु	
	हसिज्जेसु, हसिज्जिज्जसु	

हसेहामो, हसेहामु, हसेहाम
हसिहिस्सा, हसेहिस्सा, हसिहित्था
हसेहित्था

सर्वपुरुष, सर्ववचन—हसेज्ज, हसेज्जा, हसिज्ज, हसिज्जा

क्रियातिपत्त्यर्थे (कर्मणि) कर्तृवद रूपाणि भवन्ति

सर्वपुरुष, सर्ववचन—हसेज्ज, हसेज्जा, हसिज्ज, हसिज्जा

	एकवचन	बहुवचन
पुंलिंग	हसन्तो, हसिन्तो, हसेन्तो हसमाणो हसेमाणो (हसन्ते हसेन्ते, हसिन्ते, हसमाणे हसेमाणे)	हसन्ता, हसिन्ता, हसेन्ता, हसमाणा हसेमाणा
स्त्रीलिंग	हसन्ती, हसेन्ती, हसिन्ती हसमाणी, हसेमाणी, हसन्ता हसेन्ता, हसिन्ता, हसमाणा हसेमाणा	हसन्तीओ, हसेन्तीओ, हसिन्तीओ हसमाणीओ, हसेमाणीओ, हसन्ताओ हसेन्ताओ, हसिन्ताओ, हसमाणाओ हसेमाणाओ
नपुं०	हसन्त, हसेन्त, हसिन्त हसमाण, हसेमाण	हसन्ताइ, हसेन्ताइ, हसिन्ताइ हसमाणाइं, हसेमाणाइं

होईअ-होइज्ज (भू-भूय) अंगस्य भावे कर्मणि च वर्तमानकालस्य रूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	होईअइ, होईअए, होईएइ होइज्जइ, होइज्जए, होइज्जेइ	होईअन्ति, होईअन्ते, होईअइरे होईइरे, होईएन्ति, होईएन्ते, होईएइरे होईइन्ति, होईइन्ते, होइज्जन्ति होइज्जन्ते, होइज्जइरे, होइज्जिरे होइज्जेन्ति, होइज्जेन्ते, होइज्जेइरे होइज्जिन्ति, होइज्जिन्ते
म०पु०	होईअसि, होईअसे, होईएसि होइज्जसि, होइज्जसे होइज्जेसि	होईअइत्था, होईइत्था, होईएइत्था होईअह, होईएह, होइज्जइत्था होइज्जह, होइज्जित्था, होइज्जेइत्था होइज्जेह
उ०पु०	होईअमि, होईआमि, होईएमि होइज्जमि, होइज्जामि होइज्जेमि	होईअमो, होईअमु, होईअम, होईआमो होईआमु, होईआम, होईइमो, होईइमु होईइम, होईएमो, होईएमु, होईएम होइज्जमो, होइज्जमु, होइज्जम

भविष्यत्काले कर्तरिवद् रूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	होहिइ, होईए	होहिन्ति, होहिन्ते, होहिरे

(शेषं कर्तरिवद् ज्ञेयानि)

क्रियातिपत्त्यर्थे कर्तृवद् रूपाणि

सर्वपुरुष, सर्ववचन—होज्ज, होज्जा, हुज्ज, हुज्जा

	एकवचन	बहुवचन
पु०	होन्तो, हुन्तो, होमाणो	होन्ता, हुन्ता
स्त्री०	होन्ती, हुन्ती	होन्तीओ, हुन्तीओ
न०	होन्तं, हुन्तं	होन्ताइ, हुन्ताइं

(शेषं कर्तरिवद् ज्ञेयानि)

प्रेरके कर्तृरूपाणि

हास-हासे-हसाव-हसावे (हस्—हासय) अंगस्य प्रेरके वर्तमानकालरूपाणि

		एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हास	—हासइ, हासए, हासेइ	हासन्ति, हासन्ते, हासिरे, हासेन्ति हासेन्ते, हासेइरे, हासिन्ति, हासिन्ते हासइरे
	हासे	—हासेइ	हासेन्ति, हासेन्ते, हासेइरे, हासिन्ति हासिन्ते
	हसाव	—हसावइ, हसावए हसावेइ	हसावन्ति, हसावन्ते, हसाविरे हसावेन्ति, हसावेन्ते, हसावेइरे हसाविन्ति, हसाविन्ते, हसावइरे
	हसावे	—हसावेइ	हसावेन्ति, हसावेन्ते, हसावेइरे हसाविन्ति, हसाविन्ते
म०पु०	हास	—हससि, हससे, हासेसि	हासित्था, हासह, हासेइत्था हासेह हासइत्था, हासित्था
	हासे	—हासेसि	हासेइत्था, हासेह
	हसाव	—हसावसि, हसावसे हसावेसि	हसावित्था, हसावह, हसावेइत्था हसावेह, हसावइत्था, हसावेत्था
	हसावे	—हसावेसि	हसावेइत्था, हसावेह
उ०पु०	हास	—हासमि, हासामि हासेमि	हासमो, हासमु, हासम, हासामो हासामु, हासाम, हासिमो, हासिमु हासिम

हासे—हासेमि हासेमो, हासेमु, हासेम
हसाव—हसावमि, हसावामि हसावमो, हसावमु, हसावम
हसावेमि हसावामो, हसावामु, हसावाम
हसाविमो, हसाविमु, हसाविम
हसावेमो, हसावेमु, हसावेम
हसावे—हसावेमि हसावेमो, हसावेमु, हसावेम

ज्ज-ज्जा प्रत्यये रूपाणि

(सर्ववचन—सर्वपुरुष)

हास—हासेज्ज, हासेज्ज, हासिज्ज, हासिज्जा
हासे—हासेज्ज, हासेज्जा, हासिज्ज, हासिज्जा
हसावे—हसावेज्ज हसावेज्जा, हसाविज्ज, हसाविज्जा
हसावे—हसावेज्ज, हसावेज्जा, हसाविज्ज, हसाविज्जा

हास-हासे-हासाव-हसावे (हस्—हासय) अंगस्य विधि-आज्ञार्थयो रूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हास—हासउ, हासेउ	हासन्तु, हासेन्तु, हासिन्तु
	हासे—हासेउ	हासेन्तु, हासिन्तु
	हसाव—हसावउ, हसावेउ	हसावन्तु, हसावेन्तु, हसाविन्तु
	हसावे—हसावेउ	हसावेन्तु, हसाविन्तु
म०पु०	हास—हासहि हासेहि हाससु, हासेसु हासिज्जसु, हासेज्जसु हासिज्जहि, हासेज्जहि हासिज्जे, हासेज्जे, हास (हासिज्जसि, हासेज्जसि हासिज्जासि, हासेज्जासि हासिज्जाहि, हासेज्जाहि हासाहि)	हासह, हासेह (हासिज्जाह, हासेज्जाह)
	हासे—हासेहि (हासेइज्जसि हासेइज्जासि हासेइज्जाहि)	हासेसु, हासेह (हासेज्जाह)
	हसाव—हसावहि, हसावेहि हसावसु, हसावेसु	हसावह, हसावेह (हसाविज्जाह हसावेज्जाह)

हसाविज्जसु, हसावेज्जसु
हसाविज्जहि, हसावेज्जहि
हसाविज्जे, हसावेज्जे, हसाव
(हसाविज्जसि, हसावेज्जसि
हसाविज्जासि, हसावेज्जासि
हसाविज्जाहि, हसावेज्जाहि
हसावाहि)

	हसावे—हसावेहि, हसावेसु (हसावेइज्जसि, हसावेइज्जासि हसावेइज्जाहि)	हसावेह (हसावेज्जाह)
उ०पु०	हास—हासमु, हासामु, हासिमु हासेमु	हासमो, हासामो, हासिमो, हासेमो
	हासे—हासेमु	हासेमो
	हसाव—हसावमु, हसावामु हसाविमु, हसावेमु	हसावमो, हसावामो, हसाविमो हसावेमो
	हसावे—हसावेमु	हसावेमो

ज्ज-ज्जा प्रत्यये रूपाणि

(सर्वपुरुष—सर्ववचन)

हास—हासेज्ज,	हासेज्जा,	हासिज्ज,	हासिज्जा
हासे—हासेज्ज,	हासेज्जा,	हासिज्ज,	हासिज्जा
हसाव—हसावेज्ज,	हसावेज्जा,	हसाविज्ज,	हसाविज्जा
हसावे—हसावेज्ज,	हसावेज्जा,	हसाविज्ज,	हसाविज्जा

हास-हासे-हसाव-सावे (हस्—हासय) अंगस्य

भूतकालस्य रूपाणि

सर्वपुरुष, सर्ववचन—हासीअ, हासेईअ, हसवीअ, हसावेईअ

आर्ष रूपाणि

(सर्वपुरुष—सर्ववचन)

हास—हासित्था, हासिंसु
हासे—हासेत्था, हासेंसु
हसाव—हसावित्था, हसाविंसु
हसावे—हसावेत्था, हसावेंसु

हास-हासे-हसाव-हसावे (हस्—हासय) अंगस्य

भविष्यत्कालरूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हास—हासिहिइ, हासिहिए	हासिहिन्ति, हासिहिन्ते, हासिहिरे
	हासेहिइ, हासेहिए	हासेहिन्ति, हासेहिन्ते, हासेहिरे
	(हासिस्सइ, हासिस्सए	(हासिस्सन्ति, हासिस्सते, हासेस्सन्ति
	हासेस्सइ, हासेस्सए)	हासेस्सन्ते)
	हासे—हासेहिइ, हासेहिए	हासेहिन्ति, हासेहिन्ते, हासेहिरे
	(हासेस्सइ, हासेहिए)	(हासेस्सन्ति, हासेस्सन्ते)
	हसाव—हसाविहिइ, हसाविहिए	हसाविहिन्ति, हसाविहिन्ते, हसाविहिरे
	हसावेहिइ, हसावेहिए	हसावेहिन्ति, हसावेहिन्ते, हसावेहिरे
	(हसाविस्सइ, हसाविस्सए	(हसाविस्सन्ति, हसाविस्सन्ते
	हसावेस्सइ, हसावेस्सए)	हसावेस्सन्ति, हसावेस्सन्ते)
	हसावे—हसावेहिइ, हसावेहिए	हसावेहिन्ति, हसावेहिंते, हसावेहिरे
	(हसावेस्सइ, हसावेस्सए)	(हसावेस्सन्ति, हसावेस्सन्ते)
म०पु०	हास—हासिहिसि, हासिहिसे	हासिहित्था, हासिहिह, हासेहित्था
	हासेहिसि, हासेहिसे	हासेहिह (हासिस्सह, हासेस्सह)
	(हासिस्ससि, हासिस्ससे	
	हासेस्ससि, हासेस्ससे)	
	हासे—हासेहिसि, हासेहिसे	हासेहित्था, हासेहिह
	[हासेस्ससि, हासेस्ससे]	(हासेस्सह)
	हसाव—हसाविहिसि, हसाविहिसे	हसाविहित्था, हसाविहिह
	हसावेहिसि, हसावेहिसे	हसावेहित्था, हसावेहिह (हसाविस्सह
	(हसाविस्ससि, हसाविस्ससे	हसावेस्सह)
	हसावेस्ससि, हसावेस्ससे)	
	हसावे—हसावेहिसि, हसावेहिसे	हसावित्था, हसावेहिह
	(हसावेस्ससि,हसावेस्ससे)	(हसावेस्सह)

	एकवचन	बहुवचन
उ०पु०	हास—हासिस्स, हासेस्स	हासिस्सामो, हासिस्सामु, हासिस्साम
	हासिस्सामि, हासेस्सामि	हासेस्सामो, हासेस्सामु हासेस्साम
	हासिहामि, हासेहामि	हासिहामो, हासिहामु, हासिहाम
		हासेहामो, हासेहामु, हासेहाम
		हासिहिमो, हासिहिमु, हासिहिम

हासिहिमि, हासेहिमि	हासिहिस्सा, हासिहित्था
	हासेहिस्सा, हासेहित्था
हासे—हासेस्सं, हासेस्सामि	हासेस्सामो, हासेस्सामु, हासेस्साम
हासेहामि, हासेहिमि	हासेहामो, हासेहामु, हासेहाम
	हासेहिमो, हासेहिमु, हासेहिम
	हासेहिस्सा, हासेहित्था
हसाव—हसाविस्स, हसावेस्सं	हसाविस्साम, हसाविस्सामु, हसाविस्साम
हसाविस्सामि, हसावेस्सामि	हसावेस्सामो, हसावेस्सामु, हसावेस्साम
हसाविहामि, हसावेहामि	हसाविहामो, हसाविहामु, हसाविहाम
	हसाविहामो, हसावेहामु, हसावेहाम
	हसावेहामो, हसाविहिमु, हसाविहिम
	हसाविहिमो, हसावेहिमु, हसावेहिम
हसाविहिमि, हसावेहिमि	हसाविहिस्सा, हसाविहित्था
	हसावेहिस्सा, हसावेहित्था
हसावे—हसावेस्स, हसावेस्सामि	हसावेस्सामो, हसावेस्सामु, हसावेस्साम
हसावेहामि, हसावेहिमि	हसावेहामो, हसावेहामु, हसावेहाम
	हसावेहिमो, हसावेहिमु, हसावेहिम
	हसावेहिस्सा, हसावेहित्था

(सर्वपुरुषेषु—सर्ववचन)

ज्ज-ज्जा प्रत्यये रूपाणि

हास—हासेज्ज, हासेज्जा, हासिज्ज, हासिज्जा
हासे—हासेज्ज, हासेज्जा, हासिज्ज, हासिज्जा
हसाव—हसावेज्ज, हसावेज्जा, हसाविज्ज, हसाविज्जा
हसावे—हसावेज्ज, हसावेज्जा, हसाविज्ज, हसाविज्जा

हास-हासे-हसाव-हसावे (हस्—हासय) अंगस्य प्रेरके क्रियातिपत्त्यर्थरूपाणि

(सर्वपुरुषेषु—सर्ववचन)

ज्ज-ज्जा प्रत्यये रूपाणि

हास—हासेज्ज, हासेज्जा, हासिज्ज, हासिज्जा
हासे—हासेज्ज, हासेज्जा, हासिज्ज, हासिज्जा
हसाव—हसावेज्ज, हसावेज्जा, हसाविज्ज, हसाविज्जा
हसावे—हसावेज्ज, हसावेज्जा, हसाविज्ज, हसाविज्जा

पुंलिंगे

एकवचन	बहुवचन
हास—हासंतो, हासेन्तो, हासिन्तो	हासन्ता, हासेन्ता, हासिन्ता
हासमाणो, हासेमाणो	हासमाणा, हासेमाणा
हासे—हासेन्तो, हासेमाणो	हासेन्ता, हासेमाणा
हसाव—हसावन्तो, हसावेन्तो,	हसावन्ता, हसावेता, हसाविन्ता
हसाविन्तो, हसावमाणो,	हसावमाणा, हसावेमाणा
हसावेमाणो	
हसावे—हसावेन्तो, हसाविन्तो	हसावेन्ता, हसाविन्ता, हसावेमाणा
हसावेमाणो	

आर्षे एकवचनरूपाणि

हास—हासन्ते, हासेन्ते, हासिन्ते, हासमाणे, हासेमाणे
हासे—हासेन्ते, हासिन्ते, हासेमाणे
हसाव—हसावन्ते, हसावेन्ते, हसाविन्ते, हसावमाणे, हसावेमाणे
हसावे—हसावेन्ते, हसाविन्ते, हसावेमाणे

स्त्रीलिंगे

एकवचन	बहुवचन
हास—हासन्ती, हासेन्ती	हासन्तीओ, हासेन्तीओ, हासिन्तीओ
हासिन्ती, हासमाणी	हासमाणीओ, हासेमाणीओ
हासेमाणी	
हासे—हासेन्ती, हासेमाणी	हासेन्तीओ, हासेमाणीओ
हसाव—हसावन्ती, हसावेन्ती	हसावन्तीओ, हसावेन्तीओ, हसाविन्तीओ
हसाविन्ती, हसावमाणी	हसावमाणीओ, हसावेमाणीओ
हसावेमाणी	
हसावे—हसावेन्ती, हसाविन्ती	हसावेन्तीओ, हसाविन्तीओ
हसावेमाणी	हसावेमाणीओ

नपुंसकलिंगे

एकवचन	बहुवचन
हास—हासन्तं, हासेन्तं, हासिन्त	हासन्ताइं, हासेन्ताइ, हासिन्ताइ
हासमार्णं, हासेमाणं	हासमाणाइं, हासेमाणाइं
हासे—हासेन्तं, हासिन्तं, हासेमाणं	हासेन्ताइं, हासिन्ताइं, हासेमाणाइ
हसाव—हसावन्तं, हसावेन्तं	हसावन्ताइं, हसावेन्ताइं, हसाविन्ताइं
हसाविन्त, हसावमाणं	हसावमाणाइं, हसावेमाणाइ
हसावेमाणं	

हसावे—हसावेन्तं, हसाविन्तं हसावेन्ताइं, हसाविन्ताइं, हसावेमाणाइं
हसावेमाण
इमानिरूपाणि जातिमनुसृत्य त्रिपु लिङ्गेषु प्रयुज्यन्ते ।

होअ-होए-होआव-होआवे (भू-भावय) अंगस्य प्रेरके वर्तमानकालस्य रूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	होअ—होअइ, होअए, होएइ	होअन्ति, होअन्ते, होइरे, होएन्ति होएन्ते, होएइरे, होइन्ति, होइन्ते होअइरे
	होए—होएइ	होएन्ति, होएन्ते, होएइरे
	होआव—होआवइ, होआवेइ होआवए	होआवन्ति, होआवन्ते, होआविरे होआवेन्ति होआवेन्ते, होआवेइरे होआविन्ति, होआविन्ते, होआवइरे
	होआवे—होआवेइ	होआवेन्ति, होआवेन्ते, होआवेइरे होआविन्ति, होआविन्ते
म०पु०	होअ—होअसि, होअसे, होएसि	होइत्था, होएइत्था, होअह, होएह होअइत्था
	होए—होएसि	होएइत्था, होएह
	होआव—होआवसि, होआवेसि होआवसे	होआवेइत्था, होआवेह, होआवह, होआवित्था, होआवइत्था
	होआवे—होआवेसि	होआवेइत्था, होआवेह
उ०पु०	होअ—होअमि, होआमि होएमि	होअमो, होअमु, होअम, होआमो होआमु, होआम, होइमो, होइमु होइम, होएमो, होएमु होएम
	होए—होएमि	होएमो, होएमु, होएम
	होआव—होआवमि, होआवामि होआवेमि	होआवमो, होआवमु, होआवम होआवामो, होआवामु, होआवाम होआविमो, होआविमु, होआविम होआवेमो, होआवेमु, होआवेम
	होआवे—होआवेमि	होआवेमो, होआवेमु, होआवेम

(सर्वपुरुष—सर्ववचन)

ज्ज-ज्जा प्रत्यये रूपाणि

होअ—होएज्ज, होएज्जा, होइज्ज, होइज्जा

होए—होएज्ज, होएज्जा, होइज्ज, होइज्जा
होआव—होआवेज्ज, होआवेज्जा, होआविज्ज, होआविज्जा
होआवे—होआवेज्ज, होआवेज्जा, होआविज्ज, होआविज्जा।

प्रेरके विधि-आज्ञार्थयो रूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु० होअ—	होअउ, होएउ	होअन्तु, होएन्तु, होइन्तु
होए—	होएउ	होएन्तु, होइन्तु
होआव—	होआवउ, होआवेउ	होआवन्तु, होआवेन्तु, होआविन्तु
होआवे—	होआवेउ	होआवेन्तु, होआविन्तु
म०पु० होअ—	होअहि, होएहि, होअसु होएसु, होइज्जसु होएज्जसु, होइज्जहि होएज्जहि, होइज्जे होएज्जे, होअ (होइज्जसि होएज्जसि, होइज्जासि होएज्जासि, होइज्जाहि होएज्जाहि, होआहि)	होअह, होएह (होइज्जाह, होएज्जाह)
होए—	होएहि, होएसु (होएइज्जसि, होएइज्जासि होएइज्जाहि)	होएह (होएज्जाह)
होआव—	होआवहि, होआवेहि होआवसु, होआवेसु होआविज्जसु, होआवेज्जसु होआविज्जहि, होआवेज्जहि होआविज्जे, होआवेज्जे होआव (होआविज्जसि होआवेज्जसि, होआविज्जासि होआवेज्जासि, होआविज्जहि होआवेज्जाहि, होआवाहि)	होआवह, होआवेह (होआविज्जाह होआवेज्जाह)
होआवे—	होआवेहि, होआवेसु (होआवेइज्जसि होआवेइज्जासि)	होआवेह (होआवेज्जाह)
उ०पु० होअ—	होअमु, होआमु, होइमु होएमु	होअमो, होआमो, होइमो, होएमो

होए—होएमु	होएमो
होआव—होआवमु, होआवामु	होआवमो, होआवामो, होआविमो
होआविमु, होआवेमु	होआवेमो
होआवे—होआवेमु	होआवेमो

सर्वपुरुषेषु—सर्ववचन

होअ— होएज्ज, होएज्जा, होइज्ज, होइज्जा
होए— होएज्ज, होएज्जा, होइज्ज, होइज्जा
होआव—होआवेज्ज, होआवेज्जा, होआविज्ज, होआविज्जा
होआवे—होआवेज्ज, होआवेज्जा, होआविज्ज, होआविज्जा

प्रेरके भूतकालस्य रूपाणि

सर्वपुरुषे—सर्ववचन

होअ— होअसी, होअही, होअहीअ
होए— होएसी, होएही, होएहीअ
होआव—होआवसी होआवही होआवहीअ
होआवे—होआवेसी होआवेही होआवेहीअ

आर्षरूपाणि

होअ— होइत्था,	होइंसु
होए— होएइत्था,	होएइंसु
होआव—होआवित्था,	होआविंसु
होआवे—होआवेत्था	होआवेंसु

प्रेरके भविष्यत्काल रूपाणि

एकवचन	बहुवचन
प्र०पु० होअ—होइहिइ, होइहिए, होएहिइ होएहिए, (होइस्सइ होइस्सए, होएस्सइ, होएस्सए	होइहिन्ति, होइहिन्ते, होइहिरे, होएहिन्ति, होएहिन्ते, होएहिरे, होइस्सन्ति, होइस्सन्ते
होए—होएहिइ, होएहिए (होएस्सइ, होएस्सए)	होएहिन्ति, होएहिन्ते, होएहिरे (होएस्सन्ति होएस्सन्ते)
होआव—होआविहिइ, होआविहिए	होआविहिन्ति, होआविहिन्ते, होआविहिरे
होआवेहिइ, होआवेहिए (होआविस्सइ, होआविस्सए होआवेस्सइ, होआवेस्सए)	होआवेहिन्ति, होआवेहिन्ते, होआवेहिरे (होआविस्सन्ति, होआविस्सन्ते होआवेस्सन्ति, होआवेस्सन्ते)
होआवे—होआवेहिइ होआवेहिए	होआवेहिन्ति, होआवेहिन्ते, होआवेहिरे

	एकवचन	बहुवचन
	(होआवेस्सइ, होआवेस्सए)	(होआविस्सन्ति, होआविस्सन्ते, होआवेस्सन्ति, होआवेस्सन्ते)
म०पु० होअ—	होइहिसि, होइहिसे होएहिसि, होएहिसे (होइस्ससि, होइस्ससे होएस्ससि, होएस्ससे)	होइहित्था, होइहिह, होएहित्था होएहिह (होइस्सह, होएस्सह)
होए—	होएहिसि, होएहिसे (होएस्ससि, होएस्ससे)	होएहित्था, होएहिह (होएस्सह)
होआव—	होआविहिसि, होआविहिसे होआवेहिसि, होआवेहिसे (होआविस्ससि, होआविस्ससे होआवेस्ससि, होआवेस्ससे)	होआविहित्था, होआविहिह होआवेइत्था, होआवेहिह (होआविस्सह, होआवेस्सह)
होआवे—	होआवेहिसि (होआवेस्ससि) होआवेहिसे (होआवेस्ससे)	होआवेहिह (होआवेस्सह)
उ०पु० होअ—	होइस्सं, होएस्सं, होइस्सामि होएस्सामि, होइहामि होएहामि, होइहिमि होएहिमि	होइस्सामो, होइस्सामु, होइस्साम होएस्सामो, होएस्सामु, होएस्साम होइहामो, होइहामु, होइहाम होएहामो, होएहामु, होएहाम होइहिमो, होइहिमु, होइहिम होएहिमो, होएहिमु, होएहिम होइहिस्सा, होइहित्था, होएहिस्सा होएहित्था
होए—	होएस्सं, होएस्सामि होएहामि, होएहिमि	होएस्सामो, होएस्सामु, होएस्साम होएहामो, होएहामु, होएहाम होएहिमो, होएहिमु. होएहिम होएहिस्सा, होएहित्था
होआव—	होआविस्सं, होआवेस्सं होआविस्सामि होआवेस्सामि होआविहामि होआवेहामि, होआविहिमि होआवेहिमि	होआविस्सामो, होआविस्सामु होआविस्साम, होआवेस्सामो होआवेस्सामु, होआवेस्साम, होआविहामो, होआविहामु, होआविहाम, होआवेहामो होआविहामु, होआविहाम होआवेहिस्सा, होआवेहित्था होआविहिमो, होआविहिमु होआविहिम, होआवेहिमो

होआवेहिमु, होआवेहिम
होआविहित्था

होआवे—होआवेस्स, होआवेस्सामि होआवेस्सामो, होआवेस्सामु
होआवेहामि, होआवेहिमि होआवेस्साम, होआवेहामो
होआवेहामु, होआवेहाम
होआवेहिमो, होआवेहिमु
होआवेहिम, होआवेहिस्सा
होआवेहित्था

सर्वपुरुषेषु—सर्ववचन

होअ—होएज्ज, होएज्जा, होइज्ज, होइज्जा
होए—होएज्ज, होएज्जा, होइज्ज, होइज्जा
होआव—होआवेज्ज, होआवेज्जा, होआविज्ज, होआविज्जा
होआवे—होआवेज्ज, होआवेज्जा, होआविज्ज, होआविज्जा

प्रेरके क्रियातिपत्त्यर्थरूपाणि

सर्वपुरुषेषु—सर्ववचन

होअ—होएज्ज, होएज्जा, होइज्ज, होएज्जा
होए—होएज्ज, होएज्जा, होइज्ज, होइज्जा
होआव—होआवेज्ज, होआवेज्जा, होआविज्ज, होआविज्जा
होआवे—होआवेज्ज, होआवेज्जा, होआविज्ज, होआविज्जा

पुंलिंग

एकवचन	बहुवचन
होअ—होअन्तो, होएन्तो होइन्तो, होअमाणो होएमाणो	होअन्ता, होएन्ता, होइन्ता होअमाणा, होएमाणा
होए—होएन्तो, होइन्तो, होएमाणो	होएन्ता, होइन्ता, होएमाणा
होआव—होआवन्तो, होआवेन्तो होआविन्तो, होआवमाणो होआवेमाणो	होआवन्ता, होआवेन्ता, होआविन्ता होआवमाणा, होआवेमाणा
होआवे—होआवेन्तो, होआविन्तो होआवेमाणो	होआवेन्ता, होआविन्ता होआवेमाणा

आर्ष—होअन्ते, होएन्ते होआवन्ते, होआवेन्ते (इत्यादीनि रूपाणि पूर्ववत्)

स्त्रीलिंग

एकवचन	बहुवचन
होअ—होअन्ती, होएन्ती, होइन्ती	होअन्तीओ, होएन्तीओ, होइन्तीओ

होअमाणी, होएमाणी	होअमाणीओ, होएमाणीओ
होए—होएन्ती, होइन्ती	होएन्तीओ, होइन्तीओ
होएमाणी	होएमाणीओ
होआव—होआवन्ती, होआवेन्ती	होआवन्तीओ, होआवेन्तीओ
होआविन्ती, होआवमाणी	होआविन्तीओ, होआवमाणीओ
होआवेमाणी	होआवेमाणीओ
होआवे—होआवेन्ती, होआविन्ती	होआवेन्तीओ, होआविन्तीओ
होआवेमाणी	होआवेमाणीओ

नपुंसकलिंग

एकवचन	बहुवचन
होअ—होअन्त, होएन्त, होइन्त	होअन्ताइं, होएन्ताइं, होइन्ताइ
होअमाण, होएमाण	होअमाणाइं, होएमाणाइं
होए—होएन्तं, होइन्त, होएमाणं	होएन्ताइं, होइन्ताइ, होएमाणाइ
होआव—होआवन्तं, होआवेन्तं	होआवन्ताइं, होआवेन्ताइं
होआविन्तं, होआवमाणं	होआविन्ताइं, होआवमाणाइं
होआवेमाणं	होआवेमाणाइं
होआवे—होआवेन्तं, होआविन्त	होआवेन्ताइं, होआविन्ताइ
होआवेमाणं	होआवेमाणाइं

प्रेरकस्य भावे कर्मणि रूपाणि

हसावीअ-हसाविज्ज-हासीअ-हासिज्ज (हस्—हास्य) अंगस्य भावे कर्मणि च वर्तमानकालस्य रूपाणि

एकवचन	बहुवचन
प्र०पु० हसावीअ—हसावीअइ, हसावीअए हसावीएइ	हसावीअन्ति, हसावीअन्ते, हसावीएन्ति, हसावीएन्ते, हसावीएइरे, हसावीइन्ति, हसावीइन्ते, हसावीइरे हसावीअइरे
हसाविज्ज—हसाविज्जइ, हसाविज्जए हसाविज्जेइ	हसाविज्जन्ति, हसाविज्जन्ते हसाविज्जिरे, हसाविज्जेन्ति हसाविज्जेन्ते, हसाविज्जेइरे हसाविज्जिन्ति, हसाविज्जिन्ते हसाविज्जइरे
हासीअ— हासीअइ, हासीअए	हासीअन्ति, हासीअन्ते, हासीइरे

हासीएइ — हासीएन्ति, हासीएन्ते, हासीएइरे
हासीइन्ति, हासीइन्ते, हासीअइरे

हासिज्ज— हासिज्जइ, हासिज्जए — हासिज्जन्ति, हासिज्जन्ते
हासिज्जेइ — हासिज्जिरे, हासिज्जेन्ति
हासिज्जेन्ते, हासिज्जेइरे
हासिज्जिन्ति, हासिज्जिन्ते,
हासिज्जइरे

म०पु० हसावीअ—हसावीअसि, हसावीअसे — हसावीइत्था, हसावीएइत्था
हसावीएसि — हसावीअह, हमावीएह

हसाविज्ज—हसाविज्जसि, हसाविज्जसे — हसाविज्जित्था, हसाविज्जेइत्था
हसाविज्जेसि — हसाविज्जह, हसाविज्जेह

हासीअ— हासीअसि, हासीअसे — हासीइत्था, हासीएइत्था
हासीएसि — हासीअह, हासीएह

हासिज्ज— हासिज्जसि, हासिज्जसे — हासिज्जित्था, हासिज्जेइत्था
हासिज्जेसि — हासिज्जह, हासिज्जेह

उ०पु० हसावीअ—हसावीअमि — हसावीअमो, हसावीअमु, हसावीअम
हसावीआमि, हसावीएमि — हसावीआमो, हसावीआमु,
हसावीअम, हसावीइमो, हसावीइमु,
हसावीइम, हसावीएमो, हसावीएमु,
हसावीएम

हसाविज्ज—हसाविज्जमि — हसाविज्जमो, हसाविज्जमु
हसाविज्जामि, हसाविज्जेमि — हसाविज्जम, हसाविज्जामो
हसाविज्जामु, हसाविज्जाम
हसाविज्जिमो, हसाविज्जिमु
हसाविज्जिम, हसाविज्जेमो,
हसाविज्जेमु, हसाविज्जेम

हासीअ— हासीअमि, हसीआमि — हासीअमो, हासीअमु, हासीअम
हासीएमि — हासीआमो, हासीआमु हासीआम
हासिइमो, हासीइमु, हासीइम
हासीएमो, हासीएमु, हासीएम

हासिज्ज— हासिज्जमि, हासिज्जामि — हासिज्जमो, हासिज्जमु, हासिज्जम
हासिज्जेमि — हासिज्जामो, हासिज्जामु,
हासिज्जाम, हासिज्जिमो,
हासिज्जिमु, हासिज्जिम
हासिज्जेमो, हासिज्जेमु, हासिज्जेम

हासीएज्जहि, हासीइज्जे
हासीएज्जे, हासीअ
(हासीइज्जसि, हासीएज्जसि
हासीइज्जासि, हासीएज्जासि
हासीइज्जाहि, हासीएज्जाहि
हासीआहि)

हासिज्ज— हासिज्जहि, हासिज्जेहि | हासिज्जह, हासिज्जेह
हासिज्जसु, हासिज्जेसु | (हासिज्जिज्जाह
हासिज्जिज्जसु, हासिज्जेज्जसु | हासिज्जेज्जाह)
हासिज्जिज्जहि, हासिज्जेज्जहि
हासिज्जिज्जे, हासिज्जेज्जे
हासिज्ज (हासिज्जिज्जसि
हासिज्जेज्जसि, हासिज्जिज्जासि
हासिज्जेज्जासि, हासिज्जाहि)

उ०पु० हसावीअ—हसावीअमु, हसावीआमु | हसावीअमो, हसावीआमो
हसावीइमु, हसावीएमु | हसावीइमो, हसावीएमो
हसाविज्ज—हसाविज्जमु, हसाविज्जामु | हसाविज्जमो, हसाविज्जामो
हसाविज्जिमु, हसाविज्जेमु | हसाविज्जिमो, हसाविज्जेमो
हासीअ— हासीअमु, हासीआमु | हासीअमो, हासीआमो
हासीइमु, हासीएमु | हासीइमो, हासीएमो
हासिज्ज— हासिज्जमु, हासिज्जामु | हासिज्जमो, हासिज्जामो
हासिज्जिमु, हासिज्जेमु | हासिज्जिमो, हासिज्जेमो

ज्ज-ज्जा प्रत्यये रूपाणि

सर्वपुरुष, सर्ववचन

हसावीएज्ज, हसावीएज्जा
हसाविज्जेज्ज, हसाविज्जेज्जा
हासीएज्ज, हासीएज्जा
हासिज्जेज्ज, हासिज्जेज्जा

(प्रेरके) भावे कर्मणि च भूतकालस्य रूपाणि

सर्वपुरुष, सर्ववचन

हसावीअ— हसावीअईअ
हसाविज्ज—हसाविज्जईअ
हासीअ— हासीअईअ
हासिज्ज— हासिज्जईअ

आर्षरूपाणि

हसावीअ— हसावीइत्था, हसावीइंसु
हसाविज्ज—हसाविज्जित्था, हसाविंज्जिसु
हासीअ— हासीइत्था, हासीइंसु
हासिज्ज— हासिज्जित्था हासिंज्जिसु

हसावि-हास (हस्—हास्य) प्रेरकाङ्गस्य भावे कर्मणि च भविष्यत्कालरूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु० हसावि—	हसाविहिइ, हसाविहिए	हसाविहिन्ति, हसाविहिन्ते हसाविहिरे
	(हसाविस्सइ, हसाविस्सए)	(हसाविस्सन्ति-हसाविस्संते)
हास—	हासिहिइ, हासिहिए	हासिहिन्ति, हासिहिन्ते, हासिहिरे
	हासेहिइ, हासेहिए	हासेहिन्ति, हासेहिन्ते, हासेहिरे
	(हासिस्सइ, हासिस्सए)	(हासिस्सन्ति, हासिस्संते)
	हासेस्सइ, हासेस्सए	हासेस्सन्ति, हासेस्सन्ते)
म०पु० हसावि—	हसाविहिसि, हसाविहिसे	हसाविहित्था, हसाविहिह
	(हसाविस्ससि हसाविस्ससे)	(हसाविस्सह)
हास—	हासिहिसि, हासिहिसे	हासिहित्था, हासिहिह
	हासेहिसि, हासेहिसे	हासेहित्था, हासेहिह
	(हासिस्ससि, हासिस्ससे,	हासिस्सह
	हासेस्ससि, हासेस्सस)	(हासेस्सह)
उ०पु० हसावि—	हसाविस्सं, हसाविस्सामि	हसाविस्सामो-मु-म
	हसाविहामि, हसाविहिमि	हसाविहामो-मु-म
		हसाविहिमो-मु-म
		हसाविहिस्सा, हसाविहित्था
हास—	हासिस्सं, हासेस्सं	हासिस्सामो-मु-म, हासेस्सामो-मु-म
	हासिस्सामि, हासेस्सामि	हासिहामो-मु-म, हासेहामो-मु-म
	हासिहामि, हासेहामि	हासिहिमो-मु-म, हासेहिमो-मु-म
	हासिहिमि, हासेहिमि	हासिहिस्सा, हासिहित्था
		हासेहिस्सा, हासेहित्था

ज्ज-ज्जा प्रत्यये रूपाणि

सर्वपुरुषे—सर्ववचने

हसावि—हसाविज्ज, हसाविज्जा
हास— हासेज्ज, हासेज्जा

हसावि-हास (हस्—हास्य) प्रेरकाङ्गस्य भावे कर्मणि च क्रियातिपत्त्यर्थं रूपाणि

पुंलिंग

एकवचन	बहुवचन
हसावि—हसाविन्तो, हसाविमाणो	हसाविन्ता, हसाविमाणा
हास— हासन्तो, हासेन्तो हासिन्तो	हासन्ता, हासेन्ता, हासिन्ता

स्त्रीलिंग

एकवचन	बहुवचन
हसावि— हसाविन्ती, हसाविमाणी	हसाविन्तीओ, हसाविमाणीओ
हास— हासन्ती, हासेन्ती, हासिन्ती हासमाणी, हासेमाणी	हासन्तीओ, हासेन्तीओ हासिन्तीओ, हासमाणीओ हासेमाणीओ

नपुंसकलिंग

एकवचन	बहुवचन
हसावि—हसाविन्त, हसाविमाणं	हसाविन्ताइं, हसाविमाणाइं
हास—हासन्त, हासेन्त, हासिन्तं हासमाण, हासेमाण	हासन्ताइं, हासेन्ताइं, हासिन्ताइं हासमाणाइं, हासेमाणाइं

ज्ज-ज्जा प्रत्यये रूपाणि

सर्वपुरुषेषु—सर्ववचन

हसावि—हसाविज्ज, हसाविज्जा

हास— हासेज्ज, हासेज्जा

होआवीअ-होआविज्ज-होईअ-होइज्ज (भू-भाव्य) अगस्य भावे कर्मणि च वर्तमानकाल रूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु० होआवीअ—	होआवीअइ	होआवीअन्ति-न्ते, होआवीइरे
	होआवीएइ	होआवीएन्ति-न्ते, होआवीएइरे
	होआवीअए	होआवीइन्ति-न्ते, होआवीअइरे
होआविज्ज—	होआविज्जइ	होआविज्जन्ति-न्ते, होआविज्जिरे
	होआविज्जेइ	होआविज्जेन्ति-न्ते, होआविज्जेइरे
	होआविज्जए	होआविज्जिन्ति-न्ते, होआविज्जइरे
होईअ—	होईअइ, होईएइ	होईअन्ति-न्ते, होईइरे
	होईअए	होइएन्ति-न्ते, होईएइरे
		होईइन्ति-न्ते, होईअइरे

होइज्ज— होइज्जइ, होइज्जेइ होइज्जन्ति-न्ते, होइज्जिरे
होइज्जए होइज्जेन्ति-न्ते, होइज्जेइरे
होइज्जिन्ति-न्ते, होइज्जइरे

म०पु० होआवीअ—होआवीअसि होआवीइत्था, होआवीअह
होआवीएसि, होआवीअसे होआवीएइत्था, होआवीएह

होआविज्ज—होआविज्जसि होआविज्जित्था, होआविज्जह
होआविज्जेसि होआविज्जेइत्था, होआविज्जेह
होआविज्जसे

होईअ— होईअसि, होईएसि होईइत्था, होईअह, होईएइत्था
होईअसे होईएह

होइज्ज— होइज्जसि, होइज्जेसि होइज्जित्था, होइज्जह, होइज्जेइत्था
होइज्जसे होइज्जेह

उ०पु० होआवीअ—होआवीअमि होआवीअमो-मु-म, होआवीआमो-मु-म
होआवीआमि होआवीइमो-मु-म, होआवीएमो-मु-म
होआवीएमि

होआविज्ज—होआविज्जमि होआविज्जमो-मु-म
होआविज्जामि होआविज्जामो-मु-म
होआविज्जेमि होआविज्जिमो-मु-म
होआविज्जेमो-मु-म

होईअ— होईअमि, होईआमि होईअमो-मु-म, होईआमो-मु-म
होईएमि होईइमो-मु-म, होईएमो-मु-म

होइज्ज— होइज्जमि, होइज्जामि होइज्जमो-मु-म, होइज्जामो-मु-म
होइज्जेमि होइज्जिमो-मु-म, होइज्जेमो-मु-म

ज्ज-ज्जा प्रत्यये रूपाणि

सर्वपुरुषेषु—सर्ववचन

होआवीअ—होआवीएज्ज, होआवीएज्जा
होआविज्ज—होआविज्जेज्ज, होआविज्जेज्जा
होईअ— होईएज्ज, होईएज्जा
होइज्ज— होइज्जेज्ज, होइज्जेज्जा

(प्रेरके) भावे कर्म च विधिआज्ञार्थयो रूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु० होआवीअ—	होआवीअउ	होआवीन्तु, होआवीएन्तु
	होआवीएउ	होआवीइन्तु
होआविज्ज—	होआविज्जउ	होआविज्जन्तु, होआविज्जेन्तु
	होआविज्जेउ	होआविज्जिन्तु

होईअ—	होईअउ, होईएउ	होईअन्तु, होईएन्तु, होईइन्तु
होइज्ज—	होइज्जउ, होइज्जेउ	होइज्जन्तु, होइज्जेन्तु, होइज्जिन्तु
म०पु० होआवीअ—	होआवीअहि	होआवीअह, होआवीएह
	होआवीएहि, होआवीअसु	(होआवीइज्जाह, होआवीएज्जाह)
	होआवीएसु, होआवीइज्जसु	
	होआवीएज्जसु, होआवीइज्जहि	
	होआवीएज्जहि, होआवीइज्जे	
	होआवीएज्जे, होआवीअ	
	(होआवीइज्जसि, होआवीएज्जसि	
	होआवीइज्जासि, होआवीएज्जासि	
	होआवीइज्जाहि, होआवीएज्जाहि	
	होआवीआहि)	
होआविज्ज—	होआविज्जहि, होआविज्जेहि	होआविज्जह, होआविज्जेह
	होआविज्जसु, होआविज्जेसु	(होआविज्जिज्जाह
	होआविज्जिज्जसु, होआविज्जेज्जसु	होआविज्जेज्जाह)
	होआविज्जिज्जहि, होआविज्जेज्जहि	
	होआविज्जिज्जे, होआविज्जेज्जे	
	होआविज्ज (होआविज्जिज्जसि	
	होआविज्जेज्जसि, होआविज्जिज्जासि	
	होआविज्जेज्जासि, होआविज्जिज्जाहि	
	होआविज्जेज्जाहि, होआविज्जाहि)	
होईअ—	होईअहि, होईएहि, होईअसु	होइअह, होईएह
	होईएसु, होईइज्जसु, होईएज्जसु	(होईइज्जाह, होईएज्जाह)
	होईइज्जहि, होईएज्जहि	
	होईइज्जे, होईएज्जे, होईअ	
	(होईइज्जसि, होइएज्जसि	
	होईइज्जासि, होइएज्जासि	
	होईज्जाहि, होईएज्जाहि	
	होईआहि)	
होइज्ज—	होइज्जहि, होइज्जेहि, होइज्जसु	होइज्जह, होइज्जेह
	होइज्जेसु, होइज्जिज्जसु	(होइज्जिज्जाह
	होइज्जेज्जसु, होइज्जिज्जहि	होइज्जेज्जाह)
	होइज्जेज्जहि, होइज्जिज्जे	
	होइज्जेज्जे, होइज्ज	
	(होइज्जिज्जसि,ज्जसेजेजो ज्जहिइ	

होइज्जिजासि, होइज्जेज्जासि
होइज्जिज्जाहि, होइज्जेज्जाहि
होइज्जाहि)

उ०पु० होआवीअ—होआवीअमु, होआवीआमु | होआवीअमो, होआवीआमो
होआवीइमु, होआवीएमु | होआवीइमो, होआवीएमो
होआविज्ज—होआविज्जमु, होआविज्जामु | होआविज्जमो, होआविज्जामो
होआविज्जिमु, होआविज्जेमु | होआविज्जिमो, होआविज्जेमो
होईअ— होईअमु, होईआमु, होईइमु | होईअमो, होईआमो, होईइमो
होईएमु | होईएमो
होइज्ज — होइज्जमु, होइज्जामु | होइज्जमो, होइज्जामो
होइज्जिमु, होइज्जेमु | होइज्जिमो, होइज्जेमो

ज्ज-ज्जा प्रत्यये रूपाणि

सर्वपुरुषेषु—सर्ववचन

होआवीअ—होआवीएज्ज, होआवीएज्जा
होआविज्ज—होआविज्जेज्ज, होआविज्जेज्जा
होईअ— होईएज्ज, होईएज्जा
होइज्ज— होइज्जेज्ज, होइज्जेज्जा

(प्रेरके) भावे कर्मणि च भूतकालस्य रूपाणि

सर्वपुरुषेषु—सर्ववचन

होआवीअ—होआवीअसी, होआवीअही, होआवीअहीअ
होआविज्ज—होआविज्जसी, होआवीअही, होआवीअहीअ
होईअ— होईअसी, होईअही, होईअहीअ
होइज्ज — होइज्जसी, होइज्जही, होइज्जहीअ

आर्षरूपाणि

सर्वपुरुषेषु—सर्ववचन

होआवीअ—होआवीइत्था, होआवीइंसु
होआविज्ज—होआविज्जित्था होआविज्जिंसु
होईअ—होईइत्था, होईइंसु
होइज्ज—होइज्जित्था, होइज्जिंसु

प्रेरके होआवि-हो (भू—भाव्य) अंगस्यभावेकर्मणि च भविष्यत्काल रूपाणि

एकवचन	बहुवचन
प्र०पु० होआवि—होआविहिइ	होआविहिन्ति, होआविहिन्ते
होआविहिए	होआविहिरे

	(होआविस्सइ होआविस्सए)	(होआविस्सन्ति-न्ते)
हो—	होहिइ, होहिए (होस्सइ, होस्सए)	होहिन्ति, होहिन्ते, होहिरे (होस्सन्ति, होस्सन्ते)
म०पु० होआवि—	होआविहिसि होआविहिसे (होआविस्ससि होआविस्ससे)	होआविहित्था, होआविहिह (होआविस्सह)
हो—	होहिसि, होहिसे (होस्ससि, होस्ससे)	होहित्था, होहिह (होस्सह)
उ०पु० होआवि—	होआविस्सं होआविस्सामि होआविहामि, होआविहिमि	होआविस्सामो-मु-म होआविहामो-मु-म होआविहिमो-मु-म, होआविहिस्सा होआविहित्था
हो—	होस्सं, होस्सामि होहामि, होहिमि	होस्सामो-मु-म, होहामो-मु-म होहिमो-मु-म, होहिस्सा, होहित्था

ज्ज-ज्जा प्रत्यये रूपाणि

सर्वपुरुषेषु—सर्ववचन

होआवि—होआविज्ज, होआविज्जाज्जा

हो— होज्ज, होज्जा

(प्रेरके) भावे कर्मणि च क्रियातिपत्त्यर्थरूपाणि

सर्वपुरुषेषु—सर्ववचन

होआवि—होआविज्ज, होआविज्जा

हो— होज्ज-होज्जा

पुंलिंग

	एकवचन	बहुवचन
होआवि—	होआविन्तो, होआविमाणो	होआविन्ता, होआविमाणा
हो—	होन्तो, हुन्तो, होमाणो	होन्ता, हुन्ता, होमाणा

स्त्रीलिंग

होआवि—	होआविन्ती, होआविमाणी	होआविन्तीओ, होआविमाणीओ
हो—	होन्ती, हुन्ती, होमाणी	होन्तीओ, हुन्तीओ, होमाणीओ

नपुंसकलिंग

होआवि—	होआविन्तं, होआविमाणं	होआविन्ताइं, होआविमाणाइं
हो—	होन्तं, हुन्तं, होमाणं	होन्ताइं, हुन्ताइं, होमाणाइं

परिशिष्ट ३ अपभ्रंश शब्द रूपावलि

० शब्द का अन्त्य स्वर दीर्घ हो तो ह्रस्व और ह्रस्व हो तो दीर्घ हो जाता है। उन रूपो मे कोई विभक्ति नही लगती, जैसा शब्द होता है उसी रूप मे रहता है।

१ अकारान्त पुंलिग जिण (जिन) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	जिण, जिणा, जिणु, जिणो	जिण, जिणा
द्वि०	जिण, जिणा, जिणु	जिण, जिणा
तृ०	जिणेण, जिणेणं, जिणे	जिणहिं, जिणाहिं, जिणेहिं
पं०	जिणहे, जिणाहे, जिणहु, जिणाहु	जिणहुं, जिणाहुं
च०/ष०	जिण, जिणा, जिणसु जिणासु, जिणहो, जिणाहो, जिणस्सु	जिण, जिणा, जिणह, जिणाह
स०	जिणि, जिणे	जिणहि, जिणाहिं
सं०	जिण, जिणा, जिणु, जिणो	जिण, जिणा, जिणहो, जिणाहो

२ इकारान्त पुंलिग मुणि (मुनि) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	मुणि, मुणी	मुणि, मुणी
द्वि०	मुणि, मुणी	मुणि, मुणी
तृ०	मुणिएं, मुणीए, मुणिं, मुणी मुणिण, मुणीण, मुणिणं, मुणीणं	मुणिहिं, मुणीहि
पं०	मुणिहे, मुणीहे	मुणिहुं, मुणीहु
च०/ष०	मुणि, मुणी	मुणि, मुणी, मुणिहं, मुणीह मुणिहु, मुणीहुं
स०	मुणिहि, मुणीहि	मुणिहिं, मुणीहि, मुणिहु, मुणीहु
सं०	मुणि, मुणी	मुणि, मुणी, मुणिहो, मुणीहो

३ ईकारान्त पुंलिग गामणी (ग्रामणी) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	गामणी, गामणि	गामणी, गामणि
द्वि०	गामणी, गामणि	गामणी, गामणि

तृ० गामणीए, गामणिएं, गामणी गामणिं, गामणीण, गामणिण गामणीण, गामणिणं	गामणीहिं, गामणिहिं
पं० गामणीहे, गामणिहे	गामणीहुं, गामणिहु
च०/ष० गामणी, गामणि	गामणी, गामणि, गामणीहं गामणिहं, गामणीहु, गामणिहु
स० गामणीहि, गामणिहि	गामणीहिं, गामणिहिं, गामणीहु गामणिहु
सं० गामणी, गामणि	गामणी, गामणि, गामणीहो गामणिहो

४ उकारान्त पुंलिंग साहु (साधु) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० साहु, साहू	साहु, साहू
द्वि० साहु, साहू	साहु, साहू
तृ० साहुएं, साहूए, साहुं, साहूं, साहुण साहूण, साहुणं, साहूण	साहुहिं, साहूहिं
पं० साहुहे, साहूहे	साहुहुं, साहूहु
च०/ष० साहु, साहू	साहु, साहू, साहुह, साहूह
स० साहुहि, साहूहि	साहुहिं, साहूहिं, साहुहु, साहूहु
सं० साहु, साहू	साहु, साहू, साहुहो, साहूहो

५ ऊकारान्त पुंलिंग सयंभू (स्वयंभू) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० सयंभू, सयंभु	सयंभू, सयंभु
द्वि० सयंभू, सयंभु	सयंभू, सयंभु
तृ० सयंभूए, सयंभुए, सयंभू, सयंभु सयंभूण, सयंभुण, सयंभूणं, सयंभुणं	सयंभूहिं, सयंभुहिं
पं० सयंभूहे, सयंभुहे	सयंभूहु, सयंभुहु
च०/ष० सयंभू, सयंभु	सयंभू, सयंभु, सयंभूहु, सयंभुहुं सयंभूहं, सयंभुह
स० सयंभूहि, सयंभुहि	सयंभूहिं, सयंभुहिं
सं० सयंभू, सयंभु	सयंभू, सयंभु, सयंभूहो, सयंभुहो

६ आकारान्त स्त्रीलिंग माला (माला) शब्द

प्र० माला, माल	माला, माल, मालाउ, मालउ मालाओ, मालओ

द्वि० माला, माल	माला, माल, मालाउ, मालउ मालाओ, मालओ
तृ० मालाए, मालए	मालाहिं, मालहिं
पं० मालाहे, मालहे	मालाहु, मालहु
च०/ष० माला, माल, मालाहे, मालहे	माला, माल, मालाहु, मालहु
स० मालाहिं, मालहिं	मालाहिं, मालहिं
सं० माला, माल	माला, माल, मालाउ, मालउ मालाओ, मालओ, मालाहो, मालहो

७ इकारान्त स्त्रीलिंग मइ (मति) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० मइ, मई	मइ, मई, मइउ, मईउ, मइओ मईओ
द्वि० मइ, मई	मइ, मई, मइउ, मईउ, मइओ मईओ
तृ० मइए, मईए	मइहिं, मईहिं
पं० मइहे, मईहे	मइहु, मईहु
च०/ष० मइ, मई, मइहे, मईहे	मइ, मई, मइहु, मईहु
स० मइहिं, मईहिं	मइहिं, मईहिं,
स० मइ, मई	मइ, मई, मइउ, मईउ, मइओ मईओ, मइहो, मईहो

८ ईकारान्त स्त्रीलिंग वाणी (वाणी) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० वाणी, वाणि	वाणी, वाणि, वाणीउ, वाणिउ वाणीओ, वाणिओ
द्वि० वाणी, वाणि	वाणी, वाणि, वाणीउ, वाणिउ वाणीओ, वाणीउ
तृ० वाणीए, वाणिए	वाणीहिं, वाणिहिं
पं० वाणीहे, वाणिहे	वाणीहु, वाणिहु
च०/ष० वाणी, वाणि, वाणीहे वाणिहे	वाणी, वाणि, वाणीहु, वाणिहु
स० वाणीहिं, वाणिहिं	वाणीहिं, वाणिहिं
स० वाणी, वाणि	वाणी, वाणि, वाणीउ, वाणिउ वाणीओ, वाणिओ, वाणीहो, वाणिहो

९ उकारान्त स्त्रीलिंग धेणु (धेनु) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	धेणु, धेणू	धेणु, धेणू, धेणुउ, धेणूउ, धेणुओ धेणूओ
द्वि०	धेणु, धेणू	धेणु, धेणू, धेणुउ, धेणूउ, धेणुओ धेणूओ
तृ०	धेणुए, धेणूए	धेणुहिं, धेणूहिं
पं०	धेणुहे, धेणूहे	धेणुहु, धेणूहु
च०/ष०	धेणु, धेणू, धेणुहे, धेणूहे	धेणु, धेणू, धेणुहु, धेणूहु
स०	धेणुहिं, धेणूहिं	धेणुहिं, धेणूहिं
सं०	धेणु, धेणू	धेणु, धेणू, धेणुउ, धेणूउ, धेणुओ धेणूओ, धेणुहो, धेणूहो

१० ऊकारान्त स्त्रीलिंग वधू [बहू] शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	वहु, वहू	वहु, वहू, वहुउ, वहूउ, वहुओ, वहुओ
द्वि०	वहु, वहू	वहु, वहू, वहुउ, वहूउ, वहुओ, वहूओ
तृ०	वहुए, वहूए	वहुहिं, वहूहिं
पं०	वहुहे, वहूए	वहुहु, वहूहु
च०/ष०	वहु, वहू, वहुहे, वहूहे	वहु, वहू, वहुहु, वहूहु
स०	वहुहिं, वहूहिं	वहुहिं, वहूहिं
सं०	वहु, वहू	वहु, वहू, वहुउ, वहूउ, वहुओ, वहूओ वहुहो, वहूहो

११ अकारान्त नपुंसकलिंग कमल (कमल) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	कमल, कमला, कमलु कमलक—कमलउं[1]	कमल, कमला, कमलइं, कमलाइं
द्वि०	कमल, कमला, कमलु कमलक—कमलउं	कमल, कमला, कमलइं, कमलाइं
तृ०	कमलेण, कमलेणं, कमले	कमलहिं, कमलाहिं, कमलेहिं

नोट—१. अकारान्त नपुंसकलिंग शब्द के स्वार्थ में क प्रत्यय होने पर उनका अन्त्य अक्षर अ होता है तब उसके प्रथमा व द्वितीया के एकवचन में उ प्रत्यय में अनुस्वार होता है। जैसे—कमलक शब्द का (नपुंसक) प्रथमा व द्वितीया का एकवचन—कमलउं)।

पं० कमलहे, कमलाहे, कमलहु कमलाहु	कमलहुं, कमलाहुं
च०/प० कमल, कमला, कमलसु कमलासु, कमलहो, कमलाहो कमलस्सु	कमल, कमला, कमलह, कमलाहं
स० कमलि, कमले	कमलहिं, कमलाहिं
सं० कमल, कमला, कमलु कमलक – कमलउं	कमल, कमला, कमलइं, कमलाइं कमलहो, कमलाहो

१२ इकारान्त नपुंसकलिंग वारि (वारि) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० वारि, वारी	वारि, वारी, वारीइं, वीराइं
द्वि० वारि, वारी	वारि, वारी, वारिइं, वारीइं
तृ० वारि, वारी, वारिएं, वारीएं वारिण, वारीण, वारिणं, वारीणं	वारिहिं, वारीहिं
पं० वारिहे, वारीहे	वारिहुं, वारीहुं
च०/प० वारि, वारी	वारि, वारी, वारिहुं, वारीहुं, वारिहं वारीहं
स० वारिहि, वारीहि	वारिहिं, वारीहिं, वारिहुं, वारीहुं
सं० वारि, वारी	वारि, वारी, वारिइं, वारीइं, वारिहो वारीहो

१३ उकारान्त नपुंसकलिंग महु (मधु) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० महु, महू	महु, महू, महुइं, महूइं
द्वि० महु, महू	महु, महू, महुइं, महूइं
तृ० महुं, महूं, महुए, महूएं, महुण महूण, महुणं, महूणं	महुहिं, महूहिं
पं० महुए, महूए	महुहुं, महूहुं
च०/प० महु, महू	महु, महू, महुहुं, महूहुं, महुहं, महूहं
स० महुहि, महूहि	महुहिं, महूहिं, महुहुं, महूहु
सं० महु, महू	महु, महू, महुइं, महूइं, महुहो, महूहो

१४ क पुंलिंग सव्व (सर्व) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० सव्व, सव्वा, सव्वु, सव्वो	सव्व, सव्वा
द्वि० सव्व, सव्वा, सव्वु	सव्व, सव्वा

तृ० सव्वे, सव्वेण, सव्वेणं	सव्वहिं, सव्वाहिं, सव्वेहिं
प० सव्वहा, सव्वाहा	सव्वहुं, सव्वाहु
च०/प० सव्व, सव्वा, सव्वसु सव्वासु, सव्वहो, सव्वाहो सव्वस्सु	सव्व, सव्वा सव्वहं, सव्वाह
स० सर्व्वहिं, सव्वाहिं	सव्वहिं, सव्वाहिं

१४ ख स्त्रीलिंग सव्वा (सर्वा) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० सव्वा, सव्व	सव्वा, सव्व, सव्वाउ, सव्वउ, सव्वाओ सव्वओ
द्वि० सव्वा, सव्व	सव्वा, सव्व, सव्वाउ, सव्वउ, सव्वाओ सव्वओ
तृ० सव्वाए, सव्वए	सव्वाहिं, सव्वहिं
प० सव्वाहे, सव्वहे	सव्वाहु, सव्वहु
च०/प० सव्वा, सव्व, सव्वाहे सव्वहे	सव्वा, सव्व, सव्वाहु, सव्वहु
स० सव्वाहिं, सव्वहिं	सव्वाहिं, सव्वहिं

१४ ग नपुंसकलिंग सव्व (सर्व) शब्द (सब)

एकवचन	बहुवचन
प्र० सव्व, सव्वा, सव्वु	सव्व, सव्वा, सव्वइं, सव्वाइं
द्वि० सव्व, सव्वा, सव्वु	सव्व, सव्वा, सव्वइ, सव्वाइं
तृ० सव्वे, सव्वेण, सव्वेण	सव्वहिं, सव्वाहिं, सव्वेहिं
पं० सव्वहा, सव्वाहा	सव्वहुं, सव्वाहु
च०/ष० सव्व, सव्वा, सव्वसु सव्वासु, सव्वहो, सव्वाहो सव्वस्सु	सव्व, सव्वा, सव्वहं, सव्वाहं
स० सर्व्वहिं, सव्वाहिं	सव्वहिं, सव्वाहिं

१५ क पुंलिंग त (तत्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० स, सा, सु, सो, त्र, त	त, ता
द्वि० त्रं, त	त, ता
तृ० ते, तेण, तेण	तहिं, ताहिं, तेहिं
पं० तहा, ताहा	तहुं, ताहुं
च०/ष० त, ता, तसु, तासु, तहो ताहो, तस्सु, तासु	त, ता, तह, ताह

स० तहिं, ताहिं	तहिं, ताहिं

१५ ख स्त्रीलिंग ता (तत्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० त्रं, तं, सा, स	ता, त,ताउ, तउ, ताओ, तओ
द्वि० त्रं, तं	ता, त, ताउ, तउ, ताओ, तओ
तृ० ताए, तए	ताहिं, तहिं
पं० ताहे, तहे	ताहु, तहु
च०/ष० ता, त, ताहे, तहे	ता, त, ताहु, तहु
स० ताहिं, तहिं	ताहिं, तहिं

१५ ग नपुंसक त (तत्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० त्रं, तं	त, ता, तइं, ताइं
द्वि० त्र, तं	त, ता, तइं, ताइं
तृ० तें, तेण, तेणं	तहिं, ताहिं, तेहिं
पं० तहा, ताहां	तहुं, ताहुं
च०/ष० त, ता, तसु, तासु, तहो ताहो, तस्सु, तासु	त, ता, तहं, ताहं
स० तहिं, ताहिं	तहिं, ताहिं

१६ क पुंलिंग ज (यत्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० ध्रु, जु, ज, जा, जो	ज, जा
द्वि० ध्रुं, जु, ज, जा	ज, जा
तृ० जे, जेण, जेण	जहिं, जाहिं, जेहिं
पं० जहं, जाहा	जहुं, जाहुं
च०/ष० ज, जा, जसु, जासु जहो, जाहो, जस्सु, जासु	ज, जा, जहं, जाह
स० जहिं, जाहिं	जहिं, जाहिं

१६ ख स्त्रीलिंग जा (यत्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० ध्रुं, जु	जा, ज, जाउ, जउ, जाओ, जओ
द्वि० ध्रुं, जु	जा, ज, जाउ, जउ, जाओ, जओ
तृ० जाए, जए	जाहिं, जहिं
पं० जाहे, जहे	जाहु, जहु
च०/ष० जा, ज, जाहे, जहे	जा, ज, जाहु, जहु
स० जाहिं, जहिं	जाहिं, जहिं

१६ ग नपुंसकलिंग ज (यत्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० ध्रु, जु	ज, जा, जइ, जाइ
द्वि० ध्रु, जु	ज, जा, जइ, जाइं
तृ० जे, जेण, जेण	जहिं, जाहिं
प० जहा, जाहा	जहु, जाहु
च०/ष० ज, जा, जसु, जासु जहो, जाहो, जस्सु, जासु	ज, जा, जहं, जाह
स० जहिं, जाहिं	जहिं, जाहिं

१७ क पुंलिग क (किम्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० क, का, कु, को	क, का
द्वि० क, का, कु	क, का
तृ० के, केण, केण	कहिं, काहिं, केहिं
प० कहा, काहां, किहे	कहु, काहु
च०/ष० क, का, कसु, कासु कहो, काहो, कस्सु, कासु	क, का, कहं, काहं
स० कहिं, काहिं	कहिं, काहिं

१८ ख स्त्रीलिंग का (किम्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० का, क	का, क, काउ, कउ, काओ, कओ
द्वि० का, क	का, क, काउ, कउ, काओ, कओ
तृ० काए, कए	काहिं, कहिं
प० काहे, कहे	काहु, कहु
च०/ष० का, क, काहे, कहे, कहे	का, क, काहु, कहु
स० काहिं, कहिं	काहिं, कहिं

१७ ग नपुंसकलिंग क (किम्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० क, का, कु	क, का, कइ, काइं
द्वि० क, का, कु	क, का, कइ, काइ
तृ० कें, केण, केणं	कहिं, काहिं, केहिं
प० कहां, काहा, किहे	कहुं, काहु
च०/प० क, का, कसु, कासु कहो, काहो, कस्सु, कासु	क, का, कह, काहं
स० कहिं, काहिं	कहिं, काहिं

१८ क

पुंलिंग एत (एतत्) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	एहो	एइ
द्वि०	एहो	एइ
तृ०	एतें, एतेण, एतेण	एतहिं, एताहिं, एतेहिं
पं०	एतहा, एताहा	एतहुं, एताहु
च०/ष०	एत, एता, एतसु, एतासु एतहो, एताहो, एतस्सु	एत, एता, एतह, एताहं
स०	एतहिं, एताहिं	एतहिं, एताहिं

१८ख

स्त्रीलिंग एता (एतत्) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	एह	एइ
द्वि०	एह	एइ
तृ०	एताए, एतए	एताहिं, एतहिं
प०	एताहे, एतहे	एताहु, एतहु
च०/ष०	एता, एत, एताहे, एतहे	एता, एत, एताहु, एतहु
स०	एताहिं, एतहिं	एताहिं, एतहिं

१८ ग

नपुंसकलिंग एत् (एतत्) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	एहु	एइ
द्वि०	एहु	एइ
तृ०	एतें, एतेण, एतेण	एतहिं, एताहिं, एतेहिं
पं०	एतहां, एताहां	एतहुं, एताहुं
च०/ष०	एत, एता, एतसु, एतासु एतहो, एताहो, एतस्सु	एत, एता, एतहं, एताह
स०	एतहिं, एताहिं	एतहिं, एताहिं

१९ क

पुंलिंग इम (इदम्) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	इम, इमा, इमु, इमो	इम, इमा
द्वि०	इम, इमा, इमु	इम, इमा
तृ०	इमे, इमेण, इमेणं	इमहिं, इमाहिं, इमेहिं
पं०	इमहां, इमाहां	इमहुं, इमाहुं
च०/प०	इम, इमा, इमसु, इमासु इमहो, इमाहो, इमस्सु	इम, इमा, इमहं, इमाह
स०	इमहिं, इमाहिं	इमहिं, इमाहिं

१९ ख स्त्रीलिंग इमा (इदम्) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	इमा, इम	इमा, इम, इमाउ, इमउ, इमाओ इमओ
द्वि०	इमा, इम	इमा, इम, इमाउ, इमउ, इमाओ इमओ
तृ०	इमाए, इमए	इमाहिं, इमहिं
पं०	इमाहे, इमहे	इमाहु, इमहु
च०/ष०	इमा, इम, इमाहे, इमहे	इमा, इम, इमाहु, इमहु
स०	इमाहिं, इमहिं	इमाहिं, इमहि

१९ ग नपुंसकलिंग इम (इदम्) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	इमु	इम, इमा, इमइं, इमाइं
द्वि०	इमु	इम, इमा, इमइं, इमाइ
तृ०	इमें, इमेण, इमेण	इमहि, इमाहिं, इमेहिं
पं०	इमहा, इमाहा	इमहुं, इमाहुं
च०/ष०	इम, इमा, इमसु, इमासु इमहो, इमाहो, इमस्सु	इम, इमा, इमह, इमाह
स०	इमहिं, इमाहिं	इमहिं, इमाहिं

२० क पुंलिंग आय (इदम्) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	आय, आया, आयु, आयो	आय, आया
द्वि०	आय, आया, आयु	आय, आया
तृ०	आयें, आयेण, आयेण	आयहि, आयाहिं, आयेहिं
पं०	आयहा, आयाहा	आयहुं, आयाहुं
च०/ष०	आय, आया, आयसु, आयासु आयहो, आयाहो, आयस्सु	आय, आया, आयह, आयाह
स०	आयहिं, आयाहि	आयहिं, आयाहिं

२० ख स्त्रीलिंग आया (इदम्) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	आया, आय	आया, आय, आयाउ, आयउ आयाओ, आयओ
द्वि०	आय, आय	आया, आय, आयाउ, आयउ आयाओ, आयओ
तृ०	आयाए, आयए	आयाहि, आयहि

प० आयाहे, आयहे	आयाहुं, आयहु
च०/ष० आया, आय, आयाहे, आयहे	आया, आय, आयाहु, आयहु
स० आयाहिं, आयहिं	आयाहिं, आयहिं

२० ग नपुंसक आय (इदम्)

एकवचन	बहुवचन
प्र० आय, आया, आयु	आय, आया, आयइं, आयाइं
द्वि० आय, आया, आयु	आय, आया, आयइं, आयाइं
तृ० आयें, आयेण, आयेणं	आयहिं, आयाहिं, आयेहिं
पं० आयहां, आयाहां	आयहुं, आयाहुं
च०/ष० आय, आया, आयसु, आयासु आयहो, आयाहो, आयस्सु	आय, आया, आयह, आयाह
स० आयहिं, आयाहिं	आयहिं, आयाहिं

२१ क पुंलिंग अमु (अदस्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० अमु, अमू	ओइ
द्वि० अमु, अमू	ओइ
तृ० अमुएं, अमूएं, अमुं, अमूं, अमुण अमूण, अमुणं, अमूणं	अमुहिं, अमूहिं
पं० अमुहे, अमूहे	अमुहुं, अमूहुं
च०/प० अमु, अमू	अमु, अमू, अमुहं, अमूहं, अमुहुं अमूहुं
स० अमुहिं, अमूहिं	अमुहिं, अमूहिं, अमुहुं, अमूहुं

२१ ख स्त्रीलिंग अमु (अदस्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० अमु, अमू	ओइ
द्वि० अमु, अमू	ओइ
तृ० अमुए, अमूए	अमुहिं, अमूहिं
पं० अमुहे, अमूहे	अमुहु, अमूहु
च०/ष० अमु, अमू, अमुहे, अमूहे	अमु, अमू, अमुहु, अमूहु
स० अमुहिं, अमूहिं	अमुहिं, अमूहिं

२१-ग नपुंसकलिंग अमु (अदस्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० अमु, अमू	ओइ
द्वि० अमु, अमू	ओइ

तृ० अमुएं, अमूए, अमु, अमू	अमुहिं, अमूहिं
प० अमुहे, अमूहे	अमुहुं, अमूहु
च०/प० अमु, अमू	अमु, अमू, अमुहु, अमूहु, अमुह अमूहं
स० अमुहिं, अमूहि	अमुहिं, अमूहिं, अमुहु, अमूहु

२२ क पुंलिंग कवण (किम्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० कवण, कवणा, कवणु, कवणो	कवण, कवणा
द्वि० कवण, कवणा, कवणु	कवण, कवणा
तृ० कवणे, कवणेण, कवणेण	कवणहिं, कवणाहिं, कवणेहिं
प० कवणहा, कवणाहा	कवणहु, कवणाहु
च०/प० कवण, कवणा, कवणसु कवणासु, कवणहो, कवणाहो कवणस्सु	कवण, कवणा, कवणह, कवणाह
स० कवणहिं, कवणाहिं	कवणहि, कवणाहिं

२२ ख स्त्रीलिंग कवणा (कम्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० कवणा, कवण	कवणा, कवण, कवणाउ, कवणउ कवणाओ, कवणओ
द्वि० कवणा, कवण	कवणा, कवण कवणाउ, कवणउ कवणाओ, कवणओ
तृ० कवणाए, कवणए	कवणाहिं, कवणहिं
प० कवणाहे, कवणहे	कवणाहु, कवणहु
च०/प० कवणा, कवण, कवणाहे कवणहे	कवणा, कवण, कवणाहु, कवणहु
स० कवणाहिं, कवणहिं	कवणाहि, कवणहिं

२२ ग नपुंसकलिंग कवण (किम्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० कवण, कवणा, कवणु	कवण, कवणा, कवणइ, कवणाइ
द्वि० कवण, कवणा	कवण, कवणा, कवणइ, कवणाइं
तृ० कवणे, कवणेण, कवणेण	कवणहिं, कवणाहिं, कवणेहिं
प० कवणहा, कवणाहा	कवणहु, कवणाहु
च०/प० कवण, कवणा, कवणसु कवणासु, कवणहो, कवणाहो कवणस्सु	कवण, कवणा, कवणह, कवणाह

स० कवणहिं, कवणाहिं	कवणहिं, कवणाहिं

२३ (तीनों लिंगों में) अम्ह (अस्मद्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० हउं	अम्हे, अम्हइं
द्वि० मइं	अम्हे, अम्हइं
तृ० मइं	अम्हेहिं
पं० महु, मज्झु	अम्हहं
च०/ष० महु, मज्झु	अम्हहं
स० मइं	अम्हासु

२४ (तीनों लिंगों में) तुम्ह (युष्मद्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० तुहुं	तुम्हे, तुम्हइं
द्वि० पइं, तइं	तुम्हे, तुम्हइं
तृ० पइं, तइं	तुम्हेहिं
पं० तउ, तुज्झ, तुध्र	तुम्हहं
च०/ष० तउ, तुज्झ, तुध्र	तुम्हहं
स० पइं, तइं	तुम्हासु

२५ (तीनों लिंगों में) काइं (किम्) शब्द

सभी वचनो और सभी विभक्तियों मे काइं।

संख्यावाची शब्द

२६-क पुंलिग एग, एअ, एक्क (एक) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० एग, एगा, एगु, एगो एअ, एआ, एउ, एओ एक्क, एक्का, एक्कु, एक्को	एग, एगा, एअ, एआ, एक्क, एक्का
द्वि० एग, एगा, एगु, एअ, एआ, एउ एक्क, एक्का, एक्कु	एग, एगा, एअ, एआ, एक्क, एक्का
तृ० एगें, एगेण, एगेणं, एएं, एएण एएणं, एक्कें, एक्केण, एक्केणं	एगहिं, एगाहिं, एगेहिं, एअहिं एआहिं, एएहिं, एक्कहिं, एक्काहिं एक्केहिं
पं० एगहां, एगाहां, एअहां, एआहां एक्कहां, एक्काहां	एगहुं, एगाहुं, एअहुं, एआहुं, एक्कहुं एक्काहुं
च०/ष० एग, एगा, एगसु, एगासु एगहो, एगाहो, एगस्सु, एअ एआ, एअसु, एआसु, एअहो	एग, एगा, एगहं, एगाहं, एअ, एआ एअहं, एआहं, एक्क, एक्का, एक्कहं एक्काहं

	एकवचन	बहुवचन
	एआहो, एअस्सु, एक्क, एक्का एक्कसु, एक्कासु, एक्कहो एक्काहो, एक्कनु	
स०	एगहिं, एगाहिं, एअहि, एआहिं एक्कहिं, एक्काहिं	एगहिं, एगाहिं, एअहिं, एआहिं, एक्कहिं एक्काहिं

२६ख स्त्रीलिंग एगा, एआ, एक्का (एक) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	एगा, एग, एआ, एअ, एक्का एक्क	एगा, एग, एगाउ, एगउ, एगाओ एगओ, एआ, एअ, एआउ, एअउ एआओ, एअओ, एक्का, एक्क, एक्काउ एक्कउ, एक्काओ, एक्कओ
द्वि०	एगा, एग, एआ, एअ, एक्का एक्क	एगा, एग, एगाउ, एगउ, एगाओ एगओ, एआ, एअ, एआउ, एअउ एआओ, एअओ, एक्का, एक्क, एक्काउ एक्कउ, एक्काओ, एक्कओ
तृ०	एगाए, एगए, एआए, एअए	एगाहिं, एगहिं, एआहिं, एअहिं, एक्काहिं एक्कहिं
प०	एगाहे, एगहे, एआहे, एअहे एक्काहे, एक्कहे	एगाहु, एगहु, एआहु, एअहु, एक्काहु एक्कहु
च०/प०	एगा, एग, एगाहे, एगहे एआ, एअ, एआहे, एअहे एक्का, एक्क, एक्काहे, एक्कहे	एगा, एग, एगाहु, एगहु, एआ, एअ एआहु, एअहु, एक्का, एक्क, एक्काहु एक्कहु
स०	एगाहिं, एगहिं, एआहिं, एअहिं एक्काहिं, एक्कहिं	एगाहिं, एगहिं, एआहिं, एअहिं एक्काहिं, एक्कहिं

२६ग नपुंसकलिंग एग, एअ, एक्क (एक) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	एग, एगा, एगु, एअ, एआ एउ एक्क, एक्का, एक्कु	एग, एगा, एगइं, एगाइं, एअ, एआ एअइं, एआइं, एक्क, एक्का, एक्कइं एक्काइं
द्वि०	एग, एगा, एगु, एअ, एआ एउ, एक्क, एक्का, एक्कु	एग, एगा, एगइं, एगाइं, एअ, एआ एअइं, एआइं, एक्क, एक्का, एक्कइं एक्काइं
तृ०	एगे, एगेण, एगेण, एए, एएण एएण, एक्के, एक्केण, एक्केण	एगहिं, एगाहिं, एगेहिं, एअहिं, एआहिं एएहिं, एक्कहिं, एक्काहिं, एक्केहिं

पं०	एगहा, एगाहा, एअहा, एआहा एक्कहा, एक्काहा	एगहुं, एगाहु, एअहुं, एआहु, एक्कहु एक्काहुं
च०/ष०	एग, एगा, एगसु, एगासु एगहो, एगाहो, एगस्सु, एअ एआ, एअसु, एआसु, एअहो एआहो, एअस्सु, एक्क, एक्का एक्कसु, एक्कासु, एक्कहो एक्काहो, एक्कस्सु	एग, एगा, एगह, एगाह, एअ, एआ एअह, एआहं, एक्क, एक्का, एक्कह एक्काह
स०	एगहि, एगाहि, एअहि, एआहि एक्कहि, एक्काहि	एगहिं, एगाहिं, एअहिं, एआहिं, एक्कहिं एक्काहिं

२७ (तीनों लिंगों में) दु, दो, बे (द्वि) शब्द

बहुवचन

प्र० दुवे, दोण्णि, दुण्णि, वेण्णि, विण्णि, दो, वे

द्वि० दुवे, दोण्णि, दुण्णि, वेण्णि, विण्णि, दो, वे

तृ० दोहि, दोहिं, दोहिँ, वेहि, वेहिं, वेहिँ

पं० दुत्तो, दुओ, दोउ, दोहिन्तो, दोसुन्तो, वित्तो, वेओ, वेउ, वेहिंतो

च०/ष० दोण्ह, दोण्हं, दुण्ह, दुण्हं, वेण्ह, वेण्हं, विण्ह, विण्हं

स० दोसु, दोसुं, वेसु, वेसुं

२८ तिण्ण (त्रि) शब्द (तीनों लिंगों में)

बहुवचन

प्र० तिण्णि

द्वि० तिण्णि

तृ० तीहि, तीहिं तीहिँ

पं० तित्तो, तीओ, तीउ, तीहिन्तो तीसुन्तो

च०/ष० तीण्ह, तीण्हं

स० तीसु, तीसुं

२९ चउ (चतुर) शब्द (तीनों लिंगों में)

बहुवचन

प्र० चत्तारो, चउरो, चत्तारि

द्वि० चत्तारो, चउरो, चत्तारि

तृ० चउहि, चउहिं, चउहिँ

पं० चउत्तो, चऊओ, चऊउ चऊहिन्तो, चऊसुन्तो, चउओ चउहिन्तो, चउसुन्तो

च०/ष० चउण्ह, चउण्हं

स० चऊसु, चऊसुं, चउसु, चउसुं

३० पंच (पञ्च) शब्द (तीनों लिंगों में)

बहुवचन

प्र० पंच

द्वि० पंच

३१ छ (षष्) शब्द (तीनों लिंगों में)

बहुवचन

प्र० छ

द्वि० छ

तृ० पचहि, पचहिं, पचहिँ	छहि, छहिं, छहिँ
प० पचत्तो, पचाओ, पचाउ, पचाहि पचाहिन्तो, पचासुन्तो,	छाओ, छाउ, छाहिन्तो, छासुन्तो
च०/ष० पचण्ह, पचण्हं	छण्ह, छण्हं
स० पंचसु, पचसुं	छसु, छसुं

३२ सात (सप्तन्) शब्द (तीनो लिगों मे)	३३ अट्ठ (अष्टन्) शब्द (तीनों लिगों में)
बहुवचन	बहुवचन
प्र० सत्त	अट्ठ
द्वि० सत्त	अट्ठ
तृ० सत्तहि, सत्तहिं, सत्तहिँ	अट्ठहि, अट्ठहिं, अट्ठहिँ
प० सत्ताओ, सत्ताउ, सत्ताहिन्तो सत्तासुन्तो	अट्ठाओ, अट्ठाउ, अट्ठाहिन्तो अट्ठासुन्तो
च०/ष० सत्तण्ह, सत्तण्हं	अट्ठण्ह, अट्ठण्हं
स० सत्तसु, सत्तसुं	अट्ठसु, अट्ठसुं

३४ णव, नव (नवन्) शब्द (तीनों लिगों में)

बहुवचन

प्र० णव

द्वि० णव

तृ० णवहि, णवहिं, णवहिँ

प० णवाओ, णवाउ, णवाहिन्तो, णवासुन्तो

च०/ष० णवण्ह, णवण्हं

स० णवसु, णवसुं

३५ दह, दस (दशन्) शब्द (तीनों लिगों में)

बहुवचन

प्र० दह, दस

द्वि० दह, दस

तृ० दहहि, दहहिं, दहहिँ, दसहि, दसहिं, दसहिँ

प० दहाओ, दहाउ, दहाहिन्तो, दहासुन्तो, दसाओ, दसाउ, दसाहिन्तो दसासुन्तो

च०/ष० दहण्ह, दहण्हं, दसण्ह, दसण्हं

स० दहसु, दहसुं, दससु, दससुं

(अपभ्रंश रचना सौरभ के आधार पर)

परिशिष्ट ४ अपभ्रंश धातु रूपावली

कर्तृवाच्य

१. हस् (हस्) वर्तमानकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हसदि, हसदे, हसइ, हसए	हसंहि, हसेंहि, हसंति, हसिंति, हसेंति हसन्ते, हसिंते, हसइरे, हसिरे, हसेइरे हसेज्ज, हसिज्ज, हसेज्जा, हसिज्जा
म०पु०	हसहि, हससि, हससे	हसहु, हसेहु, हसह, हसेह, हसध हसेध, हसइत्था, हसित्था, हसेत्था हसेज्ज, हसिज्ज, हसेज्जा, हसिज्जा
उ०पु०	हसउं, हसमि	हसहुं, हसेहुं, हसमो, हसामो, हसिमो हसेमो, हसमु, हसामु, हसिमु, हसेमु हसम, हसाम, हसिम, हसेम, हसेज्ज हसिज्ज, हसेज्जा, हसिज्जा

हस् (हस्) विधि एवं आज्ञा के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसदु, हसदे, हसउ, हसेउ	हसन्तु, हसेन्तु, हसिंतु
म०पु०	हसि, हसे, हसु, हस, हसहि हसाहि, हसेहि, हससु, हसेसु हसिज्जसु, हसेज्जसु, हसिज्जे हसेज्जे, हसिज्जहि, हसेज्जहि	हसह, हसहे, हसध, हसधे
उ०पु०	हसमु, हसामु, हसेमु	हसमो, हसामो, हसेमो

हस् (हस्) भविष्यत्काल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हसिसदि, हसेसदि, हसिसदे हसेसदे, हसिस्सदि, हसेस्सदि हसिस्सदे, हसेस्सदे, हसिसइ हसेसइ, हसिसए, हसेसए हसिस्सिइ, हसेस्सिइ हसिस्सिए, हसेस्सिए	हसिसंहि, हसेसंहि, हसिसंदि, हसेसंदि हसिसदे, हसेसदे, हसिसइरे, हसेसइरे हसिस्सिंहि, हसेस्सिंहि, हसिस्संदि हसेस्संदि, हसिस्सिंदे, हसेस्सिंदे हसिस्सिइरे, हसेस्सिइरे
म०पु०	हसिसहि, हसेसहि, हसिस्सिहि हसेस्सिहि, हसिससि, हसेससि	हसिसहु, हसेसहु, हसिस्सिहु, हसेस्सिहु हसिसधु, हसेसधु, हसिसिधु, हसेसिधु

हसिस्सिसि, हसेस्सिसि	हसिसह, हसेसह, हसिस्सिह, हसेस्सिह
हसिससे, हसेससे, हसिस्सिसे	हसिसध, हसेसध, हसिस्सिध, हसेस्सिध
हसेस्सिसे	हसिसइत्था, हसेसइत्था, हसिस्सिइत्था
	हसेस्सिइत्था
उ०पु० हसिसउ, हसेसउ, हसिस्सिउ	हसिसहु, हसेसहुं, हसिस्सिहु, हसेस्सिहु
हसेस्सिउ, हसिसमि, हसेसमि	हसिसमो, हसेसमो, हसिस्सिमो
हसिस्सिमि, हसेस्सिमि	हसेस्सिमो, हसिसमु, हसेसमु, हसिस्सिमु
	हसेस्सिमु, हसिसम, हसेसम, हसिस्सिम
	हसेस्सिम

भूतकाल

अपभ्रंश मे भूतकाल को व्यक्त करने के लिए भूतकालिक कृदन्त का प्रयोग होता है। भूतकालिक कृदन्त अकारान्त होता है। स्त्रीलिंग बनाने के लिए उसमे आ प्रत्यय जोडा जाता है। इनके रूप पुलिंग मे देव शब्द, स्त्रीलिंग मे माला शब्द और नपुसकलिंग मे कमल शब्द की तरह चलते है।

हस् (हस्) भूतकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
पुलिंग	हसिद, हसिदा, हसिदो, हसिदु हसिअ, हसिआ, हसिओ, हसिउ	हसिद, हसिदा, हसिअ, हसिआ
स्त्रीलिंग	हसिदा, हसिद, हसिआ हसिअ	हसिदा, हसिद, हसिदाउ, हसिदउ हसिदाओ, हसिदओ, हसिआ, हसिअ हसिआउ, हसिअउ, हसिआओ हसिअओ
नपुसकलिंग	हसिदु, हसिद, हसिदा हसिउ, हसिअ, हसिआ	हसिद, हसिदा, हसिदइ, हसिदाइं हसिअ, हसिआ, हसिअइं, हसिआइ

हस् (हस्) क्रियातिपत्ति के रूप

अपभ्रश मे क्रियातिपत्ति के रूप प्राकृत के समान होते है।

२. ठाअ (स्था) धातु वर्तमानकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	ठाअइ, ठाअए	ठाअहिं, ठाअन्ति, ठाअन्ते, ठाइरे
म०पु०	ठाअहि, ठाअसि, ठाअसे	ठाअहु, ठाअह, ठाइत्था
उ०पु०	ठाअउ, ठाअमि, ठाआमि ठाएमि	ठाअहु, ठाअम, ठाआम, ठाइम ठाएम, ठाअमो, ठाआमो, ठाइमो ठाएमो, ठाअमु, ठाआमु, ठाइमु ठाएमु

ठाव (ष्ठा) अंग के वर्तमानकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	ठावइ, ठावए	ठावहिं, ठावन्ति, ठावन्ते, ठावइरे
म०पु०	ठावहि, ठावसि, ठावसे	ठावह, ठावह, ठावइत्था
उ०पु०	ठावउं, ठावमि, ठावामि ठावेमि	ठावहुं, ठावम, ठावाम, ठाविम ठावेम, ठावमो, ठावामो, ठाविमो ठावेमो, ठावमु, ठावामु, ठाविमु ठावेमु

ठाअ (ष्ठा) विधि एवं आज्ञा के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	ठाअउ, ठाएउ	ठाअन्तु, ठाएन्तु
म०पु०	ठाइ, ठाए, ठाउ, ठाअ, ठाअहि ठाएहि, ठाअसु, ठाएसु	ठाअह, ठाएह
उ०पु०	ठाअमु, ठाएमु	ठाअमो, ठाआमो, ठाएमो

ठाव अंग (ष्ठा) विधि एवं आज्ञा के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	ठावउ, ठावेउ	ठावन्तु, ठावेन्तु
म०पु०	ठावि, ठावे, ठावु, ठाव, ठावहि ठावेहि, ठावसु, ठावेसु	ठावह, ठावेह
उ०पु०	ठावमु, ठावेमु	ठावमो, ठावामो, ठावेमो

ठाअ (ष्ठा) भविष्यत्काल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	ठाएसइ, ठाएसए, ठाइहिइ ठाइहिए	ठाएसहिं, ठाएसन्ति, ठाइहिंहि ठाइहिन्ति
म०पु०	ठाएसहि, ठाएससि, ठाइहिहि ठाइहिसि	ठाएसह, ठाएसह, ठाएसइत्था ठाइहिह, ठाइहिह, ठाइहित्था
उ०पु०	ठाएसउं, ठाएसमि, ठाइहिउं ठाइहिमि	ठाएसहुं, ठाएसमो, ठाएसमु, ठाएसम

ठाव अंग (ष्ठा) भविष्यत्काल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	ठावेसइ, ठावेसए, ठाविहिइ ठाविहिए	ठावेसहिं, ठावेसन्ति, ठाविहिंहि ठाविहिन्ति
म०पु०	ठावेसहि, ठावेससि, ठाविहिहि ठाविहिसि	ठावेसह, ठावेसह, ठावेसइत्था ठाविहिह, ठाविहिह, ठाविहित्था

	एकवचन	बहुवचन
उ०पु०	ठावसउ, ठावेसमि, ठाविहिउ ठाविहिमि	ठावेसहु, ठावेसमो, ठावेसमु, ठावेसम

ठाअ (ष्ठा) भूतकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
पु०	ठाइअ, ठाइआ, ठाइओ ठाविउ	ठाइअ, ठाइआ
स्त्री०	ठाइआ, ठाइअ	ठाइआ, ठाइअ, ठाइआउ, ठाइअउ ठाइआओ, ठाइअओ
नपुं०	ठाइउ, ठाइअ, ठाइआ	ठाइअ, ठाइआ, ठाइअइं, ठाइआइं

ठाव (ष्ठा) अंग—भूतकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
पु०	ठाविअ, ठाविआ, ठाविओ	ठाविअ, ठाविआ
स्त्री०	ठाविआ, ठाविअ	ठाविआ, ठाविअ, ठाविआउ, ठाविअउ ठाविआओ, ठाविअओ
नपुं०	ठाविउ, ठाविअ, ठाविआ	ठाविअ, ठाविआ, ठाविअइं, ठाविआइं

३. हो (भू) वर्तमानकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	होइ	होंहिं, होन्ति, होन्ते, होइरे
म०पु०	होहि, होसि	होहु, होह, होइत्था
उ०पु०	होउ, होमि	होहु, होमो, होमु, होम

नोट—आ, ई, ऊ दीर्घस्वर से परे संयुक्त अक्षर हो तो दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाता है। जैसे—ठान्ति—ठन्ति, ण्हान्ति—ण्हन्ति।

हो (भू) विधि एवं आज्ञा के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	होउ	होन्तु
म०पु०	होइ, होए, होउ, होहि होसु	होह
उ०पु०	होमु	होमो

हो (भू) भविष्यकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	होसइ, होहिइ	होसहिं, होसन्ति, होहिहिं, होहिन्ति
म०पु०	होसहि, होससि, होहिहि होहिसि	होसहु, होसह, होहिह, होहिहु होसइत्था, होहित्था
उ०पु०	होसउं, होसमि, होहिउ होहिमि	होसहु, होसमो, होसमु, होसम, होहिहु होहिमो, होहिमु, होहिम

हो (भू) भूतकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
पुं०	होंत, होंतो, होंतु, होंतो होंत, होंता, होंत, होंतो	होंत, होंता, होंत, होंता
स्त्री०	होंता, होंत, होंता, होंत	होंता, होंत,होंताउ, होंतउ, होंताओ होंतओ, होंता, होंत, होंताउ, होंतउ होंताओ, होंतओ
नपुं०	होंत, होंता, होंतु, होंत. होंता, होंत	होंत, होंता, होंतइं. होंताइं, होंत, होंता, होंतइं, होंताइं

क्रियातिपत्ति

क्रियातिपत्ति के रूप प्राकृत के समान ही होते हैं।

० ० ० ० ० ० ० ०

प्रेरक (णिजन्त) धातु के रूप

प्रेरणा अर्थ में मूल धातु से अ और आव प्रत्यय जुड़ते हैं। धातु के आदि व्यंजन में अ, इ, उ स्वर हो तो अ को आ, इ को ए और उ को ओ हो जाता है। आ, ई और ऊ स्वर हो तो धातु का रूप वैसा ही रहता है। संयुक्त अक्षर आगे हो तो अ को आ नहीं होता, अ ही रहता है। धातु में प्रेरणार्थ प्रत्यय अ और आव जोड़ने से प्रेरणार्थक धातु बन जाती है। जैसे—

अ	आव
हस+अ=हास	हस+आव=हसाव (हंसाना)
भिड+अ=भेड	भिड+आव=भिडाव (भिडाना)
लुक्क+अ=लोक्क	लुक्क+आव=लुक्काव (छिपाना)
ठा+अ=ठाअ	ठा+आव=ठाव (ठहराना)
जीव+अ=जीव	जीव+आव=जीवाव (जिलाना)
रुस+अ=रुस	रुस+आव=रुसाव (रुलाना)
णच्च+अ=णच्च	णच्च+आव=णच्चाव (नचाना)

प्रेरक धातु+वर्तमान प्रत्यय=प्रेरणार्थक वर्तमानकाल के रूप

४. हास (हासय) अंग के वर्तमानकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हासइ, हासए	हासहिं, हासन्ति, हासन्ते
म०पु०	हासहि, हाससि, हाससे	हासहु, हासह, हासइत्था
उ०पु०	हासउं, हाससि, हासामि हासेमि	हासहुं, हासमो, हासामो, हासिमो, हासेमो, हासमु, हासामु, हासिमु, हासेमु, हासम, हासाम, हासिम, हासेम

हसाव (हासय) अग के वर्तमानकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हसावइ, हसावए	हसावहिं, हसावन्ति, हसावन्ते
म०पु०	हसावहि, हसावसि, हसावसे	हसावहू, हसावह, हसाइत्था
उ०पु०	हसावउ, हसावमि, हसावामि, हसावेमि	हसावहु, हसावमो, हसावामो, हसाविमो, हसावेमो, हसावमु, हसावामु, हसाविमु, हसावेमो, हसावम, हसावाम, हसाविम हसावेम

हास (हासय) विधि एवं आज्ञा के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हासउ, हासेउ	हासन्तु, हासेन्तु
म०पु०	हासि, हासे, हासु, हास हासहि, हासेहि, हाससु हासेसु	हासह, हासेह
उ०पु०	हासमु, हासेमु	हासमो, हासामो, हासेमो

हसाव (हासय) अंग के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हसावउ, हसावेउ	हसावन्तु, हसावेन्तु
म०पु०	हसावसि, हसावसे, हसावसु हसाव, हसावहि, हसावेहि हसावसु, हसावेसु	हसावह, हसावेह
उ०पु०	हसावमु, हसावेमु	हसावमो, हसावामो, हसावेमो

हास (हासय) अंग के भविष्यत्काल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हासेसइ, हासेसए, हासिहिइ हासिहिए	हासेसहिं, हासेसन्ति, हासेहिहिं हासिहिन्ति
म०पु०	हासेसहि, हासेससि हासिहिहिं, हासिहिसि	हासेसहु, हासेसह, हासेसइत्था हासिहिहु, हासिहिह, हासिहित्था
उ०पु०	हासेसउं, हासेसमि हासिहिउं, हासिहिमि	हासेमहुं, हासेसमो, हासेसमु, हासेसम

हसाव (हासय) अंग के भविष्यत्काल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हसावेसइ, हसावेसए हसाविहिइ, हसाविहिए	हसावेसहिं, हसावेसन्ति, हसाविहिहिं हसाविहिन्ति

म०पु०	हसावेसहि, हसावेससि हसाविहिहि, हसाविहिसि	हसावेसहु, हसावेसह, हसावेसइत्था हसाविहिहु, हसाविहिह, हसाविइत्था
उ०पु०	हसावेसउं, हसावेसमि हसाविहिउ, हसाविहिमि	हसावेसहु, हसावेसमो, हसावेसमु हसावेसम

हास (हासय) अंग के भूतकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
पु०	हासिअ, हासिआ, हासिओ हासिउ	हासिअ, हासिआ
स्त्री०	हासिआ, हासिअ	हासिआ, हासिअ, हासिआउ हासिअउ, हासिआओ, हासिअओ
नपु०	हासिउ, हासिअ, हासिआ	हासिअ, हासिआ, हासिअइं हासआइं

हसाव (हासय) अंग के भूतकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
पु०	हसाविअ, हसाविआ हसाविओ, हसाविउ	हसाविअ, हसाविआ
स्त्री०	हसाविआ, हसाविअ	हसाविआ, हसाविअ, हसाविआउ हसाविअउ, हसाविआओ, हसाविअओ
नपु०	हसाविउ, हसविअ, हसाविआ	हसाविअ, हसाविआ, हसाविअइं हसाविआइं

५. होअ, होआवे (भावय) अंग के रूप

प्रेरक मे वर्तमानकाल विधि एवं आज्ञा, भविष्यकाल और भूतकाल के रूप हास और हसाव के समान होते हैं।

भावकर्म

कर्तृवाच्य धातु + भाव प्रत्यय = भाव कर्म धातु

हस + इज्ज, इय = हसिज्ज, हसिय

६. हसिज्ज (हस्य) वर्तमानकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हसिज्जइ, हसिज्जए	हसिज्जहिं, हसिज्जन्ति, हसिज्जन्ते
म०पु०	हसिज्जहि, हसिज्जसि हसिज्जसे	हसिज्जहु, हसिज्जह, हसिजित्था
उ०पु०	हसिज्जउं, हसिज्जमि	हसिज्जहुं, हसिज्जम, हसिज्जाम

हसिज्जामि, हसिज्जेमि	हसिज्जिम, हसिज्जेम, हसिज्जमु
	हसिज्जामु, हसिज्जिमु, हसिज्जेमु
	हसिज्जमो, हसिज्जामो, हसिज्जिमो
	हसिज्जेमो

हसिय (हस्य) अंग वर्तमानकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हसियइ, हसियए	हसियहिं हसियन्ति, हसियन्ते
म०पु०	हसियहि, हसियसि, हसियसे	हसियहु, हसियह, हसियित्था
उ०पु०	हसियउं, हसियमि, हसियामि हसियेमि	हसियहुं, हसियम, हसियाम, हसियिम हसियेम, हसियमु, हसियामु, हसियिमु हसियेमु, हसियमो, हसियामो, हसियिमो हसियेमो

हसिज्ज (हस्य) अंग के विधि एवं आज्ञा के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हसिज्जउ, हसिज्जेउ	हसिज्जन्तु, हसिज्जेन्तु
म०पु०	हसिज्जि, हसिज्जे, हसिज्जु हसिज्ज, हसिज्जहि हसिज्जेहि, हसिज्जसु हसिज्जेसु	हसिज्जह, हसिज्जेह
उ०पु०	हसिज्जमु, हसिज्जेमु	हसिज्जमो, हसिज्जामो, हसिज्जेमो

हसिय (हस्य) अंग के विधि एवं आज्ञा के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हसियउ, हसियेउ	हसियन्तु, हसियेन्तु,
म०पु०	हसियि, हसिये, हसियु हसिय, हसियहि, हसियेहि हसियसु हसियेसु	हसियह, हसियेह
उ०पु०	हसियमु, हसियेमु	हसियमो, हसियामो, हसियेमो

हसिज्ज (हस्य) अंग के भविष्यकाल के रूप

एकवचन बहुवचन

(भावकर्म के भविष्यकाल के रूप कर्तृवाच्य के भविष्यकाल के समान चलते है।)

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हसिज्जिसदि, हसिज्जेसदि हसिज्जिसदे, हसिज्जेसदे हसिज्जिस्सिदि हसिज्जेस्सिदि हसिज्जिस्सिदे, हसिज्जेस्सिदे	हसिज्जिसहिं, हसिज्जेसहिं, हसिज्जिसंदि हसिज्जेसंदि, हसिज्जिसंदे, हसिज्जेसंदे हसिज्जिसइरे, हसिज्जेसइरे हसिज्जिस्सिहिं, हसिज्जेस्सिहिं

हसिज्जिसइ, हसिज्जेसइ	हसिज्जिस्संदि, हसिज्जेस्संदि
हसिज्जिस्सिइ, हसिज्जेस्सिइ	हसिज्जिस्सिदे, हसिज्जेस्सिदे
हसिज्जिसए, हसिज्जेसए	हसिज्जिस्सिइरे, हसिज्जेस्सिइरे
हसिज्जिस्सिए, हसिज्जेस्सिए	
म०पु० हसिज्जिसहि, हसिज्जेसहि	हसिज्जिसहु, हसिज्जेसहु, हसिज्जिस्सिहु
हसिज्जिस्सिहि, हसिज्जेस्सिहि	हसिज्जेस्सिहु, हसिज्जिसघु, हसिज्जेसघु
हसिज्जिससि, हसिज्जेससि	हसिज्जिस्सिघु, हसिज्जेस्सिघु, हसिज्जिसह
हसिज्जिस्सिसि, हसिज्जेस्सिसि	हसिज्जेसह, हसिज्जिस्सिह, हसिज्जेस्सिह
हसिज्जिससे, हसिज्जेससे	हसिज्जिसध, हसिज्जेसध, हसिज्जिस्सिध
हसिज्जिस्सिसे, हसिज्जेस्सिसे	हसिज्जेस्सिध, हसिज्जिसइत्था
	हसिज्जेसइत्था, हसिज्जिस्सिइत्था
	हसिज्जेस्सिइत्था
उ०पु० हसिज्जिसउं, हसिज्जेसउं	हसिज्जिसहु, हसिज्जेसहुं, हसिज्जिस्सिहुं
हसिज्जिस्सिउं, हसिज्जेस्सिउं	हसिज्जेस्सिहु, हसिज्जिसमो, हसिज्जेसमो
हसिज्जिसामि, हसिज्जेसामि	हसिज्जिस्सिमो, हसिज्जेस्सिमो
हसिज्जिस्सिमि, हसिज्जेस्सिमि	हसिज्जिसमु, हसिज्जेसमु
	हसिज्जिस्सिमु, हसिज्जेस्सिमु
	हसिज्जिसम, हसिज्जेसम
	हसिज्जिस्सिम, हसिज्जेस्सिम

हसिय (हस्य) अंग के भविष्यकाल के रूप

एकवचन	बहुवचन
प्र०पु० हसियिसदि, हसियेसदि	हसियिसहिं, हसियेसहिं, हसियिसंदि
हसियिसदे, हसियेसदे	हसियेसंदि, हसियिसदे, हसियेसदे
हसियिस्सिदि, हसियेस्सिदि	हसियिसइरे, हसियेसइरे, हसियिस्सिहिं
हसियिस्सिदे, हसियेस्सिदे	हसियेस्सिहिं, हसियिस्सिंदि, हसियेस्सिंदि
हसियिसइ, हसियेसइ	हसियिस्सिदे, हसियिस्सिदे, हसियिस्सिइरे
हसियिस्सिइ, हसियेस्सिइ	हसियेस्सिइरे
हसियिसए, हसियेसए	
हसियिस्सिए, हसियेस्सिए	
म०पु० हसियिसहि, हसियेसहि	हसियिसहु, हसियेसहु, हसियिस्सिहु
हसियिस्सिहि, हसियेस्सिहि	हसियेस्सिहु, हसियिसधु, हसियेसधु
हसियिससि, हसियेससि	हसियिस्सिधु, हसियेस्सिधु, हसियिसह
हसियिस्सिसि, हसियेस्सिसि	हसियेसह, हसियिस्सिह, हसियेस्सिह

हसियिससे, हसियेससे हसियिस्सिसे, हसियेस्सिसे	हसियिसध, हसियेसध, हसियिस्सिध हसियेस्सिध, हसियिसइत्था हसियेसइत्था हसियिस्सिइत्था हसियेस्सिइत्था
उ०पु० हसियिसउ, हसियेसउ हसियिस्सिउ, हसियेस्सिउ हसियिसमि, हसियेसमि हसियिस्सिमि, हसियेस्सिमि	हसियिसहु, हसियेसहु, हसियिस्सिहु हसियेस्सिहु, हसियिसमो, हसियेसमो हसियिस्सिमो, हसियेस्सिमो, हसियिसमु हसियेसमु, हसियिस्सिमु, हसियेस्सिमु हसियिसम, हसियेसम, हसियिस्सिम हसियेस्सिम

हसिज्ज (हस्य) अग के भूतकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
पुंलिंग	हसिज्जिद, हसिज्जिदा हसिज्जिदो, हसिज्जिदु हसिज्जिअ, हसिज्जिआ हसिज्जिओ, हसिज्जिउ	हसिज्जिद, हसिज्जिदा, हसिज्जिअ हसिज्जिआ
स्त्रीलिंग	हसिज्जिदा, हसिज्जिद हसिज्जिआ, हसिज्जिअ	हसिज्जिदा, हसिज्जिद, हसिज्जिदाउ हसिज्जिदउ, हसिज्जिदाओ हसिज्जिदओ, हसिज्जिआ, हसिज्जिअ हसिज्जिआउ, हसिज्जिअउ हसिज्जिआओ, हसिज्जिअओ
नपु०	हसिज्जिदु, हसिज्जिद हसिज्जिदा, हसिज्जिउ हसिज्जिअ, हसिज्जिआ	हसिज्जिद, हसिज्जिदा, हसिज्जिदइ हसिज्जिदाइं, हसिज्जिअ, हसिज्जिआ हसिज्जिअइ, हसिज्जिआइ

हसिय (हस्य) अग के भूतकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
पुंलिंग	हसियिद, हसियिदा हसियिदो, हसियिदु हसियिअ, हसियिआ हसियिओ, हसियिउ	हसियिद, हसियिदा, हसियिअ, हसियिआ
स्त्रीलिंग	हसियिदा, हसियिद हसियिआ, हसियिअ	हसियिदा, हसियिद, हसियिदाउ हसियिदउ, हसियिदाओ, हसियिदओ हसियिआ, हसियिअ, हसियिआउ हसियिअउ, हसियिआओ, हसियिअओ
नपु०	हसियिदु, हसियिद	हसियिद, हसियिदा, हसियिदइ, हसियिदाइं

हसियिदा, हसियिउ हसियिअ, हसियिआ, हसियिअइं, हसियिआइं
हसियिअ, हसियिआ

७. स्वरान्त दा (दा) के भाव कर्म के रूप

दा+इज्ज = दाइज्ज। दा+इय=दाइय। दाइज्ज और दाइय के सब कालो के रूप हसिज्ज और हसिय के समान होते है। स्वरान्त सभी धातुओ के रूप भावकर्म मे हसिज्ज और हसिय के समान चलते है।

८. प्रेरक धातु (णिन्नत) से भावकर्म के रूप

- प्रेरक धातु+भावकर्म के प्रत्यय+काल बोधक प्रत्यय=प्रेरक (णिन्नन्त) से भाव कर्म के रूप।
- कर, करावि+इज्ज, इय (भावकर्म प्रत्यय)+इ आदि (वर्तमान-काल के प्रथम पुरुप एकवचन के प्रत्यय)=कराविज्जइ, करावियइ।

कराविज्ज (कार्य) अंग के वर्तमानकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	कराविज्जइ, कराविज्जए	कराविज्जहिं, कराविज्जिन्ति कराविज्जन्ते
म०पु०	कराविज्जहि, कराविज्जसि कराविज्जसे	कराविज्जहु, कराविज्जह कराविज्जित्था
उ०पु०	कराविज्जउं कराविज्जमि कराविज्जामि, कराविज्जेमि	कराविज्जहुं, कराविज्जम कराविज्जाम, कराविज्जिम कराविज्जेम, कराविज्जमु कराविज्जामु, कराविज्जिमु कराविज्जेमु, कराविज्जमो कराविज्जामो, कराविज्जिमो कराविज्जेमो

कराविय (कार्य) अंग के वर्तमानकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	करावियइ, करावियए	कराविर्याहं, कराविर्यान्त, कराविर्यान्ते
म०पु०	कराविर्याह, कराविर्यास	कराविर्याहु, कराविर्याह, कराविर्यायत्था
उ०पु०	कराविर्याउं, कराविर्याम कराविर्यामि, कराविर्येमि	कराविर्याहुं, कराविर्याम, कराविर्याम कराविर्यिम, कराविर्येम, कराविर्यामु कराविर्यामु, कराविर्यिमु, कराविर्येमु कराविर्यामो, कराविर्यामो, कराविर्यिमो कराविर्येमो

कराविज्ज (कार्य) अंग के विधि एव आज्ञा के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	कराविज्जिज्जउ कराविज्जिज्जेउ	कराविज्जिज्जन्तु, कराविज्जज्जेन्तु
म०पु०	कराविज्जिज्जि, कराविज्जिज्जे कराविज्जिज्जु, कराविज्जिज्ज कराविज्जिज्जहि, कराविज्जिज्जेहि कराविज्जिज्जसु, कराविज्जिज्जेसु	कराविज्जिज्जह, कराविज्जिज्जेह
उ०पु०	कराविज्जिज्जमु, कराविज्जिज्जेमु	कराविज्जिज्जमो, कराविज्जिज्जामो कराविज्जिज्जेमो

कराविय (कार्य) अंग के विधि एवं आज्ञा के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	करावियिज्जउ, कराविइज्जेउ	कराविइज्जन्तु, कराविइज्जेन्तु
म०पु०	कराविइज्जि, कराविइज्जे कराविइज्जु, कराविइज्ज कराविइज्जहि, कराविइज्जेहि कराविइज्जसु, कराविइज्जेसु	कराविइज्जह, कराविइज्जेह
उ०पु०	कराविइज्जमु, कराविइज्जेमु	कराविइज्जमो, कराविइज्जामो कराविइज्जेमो

कराविज्ज (कार्य) अंग के भविष्यकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	कराविज्जिसदि, कराविज्जेसदि कराविज्जिसदे, कराविज्जेसदे कराविज्जिस्सदि, कराविज्जेस्सदि कराविज्जिस्सदे, कराविज्जेस्सदे कराविज्जिसइ, कराविज्जेसइ कराविज्जिसए, कराविज्जेसए कराविज्जिस्सिइ, कराविज्जेस्सिइ कराविज्जिस्सिए, कराविज्जेस्सिए	कराविज्जिसहिं, कराविज्जेसहिं कराविज्जिसदि, कराविज्जेसदि कराविज्जिसदे, कराविज्जेसदे कराविज्जिसइरे, कराविज्जेसइरे कराविज्जिस्सिहिं, कराविज्जेस्सिहिं कराविज्जिस्सदि, कराविज्जेस्सदि कराविज्जिस्सदे, कराविज्जेस्सदे कराविज्जिस्सिइरे, कराविज्जेस्सिइरे
म०पु०	कराविज्जिसहि, कराविज्जेसहि कराविज्जिस्सिहि कराविज्जेस्सिहि कराविज्जिससि, कराविज्जेससि कराविज्जिस्सिसि कराविज्जेस्सिसि	कराविज्जिसहु, कराविज्जेसहु कराविज्जिस्सिहु, कराविज्जेस्सिहु कराविज्जिसधु, कराविज्जेसधु कराविज्जिसिधु, कराविज्जेसिधु कराविज्जिसह, कराविज्जेसह कराविज्जिस्सिह, कराविज्जेस्सिह

	एकवचन	बहुवचन
	कराविज्जिससे, कराविज्जेससे	कराविज्जिसध, कराविज्जेसध
	कराविज्जिस्सिसे	कराविज्जिस्सिध, कराविज्जेस्सिध
	कराविज्जेस्सिसे	कराविज्जिसइत्था, कराविज्जेसइत्था
		कराविज्जिस्सिइत्था
		कराविज्जेस्सिइत्था
उ०पु०	कराविज्जसउं, कराविज्जेसउ	कराविज्जिसहुं, कराविज्जेसहु
	कराविज्जिस्सिउं	कराविज्जिस्सिहु, कराविज्जेस्सिहु
	कराविज्जेस्सिउ, कराविज्जिसमि	कराविज्जिसमो, कराविज्जेसमो
	कराविज्जेसमि	कराविज्जिस्सिमो, कराविज्जेस्सिमो
	कराविज्जिस्सिमि	कराविज्जिसमु, कराविज्जेसमु
	कराविज्जेस्सिमि	कराविज्जिस्सिमु, कराविज्जेस्सिमु
		कराविज्जिसम, कराविज्जेसम
		कराविज्जिस्सिम, कराविज्जेस्सिम

कराविय (कार्य) अग के भविष्यकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	करावियिसदि, करावियेसदि	करावियिसहिं, करावियेसहिं
	करावियिसदे, करावियेसदे	करावियिसंदि, करावियेसंदि
	करावियिस्संदि, करावियेस्संदि	करावियिसदे, करावियेसदे
	करावियिस्सदे, करावियेस्सदे	करावियिसइरे, करावियेसइरे
	करावियिसइ, करावियेसइ	करावियिस्सिहिं, करावियेस्सिहिं
	करावियिसए, करावियेसए	करावियिस्संदि, करावियेस्सदि
	करावियिस्सिइ, करावियेस्सिइ	करावियिस्सिंदे, करावियेस्सिंदे
	करावियिस्सिए, करावियेस्सिए	करावियिस्सिइरे, करावियेस्सिइरे
म०पु०	करावियिसहि, करावियेसहि	करावियिसहु, करावियेसहु
	करावियिस्सिहि, करावियेस्सिहि	करावियिस्सिहु, करावियेस्सिहु
	करावियिससि, करावियेससि	करावियिसघु, करावियेसघु
	करावियिस्सिसि, करावियेस्सिसि	करावियिस्सिधु, करावियेस्सिधु
	करावियिससे, करावियेसमे	करावियिसह, करावियेसह
	करावियिस्सिसे, करावियेस्सिसे	करावियिस्सिह, करावियेस्सिह
		करावियिसध, करावियेसध
		करावियिस्सिध, करावियेस्सिध
		करावियिसइत्था, करावियेसइत्था
		करावियिस्सिइत्था, करावियेस्सिइत्था
उ०पु०	करावियिसउ, करावियेसउं	करावियिसहु, करावियेसहुं
	करावियिस्सिउं, करावियेस्सिउ	करावियिस्सिहुं, करावियेस्सिहु

करावियिसमि, करावियेसमि	करावियिसमो, करावियेसमो
करावियिस्सिमि, करावियेस्सिमि	करावियिस्सिमो, करावियेस्सिमो
	करावियिसमु, करावियेसमु
	करावियिस्सिमु, करावियेस्सिमु
	करावियिसम, करावियेसम
	करावियिस्सिम, करावियेस्सिम

कराविज्ज (कार्य) अंग के भूतकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
पुंलिग	कराविज्जिद, कराविज्जिदा	कराविज्जिद, कराविज्जिदा
	कराविज्जिदो, कराविज्जिदु	कराविज्जिअ, कराविज्जिआ
	कराविज्जिअ, कराविज्जिआ	
	कराविज्जिओ, कराविज्जिउ	
स्त्रीलिंग	कराविज्जिदा, कराविज्जिद	कराविज्जिदा, कराविज्जिद
	कराविज्जिआ, कराविज्जिअ	कराविज्जिदाउ, कराविज्जिदउ
		कराविज्जिदाओ, कराविज्जिदओ
		कराविज्जिआ, कराविज्जिअ
		कराविज्जिआउ, कराविज्जिअउ
		कराविज्जिआओ, कराविज्जिअओ
नपु०	कराविज्जिदु, कराविज्जिद	कराविज्जिद, कराविज्जिदा
	कराविज्जिदा, कराविज्जिउ	कराविज्जिदइ, कराविज्जिदाइ
	कराविज्जिअ, कराविज्जिआ	कराविज्जिअ, कराविज्जिआ
		कराविज्जिअइ, कराविज्जिआइ

कराविय (कार्य) अंग के भूतकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
पुंलिग	करावियिद, करावियिदा	करावियिद, करावियिदा, करावियिअ
	करावियिदो, करावियिदु	करावियिआ
	करावियिअ, करावियिआ	
	करावियिओ, करावियिउ	
स्त्रीलिंग	करावियिदा, करावियिद	करावियिदा, करावियिद, करावियिदाउ
	करावियिआ, करावियिअ	करावियिदउ, करावियिदाओ
		करावियिदओ, करावियिआ
		करावियिअ, करावियिआउ
		करावियिअउ, करावियिआओ
		करावियिअओ

नपुं०　करावियिदु, करावियिद　　करावियिद, करावियिदा, करावियिदइ
　　करावियिदा, करावियिद　　करावियिदाइं, करावियिअ, करावियिआ
　　करावियिअ, करावियिआ　　करावियिअइं, करावियिआइं
(प्राकृतमार्गोपदेशिका और अपभ्रंश रचना सौरभ के आधार पर)

परिशिष्ट ५ अकार आदि क्रम से वर्ग

व शब्दसंग्रह

सुगंधित पत्र पुष्प वाले पौधे
व लता (९२)
स्त्री वर्ग (७७ से ८०)
स्पर्श वर्ग (८३)
स्फुट

आभूषण वर्ग पाठ (३८)

अंगूठी—अंगुलीयं, अंगुलिज्जं
कंठा—कंठमुरवो, कंठमुही
कंदोरो—कडिसुत्तं
करधनी—रसणा, मेहला
कान की बाली—कुंडलं, कण्णाआस (दे०)
घुंघरु - घंटिया
चूडी—वलयं, चूडो
टिकुली—णडालाभूसण
नथ—णासाभरणं
पहुंची—कडओ
पांव का कडा—हंसओ
बंगडी—कंकणं, कंकणी
बिछिया—णूउरं, णेउरं
भुजबंद—केऊरं
मंगलसूत्र—कंठसुत्त
मणियों से ग्रंथितहार—एगावली
मुकुट—मउडो
मोतियों की माला—हारो, पलंब
रत्नों का हार—रयणावली
लच्छा—पायाभरण
हंसुली—गेविज्जं
हाथ का कडा—कडगो

औषधि वर्ग (पाठ ४४,४५)

अजवायन—अज्जम (त्रि) दे०
अडूसा—वासओ
अश्वगंध—अस्सगंधा
आमला—वत्ती
इलायची (छोटी)—सुहुमेला
इलायची (बडी)—थूलेला, एला
ईसबगोल—ईसिगोलो (सं)
णिद्दबीयं (सं)
ईसबगोलभुसी—ईसिगोलतूनं (सं)
कत्था—सिअखइरो
कालीमीर्च—कण्हमिरिअं
गिलोय—गिलोई, वच्छादणी
गोखरु—गोक्खुरो
गोरोचन—गोलोअणो (सं)
चूना—चुण्णं
जमालगोटा—सारओ
जायफल—जाइफलं
जावित्री—जाइवत्तिआ
त्रिफला—तिफला
दालचीनी—चोअं (दे०) चोचं
नागकेसर—णागकेसरो
पीपर—पिप्पली
पीपरामूल—पिप्पलीमूलं
बेहडा—बहेडओ
मेथी—मेथी (सं)
लौंग—लवंगो, पउमा
वंशलोचन—वंसरोअणा
सौंफ—सयपुष्फा
हरें—हरडई, अभया

काल वर्ग (पाठ ५२,५३)

अतीतकाल—अईओ
ऋतु—उउ (त्ति)
काल का सूक्ष्म भाग—समयो
ग्रीष्म—गिम्हो
घटी—घडी
दिन—दिवसो, दिवहो

पक्ष—पक्खो
पल—खणो
पूर्वदिन—पुव्वण्हो
प्रातःकाल—पगे, उसावेला
भविष्यकाल—अणागय
मास—मासो
मध्यदिन—मज्झण्हो
मुहूर्त—मुहुत्त
युग—जुगो
रात्रि—रत्ती, राई, निसा
वर्तमानकाल—पडिपुन्नं
वर्ष—वरिसो, सवच्छरो
वर्षा—वरिसा
वसंत—वसतो
शरद्—सरयो
शिशिर—सिसिरो
संध्या—सझा
हेमत—हेमतो

कीडा आदि क्षुद्र जन्तु (पाठ ८८)

कानखजूरो—कण्णजलूया
कीडी—कीडी, कीडिया
खटमल—मक्कुणो
जुगनू—खज्जोओ
जू—जूआ
जौंक—जलूया, जलूगा
झीगूर (तिलचटा)—झिगिरो (दे)
डास—डसो
दीमक—उवदेही
भौरा—भसलो
मकोडा—कीडो, पिवीलिओ
मक्खी—मक्खिआ, मच्छिआ
मच्छर—मसओ
मधुमक्खी—महुमक्खिआ
लीख—लिक्खा
वीरबहूटी—इदगोवगो
शलभ (पतग)—सलहो

खाद्यवर्ग (पाठ २६)

अचार—संहाणं
कचोरी—पिट्ठिया (स)
कॉफी—कफग्घी (स)
कुलफी—कूलपी (स)
चाट—अवदसो (स)
चाय—चविया, चायं (स)
पकोडी—पक्कवडिया (स)
वडा—वडग
वडी—वडी (दे.)
मुरब्बा—मिट्ठपागो
समोसा—समोसो (स)

गुडचीनी वर्ग (पाठ २३)

आर्द्रगुड—फाणिअ, फाणिओ
गुड—गुडो, गुलो
गुड से पहली अवस्था—कक्कवो (दे०)
खाड—खडा
चासनी—सियालेहो
चीनी—सिता, सिया
बतासा—वातासो (म)
शक्कर—मच्छडी
शहद—महु (न)
शरबत—सक्करोदय (मं)
मानमिसरी—छुहामूलो (मं)

गृह अवयव (पाठ ३०)

अट्टारी—अट्ट
ओनारा—उवनाल
किवाड—कवाडं

खिडकी—खडक्की (दे०) वातायणं
खूंटी—णागदतो
घर का छोटा दरवाजा—मूसा (दे)
घर का पिछला आंगन—पडोहरं
घर का भीतरी भाग—अंतोवगडा (दे०)
चौखट (दहलीज)—देहली, अवेसी (पुं)
छत्त—छायण
दरवाजा—दार
दीवार—भित्ति (स्त्री)
बरामदा—वरंडिया (दे०)
बिच्छु के डंक के आकार वाली तीखी खूंटी—अलीपट्ट (दे०)

गृहसामग्री (पाठ १७,१८)

ईंट—इट्टा
एनक—उवनेत्तं (सं)
ओखली—उऊखलं, अवअण्णो (दे०)
खरल—खल्लं (सं)
गोद—णिग्यासो
चक्की—णीसा (दे०) घरट्टो (दे०)
चलनी—चालणी
छींका—सिक्कगो
झाड़ू—बोहारी, वद्धणिआ, संमज्जणी
झूला—ढोला
टब—दोणी (सं)
टूथपाउडर—दंत चुण्णं
टूथपेस्ट—दंतपिट्ठमं (सं)
दांत का ब्रुश—दंतधावणं (सं)
दियासलाई—दीवसलागा
दीया—दीवओ, दीवगो
पंखा—विजणं, विअणं
पुराना छाज आदि—कडंतरं
फिटकरी—फलिहा
बत्ती—वत्ती, वत्तिआ
वर्तन—पत्तं, भायणं
बोरा—पसेवो
मशहरी—मसहरी
मूसल—मूसलं, कडंतं
मोम—सीवं (दे०)
रस्सी—रज्जू (स्त्री)
लालटेन—कायदीविया (सं)
लोढा—लोढो
शिला—सिला
साजी—सज्जिआ
साबुन—सव्वक्खारो (सं)
सीमेंट—पत्थरचुण्णं
स्टोव—उद्धमाण (सं)

गृहसामग्री (आसन आदि) (पाठ १८)

काठ का तख्ता—फलगो
काठशय्या—कट्ठसेज्जा
कुर्सी—वेत्तासणं, आसंदी (सं)
चारपाई—पलियंको
चौकी—चउपाइया, आसणं
पीढा—पीढ
बेंच—कट्ठासणं
मेज—पायफलगं (सं)
सोफा—सुहोववेसिया (सं)

गोरस वर्ग (पाठ १३)

कढी—कढिआ (दे०) तीमणं
खट्टी राब—अंबेली (दे०)
खीर—पायसो
घी—घयं, सप्पि, अज्जं
छाछ—तक्कं
दही—दहिं (न)

दही की मलाई—दहित्यारो (दे०)
दूध—खीरं, पयो, दुद्धं, अजिआर (दे०)
दूध की मलाई— करघायलो
नवनीत—णवणीय, दहिउप्फं (दे०)
मट्ठा—घोलं (दे०)
मावा—किलाडो, कूचिआ
रायता—दाहिज (स)
श्रीखंड—छिहुण्डो (दे०)

ग्रह नक्षत्र वर्ग (पाठ ६६)

केतु—केऊ (पु)
ग्रह—गहो
चद्रमा—चदो, हिमयरो
तारा—तारा
नक्षत्र—णक्खत्त
बुध—बुहो
बृहस्पति—बहस्सई (पु०)
मगल—अगारयो
राहु—राहू (पुं)
शनि—सणी (पु)
शुक्र—सुक्को
सूर्य—आइच्चो, दिणअरो

जैन पारिभाषिक (पाठ २७,२८)

आचार्य—आयरिओ
आत्मा—अप्पा
आसक्ति—आसत्ती (स्त्री)
कर्म—कम्म
चतुर्मास—चाउमासो
तप—तवो, तव
द्वेष—दोसो
ध्यान—झाण
पाप—पावो
पुण्य—पुण्ण
प्रमाद—पमायो, पमत्तो
मन—मणं, मणो
राग—रागो
वीतराग—वीयराओ
श्रावक—सावगो, समणोवासगो
श्राविका—साविया, साहुणी, समणी, वासिया, उवासिया
सथारा—अणसण
समाधि—समाही (पु)
सर्वज्ञ—सव्वण्णू
साधु—समणो, साहू
साध्वी—समणी,
स्वाध्याय—सज्झायो

जलाशय वर्ग (पाठ ३५)

कुआ—कूवो, अगडो, अवडो
कुड—कुड
छोटा कुआ—कूविया
छोटा प्रवाह—ओग्गलो
टंकी—जलसगहालयो (स)
तालाब—तडाओ, तलायो, सर
नदी—नई
नल—णल
नहर—कुल्ला
निर्झर—अवज्झरो, ओज्झरो
पुष्करिणी—पोक्खरिणी
प्याऊ—पवा
बाध—बधो (स)
बावडी—वावी
समुद्र—समुद्दो, सायरो

धातु उपधातु वर्ग (पाठ ८२)

अभ्रक—अब्भपडल (दे०)
कलई—सरययरगचुण्ण (सं)

कास्य—कंस
कालालोह—कालायसं
चांदी—रयय, जायरूवं
जस्ता—जसदो
तावा—तंबो
तूतिया—तुत्थं (स)
पीतल—पित्तलं
रागा—रगं (दे०)
लोह—लोह
पारा—पारयो
सीसा—तउ
सोना—सुवण्ण, कणग
स्टील—टीलं

धान्यवर्ग (पाठ ४६,४७)

अरहर—आढकी
उडद—मासो
कागन—कंगू (स्त्री)
कुलथी—कुलत्थो, कुलमासो
कुसुंभ—लट्टा (दे०)
कोदो—कुद्दवो
खेंसारी—तिपुडो
गरहेडुवा—गवेधुआ
गेहूं—गोहूमो
चना—चणओ, चणो
चवला—आलिसंदगो
चावल—तण्डुलो
जौ—जवो
ज्वार—जुआरी
तिनी—णीवारो
तीसी—अलसी
बाजरा—वज्जरी
मक्का—मकायो, महाकायो
मटर—कलायो
मसूर—मसूरो
मूग—मुग्गो
मोठ—वणमुग्गो, मकुट्ठो, तिउडगो
राई—राइ, राइगा
वास के बीज—वंसजवो
शरबीज—चारुगो
सरसो—सस्सवो
साठीधान—साली
सावां—सामयो

न्यायालय वर्ग (पाठ १९)

अदालत—दंडासणं, धम्मासण
अनुवाद—अणुवायो
अपील—पुनरावेयणं
अर्जी—आवेयणपत्तं
इकरारनामा—पइण्णापत्तं (सं)
कचहरी—नायालयो
गवाह—सक्खि (वि)
गवाही—सक्खं सक्खिज्ज
घूंस—उक्कोडा (दे०) उक्कोया
घूंस लेकर कार्य करने
वाला—उक्कोडिय (वि)
जज—नायगरो
जमानत—णासो
जामिनदार—पडिभू (वि) पाडुहुओ
जिस पर दावा किया
गया हो—पडिवक्खियो
दफ्तर—अक्खपडलो (सं)
न्याय—नायो
प्रतिवादी—पडिवाई (वि)
फैसला—णिण्णयो
बयान—उवसत्ती
मुकदमा—अभिओगो

वकील—वायकीलो (सं)
वादी—वाई

पक्षी वर्ग (पाठ ५४,५६,५७)

आडी—आडी (स्त्री)
उल्लू—उलूओ, उलूगो
कंक—कंको
कबूतर—कवोओ
कुरर—कुररो
कोयल—कोइलो, कोइला, परहुतो
कौआ—काओ, पायसो
क्रौंच—कोंचो
खंजन—खजणो
गरुड—गरुडो, गरुलो
गीध—गिद्धो
गौरैया—चडयो
चकवा—चक्कवाओ, चक्कआओ
चकोर—चकोरो
चमगादड—जउला
चाष—चासो
चील—चिल्ला
टिटिहरी—टिट्टिभो
तीतर—तित्तिरो
पपीहा—चायवो, चायगो
बगुला—बयो, बगो
बगुली—बग्गी
बत्तक—वत्तओ
बाज—सेणो
भृंग—भिंगो
मुर्गा—कुक्कुडो
मुर्गी—कुक्कुडी
मैना—सारिआ
मोर—मोरो, अल्लल्ल (दे०)
बटेर—लावओ, लावगो
सारस—सारसो
सुआ—सुओ, कीरो
हंस—हसो

पत्रालय वर्ग (पाठ २२)

डाकिया—पत्तवाहओ
तार—तुरिअसूअओ (स)
तारघर—तुरिअसूअणालयो (स)
पत्र—पत्त
पत्रपेटी (लेटरवक्स)—पत्ताही (पुं) (सं)
पार्शल—पासलो (स)
डाकघर पत्तालयो
डाकघर (प्रमुख)—पमुहपत्तालयो
पोस्टमास्टर—पत्तालयाहिअक्खो (स)
मनीआर्डर—धणाएसो (स)
रजिस्ट्री—पजिआ (स)
लिफाफा—आवेट्ठण (स)

परिवारवर्ग (पाठ ८ से १२)

चाचा—पिइज्जो, चुल्लपिऊ
चाची—पिइज्जजाया, चुल्लपिउजाया
चचेराभाई—पिइज्जपुत्तो,
चचेरी बहन—पिइज्जसुआ
जमाइ—जामाया
दपति (पति-पत्नी)—दपई (पु)
दादा—पिआमहो, अज्जयो
दादी—पिआमही, अज्जआ
दुलहिन—अणरहू, णवा
देवर—दिअरो, देअरो, अण्णओ
देवरानी—अण्णी (दे) अण्णिआ (दे.)
दोहिता—पडिपोत्तयो

ननंद—णणंदा
नाना—माआमहो
नानी—माउम्महो
पति—भत्ता, सामी, पई (पुं)
पत्नी—भज्जा, भारिया, दारा, पत्ती, घरिल्ला, घरणी, गिहीमई
परदादा—पज्जओ, पपिआमहो
परदादी—पज्जिआ, पपिआमही
परनाना—पमाआमहो
परनानी—पमाआमही
पिता—जणओ, बप्पो, पिऊ (पुं)
पुत्रवधू—णोहा, पुत्तवहू, सुण्हा
पोता—णत्तुणियो, पोत्तो
पोती—नत्तुणिया
पौत्र की बहू—णत्तुइणी
प्रपोता—पपोत्तो, पडिपुत्तो
प्रपोती—पपोती
प्रेयसी—पीअसी, पेअसी
फुफेरा भाई—पिउसिआणेयो
फुफेरी बहन—पिउसिआणिज्जा
बडी बहन का पति—भाओ (दे.)
बहन—बहिणी, भगिणी, ससा
बूआ—पिउस्सिआ, पिउच्छा, पिउच्छा
बेटा—पुत्तो, तणयो, सुनू, सुओ
बेटी—पुत्ती, तणया, धूया, दुहिआ
भतीजा—भाइसुओ
भतीजी—भाइसुआ
भाई—भाअरो, भायरो, भाऊ, भाई (पुं)
भाई (छोटा)—अणुओ
भाई (बडा)—अग्गओ
भानजा— भाइणिज्जो, भाइणेयो
भानजी—भाइणिज्जा, भाइणेया
भौजाई—भाउज्जाया, भाउज्जा, भाउज्जाइया
माता—माआ, अम्मो, जणणी
मामा—माउलो
मामी—मामी, मल्लाणी
मामे का बेटा—माउलपुत्तो
मौसा—माउसिआपई
मौसी—माउसिआ, माउसी, माउलिया (दे.)
मौसेरा भाई—माउसिआणेयो
मौसेरी बहन—माउसिआणिज्जा
ससुर—ससुरो
साढू—सालीधवो (सं)
साला—सालो
साला बडा—अवलो (स)
साली—साली
साली बडी—कुली
सास—सस्सू, सासू, अत्ता

पशु (पाठ ५८ से ६१)

ऊंट—कमेलयो, उट्टो
ऊंटनी (सांड)—उट्टी
उदबिडाल—उदबिडालो
उन्मत्तबैल—अलमलवसहो
कुत्ता—कुक्कुरो, सारमेयो
कुत्ती—सुणई, सुणिआ
खच्चर—वेसरो
खच्चरी—वेसरी
खरगोश—ससो
गधा—गद्दभो, रासहो
गाय—धेणु, गो (पुं)
गीदड—सियारो
गेंडा—गंडयो, खग्गी
घोडा—घोडओ, आसो

चिडिया—चडया
चीता—चित्तो
चूहा—मूसिओ
दुष्ट बैल—अलमलो
नीलगाय—गवयो
पाडी छोटी—पड्डिया
वदर—वाणरो
वकरा—अयो
वकरी—अया, छाली
वाघ—सद्दूलो, वग्घो
विल्ली—मज्जारो, बिडालो
वैल—वसहो, वइल्लो
भालू—भल्लू, रिच्छो
भेड—मेसो
भेडिया—विओ, कोओ
भैसा—महिसो
लंगूर—गोलागुलो (स)
लोमडी—खिखिरो
सांड—गोपती
सिंह—सीहो, सिंघो, केसरी
सियाली—सिआली
सूअर—सूअरो, वराहो
सोनचीडी—स्उणचडया
हस्थिनी—करेणुआ, करिणी, हस्थिणी
हरिण—हरिणो
हाथी—हत्थी (पु) करी (पु) गयो

पात्र वर्ग (पाठ २६)

काच की गिलास—कायकसो
कुडी—करंडी
कुलडी—कुल्लडं
गिलास—कस, लहुपत्त
घडा—घडो
झारी—भिंगो
ताबे का घडा—कलसो
तुम्वा (तुवीपात्र)—कुउआ
दही रखने का मिट्टी का पात्र—गग्गरी, छोटा घडा
मटका—कयलं (दे.)
मशक—चिरिक्का (दे.)
लोटा—करगो
सकोरा—कोडिअ

प्रसाधन सामग्री (पाठ ३२)

अजन—अजणो
इत्र—पुप्फसारो
कंघी—फणिहो, कंकसी (दे.)
केशो का जूडा—आमेलो
क्रीम—सरो
चोटी—छेडो (दे.)
तेल—तेल, तेल्ल
दर्पण—दप्पणो, आयसो
नेलपालिश—णहरजणं (स)
पाउडर—चुण्णअं (सं)
पान—तवोल
पुष्पमाला—आमेलओ
मेहदी—मेहदी
रूज—कवोलरजण
लिपस्टिक—ओट्ठरंजणं
सिंदुर—सेंदुरो
स्नो—हैम (स)

फलवर्ग (पाठ ४८, ४९

अंगूर—दक्खा
अंजीर—काउवरी
अखरोट—अक्खोडवीय
अनन्नास—अणणास

अनार—दाडिमो
अमरूद—पेरुओ
आम—अंबं, सहआरफल
आलुबुखारा—आरुअं (सं)
इमली—चिंचा, कुट्टा
कटहल—पणसो
कपित्थ—कविट्ठो
कमरख—कम्मरंगो (सं)
काजू—काजूअगो (सं)
किसमिस—अवीया, ईसिवीया (सं)
केला—कयलो
खज्जूर—खज्जूरो
खरबूजा—खब्बूय, दसंगुलं (स)
खुमानी—खुमाणी (सं)
जामुन—जंबूओ, जंबू
तरबूज—कालिंगो
तालमखाना—कोइलक्खी (त्रि.)
नारंगी—नारंगं
नारियल—णारिएलो
नासपाती—अमियफलं
नीम का फल—णिंवोलिया
पपीता—मट्टकक्कडी
पिस्ता—णिकायगो (सं)
पीलू—पीलू (सं)
फालसा—अप्पट्ठि (स)
बडहर—लउचो, एरावयो
बादाम—वायायो, नेत्तोवमफलं
बिजौरा—माहुलिंगो
बेल—वेलो
बोर—बोरं
मुनक्का—गोत्थणी (सं)
मौसंबी—मोसंबी
महतून—तुओ, तूलो (सं)

सिंघाडा—सिंघाडयो, सिंघाडगं
सुपारी—पोप्फलं
सेव—सेवं (सं)

महापुरुष (पाठ ७)

अरहंत—अरहंतो
आचार्य—आयरियो
उपाध्याय—उवज्झायो
जिन—जिणो
पार्श्वनाथ—पासणाहो
बुद्ध—बुद्धो
महावीर—महावीरो
शिव—हरो
साधु—साहू (पु)
सिद्ध—सिद्धो, अदेही (पुं)

मासवर्ग (पाठ ८५)

आषाढ—आसाढो
आसोज—आसोओ
कार्तिक—कत्तिओ
चैत्र—चइत्तो
जेठ—जेट्ठो
पोष—पोसो
भाद्रव—भद्दवयं
माह—माहो
मृगसर—मग्गसिरो
वैशाख—वइसाहो
श्रावण—सावणं
फाल्गुन—फग्गुणो

मिठाईवर्ग (पाठ २५)

इमरती—अमिया, अमया (सं)
कलाकंद—कलाकंदो (सं)
कसार—कसारो
खाजा—महुसीसो

गजक—गजओ (म)
गुज्झिया—संयावो, गोझिया
गुलाब जामुन—दुद्धपूअलिया (स)
घेवर—घेउरो, घयपुण्णो
जलेबी—कुंडलिणी
पपडी—पप्पडो
पेठे की मिठाई—कोहंडी
पेड़ा—पिंडो (स)
बालूशाही—महुमठो
मालपुआ—अपूयो
मिठाई—मिट्ठन्न
मोहनभोग—मोहणभोओ
रबडी—कुच्चिया (स)
रसगुल्ला—रसगोलो (स)
लड्डु—लड्डूओ, मोदओ
लापसी—लप्पसिया (दे०)
बर्फी—हेमी
शक्कर पारा—सक्करावालो

(यन्त्र पाठ ९७)

घडीयन्त्र—घडीजंत
टाइपराइटर—लेहणजत
जीरोक्स—विज्जुछायाचित्त
टेलीफोन—वत्ताजत
थर्मामीटर—तावमावअ
दूरवीक्षण—दूरविक्खण
ध्वनिमजूषा—झुणिमजूसा
बिजली का पखा—सपावीजण
रेडिया रिकार्ड—झुणिखेवअजत
लाउडस्पीकर—सुइजत
जेनरेटर—जणित्तं

यान (पाठ ९९)

अगनबोट—अग्गिपोओ
ऊंटगाडी—उट्टजाण
गदहा गाडी—गद्दभजाण
घोडा गाडी—आसजाण
जल जहाज—जलजाणं
नौका—णावा
ट्रक—भारवाहजाण
बैल गाडी—बलीवद्दजाण
भैंसा गाडी—महिसजाण
मुसाफिर गाडी—परिजाणिओ
मोटर—तेलरहो, तेलजाण
रथ—रहो
रेलगाडी—वप्फगं (स)
बस—परिवहण (सं)
वायुयान—वाउजाण (सं)
साइकल—पायजाण
स्कूटर—लहुतेलजाण

रत्न और मणि (पाठ ६४)

गोमेद—गोमेयो, गोमेय
चंद्रकान्तमणि—चदकंतो
नीलम—इदनीलो, नीलमणी (पु)
पन्ना—मरगयो, मरअदो, मरगय
पुखराज—पुप्फरायो, पुप्फरागो
माणिक—माणिक्क
मूगा—पवालो, पवाल
मोती—मुत्ता
लहसुनिया—वेडुरिओ, वेरुलिय
सर्पमणि—सप्पमणी (पु)
सूर्यकातमणि—सूरकंतो
स्फटिकमणि—फलिहो
हीरा—वइरो, वइर

रसोई उपकरण (पाठ १६)

कटोरा—कट्टोरगो

कडाही—कडाहा, कवल्लो
कठौती—चुण्णमद्दणी (सं)
कुर्छी—दव्वी
चमची—कडुच्छयो (दे०)
चिमटा—संदसो
चुल्हा—चुल्ली
चुल्हे का पिछला भाग—अवचुल्लो
छाज—चिल्लं (दे.)
डोयो—डोओ
ढकना—पिहाणं
तमेली—सुफणी (दे.)
तवा—काहिल्लिआ (दे.)
थाली—थालिया, थाली, थाल
प्लेट—सरावो (सं)
संडासी—संडासं, संडासो
हाडी—हंडिआ, कंदु

रसोई मसाला (पाठ १५)

जीरा—जीरयो
तेजपत्ता—तेजपत्त
धनिया—धाणा
मसाला—वेसवारो
मीर्च—मिरिअं
राई—राइगा
लवण—लोण
हल्दी—हलिद्दा, हलद्दी
हीग—हिंगू

राजनीतिवर्ग (पाठ ८१)

उपराष्ट्रपति—उवरट्ठवई (पुं)
कलेक्टर—जिलाहीसो
छावनी—छायणिया
दूत—दूयो
निर्वाचन—णिव्वायणं
नेता—अग्गणी
प्रतिनिधि—पडिणिही (पु)
प्रधानमंत्री—पहाणमती (पु)
प्रस्ताव—पत्थावो
मंत्री—मंती (पु)
मुख्यमंत्री—मुहमती (पु)
राज्यपाल—रज्जवालो
राष्ट्रपति—रट्ठवई (पु)
विधानसभा—विहाणसहा
विधायक—विहाअगो (स)
वोट—मयं
संसद—संसया
सदस्य—सब्भ (वि)
सरपंच—गामणी
सेनापति—सेणावई (पु)

रेंगने वाले आदि प्राणी (८६)

अजगर—अयगरो, अजगरो
गिरगिट—सरडो
गिलहरी—तिल्लहडी (दे०)
खाडहिला (दे०)
गोह—गोधा
छिपकली—घरोलिया, घरोली
छुछुंदर—छच्छुंदरं, छच्छुंदरो (दे०)
नेवला—णउलो
मछली—मच्छो
बिच्छु—विच्छिओ
साप—सप्पो, भुयंगो

रोग (पाठ ८४, ८५)

अंडकोश की वृद्धि—अंडवड्ढणं
अस्थि मे सोजन—विद्दही (पु) (सं)
आंधाशीशी—अवहेडगो
आफरो—गुदगुहो (सं)
उदररोग—उदरं

कपनवात—वेवयो
कफ—कफो
काणापन—काणिय
कूवडापन—खुज्जियं
कोढ—कोढो
खासी—कासो
खाज—कच्छू (स्त्री)
गजापन—केसघायो (सं)
गूगापन—मूय
ग्रीवाफूलन—गंडमाला
छीक—छिक्का (दे)
जलंधर—जलोयर
जुखाम—पडिस्सायो
दस्तो का रोग—गहणी (स्त्री)
नासुर—नाडीवणो
पंगुता—पीढसप्पि (पुं)
पथरी—मुत्तकिच्छ
पागलपन—अवमारो
पित्त—पित्तो, पित्तं
पीठ मे गाठ—पिट्ठिगंठि
पेट की गाठ—उदरगंठि
प्रमेह—पमेहो
फुनसी—फुडिआ
ववासीर (मस्सा)—अरसो
बुखार—जरो
व्याऊ—पायफोडो
भगंदर—भगदरो
भस्मकरोग—गिलासिणी
राजयक्ष्मा—रायसि (पु)
वमन—वमण
वायु—वाऊ
व्रण—फोडो
शोथ—सूणिओ
हस्तविकलता—कुणियो
हाथीपगा—सिलिवड (वि)
हिचकी—हिक्का

रोगीवर्ग (पाठ ८६)

अंधा—अंधो
कफ का रोगी—सिलिम्हिओ
काणा—काणो
कूवडा—खुज्जो
कोढी—कोढिओ
खासी रोग वाला—कासिल्लो (वि)
खाज का रोगी—कच्छुल्लो
गूगो—मूयो
चितकवरा—सवलो
दस्त का रोगी—अइसारिओ
दाद का रोगी—दद्दुलो
पित्त का रोगी—पित्तिओ
प्रलव अड वाला—पलंवडो
वहरा—वहिरो
बुखार वाला—जरि (पुं)
वेहोशी वाला—मुच्छिर (वि)
मोटे पेट वाला—तुदिलो
लंगडा—पगू (पुं)
लूला—कुटो
वामन—वडभो
वायु का रोगी—वाडओ

रोटी आदि वर्ग (पाठ २४)

आटा—चुण्णं, अट्टगं (दे०)
उडद की रोटी—मासहट्टिआ
गूदा हुआ वासी आटा—अवसामिआ (दे०)
गेहू का आटा—गोहूमचुण्णं
चने का आटा—वेसण

चने की रोटी—चणग रुट्टिआ
जौ की रोटी—जवरुट्टिआ
डबल रोटी—अब्भूसो (सं)
परोठा—घयचोरी
पूरी—पोलिआ
फुलका—छप्पत्तिआ
बाजरे की रोटी—वज्जरीरुट्टिआ
बिस्कुट—पिट्ठगो (सं)
मक्की की रोटी—मकायरुट्टिआ
मोठ की रोटी—मकुट्ठरुट्टिआ
मैदा—समिआ
रोट—रोट्टगो
रोटी—रुट्टिआ (दे०)
बाटी—अंगार परिपाचिआ (सं)

वस्ती और मार्ग वर्ग (पाठ ६४)

उपनगर—उवणयरं
कुटिया—डरिया (दे०)
गली—वीहि (स्त्री)
गांव—गामो
गुफा—गुहा, कफाडो (दे०)
छोटी वस्ती—पल्ली (स्त्री)
झोंपडी—झुंपडा (दे०)
प्रासाद—पासायो,
बडा कस्बा—दोणमुहं
व्यापारी नगर—पट्टणं
पगडंडी—पद्धइ (स्त्री)
मार्ग—मग्गो
मुहल्ला—गोमुद्दा (दे०)
राजधानी—रायहाणी
शहर—णयरं
बडेशहर—महाणयरं
सडक—रायमग्गो
हवेली—हम्मिओ (दे०)

वस्त्रवर्ग (पाठ ३६, ३७)

अंगोछा—अंगपुंछणं
ओवरकोट—बृहइया (सं)
ऊनीवस्त्र—रोमजं, ओण्णेयं
ओढनी—ओयड्ढी (दे०)
कंचली (ब्लाउज)—कंचुलिआ
कुर्ता—कंचुओ
कोट—पावारो
कोरावस्त्र—अणाहयवत्थं
कौपीन—अवअच्छं (दे०)
घाघरा—घग्घरं
चड्डी—अद्धोरुगो, अद्धोरुगो
चादर—पच्छयो
जोडे हुए वस्त्र—कंठी
टोप—सिरत्ताणं
टोपी—सिरक्कं
तकिया—उवहाणं
दुपट्टा—उत्तरीयं, उत्तरिज्जं
धोती—अहोवत्थं, कडिवत्थं
धोयावस्त्र—धोअवत्थं
पगडी—उण्हीसं
पतलून—पतलूणो (सं)
पायजामा—पायजामो
पेटीकोट—अंतरिज्जं
पेंट—अप्पईणं (सं)
बूटेदार कौसंभवस्त्र—घट्टंसुओ
मलय देश का सूक्ष्म वस्त्र—मलीरं
मोटा वस्त्र—पत्थीणं
रजाई—नीसारो (सं)
रात्रिपोशाक—नत्तवेसो
रूमाल—पडपुत्तिया

रेशमीवस्त्र—कोसेय
लहंगा—चलणी, चडातक
बारीकवस्त्र—पम्हयो
वासकट—वासकडि (स)
शेरवानी—पावारओ (स)
सलवार—सूअवरो
साडी—साडी
सूतीवस्त्र—कप्पास

वाद्य (पाठ ८७)

घंटा—घटी
छोटी घटी—घंटिया
झालर—झल्लरी
डमरु—डमरुगो
डुग्डुगी—डिंडिम
ताल—तालो
तूर्य—तूरिअ
नगारा (ढोल)—ढोल्ल
मृदग—मुइगो
वीणा—तती
शख—सखो

विद्यालय (पाठ ३४)

अनुत्तीर्ण—अणुत्तिण्णो
इन्सपेक्टर—णिरिक्खओ (स)
उत्तर पत्र—उत्तरपत्त
उत्तीर्ण—उत्तिण्णो
उपकुलपति—उवकुलपई
कक्षा—कक्खा
कलम—लेहणी
कालाश—समयविभागो
कॉलेज—महाविज्जालय
कुलपति—कुलपई
छात्र (विद्यार्थी)—छत्तो, विज्जट्ठी (पु)
छुट्टी पत्र—अवगासपत्त
दवात—मसीपत्त
परीक्षा—परिक्खा
पुस्तक—पोत्थय
पेन—लेहणी
पेन्सिल—पेसिलो
फुट—मावअ
प्रश्न—पण्हो, पण्हा
प्रश्नपत्र—पण्हपत्त
प्रिंसिपल (प्राचार्य)—पहाण सिक्खवओ
यूनिवर्सिटी—विस्सविज्जालयो
विद्यालय—विद्यालयो
विभागाध्यक्ष—विभागज्झक्खो
वस्ता—वेढणं
वेतन—वेयण
बोर्ड—फलग
शिक्षा—सिक्खा
स्नातक—ण्हाओ
स्याही—मसी

वृक्षवर्ग (पाठ ५०)

अशोक—असोयो
चदन—चदणो
चिरौंजी—पिआलो
नीम—णिवो
पीपल—अस्सत्थो
पीलू—पीलू (पु)
बबूल—बब्बूलो
मौलसिरी—वउलो
बरगद—वडो

वास—वसो

वृत्तिजीवीवर्ग (पाठ ७३ से ७६)

अहीर—अहिरो, गोवालो
कंबल बेचने वाला—कंबलिओ
कसाई—सोणिओ
कारीगर—सिप्पी, कारु
किसान—किसीवालो
कुम्हार—कुंभआरो, कुलालो
गडरिया—अयाजीवो, अयापालो, मेसवालो
गवैया—गायओ, गाओ
घसियारा—तणहारो
चपरासी—पेसो
चटाई बनाने वाला—वरुडो
चिकित्सक—चिइच्छओ
चित्रकार—चित्तयारो
चुराई वस्तु को खोजकर लाने वाला—कूवियो
चोर—चोरो, तक्करो
चौकीदार—पहरी, दारवालो
जादूगर—इंदजालियो
जारपुरुष—अणडो (दे०)
जासूस—चरो
जिल्दसाज—पोत्थारो
जुलाहा—कोलिओ, पडयारो
जुवारी—कितवो
ज्योतिषी—जोइसिओ, खणदो (स)
ठग—वंचओ, पतारगो
ठठेरा—तबकुट्टओ
डाकू—दस्सू (पु)
ड्राइक्लीनर—णिण्णेजओ (स)
तंबोली—तंबोलियो
तेली—तेल्लिओ, घचिओ
दर्जी—सूइयारो, सोचिओ
धोबी—रजओ
नाई—णाविओ, ण्हाविओ
नाचनेवाला—णच्चओ
नौकर—सेवगो, भिच्चो
पसारी—गंधिओ
पाकिट मार—छेओ
प्रतिमा बनाने वाला—पडिमायारो
बजाने वाला—वायगो
बढई—रहयारो, वड्ढई, तक्खो
बनिया—वणिओ, वावारि (पु)
भंगी—समज्जओ
भडभूजा—भट्ठयारो
मच्छीमार—केवट्टो, धीवरो
मजदूर (कुली)—भारहरो
माली—मालिओ, मालायारो, आरभिओ
मिस्त्री—जंतिओ
मूल्य लेकर धान काटने वाला—अत्थारिओ
मोची—चम्मयारो, मोचिओ
शिकारी—लुद्धो
रंडीबाज—खिंगो
रसोइया—पाचओ, सूदो
लुहार—लोहारो, लोहयारो
वैद्य—वेज्जो
संपेरा—आहितुंडिओ
सुनार—सुवण्णयारो, सोवण्णिओ
सुराविक्रेता—सुंडिओ, सोंडिओ
हलवाई—कादविओ
हिंजडा—चिंधपुरिसो

व्यापारवर्ग (पाठ ३२)

आफिस—कज्जालयो
आयात—आआओ (वि)
ऋण—उल्ल
कारखाना—कम्मसाला
खरीदना—कयो
खर्चा करने का धन—परिव्वयो
ग्राहक—गाहगो
दुकान—आवणो, हट्टो, अट्टयो
धन—धणं
नगद—टको
निर्यात—णिज्जायो
बनिया—वणिओ
बाजार—विवणि (पुं) वणिअमग्गो
बेचना—विक्कयो
बेचनेवाला—विक्कइ (वि)
रुपया—रूवगो, रूवग
लेन देन—परियाण
वस्तु—वत्थु
ब्याज—कलतर
व्यापार—ववहारो, वाणिज्ज, वावारो
व्यापारी—वावारि (पु) वाणिअयो

शरीर के अंगउपांग (पाठ ६७ से ७२)

अंगूठा—अंगुट्ठो
आंख—णयण, नेत्त, चक्खु (न)
आंख की पुतली—अक्खरा
आंत—अंत
उंगली—अंगुली
एडी—पण्हिया
ओठ—अहरो, ओट्ठो
कंठ—कंठो
कंठमणि—अवडू, किआडिआ
कंधा—असो
कपाल—कवालो, भालो, कप्परो
कमर—कडी
कलेजा—हियय
कांख—कक्खो, भुअमूल
कान—कण्णो, सोत्त, सवणो
केश—केसो, बालो, कयो
कोहनी—कुहुणी
खून—रत्त, रुधिर
खोपडी—पणिआ
गाल—कवोलो, गल्लो
घुटना—जाणु (न) जण्हुआ
चर्बी—मेदो, मेद, वसा
छाती—उरो, वच्छ
जांघ—जघा, टका
जीभ—जीहा, रसणा
झिल्ली—झिल्लिआ
टांग—टंगो
ठोडी—चिबुअ
तिल—तिलो
दांत—दसणो, दंतो
दाढी—दाढिआ
दाढी मूंछ—समस्सू
धड (सिर रहित शरीर)—कमधो
नस—सिरा
नाक—णासिआ, णासा
नाखून—नहो
नाखून के नीचे का भाग—पडिसेणो
नाभि—णाही (पु)
नितंब—णियंबो
पसली—पासो
पीठ—पिट्ठ
पैर—चरणो, पाओ
प्लीहा—पिलिहा

भापण—झपणी, पम्हाइ
फेफडा—फुप्फुस (दे०)
भुजा—भुआ, बाहू
भौ—भुमया, भमुहा
मज्जा—मज्जा
मसा—मसो
मसूडा—दतवेट्ठो
मास—मस
मुंह—वयण, मुह
मुट्ठी—मुट्ठिआ, मुट्ठी
मूछ—आसरोमो
लिंग—सिण्हो, सिण्ह
वीर्य—वीरिओ, सुक्को
सिर—मत्थओ, सिरं
स्तन—थणो
हड्डी—अत्थी (पु)
हथेली—करयल
हाथ—करो, पाणी, (पु) हत्थो

शरीर विकार (पाठ ३१)

अधोवायु (पादना)—वायनिसग्गो
आख का मैल—दूसिआ
आसू—असु
उच्छ्वास—ऊससिअ
कान का मैल—किट्ट
खासी—खासिअं, कासित
खुजली—खज्जू (स्त्री)
चक्कर—भमली
छींक—छीअ
जभाई—जिंभा, जिंभिआ
जीभ का मैल—कुलुअ
डकार—उड्डुओ (दे०)
दात का मैल—पिप्पिया (दे०)
थूक—थुक्को
नाक का मैल—सिंघाणं
नि श्वास—नीससिअ
पसीना—सेओ, घम्मो
मल—गूह, मल
मूत्र—मुत्त
शरीर का मैल—जल्लं (दे०)
श्लेष्म—खेलो
हिचक्की—हिक्का, मुट्ठिक्का (दे०)

शस्त्रवर्ग (पाठ ६०, ६१)

अकुश—अकुसो
आरा—करकयो
कटार—करवालिआ
कुल्हाडी—कुहाडी, फरसू
कैंची—कत्तिया
गदा गया
गुप्ति—करवालिआ
चक्र—चक्को
चाबुक—कसो
छुरी—छुरिया
टैंक—सत्थावरुह (स)
ढाल—फलगो
तलवार—असी (पु) खग्गो
तोप—सयग्घी (दे० स्त्री) घरट्टी
त्रिशूल—तिसूल
दाती—लवित्त
धनुष—धणू
पत्थर फेंकने का अस्त्र—गुफण
पिस्तौल—गुलिअत्थं (सं)
बदूक—मुसुढि (दे० स्त्री)
बब—फोडत्थ (स)
बाण—सरो
भाला—कुंतो
मशीनगन—गुलिआजत (स)

मुद्गर—मोग्गरो
राइफल—कुच्छिभरियत्थ (स)
लाठी—लगुडो
बर्छी—सल्ल
वज्र—वज्जो
सरोता—सकुला
सूई—सूई
हथोडा—घणो
हथोडी—हत्थोडी

शाकवर्ग (पाठ ४२, ४३)

अदरख—सिंगवेर
आलु—आलू
करेला—कारिल्ली, कारेल्लय
काकडी, खीरा—कक्कडी
केर—करीरफल
केले का साग—केली
कोहला—कुम्हडी
गवार फली—गोराणी, दढवीआ, वाउइया
गाजर—गाजर, गिंजण (स)
गोभी—गोजीहा (स)
चने का साग—चणगसाग
चोपातियासाग—सोत्थीओ
चौलाई—तंदुलेज्जगो
टमाटर—रत्तगो (स)
टिंडा—डिंडिसो (स)
तोरु—घोसाडइ, घोसालइ (स)
धनिया—कुत्थूभरी
परवल—पडोलो, पडोला
पालक—पालक्का
पोदीना—पुदिणो, रुइस्सो
प्याज—पलंडू
फली—सिंवा
बैंगन—वायंगण (दे०) विंताणी
भिंडी—भिंडा
मक्का—मकायसाग, महाकायसाग
मकोय—कागमाई
मटरशाक—कलायसागं
मूली—मूलग
लहसुन—लसुण
लौकी—अलाउ
वत्थुआ—वत्थुलो
शकरकंदी—रत्तालु (स)
सागरी—समीफल
सूरणकंद—सूरणं
हल्दी—हलद्दा, हलद्दी

सालावर्ग (पाठ ६७)

अट्टणसाला—व्यायामशाला
उट्टसाला—रसाला
उदगसाला—उदकगृह
उवट्ठाणसाला—सभास्थान
कम्मसाला—कारखाना
करणसाला—न्यायमंदिर
कूडागारसाला—षड्यंत्र वाला गृह
गंधव्वसाला—संगीतगृह
गंधियसाला—दारु आदि गंध वाली चीज वेचने की दुकान
गद्दभसाला—गधा रखने का स्थान
गोणसाला—गोशाला
घयसाला—अनाथमंडप
घोडगसाला—घुडसाल
फरुससाला—कुंभारगृह

सुगंधित द्रव्य (पाठ ६३)

अगर—अगरो
इत्र—पुप्फसारो

कंकोल—ककोलो
कपूर—कप्पूरो
कस्तूरी—कत्थूरी, कत्थूरिआ
कुंदरु—कुंदुरुक्को
केवडाजल—केअइजल
केसर—कुंकुमं
खस—उसीर
गुलाबजल—पाडलजल
गूगल—गुग्गुलो
चदन—चंदणो
तगर—तगरो, टगरो
नख—नखं (सं)
मुलहठी—लट्ठिमहु (स)
लोहबान—लोवाणो (स)
शिलारस—सिल्हग
सुगधबाला—ह्रिवेरो

सुगंधित पत्र पुष्प वाले पौधे व लता (पाठ ९२)

अगस्ति—अगत्थियो
अडहुल—जासुमणो
कमल—पोम्मं
कूजा—कुज्जयो
केवडा—केअगो
गुलाव—पाडलो
चपा—चपा, चंपयो
चमेली - जाई, मालई
जूही—जूही, जूहिआ
तिलक—तिलगो, तिलयो
तुलसी—तुलसी
दौना—दमणगो, दमणग
मरुआ—मरुअगो, मरुवयो, मरुअओ
मोगरा—मल्लिआ
मौलसिरी—बउलो
वासंती—णवमालिआ
सिन्दूर—सिन्दूर

स्त्रीवर्ग (पाठ ७७ से ८०)

अच्छे केश वाली—सुएसी
अध्यापिका—उवज्झायणी
अप्सरा—किंनरी
उपपत्नी—अहिविण्णा
ऊंचे नाक वाली—तुगणासिआ
कामी स्त्री—कामुआ
कुलटा—कुलडा, अज्झा
क्षत्रियाणी—खत्तिआणी
गध द्रव्य वेचने वाली—गंधिआ
गाने वाली—मेहरिआ, मेहरी
गृहपत्नी — गिहिणी
चचला स्त्री—चवला
चंडालिनी—आइखिणिया
चतुरस्त्री—णिउणा
जादूगरी—किच्चा
ज्योतिषीस्त्री—गणई
दासी—दासी
दूती—अतीहरी
धनी की स्त्री—धणपत्ती, धणमती
धाई—धाई, धारी
धीवर की स्त्री—धीवरी
नटी—नडी
नर्तकी—णट्टई
नायिका—णाविआ
नौकरानी—डुल्लसिआ
पटरानी—महिसी
पनिहारी—पाणिअहारी
परतंत्रस्त्री—आविउज्झा (दे०)

पान बेचने वाली—डोंगिली (६०)
पुत्रवती—पुत्तवई
फूल बिनने वाली—अंवोच्ची
बच्चों को खेल कूद कराने वाली—
  किड्डुविया
बड़े पेट वाली—दीहोअरी
ब्राह्मणी—वभणी
मनुष्य की स्त्री—माणुसी
मोटी स्त्री—पीवरी
युवती—जुवई
राक्षसी—रक्खसी, पिसल्ली
लुहारिनी—लोहआरी
वन्ध्या—अवियाउरी
वृत्ति लिखने वाली—वुत्तिगारी
वेश्या—पणसुंदरी
शीघ्र प्रसव वाली—अणुसूआ
सुन्दरी—सुन्दरी
सुनारिन—सुवण्णआरी
सूत्र बनाने वाली—सुत्तगारी
सेठानी—सेट्ठिणी

स्पर्शवर्ग (पाठ ८३)

कठोर—कक्कम (वि)
कोमल—मउय (वि)
गरम—उसिण (वि)
चिकना—णिद्ध
ठंडा—सीय (वि)
न भारी न हल्का—अगरुलहु (वि)
भारी—गरुय (वि)
रूखा—लुक्ख (वि)
शीतोष्ण—सीउण्ह
हल्का—लहुय (वि)

स्फुट

अंकुर—अंकुरो (६१)
अंगारा—इंगारो, अंगारो (१६)
अज्ञात—अमुणिअ (१००)
अंडा—अण्ड (१०५)
अधिक चर्बी वाला—पमेडलो (६३)
अनवसर—अवरिक्क (६८)
अनार्य देश—पच्चंतो (१०६)
अनुयायी—अणुगमिर (वि) (१०३)
अपक्व—आमो (४३)
अपना घर—णियगिह (६)
अपराधी—अवगाहिल्लो (५०)
अपशकुन—अवसउणं (१०३)
अभाव—अहावो, अभावो (७२)
अभिषेक—अभिसेओ, अभिसेगो (६०)
अलं—अलाहि (१०८)
अल्प—अप्पं (१०१)
असंतोष—असंतोसो (१०५)
असमर्थ—असथड (वि) (६८)
अस्थि—अत्थि (न) (४७)
आकाश—आयासं, (५७)
आकृति—आकिई, आगिई (८०)
आज्ञाकारी—आणाइत्त (वि) (१०४)
आजकल—अजत्ता (१३)
आधा कर्म दोष से युक्त आहाकड
  (वि) (११)
आरोप—अलग्ग (६८)
आर्द्र—अद्द (६४)
आराम—सुह (१०१)
आवाज—झुणि (पुं) (१०१)
आशा—(आसा) (१०६)
आश्चर्य—अब्भुयं (६८)
आयुर्वेद—आउव्वेयो (६४)
आशीष—आसिमा (८)

फुनसी—फुडिया (६६)
फोटु—पडिच्छाया (६६)
वदर—पवओ (१००)
वजाना—वायण (८७)
वजे—वायणसमयो (सं) (२३)
वर्फ—हिम (८३, १०६)
वस—अलाहि (१०८)
वहुश्रुत—वहुस्सुओ (१०७)
वातचीत—वत्ता, पग्किहा (४०)
वाप—खतओ (१०६)
ब्राह्मण—वभण (७५)
भडार—कोट्ठागारो (७८)
भडार—भंडारो (१०२)
भक्त—भत्तो (८७)
भक्ति—भत्ति (स्त्री) (८०)
भरपूर—णिब्भर (वि) (१०४)
भाग्य—भग्गं (७४)
भिखारी—भिक्खारी (८)
भीत—भीइ (१०४)
भुना हुआ—भुज्जिअ (वि) (४५)
भूतवादिक—भूयवाइयो (१०८)
मछली—मच्छा (७६)
मछली पकडने का जाल—पवंपुलो (७६)
मदिरा—मइरा, सुरा (५१)
मनोरथ—मणोरहो (३६)
मर्यादा—मज्जाया (३६)
महल—पासायो (१०२)
मासरहित—णिम्मस (१०४)
मायका—माउघरो, माउघर (१०४)
मारने के लिए—उद्दवेउ (१०५)
मारीरोग—असिव (१०८)
मालिक—सामी (११)
मिठाई—मिट्ठन्नं (२५)
मुसलमान—जवणो (६३)
मुर्गी—कुक्कुडी (१०५)
मूर्खता—मुक्खत्तण (१०५)
मूल्य—मुल्लो (३६)
मैथुन—अवहिट्ठ (दे०) (६८)
मैला—मलिण (१०८)
म्यान—खग्गपिहाणयं (६१)
यत्र—जत (६३)
यात्री—जत्ती (१०३)
युद्ध—जुज्झं (६६)
रक्षा—ताण (३७)
रसोई बनाने वाली—महाणसिणी (१०२)
रहस्य—रहस्स (वि) (१०२)
राख—भस्सं (३६)
रुपया—रूवग, रूवगो (५२)
रेल की लाइन—लोहसरणी (पु. स्त्री) (६६)
रोग—आमयो (१०८)
रोगी लुक्को (२३)
लक्षण—लक्खण (६८)
लब्धि—लद्धी (स्त्री) (७६)
लहर—उम्मी (स्त्री) (५३)
लाइसेंस—आणावणं (६६)
लापरवाही—अजागरुअया (१०२)
लालच—लोभो (१०५)
वंशलोचन—वसरोयणा (५०)
वर्षा—वरिसा (१०१)
वाचाल—मुहरो (६३)
वाद्य—वाइअ (८७)

स्वच्छंदी—सच्छंदो, अणोहट्टयो (दे.) (५१)
स्वतंत्र—सतंत (वि) (७६)
स्वप्न—सिविणं (१०३)
स्वभाव—सहाओ (३६)
स्वर—सरो (६६)
स्वरूप—सरूव (७८)
स्वस्थता, स्वास्थ्य—सत्थं (२३)
स्वागत—सागयं (३६)
स्वाद—साओ (४६)
स्वाधीन—अहीण (वि) (१०३)
स्वेद (पसीना)—सेअं (३२)
हजामत—उवासणा (७३)
हलवाई—कंदविओ (२५)
होटल—पणभोयणालयो (२५)

परिशिष्ट ६ : एकार्थक धातुएं

धातुओं का अर्थ हिन्दी के अकारादि क्रम से

(कोष्ठक मे संख्या पाठ की सूचक है)

अ

अटकाना—पडिबंध (७६) रुंध (८३)
अतिक्रमण करना—अइक्कम (३४)
अतिपात करना—अइवाअ (२५)
अदृश्य होना—तिरोहा (५८)
अनुताप करना—अणुतप्प (३१)
अनुभव करना—पच्चणुभव (७०) पडिसंवेय (७९)
अनुराग करना—रज्ज (८२)
अनुसरण करना—पडिअग्ग, अणुवच्च (१०३)
अन्तर्हित करना—तिरोहा (५८)
अन्यथा करना—कूड (४७)
अपने को अमर समझना—अमराय (२५)
अपमान करना—अवमन्न (३०)
अभिमान करना—मज्ज (५२)
अभिलाषा करना—अहिलस (२४)
अभिषेक करना—अइच (५७)
अभ्यास करना—सील (९३)
अर्चा करना (अर्चना करना)—अरिह (८)
अर्जन करना—अज्ज (३३)
अर्पण करना—पडिणिज्जाय (७५)
अलग होना—देखो टूटना
अवकाश पाना—ओवास (१०१)
अवगाहन करना—ओवाह, ओगाह (१०७)
अवज्ञा करना—हील (९१)
अवलोकन करना—देखो देखना
अवसाद पाना—अवसीअ (१०१)
अश्व को कवच से सज्जित करना—पक्खर (६८)
अस्फुट आवाज करना—सिंज (९२)
अहंकार करना—थम्भ (५४)

आ

आक्षेप करना—णीरव, अक्खिव (१०५)
आक्रमण करना—अक्कम (३४) ओहाव, उत्थार, छन्द (१०५)
आक्रोश करना—अक्कोस (१४) सजल (३१) पडिकोस (७४)
आचमन करना—आयम (४२)
आचरण करना—समायर (३१) आयर (४२)
आच्छादन करना—थय (५४) पक्खोड (६७) पडिपेहा (७५)
आच्छोटन करना—देखो झाडना
आज्ञा करना—देव (५६)
आतापना लेना—आयाव (४३)
आदत डालना—देखो अभ्यास करना

किसी अंक को समान अंक
से गुणा करना—वग्ग (८८)
क्रीडा करना—ग़ील (१३) किड्ड
(४६) रम (३२) दिव (५८)
सखुड्ड, खेड्ड, उब्भाव, किलिकिंच,
कोट्टुम, मोट्टाय, णीसर, वेल्ल
(१०६)
कुत्ते का भौंकना—बुक्क (३६) भुक्क
(६५) भस (१०७)
कूटना—कुट्ट (१७)
कूदना—उकुद्द (१६) कुल्ल
(४७) वग्ग (८७)
कृपा करना—अणुग्गह (३६) दय (५७)
अवहाव (१०५)
क्रोध करना—कुप्प (२४) आरूस
(४४) पकुप्प (६७) जूर, कुज्झ
(१०४)
क्रोधित होना—रूस (७)
क्लेश पाना—किलिस्स (१६) किलेस
(४६)
क्वाथ करना—देखो उबालना
क्षमा करना—मरह (८१)
क्षीण होना—णिज्झर, झिज्ज
(१००)
क्षुब्ध करना—धरिस (५२)
क्षुब्ध होना—खुब्भ (४८) खउर,
पड्डुह (१००)
क्षोभ उत्पन्न कर हिला देना
(क्षोभ पाना)—पक्खुभ (६८)

ख

खड़खड़ करना—सचुण्ण (६६)
खण्डित करना (छेदना)—दुहाव,
णिच्छल्ल, णिज्झोड, णिव्वर,
णिल्लूर, लूर, छिंद (१०४)
खदेड़ना—हुक्क (६१)
खरीदना—किण (१५) कीण (४६)
खासना—खास (१३) कास (४६)
खाना—भुज (६) गस (४६) जम्म
(५१) भक्ख (६३) आहार
(६६)
खाना चाहना—णीरव (१००)
खाली करने के लिए नमाना—देखो
उलटाना
खिन्न करना—आयास (४३)
खिन्न होना—विसीअ (२५) अवसीअ
(२६) खिज्ज (३३) पडिखिज्ज
(७४)
खींचना—करिस (२८) अणुकड्ढ
(३६) आअंछ (४२) पगड्ढ
(६६) कड्ढ, साअड्ढ, अञ्च,
अणच्छ, अयञ्छ, अइञ्छ, करिस
(१०७)
खींच लेना—आहर (६६)
खुलना (आंख का)—उम्मिल्ल
(२४)
खुश होना—हरिस (६१) रिज्झ
(८३) अवअच्छ (१०४)
खुशामद करना—अच्चीकर (३५)
गुलल (१०२)
खुशी करना—रज (८२) अवअच्छ
(१०४)
खूब चलाना—पचाल (६६)
खूब बकना—लालप्प (८५)
खेद करना—सीअ (१८) विसीअ

चर्चा करना—चप (५१)
चलना—री (८३) चर
चला जाना—पक्कम (६८)
चापना—चप (५१)
चाटना—लिह (८६)
चाहना—कख (४५) दय (५७) देव (५६) अहिलघ, अहिलख, वच्च, वम्फ, मह, सिह, विलुप (१०७)
चिंतन करना—विचिंत (२५) भाव (६५) धा (६६) पडिसचिक्ख (७६) सझाअ (६६)
चिंता करना—चिंत (२८)
चित्र बनाना—चित्त (×) आलिह (३५)
चिह्न से पहचानना—आलक्ख (४४)
चिपकना—रा (८३)
चिल्लाना—अल्ल (१४) आरड (४३) आरस (४३) रस (८३) णीहर (१०४)
चुंबन लेना—चुब (१२)
चुगली करना—पिसुण (१६)
चुनना—चिण (२४)
चुपडना (घी, तेल आदि से)—चोप्पड
चुराना—मुस (३४)
चूर्ण करना—चुण्ण (१५) दार (५७)
चूर-चूर करना—संचुण्ण (३५)
चेष्टा करना—ववम (८६)
चोपडना मालिश करना—मक्ख (६५)
चोरी करना—पम्हुस (६०)

छ

छानना—गाल (४६)
छिडकना—आइच (४२) उप्फुस (४७) सिंच (६२)
छिन्न-भिन्न करना—छिंद (१६)
छिपना—लुक्क (८६) णिलीअ, णिलुक्क, णिरिग्घ, लिक्क, ल्हिक्क, निलिज्ज (१०१)
छिपाना—गोव (५०)
छीनना—हर (६१) आहर (६६)
छीनना हाथ से—ओअन्द, उद्दाल, अच्छिन्द (१०४)
छीलना (छिलना)—तक्ख (२६) तच्छ (३१) चच्छ, रम्प, रम्फ (१०७)
छूना—फरिस (३७) फस (६१) आमुस (६२) फास, छिव, छिह, आलुह्व, आलिह, पम्हुस (१०७)
छेद करना (छेदना)—छिंद (१६) विंध (२५) कराल (४५) लाय (८५) लुअ (८६)
छोडना—मुच (७) चय (२६) परिहर (३१) पक्खिव (६८) पडिमुच (७६) मुअ (८२) हाह (६१) छड, अवहेड, मेल्ल, उस्सिक्क रेअव, णिल्लुञ्छ, धंमाड (१०२

ज

जमाइ लेना—विअम (५०) जम्भा (१०५)
जमना—सखा (१००)
जलना—डह, दह (७) सजल (३१) तेअव, सन्दुम, सन्धुक्क, अब्भुत्त, पलीव (१०५)

जलाना—पज्जल(१३)झाल(१५)
उज्जाल(४४)पज्जाल(७२)
पलह(७३)जलिज्ज, आलुंख
(१०७)

जल्दी करना—तुर(५४)तुवर, जअड
(१०६)

जागना—जागर(२९)जग्ग (१०२)

जानना—जाण(६)मुण(१६) वोविद
(६४)लक्ख(८४)

जाना—गच्छ(६)जा(३१)अइगच्छ
(३४)जा(४२)वच्च(३९)
अइच्छ(५९)वुइज्ज(५९)
ईर(६९)री(८३) वइवय
(८७)वच्च, वम(८८)हिंड
(९१)संकम(९५)अई, अइच्छ,
अणुवज्ज, अवज्जस, उक्कुस,
अक्कुस, पच्चड्ड, पच्छंद, णिम्मह,
णी, णीण, णीलुक्क, पदअ, रम्भ,
परिअल्ल, वोल, परिअल,
णिरिणास, णिवह, अवसेह,
अवहर, हम्म(१०६)

जाप करना—जव(९)

जीतना—जिण(९)

जीतने की इच्छा करना—जेव(५९)

जीमना—जेम(५१)देखो, खाना

जूरना—जूर(३०)

जोड़ना—जुंज(२७)पउंज(६८)लाय
(८५)संकर(९६)जुप्प, जुज्ज
(१०३)

तौलना—आबंठ(४२)

न करना—बीध(६२)

झ

झड़ना (नीचे गिरना)—झड, पक्खोड
(१०४)

झरना—झर(४८)पगल(६९)पज्झर
(८०)खिर, झर, पज्झर,
पच्चड, णिच्चल, णिट्टुअ
(१०६)

झाग निकलना—फेणाय(६१)

झाड़ना—आप्फोडन(४८)अक्खोड
(८१)पक्खोड(८२)

झूरना—झूर(३०)

झूठा ठहरना—झूट(४७)

ट

टपकना—देखो झरना

टूटना—फुट्ट (३७) टुट्ट(५३)खुट्ट
(६१) पडिभंज(७९)णिलुक्क
(१०१)

ठ

ठगना—पतार(८)वंच(८७)वेहव
वेलव, जूरव, उमच्छ(१०२)

ठहरना—ठा, थक्क, चिट्ठ, निरप्प
(१००)

ठीक करना—सार(२२, ९४)

ड

डरना—बीह(७)डर(३९)बिह
(९२)भा, डर, बोज्ज, वज्ज,
डर(१०७)

डर से विह्वल होना—वदर(४७)

डसना—डस(२५)

डाँटना—तज्ज(५३)

डूबना—अवज्झलाव(४५)आउड्ड,

दुःखित होना—दूभ (५६)
दुःखी होना—परितप्प (३०)
दुहना—दुह (५६)
दूरवर्ती मालूम होना—दुराय (५६)
देखना—पास (६) दिक्ख (३६) विअक्ख (४६) दक्ख (५६) देह (५६) लोअ (८६) आलोअ (६७) णिज्झा (१००) णिअच्छ, पेच्छ, अवयच्छ, अवयज्झ, वज्ज, सव्वव, देक्ख, ओअक्ख, अवक्ख, अवअक्ख, पुलोअ, पुलअ, निअ, अवआस (१०६)
देना—दा (८) तिप्प (३०) आयाम (४३) दय (५७) दियाव (५८)
दौड़ना—धाव (६) धा (६६)
द्वेष करना—दुस्स (५८) पदूस (६०)
द्रोह करना—दुह, दोह (५६)

ध

धमनी चलाना (जोर से)—उद्धुमा (१००)
धसना—धस (६६) ढंस, विवट्ट (१०४)
धारण करना—मल (१८), भर (६३) धर, धा (६६)
धिक्कारना—कुच्छ (४६)
धूसरित होना—गुठ (४६)
धोना—धुव (६६)
ध्यान करना—धा (६६) पणिहा (८०) संझाअ (६६) झाअ (१००)
ध्यान पूर्वक देखना—आभोय (१८)

न

नकल करना—अणुकर (३४)
नमन करना—नव (४०) पणिवय (८०)
नमना (भार से)—णिसुढ, णव (१०५)
नमस्कार करना—णम, नम (३२)
नमाना—पणाम (८०)
नष्ट होना—खअ (४७) भंस (६३) धस (६५)
नाचना—पणच्च (८०) लास (८५)
नाश करना—पणास (८०)
निकलना—पवह (११) नीहर (२३) निक्कस (३४)
निकालना—णीसारय (१६)
निगलना—गस (४६) घिस (१०७)
निग्रह करना—दम (३६)
निन्दा करना—कुच्छ (४६) खिस (४८)
निपजना—निवज्ज (१६)
निभाना—पडिजागर (७४)
निमंत्रण देना—निमंत (२६)
नियंत्रण करना—गुड (४६)
निरीक्षण करना—पच्चुवेक्ख (७१) पडिलेह (७७)
निर्णय करना—रोअ (८४)
निर्माण करना—रय (८३) सिर (६२)

भ

वरतना—वट्ट (८८)
वरसना—वरिस (३३)
वर्गकरना—वग्ग (८८)
वर्जन करना—वज्ज (३१)
वर्णन करना—वण्ण (८८)
वसना—वस (८९)
वहन करना—णिविस्स (१६) पडिवह (७७) वाह (६०)
वाद विवाद करना—पवय (३०)
वापस आना—पडिइ (७३) पलोट्ट, पच्चागच्छ (१०६)
वापस देना—पच्चप्पिण (७०) वम्फ, वल (१०६)
वास करना—पज्जोसव (७२) वस (८९) आवास (६८)
विकसना—पप्फुल (६०) फुट (६१)
विकास करना—कोआस, वोसट्ट, विअस (१०७)
विक्रय करना—विक्क (२७) देखो बेचना
विचरना—विचर (२६)
विचलित करना—धरिस (५२)
विचार करना—पडिसविक्ख (७८)
विदारना—दार (५७)
विद्यमान होना—विज्ज (५२)
विनती करना—विण्णव (२३)
विनाश करना—लुप (८६)
विपरीत होना—पडिकूल (२६)
विमर्श करना—विअक्क (४६)
वियोग से दुःखित होना—जूर (३०)
विरत होना—पडिसम (७८)
विराजमान होना—विराअ (२६)
विराम लेना—विरम (११)
विरोध करना—वाह (६२)
विलाप करना—झख, वडवड, विलव (१०५)
विलास करना—लल (८४)
विलेखन करना—विलिह (६१)
विलोडन करना—मह (८१) लोल (८७) देखो मंथन करना
विवरण करना—वक्खा (८७)
विवाह करना—विवह (१२)
विशेष जलना—पजल (७१)
विश्राम करना—णिव्वा, वीसम (१०५)
विश्वास करना—पत्तिअ (६०)
विसंवाद करना—विअट्ट, विलोट्ट, फस, विसवय (१०४)
विस्तार करना—तण (५३)
विस्तार से कहना—पवंच (६०)
विस्मरण करना—वीसर (२८)
विहार करना—विहर (२५)
वृद्ध होना—पक्खुभ (६८)
वेष्टन (वेष्टित) करना—वेढ (४०) पडिवंध (७६)
व्यक्त करना—वज (८७)
व्यवहार करना—पडिसंखा (७६)
व्याकुल होना—विर, णड, गुप्प (१०५)
व्याख्यान करना—वक्खाण (२८)
व्यापार करना—ववहर (८६)
व्याप्त होना—ओअग्ग, वाव (१०५)

श

शब्द करना—कण (४०) कव

परिशिष्ट ७ वैदिक संस्कृत और प्राकृत भाषा

वैदिक सस्कृत और प्राकृत भाषा मे समानता अधिक है। कुछेक समानता यहां प्रस्तुत हैं।

(१) वैदिक संस्कृत की धातुओ मे किसी प्रकार का गणभेद नही है। प्राकृत भाषा मे भी धातुओ मे गणभेद नही है।

पाणिनीय धातु	वैदिक धातु	प्राकृत भाषा
हन्ति	हनति	हनति, हणति
शेते	शयते	सयते, सयए
भिनत्ति	भेदति	भेदत्ति, भेदइ
म्रियते	मरते	मरते, मरए

(वैदिक प्रक्रिया सू० २।४।७३, ३।४।८५, २।४।७६, ३।४।११७, ऋग्वेद पृ० ४७४ महाराष्ट्र सशोधन मडल)।

(२) वैदिक सस्कृत मे आत्मनेपद तथा परस्मैपद का भेद नही है। प्राकृत भाषा मे भी आत्मनेपद और परस्मैपद का भेद नही है।

पाणिनीय धातु	वैदिक संस्कृत	प्राकृत भाषा
इच्छति	इच्छति, इच्छते	इच्छति, इच्छते
युध्यते	युध्यति, युध्यते	जुज्झति, जुज्झते

(वैदिक प्रक्रिया ३।१।८५)

(३) वैदिक सस्कृत मे प्रथम पुरुष के एकवचन के ए प्रत्यय के रूप मे समानता है।

पाणिनी ए प्रत्यय	वैदिक	प्राकृत
शेते	शेये	[illegible]
इष्टे	ईशे	[illegible]

(वैदिक प्रक्रिया सू० ७।१।१ ऋग्वेद पृ ९६८)

(४) वर्तमान और भूतकाल आदि कालों मे वैदिक संस्कृत मे तथा प्राकृत मे कोई नियमता नही है। वैदिक क्रियापद मे वर्तमान के स्थान पर परोक्ष भी होता है। म्रियते के स्थान पर ममार प्रयोग हुआ है। (वैदिक प्रक्रिया ३।४।६)

प्राकृत भाषा मे परोक्ष के स्थान पर वर्तमान का प्रयोग भी होता है।

परोक्ष	प्राकृत वर्तमान
प्रेक्षांचक्रे	पेच्छइ
आवभाषे	आभासइ
वर्तमान	भूत
शृणोति	सोहीअ

(हेम० प्रा० व्या० ८।४।४४७)

(५) विभक्तियों का व्यत्यय—

(क) वेदों में और प्राकृत मे चतुर्थी विभक्ति के स्थान पर षष्ठी विभक्ति का प्रयोग विहित है।
(देखें वैदिक प्रक्रिया सू० २।३।६२ तथा हेम०प्रा० व्या० ८।३।१३१)

(ख) तृतीया विभक्ति के स्थान मे षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है।
(वैदिक प्रक्रिया २।३।६३ तथा हेम०प्रा०व्या० ८।३।१३१)

(६) बहुलं का प्रयोग—

वैदिक व्याकरण मे सब प्रकार के विधानों मे बहुलं का व्यवहार होता है। प्राकृत भाषा के व्याकरण मे भी सर्वत्र बहुलं का व्यवहार होता है।
(देखें, बहुलं छंदसि २।४।३९,७३ हेम० प्रा० व्या० ८।१।२,३)

(७) अन्तिम व्यंजन का लोप—

वैदिक सस्कृत में अंतिम व्यजन का लोप होता है। इसी प्रकार प्राकृत भाषा मे अंतिम व्यंजन का लोप व्यापक है—

वैदिक रूप

पश्चात्—पश्चा	पश्चार्ध (वै. प्र. ५।३।३३)
उच्चात्—उच्चा	(तैत्ति० सं. २।३।१४)
नीचात्—नीचा	(तैत्ति० सं. १।२।१४)
विद्युत्—विद्यु	(अन्त्यलोपः छांदसः ऋग्वेद पृ. ४६६)
युष्मान्—युष्मा	(वाज० सं. १।१३।१, शत० ब्रा० १।२।६)
स्य.—स्य	(वै०प्र० ६।१।१३३)

प्राकृत रूप

तावत्—ताव। यावत्—जाव। तमस्—तम। चेतस्—चेत। यशस् —जस। नामन्—नाम।

(८) स्प को प आदेश—

वैदिक भाषा में स्प को प हो जाता है। प्राकृत ने भी स्प को प

आदेश हो जाता है ।

वैदिक	प्राकृत
स्पृशत्य—पृशन्य	स्पृहा—पिहा । निस्पृह—निप्पह
(ऋग्वेद पृ. ४६६)	(हेम. प्रा. व्या. २।७७)

(६) र का लोप—

वैदिक	प्राकृत
अप्रगल्भ—अपगल्भ	क्रिया—किया, प्रज्ञा—पज्जा
(तै. स ४।५।६।१)	प्रिय—पिय
	(हेम. प्रा. व्या २।७६)

(१०) य का लोप—

वैदिक	प्राकृत
त्र्युच:—तृच:	श्याम—साम । व्याध—वाह
(वै. प्र. ६।१।३४)	(प्रा २।७८)

(११) ह को ध—

वैदिक		प्राकृत
सह—सध सहस्थ—सधस्थ	वै प्र. ६।३।६६	इह—इध
गाह—गाध वहू—वधू	निरुक्त पृ १०१	होह—होध
शृणुहि—शृणुधि		परित्तायह—परित्तायध
(वै. प्र ६।४।१०२)		(हेम. प्रा व्या ४।२६८)

(१२) थ को ध तथा ध को थ—

वैदिक	प्राकृत
माधव—माथव	नाथ—नाध
(शतपथ ब्राह्मण १।३।३।१०)	कथं—कधं
११,१७	राजपथ—राजपध
	(हेम प्रा. व्या. ४।२६८)

(१३) द्य को ज—

वैदिक	प्राकृत
द्योतिस्—ज्योतिम्	द्युति—जुति, जुइ
(अथर्व म ४।३७।१०)	उद्योत—उज्जोत

(निरुक्त पृ. ३८७,४३)	तथा चैत्य का चैत्र जैसे रूपो मे
पृथुजव.—पृथुज्रय.	र का आगम हुआ है।
इन रूपो मे अभूतपूर्व र का	(प्रा ४।३९९)
आगम हुआ है।	

(१८) क तथा च का लोप—

वैदिक	प्राकृत
याचामि—यामि	कचग्रह—कयग्गह
निरुक्त पृ. १००,२४१	शची—सई
अन्तिक—अन्ति	लोक—लोअ
ऋग्वेद पृ ४९६	(प्रा १।१७७)

(१९) आन्तर अक्षर का लोप—

वैदिक	प्राकृत	
शतक्रतवः—शतक्रत्व	राजकुल—राउल	(१।२६७)
पशवे—पश्वे	प्राकार—पार व्याकरण—वारण	(१।२६८)
(वै. प्र० ७।३।९७)		
निविविशिरे—निविविश्रे	दुर्गादेवी—दुग्गावी	(१।२७०)
(ऋ. सं ८।१०१।१८)	आगत—आय	(१।२६८)
आगत.—आता:	एवमेव—एमेव	(१।२७१)
(निरुक्त पृ. १४२)		

(२०) संयुक्त व्यंजनो के मध्य में स्वरो का आगम—

वैदिक	प्राकृत	
तन्वम्—तनुवम्	अर्हन्—अरुहत	(२।१११)
(तै. आ. ७।२२।१)	लघ्वी—लघुवी	(२।११३)
स्वर्गः—सुवर्गः	तन्वी—तणुवी	"
(तै. आ. ४।२।३)	पद्मं—पउम	(२।११२)
विश्वम्—विशुवम्	मुक्खो—मुरुक्खो	"
सुध्यो—सुधियो	क्रिया—किरिया	(२।१०४)
रात्र्या—रात्रिया	ह्री—हिरी	"
सहस्र्य.—सहस्रिय	गर्हा—गरिहा	"
(यजुर्वेद)	श्री—सिरी	"

(२१) ऋ को र तथा उ—

वैदिक	प्राकृत	
ऋजिष्ठम्—रजिष्ठम्	ऋद्धि—रिद्धि	(१।१४०)

वै. प्र. ६।४।१६२	ऋणं—रिण	(१।१४१)
वृन्द—वुन्द	वृन्द—वुन्द	(१।१३१)
(निरुक्त पृ. ४३२ अं० १२८)	वृतान्त—वुत्तन्त	"
तृ—ततुरि.	वृद्ध—वुड्ढ	"
गृ—जगुरिः	ऋषभ—उसभ	"
वै प्र ७।१।१०३	ऋतु—उतु	"
	ऋजु—उज्जु	

(२२) द को ड—

वैदिक	प्राकृत	
दुर्दभ—दूडभ	दण्ड—डड	(१।२१७)
(वा. स. ३,३६)	दभ—डंभ	"
पुरोदाश—पुरोडाश	दर—डर	"
(वै प्र. ३।२।७१)	दंसण—डंसण	"
	दोला—डोला	

(२३) अव को ओ तथा अय को ए—

वैदिक	प्राकृत	
श्रवणा—श्रोणा	अवयरइ—ओअरइ	(१।१७३)
तै. ब्रा० १,५-१,४,५.२,९	अवयास—ओआस	"
अन्तरयति—अन्तरेति	अवसरति—ओसरइ	"
शत. ब्रा. १,२-३,१८;	कयल—केल	(१।१६७)
४,२०; ३.१.१६	अयस्कार—एक्कार	(१।१६६)

(२४) संयुक्त के पूर्व का ह्रस्व—

वैदिक	प्राकृत
रोदसीप्रा—रोदसिप्रा	आम्रं—अम्बं
(ऋग्वेद संस्कृत १०।८८।१०	मुनीन्द्र—मुणिन्द
अमात्र—अमत्र	आस्य—अस्स
ऋग्वेद संस्कृत २.३६.४	तीर्थ—तित्थ
	(प्रा. १।८४)

(२५) क्ष को छ—

वैदिक	प्राकृत	
अक्ष—अच्छ	अक्षि—अच्छि	(१।३३)
(अथ. सं. ३।४।३)	अक्ष—अच्छ	

	क्षीणं—छीण (२।३)

(२६) अनुस्वार के पूर्व के दीर्घ का ह्रस्व—

वैदिक	प्राकृत
युवाम्—युवम्	मांस—मस (प्रा- १।७०)
(ऋ स. १।१५-६)	पांसु—पंसू
	कांस्य—कंस
	मालाम्—माल

(२७) विसर्ग का ओ—

वैदिक	प्राकृत
स: चित्—सो चित्	देव: अस्ति—देवो अत्थि
(ऋ वे. पृ १११२)	सर्वत —सव्वओ
सवत्सर: अजायत—संवत्सरो अजायत	पुरत.—पुरओ
	मागत —मग्गओ
(ऋ स. १-१६१-१०-११)	(प्रा० १।३७)
आप अस्मान्—आपो अस्मान्	पुन: एति—पुणो एति
(वै. प्र. ६।१।११७)	

(२८) ह्रस्व को दीर्घ तथा दीर्घ को ह्रस्व—

वैदिक	प्राकृत
एव—एवा	अहवा—अहवा (अथवा)
अच्छ—अच्छा	एव—एवा (एव)
(वै. प्र ६।३।१३६)	जह—जहा (यथा)
घ—घा	तह—तहा (तथा)
मक्षु—मक्षू	(१।६७)
कु—कू	चतुरन्त—चाउरंत
अत्र—अत्रा	परकीय—पारक्क
यत्र—यत्रा	विश्वास—वीसास
पुरुप—पूरुप	मनुष्य—मणूस
दुर्दभ—दूदभ	मिश्र—मीस
दुर्लभ—दूलभ	पश्य—पास
(ऋ. संस्कृत ४।६।८)	(१।४३)

(२९) अक्षरों का व्यत्यय—

वैदिक	प्राकृत
निसृकर्त्य—निष्टकर्यं	आलान—आणाल (२।११७)

(वै. प्र. ३।१।१२३)	अचलपुरं—अलचपुरं(२।११८)
नमसा—मनसा	वाराणसी—वाणारसी
ऋ. पृ ४८९	(२।११६)
कर्तुः—तर्कुः	महाराष्ट्र—मरहट्ठ (२।११९)
(निरुक्त पृ. १०१-१३)	

(३०) हेत्वर्थ कृदन्त के प्रत्यय में समानता—

वैदिक	प्राकृत
कर्तुम्—कर्तवे (वैदिक प्रक्रिया ३।४।९) वैदिक प्रक्रिया सूत्र मे 'से', 'सेन' और अ से प्रत्ययों का विधान तुम् के स्थान मे किया गया है। इस नियम से इ धातु का 'एसे'(एतुम्) रूप होगा	कत्तवे, कातवे, कत्तिए गणेतुये, दक्खिताये नेतवे, निधातवे

(३१) क—क्रियापद के प्रत्ययों में समानता

वैदिक	प्राकृत
प्रथम पुरुष, बहुवचन दुह् + रे—दुह्रे (वैदिक प्रक्रिया ७।१।८)	प्रथम पुरुष के बहुवचन मे रे और इरे प्रत्यय का भी व्यवहार होता है। गच्छ—गच्छरे, गच्छिरे (हे. प्रा. व्या. ३।१४२)

ख—आज्ञार्थक सूचक इ प्रत्यय—

वैदिक	प्राकृत
बोध् + इ—बोधि	बोध् + इ—बोधि, बोहि सुमर् + इ=सुमरि (हेम. प्रा. व्या. ४।३७)

(३२) संज्ञा शब्दों के रूपों में प्रत्ययों की समानता—

वैदिक	प्राकृत
देवेभिः(वै. प्र. ७।१।१०)	देवेभि—देवेहि
पतिना(वै. प्र. १।४।९)	पतिना

गोनाम् (वै. प्र. ७।१।५७)	गोन, गुन्न
युष्मे } (वै प्र. ७।१।३९)	तुम्हे
अस्मे	अम्हे
त्रीणाम् (वै प्र. ७।१।५३)	तिन्न, तिण्ह
नावया (वै प्र. ७।१।३९)	नावाय, नावाए
इतरम् (वै प्र ७।१।२६)	इतर
वाह्+अन—वाहन	वाहणओ, वोल्लणआ
(कर्तासूचक अनप्रत्यय	इत्यादि
(वै. प्र ३।२।६५,६६)	

(३३) अनुस्वार लोप—

वैदिक	प्राकृत
मांस—मास	मांस—मास, मस (१।२८,२९)
(वैदिक ग्रामर कंडिका ८३-१)	किं—कि, किं
	नूनं—नूण, नूणं

अनुस्वार का लोप विकल्प से हुआ है।

(३४) भूतकाल मे आदि अ का अभाव—

वैदिक	प्राकृत
अमथ्नात्—मथीत्	मथीअ
अरुजन्—रुजन्	रुजीअ
अभूत्—भूत्	भवीअ
(ऋ. वे पृ. ४६४,४६५)	

(३५) इकारान्त शब्द के प्रथमा विभक्ति का बहुवचन—

वैदिक	प्राकृत
अत्रिण.	हरिणो
(तृजन्तस्य अत्तृ शब्दस्य (प्रथमा बहुवचन) जस- छान्दसः इनुङ् आगमः (ऋ. वे पृ ११३-५ सूत्र मेक्स०)	

(३६) कृ का तथा जि धातु का रूप—

वैदिक	प्राकृत
कृणोति	कुणति (हे. प्रा. व्या. ४।६५)
जेन्यः	जिणइ (हे. प्रा व्या. ४।२४१)

(ऋग्वेद पृ. २२६, २२७ तथा
पृ. ४६५)

(३७) क—अकारान्त शब्द मे लगने वाला प्रत्यय ईकारान्त में भी लगता है।

वैदिक	प्राकृत
नद्यै:	नदीहि (हे. प्रा. व्या. ३।१२४)
(वै. प्र. ७।१।१० पाणिनीय काशिका) इस रूप मे अकारान्त मे लगने वाला प्रत्यय ईकारान्त मे भी लगा है।	प्राकृत में अकारान्त में लगने वाले प्रत्यय ईकारान्त में भी लगते हैं।

ख—द्विवचन का रूप बहुवचन के समान—

वैदिक	प्राकृत
देवा	प्राकृत भाषा मे द्विवचन होता ही नहीं है। द्विवचन के सब रूप बहुवचन के समान होते हैं—द्विवचनस्य बहुवचनम् (हेम. प्रा. व्या. ३।१३०)
उमा	
वेनन्ता	
(ऋग्वेद पृ. १३६-६)	
मित्रावरुणा	हत्था
या	पाया
दिविस्पृशा	थणया
अश्विना	नयणा
(वै. प्र. ७।१।३९)	

(३८) विभक्ति रहित प्रयोग—

वैदिक	प्राकृत
आर्द्रे चर्मन् लोहिते चर्मन् परमे व्योमन् } सप्तमी का अप्रयोग	प्राकृत भाषा मे भी अनेक प्रयोग विभक्ति रहित ही पाए जाते हैं।
वै. प्र. ७।५।३९	गय—षष्ठी का बहुवचन
	बहुशत—षष्ठी का बहुवचन
वीणळु दळहा अभिशु } द्वितीया का अप्रयोग	इत्यादि
(ऋ. पृ. ४६४ तथा ४७२)	

(३९) समान अर्थयुक्त अव्यय—

वैदिक	प्राकृत
कुह (कुत्र)	कुह (कुत्र)

न (उपमासूचक)	णं (उपमासूचक)
(ऋ. पृ. ७३३)	
निरुक्त पृ २२०	
दिवेदिवे	दिविदिवि
	(हे. प्रा. व्या. ४।३९९)

(४०) सधि का विकल्प—

वैदिक	प्राकृत
ईषा + अक्षो	पदयो सन्धिर्वा
ज्या + इयम्	(हे. प्रा. व्या. १।५)
पूषा + अविष्टु	
(वै. प्र ६।१।१२६)	

(प्राकृत मार्गोपदेशिका से उद्धृत)

सहायक ग्रन्थ सूचि

१. अथर्ववेद—
२. अपभ्रंश रचना सौरभ—डा० कमलचंद सौगाणी
(जैन विद्या संस्थान दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी० राजस्थान)
३. अभिधान चिंतामणी कोश (कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचंद्राचार्य)
संपादक—विजयकस्तूरसूरि
४. ऋग्वेद (महाराष्ट्र संशोधन मंडल)
५. तैत्तिरीय ब्राह्मण
६. निरुक्त
७. पण्णवणासुत्तं—भगवान महावीर
(जैन विश्व भारती, लाडनूं प्रकाशन)
८. पाइअसद्दमहण्णवो—पं० हरगोविन्ददास त्रिकमचंद सेठ)
(प्राकृत ग्रन्थ परिषद वाराणसी)
९. प्राकृत प्रवेशिका—डा० कोमलचंद जैन
(तारा पब्लिकेशन, वाराणसी)
१०. प्राकृत प्रबोध—डा० नेमिचंद्र शास्त्री
(चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी १)
११. प्राकृत भाषाओ का व्याकरण—डा० आर. पिशल
अनुवादक—डा० हेमचंद्र जोशी डी. लिट्
(बिहार राष्ट्रभाषा परिषद पटना)
१२. प्राकृतमार्गोपदेशिका—पं. बेचरदास जीवराज दोशी
(मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली)
१३. प्राकृत व्याकरण—श्री हेमचंद्राचार्य
संपादक—पी. एल. वैद्य
भांडारकर ओरियेन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूणा-१९८०
१४. प्राकृत व्याकरण—श्री हेमचंद्राचार्य
सं. मुनिवज्रसेन विजय
श्री जैन आत्मानंद सभा, खारगेइट, भावनगर)
१५. प्राकृत स्वयं शिक्षक—डा० प्रेमसुमन जैन

(अध्यक्ष जैन विद्या एव प्राकृत विभाग, सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर)

१६ बृहत् हिन्दी कोश—स कालिका प्रसाद, राजवल्लभ सहाय, मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव ज्ञानमण्डल लिमिटेड वाराणसी

१७. भावप्रकाश निघटु—श्रीभावा मिश्र चौखंवा भारती अकादमी वनारस, सातवां संस्करण १९८६

१८. वाजसनेई सहिता

१९. वैदिक प्रक्रिया

२०. शतपथ ब्राह्मण

२१. शालिग्राम निघंटु भूपणम—शालीग्राम वैश्य खेमराज श्री कृष्णदास, वम्बई सन् १९८१

शुद्धि पत्र

पृ.	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३	२५	गर	गर्
६	३	कर्तुवाच्य	कर्तृवाच्य
७	१०	तुन	तुन्
१६	८	काशीपः	काशीप
२०	१६	सुंदरं	सुंदराणि
२१	१४	ओप्म्	ओप्म
२१	१६	वी	पी
२१	१८	मालुम	मालूम
२३	३२	उह	ठ
२४	१३	आरोहण	आरोह
२८	१३	होत है	होती है
२९	१६	कोइ	कोई
३४	१३	विमक्ति	विभक्ति
३५	१०	इहरो	ईहरो
३६	१२	विभक्त	विभक्ति
३८	२०	घड	षड
४७	३	ओंवली	ओवली
४८	३१	रुप्प	रुप्प
४९	२९	योग करो ऽ	प्रयोगकरो
५१	१३	पिच्यातो	पिच्छातो
५६	२५	विच्छो	विच्छो
५८	२४	न्यायधीश	न्यायाधीश
६५	४	लो	लो
७५	६	कक्कुरो	कक्कुरो (दे०)
८५	१२	प्रयपूरो	वयपूरो
८६	१७	दसोद्वाद्रे	दसोद्वाद्रे
८९	२०	पङ्क्तो	पङ्क्तो
९१	१०	ववाका	ववाको

९३	३१	जहुट्टिलो	जहुट्ठिलो
९६	३	जैन पारिभाषिकर	जैन पारिभाषिक २
९८	५	भय	भय
९९	६	कफग्धी	कफग्घी
१०३	२४	सणहं	सण्हं
१०४	१	ईर्वोद्व्यूढ	ईर्व्योद्व्यूढे
१०७	२६	मृदुत्वे	मृदुत्वे वा
१०९	२५	गंतत्वं	गंतव्व
१११	४	हैमं	हेमं
१११	५	तेल	तेलं
११४	२	प्रार्थंना	प्रार्थना
११५	१६	मड	अड्ड
११७	६	वाणिज्यो	वाणिज्जो
११९	७	विभागाज्झक्खो	विभागज्झक्खो
११९	९	ण्हाओ	ण्हायओ
१२१	८	विभागाज्झक्खो	विभागज्झक्खो
१२४	७	कीले क :	कीलके क :
१२४	८	कील	कीलक
१२४	२७	तूवरे वा	तुवरे ट :
१२८	१६	अणुग्ग	अणुग्गह
१२८	१८	पौषण	पोषण
१३७	५	केउरं	केऊरं
१५४	७	वत्थुआ	वथुआ
१५५	९	अवस्कंदो (अवक्खरो)	अवस्कंदो (अवक्खंदो)
१६३	१०	पडिसायो	पडीसायो
१६५	३०	पडिसायो	पडीसायो
१६८	१९	ह्रस्व	ह्रस्व
१६९	१०	उवराग्गी	उवरग्गी
१७५	१६	खभर होना	खउर'' करना
१७९	९	अनानास	अनन्नास
१८४	२३	पक्क-पक्क	पक्कं-पक्व
१८५	१४	सज्जा	संजा
१९७	२५	पीठन्तर्दे.	पीठेन्तर्दे.
१९८	२६	महिना	महीना
२०१	९	नवफालिका	नवफलिका

२०१	१०	नवफालिका	नवफलिका
२०१	१३	नवफालिका	नवफलिका
२०६	१२	अचलपुरं	अलचपुरं
२२४	५	गोरीआ	गोरीआ
२२६	८	चीडिया	चिड़िया
२२९	१२	वहु	बूह
२३५	२४	युष्मद	युष्मद्
२३६	२०	युष्मद	युष्मद्
२३८	१	अस्मद	अस्मद्
२३८	२०	मुणि	मुणी
२४१	३३	सव्वाणि	सव्वाणि
२४३	११	ढीठाइ	ढीठाई
२५३	१३	सोहिवा	सोहिर्वा
२५५	१५	लाग	लोग
२६०	१२	प्रतीति करना	प्रतीति कराना
२६२	२३	उत्तरज्ययणं	उत्तरज्झयणं
२६४	८	ऐडी	एडी
२६९	१	धातु क	धातु के
२८६	२९	थंमदारु	थंमदारु
२८७	२०	अन्नत्यं	अण्णत्यं
२९०	१६	पडिसंन्चिक्ख	पडिसंचिक्ख
२९०	१७	सावना	सांधना
२९३	२	स्त्रीवर्ग ४	स्त्रीवर्ग ३
२९४	६	पीआंवरो	पीअंवरो
३०३	१५	करांगुलीए	करंगुलीए
३१३	५	गूंगो	गूंगा
३१९	५	अमेरीका	अमेरिका
३२१	३०	होते हैं	होती हैं
३२४	२	उमया वा	उमया
३२४	६	मनको	मनाको
३२४	१०	मिश्राड्डालिअं	मिश्राड्डालिअः
३२५	११	वक्ष	वृक्ष
३४४	१३	खुशी	खुश
३५१	२६	अवगुणों को	अवगुणों का
३६२	८	हंसता	हसंता

३६३	३४	अग्निपोएण	अग्गिपोएण
३६४	११	पंडति	पडंति
३६७	११	उद्धाते	उद्वाते
३७७	१३	पुत्रवधूएं	पुत्रवधुएं
३८३	२२	प्रवंक	पूर्वक
३८३	२६	पके	पका
३८५	११	अस्खलित	अक्खलित
३८०	३०	जलता	चलता
३९५	३	आभरणणाणि	आभरणाणि
३९८	२	छत्त	घत्त
४०५	७	विडस	विउस
४३०	१	सत्वहा	सव्वहा
४३०	५	अपभ्रंश	अपभ्रंश
४३०	३२	जीव	जीवे
४३२	१	अपभ्रश	अपभ्रंश
४३५	१	अपशभ्र	अपभ्रंश
४५१	१९	गोवा	गोवं
४५४	२४	कत्तुसु, कत्तुसु	कत्तूसु, कत्तूसुं
४५५	२	भत्तुहि, भत्तुहि, भत्तुहिं	भत्तूहि, भत्तूहिं, भत्तूहिँ
४५५	३४	रायाणो	+
४५६	३	राईहि	राईहिँ
४६०	२८	हे धेणुउ, हे धेणुओ हे धेणु	हे धेणूउ, हे धेणूओ हे धेणू
४६१	३	बहुहिन्लो	बहुहिन्तो
४६२	२०	गाविहिन्तो	गावीहिन्तो
४६४	२३	दामेहिं	दामेहि
४७०	२८	मीअ	इमीअ
४७३	५	अह्मे	अम्हो
४७३	२८	तुज्झेहिन्ता	तुज्झेहिन्तो
४७३	३४	उम्हाहिन	उम्हाहिन्तो
४७३	१९	गगे	एगे
४७५	१७	चउसुं	चऊसु
४८९	१	कर्तरिवद्	कर्तृवद्
४८९	४	कर्तरिवद्	कर्तृवद्
४८९	५	कतृवद	कर्तृवद्

४८६	११	कर्तरिवद्	कर्तृवद्
४६०	६	हसेज्ज	हसेज्जा
४६०	११	हसावे	हसाव
४६१	२३	सावे	हसावे
४६३	१०	हसाविहामो	हसावेहामो
४६३	१३	हमाविहिस्सा	हसाविहिस्सा
४६७	१६	अर्षरूपाणि	आर्षरूपाणि
५१७	२५	कहे, कहे	कहे
५१६	३३	आय, आय	आया, आय
५२५	४	पचण्ह	पचण्हं
५३०	११	क्रियात्तिपत्ति	क्रियातिपत्ति
५३२	३०	हसिजित्था	हसिज्जित्था
५४४	२०	णिय्यासो	णिज्जासो
५४५	७	साहुणी	+
५४५	८	समणो, वासिया	समणोवासिया
५४८	१२	पुत्तवधू	पुत्रवधू
५४६	२४	हत्यिनी	हथनी
५४६	२७	हैमं	हेमं
५५३	१२	गू गो	गूगा
५५५	२१	ण्हाओ	ण्हायओ
५५८	८	हिचक्की	हिचकी
५५६	६	वत्थुआ	बथुआ
५७०	२४	कान	कास
५७१	२६	पक्खुभ	पक्खुब्भ
५७७	२३	थक्कर	थक्क
५७८	१५	देखा पीडना	देखो पीडना
५८५	११	निकल नाना	निकल जाना
५८६	३	शुश्रुषा	शुश्रूषा
५८६	१६	का काटना	को काटना